

रामचरितमानस और पूर्वाचनीय रामकाण्ड

[‘मानस’ चतुश्शती के पुनरीत अक्षर पर विशेष प्रकाशन]

श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषद् सुखीनियमिका

(भाग्य वि० वि० की डी० लिट० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध)

लेखक

डा० रमानाय त्रिपाठी

एम० ए०, पी एच डी०, डी० लिट०



आदर्श साहित्य प्रकाशन

दिल्ली-३१

© डा० रमानाथ त्रिपाठी

प्रकाशक

आदर्श साहित्य प्रकाशन

१२६/६ बस्ट सीनमपुर दिल्ली ३१

•

प्रथम संस्करण नवम्बर १९७२

•

मुद्रक

रमेश कम्पाजिम एजन्सी द्वारा

जगाव प्रिंटिंग घमपुरा

गांधी नगर दिल्ली ३१

मूल्य

पतालीस रुपये

(४५ ००)

Ramcharit Manas Aur Purvanchaliya Ramkavya

By

Dr Ramanath Tripathi

विभिन्न भाषाओं की रामकथाओं के अध्ययन की ओर पुनः प्रेरित करने वाले

अद्वैत डा० नगेन्द्र

के

कर-वमला म

अपनी बात

आगरा विश्वविद्यालय की डी० टि० उपाधि के लिए स्वीकृत इस शोध पथ में असमीया बँगला और उडिया भाषाओं की प्रतिनिधि रामायणा का रामचरित मानस के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

० रामायण हमारे गार्हस्थ्य जीवन का महाकाव्य है। राम हमारी सांस्कृतिक उपलब्धियों का श्रेष्ठ आदर्श है। उन्हें कद्रित कर समग्र भारत एवं भारत प्रभावित देशों में अक्षरों में चरित काय लिखे गए हैं। पूर्वांचल प्रदेश किसी समय जाया द्वारा उपक्षित था परंतु यहाँ भी भारत का अक्षर प्रदर्श की भाँति ही रामचरित विषयक आख्याना का कुटीरा से लेकर प्रासादा तक सुप्रचार हुआ। एक ही पवित्र कथा भाषा के विभिन्न भाँतों में आवरणों में प्रस्तुत की गयी है। प्रत्येक भाषा के रामायण में अपने प्रदेश की विशिष्टता का समावेश हुआ है किंतु सब की आत्मा एक है। विभिन्न भाषाओं के रामचरित-काव्यों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा साहित्य के मान्य भी भारतीय ऐक्य का साधन देना प्रस्तुत शोधप्रबंध का मुख्य उद्देश्य है। जातीयकरण भौतिकतावाद से निकट सम्पर्क चलचित्र के दूषित वातावरण पाश्चात्यवाद की कुत्सित मनावृत्तियों चतुर्दिगं जात्रमण की विभीषिका जातिरिक्त विघटन विदेशियों के कुचक्र आदि के मध्य राष्ट्रे का मशकत करने के लिए और समस्त देश में एकता की पुष्टि के लिए भारतीय संस्कृति के एकसमान मूलतत्त्वा की प्राप्ति के लिए किया जाना चाहिए था, ये तत्त्व ही आज उपक्षित हैं।

स्वतंत्र भारत में देश की सांस्कृतिक एकता का अधुण्डन रखा का भार हिंदी के कंधों पर जा गया है। इस उत्तरदायित्व के लिए हिंदी का समर्थ बनाने के लिए उसे इतना मशकत करना है कि वह सार भारत एवं भारत की समस्त चिन्ताधाराओं तथा विशेषताओं का प्रतिनिधित्व कर सके। हिंदी के अतिरिक्त कई भारतीय भाषाओं का साहित्य प्रचुर सम्पन्न है। इन भाषाओं के साथ यागमूत्र स्थापित करने के लिए दो कार्यों की आवश्यकता है—१ प्राचीन भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद और २ हिंदी साहित्य के साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन।

० पूर्वांचलीय भाषाओं की रामायणा पर व्यवस्थित शाोधकाय सर्वप्रथम मन ही किया है। १९५७ ई० में मुझे वृत्तिवासी बंगला रामायण और मानस के तुलनात्मक अध्ययन पर पी एच० डी० की उपाधि मिली थी। सभी विषय का विस्तार कर मैं असमीया और उडिया रामायणा का भी अध्ययन किया है। मुना है मर शोधकाय में प्रभावित होकर कवकता और गोशटी विषयविद्याओं में भी समा प्रसार का शाध काय हान लगा है।

० हिन्दी भाषिया का पूवाचन का रावागीण सशुप्त परिचय दन का लाभ

सवरण में नहीं कर सका। प्रथम अध्याय परिचयात्मक ही रहा है, चर्यामीति आदि कई विषयों पर मैंने मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं।

० कामरूप की अनेक जातियाँ मानसत्ता हैं सम्पत्ति पर माँ का अधिकार होता है जामाता का समुराल म रहना पड़ता है। यहाँ की स्त्रियाँ मुदर तथा पुरुषों की अनेक अधिक वमण्य हैं। तत्र ग्रन्था म यहा की प्रत्येक स्त्री दवी का अवतार बताया गया है। मम्भवत इमी कारण यहाँ की स्त्रिया के विषय म किंवदन्तिया चल पडी होगी। पूर्वोक्त व कामाख्या एव जगन्नाथ मन्दिर का इस प्रदेश के बहुत् भाग पर प्रभाव है। विचित्र साधनाओं का यहाँ प्रचार रहा है। राम व चरित्र एव रामायण ग्रन्था का इस प्रदेश की धर्मसाधनाओं के मध्य तथा स्थान रहा है इस स्पष्ट करने के लिए द्वितीय अध्याय लिखा गया है। ततीय अध्याय म आलोच्य ग्रन्था के लेखका का परिचय है।

चतुर्थ अध्याय से शाधप्रबन्ध की ठोस मौलिक खोज का प्रारम्भ होता है। रामायणा के मध्य प्रतिबिम्बित युगीन परिवेश का अधिक स अधिा मुचार् परिचय प्रस्तुत करने की चष्टा की है। कई प्रादेशिक रीतिया एव पन्थों की रोचक चर्चा है।

पचम (चरित्र चित्रण) जोर पड्ड (कथा विधान) अध्याय जपनर लिख गय हैं। वाल्मीकि ने माण्य एव वपम्य तथा पारम्परिा माण्य वपम्य खीर इनके कारण का उल्लेख करार हुए प्रमुण पात्रा का तुननात्मक चित्रण किया है। कथा विधान के अध्ययन म वाण्यनुसार सवप्रथम वाल्मीकि की कथा स समानता रखने ले सभी प्रसंगा की रूप रगा प्रस्तुत कर विकसित कथा का विश्लेषण कर प्रत्येक काण्ड के अन्त म पयक पयक नवीन प्रसंगा का उल्लेख किया है। कथा परिवर्तन के कारणों की ओर भी मनेत है। इस ख्याय को मैंन अनेक प्रकार व शोधक उपशीपका म विभाजित कर सख्यात्रम आदि कर व्यवस्थित किया था, मुद्रण की अपनी भीमाओं के कारण वही-वही व्यतिरिक्त हो गया है।

अय अध्यायों के विषय म कुछ नहीं कहना है विषय-सूची और उपमहार का अवलोकन ही पर्याप्त है।

चारा रामराव्या के लगभग भिन्न भिन्न शताब्दिया म उत्पन्न हुए काव्य-प्रतिभा की दृष्टि स भी उनम ममानता रही है, किन्तु सभी लगभग अपने-अपने क्षत्र के प्रतिनिधि रामचरित वाच्य लखव हैं। इमी नात उनके वाच्य का तथा वाच्य के माध्यम म प्रादेशिक बशिष्ट्य का तुननात्मक अध्ययन किया गया है।

० कई-कई भाषाओं का सम्यक परिचय सहज नहीं होता। रामायणा की विभिन्न भाषा, लिपि एव सख्या प्रका म पाथय है। केवल इनके उद्धरणों को जांच कर मुद्र करने म कई-कई घण्टे और कई-कई दिन लग गये। शाधकाय म लीन रहकर मैंने कितना कष्ट उठाया है और सासारिकता से अलग-थलग पडकर कितना सोया है मैं ही जानता हूँ। विकट लिपियाँ के पढने के कारण मुझ एक एक कर

लोकान्तो गी शल्य निवृत्त्या करणी पडी । पूर्वाचलीय भाषाओं के शब्दों की बानी मग्न के अनुसार चलती है, उमका सत्र निर्माह रही हो पाया । अनेक भाषाओं के उद्धरणों से समचित यह ग्रन्थ का भाग के भीतर मुद्रित कर दिया गया । अनेक पुष्टियाँ का रहे जाया स्वाभाविक है । मुख्य पुष्टियाँ के लिए पुष्टिपत्र द दिया है ।

० गारा—२ १० ६ का ग्रह होगा—वाण २ (अयाध्यायण) के दसवें दोहरे पश्चात् छोटी पंक्ति । असमीया रामायण में आदि ग अत तक छंद सस्था पडी हुई है वही उद्धृत की गयी वही वहाँ पृष्ठ संख्या भी उद्धृत की है । बंगला रामायण की पृष्ठ संख्या दी गयी है । चूंकि उडिया रामायण के सातों वाण्ड पथक पथक छे हैं, अत उससे वाण्ड और वाण्ड-अंतगत पृष्ठ संख्या का पथक निर्देश है ।

० पूर्वाचलीय भाषाओं के शब्द के प्रारम्भ में य को ज पडा जाता है । ज वण ह किन्तु इसके लिए भी य का प्रयोग करते हैं । याव, विमत याव और वाय (वाय) को जाव विमत जाय और वाज पडा जाए । पृष्ठ ८१ ४३ पर दिये गये उच्चारण नियमों के पढ़ने के बाद इन भाषाओं के उद्धरण पढ़ना अधिक सरस होगा ।

पूर्वाचल का सर्वांगीण परिचय पान के लिए मैंने इतना अधिक अध्ययन किया था कि इस ग्रन्थ के इतिहास भूगोल रीति प्रथा जादि मरे मानस चक्षुओं के समक्ष साकार हो उठते थे । बन्धी-बन्धी इन प्रदेशों के विद्वान भी मेरी जिज्ञासाओं का समाधान नहीं कर पाते थे । फिर भी जिन विद्वानों से मुझे प्रश्ना और सहयोग की प्राप्ति हुई वे हैं—बंगला—डा० सुनीतिकुमार चटर्जी डा० सुकुमार सन और स्व० डा० शशिभूषण दासगुप्त असमीया—प्रा० महेंद्र बरग, डा० महेश्वर नआग और श्री श्रीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य उडिया—प्रा० प्रह्लाद प्रधान और डा० रामश्वर महापात्र हिन्दी—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी डा० भगीरथ मिश्र डा० विष्णुकांत शास्त्री प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र डा० गोपीनाथ तिवारी डा० रामश्वर दयालु अग्रवाल और डा० रामान्त भारद्वाज । अपन इन प्रिय छात्रों से भी सहायता प्राप्त हुई—श्री सुंदर नान क्यरिया, डा० भूपति शर्मा जाशी श्री दीपचंद्र, श्री रामशरण गौड़ और श्री रमशचंद्र शर्मा ।

मरे प्रकाशक श्री आर० एम० चौहान जसे प्रकाशना न लकाधिपत्य धारी मन्त्र प्रकाशक की गद्दी का मनभारने का प्रयास किया है मुझे इस बात की प्रमत्तता है ।

ग्रन्थ की सीमा बंध जान के कारण बहुत सी बातें अन्तर्ही रहे गयीं ।

हिन्दी विभाग

—रमानाथ त्रिपाठी

हिन्दी विश्वविद्यालय, दिल्ली ३

भूमिका

भारतीय जन मानस का पथ प्रशस्त करने वाला, उसे मयादा और शाश्वत जीवन मूल्या का बाध कराने वाला यदि कोई एक ग्रन्थ है तो वह महाकाव्य रामायण है। निस्सन्देह रामायण एक युग विशेष की रचना है उसका युग-बोध बाल की दृष्टि से सीमित कहा जा सकता है, किन्तु युग-मत्य और युगातीत सत्य की नमोटी पर रामायण काल-सीमा से बावद्ध काव्य नहीं है। उसका वैशिष्ट्य यही है कि वह देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर चिरन्तन जीवन-मूल्या का बाध करान में समर्थ महाकाव्य है। धर्म, राजनीति, समाज-दर्शन, कतव्यनिष्ठा, पारस्परिकता, व्यावहारिकता, त्याग, तितिक्षा, बलिदान और उदात्त जीवन मूल्या का यदि एकत्र महाहार दखना हो तो वह रामायण में ही सम्भव है। देश विदेश के शतसहस्र महाकाव्या में कोई दूसरा काव्य नहीं है जो ऐसी उदात्त और अबदात भूमि पर प्रतिष्ठित है।

विशाल भारत भूमि के सभी प्रदेशों और अचला में रामायण की कथावस्तु पर आघूत रामकाव्या की रचना हुई है। रामायण उपजीव्य और प्रेरक ग्रन्थ रहा है। उसके प्रतिपाद्य को आधार बनाकर अमरुथ कविया ने रामायण सदृश काव्य प्रथा का प्रणयन कर जपन कृतित्व की सायकता का अनुभव किया है। वस्तु, नेता और रम की भूमि में मौलिक परिवर्तन न करन पर भी रामायण रचना की प्रेरणा में अन्तर रहा है और कुछ रामायणों में नेता के अतिरिक्त वस्तु और इसके वचिन्ध-मूलक परिवर्तन भी किये गये हैं। जन-कथाओं में रामकथा के आमूल परिवर्तन भी लक्षित किये जा सकते हैं किन्तु रामकथा का दिव्य आकषण वहाँ भी सबत्र व्याप्त है। वस्तुतः राम और रामायण की कथा के जीवनादर्शों के विषय करन पर भी रामकथा के ग्रहण का लाभ-सवरण जन कवि-भी नहीं कर सके हैं।

द्रविड भाषाओं में रामकाव्य की लोकप्रियता और रामायण के अनुसरण की परिपाटी आज भी विद्यमान है। आधुनिक युग में भी रामायण की कथावस्तु

का आपुनिक जीवन मूल्य के सम्बन्ध में पुरासंगत ही रहा है और वही तब तब अनुसूचक नवीन रामायण की रचना हुई है। रामभाषा ही है रामायण का सत्य षट् रूप रामचरितमानव उपलब्ध है। मही बागी में भी एक स्तर में अधिक वाच्य राम-कथा का उपनीत्य साक्षर विमल है। मध्य में भारतीय जनमानस के सबसे अधिक सामीप्य यहाँ बाँध बाँध मगन रहा है ताबत रामायण है और भाव भी विगी व विगी रूप में इस रूप की जगता में वह नुदा हुआ है।

रामचरितमानव की रचना मुगल शासन-काल में हुई। शास्त्राधीन तुलसीदास ने इस युग का अन्तर्गत युग कहा है किन्तु स्वयं वे उग युग की दानिमा में लक्षणा अंग स्फुक्त और अभावित रहे। उनकी दक्षिण-राजधानी-गत शासन-जीवन मूल्य पर कटित रही और वाल्मीकि से प्रेरित हुए पर भी तुलसी। मुगलत्व की अवतन्ता गटाँ की। इस्लामी मस्जिदों के प्रवेश प्रहार का हिन्दू जाति विमल रूप में भय रही था वह जात दर्शी कवि तुलसी की आँगा से आभय गटाँ था। पत्ता तुलसी ने प्राण और पीडा से कराँती हुई हिन्दूजाति की आस्था और विश्वास की धानी के रूप में रामचरित मानव की भेंट दी। मध्य के विमल मध्य काल की शक्ति तुलसी के राम में इमीनिक अधिक प्रवेश हुई कि उग युग का राम सभी साक्षात्कार मन गपता था जब वह आत्म मयम और आत्म शक्ति के चरम प्रभाव में जनता का विमुक्त कर गये। तुलसी ने इसी प्रकार के रामचरित का स्रजन कर अपनी कृति का सर्वाधिक साक्षरिय बना लिया। रामचरितमानव की लोकप्रियता व रामायण के विविध संस्कृत वाच्य रूपा का भुवा सा दिया और उत्तर भारत में रामचरितमानव केवल वाच्य प्रथम रहेकर धार्मिक उपांगना का पूज्य प्रथम बन गया। इस प्रथम की लोकप्रियता ने भारतीय परिवेश को बड़ा गहराई के साथ स्पष्ट किया और विछले चार सौ वर्षों में इस प्रथम उत्तर भारत की जनता का जितना उपकार किया उतना किसी दूसरे प्रथम ने नहीं किया।

रामचरितमानव के स्वातन्त्र्य की यह व्यापक परिष्कल्पना सम्भवतः तुलसी ने भी नहीं की होगी—उत्तम स्वातन्त्र्य जितने व्यापक रूप में समष्टि-मुख्य में परिवर्तित हुआ उतने व्यापक रूप में किसी प्रचारीहिष्ट कृति का भी भावद न हुआ है। तुलसी प्रचार से सबका निर्लिप्त राज्याश्रय से विमुक्त एकात्म साधना में लीन रहेकर भी लोकनायक बन सके, यही उनकी नैसर्गिक प्रतिभा का ज्वलत प्रमाण है। रामचरितमानव के द्वारा तुलसी ने समाज को अपने घर में जिस समप्रता के साथ समो लिया था उतनी समप्रता से कोई दूसरा कवि समाज को न तो ग्रहण कर

सका था और न प्रभावित ही। आज हिंदी साहित्य में रामचरितमानस केवल महाकाव्य मात्र न होकर साहित्य के आदर्शों का प्रतीक बन गया है, जीवनादर्शों का प्रतीक तो वह प्रारम्भ से ही रहा है।

रामचरितमानस के मद्दश ही भारत की अथ भाषाओं में राम-कथा पर आधुत काव्य लिखे गए। यदि सभी अथ और प्रदेशों के रामकाव्यों का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जाय तो भारत की भावात्मक एकता का पक्ष पुष्ट होगा और भारतीय जन-मानस की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना में अध्ययन में बहुत योग मिलेगा। किन्तु यह कार्य बहुत विशाल और माघन-समय-मापेक्ष है। केवल पूर्वांचलीय रामकाव्यों का अनुशीलन करना भी एक विराट् योजना का अनुष्ठान समझना चाहिए। बड़े हृष का विषय है कि डा० रमानाय त्रिपाठी ने पूर्वांचलीय रामचरित काव्य और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का अथ की प्रति भाओं के मूल्यांकन का स्तुत्य प्रयास किया है।

पूर्वांचलीय भाषाओं में बंगला, उडिया और असमिया में लिखित रामचरित काव्यों का समावेश होता है। डा० त्रिपाठी ने इन तीनों भाषाओं में रामकाव्यों का अध्ययन कर इनका तुलनात्मक विवेचन इस शली में किया है कि हिंदी का पाठक इन रामकाव्यों का हृद ग्रहण करता हुआ रामचरितमानस के साथ उनके माध्य वषम्य से परिचित हो जाना है। डा० त्रिपाठी ने अपने अध्ययन में मून भाषा की प्रतिष्ठा का आशय दिया है, अनूदिन कृतिष्ठा का नहीं। अतः उनके विवेचन और विश्लेषण में प्रामाणिकता है। हिन्दी के पाठक बंगला के कृतिष्ठा रामायण, अथ मीष्ठा के माघव-क-दनी, शकरदव माघवदव रचिन मप्तकाण् रामायण और उडिया के बलरामदान के दाण् रामायण में यत्किंचित परिचित हैं। सामान्य पाठक इनके नाम तो शायद जानता है किन्तु इनके प्रतिष्ठा, शनी, वनात्मक मी-दय आदि का उमे कोई गान नहीं है। डा० त्रिपाठी ने विद्वत्तापूर्वक इन पणा का वनानिक पद्धति से विवेचन अपन शाय प्रब-ध में किया है। उन्होंने बंगला रामायण के अध्ययन के लिए बंगला भाषा में लिखे गए तगमग २५ अथ का पयालोचन किया है। कृतिष्ठा रामायण की तुलनात्मक समीक्षा में कई विस्मयजनक तथ्य उजागर हुए हैं जो भारत के लोकमानस की एकता के परिचायक हैं। इसी प्रकार एक दजन असमिया रामकथा की रामचरितमानस के साथ तुलना प्रस्तुत की गयी है। उडिया के आधे दजन अथ उनके अनुशीलन में समाविष्ट हैं और उनकी तुलनात्मक दृष्टि को मायक बनाना है। डा० त्रिपाठी ने तटस्थ रहते हुए तीनों भाषाओं की रामकथा को

ग्रहण किया है। तुलना में भी उनकी दृष्टि स्वप्न और अनादि है। राम का सघन जिस अनुसंधान का प्राण हाथा है वह ध्येय तक पहुँचने का साधन है। जो अवितथ तथ्य की राह से चलने में अग्रगण्य है वह अनुसंधान का कलात्मक-कर्म ही नहीं समझता। तुलनात्मक समीक्षा के लिए तटस्थता पट्टी बन है। रामचरितमानस के प्रति माह्र हाने पर भी उत्तरी शक्ति-नीमा का क्या दा० विपत्ती को सतत बना रहा है और उन्होंने मातृ के प्रति अपनी विपत्ती को अगुण्य रखा है। ही उगली तुलनात्मक समीक्षा की है।

मुझे विश्वास है कि यदि पूर्वाचलीय भाषाओं के मन्त्री विपत्ती दा० त्रिपाठी के शोध प्रबंध को पढ़ें तो उन्हें पता चलेगा नहीं बनेगा। उत्तरी विवेचन गंभीर पर प्रहार करने का किसी को अवसर नहीं मिलता। इतिहासी रामायण की हिन्दी में चर्चा हुई है सराहा भी हुई, उसे एक ध्येय की समझा जाता है किन्तु तुलना के विषय पर कुछ ऐसे तथ्य उभरकर सामने आयें जो साहित्य विपत्ती के लिए उपयोगी हैं। इसी प्रकार असमिया और उड़िया के रामकथनों को भी त्रिपाठी जी ने तुलनात्मक कसौटी पर परखने का प्रयास किया है। मैं उन्हें एक साधन प्रबंध को भारतीय भाषाओं—विशेषतः पूर्वाचलीय भाषाओं—और हिन्दी के मध्य एक सतु मानता हूँ। एक ऐसा सेतु जो राम के माध्यम से भाषा की मित्रता को भुक्तान में समर्थ है। जो भाव के स्तर पर भाषा के विषय को विस्मृत करा देता है। इस प्रकार के सेतु बंध की आज भारत का आवश्यकता है। साहित्यिक शक्ति का ध्यायम राजनीतिक सकीण दलबन्दी से बहुत व्यापक होता है। भाषा की सीमाएँ यदि कहीं विलीन होती हैं तो वे साहित्यिक भाषा-बोध के व्यापक शक्ति में ही विलीन होती हैं। दा० त्रिपाठी ने इस निशा में सराहनीय प्रयास किया है वे हिन्दी जगत के ही नहीं धरत पूर्वाचलीय प्रदेशों के भी साधुवाद के पात्र हैं। मैं उनकी साहित्य-साधना की प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इस दिशा में और दूर तक आलोचक विकीण करेंगे।

—विजयेन्द्र स्नातक

विषय-सूची

१ पूर्वांचल परिचय १७

पंच गौड और पूव भारत—१७ / प्राचीन असम—१८ / प्राचीन बंगाल—
२० / प्राचीन उड़ीसा—२३ / पूर्वांचल की भौगोलिक स्थिति—२५ / पूर्वांचल के
जन और उनका प्रभाव—२६ / पूर्वांचल की भाषाएँ और अवधी—३५ / पूर्वांचल
का आर्यीकरण एवं आयभाषा प्रवेश—३८ / पूर्वी मागधी भाषाभाषा—असमीया
उड़िया और बंगला की ध्वयात्मक विशिष्टताएँ और पारस्परिक रूपात्मक भेद—
४१ / अर्धमागधी से उत्पन्न अवधी और पूर्वी मागधी भाषाओं से समता—४५ /
पूर्वांचलीय भाषाओं के साहित्य का इतिहास—सम्पूर्ण साहित्य के इतिहास के वर्गी
करण की रूपरेखा और प्राक रामायण कालीन (आदियुगीन) साहित्य—चर्यागीति,
टाकलना-वचन—४७ ।

२ धर्मसाधनाएँ और रामायण ६०

पूर्वांचल की साधनाएँ—६१ / असम की धर्म साधनाएँ—६५ / बंगाल की
धर्म-साधनाएँ—७० / उत्तर की धर्म साधनाएँ—७५ / हिंदी भाषी क्षेत्र की धर्म
साधनाएँ—८१ / राम के चरित्र का महत्त्व—८२ / रामायणों का अपने क्षेत्रों में
महत्त्व—८५ ।

३ रामचरित-लेखकों का जीवन-परिचय ९१

असमीया रामायण-लेखक—माधव-कन्दली (मुख्य लेखक)—९१ / शंकरदेव
(उत्तरकाण्ड-लेखक)—९६ / माधवदेव (आदिकाण्ड लेखक)—१०१ / बंगला-
रामायण लेखक—श्रीतवास ओभा—१०३ / उड़िया रामायण-लेखक—बलरामदास
—११० / तुलसीदास का जीवन-परिचय—११३ ।

४ युगोन परिपेश का प्रतिबिम्ब १३६

राजनीतिक प्रतिबिम्ब—शासक के अत्याचार और हिंदा-बेगता रामायणा म उसकी भक्तक । रणचातुर्य-ज्ञान । उडिया रामायण म रण-नीति एव कौशल का सुन्दर परिचय—गरम तेल आदि की तयारी घुम्वक द्वारा बाण निवातने की पद्धति, वयबाण बनाने की पद्धति, तालपत्र पर पत्र-लेखन—१३६ ।

धार्मिक प्रतिबिम्ब—शिव—रामायणो म शिव—रक्तमय उपासना की आर सकेत, समर्पित शुद्धरूप शैव-वेणव ममन्वय । शक्ति—कोमल एव उग्र दा रूप । कृष्ण—रामायणा म कृष्ण भक्ति का प्रभाव उडिया पर जग-नाथ स्वामी का प्रभाव । अद्वाहृष्य साधनाभा की उषेण, उडिया रामायण की योग साधना एव तत्र-मत्र अय देव एव सामान्य निश्रुत—१४४ ।

सामाजिक प्रतिबिम्ब—धरु—उडिया म धण, विद्रोह-नारी-विषयक धार णाभा म समानता, उडिया नारी का माधुर्य । स्नान प्रसाधन—सिद्धर, काजल, आलता, हिगुल, पत्रावली—असवातिलका । सस्कार—१२ सस्कार विवाह सस्कार तथा राचक पद्धतियाँ / असमीया०—अधिवाम हृदिना स्थायामण्य, धुमन्टि, पट्टी-पूजन—हाग परिहाग, बामा धर बामि बिये विन्—स्वागत मुत्तग्नन काल रात्रि, कमुमशय्या / उडिया०—वधू मुगग्नन, वर की सज्जा हास-परिहास हृदी लेप लवण चउरी, कयादान प्रमत्रीडाए—छूत, सहभोजन मधुशय्या और चतुर पत्नी की प्रतिज्ञाएँ । मानस—लग्नपत्रिका वर की सज्जा और शोभायात्रा, अगवानो, द्वारवार, पाणिग्रहण और कयादान, लौकिक प्राचार—सहकीर, कोहबर जवनार, कया विदा वधू स्वागत, प्रमत्रीडाएँ—चतुर्थी—१५० ।

मनोरजन—पृषक-पृषक अनक मनोरजन । विशय—उडिया० म मृगया का सजीव बणन, मानस मे शौगान तथा बाज द्वारा मगया—१६६ ।

स्थानीय चित्रण—चारो ग्रन्था के पृषक चित्रण के अतिरिक्त पूर्वाचल की कुछ समान विशिष्टताएँ—उलुध्वनि, नेत्र और शलचूडी / —१७१ ।

५ चरित्र चित्रण १७६

मूलगत तथा पारस्परिक साम्य वयम्य—१७६ । मुख्य पात्रो का चरित्र चित्रण—राम—१८२ / लक्ष्मण—२०२ / भरत—२१० / दशरथ—२१४ /

विषय-सूची

हनुमान—२२० / रावण (प्रतिनायक)—२२३ / सीता—२३३ / बौणल्या—
२४६ / कवेयी—२५६ / अयपात्र—२६० ।

६ कथा विधान २६३

कथाओं का पारस्परिक साम्य वपम्य, इसके कारण और नूतन प्रसंगा की
ओर इंगित करते हुए कथावस्तु का वाण्डानुसार अध्ययन—२६३ / आदिकाण्ड—
२६६ / अयोध्याकाण्ड—३११ / अरण्यकाण्ड—३२१ / किष्किन्ध्याकाण्ड—३३४ /
सुन्दरकाण्ड—३४३ / लकाकाण्ड—३५८ और उत्तरकाण्ड ३७८ ।

७ काव्य सौष्ठव ३६२

भाव व्यजना—३६२ प्रकृति चित्रण—४१६ / सवाद-सौंद —४२३ /
रचना बौणल—भाषा, अलंकार और छन्द—४२८ ।

८ दर्शन और भक्ति ४६०

राम सीता विषयक धारणाएँ—मगुण निगुण, माया, समार, विष्णुत्व त्रिदेवा
म उच्चस्थान, राम का कृष्णत्व—अममीया के अद्वैत कृष्ण, उडिया के जगनाथ ।
मानस म राम के ब्रह्मत्व का उनयन । सीता—४६५—अवतार—८६६ / नामकीतन
४६६ / भक्ति—ब्रह्म कृष्णामय, दीनता प्रकाश, निष्काम भक्ति, भक्ति म विद्वलता,
भक्ति जनादालन गास्वामी जी की विशेषताएँ — पान भक्ति का समवय, भक्ति
म सामाजिकता एव ननिक आदश—४७२ ।

उपसंहार—४८०

(समस्त शोध प्रबन्ध का सार)

सहायक ग्रन्थों की सूची—४८६

शुद्धिपत्र—४६७

पूर्वांचल-परिचय

पूर्वांचल का इतिहास और भूगोल

निरक्तकार याम्य (७ वीं शताब्दी ई० पू०) एवं पाणिनि (५वीं शताब्दी ई० पू०) दाता ने ही मगध की आर के प्रदेश को प्राच्य कहा है। अपनी गुद-वाणी का रूप करने वाले आर्यों की दृष्टि में प्राच्यदेश के लोग सुसंस्कृत न थे।

पंच-गौड और पूव भारत—महाभारत में जिसे पांच राज्या का वर्णन हुआ है वह हम प्राच्य-देश के अंतर्गत रख सकते हैं। महाभारत के अनुसार दीर्घतमा न सुष्णा के पुत्र से पांच पुत्र—अग, वा, कलिग, पुण्ड्र और मुह्य उत्पन्न हुए। वे परस्पर सलज्ज पांच राज्या के मिहामन पर अभिषिक्त हुए। राज्या का नामकरण उनके ही नामों के अनुसार हुआ। श्री गैल-द्रकुमार घाष ने इन पांच राज्या के क्षेत्रों का प्रकार बताया है—

- (१) अग—भागलपुर, पूवमुगेर, सथान-परगना, मालदह और वीरभूम का कुछ अंश। इसकी राजधानी चम्पा बताया गयी है।
- (२) वा—वर्तमान बांग्लादेश का लगभग सम्पूर्ण प्रदेश।
- (३) कलिग—सुवर्णरेखा से गोदावरी तक फैला हुआ समुद्रतटवर्ती प्रदेश।
- (४) पुण्ड्र—उत्तर वा।
- (५) मुह्य—मीरभूम से बंगालसागर पर्यंत वर्तमान पश्चिम वा।

इन पांच राज्या का मिला कर पंच गौड कहा जाता था। गौड देश के समुन्नत दिना में भारतवास के कुछ अल्प राज्य भी अपने-की गौड देश के अन्तर्भूक्त मानते थे। पंचगौड तथा इसके उत्तर में प्राग्ज्योतिष एवं पश्चिम में मगध और

१ गैल-द्रकुमार घाष—भारत यात्रि—दशम २७, बंगाल १२६५।

(२) कालिकापुराण (५१ ६४) के अनुसार ग्रहा न सवप्रथम तारो की यहा सण्टि की थी। यहा ज्योतिषशास्त्र की प्रधानता रही है। गौहाटी का नवग्रह मन्दिर इसकी पुष्टि करता है। (३) डा० वाणीकान्त बान्नी इस शब्द का उत्समून आस्ट्रो-एशियाटिक के 'पगर जुह (जो) निक्' शब्द म गोजत हैं, जिमका अर्थ है 'ऊँचे ऊँचे पहाडो का देश।'।

कामरूप - मध्यजाल म असम देश का काम रूप नाम प्रचारित हुआ। शहर की कोपदृष्टि मे भस्मीभूत काम ने यर्ही रूप प्राप्त किया था। इसीलिए इसे कामरूप कहा गया। कालिकाग्राम'न रघुवश' म प्राग्ज्योतिष और कामरूप दोनों नामा का प्रयोग किया है। प्रयाग म समुद्रगुप्त के स्तम्भ—लेख (३५० ई०) म कामरूप की प्रत्यन्त देश कहा गया है। कालिका-पुराण और योगिनीतंत्र म कामरूप नाम आया है। चीनी-यात्री ह्वेनत्स्यांग और अलबरूनी ने भी इसका उल्लेख किया है। इन यात्रियों के समय म कामरूप अथवा कामरुन नाम प्रचारित रह हागे। चीनी शतादी स ११वीं शताब्दी तक दश के दोनों नाम मिलते हैं—प्राग्ज्योतिषपुर एव कामरूप।

नीललोहित—इस दश की पहाडी (नीलाचल) नीले रंग की है और नदी है लातरंग की, इसीलिए ब्रह्मपुत्र का नाम लाहित्य भी प्रचारित ह। कहा जाता है कि परशुराम न यहाँ अपना फरमा घोषा था जिससे यह नदी लाल हो गयी थी। नदी का यह नाम महाभारत मे आया है। परशुराम कुंड पर माघपूर्णिमा के दिन आज भी मला लगता है। यह स्थान मदिया स ४० ४५ मील दूर जगन मे है।

०सलिया का प्रदेश कामरूप के इतिहास के कई स्मारक अपने गहन बना म छिपाये है। कुण्डल नदी के तट पर रक्मिणी के पिता भीष्मक की राजधानी कुण्डलपुर बतायी जाता है। मिशमी नामक एक पहाडी जाति रक्मिणी का अपन गात्र की बना बताती है, कृष्ण से अपनी प्रणय को स्मृति म यह जाति अब तक अपने सिर पर चाँदी की पट्टी बाधती है जिसे 'कोपाती' कहत हैं। 'प्राचीन रिपोर्टों स पता चलता है कि इस शतादी के प्रारम्भ म भा यहा अति प्राचीन परकाटे आदि क सण्टहर व किन्तु जहाँ इनके पाय जान का वणन था, वहा पर नयी मर्बों के नवशा म गिवा है इमेनेट्रैबल फास्ट—असोष जगत।'^१

कहते हैं कि यहाँ के राजा नरकासुर के साथ कृष्ण का युद्ध हुआ था। नरकासुर न ही कामाख्या का मन्दिर उतवाया था, जिमका जीर्णोद्धार १५६२ ई० म कोच राजा नरनागयण न किया। जब शिव मती के प्रेम म पागल हाकर उनका शव कंधे पर लिए हुए घम रह थ किष्णु न अपने मुस्थान चथ स शव के ११ टुकड

१ रघुवश—६ ६४।

२ अर्थ—अरे यापावर रहेगा या, प० ८।

कर लिये थे। त्रिस्त स्था पर गता की यानि कट पर पतिवृद्धि वामानस का मन्दिर बनाया गया है।

ऊषा घनिष्ठ की प्रेम तथा का सम्बन्ध नीरोग प्रवेश में जाड़ा जाता है। ऊषा शोणितपुर के राजा वाणामर की पुत्री थी और घनिष्ठ कृष्ण का पुत्र था। भागवत और हरिवंशपुराणों में दोनों पक्षों का सुद्ध और ऊषा घनिष्ठ का पश्चिम रूप में मधुप के अवतार का वर्णन है।

अधमम का मधुप्रथम एतिहासिक उल्लेख चीनी यात्री—मुघानचांग का यात्रा-वर्णन है। इसने समय में भास्कर वर्मा का उल्लेख किया था। १०वीं में १२वीं शती तक इतिहास उपलब्ध नहीं होता। तांगपत्रों के समाप्ति पर राजतरंगिणी अधमम तथा के वर्णन में छिटपुट ऐतिहासिक संकेत मिल जाते हैं।

अधमम देश का राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षत्र में आहोम राजाओं की बहुत बड़ी दान रही है। इस दान में समय समय पर कछारी काय चीनीया घनिष्ठ अनेक जातियाँ का राज्य रहा किन्तु सबसे अधिक स्थायी राज्य आहोम जाति का था। इस जाति ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया था।

आहोम जाति की सबसे बड़ी विशेषता है—वशावली और इतिहास की रचना। इतिहास की इनकी आहोम भाषा में बुरजी कहते हैं और आज भी यह शब्द असमीया भाषा में इतिहास शब्द का पर्याय है। इन लोगों ने पेडा की छाल पर आहोमी भाषा में बुरजियाँ तय करायी थी हिन्दुत्व स्वीकार कर लाने पर इनकी भाषा असमीया हो गयी थी। इनके कुल ऋता सोमदेव थे। इनके मुहम्मद राजा ने १४७६ ई० में गोलावास्तु का परिचय प्राप्त कर लिया था और यहाँ के लोग बहूक और तोप के निर्माण में दक्ष हो गये थे। १६वीं शताब्दी के अन्त में इन्होंने अठकोना सिक्का भी चलाया था। स्वापत्य में भी इन राजाओं की विशेष रुचि थी।^१

१३वीं शताब्दी से ही इस प्रदेश पर मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हो गये थे किन्तु सुन्दर सेना प्रकृति रोग और सघन वना आदि के कारण यह देश बहुत कुछ दुर्गम ही रहा।

प्राचीन बंगाल

प्राचीन काय में बंगाल कई प्रदेशों में विभाजित था। (१) बग (२) राड और (३) बरेन्द्र (गुण्ड अथवा गौड)। मुसलमानों ने सबसे प्रथम समस्त प्रदेश का नाम बंगाल अथवा बंगाला प्रचारित किया।^२ किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मुसलमानों ने इस देश का नामकरण किया। यह नाम उनका दिया हुआ नहीं है।

१ हेम बरमा—दि रेड रिवर एंड दि ब्लू हिल, ५०।

२ रामानाथ त्रिपाठी—इतिहासी बंगला रामायण और रामचरितमानस—१।

'सदुक्ति कर्णामृत' नामक ग्रंथ में बंगाल नामक कवि का नाम आया है, साथ ही बंगाल देश का भी नाम है। किमी किसी ने बंगाल शब्द की व्युत्पत्ति बंगपाल शब्द से अनुमानित की है। बंग का अर्थ है जलपूर्ण देश, उमका पालक बंगपाल।^१

बंग—जिन तीन अचला का समुक्त कर बंगाल गठित हुआ है, उनमें बंग प्राचीन है। बंग शब्द की उत्पत्ति बंग जाति से हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है। बंग शब्द का प्राचीनतम उल्लेख 'ऐतरेय आरण्यक' (२-१-१) में किया गया है जिसमें कहा गया है कि बंग, बगध और चेरपाद के लोग पक्षी हैं। या तो इन जातियों का टोटम पक्षी था अथवा ये जातियाँ पक्षियाँ जसी अव्यक्त वाणी बोलती थी, जिसके कारण कि इन्हें पक्षी कहा गया। यह भी हाँ सत्यता है कि ये जातियाँ पक्षियों के समान ही यायावर थीं।^२ बोधापन घमसून में पुण्ड्र, कनिंग तथा अर्थ देशों के साथ बंग का भी अग्रगण्य देश माना गया है, जहाँ जान पर प्रायश्चित्त करना पड़ता था।^३ कुरुनेत्र के युद्ध के समय यहाँ के राजा समुद्रसन ने एक विशाल हस्ती-बाहिनी के साथ कौरव पक्ष की ओर से युद्ध किया था। इस प्रदेश पर शिशुनाग मौर्य, गुग, कण्व और गुप्त वंशों का राज्य रहा था। समुद्रगुप्त ने शासन की सुविधा के लिए बंग को समतट और देवक नामक दो समतट शासित प्रदेशों में विभाजित किया था। यहाँ पराक्रमी यमन वंश का भी राज्य रहा। बंगाल में प्रसिद्ध स्मृतिकार भवदत्त भट्ट (गड निवासी) इस वंश के मंत्री थे।

सम्पूर्ण बंगाल ही बंग कहलाता है किन्तु प्राचीन काल में बंग का अर्थ केवल पूर्वी बंगाल था। अब यह प्रदेश बंगलादेश में है।

राठ—राठ और सुहा जातियों के नाम पर पश्चिम बंग को राठ और सुहा कहते थे। जनों के प्राचीन ग्रंथ आचाराग सूत्र में (१-१ ६४) में यहाँ के निवासियों की निन्दा की गई है। राठ शब्द राष्ट्र का अपभ्रंश है। महाभारत-युग में यह अंग और सुहा नामक दो राज्याँ में विभाजित थी। सुहाराज द्रौपदी के चौर-हरण के समय राजसभा में उपस्थित थे, युद्ध समय पश्चात् अंगराज कर्ण ने इस पर अधिकार कर लिया। राठ भागीरथी के पश्चिम में है। उत्तर राठ को ब्रह्म और दक्षिण राठ का सुहा भी कहते थे।

वरेद्र (पुण्ड्र)—उत्तरी बंग को वरेद्र कहते थे। वरेद्र का प्राचीन नाम पुण्ड्र है। ऐतरेय-ब्राह्मण (७ १८) में आध्र, पुलिंद शबर आदि जातियों के साथ पुण्ड्रा को भी दस्यु कहा गया है। आज भी यहाँ पूड नामक जाति रहती है। डा० मुकुमार सेन का कहना है कि सम्भवतः इनके इन्के खेती में निपुण होने के कारण

१ मुकुमार सेन—वाङ्माला-साहित्य इतिहास (१) पृष्ठ ५।

२ वही, पृ० १।

३ रमानाथ त्रिपाठी—कृत्ति० बंगला रामायण और रामचरितमानस, प० २।

ही शब्द का नाम पूड हुआ। यह भी हो सकता है कि ईश्वर का ही नाम पहले पुण्ड हो और इसकी खेती करन के कारण इस जाति को पुण्ड या पूड कहा गया हो।^१ यही सम्भव है क्योंकि उत्तर प्रदेश में भी कहीं कहीं इसका पाडा कहते हैं। बरेल्ल का एक और नाम गौड है। यदि यह शब्द गुड से बना हो तो ३० सन पुण्ड शब्द का ईश्वर सम्बन्धित होना अधिक पुष्ट मानत है।

गौड—द्वारा शताब्दी में गुप्त राज्य के पतन होने पर एक नूतन गुप्तवंश ने राज और बरेल्ल का एकत्र कर राज्य किया था। लिखित इतिहास का यही प्रथम साक्ष्य गौड काव्य है।^२ सातवीं शताब्दी में बराह मिहिर ने गौड का वग उत्पन्न, वाशी वाशल से स्वतंत्र जनपद बताया है। शासनतंत्र में वग से भुवनेश्वर तक का देश गौड कहा गया है। ८वां शताब्दी के अनधराघव नाटक में गौड की राजधानी चम्पा बताया गया है जो किसी समय वग की राजधानी थी। ११वीं शताब्दी में एक गिनातण्ड के अनुगार घगदश भी गौड राज्य के अन्तर्भूक्त था। हिन्दू शासन युग के शेषार्ध में सारा वगान गौड और वग इन दो प्रधान भागों में विभक्त हो गया था।

बेगला भाषा का प्रथम दर्शी नामकरण गौड भाषा हुआ जा कि १६वां शताब्दी से १६वीं शताब्दी तक प्रचलित रहा। मधुसूदन दत्त ने उगाल के निवामिया का गौड जन कहा है। विन्शिया द्वारा वागला या इससे मिलान-जुलने नाम प्रचारित हुए। श्रीगणेशपुर के मिश्रणों के कृतिवागी रामायण प्रथम बार प्रकाशित हुई थी जिसके मगपट्ट पर लिखा था— कात्तिवाग बर गानि भाषाय रचित।

प्राचीन वगान का अधिकांश भूमि दक्षिण एवं मध्य में संपूर्ण थी। यहाँ के रहनवास कृष्ण काल कृष्णियुक्त नक्षत्राभ्यास प्राचीन एवं अमम्य जगती थी। वगान राज्य में प्रायः सभ्यता गवप्रथम जन श्रमणा न पहुँचाया। जना के प्राचीनतम अर्थ साधारण मूल्य में उत्पन्न है कि जब महावीर जी (ईसा ५६०-५००) राड़ एवं गुड राज्य में धर्म प्रचार के दिग्गज तो वहाँ के निवामिया न छूट्ट ध्वनि कर देना पाए। कुंटा शोभा लिये। धर्मिता निय जन भिगना का भी दुग्तर राड़ राज्य वागिना एवं युगा के हर म वगि का नाटी मकर चरना पटना था।^३ एतद्य परात्त एतद्य शास्त्रा बोरायन पममूय मन्भारत शीवाकावाय कृत साधारण मूल्य को टारा के अनुगार पना के निशाना वगान पना श्यु मगान्यानि (साहित्य

१. एतद्भाषा मूल—वगाना माहित्य इतिहास पृ० - ।

२. एतद्भाषा मूल—वगाना माहित्य—वगान पृ० १३६५ वगान मग—पृ० ६०० ।

३. एतद्भाषा मूल—१३६६ (२३ म २६ पृ०) ।

आर्योक्त' ?) म्लेच्छ और अनाय बताय गये हैं।^१ यहाँ की निम्न-जातियाँ म ननत्ववेत्ताया न किरात (तिब्बत बर्मा) निपाद (आस्ट्रिक) और द्रविड जातियाँ का रक्न-सम्बन्ध खोज निकालन का प्रयास किया है।

मौर्यकाल से ही आय सभ्यता का प्रचार पूव की ओर जोर पकड़ चला था, गुप्त-काल में पौराणिक सस्कृति का विकास हुआ। पाल-वंशीय बौद्ध शासकों ने कई शताब्दी तक बंगाल पर राज्य किया। उनके पश्चात् सेनो के राज्य-काल में स्मृति शासित हिन्दू धर्म ने विशेष पतिष्ठा लाभ की। सेनो को परास्त कर मुस्लिम शक्ति बंगाल पर अधिकार कर गयी थी।

प्राचीन उड़ीसा

उड़ीसा राज्य तीन प्रदेशों से मिल कर बना है—(१) उड़ु या ओड़ या ओड़ु, (२) उत्कल और (३) कलिंग। ये तीनों नाम पुरानी तीन जातियों के नाम के आधार पर हैं। कलिंग या उत्कल जातियाँ अब या तो लुप्त हो गयी हैं अथवा आत्मसात् कर ली गयी हैं। उड़िया लोग को अभी भी उत्कल एवं कलिंग नामों के प्रति मोह है। भुवनेश्वर का विश्वविद्यालय अपने नाम के साथ उत्कल विशेषण जुड़े हुए है। यहाँ जो पुरस्कार दिये जाते हैं उनका नाम कलिंग हाता है।^२ विद्वानों का मत है कि ओक्कल एवं आडिडश द्रविड शब्दों से ससृजन उत्कल एवं ओड़ु शब्द बन हैं। डा० हरेकृष्ण महताब कनड के शब्द ओक्कलगर (कपक) एवं तेलुगु शब्द ओडिडसु (थमिक) के आधार पर यहाँ की पुरानी जन जातियों को कूपक या थमिक बताते हैं। इसी प्रकार वे चिलका भील के दक्षिणी तट पर बसी हुड़ जाति कपुम और कलिंग अथवा कालिजी का सम्बन्ध कलिंग जाति से जोड़ते प्रतीत होते हैं।^३

ओड़ु—इस प्रदेश की प्राचीन सीमा महानदी की घाटी एवं सुवर्णरेखा नदी के मध्य थी। इसके अंतर्गत कटक सम्भलपुर के जिले तथा भदिनीपुर का कुछ अंश आता है। इसके पश्चिम में गाडवाना उत्तर में जशपुर और सिंहभूम के वंश-वंशीय राज्य, पूव में समुद्र एवं दक्षिण में गजाम की स्थिति थी। प्रतापी राजाओं के शासन काल में सीमा का विस्तार भी हो जाया करता था। श्री नीलकण्ठ दाम ने ओड़ु देश

१ एतरेय आरण्यक (२११), एतरेय ब्राह्मण (७१८), श्रीधायन-धर्मसूत्र (१२१४), महाभारत (सभाष्य ३० २५) विशेष विवरण के लिए देखिए लेखक का ग्रन्थ—कलिंगवासी बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन पृ० २४।

२ डा० भाषाघर मानसिंह—हिस्ट्री ऑफ ओरिया लिटरेचर, पृ० ६।

३ डा० हरेकृष्ण महताब—हिस्ट्री ऑफ आरिसा, पृ० १।

का बौद्धा का उड्डाधान दंग बताया है ।^१

उत्कल—यह प्रदेश बानामोर से लोहारडागा तक राची और सरगुजा (म०प्र०) क बीच था। यह उत्तर एव उत्तर पूव उड़ीसा का क्षेत्र था। उत्कल जाति कपिशा(कसाई) नदी तक फनी हुई थी। बाल्यामोर के पण्डित लोग उत्कल गण का अर्थ बताते हैं उत+कल=कलिता=कटा हुआ। गाा की घाटी से कटा होने के कारण इसका उत्कल नाम आग्यात हुआ ।^२

कलिंग—हटर^३ कलिंग को गोदावरी और मद्दनादी के टेल्टा क मध्य भाग म स्थित मानते हैं। डा० महताव^४ हुएल्मांग के वणन के आधार पर नियत है कि यह दक्षिण पश्चिम म गान्धावी और उत्तर पश्चिम म द्रावती की शाखा गान्धोलिया क बाहर नहीं था। यह पश्चिम म आंध्र और दक्षिण म धनरटक से जुड़ा हुआ था।

उड़ीसा म एक दा और भी नाम प्रचलित रह है—कौंगद एव त्रिकलिंग। कलिंग और आठ को मिलाकर कांगद कहा जाता था। यह राज्य नया था जिसके अन्तत पुरी का दक्षिणी भाग और गजाम थे। त्रिकलिंग के विषय म त्रिभिन्न मत हैं डा० मत्तार का मत है कि कलिंग के राजा कभा-कभा अपन का कलिंग उत्कल एव कांगद का राजा मानकर इसी देश का त्रिकलिंग कहे थ किंतु वे सच म तीना के राजा होते नहीं थे ।^५

१२वा शताब्दी म गगवशा राजा अनन्तवर्मा चौड गगदव न सभी पुयक प्रशा का एक शासनमुद्र म बाँधा था। इन राजाओ के शासन म उडिया भाषा का जम हुआ एव जगन्नाथ का कट्ट मान कर नयी सत्कति का भी विकास हुआ। जब गगवशीय राजाका की राजधानी कलिंग नगर म कटक हो गयी तो उत्कल अथवा ओडुग का महत्व कम गया और धीरे धीरे कलिंग नाम लुप्त हो गया। ६१०वा शती क गंगा म आठ अथवा आठ नाम प्रयुक्त हुए हैं कानान्तर म इहा मल्ल म धारिणा अथवा अथजी का Ootssa नाम प्रचारित हुआ।

स्वय रामायण-नयक बजरामायम न कहा है—भरतस्य म उडराट्ट पथ्या का गार है। इगो को पुराणा म उत्कल दंग कहा गया है।

भारतस्य च उडराट्ट सारामही।

उत्कल देश नाम पुराण पाहा कहि ॥७-१॥

० कलिंग साहित्य म उडिया क विन्ती भा नाम का उल्लेख नहीं है। कुछ विद्वाना क मत म कलिंग का नाम एतद-राट्ट म है। मद्दनाय म कलिंग काड और

१ धी नागराजम—भावनाय मायण पृष्ठ ६।

२ आठर—विष्णु धारिणा पृष्ठ ३।

३ का ५० २०।

४ डा० महताव—१७ काँट प रिमा, पृ० ४।

५ का ५० ३।

उत्कल का उल्लेख है। शान्तिपथ म कर्लिग के राजा जिन्नागद की कथा के स्वयम्बर का वणन है। द्रौपदी के स्वयम्बर मे कर्लिग का राजा उपस्थित था। श्रुतायु नाम का राजा १० हजार हाथी ले कर पाडवा से लडा था। अर्जुन ने अग वग और कर्लिग की माना की थी। महाभारत मे कर्लिग निवासिया को क्षत्रिय किंतु साथ ही दुद्रम भी कहा गया है शायद इसलिये कि उहाने दुर्योधन का साथ दिया था।

उत्कल और ओड़ नाम वम आय है। वण द्वारा उत्कलीया को हराने का उल्लेख हुआ है। उड़ या उड़देश के लोग ने युद्ध म पाण्डवा का साथ दिया था।

स्पष्ट है कि महाभारत के रचना का म उड़ीसा के तीनी विभाग विन्कुल स्पष्ट थे।

बौद्ध जानका म कर्लिग और उत्कल के साथ ही उक्कल या औक्कल जानि और दश का भी वणन है।^१

भविष्यपुराण, भस्म्य-पुराण एव वायुपुराण म कर्लिग का नाम आया है। बौधायन न बगाल के साथ ही कर्लिग की यात्रा भी वर्जिन की थी।

पूर्वांचल की भौगोलिक स्थिति

पूर्वांचल वन, जन्तु नदी आदिम-जातिया एव खनिज पदार्थ से सम्पन्न मानसूनी-जलवायु का प्रदेश है।

असम का क्षेत्रफल २२० १५० ब० किलो० जनसख्या १ १८ करोड है। इसके उत्तर म भूटान और तिब्बत, पूव म ब्रह्मा तथा मणिपुर, पश्चिम एव दक्षिण पश्चिम म बांग्लादेश और त्रिपुरा है। इसका सामरिक महत्व है। चीन भूटान और ब्रह्मा को जाने वाले व्यापारिक मार्ग यही से होकर जात हैं।

इसका आधा भाग पहाडी और आधा भाग मदानी है। बहुत बडे भूभाग पर वन हैं। यहा अनेक प्रकार की जलवायु के वन ह। पानी बहुत बरसता है समस्या मिचाई की नहा अपितु अतिरिक्त पानी के निकाम की है। असीवा को छोड कर अथ वही ऐसी वनस्पति जीव-जन्तु एव पशुपक्षी नहीं हैं। गेंडा हाथी, जगली भसे, मेठन (जगली साँड) अनेक प्रकार के हिरण, भयकर साँप अजगर, चीता बाघ आदि जीव-जन्तुआ से इसके वन प्रदेश भरपूर है। यहाँ अनेक प्रकार की आदिम-जातियाँ निवास करती हैं जिनकी जनसख्या का प्रतिशत तीना प्रदेश के प्रतिशत से अधिक है।

बंगाल का क्षेत्रफल ८६ १६२ ब० किलो० है और जनसख्या ३ ४६ करोड है। पश्चिम मे बिहार पूव म बांग्लादेश और असम उत्तर म भूटान और सिक्किम के राज्य तथा उत्तर-पश्चिम म नेपाल की पूर्वी सीमा और दक्षिण की आर लहराना हुआ महासागर है।

अधिकांशत नदिया की लायी हुई बछारी मिट्टी से बना है। केवल उत्तरी

^१ श्री हटर—हिस्ट्री आफ ओरिसा पृ० १०—श्री एन० के० शाह की पाठ टिप्पणी।

रामचरितमानस और पूर्वांचलीय रामनाटक
 तथा पश्चिमी भाग में कुछ ऊंचाई है। उत्तरी भाग नेपाल सिक्किम तथा भूटान
 का निचला प्रदेश है। पश्चिम की उच्चभूमि छाटा नागपुर का पठारी भाग है।
 मदानी भाग में नदियाँ का जान दिखा है। इन्टा प्रन्थ में मुन्टरवन महत्वपूर्ण है।
 अधिकांश वन साफ कर घनी की जाती है। जूट और चावल की उपज महत्वपूर्ण है।
 लोहा चूना आदि खनिज पदार्थ भी पाये गए हैं।
 उड़ीसा का क्षेत्रफल १५५,७५१ वर्ग मील ० एव जनसंख्या १७५
 करोड़ है।

इसका आधे से अधिक भाग दक्षिण पश्चिम तथा उत्तर में स्थित ऊँचा भूभाग
 है। पठारी भाग बहुत पुरानी चट्टानों से निर्मित है। पठारों का घनाय के कारण तटीय
 मदाना का निर्माण हुआ है। नदियाँ न भी पठार को काट कर मदाना का निर्माण
 किया है। जल बहिष् की अधिकता के कारण साल गागीन गीशम की आर्द्रता बढ़ा
 के मानसूनी बना से यह प्रश्न आच्छादित रहता है। कई उपजायी लकड़ियाँ एवं लाख
 इसके वना से प्राप्त होती हैं। इनके ४२३० प्रतिशत भाग पर वन हैं। खनिज पदार्थों
 का भी प्राचुर्य है। यह मुख्य प्राचीन मन्दिरों का देश है।

पूर्वांचल के जन और उनका प्रभाव

आदिवासी शब्द पथक्तावादी है इसमें राजनीति की दृष्टि से आता है। जब
 अनेक जातियाँ भारत के बाहर से ही आती रहीं—एसा माना गया तो केवल अथ
 सम्य जना का ही आदिवासी विस आधार पर माना जाए। श्री भगवानदास बैला
 ने इनके लिए आदिम जाति शब्द का प्रयोग किया है जो कि अग्रजी शब्द Primitive
 का अर्थ चोरेन करता है। ये जातियाँ अग्रभी भी तो सम्यता के विकास क्रम की आदिम
 अवस्था में पड़ी हुई हैं।

अपने देश के आदिम जनो २१२ समूहों में विभाजित किया गया है।
 पूर्वांचल में ही भारत के आदिम जनो का प्रतिशत सबसे अधिक है सम्भवत इन्हीं
 के कारण यह प्रदेश अत्य प्रदेश कहलाया और यहाँ की यात्रा बजित की गयी।
 आदिम जनो का प्रभाव भाषा और धर्म दोनों पर है। असमीया बंगला और उडिया
 भाषाओं पर ही नहीं हिन्दी आदि अथ भारतीय भाषाओं पर भी इनका प्रभाव है।
 धर्म के क्षेत्र में जिव और शक्ति से सम्बन्धित रक्तमय उपासनाओं का प्रयोग भी
 आदिम जातियों की देन बताया जाता है। इस दृष्टि से इनका परिचय प्राप्त करना
 आवश्यक हो जाता है।

श्री डी० एन० मजुमदार ने भारत की आदिम जातियों की खोज का कार्य
 जटिल बनाया है। इन जातियों का वर्गीकरण तीन दृष्टियों से हो सकता है—भौगो

१ श्री भगवानदास बैला—हमारी आदिम जातियाँ पृ० १०११।

पूर्वांचल-परिचय

त्रिक, रक्त-सम्बन्धित और भापात्मक । तीना ही दृष्टिया स अध्ययन-काय बठिन है क्योंकि प्रागतिहासिक-युग से ही आदिम-जातिया यात्रा करती रही हैं । उनम पारस्परिक रक्त-सम्बन्ध भी हुआ एव पारस्परिक भापाभा अथवा उनके शब्दा को भी ग्रहण किया गया । कुछ आदिम जातिया ता रक्त एव भापा की दृष्टि से एकदम किसी अन्य प्रबल जाति के मध्य खो गयी हैं—जमे कि भारत म नीग्रो ; उडीसा के लाजिया सौरा और गदवा मे मगोलो बनापट पायी जाती है उनकी इस विशेषता का कारण बना सक्ता बठिन है ।

रिजने क्रुक् आइवस्टट सरकार हैमडाफ, हटन गुहा मजुमदार आदि अनेक विद्वाना न आदिम जातिया के वर्गीकरण आदि का प्रयास किया है । डा० गुहा ने भारत की प्रजातिया (Races) का मुख्य छह भागा म बाटा है—(१) निग्रिटो (२) प्राथमिक-दक्षिणाकार (Proto-Austroloid), (३) मगानाइड, (४) भूमध्य मागरीय, (५) पश्चिमी वक्तकपालक और (६) नार्डिक ।

शनादिया स पारस्परिक मिलन हान पर भी कुछ स्थाना पर कुछ जातियाँ युगा स अपरिवर्तित जीवनयापन करती हुई अपने रक्त भापा और सस्कारा की रक्षा कर सकी हैं ।

गुहा ने भौगोलिक दृष्टि से भारत के आदिम-जना को तीन भागा म बाँटा है—(१) उत्तरी पूर्वी प्रदेश (२) मध्यप्रदेश और (३) दक्षिण प्रदेश । हमारा पूर्वांचल प्रदेश केवल प्रथम दो भागा स सम्बन्धित है अनएव यहाँ केवल इही दो भागा का वणन होगा । उत्तरी-पूर्वी प्रदेश म सिन्धु के लपचा और असम सीमान्त के कुकी लुशाइ आदि कई लाख व्यक्ति आते हैं । य अमम की दुग्म पहाडिया और हिमालय के दक्षिणी ढालो पर बमे हुए हैं । उत्तर पूर्वी प्रदेश के पश्चिमी भाग म भी असम्बन्ध जगली जातियाँ बमी हुई हैं । सुनासिरी (मुबणथी) के पश्चिम म आका, डफला मीरी आदि जातिया हैं । डिहाग और लाहित नदिया के मध्य मिशमी और पूव म दिगारा तथा मच जातियाँ हैं । बमा देश म पूव की ओर सदिया के सीमांत म खामनी तथा सिङ गफा लोग हैं । और आगे पूव म मणिपुर तक धनमिरी (धनथी) से लेकर रेंगमा पहाडिया तक नगा लाग निवास करत हैं—इनक २१ भेद हैं । अमम म आदिम जातिया के चर्म्भ्य एव बाहुल्य के कारण ही श्री हम वरुआ ने इस जाति एव आत्मिजाति-समूह का जीवित सग्रहालय कहा है ।^१

मध्यप्रदेश के आदिम जन अधिकाशन नमदा और गादावरी नदिया क मध्यवर्ती पवतीय भाग म बसन हैं । गजाम जिले की शवर, गदव और डाम्बो,

१ श्री डी० एन० मजुमदार और मदन—एन इट्रोक्शन टु सोशल एन्थापानाजी पृ० २५७ ५६ ।

२ हम वरुआ—दि रंड रिवर एंड दि ब्लू हिल प० ५६ ।

उड़ीसा के पर्वतीय भाग में हो तथा भूमिज, छोटा-नागपुर व पटारी भाग में सथाल, झारखंड और मुंडा जातियाँ बसी हैं। मध्यवर्ती पहाड़ी श्रेणियाँ के बीच और पश्चिमी भाग की सबसे मुख्य जातियाँ कोल गाड़ और भील हैं।^१

इन तीनों प्रदेशों में रहने वाली आदिम जातियों को रक्त एवं भाषा परिवार की दृष्टि से चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) नीग्रो (२) निपाद, (आस्ट्रेल) (३) द्रविड और (४) किरात (मंगोलाइड)।

(१) नीग्रो लोग मोठ आठ विपटी नाम घुघराल ऊन जिस बेल बाल और कृष्णवर्ण थे। अब गुद्ध रूप में यह केवल आदिमान निकोबार में रह गया है। दक्षिण भारत की केवल कादिर पनियाण, इस्लाम बुद्ध जातियाँ इन वर्ग के अंतर्गत बही जा सकती हैं। हटन असम की नगा (अगामी) जाति के साथ इनका रक्त मिश्रण मानते हैं।^२ यह लोग भाषा एवं रक्त की दृष्टि से अपना अस्तित्व खो बैठे हैं। भारतीय भाषाओं पर इनका प्रभाव नहीं रह गया है।

(२) भारत की अनाथ जातियों में निपाद वर्गीय जातियों का ही प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण है। इनका रंग काना नाक चपटी और सिर लम्बा माना गया। इनकी एक शाखा सिंहल में वेदा या माध है। इनके दात वर्मा मलय पूर्वी द्वीपों एवं आस्ट्रेलिया तक पहुँचे थे। भारत में निपाद जातियाँ मुख्यतः मध्य भारत में फँसी हुई हैं। उड़ीसा की भूमिज मुंडा शबर सथाल हो कोरा सथिया, सरवार गदब, जुआग परजा आदि जातियाँ इसी वर्ग की हैं। बंगाल में भी मुंडा सथाल सथिया और भुइयाँ आदि निपाद वर्गीय जातियाँ हैं। असम की खासी जाति का मूल स्पष्ट नहीं किन्तु इसने निपाद वर्गीय भाषा अपना ली है।

(३) दक्षिण भारत के तेलुगु तमिल कन्नड मलयालम तुडु और तोदा भाषी लोगों में द्रविड रक्त है। उड़ीसा के ओराँव खाड़ (अथवा कंध) गाड़ और कोडाडोरा द्रविड वर्ग की भाषाएँ बोलते हैं। बंगाल में भी ओराँव और गाड़ हैं। असम के मानतो भाषी इसी वर्ग के हैं।

(४) किरातों (मंगोलाइड) का प्रभाव भारत पर बहुत कम है किन्तु असम के समस्त प्रदेश तथा बंगाल के कुछ अंश पर यह छाया हुआ है इसलिए पूर्वांचल के लिए इनका अध्ययन महत्वपूर्ण है। इनकी दो शाखाएँ थी—तिब्बती चीनी एवं तिब्बती अरूरी। तिब्बती अरूरी भाषाएँ का प्रभाव असम पर अधिक है। भारत में अंगोल जातियों को किरात कहा गया, महाभारत में विदेह राज्य के आग किरात का वास स्थान बतलाया गया है। मनु ने किरातों को रात्य क्षत्रिय कहा है। वालिका पुराण (१८ १०४) में यहाँ के निवासियों को किरात बनाया गया है जिनके सिर घुटे हुए

१ श्री भगवानन्स केला—हमारी आदिम जातियाँ ५ ६ स।

२ हटन—वास्ट इन इंडिया पृ० ३।

घोर रग सोने जसा पीला है। नेपाल, सिक्किम और जिला दार्जलिग (बंगाल) तथा असम में किरात जाति के चीनी तिब्बती भाषी लोग बसे हुए हैं। चीनी-तिब्बती परिवार की कई भाषाएँ बहुत ही अल्प संख्या वाली जातियों के मध्य प्रचलित होने के कारण महत्वहीन हैं।^१ इस भाषा-परिवार को दो भागों में विभाजित किया जाता है—

१ तिब्बत-ब्रह्मी, २ श्यामी-चीनी। नेपाल, जि० दार्जलिग (बंगाल) और असम की बहुत-सी भाषाएँ तिब्बती ब्रह्मी हैं केवल असम के पूर्व में जहाँ खामटी बोली जाती है श्यामी चीनी परिवार भी हैं, असम की एक विजेना शासक जानि आहोम का सम्बन्ध भी भाषा-परिवार की इसी शाखा से है।^२

उत्तर बंगाल, पूर्व बंगाल (त्रिपुरा राज्य), असम की ब्रह्मपुत्र घाटी, गांगे पहाड़ियाँ और कछार जिला में बड़े लोग रहते हैं। बड़े शाखा के अंतर्गत कई आदिम-जातियाँ सम्मिलित हैं। उत्तरी असम के सीमांत पर अथ तिब्बती-ब्रह्मी आदिम-जातियाँ मीरी और डफला रहती हैं। नगा-लोगों की अनक बोलियाँ हैं जो परस्पर भिन्न हैं। नगा-जना के दक्षिण में तिब्बती-ब्रह्मी कुकी चीनी रहत हैं। ये ब्रह्मी भाषा परिवार से सम्बन्धित हैं, इनमें प्रमुख हैं मयई या मणिपुरी। ये सुमस्कृत और शिक्षित हैं तथा शताब्दियों से बष्णव हिन्दू हैं। बंगाल में लेपचा, मग और चुक्मा (शाक्य + मोंग, मोंग का अर्थ ब्रह्मी भाषा में सरदार है—यह जाति आय-मगोल मिश्रित है) आदि प्रायः बौद्ध धर्मावलम्बी जातियाँ के अतिरिक्त बड़े मंच वाच वचारी रामा पारो आदि जातियाँ भी हैं, जो कि त्रिपुरा में आ कर बसी थीं।

किराती शाखा का प्रभाव असम-बंगाल तक ही सीमित है किंतु इसके कुछ चिह्न गाँव, माडिया आदि में भी मिल जाते हैं।^३

असम की किराती वंशलता का डा० डिम्बेश्वर नेओग ने इस प्रकार वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया है, जो कि असम्पूर्ण है।

(पृ० २० देखिए)

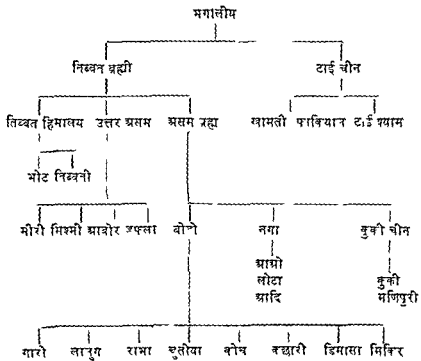
आदिम जातियों का प्रभाव—सिन्दूर दान, पुनज मवाद निश्वात, हस्तीपालन आदि अनक बातें आदिम जना की देन बतायी जाती हैं। उपामनाया में रक्त, मदिरा और नारी का प्रयोग भी इन्हीं की धन बताया जाता है।

आदिम जना की अनक जातियाँ म नर-बलि की प्रथा रही है। नगाद्या में विवाह योग्य उसी का समझा जाता है जो दो चार हत्याएँ कर लेता है। नगा

१ मुनीनिकुमार चटर्जी—भारत की भाषाएँ और भाषा-सम्बन्धी समस्याएँ, पृ० २२।

२ बही, ट्राइवल लेंग्वेज, पृ० ७१, पुस्तक—दि आदिवासीज।

३ श्री श्यामाचरण टुव—मानव और संस्कृति पृ० ६७।



रोग मृष्टि रोग और वान वष्टि क दवताओं को सतुष्ट कराने के लिए बलि देते रहते हैं। बुकी लोग नगाओं से भी अधिक हिंसक हैं। यही मनुष्यों के मिर काट लेते हैं। य मनुष्यों के लिए मनुष्य घातुन रहते हैं। ताम्र श्वरी देवी के मन्दिर में कुछ आदिम जातियाँ नर-बलि देती रहीं हैं। इसी कारण इस देवी का नाम बचादसाती (कच्चा खाने वाली) प्रसिद्ध हुआ। खामी जाति में उच्छन नामक सप्त देवता के नाम पर नर-बलि दी जाती है। बलि के लिए कोई व्यक्ति मृत ही मृत चुन लिया जाता है, फिर एक दिन मृत-मृत होकर बलि देने वाला व्यक्ति मृत के अतिरिक्त किसी घातु के साथ जाते घाति में बलि-दान पर धार्मिक आक्रमण करने लग जाता है और जीने की बली से उमर बढ़ाए एक नए काट जाता है। उमर मनुष्यों में रक्त विज्ञान के सप्त देवता का अर्थिक कारण है। उच्छन की कथ जाति नरबलि एक मनुष्य के लिए प्रसिद्ध रही है। उच्छन में घातु भी बलि देने का स्थान है जो उस देवता के नाम पर है। बिना कभी बलि दी गया है। नरबलि का मरिचा कहते हैं। एक प्रथा उच्छन में १६४० ई० तक चलता रहा जो अथ नरबलि

१ भी मनुष्य नरक के अर्थ में उच्छन नामक जाति पृ० १०६।

२ ५५ नरबलि का अर्थ—खामी जाति पृ० ६०।

३ भी उच्छन नामक देवता का अर्थ मनुष्य पृ० ३०।

के स्थान पर भसो का वध होना है ।

आदिम-जानियों की रक्त पिपासा का प्रभाव उनकी पूजा-पद्धति पर पड़ा । हिन्दू-द्वयताओं को भी उन्होंने अपने ढंग से ही पूजा । उनके इस प्रभाव की भलक हम प्रस्तुत ग्रथ के अगल अध्याय में मिलगो ।

पूर्वाचलीय भाषाओं पर प्रभाव—(१) निषादप्रभाव—निषाद-वग म आने वाली भाषाओं को पहले कोल एव अथ मुटा भाषाए कहा गया है । मुण्ण भाषाए तीन प्रकार की हैं—मुण्ण खासी एव निकावारी । वस्तुष्ठा म बोडी की गिनती, बगला म बीस की बूडी (कुडि) कहना पूर्वाचल भाषाओं की श्रिया म लिंग-सूचक उपकरण का अभाव इसी भाषा-परिवार की दन बताया जाता है । असमीया भाषा का सोलंग (एक खट्टा फल) खासी क Soh Long स बना है, सोह का अथ सासी भाषा म फल है । बगला म लेंक शब् है जिसका अथ सियार अथवा बुत्त की खा सो जाता है । बगला म लेंक शब् है जिसका अथ सियार अथवा बुत्त की खा सो है । जजाल भी तीनों पूर्वाचलीय भाषाओं एव हिन्दी म है इस भी सासी के जिजर शब् स उत्पन्न माना गया है । मुण्डा शब् मर (बांस) स बगला मादुर (चटाई) बना है । मुण्डा नाना शब् का अथ है बडी वहिन तथा नाना । उटिया म नना का अथ है बडा भाई । मुण्ण आज्ञा (बावा) उडिया अज्ञा (बावा और नाना) है, हिन्दी प्रदण म भी कही-कही बावा को अज्ञा कहा जाता है । सम्भव है यह शब्द अथ का अपभ्रंश हो ।

द्रविड प्रभाव—सूय ध्वनिया की स्वीकृति, ल और र का विषयय (गना= गर हरिद्रा=हल्दी) सोलह पर आघारित माप आदि द्रविड भाषा का प्रभाव है । भारतीय भाषाओं म प्रचलित अटवी, नीर मीन, तोय, नारिकेल, कम्बु आदि शब्द भी द्रविड मूल के हैं । १—द्रविड—फिल्ला (बच्चा) बगला—छलेषिने उडिया—पिला । २—द्रविड गिरु (न० किरु) अथ शुद्र वगना और असमीया म सलू । ३—द्रविड चिन और शिन (तमिल और तेलुगु दोनों म)=छोटा शुद्र, उडिया—सान । ४—द्रविड ओकटि (एक) आरति का गोट्टान असमीया म गोट (सम्पूर्ण अथवा एक) बंगला और उडिया के गौटा का भी यही अथ है । ५—द्रविड पल (समूट) बगला पाल उडिया 'पल का अथ भी समूह है असमीया म भी पाल शब् का प्रयोग देला जाता है । ६—कन्नड जोल् तेलुगु शोल, पूर्वाचलीय भाषाओं म साग आदि के रम के लिए प्रयुक्त होता है । बगला उडिया म भोल असमीया म जाल' (असमीया हेमकोश इस सस्टन जल स उत्पन्न मानता है ।

१ श्री वी०सी० मजुमदार ने कुछ बगला-शब्दों को मून द्रविड बत या है उनम कुछ शब्द मुभ असमीया एव उडिया भाषाओं म भी उपलब्ध हुए, उही का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है । दगिए—टिम्टी ऑफ दि बेंगाली लेंगेज, पृ० ८३ स ८६ । कुछ मरी अपनी खोज है ।

है)। उडिया में कम और सम्प्रदान की विभक्ति 'कु' तलुगु के सम्प्रदान की विभक्ति 'कु' से गहीत बताया जा सकती है।

किरात प्रभाव—ममस्त पूर्वाचल में टाक रना के वचन प्रचलित हैं। य वचन हिंदी प्रदेश में प्रचलित घाघ भडडरी की कहावतों जैसे हैं। श्री नगद्रनाथ चौधरी तिबती ग्दाग (Gdag=प्रना) शब्द से टाक शब्द एक एक अर्थ तिबती शब्द म्खान (Mkhan) से खना की युत्पत्ति बताते हैं। वग एक डोम्बी शब्द को भी वे तिबती मानते हैं।^१

पूर्वाचल में ह्रस्व अ का उच्चारण अल्प परिवर्तन के साथ ओ जमा होता है। गारो भाषा में भी छात्र गल्प और मात्र नमण छात्रो गाल्पो एव मनो हो जाते हैं। हो सकता है कि बेंगला एव असमीया भाषाओं का इस प्रकार का ध्वन्यात्मक परिवर्तन किराती प्रभाव की देन हो (साथ ही इस बात की भी संभावना है कि पाली प्राकृत की परम्परा में पूर्वाचलीय भाषाओं में ओकार आया हो और उनकी भाषा में छात्र के लिए छात्रा सुनकर गारो आदि लोग भी ऐसा ही उच्चारण करने लगे हों)।

किराती प्रभाव सबसे अधिक असमीया भाषा पर देखा जाना है। कामरूप तथा उत्तरी पूर्वी बेंगाल में च और छ के दत्त्व और ऊर्ध्व ध्वनियाँ के ह उच्चारण में ता निश्चय ही किराती प्रभाव है। किराती भाषाओं की कई शाखाओं का असमीया पर प्रभाव पड़ा है कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

आहाम भाषा के य शब्द असमीया में आत्मसात हो चुके हैं—बुरजिन (इतिहाम) गगधर (प्रासाद) कारेंग (ऊँचा पक्का घर) बोडो के बड़ा वाचक मा और छोटा-वाचक सा प्रत्यय असमीया में प्रचलित है।^२ बोडो का सिरि शब्द नदी वाचक है—घनसिरी सुधनसिरी। गारो भाषा के कई शब्दों का असमीया के शब्दों से साम्य है।

गारो	असम
जाओंग (चंद्र)	जोन (चंद्र) (कश्मीरी भाषा में भी चंद्र के लिए जोन शब्द का प्रयोग है संभव है ज्वोल्मना शब्द का यह लक्ष्य हो)।
मोना (पत्ता)	मोना (धनी)
पिलाक (मन)	बिलाक ^३ (वटवचन सूचक परसग)

१ श्री नगद्रनाथ चौधरी—आकाणव तथ प० ७।

२ डा० वाणीकान्त काकना—आसामीज इटम फार्मेशन एण्ड डेव० प० ५०।

३ श्री वाणीकान्त काकना इस किराती वग की मलय भाषा के व तु व+लुन से उत्पन्न दत्तान्त है जिसका अर्थ है वृत्त—एम्बड्डम आफ अर्ली आसामीज लिटरेचर प० ११।

वारू (ढाल)

बेजी (सुई)

डेका (बच्चा)

वारू (ढाल)

वेजी (सुई) स० वेधी ? (मराठी म
बजि का अर्थ सुइ का छेद है)

डेका (युवक) स० डिककर ?

सच पूछा जाए ता पूर्वाचल की भाषाओं की व्याकरण रचना पर अनाय प्रभाव नहीं के बराबर है। शब्द भण्डार भी बहुत प्रभावित नहीं है। सम्बन्ध पाली प्राकृत अपभ्रंश के विकासक्रम में भाषाओं ने शब्दों के जो नये रूप उपलब्ध किये हैं वे मूलतः बहुत कुछ आय हैं। पिछले कई दशकों में अनुसंधान विद्वानों योम्पीय विद्वानों के सुभाषण पर अग्रसर होत हुए एसी गोजें करते रहे हैं जिनमें वे भारतीय मस्कृति की शब्द परीक्षा कर अधिक से अधिक अनाय-तत्त्व के मिलन का रहस्योद्घाटन कर सकें। विद्वान् श्री वी० सी० मजुमदार बंगला के 'शोरगोल' शब्द के शार को द्रविड 'शोल' से उत्पन्न मानते हैं^१ जबकि यह फारसी भाषा का शब्द है। वे बंगला के शान (बाढ स० बया) शब्द को द्रविड मानते हैं^२ जबकि यह शब्द अरबीया एवं उर्दिया भाषाओं के साथ ही किराती भाषा गारो में भी है। वे बंगला वाला (बधिर) की व्युत्पत्ति भी द्रविड केल=सुतना (तमिन में केलु) से मानते हैं^३ यह शब्द असमीया (कला) उर्दिया (काला) और निपाइवर्गीय भाषा मुंडा (काला) में भी है। अरबीया का विलाक परसंग द्रविड बनाया गया है^४ जबकि यह किराती भाषा गारो के पिलाक से उत्पन्न प्रतीत होता है। शब्दों का बहुत आदान प्रदान हुआ है। अनाय भाषाओं में भी आय भाषाओं के शब्द प्रचलित हैं—मुंडा में अभागा अवाला अवीध अघरमी आचल दारू (सं० दारू=लकड़ी), तुता (सं० तुता=तराज) आदि शब्द और गारो में बोधोक (असमीया और बंगला में बोधक उच्चारण बोधक सं० बोधक=गिरवी) छुगी, दाम (दाप), दुक (दुख), हानि आदि शब्द प्रचलित हैं। इनके अतिरिक्त अरबी, फारसी के शब्द भी इनमें समाविष्ट हो गये हैं। 'गारो' तरीक (तारीख) सोनोत (सनद) रोमीत (रसीद), कोलोम (कलम) मुण्ण—आमदनी आदाज (अदाज) नमीद, अर्जी (अर्जो) आदि। उदाहरणों से स्पष्ट है कि जिस हम एक भाषा-वर्ग में आगत शब्द मान रहे हैं वह किसी अन्य भाषा परिवार का हो अथवा जिस हम अनाय भाषा मान रहे हैं वह आय भाषा के विकासक्रम में ही परिवर्तित हुआ कोई नया रूपधारी शब्द है।

आदिम जातियों पर भी आय मस्कृति और भाषा का प्रबल प्रभाव है। अनेक

१ श्री वी०सी० मजुमदार—ए हिस्ट्री ऑफ बंगाली लैंग्वेज, प० ८४।

२ वही प० ८६।

३ वही प० ८२।

४ वही, प० ८८।

आदिम जातियाँ राम या कृष्ण से अपना सम्बन्ध जोड़े हुए हैं। उन्होंने आर्यों के व्रत त्योहार एवं सस्कार पद्धतियाँ अपना ली हैं। आर्यों अपना सम्बन्ध बदर से जोड़ते हैं, वे बदर का मास नहीं खाने। राम के प्रति इनके हृदय में अगाध-श्रद्धा है, उनके प्रति अपमानजनक शब्द ये नहीं सह सकते।^१ कोल भी शबरी के नाते अपना सम्बन्ध राम से जोड़ते हैं। परजा नग्न रहते हैं और नग्नता का कारण सीता का शाप बताया है। ऐसा ही गोड कहते हैं। जुआगो की स्त्रियाँ रात में नग्न रहती हैं और जाड़ में आग तापती रहती हैं। कहते हैं कि उन्हें अपने मुँह पर वस्त्रा पर गव हुआ इसलिए सीता ने शाप दिया। जुआग पितरा का तपण करते हैं और गाय का मास नहीं खाते।^२ माडिया गोड सीता को देवी के रूप में मानते हैं। असम के मिशमी लोग अपने को शक्तिमणी के वंश का बताते हैं। मीरी और आवार जातियाँ नामधरो में एकत्र होकर शिव-पावती की पूजा करती हैं। ईसाई पादरियो ने रोमनलिपि एवं इनकी भाषा में बाइबिल का प्रचार किया, किन्तु महाभारत एवं रामायण के प्रभाव की जड़ इतनी गहरी है कि ईसाई धर्म इनके बीच असफल रहा।^३ इन दोनों जातियों पर शंकरदेव एवं माधवदेव ब्रह्मवैवर्त का भी गहरा प्रभाव है। मणिपुर की मयेइ जाति ब्रह्मवैवर्त है, पुरुष भी इनके सम्पर्क में आकर ब्रह्मवैवर्त ही गया है, वे कृष्ण, राम एवं महादेव के परम भक्त हैं।^४ मातृसत्ताक गारो गंदे तथा नव्याभक्ष्यवाही होने के कारण रुग्ण एवं दरिद्री हैं इनमें ईसाई धर्म का प्रचार अधिक हुआ है। ये लोग भी कमफल और पुनर्जन्मवाद मानते हैं इनमें शव-दाह की प्रथा है। कण छैन, मुण्डन आदि सस्कार भी मनाये जाते हैं।^५ नगा जैसे रक्त पिपासु जन तक आय देवताओं की उपासना करते हैं निस्संदेह इनकी उपासना स्वतंत्रजित है। आहोम चना की बुरजी (इतिहास) में लिखा है कि बसिष्ठ के शाप से इंद्र ने दत्य बन कर दत्य-नारी से पुत्र उत्पन्न किया इसी की सन्तान आहोम हैं। गौहाटी से १० मील दूर बसिष्ठा धर्म है।^६ असम में आय सभ्यता के प्रसार के लिए किसी बसिष्ठ नामक ऋषि का प्रभुत्व योग रहा है क्योंकि पौराणिक गाथाओं में उनका नाम कई बार आया है।

आदिम जना ने अधिकांशतः आर्यों के व्रत त्योहार द्रवी देवता एवं सस्कार पद्धतियाँ आदि को स्वीकार कर लिया है और वे अपने को हिंदू मानते हैं किन्तु अग्रजों की कूटनीति से इनमें पाषण्ड्य भावना का विप्लव किया गया। देश का करोड़ों रूपया

१ श्री जनक शरविन्द—भारत के आदिवासी पृ० १२७।

२ श्री वरियर एलविन—जुआगा के दण्ड में—संगम (४२०)।

३ डा० एन० सी० पैगू—दि मीरीज पृ० ६२।

४ श्री तारकचन्द्र दास—त्रिपुरम, पृ० २०७।

५ श्री बी० एन० चौधरी—सम कलचुरल एण्ड लिग्विस्टिक एस्पेक्टस ऑफ गारो पृ० १५४३।

६ डा० बागीजात फावनी—मदर गार्सेस कामास्या पृ० ३०।

उन धर्म प्रचारका पर व्यय किया गया, जिन्हान भाले भाले निधन आदिम जना को धर्मांतरित कर उह पश्चिम-मुखापेक्षी बनाया, तथा उह दशभक्ति से विरत करने की चेष्टा की गयी।^१ अंग्रेज लोग ईसाइया के अतिरिक्त अय किसी का आदिम-जातियो के मध्य जाने नही दत थे। य उनकी सख्या अतिरजित कर बताते थे ताकि सिद्ध किया जा सके कि वे हिन्दुआ से बिलग हैं तथा उनकी सख्या भी बहुत अधिक है। अय सरकार अपनी है किन्तु भारतीय परम्पराआ स जोडने वाले आदिम-जनो के तत्त्वा को प्रोत्सात्त कर उह राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने म इस सरकार को सफलता नही मिल रही है दुष्परिणाम सामने हैं। राजनीतिक नेताओ की सत्ता लोलुपता एव शायाधियो की भ्रामक खाजा के फलस्वरूप पाथक्यवादी अराष्ट्रीय तत्त्वा के शिरोतोलन का भय समुपस्थित है।

सक्षेप मे यही कहा जाएगा कि निपाद, द्रविड एव किरात जातियो की भाषा एव उपासना धाराओ का प्रभाव आय-भाषाआ एव धर्म पर किसी सीमा तक अवश्य पडा है इससे आय सस्कृति की प्रबल धारा कही वाधित, कुण्ठित एव प्रभावहीन नही हुई है। उसन कुछ नय मोडा का अनुभव अशय किया किन्तु प्राबल्य उसी का रहा।

पूर्वाचल की भाषाएँ और अवधो

आर्यों के मूल-स्थान के सम्बन्ध म अभी तक दो पक्षपातपूर्ण विचारधाराएँ प्रचलित हैं। प्रथम विचारधारा यूरोपीय विद्वाना की है जाकि आर्यों से अपने को संयुक्त कर भारतीया से अपने को श्रेष्ठ घोषित करने के लिए पश्चिम से पूर्व की ओर आर्यों का अभियान बतान हैं। दूसरी विचारधारा म दशभक्ति का आग्रह अधिक है। हम सब भारतीय बाहर से आये भारत हमारा अपना मूल देश नही है ऐसा सोच कर मन पर आघात लगता है अतएव डॉ० मम्पूर्णानन्द डॉ० फनेर्हसिह तथा कुछ अय विद्वानो न भी भारत का ही आर्यों का वासस्थान स्वीकार किया है। दरान के निवासी भी आर्यों का भारत स पश्चिम की ओर वहिगमन मानते हैं।^२

आश्चर्य हाता है यह पढकर कि भारत म प्रजानिया बाहर से ही आती रही यहा कोइ जाति रहनी ही नही थी। किन्तु प्रथम विचारधारा पर बहुत काय हुआ है और अधिकाश भारतीय विद्वान भी इससे ही सहमत प्रतीत होत है। अभी तक जो कुछ भी खोजें हुए हैं, सबका मूल आधार यही है कि आय बाहर से आय। यदि यह सच

१ मन्त ईसा एव उनके सच्चे अनुयायिया के विषय मे कुछ नही कहना है किन्तु भारत म ईसाई धर्म का प्रचार अधिकाशत राजनीतिक उद्देश्य से हुआ है और बहुत कुछ धर्म भी हो रहा है।

२ श्री धीरन्द्र वर्मा—हिंदी भाषा और लिपि—द० स० प० १६।

न हो तो हम अपने कई निष्पन्न बदलन हाग ।

आर्यों का प्रसिद्ध एवं प्राचीनतम ग्रन्थ है ऋग्वेद । हमारी रचना शतान्तिया पूर्व ही चुकी थी । ऋग्वेद संहिता के मूलको की भाषा का अतिरिक्त रत्न का निरन्तर प्रयास लेखा जाता है । किन्तु आर्यों की कथित भाषा में निरन्तर परिवर्तन हो रहा था । भारतीय आर्यभाषा परिवार को विकासक्रम की दृष्टि से मोटे रूप में तीन भागों में विभक्त किया जाता है—

- (१) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा ।
- (२) मध्य भारतीय आर्यभाषा ।
- (३) नव्य भारतीय आर्यभाषा ।

आर्यों के निरन्तर सम्पर्क से प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में निरन्तर नये ध्वनि तत्त्व शब्द आदि आ रहे थे । तमशिला निवासी आचार्य पाणिनि ने उपनिषद् काल तक विकसित हुई भाषा को 'याकरण' के नियमों में बाँध लिया । यही भाषा संस्कृत कहलायी । ब्रह्म भाषा प्रदेश प्रदेश में रूप परिवर्तन करती गयी किन्तु संस्कृत का 'याकरण' बद्ध रूप सबत्र एक सा रहा अतः संस्कृत भाषा बहुत समय तक समस्त भारत की राष्ट्रभाषा बनी रही ।

संस्कृत भाषा के जन्म के पूर्व ही दश में अनेक बोलियाँ प्रचलित थी जिन्हें उन्नीच्या मध्यदेशीया और प्राच्या कहा जाता रहा है । उन्नीच्या आधुनिक पेशावर प्रदेश और उत्तरी पंजाब की भाषा थी । ब्राह्मण ग्रन्थों में इस भाषा को 'बुद्ध' माना गया है । प्राच्या के बोलने वाले बर्दिक मर्यादाओं और सामाजिक व्यवस्थाओं से अतिक्रम प्रभावित नहीं थे । इन्हें 'रात्य' कहा जाता था । इनके उच्चारण आदि के बारे में ताण्डय ब्राह्मण में इनकी निम्न की गयी है । मध्यदेशीया भाषा दोनों के मध्य की भाषा थी ।

गौतम बुद्ध ने अपने सिद्धांतों के प्रचार के लिए जनसमाज में प्रचलित भाषाओं का अपनाया । इससे इनका महत्त्व बढ़ता गया । पाणिनि द्वारा परिभाषित भाषा की धार जिं इन जनता आकृष्ट हो रही थी किन्तु सामान्य जनता 'याकरण' की जटिलता के कारण समझना न सकी और उसका मध्य अनेक बोलियों का विकास होता गया । बौद्ध मान्य अधिगणन पाणिनि में दिखता गया । अणोक्त के शिलालेखों में पूर्वी प्राकृत का प्रयोग हुआ ।

पाणिनि के मान्यिक्त भाषा हो जान पर उसका भी सम्बन्ध जनता से छिन हान लगा और सम समय दश में प्रचलित उन्नीच्या प्राच्या और मध्यदेशीया बोलियों के विकसित रूपों पर आधारित प्राकृत का जोर बढ़ता । मुख्य प्राकृतों में हैं—शौरसेनी मागधी अथवागधी मगधाष्टी और पञ्जाबी ।

गुप्त (मथुरा) प्रन्थ का आगमनाम शौरसेनी प्राकृत बानी जानी थी । मध्य

देशीया भाषा हान के कारण इस पर आय मस्कृति तथा सस्कृत भाषा का अधिक प्रभाव था। सस्कृत नाटका व स्त्री और मध्यकोटि के पात्रों की भाषा यही थी। यही भाषा साहित्यिक-रूप में चिरकाल तक भारत के बड़े भू-भाग पर प्रचलित रही।

मागधी प्राकृत—यह भाषा प्राच्या पर आधारित थी। आर्या द्वारा तिरस्कृत निम्न-वर्गों के नाटकीय-पात्रों को इस भाषा का प्रयोग करता हुआ दिखाया गया है। इसमें साहित्य उपलब्ध नहीं होना। नाटकों के संवादा के अतिरिक्त इसका प्रयोग व्याकरण-ग्रन्थों में है। इसमें वण विकार बहुत अधिक हुए हैं। निम्न दो विकारों का प्रभाव आज की बंगला पर देखा जा सकता है।

(१) सस्कृत उष्मवर्णों के स्थान पर श का प्रयोग, सप्त=शत।

(२) र के स्थान पर ल का प्रयोग, राजा=लाजा।

बंगला भाषा में तीनों ऊष्म ध्वनियाँ के लिए प्रायः श का प्रयोग होता है। बंगाल के किसी किसी अक्षर में र का उच्चारण ल होता है। बंगला रामायण का रत्नाकर दस्यु (वाल्मीकि महर्षि) राम का गुद्ध उच्चारण नहीं कर पाया इसीलिए उससे मरा मरा कहनामा गया था।

काशी-वाशाल प्रदेश की लोकभाषा अथमागधी प्राकृत में शौरसनी एवं मागधी दोनों भाषाओं के लक्षण मिलते हैं। महाराष्ट्रीय प्राकृत शौरसनी के विकास का उत्तरकालीन रूप है। इसमें कहीं-कहीं उष्म व्यंजन ध्वनि के स्थान पर ह हा गया है—अममीया भाषा में भी उष्म ध्वनियाँ के ऐसे परिवर्तन की प्रवृत्ति पायी जाती है।

प्राकृत भाषाएँ भी जब लोकभाषा से साहित्यिक भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुईं तो साहित्यकारों ने उनकी निधि को नवीन शब्दों से भरना प्रारम्भ किया। जन-प्राण शब्दों का छोड़कर सस्कृत शब्दों को ही तोड़ मराड़कर अधिकाधिक अपरिचित बनाकर प्राकृत बनाने की उन्हें धुन समायी।^१ फलतः व्याकरण में बँव जान पर इसका भी वही दण्ड हुई जो सस्कृत की हुई। बालचाल की साधारण भाषाएँ और राग वटी और अपभ्रंश के नाम से ख्यात हुईं। धीरे-धीरे अपभ्रंश में भी साहित्य में स्थान प्राप्त करने लगा।

मा० भा० आ० भाषाओं का अत्यंत पक्का अपभ्रंश खाने वाला पतञ्जलि ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में अपाणिनीय प्रयोगों के लिए अपभ्रंश का व्यवहार किया था। भाषा के अर्थ में अपभ्रंश शब्द का प्रयोग दसवीं शताब्दी से मिलता है। किंतु यह काल तो अपभ्रंश की विकसित अवस्था का है। इनकी परम्परा निरन्तर ही अत्यंत प्राचीन होगी। आठवीं शताब्दी तक साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश प्रतिष्ठित हो चुकी थी। १२वीं शताब्दी में आचार्य हमचंद्र ने अपभ्रंश के व्याकरण की रचना की थी। उन्होंने अपभ्रंश और ग्राम्यभाषा का भेद किया है स्पष्ट है कि इस काल

१ राम रामनारायण—अवन्तिका नवम्बर दिसम्बर, १९५६, पृ० ४३३।

में अपभ्रंश साहित्यिक भाषा थी। अपभ्रंश भाषाएँ भी उदीच्या, मध्यदेशीया और प्राच्या भाषाओं के ही विकसित रूप थी। इन अपभ्रंशों में मध्यदेशीय शौरसेनी तथा प्राच्यदेशीय मागधी और अग्रमागधी अपभ्रंशों ने ही व्यापक रूप से प्रसिद्धि प्राप्त की। शौरसेनी प्राकृत के समान ही शौरसेनी अपभ्रंश उत्तर भारत की साहित्यिक भाषा प्रतिष्ठित हुई। इसे नागर अपभ्रंश भी कहते थे। १२-१३वीं शताब्दी में तमिल प्रदेश को छोड़ कर समस्त देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव शौरसेनी को ही प्राप्त था। मध्यकाल के गहड़वार चंदेल चौहान गुजर चालुक्य आदि राजपूत नरेशों के बाहुबल के कारण उड़ी की विजय के साथ शौरसेनी अपभ्रंश भी पनपन गया। इसी शौरसेनी अपभ्रंश से कालान्तर में हिन्दी (अग्रभाषा) का विकास हुआ। शौरसेनी अपभ्रंश का जन शौरसेनी प्राकृत के क्षेत्र से अधिक विस्तृत था। इसका प्रभाव पूर्वांचल में रचित चर्यापदा की भाषा पर लक्षित किया जा सकता है। इस अपभ्रंश के अतिरिक्त अग्र प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाएँ अपनी अपनी परिधि में सीमित रह कर भी निरंतर विकास कर रही थीं जिनसे कि आगे चल कर आधुनिक भाषाओं का जन्म हुआ।

शुद्ध संस्कृत भाषा सीखने के लिए सहस्रो सूत्रवातिकों को कठस्थ करने की आवश्यकता होती है। व्याकरण की इस जटिलता से रहित हो कर शब्दों के मुक्त सरल उच्चारण के कारण पालि और प्राकृत का विकास हुआ था अपभ्रंश में भी इसी भाषाओं की य विशेषताएँ अपनायीं साथ ही कारकों के चिह्न, छंद ध्वनि रचना रीति आदि में आमूल परिवर्तन हुए। काव्य चरणान्तों में तुक तथा भणितों के प्रयोग भी हुए।^१

ईसा की १०-११वीं शताब्दी तक भारतीय अग्र भाषा आधुनिक काल में प्रवेश कर चुकी थी। इस काल में भी सर्वाधिक परिवर्तन प्राच्य देश की भाषाओं में ही देखे जाते हैं। उदीच्य देश की भाषा पंजाबी और सिन्धी ने म० भा० आ० काल की ध्वनियों को फिर भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

पूर्वांचल का आर्यीकरण एवं आग्रभाषा प्रवेश

महाभारत और पुराणा आदि के वर्णन से प्रतीत होता है कि ईसा की कइ शताब्दी पूर्व ही पूर्वांचल में आर्यों की पहुँच हो चुकी थी। बौधायन धर्मसूत्र जैसे ग्रन्थों में पूर्वांचलीय प्रदेश की ओर गमन करने वाला पर प्रतिबंध लगाया गया है। तीर्थ-यात्रा के अनिश्चित अग्र किसी वायव्य जाने पर लोगों को प्रायश्चित्त करना पड़ता था। कारण यह जान पड़ता है कि बर्दिक प्रभाव के बहुत पूर्व ही राठ, मुह्य और कलिग की ओर जन और बौद्ध भिक्षुओं का पलायन हुआ चुका था। बर्दिक मर्यादाओं और

आय-संस्कृति से हीन हो कर ये व्रात्य हो गये थे, जिसके कारण ये लोग मध्यदेशीय आर्यों द्वारा उपेक्षित हुए। संस्कृत-साहित्य में मागधी प्राकृत का प्रयोग राक्षसो, भिक्षुओ, क्षपणका, दासा, नपु सको, किरातो, म्लेच्छा, आभीरो, धीने-नुवडा, पिशाच एवं नीच जानियों के मुख से कराया गया है। प्रबोधचन्द्रोदय नाटक में उड़ीसा से आया हुआ दूत मागधी बोलता है।^१

निस्सन्देह बहुत पहले पूवाचल प्रदेश में द्रविड, निपाद और मगोल जातीय भाषाएँ बोली जाती थीं, किन्तु आर्यों के सम्पर्क में आ कर उनकी सुदृढ़ एवं विकसित भाषा और उच्च संस्कृति के प्रभाव के कारण ये भाषाएँ धीरे धीरे प्रभावहीन होती गयी। आयभाषी जब बंगाल में बस रहे थे, उसी समय से उनकी भाषा संस्कृत से प्राकृत रूप धारण कर रही थी। राजकाज की भाषा संस्कृत ही थी, जिसका एक लाभ यह हुआ कि अति प्राचीन काल से ही भारत में सांस्कृतिक एकता का सूत्रपात हो गया था। बगुडा जिला के महास्थान गड में ब्राह्मी अक्षरों में उत्कीर्ण एक मीयकालीन लेख मिला है जिसकी भाषा पूर्वी प्राकृत है और जिसका रचनाकाल तीसरी या दूसरी शताब्दी ई० पू० है। गुप्त-काल में अनेक ब्राह्मणों को बंगाल और मध्य-उड़ीसा में बसाने के लिए भूमिदान किये गये थे, इस सम्बन्ध में अनेक ताम्रपत्र मिले हैं। गुप्तों के समय तक पूवाचल के अधिकांश पर आय संस्कृति की पूरी छाप लगी चुकी थी। कालान्तर में भी अनेक कायबुद्ज ब्राह्मण पूवाचल की ओर बसाये गये थे। ५०० ई० में केसरी राजा ने १०,००० ब्राह्मण उड़ीसा में बसाये थे। एक हजार ई० के आसपास बंगाल के राजा आदिशूर ने भी कई ब्राह्मणों को बसाया था। सब आगत ब्राह्मण अपने से पहले बसे हुए ब्राह्मणों को आचार-हीन पा कर उन्हें लौकिक एवं स्वयं को बर्दिश कहा करते थे।

छठी शताब्दी तक आय भाषा का प्रभुत्व समस्त प्रदेश पर हो गया था। सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ में चीनी यात्री ह्वेनत्सांग ने भ्रम, पुद्ग, कामरूप, समतट, वणसुवण, ताम्रलिप्ति, ओड्र, और कलिग का भ्रमण कर एक ही भाषा का प्रचार देखा था। उसने स्वीकार किया है कि यद्यपि कामरूप एवं ओड्र आदि प्रदेशों की भाषा में मध्यदेशीय का प्रभाव था, किन्तु फिर भी यहाँ की बोलियाँ में मध्यदेश की भाषा से कुछ अन्तर भी था।

मागधी अपभ्रंश के तीन भाग किये जा सकते हैं—

(१) पूर्वी मागधी—असमीया, बेंगला और उडिया।

(२) मध्य मागधी—मथिली और मगधी।

(३) पश्चिमी मागधी—भोजपुरिया, नागपुरिया।

पूर्वी मागधी का प्रसार—पूर्वाचल की भाषा, संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था पर मिथिला का गहरा प्रभाव रहा है। आय-जन भागीरथी एवं दामोदर नदी की

१ पिशाच—प्राकृत भाषा का व्याकरण, पृ० ४४।

तीर भूमि की ओर अग्रसर हो कर वरद (उ० बगाल) और राठ (मध्य-पश्चिमी बगाल) की ओर गये थे। विद्वान् लोग मध्य-बगाल को पूर्वांचलीय सभ्यता का केन्द्र बनाकर मानते हैं कि यही से वे उत्तरी बगाल हो कर कामरूप की ओर चले और दूसरी ओर राठ और सुह्य हो कर उत्कल की ओर गये। यही कारण है कि आरम्भिक अवस्था में असमीया बगला एवं उडिया भाषाओं में पारस्परिक साम्य है। गौड़ अथवा प्राच्य अपभ्रंश का केन्द्र गौड़ (आधुनिक मालदा जिला) था। यहीं से इसका विस्तार असम और उड़ीसा की ओर हुआ था। आर्यों के कामरूप एवं ब्रह्मपुत्र की घाटी की ओर बढ़ते जाने पर निचली-ब्रह्मी और शान भाषाओं का प्रभाव का कारण इनकी भाषा में विकार आत गये और यह भाषा कामरूप अपभ्रंश कहलायी। मुगलमाना के आक्रमण (१२०० ई०) के पूर्व तक असमीया एवं बगला (विशेषतः उत्तरी बगला) में विशेष अन्तर नहीं था। समान भाषा बोलने वाले लोगों के दा दल एक ही समय में दो ओर—असम और उड़ीसा की ओर चले थे। आज भी इन दोनों प्रदेशों की भाषा में कुछ ऐसी समानताएँ हैं जो बगला से नहीं मिलती। उड़ीसा पर आर्यों का प्रभाव दो ओर से पड़ा था। एक ओर के प्रभाव का वर्णन हा चुका है दूसरा प्रभाव कोमल की ओर से पड़ा था। इसीलिए उडिया भाषा पर पूर्वी मागधी का प्रभाव के साथ-साथ मध्य एवं पश्चिमी मागधी का भी प्रभाव है। भाजपुरिया एवं छत्तीसगढ़ी भाषा के ही समान उडिया भाषा की निया में एकवचन और बहुवचन पाये जाते हैं जबकि असमीया और बगला में ये रूप नहीं हैं। इसी प्रकार इन भाषाओं का बहुवचन सूचक प्रत्यय मान भी उडिया में है। १२वाँ शताब्दी के कर्ण पण्डित ने २७ अपभ्रंश में उड्य अपभ्रंश का भी नाम दिया है। उडिया भाषा मागधी की इसी उपशाखा का विकास है। इसका जन्म तो पालि और स्थानीय दानिया के सम्मिश्रण से हुआ किंतु जगन्नाथ मन्दिर का प्रभाव से इस पर संस्कृत की छाप निरंतर पड़ती गयी। उडिया विद्वान् ११वीं शताब्दी के अन्त में बज्रहस्त देव का लक्ष को उडिया का प्राचीनतम लक्ष मानते हैं। १३वाँ शताब्दी का भुवनेश्वर का लेख तो उडिया के विकास का एकदम स्पष्ट कर देता है। १४वाँ शताब्दी के नसिंह देव के ताम्रलेख में उडिया शब्द का बाहुल्य देखा कर डा० मुनीतिकुमार चटर्जी भी अनुमान करते हैं कि इस काल तक उडिया का जन्म हो चुका था। उन्होंने कई प्राचीन लेखों का उदाहरण दे कर सिद्ध किया है कि वर्तमान उडिया का स्वरूप १५ वाँ शताब्दी के प्रथमाध में स्थिर हो चुका था।^१

पूर्वीमागधी अथवा प्राच्य अपभ्रंश का केन्द्र बगाल का मान कर डा० मुनीतिकुमार चटर्जी ने बगला असमीया और उडिया का पारस्परिक साम्य निम्नलिखित हुए बगाल

१ माण्डर मानसिंह—हिन्दी भाषा भारिया लिटरचर प० २१।

२ डा० मुनीतिकुमार चटर्जी—दि भारिजन एण्ड डेव० ऑफ बंगाली लैंग्वेज प० १०३ १०८।

की बोलिया का वर्गीकरण इस प्रकार किया है—

- (१) बगी बानिया (पूर्वी जगल की बालियाँ) ।
- (२) कामरूपी-बोनिया (उत्तरी बगानी तथा असमीया) ।
- (३) पुङ्ग अथवा बगे-द्र-बालियाँ (उत्तर मध्य बँगला) ।
- (४) राठ की बोलियाँ (पश्चिमी और द० प० बँगला तथा उडिया) ।

इनमें बँगला भाषिया की सख्या सर्वाधिक है । १९६१ ई० की जनगणना

के अनुसार पूर्वाचलीय भाषा भाषिया की सख्या इस प्रकार है—

बँगला भाषी—३३८,८८ ६३६ ।

उडिया भाषी—१५७,१६ ३६२ ।

असमीया भाषी—६८०३,४६५ ।

पूर्वभागधी भाषाओं की पारम्परिक समानता

(१) अ का उच्चारण ओ जसा, ए का अग्रजी व दन (then) की भाँति ए का ओइ जसा । ण का न (उडिया को छोड़ कर) व का व य का ज क्ष का (व) स्य अथवा प्रारम्भ म स । पूर्वाचल म य ध्वनि इ और अ की सम्मिलित ध्वनि मानी जाती है । य का सदब ज हा पडा जाएगा । जहा य का य ही पडा जाता है वहा उसके नीचे चिह्न लगात ह अथवा इस का प्रयाग करते हैं, इसी प्रकार व की भी स्थिति है । असमीया म नी श्रत्यक् व को प्राय व ही पडा जाता है किंतु इस भाषा म व क नीचे पढी लकीर-खीच कर व बना लते हैं । यह ध्वनि बँगला और उडिया म नहीं है । आवश्यकता पडने पर आय निर्य कर काम निकानत हैं । वम उडिया म व के ऊपर बिन्दी लगाकर व बना लिया जाता हैं ।

(२) पच्छी म काय—कर कर स बनी हुइ र विभक्ति का प्रयाग ।

(३) भूत एव भविष्य बुद्धत इल एव इव का प्रयाग, ज्वकि अय मागधी भाषाभा म नव स्थान पर अल और अव आत है ।

(४) बगला एक असमीया क कत्ता म ए तथा अधिकरण म त एव त का प्रयाग । क्रिया म लिंग-वचन का अभाव । दाना भाषाओं की सक्रमक एव अक्रमक क्रियाओं के तृतीय पुरुष म भूतकाल का पाथवय—उमश इले (सक०) एक इल (अक०) का प्रयाग ।

(५) बहुवचन-सूचक विभक्तिया का अलग स जोडा जाना—

असमीया—त्रिलाक बोर हैंत ।

बँगला—एरा रा, दिग गुल गुषा गुलि ।

उडिया—माने (मानवक) गुडिक ।^३

१ डा० सुनीतिबुमार चटर्जी—आरिजन एण्ड टव० ऑफ बँगाली लैंग्वज, प० १४० ।

२. वही प० ६३ ६४ ।

ध्व-यात्मक विनिष्पत्ताएँ—असमीया की

(१) च और छ का उच्चारण दत्य जमा—ग की भाँति ।

(२) दत्य एव मूषय म भेद नहीं, दोना का उच्चारण दत्यमून । ट और त का उच्चारण अश्रेजी के T जसा । भारतीय—भारतीय धारणा—डारणा ।

(३) ड का र उच्चारण ।

(४) ऊष्म ध्वनिया—ग प म का उच्चारण शब्द के आरम्भ में हू घोर य के बीच की ध्वनि जमा जिसे धीरे के एवम से प्रकट किया जा सकता है अन्य स्थानों पर हू उच्चारण होगा ।^१ भावभङ्गता होने पर ये ऊष्म ध्वनियाँ च के द्वारा व्यक्त की जाती हैं—चरकार (गरकार) । सद्गुण वर्णों में ऊष्म ध्वनियाँ का उच्चारण हाता है—स्वून विष्णु (विष्णु) धामि ।

बहिरंग ग्रुप की भाषामा म स का प्राय हू हा जाता है । यह ध्वनि-परिवर्तन राजस्थानी पूर्वी पञ्जाबी सिन्धी एव ईरानी भाषामा म भी देया जाता है । च—वर्णों वर्णों का दत्य उच्चारण पूव-वर्ग की भाषा एवं कुछ हिमाली ध्वनियाँ म भी पाया जाता है ।^२ असमीया के शब्द भंडार एव ध्वनितत्त्व पर कुछ ऐसे भी प्रभाव देखे गये हैं जो न सस्वृत्त-परिवार के हैं और न निःस्वृत्त-परिवार के हैं । सस्वृत्त शतम परिवार की भाषा है असमीया म वेंट्रम-परिवार के शब्द मिलते हैं अस० बतर (बादल) तमन बतर अस० साटे (धीरे) नटिन लाहाछु अस० गेरि (चिल्लाता), ग्रीक गेरि । ऊष्म ध्वनियों का असमीया उच्चारण भी वेल्ड परिवार की ध्वनि से मिलता है । श्री बापचन्द्र महन्त न डा० हुनली धादि के प्रमाण दे कर ईरानी दिशाची बम्बोरी मराठी राजस्थानी भाषाओं से भी असमीया की समानता दिखायी है । अपादान की परा विभक्ति असमीया और ईरानी दोना म है । असमीया का बहुवचन हूँ है ईरानी म हूँति । असमीया एव मराठी के अधिवरण की विभक्ति त है । इन दोनों भाषामा के वर्तमान काल की प्रमश विभक्तियाँ—ओ आ ए होनी हैं ।^३

उडिया की विशिष्टताएँ

(१) ऋ का उच्चारण असमीया एव बंगला में रि के समान होता है, जबकि उडिया म हू जसा सस्वृत्ति—सस्वृत्ति ।

(२) ण का उच्चारण शुद्ध होता है ।

(३) असमीया बंगला एव हिन्दी के शब्दों में प्राय अंतिम वर्ण हलच हो

१ बी० के० कावनी - एस्पेक्टस आफ अर्ची आसामीश लिटरेचर प० १४ ।

२ डा० सुनीलकुमार चटर्जी—राजस्थानी भाषा प० ५३ ।

३ बापचन्द्र महन्त—प्रवर्तिका अक्टूबर १९५४ पृ० ७७ ।

जाता है जैसे कि गीत का गीत Gita किन्तु उडिया में पूरा उच्चारण होगा—गीत=Gita ।

(४) मराठी एव द्रविड भाषाओं में उपलब्ध ल ध्वनि उडिया में भी है । यह ध्वनि वैदिक है ।

(५) ह्रस्व अ का उच्चारण बंगला एव हिंदी के उच्चारण के बीच का है ।

(६) श प स का उच्चारण प्रायः स के समान है ।

बंगला की विशेषताएँ

सम्मिलित रूप से बंगला की उच्चारण मन्वधी विशेषताओं का वर्णन हो चुका है । शेष कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जाएगा ।

(१) ऊष्म ध्वनियों का उच्चारण श की भाँति—सात शात, रोप रोश । किन्तु इसके अपवाद भी हैं—स के साथ त, थ न और र का योग होने पर उच्चारण शुद्ध रहता है—स्तब्ध, अजस्र, स्निग्ध, अस्थि । साथ ही श के साथ र और ल का योग होने पर श का उच्चारण भी स जसा होता है—श्रम म्रम, श्लय-स्लथ ।

(२) रफ का लोप—दुगा-दुगा, सब शब्द ।

(३) पञ्चगामी समीकरण—य अथवा व के पूर्व किसी वण का योग होने पर उस वण का द्वित्व एव य और व का लोप होता है—विद्या विद्वा विद्वान विद्वान । असमीया में भी ऐसा होता है, किन्तु उडिया में नहीं ।

म के साथ किसी वण का योग होने पर मकार का लोप हो जाता एव वण सानुनासिक द्वित्व होता है—पद्मा पँदा लदमण लक्खन । असमीया एव उडिया में ऐसा नहीं होता, किन्तु उडिया में म का उच्चारण कुछ कुछ वँ जसा जान पड़ता है । असमीया में क्षम का क्ल होकर म ऊह्य हो जाता है—लक्ष्मण लँक्खन ।

पारस्परिक रूपात्मक भेद—तीनों पूर्वाचलीय भाषाओं में इल एव इव प्रत्ययों का भी भेद है ।^१

	असमीया	बंगला	उडिया
मैं	इम	इव	इवि (व०व० इवु)
तू	इवि	इवि	इवु
तुम	इवा	इवे	इव
यह	इव	इवे	इव (व०व० इव)

१ यहाँ केवल बंगला साधु भाषा (लिखित साहित्यिक भाषा) के इल और इव कृदंत दिये गये हैं बोलचाल की भाषा में इ हट जाएगा और केवल ल और व रह जाएंगे । बंगला उच्चारण के विस्तृत परिचय के लिए देखिए लेखक की 'हिंद, बंगला प्रकाश पुस्तक' ।

असमीया	बंगला	उडिया
आदर सूचक	इय	इयन
मैं	मैं	मैं (अ०य० इ०) मैं (उ०य० मैं)
तू	इति	इति
तुम	इला	इल
वह	इल	इला सा
आदरसूचक	इले	इलन

बहुवचन की विभक्तियों का वणन उपर हा चुका है। कारका की विभक्तियों में वही समानता है एवं वही विभिन्नता।

असमीया	बंगला	उडिया
कृता	ए	ए
कर्म	क	क र य
करण	एरे, दि द्वारा	द्वारा निया
सम्प्र०	क (अक) ल	क (कर्म की भाँति) (कर्म की भाँति)
अपा०	परा	हड़ने धके
सम्बन्ध	र	र, एर
अधि०	त	त ए य य

वाक्य स्थिति के अनुसार कारका के कुछ विशिष्ट रूपा का भी प्रयोग होता है। यहाँ प्रायः प्रचलित विभक्तियाँ ही प्रस्तुत की गयी हैं।

पुरववाची सवनामा में प्रायः साम्य है। असमीया भाषा में तृतीय पुरुष का स्त्रीलिंग भी है ताई जाँचि अग्रजी के (She) के समान है। उडिया में प्रथम पुरुष के दो रूप हैं साधारणतः मु और माम (मैं और हम) का प्रयोग होता है किन्तु राजा लोग अथवा अपने को गौरव दे कर बोलने वाले लोग आम्हे और आम्हेमाने शब्दों का प्रयोग करते हैं।

शब्द भण्डार में समानता हात हुए भी भेद है। मागधी अपभ्रंश के ही शब्दों के विकसित रूपों की दृष्टि से समानता है किन्तु अनाय भाषाशास्त्र से गृहीत शब्दों के कारण वचन्य है। असम पर विराता प्रभाव अधिक है तो उडिया पर निपादी एवं द्रविडी अधिक है। बंगला भाषा पर तीना प्रभाव दखे जाते हैं। फलतः तीनों का प्रदर्शन भिन्न भिन्न प्रकार के शब्द प्रचलित हो गये हैं। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिख जाते हैं जिससे पारस्परिक साम्य-वचन्य स्पष्ट हो सकेगा।

असमीया	बंगला	उड़िया
चका	चाका	चक (चक्र = पहिया)
गछ	गाछ	गछ (स० गच्छ = पड़)
छाति	छाना	छता (स० छत्र = छाता)
भालो	भातो	भन (स० भद्र = मला)
कला	कालो	कला (काला)
चुलि	चुल	वाल (वेश)
हात	हान	हात (हस्त)
तोपनि	धुम	निद (नीद)
सेतरा	नाडरा	मदला (मैला)
निना	भिजा	ग्रोरा (भोगा)
चेंचा	ठाण्डा	यण्डा (ठण्डा)
तलत	नीच	तरे (नीचे)
बना	काला	वाता (वाधिर)
वेजि	मुच, छुच	छुच्चि (मूची-मुई)
सग	काछ	पाख (पाम)
दिदि	घाड	धक (घ्रीवा)
पविला	प्रजापनि	प्रजापति पावनी (तितनी)

अधमागधी से उत्पन्न अवधी एवं पूर्वोमागधी-भाषाओं से समता

पूर्वी हिंदी—शौरसनी और मागधी प्राकृतों के क्षेत्रों के मध्यभाग में अध-मागधी प्राकृत बोलती जाती थी, इसी में कालान्तर में अधमागधी अग्रभ्रंश और उससे पूर्वी हिंदी विकसित हुई।

पूर्वी हिंदी के उत्तर में पहाड़ी बोलियाँ पूर्व में मागधी बोलियाँ (पश्चिमी भोजपुरी तथा नागपुरिया), दक्षिण में मराठी और पश्चिम में शौरसनी बोलियाँ (बन्नीजी और बुद्धलक्ष्मी) स्थित हैं। पूर्वी हिंदी का क्षेत्रफल १,८७,५०० वर्गमी० है, इसके अन्तर्गत अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी प्राचीन है जबकि उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बुद्धलक्ष्मी छोटा नागपुर तथा मध्यप्रदेश में फनी हुई हैं। अवधी और बघेली में पर्याप्त समता है किन्तु छत्तीसगढ़ी पर मराठी और उड़िया भाषाओं का प्रभाव पड़ गया है।

अवधी—अवधी के अर्थ नाम पूर्वी, बागनी (अथवा बागनी) और बगवाडी हैं। पूर्वी और बगनी व्यापक शब्द हैं और बगवानी का क्षेत्र अवधी के क्षेत्र के भीतर का ही है। उनाद, लखनऊ, गयजली, तथा पनेहपुर के कुछ भाग का बग

राजपूतो की प्रधानता के कारण बसवाडा कहन हैं, वही की बोली बसवाडी कहलानी है। अरवधी सम्पूर्ण अरवध प्रन्थ की बोली है किन्तु इसकी सीमा के अन्तगत हरदाई, रोरी तथा फजावाद के कुछ भाग नहीं पात है। यह भाषा अरवध के अहिर्भूत प्रदेश फतेहपुर प्रयाग केरावल तहसील छाड कर जौनपुर तथा मिर्जापुर के परिवर्ती भाग में भी बोली जाती है।^१ लगभग २१ कराड की भाषा है। प्राचीनकाल में यह प्रन्थ कोसल कहलाता था।

प्रेममार्गी कवि—कुतुबन मन्न जायसी नूर मुहम्मद उस्मान आदि न अरवधी के साहित्य का अपनी रचनाओं से समृद्ध किया है। गो० तुलसीदास न बसवाडी हिन्दी में मानस की रचना की।

पूर्वी मागधी भाषाओं से अरवधी की समता --

ब्रज और अरवधी दोनों में ही मागधी भाषाओं की भाँति ही य, व और ण का शुद्ध उच्चारण न होकर क्रमशः ज व और न होता है। तीन ऊँच ध्वनियों में केवल स का प्रयोग है पूर्वी मागधी में श का। अरवधी में क्ष का उच्चारण भी गुड़ न हो कर छ है।

मागधी में व प्रत्यय भविष्य कदत्त एव क्रियात्मक सना दानो के लिए प्रयुक्त होता है। अरवधी में नी इसका प्रयोग दोनों प्रकार से हुआ है। भविष्यकाल के अधिकांश रूप अरवधी में मूलधातु के साथ व प्रत्यय लगाने से बनते हैं।^२ तीना पुरुषों में व कृदन्त का रूप एक जसा रहेगा जबकि पूर्वी मागधी भाषाओं में यह परिवर्तित होता है।

पूर्वाकालिक क्रिया में इ एव ऐ का प्रयोग होता है कहि राखि, त आदि। पूर्व मागधी भाषा में सम्बन्ध की विभक्ति र अयवा एर है—र एर-कर-केर-काय। अरवधी में इसके लिए केर कर और क का प्रयोग हुआ है। अरवधी के पुरुष बाधी सबनामों का भी पूर्वी मागधी भाषाओं से ही क्या समस्त भारतीय भाषाओं के इस प्रकार के सबनामों से साम्य है।

शब्द भंडार की दृष्टि से भी अरवधी का पूर्वमागधी से वही ऋही साम्य है। चर्यागीतिवोश के कई शब्दों की पद टिप्पणी में सम्पादक श्री प्रदाधचन्द्र वागची न उन्हें अरवधी शब्द बताया है।

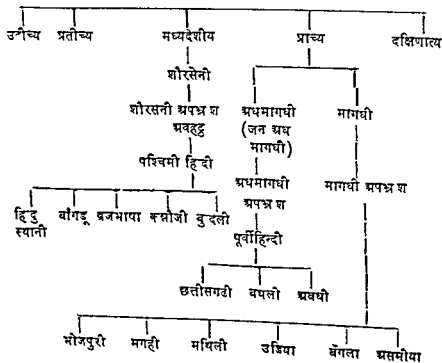
१ डा० उदयनारायण तिवारी—भाजपुरी भाषा और साहित्य उपोद्घात, प० १४०।

२ दक्खीनन्त श्रीवास्तव—तुलसीदास की भाषा प० २२५।

पूर्वाचलीय भाषाओं का पारम्परिक सम्बन्ध प्रकट करने के लिए घाट प्रस्तुत है—

भारतीय आर्यभाषा

षडिक छदस—संस्कृत—मिथितगाया—प्राकृत (पालीमिश्रित) अपभ्रंश—
आधु० भाषाएँ



पूर्वाचलीय भाषाओं के साहित्य का इतिहास

सम्पूर्ण साहित्य के इतिहास के वर्गीकरण की रूपरेखा —

पूर्वाचलीय भाषाओं के साहित्य के इतिहास के वर्गीकरण में बहुत कुछ समानता है। सीना मुगल-युग की एक ही शताब्दियों है। इनके सम्पूर्ण इतिहास की रूपरेखा द कर भाग ब्रज रामायण रचनाकाल के पूर्व तक का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया जाएगा।

असमिया-साहित्य के इतिहास का वर्गीकरण

(१) आदिपुग या प्राकल्पव-काल—(१००० ई० तक समाप्ति)—
बर्पाद-भाषण-रचन शौर साहित्य।

श्री हरप्रसाद शास्त्री का चर्चापदा की भाषा का प्राक्-वर्णन माना है। श्री मुनीतिकुमार चटर्जी ने चर्चापदा की भाषा की व्याकरण विशेषतः चर्चापदा की है। प्राचीन चर्चापदा की भाषा से चर्चापदा की भाषा का साम्य यह लिए कुछ प्रमाण मिल गये हैं— (१) सम्बन्धवाचक की विभक्ति एक और (२) सम्बन्धवाचक की विभक्ति दो (३) अधिकारण का विभक्ति त (४) प्रथम—मात्र प्राक् (५) भूत और भविष्य कृत् इल और इव (हिन्दी भाषा का भूत और भविष्य कृत्) (६) असमापिता क्रिया का विभक्ति इमा तथा इले।

बगला तर्कों की परीक्षा (१) सम्बन्धवाचक की विभक्तिपा एक और का प्रयोग चर्चापदा के शब्दों में प्राप्य है—'शब्दी' १६ 'शब्द' २ 'शब्द' १०। किन्तु र विभक्ति असमीया और उडिया माना भी जाता है। एरि विभक्ति विद्यापति के पदा में भी मिल जाती है। (२) सम्बन्धवाचक की विभक्ति र प्राचीन चर्चापदा में एक आधुनिक चर्चापदा के नाव्य में प्रयुक्त हुए हैं। (३) अधिकारण की त विभक्ति के स्थान पर चर्चापदा में त और कृत्-कृत् का प्रयोग होता है असमीया में आज भी त विभक्ति चलती है। अनएव चर्चापदा के हाडित एक दातत ३३ शब्दों में असमीया से साम्य है। (४) भूत और भविष्य कृत् त इन और इन बचन चर्चापदा में ही नहीं हैं असमीया एव उडिया में भी हैं। पुरुषवाची सयनामा के माय तीना भाषाओं का कृदन्ता के भिन्न भिन्न रूप है माय ही पुराचनीय भाषाओं की क्रियाओं में निगमद नहीं है जबकि चर्चापदा की भाषा में हिन्दी के समान भेद हैं—नाना तत्वर मौलिल र गणत सामली डानी— २८। कीर्तिनता और वण रत्नाकर में ल कृदन्त है और भाजपुरिया में भी इल मिल जाता है। इल के आधार पर कोई एक भाषा चर्चापदा पर अपना अधिकार प्रकट नहीं कर सकती। इसी प्रकार इव कृदन्त के प्रयोग रूपा में भी विभिन्नता है। भाजपुरिया के प्रथम पुरुष का इव चर्चापदा के प्रथम पुरुष के इव से मिलता है। (५) अधिकारण मात्र आदि परमग माथिली और अवधी में भी मिल जाते हैं—जस माभसानी खीन। मानस में प्रयोग—पहुचाएसि छा माभ निकता—१ १७० ७। (६) इमा और इ असमापिता क्रियाए तीना पुराचनीय भाषाओं में हैं। आधुनिक बगला भाषा की साधु भाषा में इया एव कथित भाषा में ए विभक्ति मिलती है। चर्चापदा की इ विभक्ति गुद्ध रूप में आज भी असमीया और उडिया भाषाओं में मिलती है। इस लिए बगला का यह दावा भी बहुत पुष्ट नहीं है। इस अथवा इमा विभक्ति अवहट्ट भाषा की विशेषता थी। इसका प्रयोग पश्चिमी और पूर्वी दाना भाषाओं में हुआ है। इसका प्रयोग आज भी अवधी और ब्रज में है। इले का प्रयोग—रात भइले कामरु जाय—चर्चापदा में हुआ है किन्तु बहुत कम। ऐसा प्रयोग बगला और असमीया दोन भाषाओं में है।

असमीया भाषा के पक्ष में तक और उनकी समीक्षा—चयापदा की भाषा का आदि असमीया सिद्ध करने के लिए डा० डिम्बेश्वर नेत्राग न अनेक तकल्लिपि हैं जिनके व्यर्थ है जैसे कि स्त्रीलिंग प्रत्यय नी का प्रयाग (गुडिनी), इस प्रकार के प्रयाग भारत की अनेक भाषाओं में हैं। उनके मुख्य विचारणीय तक तथा उनकी परीक्षा प्रस्तुत की जा रही है—(१) व्यञ्जान्त क्ता म ए की उपस्थिति चया म है—कुम्भीरे लाय, चारे निल। असमीया म भी इसकी उपस्थिति है। किंतु यह नियम बंगला भाषा पर भी लागू होता है। (२) क्म का चिह्न क—जस कि ठाकुरक—असमीया म है बंगला म नहीं। किंतु मयिली म भी—क का प्रयाग होता है। उडिया म कु है। यह केवल असमीया की विशेषता न होकर अधिकांश पूर्वी भाषाओं की विशेषता है। (३) डा० नेत्राग न असमीया के पक्ष में सम्बन्ध की विभक्ति र मत्तमी म त का प्रयोग असमापिका क्रिया म इया अथवा इ की उपस्थिति का तक दिया है बंगला त्रिपयक तकों की परीक्षा करते समय इन पर विचार हो चुका है। इस प्रकार नेत्राग के अधिकांश तक वहीं हैं जो बंगला के विद्वानों के हैं। (४) असमीया वाचक तक दन समय बंगला से अवश्य ही अपना पाठ्यक्य दिखाने चलते हैं, उनका एक तक है कि चर्या की भाषा म निषेधाथक-क्रिया म न पहले आया है—नद्वारम, नमेनइ। यह विशेषता असमीया म है किंतु बंगला म नहीं। बंगला म ना क्रिया के पश्चात् आता है—छाने। किंतु हिन्दी म भी तो न पहले आता है। (५) श्री वाणीकान्त काकती का भी एक तक दिया जा रहा है—मध्यवर्ती आ का अनुमरण करने वाले आ के आन पर प्रथम का लघु हो जाता है। यह असमाया और चर्यापदों की विशेषता है—

चर्यापद	असमीया	बंगला	संस्कृत
पत्ता—४	पत्ता	पात्ता	पत्त
चक्का—१४	चक्का	चाक्का	चक्क

किंतु यह विशेषता उडिया भाषा की भी है—बला (बाला) छता (छाना), मया (माया) आदि। फिर चयापदा म एम शब्द का बहुत प्रयाग भी नहीं है।

उडिया के पक्ष में तक और उनकी समीक्षा—चर्यापदा की भाषा की स्त्री-तान म उडिया वाचक भी पाए नहीं हैं। प० नीतकट दास ने उडियायान दश के प्राचीन धर्म की जनयम मान कर तथा उस ऋग्वेद से भी प्राचीन सिद्ध कर कहा है कि सहजयानी एव वज्रयानी सिद्धा की चर्यापदीय भाषा शबर प्रदेश (उडियायान दश—उदासा) की भाषा थी। व उडियायान दश का शबर-संस्कृति का कर्तृ मान

एक दूसरा निराला एक भाषण भाषण और निराला ही भाषण तथा दूसरी भाषण बगल और उल्लस व तदा ता भाषण १। उनका कहना है कि सिद्धा की परिनिष्ठिता और धार्मिक भाषण उग समय की निराला भाषण थी।^१ परिनिष्ठिता व शब्दा की सूत्रों व एक वाक्य व सम्युक्त पर्याय व एक उल्लिया शब्दा ब्यापण है—अहस (अहस) अहिजिति (अहिजिति) अहस (अहस) अहस (अहस) उहस (उहस) अहि (अहस) सेति (अहस)। एक प्रकार का गम्बध मरुत भाषण स जाड वर वाड भी भारतीय भाषण भाषण उल्लिया की भाषण पर अहस दाया प्रकट वर मवती है। परिनिष्ठिता व एक गम्बध म गम्भायता एक टागता नहा है। श्री दास द्वारा प्रस्तुत गम्बध सूत्रों म कान ताग गम्भायता है जा उल्लिया भाषण स समानता रगत हैं—भाती ३० (उल्लिया भाषण=भाषण) एकुटि ३० (उल्लिया—एकुटिभा=एकाकी) और टाण २ (उल्लिया—टाण=धाना)। उल्लियन चयायन व अहस वरुड ३७ और विघ्नातो ४ अरुनीन शब्दा व उल्लिया भाषण का बतया है। पहला शब्द वाण्ड^२ (शिरन) अरुश ही उल्लिया का है किन्तु विघ्नातो व निराला उल्लिया तुलसीदास की यह परिनिष्ठिता—नतर वाम भन वाडि रिधानी। ही रिधाना का अर्थ उल्लिया म अरुश ही यानि ह अरुणव विघ्नातो शब्द उल्लिया म गाधक हा मवता है।

भाषण का अध्ययन वाकरण की दृष्टि स उमव रूप निर्माण का होना चाहिए। मैन स्वय चर्यापदा का अध्ययन वर चर्यापदा का भाषण म वहा-नहा उल्लिया भाषण स समानता दती है—गम्बध की विनिष्ठिता र भूत वृदत इल का भइली ४६ (प्रथम पुरण म) एव पायेता ५० (त० पुरण म) प्रयाग अरुमाणिता निराला का इ प्रत्यय वमकारण म कु—अरुिद्याकारिकु^३ ६ अ वय एयु २२ (अरु) अदि प्रयाग उल्लिया भाषण स साम्य रूपने है। तुदपाद अरुि बुद्ध सिद्धा का उल्लियन भी प्राचीन उल्लिया साहित्य म है।^३ फिर भी यही कहा जाएगा कि उल्लिया के शब्द अरुमीया और वगला स कम है।

हिन्दी के पक्ष म—कारक चिह्न म कई स्थान पर मयिली एव अरुधी के कारक चिह्न है। अरुव निराला पदसइ वहल अदि हिन्दी की ता है ही अरु कई निराला एसी हैं जिन पर किमी भी अल्लाच्य भाषण का अरुधिकार सिद्ध निराला जा सकता है। पूर्वी भाषणभाषण की निराला म लिंग भेद नहीं हाता किन्तु चर्यापदा म है। हिन्दी की भाँति चर्यापदा की प्रेरणाधक निराला म अरुव प्रत्यय का प्रयोग है। चरु बिन्दु क रूप म विभक्तिवा का प्रयोग भी दता जा सकता है। सवनाम मइ तइ हउ, अहरे तुम्हे ताहारि ज त अदि एसे हैं जा थोडे ही हर-हर से किती भी

१ प० नीलकण्ठ दास का सभाषणीय भाषण—अरुिएटन काफ़स पृ० १७।

२ बगला-वाण्डा।

३ ताहिदास मठ वरि अरुि शूयसहिता—अरुयुतानन्द दास, द्वि० स० पृ० ७६।

भाषा के मिश्र किय जा सकते हैं। फिर भी भुगत हिन्दी की ओर ही है—हउ ग्रज और अरधी म है किन्तु पूर्वाचलीय भाषाया म नही है। इत और इत वृद्धत मथिनी आदि भाषाया म हैं तथा केवन इत अरधी म है। शब्द भण्डार बहुत-बुद्ध हिन्दी का है—नेउर ११, पाती ३, मेह पेप, तामु जिम ३०, अरपाली (अरवार २४) जइसो-तइसो १३ तइसो-तइसो २२ सदभाव १० फइमे = साच २६, टाल (गटोन) ४० कुठार डार ४५, मेलइ (अरधि) १८, अइसन २ आदि ऐसे शब्द हैं जो प्राय हिन्दी म मिलेंगे, पूवाचनीय भाषाया म नही। कही-कही तो पूी पत्रि ही हिन्दी की प्रतीत शोती है—

भाव न होइ अभाव न जाइ। अइस सबोहे को पतिपाय ॥

चर्यापदा के छंद मानिक ह और हिन्दी क छंद भी मानिक हैं। पूर्वाचलीय भाषाया का प्राचान काल स प्रचलित छंद पयार मानिक नही है।

निष्कर्ष—चर्यापदा की पाथी का पाठ निर्धारित नहा ह, इसलिए निश्चयरूप स बुद्ध कह सकना कठिन है। यदि पाथी की भाषा शौरसेनी अपभ्रंश और निपियार पूर्वाचलीय हा अथवा इसका उलटा हा ता भी तारा भाषाया के मिश्रित हा जान की सम्भावना हा सकनी है। कई तत्र शौरसेनी अपभ्रंश के पत्र म हैं। राजपूता के प्रभाव से शौरसेनी अपभ्रंश समस्त उत्तरी भारत की गण्टभाषा हा गया था। पूर्वाचल के लोग न अपनी छाप लगाते हुए उस अपभ्रंश म रचना की होगी। फिर भी चर्यापदा की भाषा पर पूवाचनीय भाषा के शब्द की उपधा नही की जा सकती। उग्र के तनों पर विचार करत समय सम्बन्ध की विभक्ति अममापिका तिया की विभक्ति, न और इत कृदन्ता के कारण पूर्वाचल का प्रभाव दखा ही गया है, कुछ शब्द भी तम हैं जिनका सम्बन्ध भी पूवाचल से है—वाने बोव ४० गगा वाना-बोवा = वधिर-मूक य शब्द उरिया और अममीया म भी है। टणअ वाण्ड घुमद त्रियाण बगला म मिलनी हैं। रथर ततनी कुम्भीर गाय २ एक से गृडिनी हुद घर सायम-६ जस प्रयाग भी बगला म मिलन है। शबर पाद द्वारा चित्रित शबरी का रूप पूवाचल के पवता पर प्राप्त है। बगल म पण शबरी पावती की पूजा हाती है। सहजपानियो की विचारधारा की परम्परा कवीर म दखन को मिलनी है किन्तु बगल म ता आज तक बाउल उलटवामियों जमी उक्तिया कहते आ रहे है—

बलद रइल गाभीर प्याट पाहा गेल माठ

जलेर उपर सय्या पात्या चोरा पार निद।^१

१ उचा उँचा पावत तहि बगद मवरी बानी।

मागनि पीच्छ परहिण गजरी गिवत गजरी मानी ॥

—चर्यापति—गीति तमाक, २८।१।

२ मुहम्मद मनमूर—शारामणि प० ६।

वाउता म नूयना गहजवा और गुन्ना तथा पन्ना, मुपुन्ना, आदि सभी मिलते हैं। उत्तरी बगान के बौद्ध गाना का गणना का है।^१

यह ता स्पष्ट है कि बौद्ध चर्यापना का आत्मा पूर्वी है भाषा भन ही मगिनी मिश्रित शौरसनी अग्रभ्रश हो जिसम नि पूर्वाचलीय भाषा का उग रूप की ती यत्र तत्र छाया है जा कि सम्मिन्न रूप का अग्रमीया उगता एउ उन्विया ता प्रारम्भित रूप था। यह भी हा गवता है कि यत्र भाषा उपयुक्त भाषाभाषा म मिततर गटिा की गयी कृत्रिम भाषा हा जमी नि अजबुति थी। बगान और उहीमा म अजरति का प्रचार १५वीं शताब्दी म ही दया जाता है - फिर भी मैं अपने प्रथम बचन का ही समर्थन करता हूँ।

डाकखना-वचन

बौद्ध चर्यापना के समान ही डाकखना के बचन के सम्बन्ध म भी मतभेद है। असम बगाल उड़ीसा और बिहार म इनकी कहानतें प्रचलित हैं और इन पर चागे राज्या की भाषाभाषा का अधिचार सिद्ध किया जाता है। डाक पुरुष हैं और राना महिला। डाक का सम्बन्ध बराहमिहिर (पाँचवीं छठी शताब्दी) स जोडा जाता है। असम आदि प्रदेशा म इनके जन्मस्थान के तोजन की भी चेष्टा की गयी है। असम के प्राय सभी घरा म डाक वचन की पोवी मिल जाणगी।

श्री नगद्रनाथ चौधरी दढता क साथ डाक और राना शब्दा की व्युत्पत्ति तिच्वती शब्दो स मान कर कहते हैं कि य वचन किसी विशेष पुरुष या स्त्री के न हो कर सामान्यत विद्वज्जना के चतुर वचनो के तिए प्रयुक्त हुए हैं।^२

हिंदी प्रदेश के घाघ वचन और डाकखना वचन म साम्य है। यदि तिच्वती ग्हाग शब्द स डाक की व्युत्पत्ति मानी जाती है तो सम्बन्ध भिडाने के लिए घाघ शब्द की भी मानी जा सकती है।

ये वचन सारे भारत म ही प्रचलित ह जिनका आधार हमारी कृति ससृति है। वर्षा के लक्षण टुपि विज्ञान पारिवारिक जीवन आदि ही इनम चिन्नित हुए है। एक जैसी परिस्थिति हाने के कारण इनका प्रचार सम्पूर्ण देश मे समान रूप से है। अतएव इह किसी प्रदेश विशेष की सम्पत्ति नही कहना चाहिए।

नेपाल म प्राप्त डाकाणवतत्र की नजारा लिपि की पाषी के अनुसार इसका रचना-काल १३वीं शताब्दी मान कर इस पूर्वाचलीय भाषाभाषा स सम्बद्ध किया जाता था। अब इसकी भाषा शौरसनी अग्रभ्रश सिद्ध हो चुकी है।

०नीना प्रदशा के लाग आदि-युगीन साहित्य म चर्यापिद डाकखना क वचन

१ मुहम्मद मनमूर—हारागणि पृ० २६।

२ नगद्रनाथ चौधरी—डाकाणवतत्र प० ७।

और बुद्ध नाचगीता का उल्लस करने हैं। प्रथम दो का वणन हो चुका है। अब प्राक् रामचरितकाय-नाच तक का सक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत है।

असमीया-साहित्य

लिखित इतिहास से पूर्व असमीया भाषी विद्वान् अलिखित साहित्य की भी चर्चा करते हैं। आदिम जातियों में आज भी युगयुगांतर में लोकगीत, कथाया आदि का प्रचार है जो कि उनके द्वारा निरिषि बद्ध नहीं हुए हैं। इसी प्रकार असमीया भाषा के आदि-काल से ही लोक-साहित्य का प्रचार रहा होगा जिसकी धारा आज तक प्रवाहित हो रही है। तीन प्रकार के लोकगीत असम में विशेष रूप से प्रचलित रहे हैं—(१) अनुष्ठानमूलक—जैसे विद्वगीत आदिनाम, बियानाम आदि। (२) आभ्यास मूलक (ballads) किसी महापुरुष का नाम पर गीता की रचना (३) विविध-विषयक—निचुकनिगीत (रोने बच्चा का चुप कराने की लारिया), गरम्पीया गीत (चरवाहा के गीत) नाव घेने के गीत आदि।

विद्वगीत—विद्वगीत उत्सव गीत हैं। बहाग विद्व वम-नोत्सव की अभिव्यक्ति है। कृपिजीवी-जन नूनन ऋतु के स्वागत में नृत्य-भाण द्वारा उत्सव प्रकट करते हैं। स्त्री-पुरुष यौवन का नृत्य करते हैं। यौवन की उद्दाम वामना मितन की तीव्र आकांक्षा विरह का उत्ताप प्रेम की विनय और धुनी हुई हुई जमे उच्चनशीत मन की सम्भव अभिव्यक्ति विद्वगीता में प्राप्य है।^१ इन्का गायन पवत वनप्रदक्ष, नदी आदि स्थानों पर काम करने वाले नागा द्वारा अपने अपने कथि में सलमन रह कर भी होता है।

आइनाम—रिचया का गीत है और इनके कई नाम हैं। इन गीतों में स्त्री सलम कोमलता और उनका सहज विश्वास के दशन होने हैं।

बियानाम—महिलाएँ विवाह के अवसर पर बियानाम गीत गाती हैं। भारत के अन्य प्रदेशों के गीतों के समान इन गीतों में भी राम सीता, कृष्ण रविमणी, हरि गौरी आदि पौराणिक चरित्रों का उल्लेख होता है।

आभ्यास मूलक गीत प्रायः असम में उत्पन्न महती विभूतियों को आश्रित कर गाय जाते हैं। लारिया और पशुधारण आदि गीतों का भी आदि काल से ही प्रचार रहा है।

मत्र-साहित्य का भी असम में प्रचार रहा है। गोपनीयता के कारण तथा गुद्ध पाठ से लाभ प्राप्ति की धारणा के कारण मंत्रों की भाषा प्राचीन रह सकी है। नवा-दसवा शताब्दी में शंकराचार्य की दिग्विजय के समय यहाँ की मंत्र शक्ति का परिचय दिया गया है। कामरूप-नामाख्या का तत्रमय तो बहुत पहल से प्रचलित है।

१ मत्स्य-द्रनाथ शर्मा—असमीया साहित्य इतिवत्त, पृष्ठ १३।

लिखित साहित्य — वष्णव-काल (१२००-१६५०)

१३वीं से १४वीं शताब्दी तक का साहित्य प्राप्त नहीं होता। अगले पश्चात् वष्णव साहित्य प्रारम्भ होता है। वाग्देवता के मरण होने के बाद शरणा का मुख्य और प्रतिनिधि कवि मान कर इस काल के दो भेद किए जाते हैं—

(१) प्राक शंकरदेव-युग

(२) शरणादेव युग

प्राक शंकरदेव युग के लेखकों ने प्रायः रामायण के आश्रय में रह कर धार्मिक महाकाव्यों और पुराणों के चरित के आधार पर काव्य रचना की है। इनकी रचनाओं को अनुवाद नहीं कहना चाहिए क्योंकि इसमें कवियों के व्यक्तिगत स्वतंत्र कल्पना और स्थानीय वशिष्टय का भी प्रतिबिम्ब मिलता है।

कमला के राजा दुर्लभ नारायण के राजपति हेम सरस्वती ने प्रह्लाद चरित और हरगौरीसखा लिखा था। ये पण्डितों की वंश-परम्परा में उत्पन्न हुए थे। कवि रत्न सरस्वती राजा दुर्लभ नारायण के पुत्र इन्द्र नारायण के आश्रय में थे। उन्होंने महाभारत के द्रोणपर्व के जयद्रथ वध पर काव्य रचित की है। रत्न-वन्दती ने रामात्मभवज के आश्रय में सात्यकि प्रवेश का यज्ञ लिखा। हरिहर विप्र ने अग्निनी भारत के आधार पर दो काव्य लिखे थे।

दूसरे कवियों के पश्चात् इस युग के मुख्य कवि माधव-काली आते हैं। माधव काली एवं शंकरदेव तथा उनके शिष्य माधवदेव के विषय में जीवनी बात अध्याय में लिखी जाएगी।

द्वैत साहित्य—प्राचीन काल-काव्य दो प्रकार के थे—

(१) पल्लवाव्य (गय)

(२) मगनकाव्य (आर्यायानमूत्रक)

प्रथम-काव्य के अंतर्गत चर्यापना का समावेश होता है। परवर्ती प्रचलित नाट्यमेतरी कथा रामकृष्ण-गीता गीत, नरसी चर-वचना की कथा आदि के आधार पर अनुमान किया जाता है कि इनका प्रचार बहुत पहले से हुआ। डाकयना के वचन प्रवाद (कहावतें) छटा (नोरियाँ आदि) का भी प्रचार था। अतएव भागवत के अनुसार प्रकृत है कि मनसा खड़ी वागुनी शिव आदि के गीत गाय जाते थे। भोगीपाल सोगीपाल मनीपाल आदि के गीत भी गाय जाते थे। बंगाल में पाँचाली गीता का प्रचलन भी बहुत प्राचीन है। पाँचाली-गीत तीन प्रकार के थे—(१) लौकिक दश-नेत्री माहात्म्यमूत्रक (मगन और विजय-काव्य) (२) मरुत पीराणिक आर्यायानमूत्रक काव्य (रामायण और मन्त्राभांग के आधार पर) (३) लौकिक पादक नायिकाश्रित काव्य। मन्त्र मन्त्रिका और चामर के साथ इन गीतों का गायन होता था। मुख्य गायक अभी गाता कभी द्रुत आवृत्ति करता और कभी नाचता भी था उससे साथी भी दानव (धूमकार) के रूप में उनकी शक्ति करते थे।

खड़ीदास का कृष्णकीर्तन—द्वितीय-साहित्य-परिचय से १६१६ ई० में पायी

प्रकाशित हुई थी—जिसे नाम दिया गया श्रीवृष्ण कीर्तन। इस पाथी के प्रथम अंतिम तथा एक दो मध्य के पष्ठ खटित थे। इसमें भणित वडू चडीदाम की ह। बेंगला-साहित्य की इसमें पुगनी कोर्द पाथी नहीं मिनी अनुमान है कि १८१० एव १५०० ई० के मध्य इसकी रचना हुई होगी। इस पोथी के प्रकाशन के साथ ही चडीदास की समस्या उठ पड़ी हुई, क्योंकि बगान में चडीदाम नाम से एकाधिक कृतियां न काव्य रचना की है। इनमें प्राचीन चडीदाम का साजने का प्रयास किया गया। वडू चडीदाम ही प्राचीन मान गये। मुकुमार सेन^१ ने विद्वत्तापूर्वक प्रमाण दे कर सिद्ध किया है कि इसकी भाषा १६०० ई० के श्रोक की ह इसमें कुछ मिश्रण भी हुआ है। यह ग्रंथ महाकाव्य के गुण से पूरा है। राधा का चरित्र मुदरला से परसुत किया गया है। महजयानी धारा में ही राधा के चरित्र का विकास हुआ है, य जीवन प्रकृता परकीया नायिका हैं।

यह यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि इसकी भाषा उत्तरी बेंगला एवं अमरीया मिश्रित है जिसे अमरीया भाषी इस पर अधिकार प्रकट करने प्रतीत होता है।^२

बेंगला साहित्य का प्रथम कवि कौन?—चडीदास की प्राचीनता स्वीकार कर डा० मुनीनिकुमार चटर्जी प्रभृति विद्वान् जयापदा के पश्चात् चडीदास का प्रथम कवि हान का गौरव देते हैं, कृत्तियाम (बंगला रामायणकार) इनके पश्चात् आते हैं। मुकुमार सेन आदि जयका न कृत्तियास को चडीदास से पूर्व उत्पन्न मानते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि चडीदाम की पुस्तक की तितनी पुरानी प्रति प्राप्त है उतनी पुरानी कृत्तियाम की नहीं। फिर भी चडीदास और उनका कृष्णकीर्तन के काल से कृत्तियास और उनकी रामायण का काल अपेक्षाकृत पुराना का है। इसलिए प्राप्त लिखित साहित्य के प्रथम कवि कृत्तियास ही हैं। चडीदास का जीवनकाल डा० मुकुमार सेन के मतानुसार १५२५ ई० के इधर का नहीं है। कृत्तियास की जीवनी का अध्ययन तीसर अध्याय में होगा।

उडिया-साहित्य

आदिद्युग—अमरीया और बेंगला भाषिया के समान उडिया भाषी भी बौद्ध गान और दाहा पर अपना दावा प्रकट करते हैं। नीलकण्ठ दाम प्रभृति विद्वान् कान्तिवापुराण में वर्णित आडिडियान सागा-नीठ को उडीसा के अतगत मान कर सिद्ध करते हैं कि सिद्धा की साधना यहाँ से ही पवाचन में विरामित हुई। काङ्गपा शक्तीपा तुर्दग दारिपा और धनविपा यहाँ के जनाय गये हैं। उडिया साहित्य के पञ्चसत्याश्र

१ डा० मुकुमार सेन—बागाना साहित्यर इतिहास (१) पष्ठ १६६।

२ डॉ० वाणीवान्त काकती—आमामीड ट्टम फार्मेशन एण्ड डेव० पृ० १०, ११।

पर इनका प्रभाव पडा था। इनका नाम के वचन एक अनेक ग्रन्थों में यहाँ भी प्रचलित थी।

इसी युग में राघवकी साहित्य भी मिलता है। गिरिवेद जवधम की पुस्तक है। यह बौद्ध ग्रन्थ और सारलादास के बीच की बड़ी है। इसके साथ गद्य-व्याख्या दी गयी है जो १२-१३वीं शताब्दी के गद्य का अच्छा उदाहरण है। सप्तम-याग धारणात्मक पुस्तक किसी न गोरखनाथ के नाम पर लिखी है। शरमत पर एक और पुस्तक है रुद्रसुधानिधि, १३वीं शती के अवधूत नारायण स्वामी द्वारा यह पुस्तक लिखी गयी है और सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुई है।

मादलापजी— यह ग्रन्थ नगाडे के आकार में तात्पत्रा के ढर के रूप में जगन्नाथ मन्दिर में सुरक्षित है। कहा जाता है कि चोडगणपति ने इस ११-१२वीं शताब्दी में लिखा था किन्तु जगन्नाथ स्वामी के इतिहास के साथ ही इसमें १६वीं शती के राजाओं का भी वर्णन है जिससे हरकण्ठ महताव उस विद्वान् इस १६वीं शती के पहले का नहीं मानते हैं।

उडिया साहित्य में कोहलि और चौतीसा काव्या की परम्परा उसी युग से चली थी। कोहलि-काव्या में कोयल का सम्बोधित कर कविता लिखी गयी। चौतीसा में क संध तक ३४ अक्षरों को प्रथम मान कर छन्द लिखे गये थे। मारकड दास का केण्यकोहलि पुराना ग्रन्थ है। इसमें चौतीसा पद्धति भी है यथादा के विरह वर्णन से इसका सम्बन्ध है। बलसा चौतीसा प्रथम शुद्ध चौतीसा है। इसके लेखक बच्छदास का समय निश्चित नहीं किया जा सका है। इसमें शिव और पावती के विवाह का हास्य मय वर्णन है।

सारलादास— सारलादेवी के भक्त सारलादास ही गद्य में उडिया साहित्य के प्रथम कवि माने जाते हैं। इनका सत्य नाम सिद्धेश्वर परिडा था। इनका समय १४-१५वीं शताब्दी है। ये मस्कतन नहीं थे इन्हें 'तूद मुनि' कहा गया है। उडिया का विद्वद समाज इनके ग्रन्थ का व्यंग्यपूर्वक तैली भागवत कहता रहा है। इनके पात्रों के चित्रण में उडिया भूमि की गंध है किन्तु चित्रण संस्कृत के उच्च धरातल पर नहीं हुआ है। द्रौपदी का साधारण नारी की तरह शोचिता ढाह से पीडित सिद्ध किया गया है। एक अक्षर पर सत्य बोलने के लिए बाध्य हो कर वह यह भी स्वीकार करती है कि उसका मन वीर सुन्दर वर्ण की ओर आवृष्ट है। चित्रण में नवीनता मौलिकता और मनोवर्णनिकता है किन्तु गौरव का अभाव है। कहीं कहीं ब्राह्मण और चण्डाल का संघर्ष प्रस्तुत कर युगीन समाज की भलक भी दी है। नारी को शक्ति मती चित्रित करने के लिए इन्होंने बिनका रामायण लिखी थी। इनका एक और ग्रन्थ है चण्डी-पुराण।

एक-दा अय लेखको के भी प्रथम इस कान में उपलब्ध हुए हैं, जमे कि अजुनदास का रामविभा और चतयदास का विष्णुगभ पुराण । रामविभा काव्य उडिया का प्रथम महाकाव्य माना जाता है ।

पच सखा युग या वृष्णव युग— राजा प्रतापरुद्र देव के समसामयिक पाँच कवि बलरामदास जगन्नाथदास यशोवन्तदास अनन्तदाम और अच्युतानन्ददास पचसखा कहलाये । ये वृष्णव कवि थे किन्तु इनकी भक्ति चानमिश्रा बतायी गयी है । जिममें योग और काया साधन पर जोर दिया है । चतय देव ने इनसे सख्य स्थापित किया इसीलिए ये पचसखा कहलाये । इनके काव्या पर चतय का प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता, यह प्रभाव आगे रीतिकाल में स्पष्ट हुआ है । पचसखाओं में वयोज्येष्ठ लेखक बलरामदास का जीवन परिचय तीमरे अध्याय में प्रदत्त है ।

वृष्णवकाल के पश्चात् १७वीं १८वीं शताब्दी में उडिया साहित्य में हिन्दी साहित्य जसा रीतिकाल आया । वृष्ण की भक्ति और शृंगार से सबलित मधुर और सुन्दर काव्य का सृजन हुआ । इसमें कही कहा अश्लीलता आ गयी है । इस युग के श्रेष्ठ कवि हैं श्री उपेन्द्र भज ।

द्वितीय अध्याय

धर्मसाधनाएँ और रामायण

अपने देश में देवताओं की दो श्रेणियाँ रही हैं—एक जार प्रिय-दशा मुक्ति-पूर्ण देवता हैं तो दूसरी जोर है कुरूप एक कुरूप-पूर्ण देवता । दो श्रेणियाँ दल कर ही कल्पना की गयी कि प्रथम प्रकार के देवता जायश्रेणी के हैं एक द्वितीय प्रकार के अनाय श्रेणी के । शिव एक शक्ति के विषय में कहा गया है कि ये मूर्त अनाय देवता थे किन्तु जाय देवता मदन में इन्हें स्वीकृति मिल गयी । एका भी तो संभव हो सकता है कि ये देवता थे तो जाय ही किन्तु अशिक्षित एक जय-सभ्य यय जातियाँ न इनका अपनी मनावृत्ति के अनुसार पूजन कर इनका रूप विद्वान किया है ।

निगम का जाय प्रभावित एक जागम दो अनाय प्रभावित माना गया । आगम का अर्थ आया हुआ बता कर दो अनायों से ग्रहण करके की कल्पना की गयी । किन्तु बुद्ध विद्वान आगम का माक्ष जोर भोग का उपाय बताता है । श्री उगदन उपाध्याय अधिकांश जागमा की भित्ति निगम का ही मानते हैं ।

जागम ही तत्र है । तथा ये तीन प्रमुख भेद हैं—१ ब्राह्मण तत्र २ बौद्ध तत्र एक ३ जन तत्र । एक समय ऐसा आया कि भारत की सभी उपासना में तत्र का समावेश हुआ । पूजाओं की साधनाओं में जायक सस्पष्ट अधिक देखा जाता है ।

ब्राह्मण तत्र के भी पाँच भेद थे—१ ब्रह्मवतत्र २ शक्ततत्र ३ शाक्ततत्र ४ सौगन्त जोर ५ गणपत्य-तत्र । प्रथम तीन तत्र का ही विशेष महत्त्व रहा है ।

आगम कर शाक्त धर्म का ही तत्र मानने की भूत देखी गयी । श्री गोपी नाथ कविराज के कथनानुसार बन्तुन तत्र विदु की साधना है । वीर का उच्चगति प्रदान कर तत्र जोर गति मर्णा होना है बुद्धिमान का उदबुद्ध कर महसार तक पहुँचाता था । किन्तु जायधारायका के हाथ में पकर दम सिद्धांत का विपरीत

१ श्री गोपीनाथ कविराज - ताजिक बाइ साधना और साहित्य (नागद नाथ उपाध्याय) सूचना ।

जाचरण हुआ और यह साधना क्लृप्त हुई। वृष्णन धर्म के अनिर्गुण अथ धर्मों के शक्त एवं बौद्धात्मक तंत्र के प्रवेश ने देह गृहीत और ह्लासा मुख बनाया।

इसवी सन के प्रारम्भ से ही पंच मकारों का प्रचार पाया जाता है। चौथी—पाचवीं शताब्दी में तंत्र साहित्य मिलना प्रारम्भ होता है। सातवीं शताब्दी में इसका पूर्ण विकास हुआ। भिक्षु भिक्षुणिया के दुराचार से समाज बौद्ध धर्म का घृणा करने लगा था। जाना का पनी और आकृष्ट करने के लिए बौद्ध ने तंत्र मंत्र का आश्रय लिया।^१ पूर्वांचल की ओर बौद्ध धर्म का विकास अधिक हुआ था, वहीं तान्त्रिक-साधना के गृहीत रूप का आरंभ अधिक प्रचार हुआ।

शिव और शक्ति सम्प्रदायों में जनक विवृतियाँ आयी थीं वृष्णव सम्प्रदाय इन विवृतियों से बहुत कुछ मुक्त रहा।^१

पूर्वांचल की साधनाएँ

० कानिका पुराण (१०वीं शताब्दी) एवं यागिनी-तंत्र (११-१६ वीं शताब्दी) नामक दो ग्रंथों का मूल अस्मभूया विद्वानों के मत से अस्मभूय प्रदेश में हुआ था, क्योंकि इन ग्रंथों में कामरूप का वर्णन है। इन ग्रंथों का प्रभाव पूर्वांचल के बहुत बड़े भाग पर पड़ा है। कानिका पुराण में शाक्त धर्म का प्रचार है। इस उपपुराण में शाक्त-धर्म विशेषतः कामाचार के रूप की तीव्रता दृष्टिगत होती है। इसमें नरवलि एवं शरणात्मक का उग्र विशद वर्णन है। यागिनी तंत्र के रचना-काल तक शाक्तधर्म का ह्लास देगा जाता है किन्तु राजा नरनारायण द्वारा देवी के मन्दिरों द्वारा से प्रतीत होता है कि वृष्णवाचाय के पश्चात् भी शाक्तधर्म का प्रचलन था।

कानिका-पुराण के वर्णन से पता होता है कि १० वीं शताब्दी के बहुत पहले ही किराता एवं निपादा में प्रचलित नरवलि की प्रथा को हिन्दू तान्त्रिकों ने स्वीकार कर लिया था। इस ग्रंथ के ७१वें अध्याय को रंधिरा-याय कहा गया है। इसमें नर-वलि, पशुवलि स्वर्गात् रंधिर एवं मांस-दान आदि का विशद वर्णन है। वलि के योग्य पशुओं एवं वलि के लिए प्रयुक्त होने वाले अस्त्रों का भी नाम दिया गया है।

यागिनीतंत्र के पष्ठ पटल में पंच मकारों का वर्णन है। मातृमार्ग का छोड़ कर सभी र्गणियों के साथ मधुन की छूट गयी—'मातृमार्ग परित्यज्य मधुन सवयानिपु १-६ ६४। १२ से ६० वर्षों के बीच की जायुवाली स्त्रियों मधुन के योग्य बतायी गयी। रास्वला के साथ रमण हो सक्ता है। वेश्या बचवा वृष्णन की लटकी भी यदि कुमारी हो तो वरुण्य है।

१ डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी—मूल साहित्य, पष्ठ २६।

२ वही, पष्ठ ४४।

३ दामोदर प्रभुन पक्षक का ग्रंथ—वृत्तिवामी बेंगला रामायण और मानस, प० ४०

ये दोनों ग्रंथ पूर्वाचल की साधनाओं के सकल चिह्न हैं। अनाय साधनाओं के पंचमकारा का सेवन बलिप्रथा, रुधिरदान रमणी मद्युन जाति पद्धतियाँ की विकास परम्परा तथा जाय सम्कृति प्रभावित जनो द्वारा इनकी विवश स्वीकृति आदि का परिचय भी इन ग्रंथों में मिल जाता है।

आय पद्धतियों एवं अनाय पद्धतियों में निरन्तर सघप चलता दिखायी पड़ता है परिस्थितियाँ से विवश हो कर जाय उपासना पद्धतियों में अनाय उपासना-पद्धतियों का समावेश किया गया है। तब प्रथा में ब्राह्मण की पशुशक्ति स्वगान रुधिर अथवा मदिरा द्वारा देवी की उपासना करने का निषेध है। वह पशुओं की मूर्ति बना कर बलि दे सकता है। ब्राह्मणों ने नरबलि आदि का विरोध किया था, क्षत्रिय इसे अपनाय हुए थे।

पूर्वाचल की अनेक जादिम जानियों की बलिदान एवं रुधिरदान प्रथाओं का उल्लेख प्रथम अध्याय में हो चुका है। जमिनी जश्वमेध में कर्ण ने मांस काट कर इन्द्र को प्रदान किया था। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में रावण अपने दसों भिर काट कर शिव को अर्पित करता है। कालिका पुराण (८३-६२) में ललितकान्ता देवी को स्वगात्र रुधिर अर्पित करने का विधान है। बंगाल में यह प्रथा आज भी किसी न किसी रूप में जीवित बतायी जाती है। असम के ह्यग्रीव माधव नामक देवता की पूजा बौद्ध-लोग दीपवर्तिका के साथ उगुली जला कर करते हैं।

कालिका-पुराण आदि संस्कृत ग्रंथों में मांस मदिरा आदि का सेवन रक्तमय उपामना तथा नारी के मुक्तभोग आदि के वर्णन से प्रतीत होता है कि ब्राह्मण शास्त्र लेखकों को कामरूप की परिस्थितियों से समझौता करना पड़ा था। उह लिखने के लिए बाध्य होना पड़ा कि जिस पीठ में जो आचार प्रचलित है वही बंध है—यस्मिन् पीठ में आचार में आचारा विविधतः । या० त० २६१८। किन्तु उह जाय पद्धतियों का प्रसार का ध्यान था तथा उही को व थोड़ा समझते थे। तभी उहाने कालिका पुराण के अन्त में वसिष्ठ का मुँह से कहलाया है कि जब तक विष्णु स्वयं इस स्थान पर नहीं जाते तब तक यहाँ आगमों के प्रतिपादक रहेंगे—(८८ २३)। अर्थात् बण्णवधम के प्रचलन से ही यहाँ की अनाय उपासनाओं की समाप्ति होगी। हमारे रामायण लक्ष्मी के प्रयास से कालिकापुराण की "भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। असमीया रामायण का नलक शकरदेव को शाक्त ब्राह्मण-सेवी राजा की राजसभामें बण्णवधम के पक्ष में शास्त्रीय प्रमाण देने के लिए कालिकापुराण के इसी अंश की सहायता लनी पड़ी थी।

• पूर्वाचल की साधनाओं पर बौद्ध धर्म का भी प्रभाव है अतएव सन्धेय में इस पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। गौतमबुद्ध का सिद्धांत बहुत कुछ उपनिषदों का अन्तर्गत प्रभावित बनाय जात है। बुद्ध का जन्म के पूर्व ही उनका नय धर्म की पीढ़ी का तयार हो चुकी थी। उपनिषदों में निवृत्तिप्रधान जीवन-ध्यान का उपदेश

दिया है। केवल कुछ पक्षा का छाड़ कर बुद्ध के उपदेश औपनिषद आस्तिक-परम्परा स विच्छिन्न नहीं जान पड़त।^१

आरम्भ से ही बौद्ध-धर्म वदिक धम की वर्ण-व्यवस्था एव आत्मवाद का विराधी बन कर आया था। आरम्भ से ही वणाश्रम-व्यवस्था से बहिभूत जनो अथवा निम्न-जातिया न बौद्ध धम का अपनाना प्रारम्भ किया था। वदिक धम की प्रतिद्वन्द्विता से ही यह धम प्रारम्भ होता है और आज तक के ममूत विकसनम म वेद विरोधी स्वर सुन जा सकत है। वदिकधर्म की प्रतिद्वन्द्विता म ही बौद्ध धम का हीनयान स महायान एव मत्रयान के रूपा म विकास करना पडा। जाग चल कर तात्रिक-विदु साधना का इमम भी समावश हुआ। सानवीं शताब्दी म वज्रयान का विकास हुआ। निर्वाण क तीन उपादाना—शून्य, विज्ञान एव महामुख के सयाम का ही वज्र माना गया जोकि दृष्ट सार अभेद्य आदि है। शून्य निरात्मा म वाधिचित्त का लीन कर चिर सुख की बात कही गयी। भिक्षुणिया के प्रवण से बौद्धधम म पहले से ही घुन लगगया था, अब शून्य निरात्मा एव वाधिचित्त गुह्येन्द्रियो के प्रतीक हुए एव व्यभिचार का मूनपान हुआ।

आठवीं शताब्दी म शकराचार्य द्वारा बौद्ध निमूलन से बौद्धाचार्य भाग भाग कर मगध एव नालंदा म एकत्र हुए थ। इनका सम्बन्ध अथवा प्रभाव असम बगाल एव उड़ीसा पर देखा जाता है। इधर गौड क शासक पाल-वंशीय राजा बौद्ध थ। पूर्वचल म बौद्धधम तात्रिक एव विरातीय आदि प्रभावा स समन्वित हा कर अनेक विवत्तना का प्राप्न हुआ—हीनयान, महायान वज्रयान, सहजयान कालचक्रयान, बौद्ध तत्र आदि। अनेक दैव-किया की उपासना बौद्ध-तत्रा म गहीत हुई। बहूत से एस उपास्यो का भी जाविर्भाव हुआ जाकि शाकन एव बौद्ध दाना म ही दमे जात हैं। सम्व है कि शाकन धम की प्रतिद्वन्द्विता म बौद्धधम न भी शक एव शाकन तत्रा म प्रचलित दधी देवता-रा का अपना लिया हा।

अनेक उपासना-यद्धतिया क पारम्परिक-सम्मिलन से अनेक जटिल उपासनाएँ प्रचलित हा गयी थी। एव बार महजयानी सिद्धा के परम्परा मुक्त, खण्णात्मक, सहज जीवन-यापन के उपदेश प्रचारित हुए, जिनका कुछ-कुछ रूप हम कबीर एव पूर्वा चल के थाल-मम्प्रदाय म दगन को मिलता है तो दूमरी ओर महजिया-वण्णव धारा प्रवाहित हुई जिसक अन्नमन जयदेव, चण्णीदास जादि आते हैं।

बौद्धधम और शकधम के श्रेष्ठ उपकरण के मिलन स नाथपथ का जन्म हुआ था। य ब्राह्मण धम की वण्णवस्था नहीं मानत थ। इनकी भी साधना गुह्य थी, किन्तु य ऊच्चरता हा कर पट चक्र भेदन का उपदेश दत थे, य निर्गोश्वरवादी न हा कर शक थ। किगी समय बगाल म गारुणा विजय एव रानी मयनामती स सम्बन्धित

^१ नागद नाथ उपाध्याय—तात्रिक बौद्धसाधना और साहित्य, पृष्ठ १३।

वहानियों का प्रचार था जिनमें मत्स्य इनाथ एवं हाडिपा जाति मिद्धा का नाम आया है, जिससे पता चलता है कि नाभपथ महजयान का ही विवक्षित था। तार्किक ब्राह्मण धर्म के प्रसार के समय नाभपथ टिक न सका। यह कर्त्तव्य ही चर्चागिया में ही सीमित रह गया जिह हम आज जुगी (युगी) महत है तथा जिनका व्यवसाय कपड़ा बुनना है।

विराता आदि द्वारा बौद्धधर्म के ग्रहण करने से कसी निकट साधनाएँ चल पड़ी थीं इसकी भन्व ड० हजारप्रसाद द्विवेदी के चारुचन्द्र लेख नामक युग के एक श्रेष्ठ गतिहासिक उपयाम में मिल जाती है।

अनेक प्रभाव मर्मावत बौद्ध साधनाओं के स्वर हमारे पूर्वाचलीय रामायण लेखका के रचनाकाल तक किसी न किसी रूप में सुनायी पड़ जाते हैं।

एक परवर्त्ता गिरी राम सरस्वती ने अपने एक ग्रन्थ में पति के ब्राह्मण का वधन परत हुए लिखा है—बौद्ध शास्त्र तक करेंगे और हरिभक्ता को दुःख दोगे। जसाय और जसायद्वारा य जीविना प्राप्त करेंगे। वे कही नहीं वधना का वेग धारण कर घूमन ब्राह्मणवग बुद्ध पवित्र रहगा किन्तु धन पा कर य लोग भी अधम मरत हा जाएंगे। ब्राह्मण लोग बौद्ध शास्त्रा का प्रचार करेंगे और टोटका कर जीविना प्राप्त करेंगे।

सत् शक्यजन्य जनाथ एवं जराहण्य साधनाओं के धार विराधी थे किन्तु उनके महापुत्रीया धर्म में भी बौद्धा के निरस्त के समान चार शरणा का वधन है।^१ सत्जिया भक्ति आज भी बगाल में ता प्रचलित है ही। इसमें भी रातिपावा सम्प्रदाय के रूप में यह जीवित है।

बंगला रामायण-लेखक के पूर्व तक नागी-यज्ञक बौद्धतांत्रिका का पूर्ववग में विषेय प्रचार था। य पागिनी वज्र योगिनी जाति उपाधि धारण कर घूमत थीं। चण्डी दास ने अपने पदों में इनका उल्लेख किया है इनका किशोरी भाजक कहा जाता था।^२ बंगाल का बाउल सम्प्रदाय तीन प्रभावों से युक्त जान पड़ता है। पूर्ववग के बाउल उदार मूर्खों साधक हैं उत्तर के बाउल पर बौद्धतन्त्रा का प्रभाव है वे आज भी कभीर जरा निगुणिया की वाणा बालन हैं और पश्चिम बंगाल के बाउल वधनव हैं। बंगाल के कई लौकिक देवताओं पर भी बौद्धा का प्रभाव है।

उत्तीमा देश में भी सबसे पहलू गन-बौद्ध धर्मों का निवास हुआ था। यहाँ भी बौद्ध मिद्धा एवं नाथ पधिया का प्रभाव वधनव भक्तिवादन के पूर्वादि तक दया जाता है। वनरामायण जाति पंच-भाग्या की वधनव भक्ति बौद्धतांत्रिक मिद्धाओं से स्वच्छ मुक्त नही है।

१ शिवरत्न नामक वधनव धर्म आनिगुरि पृष्ठ ६२।

२ रामानाथ विवागी— इतिवागी बगला रामायण और मानस पृष्ठ १६।

अथर्व वर्णित हा चुका ह नि महाभारत काल स ही आर्यों की विचारधारा म पूवाचन परिचित हा चला था । गुप्ता क शासन-काल तब हिंदू पौराणिक धर्म का समस्त पूवाचन म प्रयत्न हा चुका था । बौद्ध सिद्धा एव अनाय-उपासनाआ क प्रभाव क मध्य नी पौराणिक धर्म पनपना रहा । बौद्ध-शासक पाला के मंत्री स्मात्त ब्राह्मण हान थे । सन, बमन एव कसरी वंश क राजाआ क प्रयास स पूर्वी प्रदेशा म पौराणिक धर्म का विशेष प्रनिष्ठा प्राप्त हुई मध्यकाल म ही पौराणिक-कथा, दवी-द्वैता, व्रत-कथा आदि के प्रचार म पूवाचन भी मध्यकाल की सांस्कृतिक परम्परा स अभिन हा गया था । मुसलमाना क आक्रमण म बौद्धधर्म जोर भी अधिन छिन्न-भित हुआ । अनक बौद्ध मारे गय, अनक नपान जादि दशा की बार भाग गय, अनक भय-वग र्म्नाम म दीग्न हुए और बुद्ध हिंदू धर्म म ही समा गय । यह तथ्य ध्यान दन योग्य है कि पूर्वी वंगान म मुसलमाना की मर्या अधिक है । कहा जाता है कि जहा-जहा बौद्धा का प्रावस्य था, वहाँ वहा धर्मान्तरण अधिक हुआ । पश्चिम वंगान मे धर्मान्तरण कम हुआ । दून प्रदेश का इस्लाम क प्रभाव स मुक्त रस्त म धर्मठाकुर की उपासना एव चतयन्त्र की वणव भक्ति का विशेष याग रहा ह ।

अमम की धर्म-साधनाएँ

त्रियोपासना—(१) प्राचीनता—अमम का दन्-कथाआ और इतिहास म स्पष्ट है कि कवीना एव आर्योदित जानिया म बहुत पहल म शिवापासना प्रचलित थी । अमम म अभी भी शिव मंदिरा का वात्स्य है । शिव क अनक रपा की अनक मूर्तियाँ अमम क विभिन्न स्थाना पर प्राप्त हुई ह ।^१ राजवशा का सम्बन्ध भी शिवापासना से रहा है । उ स १०वीं शताब्दी क ताम्रलला म अधिकांश का ही प्रारम्भ शिव की वन्दना म हाना है । काच त्रिहार का राजा विश्वामिह (१६वीं शताब्दी) अपन कष का शिव स सम्बन्धन मानना था । महाभारत-काल के भगदत्त का शिव का सखा बनाया गया है । शाणितपुर^२ का राजा वाण भी शिव था । उत्तर वंगान के राजा जल्प-प्ररन कामरूप म शिवपूजा का प्रारम्भ किया था । स्कन्दपुराण म इस राजा स सम्बन्धित एक कथा जानी है । जलपाइगुटि म इसकी राजधानी थी, वहा इस समय भी एक शिव मन्दिर है ।

(२) क्रौरात प्रभाव एव आर्यों का विरोध—मास मंदिरा की उपासना वाला भवधर्म क्रौराता स सम्बन्धित था । आय विजेताआ न इसके प्रति घणा प्रदर्शन कर

१ डॉ० महेश्वर नेआग—पुराणि अममीया समाज आरु मस्ति, पृष्ठ १० १३ ।

२ वत्तमान तजपुर ही पुराना शाणितपुर है । असमीया म तज का अर्थ है रक्त ।

इस पर प्रतिक्रिया लगाय । साथ ही वाम गण्डिका द्वारा पूजित लिंगोपासना को प्रभावहीन करा व निए उन्हीं एक स्थानीय देवी उपासना का प्रचलित किया जिसकी पूजा यानि रूप से होती थी । श्री दागीनाम कावती कामारथा-नामन इस देवता का नाम । जमी निर्गो निपाठ पशुपति जाति का देता है । इसका सम्बन्ध महाभारत तथा पुराणा में दर्शाता है । पुनः जाति से ताड़ दिया गया था । असम की बाढों और मच जातियाँ आज भी वर हैं ।

(३) सुरा-गुरा और बचि— असम में पूजित शिव व साथ यामना तुष्टि और नरवचि की प्रयाण तुष्टि है । इस प्रयाण के सभी कानों व मन्त्रों में देव गण्डिका का वचन है । तन्पुर के विष्णुनाथ मन्त्र में वचन का संश्लेषित संश्लेषित तीन गण्डिका का अष्टक कर लिया गया था । राम राजा निर्गमिह (१८वीं शताब्दी) की राजा कृतकृत्य विष्णुनाथ की गठी था । मन्त्र-प्रथाएँ इस वचन गयी हैं और मन्त्रप्रथाएँ का पालन करती हैं । मन्त्र प्रथाएँ हैं । य कभी कभी प्रथाएँ भी करती हैं ।

कोन विष्णुनाथ राजा स्वयं पाप-पद्धति का पालन करता हुआ शास्त्रीय पद्धति में पूजा करता था किन्तु राजा ममान में जनाय प्रभाव का वास्तविक रूप कर उगा आत्मिकताओं की प्रथा में अंगार पूजा करने का अधिकार दे दिया था । य राम बचि और गुरा के प्रयाण में उपासना करा था । मन्त्र-प्रथाओं के प्रति वचन का रक्षा धारण कर आज भी माना जाता है । मन्त्र प्रथा में मन्त्र प्रथा का संश्लेषित राम में अनुमान है ।

अर्पित है, जिस सती व पतित यानिमडल का प्रतरीकृत रूप माना जाता है। १६वीं शताब्दी में मुसलमानों ने मन्दिर गिरा दिया था १६६५ ई० में नर-नारायण सिंह नामक काच राजा ने पुनः बनवाया था।

३ का माथ्या का निषाद-जातीय मूल—विद्वान्नाम का माथ्या शब्द की एक-रूपता आस्तिक शब्द कामाई (Kamai) और शिष्टा शब्द कामी (Kami) में दल कर तथा पूजा-पद्धतियाँ के आधार पर अनुमान करते हैं कि यह उपामना किमी पूर्वजा माता (Ancestral Mother) की रक्षात्मक शक्ति में विश्वास करने वाली आस्तिक जाति की पूजा होगी।^१ कामाथ्या के पूर्व-पुजारी गारो व और व सुत्र की वृत्ति दत्त थे।

शत्रुतात्मक—कालिका-पुराण के अनुमान साधक का वैश्याज्जा नत्तकिया आदि का माथ रात्रि-जागरण करना पड़ना था दसवें दिन स्त्री पुण्या के गुप्तागा का नाम ले-कर शृंगार-भाञ्जित नारिया के मध्य शशील-गीत गाये जाते थे। व पम्पर चावन, पुष्प घूत और बीचड़ भी फेंकते थे। कि य वा पहाडियाँ से यह शवरोत्सव किया गया होगा। दक्षिण-भारत में आज भी दवी से सम्बन्धित अश्लील-गीत और मूर्त्ति के सम्मुख नमन स्त्रियाँ का नृत्य प्रचलित है। शवरोत्सव से भी दवी का निषाद-जातीय मूल सिद्ध किया जाता है।

४ नरक द्वारा गत पूजा का प्रचार—रामायण और महाभारत में नरकासुर का उल्लेख है। दाना महाप्रथा व नरक में भिन्नता है। आगे एक और नरक की कहानी आती है। यह नरक मिथिला व राजा की अवस्था से जाना था।^२ तीसरी शताब्दी में प्राग-योतिष-नगर में बस कर दसन दश का नाम कामरूप रखा। इसी नरक का सम्बन्ध पुनः नरकासुर में जाट किया गया है। नरक में माम मन्दिर-सबो वृत्ति विराता का हरा कर यहाँ की यानि दवी का अपनाया था और शाक्त-धर्म का विनाश किया था।

५ विरात वामाचार नारीत्सव—यागिनी-तंत्र में सौमिक-साधना की विरात बना कर मत्स्य नाम-भवन स्त्रियाँ व साथ मुक्त-मिलन तथा युवा स्त्रियाँ के साथ यौन-सम्बन्ध का वर्णन है। इन जातियाँ में बहूपति और बहुपत्नी की प्रथा है तथा विवाह व पूर्व यौन-सम्बन्ध की स्वतन्त्रता भी है। इन्हीं व सम्बन्ध से वामाचार चला आया। वामाचार में नारी का सग आवश्यक है। प्रेम-प्राप्ति नारी व सुगमत पूर्वक न मितन पर धन व कर या वनपुत्र प्राप्त करने का भी विधान है।^३

शाक्त-नाम नरक प्राप्ति का चिन्तन कर अपन का भी नारी मानने का ध्यान

१ ग० बी० वे० कावती—मन्दर गौरी का माथ्या पृष्ठ ४०।

२ वही, पृष्ठ २८।

३ वही, पृष्ठ ४७।

करते थे। असम^१म कौल माधना का भी प्रचार रहा है उत्तर-चीन तो किसी जोवित मुदर स्त्री की प्रत्यक्ष योनि की उपासना करते थे। भरवी चक्र का भी यहाँ प्रचुर प्रचार था।

दक्खि चार प्रकार की मानी गयीं हैं चारों में मात-भाय की प्रधानता है— (१) मातदेवी कामाख्या (२) पत्नी रूपी पावती (३) कुमारी रूपी त्रिपुर-मुदरी और (४) सहार रूपिणी केंचाइसाती—ताम्रेश्वरी। त्रिपुरवाला पुष्पवाण पाश और पुष्पधनु धारण करने वाली कुमारी हैं इनके साथ कुमारी पूजा एवं शबरात्सव का सम्बन्ध है। कुमारीपूजा में जाति नहीं होती वंश्या की पुत्री की भी पूजा की जा सकती है। असम की प्रत्यक्ष स्त्री देवी का अशावतार मानी गयी है—(कालिकापुराण ६० ४१)। यहाँ घर-घर में दक्खि वतायी गयी—अथन विरला देवी कामरूप गह गह (या० त० २।६।१२०)।

६ नर रक्त पिपासु क्रूर देविषो से मिलन—असम में विरला की जय तूर दक्खियो से कामाख्या देवी की एकरूपता स्थापित की गयी है।

असम के उ० पू० सीमान्त पर जाय अनाय का मम्मिथण अधिष्ठ हुआ है। यहाँ आदिम बराही चुनीया मिरी मिस्मी रामटि चिक्को एवं नगा जातियाँ रहती हैं। इस प्रदेश का सीमारपीठ बना गया है यहाँ त्रिकरवासिनी देवी का अधिष्ठा है। कालिकापुराण^१ में इस देवी का रूप बताया गया है—(१) तीक्ष्ण कांता और (२) सलिल कांता। नामा के अनुमार दाना के गुण हैं। तीक्ष्णकांता देवी तृष्णा तम्बादरी एवं एक जटायुता है। इह उग्रनारा भी कहते हैं। इनकी अनुचरियाँ हैं—भगा सुभगा चामुष्ण कराना भोषणा और त्रिष्टा। इनकी पूजा कामाख्या के समान ही की जानी चाहिए। इन्हें तज शगव और नरबलि बहुत पसंद है। लड्डू नारियल गन्ना और मास भी इनके प्रिय जाहार हैं। सलिल कांता देवी गुग्गुलु और त्वपोवन सम्पन्ना है दूध और जम्बूक हैं प्रिय हैं चित्तु भक्त नाग इन्हें स्वशरीर के रक्त से भी पूजते हैं।^२

ताम्रेश्वरी—नीलगवान्ता उग्रनारा अथवा एक-जग देवी ही ताम्रेश्वरी देवी का नाम से प्रसिद्ध हुई। १२वां शताब्दी में चुनीया नामान्तरित (Mongol)जाति आगिया में रहता थी। इन नागाने देवा के लिए ताम्र मन्त्रिक बननाया था किमी समय दग्गा एगा प्रचार हुआ कि यह उतागी-भूर्वी गोमा की गभा पत्नी जानिया का पूजा करे हा गया था। यहाँ वापिक नरवासिनी जाना था। दग्गातिण एग केंचा-माती (कच्चा मास माने वाला) कहते थे। १८वां शताब्दी में तग्गाति की प्रथा बन्द हुई जबकि यहाँ आक्रमण के समय चुनीया पुत्रास मन्त्रिक छद्म कर भाग गये थे। यन् मन्त्रिक अथ नरक भ्रष्ट हा कर पाग जगत में ला गया है।

१ कालिकापुराण प० ८२, ५१।

२ महेश्वर नारा—सुराणि धग० गमात्र याग सन्तति, पृष्ठ ६८।

मिलन-उत्पत्त—नामेश्वरी एनजटा अथवा उपनारा बौद्ध-देवी उनायी गयी हैं जिन्हें नागजुन (उन्नी शताब्दी) भोट देश में पाये थे। कालांतर में यह देवी दुर्गा अथवा काली से अभिनत मानी जा कर हिन्दू-नराम में स्वीकृत हुई। योगिनीतंत्र में त्रिपा है तारा और काली एक हैं। कामाख्या भी काली हैं, इन्हें अलग ममभने वारा नरक जाएगा।^१ इसमें प्रकट है कि स्थानीय-शक्तियों को निम्न प्रकार आर्षोद्धृत करने की चेष्टा की गयी। मत्स्यपुराण में दक्षी के अग्र-पत्तन का वर्णन नहीं है, यह विवरण तथा की दत्त है। कालिका दक्षी भागवत एवं बृहद्दर्म उपपुराणों में दक्षी के अग्र-पत्तन का वर्णन हुआ है, यागिनीतंत्र में भी यह वर्णन नहीं है। कामाख्या का महत्त्व-विस्तार हान पर कालिकापुराण में यहाँ मनी का यागि-पत्तन दिख। कर इसे जाय प्रभावित केन्द्रों के जनन ले लिया। तत्रचूडामणि आदि ग्रन्थों में मनी के विभिन्न धरा के अनुसार ममस्त भाग्य में ५१ या किनी किमा में मस अल्पाधिक पीठ बताया गया है। सती के अग्र-पत्तन की कल्पना द्वारा ममस्त पीठों में एक स्थानित किया गया।

स्थानीय देव-दक्षिणा का स्वीकार कर उनकी पूजा-पद्धतियाँ के प्रति भी सहिष्णुता का व्यवहार किया गया।

अम्बुवाची—कामाख्या से सम्बन्धित एक तंत्र अम्बुवाची का उल्लेख करना जममीचीन १ शशा, इस तंत्र का पानन बंगाल में भी जाता है। दक्षी भागवत के अनुसार दक्षी वष में एक बार अपात्त में ऋतुमानी होती है, तब तीन दिन कामाख्या के कपाट बन्द रहते हैं चतुष्टय तिन मुलते हैं। इस दिन मला लगता है। इस अवसर पर पञ्चा की कष्ट नहीं दिया जाता एवं तंत्र किया जाता है।^१

वष्णव धर्म—अमम प्रश्न में बहुत पत्तन में ही वष्णव पाञ्चरात्र-तंत्रों का प्रचार हो चुका था। मणिभूट एवं दिवकरवामिनी पीठ में ह्यग्रीव एवं वामुदेव की पूजा होती थी। अमम के प्राचीन राजा शव होने पर भी विष्णु के वाराह रूप की उपासना करते थे। वाणभट्ट के ह्य-चरित में भास्कर वर्मा को वष्णव वश का बताया गया है। अमम में सातवीं शताब्दी की जनक मूर्तियाँ उपलब्ध हैं। कालिका पुराण में विष्णु की तान्त्रिक-पूजा करने का वर्णन है। इसी पुराण में विष्णु के मत्स्य भरव-रूपी माधव, वाराह त्रिग और शिला रूपा के पूजे जाने का उल्लेख है।^१

वामुदेव—दिवकरवामिनी पीठ में ही वामुदेव की पूजा आज तक चली आ रही है। इनके चतुर्भुज रूप के साथ तदमी एवं सरस्वती का भी ध्यान करना होता है। सरस्वती के ध्यान के कारण इस उपासना पर तान्त्रिक प्रभाव टप्पा जाता है। इनकी तुलसी एवं मिल्ह पत्र से पूजा की जाती है। इनके साथ शम्भु गौरी, ब्रह्मा राम एवं कृष्ण की पूजा भी की जानी चाहिए। स्तुति में पुरण-मूक्त का भी प्रयोग

१ यागिनी तंत्र—१ २-८ एवं १-१५ २।

२ श्री मम वरदा—दि फयन एवं फेस्टिवल्स आफ जानाम पृष्ठ २६ २७।

३ डॉ० महेश्वर नयाग—पुराणि जममीया ममां जाण सम्भृति पृष्ठ ३५।

किया जाता है। निश्चय ही वामुनेत्र की उपासना पाररात्र की प्राचीन पद्धति में होती या रही है।

असम का एक विचित्र देवता है ह्यग्रीव। दोनो मन्त्रिम वष्णव एवं बौद्ध भोटिया दोनों जाते हैं। पौगणिक साहित्य में ह्यग्रीव का सम्बन्ध में विभिन्न कथाएँ हैं। हरिवंश में ह्यग्रीव नरक का एक सजापति है। भागवत में मत्स्यावतार धारण कर विष्णु ने ह्यग्रीवामुर को मार कर वेणादि का उद्धार किया। मत्स्य पुराण में विष्णु ने ह्यग्रीव अवतार धारण कर वेणादि का पुनर्विभाग किया। भावण्डय वामन एक स्वर्द आदि पुराणों के वर्णना में भी पारस्परिक अंतर है। वष्णव पाचरात्र-सहिताओं में एक ह्यग्रीव सहिता भी है।

भोटिया लोग ह्यग्रीव का महामुनि कहते हैं और मत्स्यादि में पूजन करते हैं। वे दीप-वतिका के साथ अपनी उगनी भी गला कर उपासना करते हैं। ह्यग्रीव की स्थिति जगन्नाथ स्वामी जसी है। जगन्नाथ स्वामी के जन्म की कथा के समान ह्यग्रीव के जन्म की कहानी भी यागिनी-स्तोत्र में वर्णित है। जगन्नाथ शबर एवं आय सस्वृति के समन्वय हैं तो ह्यग्रीव भी किरात एवं जाय सस्वृति के।

कालिकापुराण में लिखा है सर्वश्रेष्ठो यथा विष्णुलक्ष्मी सर्वोत्तमा तथा (६० ४१)। कालिकापुराण यह भा अनुभव करता है कि जब तक यहा विष्णु नहीं आते तब तक वामाचार दूर नहीं हागा।

यहा की विकृत गाधनाओं को उखाड़ फेंकने के लिए वष्णव आन्दोलन 'परि शोधक भभावात' के समान आया था।

वैष्णव भक्ति का परिचय इस प्रश्न से अत्यन्त प्राचीन है इसका पूरा विकास शंकरदेव के प्रयत्ना से हुआ। जब वष्णवभक्ति का प्रभाव किराती प्रभाव को पछाड़ता हुआ जगत्सर होता गया। समस्त पूर्वाचर में ही वष्णवभक्ति (विशपत वृष्ण भक्ति) जोर पकड़ती गयी।

बंगाल की घम साधनाएँ

पूर्वाचल का परिचय एक वहाँ की घम साधनाओं का वर्णन प्रस्तुत करते समय बंगाल पर बौद्ध जन उपासनाओं का प्रभाव सशप में दिखाया जा चुका है। बौद्ध सिद्धांत एवं नाथपथियों के प्रभाव के जवणेप जात्र भी बंगाल में विद्यमान है। यही बंगाल की प्रमुख ब्राह्मण्य साधनाओं एवं लौकिक उपासनाओं का स्वल्प परिचय दिया जा रहा है।

शिवोपासना—बंगाल की ब्राह्मण्यसाधनाओं में सर्वप्रथम शिवोपासना का

1 Vaishnavite religious movement came like a cleansing storm—
Hem Barua—The Red River and the Blue Hill प० ६३।

प्रचार हुआ। सभी ब्राह्मण तथा ज्ञातव्य धर्मों में गिन का महत्ता प्रतीत है। धर्म धर्म मननामगत, गोरग विजय आदि तत्र शास्त्रद्वारा रचनाओं में उक्त शास्त्र के माय धर्म हैं।

वगाल में विवाधन धारा के गिन-भार्वती का भी रूप मिलता है। वे शास्त्रों के कृषक प्रति-भार्वती के रूप में लिखित हुए हैं। अनन्त छडा (तागी) गीता में उक्त धारा की धर्मों का ज्ञान मारत मन्दिर नष्ट करने तथा अन्य कई कृषि-धर्मों की अनुष्ठान करत हुए दिनाया गया है। भंगीडी लिपि में का मुद्र होन के कारण पाठ्यता में इनका भ्रष्ट दानी रहती है। गकर के रूप में वगातिया न अपन ही कृषि जीवन का प्रतिनिधित्व किया है। गकर नता धर्म-शास्त्रों के समान अपने भक्तों की रक्षा करते धर्म न मनमा के समान विचारों का दर्शन करने थे अतएव वगाती जनता न उक्त नय कर्ती थी और न बुद्ध प्राप्त करने की आशा रखती थी। मनमा न अपनी पूजा करवाने में विष्णु का उक्त रक्षण एव समाप्तिक-रूप लिये, तथापि गेग विचारों में अन्त तत्र आन पर उक्त रह। शक उनही धार स एवधम विशेषकर रहे। फलतः गकर मन्त्र आदि की धार उम्भूत होनी गयी। मुगल माना के प्रचलन आघात के समय गकर की यह विशेषता कार्योपयोगी निम्न न हुई। शरणागत-वतल भगवान् की शरण दस समय प्रेष की अतएव शाका एव वपणव-धर्म विशेषरूप से पुष्ट हुए।

अनायतस्व-चडक—धर्मशास्त्रों-चारी दिव का रूप यहा भी मिल जाता है। वगाल में गिन की चडक पूजा के समय गरीर का कष्ट दन वाले अनेक अनुष्ठान लिये जाते हैं जो प्राचीन नर्यानि के प्रतीक हैं। साधन गग अगाग पर चलत, काँट टुंगी के ऊपर छत्राग लगात, जीभ काटकर चरत और गरीर में बाण चुभात हैं। तत्र भरे पात्र में निर्वाण की पूजा होती है इसे पूजा शिव कहा जाता है। पूजा समान में अथवा गान के वाक्त्र होती है जो पुरोहित पतित बाह्यण होत है। हरिवंश (विष्णुपर्व, अ० १८) में उक्तय है कि आशितपुर के राजा बाण का कृष्ण से युद्ध हुआ व जय उमवा यह करने लगता शिव में वचाया। वह क्षतविक्षत अवस्था में ही नत्य कर स्तुति करने लगा। शिव ने उसे इस स्थिति में स्तुति करने के लिए प्रमान हा कर कर लिया। यहूद्धम पुराण में भी इस प्रकार की पूजा का वर्णन है। इस ही चडक पूजा का सम्बन्ध जाना जाता है अथवा जो साधक अपने अगा का क्षतविक्षत कर स्तुति करता है उमने शिव प्रमान होते है। बुद्ध लाभ चडक गकर की व्युत्पत्ति चक्र शब्द में मानते हैं। इस वामो का धनात्मक स्थिति में गाड कर चक्र बनाया जाता है जो इन पर स्थित हो कर साधक कष्टमय साधना करता है। अग्नेय मन्त्रार न इस प्रकार की उपासना पर राक्ष लगाने की चष्टा की थी।

१ गन० वी० गन—ए नाट आन कि चक्र पूजा दन गैगान—दि जरनन ऑन दि विश्वभारती स्टडी सन्नि—१११ (१२२८)।

हिन्दी भाषी क्षेत्र में नवरत्न के अग्रगण्य पर जवार (यशोदर) निवाले जान हैं इस समय भी लोग अपने का अनक प्रकार सफ्ट टा हैं—जस कि बाँट क कोड़े स अपने को पीट कर सहनुहान हाना नुवीन सम्ब त्रिभूत स अपने कपाला का बध कर नाचना आदि ।

शक्ति—रामाय्या एव विराती ससृष्टि के निषट हान के कारण बगाल की शक्तिपूजा पर भी असम जसी अनाम पद्धतियों का प्रभाव पला था । तांत्रिक शाक्त पंच मकारों का सेवन करते थे चन्द्रपूजा हाती थी वीणा व नारी की प्रत्यक्ष-यानि के पूजन आदि जैसे अनुष्ठान भी हाते थ । नरबलि की भी प्रथा थी । नरात्म बिलास के सातवें अध्याय म वणन ह कि तांत्रिक लोग तर्बन्नि द कर वाली व सामन नशी तलवारों स कर तथा भयकर रूप से उमत्त हो कर ताचत थ । उस समय मन्दिर क पास से निकलन बाल की कुशल न होती थी । ब्राह्मणा तब को पकड कर बलिदान कर दिया जाता था ।^१

शक्ति के कई ग्राम्य रूप बगाल म प्रचलित थे— शीतला दुर्गा, अनेक प्रकार की चण्डी नरमुण्डमालिनी एव श्मशान तारी वानी पणशवरी । बच्चु डल धारिणी व्याघ्र-धम एव वशपत्र परिहिता पणशवरी का रूप शबर कया असा सगता है । अतएव यह देवी शबरा स सम्बन्ध रखती ह । उडीसा म भी इतका प्रचार ह ।

बगाल पर ब्राह्मण्य ससृष्टि का प्रबल प्रभाव पडा था । वायकुंज स जाकर बसे हुए ब्राह्मणा के प्रयास से वहाँ सष्टि की जादि देवी माता दुर्गा का प्रभाव अधिक पडा और शाक्त बगाल पुराणानुमोदित दुर्गा क इमी रूप को आय पद्धति के अनुसार उपामना करता आ रहा ह ।

वष्णव धम—गुप्ता के द्वारा बगाल म वष्णव धम का विस्तार हुआ था । बाकुडा जिला की भुशनिया पहाड की एक गुहा म चौबी शताब्दी का विष्णुचक्र उत्कीर्ण ह । पहाडपुर मन्दिर के प्रस्तर फलका पर वृष्ण की अनेक लीलाका का चित्रण ह । बगाल म पाँचवी-शताब्दी के एस अनेक मन्दिरों का पता चला है जिनम विष्णु-वाचक स्वामी नामधारी देवा की उपासना हाती थी जस गावि दरवाभी कोकामुलस्वामी आदि ।

चौड पात राजाओं के समय (८१२ वी शती) उनके बदिक् ब्राह्मण मन्त्रियों द्वारा पौराणिक वष्णव धम का प्रचार होता रहा । सन राजा दक्षिण से जाये थ । वमनयश के राजा सेनो के समसामयिक थ और दाना ही वण वष्णव थे । इनके काल म वाराह और नर्मिह की पूजा होती थी । सन वशीय राजा लक्ष्मण सेन के राजाधय म जयदेव ने गीत गाविट की रचना की थी ।

सहजिया प्रभाव—बगला रामायण निरसक के पूव तक वष्णव धम बहुत कुछ सहजिया वृष्णभक्ति के रूप म था । गीतगाविदकार जयदेव और उही के पद

निष्ठा पर चलन जाने लगींदास महजिया अणव धम के अन्तर्गत आत हैं । दासा क काया म साधातत्व का प्रधाता मिली । लणीदास जस साधक भी रामा रानी को मुद्रा बना कर गाधना करन थे थे उठे बन्गाना गावत्री तव बहन थे । पुराणातु मादिन गृष्णभक्ति का प्रवत प्रचार बेंगना रामायण नखर वृत्तिवाग क पश्यात चतय महाप्रभु झाग हुआ । जयन्त, लणीगग जीर विशापति का परनीयातत्तर दृह भी नाय था, फिर भी इनकी गृष्णभक्ति का बान-मुद्य रूप श्रीमदभागना पर जाधिन था ।

लौकिक उपासनाएँ

जिमी समय गाग बगात म जरण्य-दवी मालवणी, व्याघ्रदवता लक्षिणराय कु भीरदेवता-बालगुग विडानदरता पट्टी एग हगदेवता सुवचनी, की पूजा होती थी । बगलागमायण-नखर के समय भी ग्राणदेवताजा क गदताम और कई रूप थे । निन भिन स्थाना पर दृह वानी भग्नी बनदुगा, गण्टी जाति कहा जाता था । जाय मन्वति दृह श्रद्धा की दृष्टि म ग लपती थी । बगाल की ब्रा यथात्रा म धूया भादानी धालावाता आदि अन्व दवताजा का वणन ह य सभी ग्राम-दवता के जीर जाता श्वात्री पूजा किया करती थी । तरहरी शास्त्री के गुणतमानी आयमण एग अत्यागारा म गीन्ति हा कर उच्च श्रेणी के ठिदुजा का उम, चन्तन आति निम्न श्रेणी क ठिदुजा समधि करन क लिए साध्य होना गछा । उते अनक दवी-देवता बुद्य-मुद्य रूपान्गित हा कर गहीत हुग । इनम से बुद्य न साहित्य म भी स्थान प्राप्त किया ।

दो विशेष उपासनाएँ—(१) मनसा (गणद्वी)—बगाली साहित्य और समाज म माना को समान्य स्था मितना ह । समन्य पग्नी पर नागा की पूजा होती रही ह, मनसा भी सप दवी हैं । इानी प्राचीन मूर्तिया क साथ गांप भी है । अब इनकी पूजा घट जयना पट के रूप म हाती ह । पाल शासा के पूव ही ये ग्राहणधम म लीटत हा गयी थी । ग्राहणा न दृह गमुगत करन की चण्य की ह तथा इतें अमवाहिनो एग पुस्तक अमगतबु भ गारिणी सरस्वती का रूप दिया ह । इनका लौकिक रूप गुदर नही ह, य एग आन स वानी एग कुरूप हैं । इह धनात पूजा ग्रहण करन की बडी रुचि ह । चाद गौदामर की कहानी से इनके य गुण प्रवटहा जाने है । मनसा के साथ कई दविषा का एकीकरण तथा ह । बौद्धा की तरिता उनके साथ मिल गयी ह । एग ओर सपदेवी जागुनी क साथ भी बनना मिलन हुआ ह । जागुनी-देवी बौद्धा की बज्जेशरी ताग तथा त्रिपदवी भी मानी गयी हैं । य बुवनवर्णा,

१ श्री गान्धर्वी कुमार चन्द्रवर्ती—शासन पदावली आ' शक्तिगाथा पट्ट ३० ।

२ रामानाथ त्रिपाठी—श्रुति० २० रामायण जीर मान्य पट्ट १५ ।

३ श्री ज० सी० घोष—बगानी त्रिटरतर प० ३२ ।

हिंदी भाषी क्षेत्र में नवरात्रि के आस-पास पर जवार (गर्गापुर) निकाले जाते हैं इस समय भी लोग अपने को अनक प्रार सफल टा हैं—जसा कि कृष्ण का डे स अपने को पीट कर लहलुहा हाता नुरीन तम्ब त्रिगत स अपन कपाला का बध कर ताचना आदि ।

शक्ति—पामास्या एव विराती ससृष्टि क निवृत्त हान त कारण बगाल की शक्तिपूजा पर भी असम जती अनाम पद्धतियों का प्रभाव पग था । तान्त्रिक शासन पच मबारो का सेवन करते थे चक्रपूजा हाती थी कौनों के नागी की प्रत्यक्ष-यानि के पूजन आदि जस अनुष्ठान भी होते थ । नरचरि की भी प्रथा थी । नरात्म विलास के सातवें अध्याय म वणन ह कि तान्त्रिक लोग तर्कानि द कर पासी क सामन नगी तलवारें ले कर तथा भयकर रूप से उमत्त हा कर ताचत थ । उम समय मन्दिर क पास से निजलगे वाले को कुशल न हाती थी । ब्राह्मणा तब का पकड कर बलिदान कर दिया जाता था ।

शक्ति के कई ग्राम्य रूप बगाल म प्रचलित थ— शीतला दुर्गा, जनक प्रकार की चण्डी नरमुण्डमालिनी एव श्मशात तारी वाली पणशवरी । बज्रमु उत धारिणी चाध्र-चम एव बभ्रपत्र परिहिता पणशवरी का रूप शबर-क्या जसा लगता है । अतएव यह देवी शवरा स सम्ब ध रसती ह । उड़ीसा म भी एगवा प्रचार ह ।

बगाल पर ब्राह्मण्य ससृष्टि का प्रबल प्रभाव पडा था । का बकु-ज से जाकर बस हुए ब्राह्मणा क प्रयास स वहा ससृष्टि की आन्ति देवी माता दुर्गा का प्रभाव अधिक पडा और शाकन बगाल पुराणानुमोदित दुर्गा के इगी रूप को आय पद्धति के अनुसार उपासना करता जा रहा ह ।

वृष्णव घम—गुप्ता के द्वारा बगाल म वृष्णव घम का विस्तार हुआ था । बाकुडा जिला की गुशनिया पहाड की एक गुहा म चौबी शताब्दी का विष्णुचक्र उत्कीर्ण ह । पहाडपुर मन्दिर क प्रस्तर फलका पर वृष्ण की अनेक लीलाओं का चित्रण ह । बगाल म पाचवी शताब्दी के एत अनक मन्दिरा का पता चला ह, जिनम विष्णु-वाचक स्वामी नामधारी देवा की उपासना हाती थी जसे गावि दस्वामी कोकामुलस्वामी आन्ति ।

बौद्ध पाल राजाओं के समय (८-१२ वी शती) उतम बल्कि ब्राह्मण मंत्रियों द्वारा पौराणिक वृष्णव घम का प्रचार होना रहा । सन-राजा दक्षिण से आय थे । वमनवश के राजा सेगो के समसामयिक थे जोर दोना हो वश वृष्णव थे । इनके कान म वाराह और नसिह की पूजा होती थी । सेन वशीय राजा लक्ष्मण सेन के राजाश्रय म जयदेव ने गीत गाविण की रचना की थी ।

सहजिया प्रभाव—बगला रामायण त्रैलोक्य के पून तक वृष्णव घम बहुत कुछ सहजिया वृष्णभक्ति के रूप म था । गीतगाविण-दकार जयदेव और उहा क पद

विह्वला पर चनन थाले चण्डीनाम सहजिया वणव प्रम के अन्नगत जान हैं । दाना व वाज्या म राधातत्व का प्रघाता मिली । चण्डीदास जसे गाधव भी रामा जकी का मुद्रा बना कर गाधना करत थे, व उसे बदमाना गायत्री तक बन् थे । पुगणानु मादिन वृष्णभक्ति का प्रबन प्रचार वेंगना गमायण लक्षक कृत्तियाम के पश्चात् चनय महाप्रभु द्वारा हुआ । जयदेव, चण्डीनाम और विद्यापति का पकीयातत्व इह भा नाय था, फिर भी इनकी कृष्णभक्ति का वृत्त-वृद्ध रूप श्रीमद्भागवत पर आश्रित था ।

लौकिक उपासनाएँ

द्विती ममय नाम वगान म अर्घ्य-द्वी— मालचण्डी व्याघ्रदवता दक्षिणराय कृ भीग्देवता-बालूराय त्रिडाशवता पट्टी एव हमदेवता सुवचनी की पूजा हानी थी । वगनागमायण-लेखक के ममय भी ग्रामदेवताजा के कई नाम और कई रूप थे । भिन भिन स्थाना पर इह कानी भग्नी बनदुगा, चण्डी जाति कहा जाता था । जाय ममृति इह श्रद्धा की नृष्टि से न दखती थी । वगान की ज्ञ-वयाजा म ब्रूया, भादानी घालाकाना आदि अनेक देवताओ का वणन ह य मभी ग्राम-देवता व और जनता इनकी पूजा किया करती थी । नरहरी शास्त्री के मुमरमानी आश्रमण एव अत्यासाग म पीन्ति ना कर उच्च-श्रेणी के हिन्दुओ को डाम, चणन जाति निम्न श्रेणी व हिन्दुओ स मर्षि करन व त्रिए वाध्य होना पटा । उनके अनेक नवी-रचना वृद्ध-वृद्ध स्थापति हा कर गृहीत हुए । इनमे मे कुछ ने साहित्य म भी स्थान प्राप्त किया ।

दो विधेय उपासनाएँ—(१) मनसा (मपदवी)—प्रगाली साहित्य और समाज म मनगा का समाप्त स्थान मिना ह । ममस्त पृथ्वी पर नागा की पूजा हानी रही ह मनगा भी सप देवा हैं । इनकी प्राचीन मूर्तिया व साथ साथ भी हैं । अत्र इनकी पूजा घट अथवा पट के रूप म हानी ह । पाल शासा के पूव ती य ब्राह्मणधम म स्वीकृत ना गयी थी । ब्राह्मणा न इह ममुनत करन की चष्टा की ह तथा इन्हें हमबाहिनी एव पुस्तर-अमृतकृ भ प्रारिणी सरस्वती का रूप लिया ह । इनका लौकिक रूप मुन्दर नहीं ह, य एक आय स कानी एव कुम्प हैं । इह बनात पूजा ग्रहण करन की वनी रचि ह । चौद मौलागर की कहानी म इनके य गुण प्रकटहा जान हैं । मासा के साथ बइ नविया का एकीकरण हुआ ह । चौदा की तरिता इनके साथ भिन गयी ह । एक ओर मपदवी जागुनी के साथ भी इनका भिनन हुआ ह । जागुनी-देवी चौदा की बच्चे शरीर ताग तथा विपदवी भी मानी गयी हैं । य गुणवक्ता,

- १ श्री जानकी कुमार चषननी—गावत पत्तवनी आ' शक्तिगाधना पृष्ठ ३० ।
- २ रमानाय त्रिगाठी—कृत्ति० ध० गमायण आर माना, पृष्ठ १५ ।
- ३ श्री ज० मा० घोष—वगानी त्रिटरचर प० ३२ ।

चतुर्भुजा, तटामुद्रिणी, गुह्योत्तरीया मितरत्नालमाररती जीम गुहा सपभूषिता हैं। जागुनी देवी जघनवद की विरात कथा की प्रतिष्ठा रही जा सकती है।

जसम और उडोता म भी मनगा की पूजा का प्रचलन है। जगम की मागी मिस्मी राभा आदि गातिमा सपपूजक है। १०-११ वीं शताब्दी की मनगा मूर्तियाँ नवगाव और गौहाटी म पायी गयी हैं।

बगाल म मनगा देवी पर कई मंगलकाव्य लिखे गये हैं।

(२) घमठाकुर—ये राठ प्रश्न का आचलित व्युत्पत्ता हैं। जगम एक किमी किसी रूप म उडोता म भी इनकी पूजा का प्रचार है। १२वीं शताब्दी से पूर्व ही इनकी पूजा का प्रचार रहा होगा। मायवान म गालित्यर स्मृति से इनका महत्त्व बढ़ गया था। इनके नाम पर जनेक पुराण मंगल एक छन्दगाय लिये गये। बगाल के जनेक लौकिक दबता घमठाकुर से सम्बन्धित हैं। ये जाति देव निरजन हैं मनसा इनकी पुत्री बना दी गयी और चण्डी इनकी पत्नी। वृषि एक शिल्प से सम्बन्धित सभी कार्यों म भी इनकी पूजा माय थी किन्तु आज तक यह निर्गति न हो सका कि इनका मूलरूप क्या था।

सूय निरजन—इह सूय निरजन बने जाने के कारण हरिप्रसाद शास्त्री और दीनेशचन्द्र सेन इह बौद्धों के सूयवाद से सम्बन्धित मानते हैं किन्तु डा० महेश्वर नेओग सूय का अर्थ बाह्य भीतर से गुवन बता कर जगम मत का सण्डन करते हैं।

अनाम व्युत्पत्ति—बूम एक पादुका इनके चिह्न होने के कारण तथा उपारगा का प्रचार जोम काली एक हाजी गति म अथिज हान से नीहाररजा राय आदि इह जादिवामी अनायदरता मानते हैं। उनके धातु निगत पेट के नीचे और कभी कभी फूस की भापटी एक मंदिर म होना है। पुजारी डोम जातीय हात है जा तावे के यथापवीत धारण करते हैं तथा पट्टा अथवा देवाशी पहनाते हैं। अभी कुछ समय पूर्व तक मुर्शिदाबाद तथा बंगाल के एकाध अचना म मूर्त के मडे गये गरमु-का से कर घम क गाजन (उत्सव) के समय दीभगत नृत्य का प्रचार रहा है। श्री मुनीतिट्टुमार चर्जी घमठाकुर के घम शब्द को संस्कृत का न मान कर इसकी व्युत्पत्ति जास्ट्राणशदाटिक भाषा के दुन या दुनी से मानते हैं जिसका अर्थ बटुवा जाना है। इस मत के विद्वानों का अनुमान है कि ये जादिवारियाँ के ग्राम देवता के किन्तु पाला के समय बौद्धों के प्रभाव चलन पर ये बौद्ध धर्म से रग गये।

सूय देवता—डा० गुणुमार सन घम दरता की जट बदिन गालित्य म राजन है। घमपुराण एक ऋग्वेद म स्मृति-नृत्य की रचनाओं एक जसी है। घमदरता एक

बदिव मूमरवाा दाना का प्रतीक यम है— (म यत कर्मो नाम—शतपथ ब्रा०)
अतएव धमठाकुर प्रधानत मूयदवता है। उनके साथ जय दवताआ का मिनन हा
गया है।

बौद्ध एव ब्राह्मण देवताआ से एकीकरण य इतना अधिष शक्ति-गमन नो
गय थे कि बौद्ध ने इन्हें बौद्ध माना और ब्राह्मणा ने मूय विष्णु शिव आदि।
र ह राठ देश म कूम एव कल्कि का अवतार मान कर पूजा जाता है।

मुसलमान एव अग्नेज गक्ति के प्रतीक— मूयवारिया न र ह मुसलमाना के
आन पर बानी टोपी और तीरखमान धारण करन बाना यवन दवता माना, जाकि
ब्राह्मणा का दण्ड दन के लिए आया था। यही नही अग्नेजा के आन पर य मीनागर
वशधारी अग्नेजी गक्ति क प्रतीक हा गय।

असम मे धमठाकुर— धमठाकुर का उत्पमून कुछ हा कि तु इनकी पूजा म
अनाय-तत्त्वा की उपस्थिति अवश्य थी।

असम म प्रचरित पूननभिधि स यह तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है।
पश्चिम असम म मनसा पूजा क साथ ही-साथ धमपूजा होती है। मनसा-दबी की बदी
के पास ही पूणघट रखा जाता है जिसे धमघट कहत हैं। यह धमठाकुर का प्रतीक
है। कभी-कभी दओधा' घट क ऊपर नृत्य करता है। उसके हाथ म दो श्वा कतून
हात हैं। एक का वह उडा दता है और दूसर का कण्ठ चीर कर लोह पीता है।
मगलद मुहकमा म चत की सन्नति के दिन दउन क नाम मे यह अनुष्ठान हाता है।

धमघट (हडताल) गन्द का इतिहास— बगाल म हडतान का धमघट कहा
जाता है। धमठाकुर के एक पूजा अनुष्ठान म लाग घट की स्थापना कर सवल्प करते
थे, दसी स प्रेरणा ल कर अगातिया न हडतान के लिए धमघट शब्द हा प्रयाग किया।

उत्वन की धम भाधनाएँ

अब्राह्मण्य साधनाएँ (जग बौद्ध)— भारत म अबदिव-तरना की गोज
के आग्नीजाता का कथन है कि प्रागतिहासिक-कान क उडीमा म जा धम का प्रचरन
था। ऋग्वेदकाभीन आर्यों के विस्तार क कुछ पूव से ही कुछ आय जन पूव की आर
आ बसे थे जा जाग चल कर प्राया म परिगणित हुए। जना का मन्वध जग नाथ
की आराधना से भी स्थापित किया जाना है।^१

भुवनश्वर मे कुछ दूर उसके आस पाग चार पहाडिया हैं जिनम जाक गुफाएँ
हैं। लोगा का विश्वास है कि सनु निमाण क लिए हनुमान जा पवत लाये थे उनम
स यही फेंक दिया गया था। यहा जना द्वारा पूजित भारनाथ का मन्दिर है जिसम

१ दओधा—क व्यक्ति जिनके गिर पर न्वता आते हैं।

२ ओं नीनकण्ठ नाम—गभापतीय भाषण प० ६ १३।

नग मूर्तिया हैं।^१ यहा का गंगा गारवन (प्रथम शताब्दी ई० पू०) जा का गंगा अहती के रहने के लिए हाथी गुम्फा जाति जात गुफाएँ बनवायी थीं।

बौद्ध—उडीसा की गुफाओं का नाम स वम २०० ई० पू० का बताया जाता है। यहाँ की गुफाएँ १० शताब्दिया (५०० ई० पू० - १०० २०) का मानव वास का प्रकट करती हैं। इन गुफाओं में बौद्ध धर्म तीन विधान प्रमा का प्राप्त हुआ था। सीलोन की एक पुस्तक में बुद्ध के दान की एक समतुल्य कथा है। यह दान कर्तव्य भेजा गया था। कथा मत्स्य प्रतीत नहीं होती कि तु यह अवश्य प्रकट होता है कि बौद्ध धर्म बुद्ध की मृत्यु के बुद्ध समय पश्चात निश्चय ही उठीता पहुँच गया था। इसका यमस्थित प्रचार जगोव की प्रतिष्ठ कर्तव्य विनाय (२५६ ५५ ई० पू०) के पश्चात से हुआ होगा।

सहजधानी—यहाँ भी महायाग उच्छयान महजयान जीर गूयवाद धार्मिक का प्रचार रहा था। प्रसिद्ध चौगमी सिद्धा म बुद्ध का सम्बन्ध उडीसा में भी था। श्री नीलकण्ठ दाम का ता यहा तब कहना है कि महजयान का प्रचार उडीसा में ही हुआ।

तांत्रिक सत्पश युक्त नाथधर्म—८ ९ वीं शताब्दी में बौद्धधर्म पर तांत्रिक प्रभाव पड़े। बटा जित्त म रत्नागिरि और उचितगिरि के विहारों के सन्तों से अनेक ऐसी बौद्ध मूर्तियाँ का उद्धार हुआ है जिन पर तब का प्रभाव स्पष्ट है। तब प्रभावित महायाग तांत्रिक शिवशक्ति धर्म में परिणत हो गया।^१ तांत्रिक महायाग और शक्य धर्म का योग से नाथधर्म का उत्पन्न हुआ था। नाथधर्म का साधु उडीसा के गाढ़ गाँव में धूम कर तथा पुराने पीन गाँव के उचितता का प्रचार करते रहे हैं। इस धर्म की दो पुस्तकें थी—शिशुदेव जीर मत्ताग।

गगनाथ पर बौद्ध का प्रभाव—गगनाथ सुभद्रा एक बाराणसी की मूर्तियाँ बौद्ध के बुद्ध धर्म और मत्स्य की प्रतीक मानी जाती हैं। कोई कोई गूय जीर जनक को जगनाथ के साथी मानते हैं। मेरे मत में तो यही हो सकता है कि जगनाथ के उत्पन्न हुए महत्त्व का तब बौद्धों ने भी उनका साथ मम रूप में लिया जसा कि उन्होंने तांत्रिक सिद्धा धर्मों का अपना कर लिया था। विद्वानों का एक प्रथा की ओर जा गयेन कर। यह अवश्य ही विधागनाथ है। प्रत्यक्ष साक्ष्यों से जगनाथ पीन पीर धारण करत हैं। एक महान् आगि पर पृथी वाध कर पुरानी मूर्ति के उत्तर में वेगम में तिपती हुईं वाई रहस्यमय वस्तु निवान कर नयी मूर्ति के उदर में रक्त रत्ना है। यन्ता का मत है कि यह रहस्यमय वस्तु योनि का हाई रहस्यमय

प्राचीन अवशेष है।^१ किन्तु वस्तुतः यह कहा है कि कहा जाए। अनुमान अनुमान ही जाना है। श्री हृत्कृष्ण मूर्त्तार भी इन तीनों मूर्त्तियाँ का एक का पात्र के अंगर बताता है जो बोद्धा के विशेषण का सूचक है, तीनों मूर्त्ति मुद्रशासन सद्धम चक्र वही जाती है। पुष्ट प्रमाणा के अनाम म टा० महताय के मत का भी अनुमान ही मानना चाहिए।

ब्राह्मण पाषाणें—वतरिणी नदी से चित्तौड़ नील तन का प्रशकी एक एक इंच भूमि पवित्र मानो गयो है। यहाँ म्यात-म्यात पर असम्य मन्दिर है। कपिल महिता म कहा गया है—उत्कला ममा दगा दगा तस्ति महीनल, कम से कम मन्दिरा की दृष्टि से तो यह कथन पूर्ण गल्प है। समस्त उत्कल पाँच पवित्र क्षेत्र म विभाजित है—१ हरण २ विष्णु जयना पुष्पात्तम क्षेत्र ३ अक अथवा पदम क्षेत्र, ४ विरजा जयना पावती क्षेत्र और ५ विनायक क्षेत्र।

शबोपासना—भाग तृतीय राजा बोद्ध थे। उनका पश्चात् १०वीं शताब्दी से सामवश का प्रभाव बढ़ा जिसके एक राजा यथानि कशरी न काचपुत्र दश का एक सहस्र ग्राहण बना कर जाजपुर म बसाया। भुवनेश्वर का आम पास का क्षेत्र हर क्षेत्र कहलाता है। यहाँ कई महस्य जाराधनास्थान थे और एक बराह लिंग। भुवनेश्वर का तिरगारा मन्दिर वास्तुकार का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसका निर्माण १०वां शताब्दी के मध्यभाग म हुआ। उद्योग का ग्राहण जाज भी पाव है और महान शवसाधना का निर्माण नहीं होना दिया है। इन पर तारा का प्रभाव अवश्य पडा है।

पाषतोपासना—जाजपुर गाँव के जाग पाग पाच काय का क्षेत्र पावती क्षेत्र कहलाता है। जाजपुर की प्रसिद्धि गयासुर के विष्णु द्वारा यथ निय जान के कारण है। उसका निर का पत्तन गया म आर नाभि का यहा हुआ। वनरिणी नदी के तट पर उत्तन दीधिया है जिसम सात मानकाया—बाली, द्वाणी, रुद्राणी आदि के चित्र अंकित है। मरुत्यक व रावण का भी चित्र है जिसका यथ साता दवी न किया था। यहाँ शासन-शासन पर तारा का प्रभाव है। जग नाथ मन्दिर का भीतर तिमला दवी का प्रति क्वार की जट्टमी का दिन एक बकर की वनि दी जाती है।

सूर्योपासना—पुरी से १५ १६ मील दूर उत्तर-पश्चिम म काणाक का मन्दिर है। यह एक क्षेत्र कहलाता है। कृष्ण पुत्र राम्य कौडी हा कर महा आ कर ठीक हुआ था। राजा नरमिह न १२४१ ई० म इसका निर्माण कराया था। मुगलमाना न इसका शिलर का नष्ट किया था, यथावि चुम्बक शक्ति के कारण यह जहाजा का अपनी ओर रेत पर खींच जाता था। भग होन पर यह मन्दिर अपवित्र माना गया। लाग लोह के लासक म इसकी ताड़ फोड़ करत रहे हैं। यह भागन के सुन्दरतम मन्दिरा म एक था। इस क्षेत्र के लाग आज भी अपना वन तब तन नहीं लाडत जब

१ डा० मायाधर मानमिह—ए हिस्ट्री आफ ओरिया लिटरेचर, प० ७१।

सत रि ध मृष वा दत्ता त्त कर भा । कभी-कभी उ, दत्ता क रि-त म असा, त्त
रह जाना पड़ता है ।

वदन्त्य धम—मम त्त न त्ता जगन्नाथ स्वामि ।

उत्तमा क उल्लसधम क व है जगन्नाथ स्वामी । व मम त्त क मारा
दत्ता है । उत्तम त्त मम और पु-जार्ति का सम्बन्ध है त्त है । उत्तम त्त
पर अन्ति मम अर्थात् उत्तमता पदविता म मम त्त त्त है । त्तार्ति उत्तमता का
भी उत्तम ममार्त है त्तमत्त त्तुमा मम मम और म्मि-त प्रसाद म्म त्त
अन्ति किय ता है । (योगीश्वर म । म पी । क म्माम) क मम त्त क त्त मम
धम क म्मामर का म्मत्त क्त क्त है त्त म्मि-त म्मि-त त्त त्त म्मि-त क्त म्माम
मत्त म्मि-त । म्मि-त क्त त्त म्माम म्माम है त्त म्मि-त म्माम म्माम म्माम
दाप त्त है त्त है ।

भारत की उत्तम म्माम त्तमाम म्माम म्माम म्माम म्माम है ।
भारत क विभिन्न म्माम्माम क म्माम म्माम और त्त म्माम म्माम म्माम्माम
का प्रचार करना चाहता । म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम और म्माम्माम
क म्माम्माम का म्माम्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम
क म्माम्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम
की म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम म्माम
की म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
म म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
म म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम

वदन्त्य कथिया । जगन्नाथ का राम जी वृष्ण म्माम्माम म्माम्माम है । उत्तमा
रामायण म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
करत म्माम्माम । उत्तमा म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
मिन्तली है । म्माम्माम्माम की म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
भी दूर करत की म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
आया है । उत्तमाम्माम क म्माम्माम्माम का म्माम्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
म म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम

जगन्नाथ के मन्दिर की कहानी

उत्तमा म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
प्ररणा म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम

मालवा के राजा इन्द्रधनुष ने विष्णु की आज्ञा म्माम्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
ब्राह्मण^१ पूव की आर गया वही उसने एक शबर को गुप्त रूप से एक नील-गिता की
आराधना करत हुए देखा । शबर ने ब्राह्मण का सौम्य दस उस मार डालने की म्माम्माम

१ मारलादास ने ब्राह्मण का नाम विश्ववसु बताया है और नीलाम्बर विष्णु ने अपने
दंडल लाना काय म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम
बताया है । डा० माधवर् मानसिंह—हि० आफ् म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम म्माम्माम

द कर अपनी पुत्री का विवाह बनात कर लिया। कालांतर में ब्राह्मण न राजा को मूचना दी, उन्होंने उम म्यान पर जा कर मूर्ति नहीं रखी तब राजा को आदेश सतना न शर-ग्राम घेर लिया। आकाशवाणी हुई कि राजा को अहंकार से नीलमाधव की मूर्ति अन्तधान हुई है। मंदिर बनवान पर पुन प्रकट हो सकती है। राजा न मंदिर बनवाया और मूर्ति की स्थापना को उपयुक्त ब्राह्मण के पत्र द्वारा का ही मान कर उनके लाकड़ों लिए प्रस्थान किया। ब्रह्मा ध्यानमग्न थे। उनके ध्यानमग्न होने में पत्नी पर कई युग बीत गये। तब तक मंदिर भूगर्भ में समा गया। शिवराज सलत समय किसी जय राजा का मंदिर का मन्थन मिला। उसने उस पद निकाला। तभी समय ब्रह्मा का ले कर इंद्रद्युम्न जा पहुँचे। दाना राजाओं में मंदिर का निर्माण के विषय में भगना हुआ। निकटवर्ती कठुआ न इंद्रद्युम्न को पत्र में साक्षी दी। ब्रह्मा प्रतिभा की प्रनिष्ठा के लिए प्रस्तुत हुए किन्तु प्रतिभा तो थी ही नहीं। राजा इंद्रद्युम्न न प्रत किया जाऊँ उह दिव्य सदाश मिला कि पाम की दी के मुहान पर प्रज्ञ की प्राप्ति तकनी के बुद्ध के रूप में होगी। राजा और उसने समस्त सनिक उस बुद्ध को उठान के प्रयास में अमफल रहे। पुन आकाशवाणी हुई कि एक ओर शर और दूसरी ओर वह ब्राह्मण उठोये तभी यह उठेगा।

इन प्रकार धाम और जनाय प्रयास से इन द्रवता की प्रतिष्ठा हुई।

इंद्रद्युम्न की रानी न बुद्धे का मूर्ति का रूप देना चाहा। अनक शिल्पकारों के अस्त टूट गये अतः एक बूना शिल्पकार बन्द द्वारा में बठ कर काठ का आकार देने में लगे गया। कुछ दिन पश्चात अस्त्रा की ध्वनि न सुन पा कर शक्ति रानी न निश्चित समय स पूव ही सिद्धांत मान कर देगा तो शिल्पकार सुप्त था और तीन अधवनी मूर्तियाँ पड़ी हुई थीं। तब तभी रूप में जाज भी अपूर्ण हैं, इन्हीं की ब्रह्मा द्वारा प्रतिष्ठा हुई। जगन्नाथ स्वामी न राजा का निम्न पद्धति से उपासना करन का आदेश दिया—

१—उपयुक्त शवर के उत्तराधिकारी ही मंदिर के सच्च सवक होंगे।

२—उपयुक्त ब्राह्मण ब्राह्मणी न उत्पन्न पुत्रा को उत्तराधिकारी ही पुराहित होंगे।

३—इस ब्राह्मण के शर पत्नी को पुत्र स उत्पन्न उत्तराधिकारी मंदिर के रसादए होंगे।

कहाना में निष्पन्न निवृत्ता है कि मंदिर का उपास्य शवर एव धाम दवताओं का गभवय है। तकनी को बुद्धे को शवर और ब्राह्मण दाना न साथ-साथ उठाया या तभी वह उठा था। इसमें दो क्याएँ जुड़ी प्रतीत होती हैं। मंदिर का निर्माण कोई जय राजा था भूगर्भ में निहित हो जान पर उद्धार किसी अन्य राजा न किया। श्री एन० के० साहू को मत्तानुसार चौदमगदक (१०७८-११४७ ई०) ने मंदिर

पीर आदि की पूजा होती रही है। प्राचीन यक्ष पूजा का रूप जलई के रूप में आज भी जीवित है। मारण वशीकरण आदि की कल्पित शक्ति के अलीक भय में आज भी ओभा आदि जनसमाज को आनकित एक प्रभावित किय रहते हैं। हा, इस प्रकार की साधनाएँ जशिक्षित एक निम्न वर्ग में ही अधिक प्रचलित हैं।

राम-कृष्ण की जन्मभूमि वाला इस प्रदेश की उपासनाएँ फिर भी पर्याप्त सुधरी हुई रहती हैं। यहाँ की काशी प्रयाग मथुरा व दावन अयाध्या आदि नगरियाँ समस्त भारत को आकृष्ट कर आय शुद्ध-भक्ति की प्रेरणा देती रहती हैं। पूर्वांचल के धर्माचार्यों का भी य पवित्र स्थान प्रायः खीच लाय है।

राम के चरित्र का महत्त्व

आर्यों का चरित्र गुढ़ सरल एक नियम शासित था उनका प्रत्येक कार्य एक मर्यादा में बँधा था। उनका धार्मिक एक सामाजिक जीवन परस्पर सम्बंधित एक उच्च धरातल पर अधिष्ठित था। आय प्रभावित क्षेत्र से दूर होने के कारण पूर्वांचल अपनी ही विकट साधनाओं के जजाल में उलझा रहता था। यहाँ की भूमि एक जलवायु तब पहुँचते पहुँचते आय संस्कृति विकृत हो जाती थी। बार-बार ब्राह्मण बुलाये जाते थे बार-बार बर्दिक नियाओ का लोप होता था और समाज पुनः अपने समय शिथिल पथ पर चल पड़ता था। इसीलिए यहाँ की जारम्भिक उपासनाएँ उज्वल नहीं थी।

सामाजिक चरित्र के उत्थान में धर्म का प्रमुख स्थान रहा है। बर्दिक-व्रम काण्ड के प्रतिनिध्यास्वरूप बौद्ध धर्म का जन्म हुआ था वह भी एक प्रकार का सामाजिक सुधार था। लोक के नतिक चरित्र के उन्नयन के लिए उच्चकोटि के चरित्र की आवश्यकता रहती है चाहे वह धर्म के माध्यम से ईश्वर बन कर आय जयना काय एक राजनीति का गायक बन कर।

भारत देश में एक ही ब्रह्म की विभिन्न रूपा में अभिव्यक्ति देखी गई है। साधक अपने मनानुकूल आदेश के अनुसार ब्रह्म की किसी एक अभिव्यक्ति को स्वीकार कर उसकी साधना करता हुआ लक्ष्य की प्राप्ति करता है। इस नाते शिव, शक्ति, विष्णु सरस्वती हनुमान लक्ष्मी आदि किसी भी उपास्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी को भी परस्पर तुलना कर हय या वरेण्य सिद्ध करना उचित नहीं होगा।

फिर भी विगत विशयण स स्पष्ट है कि शिव जीर शक्ति स्वयं में नितन ही सजरी एवं अमंड शक्ति सम्पन्न क्या न हा उनके उपासकों ने अपनी रक्त पिशाना माम मन्त्रि मुग्धा के प्रति तानुपता एक श्रुता का इन उपास्य के साथ सम्बद्ध कर इनके गौरव की बर्द्धि नहा की है।

गौतम बुद्ध के गिडान्ता में सत्साचार और जीवसाय के प्रति बरणा का भाव था। उनसे विचार मानवता के पीयक और उत्तम थ किन्तु उनका अनात्मसा या

गूय-वाद सामान्य जना के लिए किसी जादू-विशेष का मूर्तरूप प्रस्तुत न कर सका। इधर तत्र धर्म उमम प्रविष्ट हो कर उसके घूँस का भरन लगा। बौद्धधर्म के बरुणा और गूय पता नहीं किम किस बात क प्रतीक माने जा कर अन्त म योनि और लिंग के प्रतीक पन्म और वज्र मात्र रह गये और पंच मकारो को यहा भी स्वीकृति मिली। वज्रयानो-गोद्धा की चरम विकृति नीलपट दशनिया की साधना थी। स्त्री-गुरूप के नग्न जाडे एक नीले वस्त्र मे लिपट हुए घूमत रहत थे। खुल कर खान-पीन एव भोग करन का इत्का आदश था। श्री हजारी प्रमाद द्विवेदी एव राहुल मातृ-यायन दोना न इनका वणन किया है।^१ १०-११ वीं शताब्दी म सम्भवत इमी मत के नीलवस्त्र-धारो भिक्षु लोग निव्वत म घूम घूम-कर वहा के नर-नारियो की मति गति परिवर्तित कर रह थे। इनका प्रचार बगाल म दिखाया जा चुका है। बौद्ध मद्ध परम्परा मुक्त एव स्वतंत्र विचारक थे, किन्तु चरित्र की दृष्टि स ध शिथिल ही कह जाऐगे। उनके द्वारा स्वस्य समाज का गठन असम्भव था।

वाममार्गीय उपसनाओ एव इनके उपास्य उपासका म सामाजिक चरित्र की उच्चता कहा थी। य अपन सस्कार छिपकर करत थ। वदिक एव पौराणिक धर्म प्रकाश रूप म जनता के सामने आत थे, उनका माग सीधा था। यदि वामाचारियो की नापा साकेतिक मानी जाए तथा इनकी उलटवासिया जसी उक्तियो का अर्थ अर्थ बुद्ध निताला जाय तब भी य उपासनाए कलक मुक्त नहीं हो सकती और न सामाजिक मायना का गौरव प्राप्त कर सकती है क्यकि साधारण जना के लिए इनकी उलटवासिया सीधा अर्थ रखती थी उनके लिए मुद्रा मुद्रा थी और मदिरा मदिरा ही, अर्थ कोई यौगिक क्रिया नहीं।

लौकिक उपास्या म सामाजिक आदश खोजना ही व्यथ है क्यकि ये देवता अधमम्य अथवा बबर जानि के मस्तिष्क स प्रभूत थ। इन जातियो के अर्थ, प्रतिहिमा, इत्या आदि मनाभावा क प्रतिविम्ब ही लौकिक देव थे।

आय-देवताओ म भी अनाय-नस्त्व समाविष्ट हा गयं थे। एक विष्णु ही ऐस देवता थे जा वदिक थ तथा जिनम विदेशी एव जवाह्यनीय तत्वा का समावेश न हो सका। विष्णु के रूप म श्मशानचारी नापानिक तुल्य शिव अथवा विवट रूपा देवियो के गमान अशाभात्व नहीं था। उनके अस्त्र प्रस्त्र और शृ गार भी खप्पर, नरमुड, रत्नरजित सौंडा आदि न होकर शक चक्र गदा पदम एव मणिहार आदि थे। साधुओ के परित्राण एव दुष्टा क विनाश का सामर्थ्य उनम था।

शिशु क कृष्णावनार का भारत म अधिक प्रचार हुआ। महाभारत के शक्ति मय बरुण की अपना भागदन के ललित-कृष्ण जनता को अधिक प्रिय एव ग्राह्य हुए। इनके माथ महर्जिया वणव भक्ति हा योग हुआ। गोपिया क पीन पयोधर मदन

१ डा० हजारी प्रमाद द्विवेदी—मध्यकालीन धर्मसाधना, प० १२ १३।

म उनका चरित्र महान है। उनकी कथा और उनका चरित्र समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय एवं उपात्त्य है।

रामायणो का अपने क्षेत्रो मे महत्त्व

मभी रामायण-वेदक सम्भृत के पंडित थे जमा कि उनकी भाषा से भी प्रकट होता है। इच्छा करने पर व वाल्मीकि-रामायण का शब्दश अनुवाद कर सकते थे किन्तु तब व जन मानस का स्पश न कर पाते। परिवश, लाकाचार चरित्र-चित्रण, उपमान समूह आदि दृष्टिया से वाल्मीकि रामायण का शब्दश अनुवाद जनमानस का उतना उद्वेगित न करता जितना कि इन भाषा रामायणा ने किया। वाल्मीकि के चरित्र और चित्रण महान है साथ ही विस्तृत भी किन्तु उसके रमा स्वादन के लिए मस्कृत तक रचि भी चाहिए।

भाषा रामायण-नलका ने कथा के पात्रा को अपने प्रदेश के परिवेश म ढाल कर प्रस्तुत किया, फलत उच्चवण मे लेकर निम्नतम वग के ममान न रामकथा के पात्रा का अपना समभा। वाल्मीकि की महीयमी मीता अपा अपने देशकाल की सानज्ज कुलवधू के रूप म प्रस्तुत की गयी। जनता ऐसी मीता के प्रति अपनत्व की अनुभूति करती है।

प्रत्येक भाषा रामायण के क्षेत्र मे और भी अनेक सम्पूर्ण अथवा लण्ड रामायणें लिखी गयीं, इनके अनिश्चित रामकथा की अभिव्यक्ति मात्रिय की अय विधाया एवं लोक-साहित्य के रूप म भी हुई, तथापि इन प्रमुग रामायणा का अपना स्थान आज भी अक्षुण्ण है। राम-कथा का ज्ञा भी प्रयाजन है उमका जा भी मश है वह इन भाषा-रामायणा के माध्यम से आज भी भोपडी भापडी तक पहुच रहा है।

असमीया रामायण म अय भाषा-रामायणा की भाँति जवातर-कथाया का समाध नहा है। कथा की दृष्टि मे वह वाल्मीकि रामायण के निकट है चरित्र-चित्रण म अवश्य ही लयक न स्थानीय परिवश का ध्यान रमा है। इसी का परिणाम है कि वह जमम म जनप्रिय हा सकी। आज भी 'जाजा लोग समस्त रामायण को पठन्थ कर जन-नामाज म इसका गायन करत हैं।' श्री हरिनारायण दत्त बरना न भूमिका में लिखा है यह रामायण हमारे देश के आबाल-वृद्ध सभी के हृदय का धन एवं सत्रा की वस्तु है क्वाकि यह हमारी जाति के आचार-व्यवहार रीति-नीति एवं सामाजिक-जीवन के तथ्य मे युक्त है।

जगमीया पापी लखन कभी-कभी जावन म जावर अपनी रामायण की धृष्ट्या चलान म कभी-कभी जनावश्यक हठ लिगा जात है।

(१) प्रतिष्ठित विद्वान् डिम्बेश्वर त्रिपाठी जसमीया रामायण की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए तुलसी और कृत्तिवास के जीवन काल को पीछे धकेलने का प्रयास करते हैं। कृत्तिवास के रामायण रचना काल को भी अधिवाण जसमीया लेखक १६वीं शती का मध्य भाग बताते हैं।

(२) इन विद्वानों को सब है कि जसमीया-रामायण में वाल्मीकि का अनुसरण अधिक है। माघव कदली की रामायण में भक्तिरस नही था इसीलिए अनन्त कदली ने अलग प्रयास करना चाहा था। जसमीया लेखक यह दावा करते हुए भी परिताप प्रकट करते हैं कि जसमीया भाषी लोग अपनी रामायणों के प्रचार के अभाव में रस चीया बढ गाली रामायण (अर्थात् अनेक अवातर प्रसंगा से युक्त कृत्तिवासी रामायण) की जोर अधिक आकृष्ट रहते हैं।

साधारण जनता कृत्तिवासी रामायण की जोर इसीलिए जाकृष्ट हो गयी कि उसमें लोकजनकारी तत्त्व अधिक थे। फिर भी एक मुगठित साहित्यिक कृत्ति के रूप में जसमीया-रामायण का अपना विशिष्ट स्थान है।

बंगला रामायण पाचाली शली में लिखी गयी थी। जनता में इसका गान होता था। प्रमुख गायक बायें हाथ में चामर दाहिने में मजोर और परो में नूपुर धारण कर पाचाली-काव्य का गायन करते थे। उनके साथ मदग वादक और दोहार (ध्रुवकार) भी रहते थे। दाहार प्रमुख गायक के साथ तान अलापता था।

कवि के जीवनकाल में एव इससे पहले भी बंगाल में लोकगीतों की नाना पद्धतियाँ का प्रचार था। भाषा रामायण का सम्बल पाकर लोकगीत-कारा की बया बंगाल में उमड़ पडी। रामायण की विषयवस्तु लेकर पुल जासडाइ हाक आसडाई उस्ताद कवि पाचाली तर्जा और भूमुर गायक आदि भिन्न भिन्न सम्प्रदायों ने बडी-बडी जनसभाओं में रस जमा कर राम-कथा का विस्तार किया।^१

लेखकों में सम्मान—परवर्ती अनेक बंगाली रामायणकारों ने अपनी पुस्तक के आदि या अन्त में बंगला-लेखक कृत्तिवास का नाम आदरपूर्वक किया है। अनेक कवियाँ न स्वयं कविता लिख कर कृत्तिवास की भणितों द दी है। मादकेल मधुमुदन दत्त ईसाई हार पर भी कृत्तिवास का आदर करते थे। गुम्दास बचोपाध्याय एव राय कृष्णराम जैसे विद्वान् भी कृत्तिवास के कृत्तिवासों के प्रशंसक थे।

कृत्तिवास का जन्म स्थान फुलिया ग्राम उजड़ गया है। इनके भगवावशिष्ट स्थान पर हिन्दुओं की कौन-कौन मुसलमान तार हन नही चलाते थे। फलतः इग स्थान पर जगन उग जाया। अब यहा कवि का जन्म-स्थान बनवा दिया गया है जिग पर उनकी प्रशंसा में कविता उलीण है।

१ रामायण त्रिपाठी—कृत्तिवासी बंगला रामायण जोर रामचरितमानस, प० ६१ ६२।

निनीकत भट्टशाही न कहा है कि पाँचवीं गाथा न द्रम रामायण का प्रारंभ म उनीसा तत्र तथा चटगाव से लेकर राजमहत तत्र किया था । उगाल म केवल दा ग्रथ ही राष्ट्रीय कह जाते हैं—१ वृत्तिवामी रामायण और २ वाशीष्ठीय महाभारत । अपड लोग म भी रामायण नुनन का इतना चाव रहा है कि व इसे पढ़्या कर सुनत रह हैं ।

आज भी वृथा की छाया म समवत हो कर वृषकगण परम शक्ति के साथ राम कथा सुनत हैं । आज भी स्वामी पुत्र के मधुमय सत्कार स घिरी बग-बलनाएँ दोपहर के काय से निश्चित होकर रामायण पाठ करती हैं । भोली निरक्षर वधुएँ भी सीता का वनवास सुन कर रा पडती हैं । आज भी बगावत की घूसर-बसना विधवाएँ एवा दशी के अपराह्न म समवेत हां कर किसी ललित-कठ बानव द्वारा रामायण पढा कर सुनती हैं उनका उपवास किण्ट हृदय भक्ति-रम स उच्छ्रित हो उठता है ।^१

विक्ट साधनाओं के अजात के मध्य जन-जन को आय मस्वृति का सस्वार दे कर उम एक सूत्र मे बाधने का काय तो उगात म इसी रामायण ने किया है । दीनशचन्द्र सेन का कहना है—यदि चन्द्र-भुय के रामान बगाल के कोने-बाने का अधकार दूर करने वाल वृत्तिवाम न हाते तो विश्व के आदि कवि वाल्मीकि जनता के लिए दुलभ आकाश-मुमुम ही रह जात ।^२

० उडिया रामायण लगव लरामदाम का उनके देशवासी उत्तम का वाल्मीकि कहत है तथा उनके ग्रथ को सस्वृत रामायण का अनुवाद न बता कर स्वतंत्र गान-काश कहा है । मध्यकालीन उडिया साहित्य के कवि-सम्राट उपद्रमज ने अपने प्रसिद्ध ग्रथ म बलरामदास का अति जादर के साथ उल्लेख किया है । ए० नीलकण्ठदास उडिया गण्ट के निमाण म तात पुस्तका का नाम लते हैं—(१) सारलादास का महाभारत, (२) वनरामदास की रामायण और (३) जगन्नाथदाम का भागवतपुराण । वे बलरामदास का उडिया के प्रसिद्ध थण्णव भक्तकवि पचसत्ताओं मे वयोज्येष्ठ और सर्वाधिक प्रतिभाशील (the oldest and most talented) बताते हैं ।^३

विटरनिलम न उडिया रामायण का लोकप्रिय काव्य क साथ ही अलकृत काव्य भी माना है—the Ramayan appears to as a work that is popular epic and ornate poetry at the same time^४

उडिया रामायण की लोकप्रियता के सम्बन्ध म निम्न दा विद्वाना के कथन उद्धृत कर रहा हूँ—

१ श्री जागुतोप भुगोपाध्याय—मभाषतीय भाषण (पुनिया ग्राम), प० २२, २३ ।

२ दीनशचन्द्र सेन सम्पादित वृत्ति० रामायण की भूमिका ।

३ नीलकण्ठ दाम—हिस्ट्री आफ आरिया लिटरेचर ।

४ एम० विटरनिलम—ए हिस्ट्री आफ इंडियन लिटरेचर, वा० १, पृ० ४७६ ।

बलरामदासाङ्क रामायण गादिण तानप्रिय महाभाष्य । पत्नीर पर परे तार
आदर । शिक्षित मूल धनी निधा प्रति प्राणियाण हृद्यगिणगारे तार आगत ।^१

(बलरामदास की रामायण एवं तोत्रप्रिय महाभाष्य है । गाँवो व घर घर म
उसका आदर है । शिक्षित मूल धनी निधा प्रत्यय उन्धिया व हृद्य सिद्धागत पर उग
का आगत है ।)

लोकें एहि दपणर निजर वञ्जितत ओ अतजण्तर प्रतिमूर्ति देगित ए हना
गहे गहे हृदयर निधि पूजा पाइना गटुवीरे गद्दा हना भागवत टङ्गिरे । गमागर
शिरा प्रशिरारे भेदिना एहार चेर । गमागर गा वन रे कुटिना एगर पून ।^१

(जाता ने इसके (उन्धिया रामायण के) रूपण म अपने वहिजगत् एग अतज
गत की प्रतिमूर्ति देनी यह हो गयी गह गत् म हृद्य की निधि इमा पूजा प्राप्त की
पवित्र वाष्टासना पर यत् पत्नी गयी भागवत-कुटीरा म गमाज के शिरा प्रशिरा म
समाविष्ट हुए इसके मुखम तन्तु । गमाज के मत उन म विरगित हुए इसध गुण ।)

० विषय म ऐसा बौनगा प्रथ है जा काञ्चि-नाटि कठा म बाग करा व कारण
लोकप्रियता के श्रेष्ठ उपानाम धारण विष्ट है और साथ ही इतने उच्चकोटि का महा
काय भी है कि वडे वडे विद्वान् उस पर निरतर राज परत रहत हैं । विस्तार तासी
प्राञ्ज प्रियसन श्री-ग टसीटोरी कारपण्टर वेई एटविगत हिल, धारागिवाव
आलिचन और बुल्ले आदि विदेशी विद्वाना को अपनी ओर आकृष्ट करन की शक्ति
गोस्वामी तुलसीदास ने प्रथ मानस के अतिरिक्त और विम प्रथ म हो सकती है ।

इस महाकाव्य की तुलनात्मक श्रेष्ठता दस बात से भी प्रकट है कि बगला
एव उडिया भाषाओ म इसके दजन म ऊपर अनुवाद हो चुन हैं । इन प्रदेश
की भाषा के अन्तर्क कविया ने पिछली शताब्दिया म तुलसीदास व इस प्रथ के वण्य
विषय एव शली से प्ररणा ग्रहण कर निररने का प्रयास किया है । इसके अतिरिक्त
संस्कृत फारसी उर्दू अंग्रजी फ्रेंच जर्मन रूस नेपाता गुजराती, मराठी तमिल
तेलुगु मलयालम और जसमीया भाषाओ म भी इसके दस दजन स ऊपर अनुवाद हो
चुके है ।

भारत की साधारण हिन्दू जनता बद शास्त्रादि का नाम मान ही जानती है,
अस्तुत दस सम्बन्ध म उसका स्वाजित ज्ञान बुद्धि रना होता । विभिन्न प्राञ्तीय भाषाओ
म भी बुद्धि ऐसे धार्मिक ग्रथ हैं जो हिन्दू समाज की परंपरागत कटिया का जोडे रहते
हैं । उत्तर भारत की जनता को ज्ञान विनाम शास्त्र आदि का नाम कराने बाता मानस
है । घर घर म इसकी प्रति मिल गायी कठ कठ म उसकी चौपाई का वास है ।

तुलसीदास न उत्तर भारत का रामायण कर दिया । उन्होंने हिन्दीभाषी क्षेत्र

१ नरेन्द्रनाथ मिश्र—बलरामदास वा आण्डिया रामायण प० १२० ।

२ डॉ० कुजविहारी दास—बलरामदास वा आण्डिया रामायण भूमिका, प० ६ ।

म प्रचलित सभी काव्य पद्धतियाँ एवं लावणीयता में रामकथा का समावेश कर रामभक्ति का प्रचार किया। उगी का फल है कि कोई व्यक्ति जैसाई लगा तो राम कहेंगे शात्रुमूचक घृनि बरेगा तू राम राम करेगा तथा अभिवादन में तो प्रायः 'जयराम जी की' प्रचलित ही है। मानस के कारण राम यहाँ के जीवन में घुनमिल गये हैं। मानस का परिचय यहाँ उन किमती से है जो कि वनानिर्गम-जादिवारा से इतने दूर है कि सभ्यता उहाँन जीवन में टूटने की न देखी है। प्रस्तुत लगन और निरक्षर विद्या का जानता है जिह लगभग सम्पूर्ण मानस कठस्थ है।

मुसलमानों एवं ब्रह्मजनों के शासनकाल में जब कि जनभाषा में अरबी फारसी और ब्रह्मजी के शब्द बलात् प्रवेश पा रहे थे मानस की चौपाइयों में साधारण, निम्न एवं अपठ जाना की बालचाल की भाषा में भी समृद्ध शब्दों का प्रचार किया और हमारी समृद्धि की रक्षा भी की।

उत्तर-भारत में रामभक्ति के प्रचार का प्रथम श्रेय रामानन्द जी का है। उनके पहले सत्रण हिन्दुओं का मयाम लोकाधिकार था, किन्तु रामानन्द ने वणमात्र के लिए रामभक्ति का मार्ग खोल दिया। फलतः सबट-वर्गीय स्थिति में रामानन्द के वरागी सम्प्रदाय में वग-वग में रामभक्ति का प्रचार कर समस्त-समाज का समेटित किया। इस मकता है कि समाज का निम्न वर्ग उच्च-वर्ग की उपेक्षा के कारण धमालगण बन जाता अथवा कबीर-पथ आदि का अनुसरण कर उच्चवर्ग के प्रति द्वेष प्रकट करता। किन्तु सभी वर्ग के लोग वरागी होने और अपने-अपने वर्ग में रामभक्ति का प्रचार कर स्वयं शक्ति-लाभ कर समाज का संशुद्ध करने लगे। रामानन्द का प्रयत्न स्तुत्य था किन्तु यदि उनके सम्प्रदाय का मार्ग का सम्बल न मिला होता तो संभवतः आज भी वह इस रूप में जीवित न होता।

रामभक्ति के प्रचार के लिए तुलसी ने स्वयं रामलीला का प्रचार किया था आज भी काशी में उही स्थानों में लीला चली आ रही है। कई छोटे-बड़े नगर-गाँवों में आश्विन-मास की प्रथमा में कर विजयादशमी तक रामलीलाएँ होती हैं। इस अवसर पर प्रायः अयोध्याकाण्ड और उत्तर भागों की कथा का अभिनय होता है। वसन्त-पंचमी के पाँच दिन पूर्व में 'धनुष यत्न' नामक अभिनय चलता है जिसमें बालकाण्ड तक की कथा अभिनीत होती है। वसन्त-पंचमी के दिन धनुषभंग, रामलीला विवाह एवं पुण्यगम-संस्करण सकारण होता है। तुलसीदास द्वारा प्रवर्तित अभिनय का रूप लगभग चार सौ वर्षों में आज का रूपांतरण आ गया है। पापा का सवाद प्रायः मार्ग के गये छात्रों में होता है अथवा पढ़ने गमाती-ब्याग गुरुता-अहित पद्या का पाठ करते हैं फिर पाप उतारा मद्यानुवाद करते हैं। मूल्य अथवा गवाह के अनुपस्थित वगैरह प्रसंगात् तद्गथा गमाती-ब्याग वाच-यथा के गाय जल्दी जली करत जाते हैं। लीलाका क प्रभाव के कारण हिन्दी भाषी क्षेत्र के बीच अपने शासनकाल में ही राम का पारिवारिक-कथा से परिवर्ध प्राप्त कर लते हैं। विजयादशमी के

पश्चात् प्रायः अनेक स्थानों पर छाटे छाटे बच्चे तीर-जगत वगैरे उद्यत। शिवाभी पढ़ते हैं। वे विधिवत रावण-अप करना हैं। मामिा प्रगमा पर शिवाप करना हैं तथा गानत का चौपाइयाँ गा कर पढ़त हैं। गौर व मुक्का की कई महत्कारोभाभा म एर आकाशा रामायण के अच्छे गायक होने की भी होती है। आज गुप्त हनुमान भक्त दण्डरथ जादि के सपन एर स्याति प्राप्त अभिनता बान की भी अभिनाया करत हैं।

तुलसीदास ने रामकथा के साथ ही रामभक्त हनुमान का भी जन्म कर दिया है।

रामचरित-लेखको का जीवन-परिचय

असमीया रामायण लेखक

दो काण्डों का लोप

असमीया रामायण के मुख्य-लेखक हैं श्री माधव कन्दनी । इनके द्वारा लिखी हुई रामायण के आदि और अन्त रहित केवल पाच काण्ड शेष हैं । इनके लोप होने के विषय में निम्न कारण बताये जाते हैं—

(१) आराम और बहारी जातियाँ के युद्ध के समय ये काण्ड नष्ट हुए ।

(२) काण्ड कहता है कि आग में जल गया ।

(३) किसी का कहना है कि मूल वाल्मीकि रामायण भी पाच काण्डों की

थी उमक दा काण्ड प्रविष्ट है । इसी प्रकार असमीया रामायण भी पाच काण्डों की थी । लखक ने लका-काण्ड के अन्त में अपना परिचय देकर रामायण को समाप्त किया था । वह भीता विवाह से सीता उद्धार तक लिखना चाहता होगा ।^३

शक्रदेव और माधवदेव द्वारा पूर्ति

इन दोनों काण्डों को बालात्तर में परवर्ती दो कवियों ने पूरा किया । कथा-मुद्राचरित' में कहा गया है कि अन्त कन्दनी नामक कवि माधव कन्दनी की रामायण में कुछ इधर उधर की जाड़-तोड़ कर रामायण सिगना चाह रहे थे । माधव कन्दनी ने अपनी रामायण को सुप्त होने की सम्भावना से रक्षा करने के लिए शक्रदेव की स्वप्न दिया । शक्रदेव ने स्वयं उत्तर-काण्ड की रचना की और अपने शिष्य माधवदेव से आदि-काण्ड की रचना करवायी । ये दोनों काण्ड माधव कन्दनी की रामायण में जोड़ दिए गए ।

१ श्री हिम्बस्वर नन्दा—असमीया साहित्यर बुरजि, पृ० १८८ ।

२ श्री उपेन्द्रनाथ लेखा—असमीया रामायण साहित्य प० ४२ ।

रसमत—ऐसा कहना कि वाल्मीकि रामायण मूलतः पाँच काण्डों की थी, इसलिए माधव-काली न भी पाँच काण्डों की ही रामायण लिखी, भ्रमपूर्ण है। कदली के जन्म से कई शताब्दी पूर्व ही वाल्मीकि रामायण के सातों काण्डों का प्रचार हो चुका था। आक्रमण अथवा अग्निवाण्ड के कारण आदि अन्त के काण्डों के लोप होने के पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते। फिर भी ऐसा सम्भव प्रतीत होता है कि किसी कारणवश ये दानों काण्ड विह्वल हुए और उनके कुछ अंश ही शेष रह गये। अतः कदली यह अपने दृष्टिकोण के अनुसार नवीन रूप देना चाह रही होगी। शंकरदेव का चिन्ता हुआ और उन्होंने दानों काण्डों का माधव-काली की रामायण में जोड़ कर उसे वृष्णवभक्ति के प्रभाव से सम्पन्न कर प्रचारित किया। शंकरदेव असम में वृष्णभक्ति के सर्वश्रेष्ठ प्रचारक हुए हैं।

जीवनवृत्त प्राप्ति का कठिनाइयाँ

(१) प्रमाणाभाव—अपने देश के अन्य जगहों के समान ही माधव-कदली ने भी कुछ ऐसा नहीं कहा जिससे कि उनको जीवन-काल अज्ञेय पर प्रकाश पड़ता। श्रम दो लेखकों के विषय में भी यही कहा जा सकता है। यह अवश्य है कि शेष दो कवियों पर उनकी शिष्य परम्परा ने चरित प्रयो में कुछ प्रकाश डाला है किन्तु यह सम्पत्ती भी साम्प्रदायिक होने के कारण शत प्रतिशत शका मुक्त नहीं है।

(२) भाषा विवाद—दूसरी कठिनाई असमीया और बंगला के परम्पर विवाद की है। असमीया भाषी बंगला भाषी लोग से इसविषय असंतुष्ट है कि वे लोग अप्रेजी पदों को अग्रजा के साथ रह कर उन्हें फिरतर भक्ति करते रहे और बताते रहे कि असमीया बंगला की ही एक गवार भाषा है। इसके फलस्वरूप असमीया का विकास न हो सका।

बंगालियों का दावा—कुछ जगहों पर आज भी माधव-काली और शंकरदेव को १६वीं शताब्दी में उत्पन्न बंगला के एक मानते हैं। डॉ० सुकुमार सेन के विचारों को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

‘पंद्रहवीं शताब्दी के विषय में नहीं जानता किन्तु सोनहरी शताब्दी में माधव-काली और शंकरदेव को छोड़ कर कृत्तिकास का और कोई प्रतिद्वन्दी नहीं था। माधव-काली ने छह काण्डों रामायण की रचना की थी शंकरदेव ने उत्तर काण्ड लिख कर काव्य का सम्पूर्ण किया। इन काव्यों का प्रसार उत्तरपूर्व बंगला प्रायद्वीप का विहार अगम अथवा मीमा बद्ध था। माधव-काली और शंकरदेव के समय असमीया भाषी लोगों के स्थिति में पड़ गये हैं। इन्होंने जिन भाषा में लिखा है वह बंगाल की उत्तरपूर्वी जगहों उपभाषा है। इन उपभाषा में बाद में असमीया भाषा प्रवर्धित की गयी। १६वीं शताब्दी में बंग भाषा की स्वतंत्र रचना नहीं थी। अतएव माधव-काली और शंकरदेव बंगला के ही प्राचीन

वर्ष हैं।^१

असमीया वाला का आवेग—सुकुमार सेन कदली के छ बाण्डा का उल्लेख करता है, जबकि असमीया-लेखक पाच का। क्या यह मन का अज्ञान है या असमीया वाला का सीमा-ताड आवेग। असमीया-लेखक कदली का १४वीं शताब्दी का मानत हैं। इसमें मत्स्यता है या उनका भ्रम कहा नहीं जा सकता। लगता है प्रतिक्रिया-वगैरे अपने भाषा-माहित्य की स्वतंत्र सत्ता प्राचीन से प्राचीनतर सिद्ध करना चाहते हैं। असमीया के एक उल्लेख आलाचक श्री डिम्बेश्वर नम्रोग असमीया रामायण का बंगला और हिन्दी रामायणों से सौ से तीन मा वष पुराना बताते हैं। व तुलसीदास का जन्म १५८६ ई०, मृत्यु १६८० ई० और रामायण रचनाकार का समय १६३१ ई० बताते हुए उपयुक्त निष्पत्ति देते हैं।^२ उहाने विक्रम संवत् को ईश्वरी समझा और लिखा है। मैं उह लिखा था कि तु काई उत्तर नहीं मिला। पर यह तो भ्रम की बात है जिह भ्रम नहीं है व भी असमीया रामायण के लेखक का जन्म १४वीं शताब्दी में ही मानते हैं, काई प्रथमाद्ध में काई द्वितीयाद्ध में।

माधव कदली

(१) कालनिर्णय—सका बाण्ड की समाप्ति पर कदली ने लिखा है—

रामायण सुपथार श्रीमहामाणिके ये
बराह राजार अनुरोधे ।

बराह राजा श्री महामाणिक्य के अनुरोध से उहाने रामायण लिखी। महामाणिक्य कहा का राजा था और कहा रहता था—इसकी राज का आधार ले कर हा असमीया विद्वानों ने कदली के स्थान और काल का अनुमान लगाया है।

शंकरदेव ने उत्तरबाण्ड लिखा, माध ही उहाने इस बाण्ड में माधव कदली का नाम आदर से लिया है, इससे स्पष्ट है कि कदली उनसे पूर्व उत्पन्न हुए थे। शंकरदेव का जीवनकाल १४४६ से १५६८ ई० है। डा० सुकुमार सेन ने भी मृत्यु-समय का कम से कम स्वीकार कर ही लिया है। जन्म का सन्-संदिग्ध हो सकता है। अतएव यह निश्चित है कि कदली १५वीं शताब्दी के प्रथमाद्ध से पहले ही उत्पन्न हुए होंगे।

कदली के आश्रयदाता महामाणिक्य को भिन्न भिन्न विद्वानों ने जयन्तापुर त्रिपुरा और मानपुर का कदागी राजा बताया है। महामाणिक्य उपाधि जयन्तापुर एवं त्रिपुरा राजा के शासक की रही है किन्तु ये लोग अपने को बराही नहीं

१ डा० सुकुमार सेन—बाङ्गाला साहित्यर इतिहास (१) पृ० १०५।

२ डिम्बेश्वर नम्रोग—असमीया साहित्यर बुरजी, पृ० १६४।

कहते थे। कदाचित् ताति की एक शाखा बराही थी, इस शाखा का राजा महामाणिका^१ न उजनि अंचल के मानपुर में राजधानी स्थापित कर १४वीं शती का मध्य राज्य किया। श्री हृमचंद्र गोस्वामी इसी राजा का काली का परणामायक राजा मानते हैं। श्री वणुधर शर्मा श्री गान्धारी का रामधन कर शिवरागर जिला के सोनारि को भी गागपुर बताते हैं, यहाँ बरही नाम का चाय बगीचा और स्थान है। त्रिपुरा एव जयन्तापुर कवि का जन्मस्थान से दूर भी है।^२

श्री माधवचंद्र वर्तल प० कनन शर्मा श्री वात्रिगम मपी स्व० कनवलाल वर्मा, डा० वाणीकांत वावली आदि विद्वान काली को १४वीं शती का ही मानते हैं अन्तर यही है कि काद उह इस शती के आदि का कोई मध्य का और कोई अन्त का मानता है। जन्मस्थल नौगाँव अंचल भी सब स्वीकृत है केवल गाँव का नाम का विषय में मतभेद है।

राक्षस में कहा जा सकता है कि ब्राह्मण वंशीय माधव कदवी ने १४०० ई० के आगमनास अगम का नौगाँव अंचल में कहा नाम दिया उहान महामाणिका नाम का उपाधिधारी किसी बराही राजा का अनुरोध से रामायण रचना की। अब उसकी रामायण का मूल पाँच काण्ड प्राप्त हैं। आदि एवं उत्तर काण्ड की रचना अन्य कवियों ने की है जिनका परिचय आगे दिया जाएगा।

कदली उपाधि—अब अगम में इस उपाधि का प्रयोग नहीं होता किन्तु वर्णन एवं प्राप्त वर्णन-भुग में इसका व्यवहार अन्त में किया है। तर्का महाशय कहते हैं कि काली उपाधिधारी काली ने अन्त अन्त स्थान पर जन्म दिया अन्तर्गत काली नाम स्थापित करने की इच्छा करता है। यह उपाधि वंशगत भी प्रतीय नहीं होती, क्योंकि अन्त काली का पिता का नाम रत्न पाठक एवं रचिनाथ का पिता का नाम कृष्ण आचार्य था। तर्का अगमगीता भाषा में काल शब्द का अर्थ मान कर कहते हैं कि काल अन्त में पद व्यक्त काली हुआ। शास्त्रार्थ में पारमार्थी नाम ही काली उपाधि प्राप्त हुआ।^३ मलयद्राघ्य शर्मा ने भी पारमार्थ्य में व्युत्पत्ति रखने का व्यक्तित्व का कहना बताया है।^४ श्रीधर नाम का एक कवि का पारमार्थ्य पर उपन्यास एवं पोषी का नाम पारमार्थ्यी है। अन्त काली नामक कवि ने स्वीकार किया है कि तब काल उह काली नाम प्राप्त हुआ—तबत मभिना नाम अन्त काली। माधव काली जन्मनाम का परिवार काली कहता था—

१ महामाणिका आदि महामाणिक काल का उपाधि कर अथवा का म परिचय है।

२ काली नामक नाम—अगमनास माणिक्यर इतिवत् प० ४२।

३ पारमार्थ्य अथवा अगमनास रामायण माणिक्य प० २६ २६।

४ काली नामक नाम—अगमनास माणिक्यर इतिवत् प० ४२।

कविराज कदली ये आमावे से बुलि क्य
माधव कदली मोर नाम ।

वैंगना रामायण म हर-भावती को 'दल' प्रसंग आया है यहा भी को 'दल' का अर्थ पारस्परिक वाद विवाद अथवा कलह प्रतीत होता है ।

कदली क अर्थ और 'यकित्तव्य'—कदली के नाम से प्रचलित दो अर्थ अर्थ भी है—(१) देवजित और (२) ताम्रध्वज । देवजित म अजुन और इन्द्र के युद्ध का वर्णन है । इस काव्य म यम और तपस्या आदि की अपथा भक्ति और नामधम का माहात्म्य दियाया गया है । अमम म नामधम की महत्ता का प्रचार करन वाल है शंकरदत्त, अनएव निश्चय ही यह अर्थ परवर्ती किसी अर्थ माधव कदली की रचना है । ताम्रध्वज जमिनी महाभारत का अनुवाद है । यनाश्व के लिए पाण्डवा और ताम्रध्वज के मध्य हुए युद्ध का इमम वर्णन है । यह पुस्तक भी परवर्ती रचना सी प्रतीत हाती है । य दाना पुस्तकें इतिहास और पुरातत्त्व विभाग म सरक्षित हैं ।^१

रामायण—माधव कन्दली न रामायण रचना विषयक अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है । वाल्मीकि रामायण को पढ़ कर उसे अपन प्रथम म जिस प्रकार प्रस्तुत किया है उम उहान इन पक्तिया म प्रकट किया है—

आपोनार बुद्धि अर्थ यि मत बुजिलो । सशय करिया ताक पद बिरचिलो ॥
समस्त रसक कोने जानिवाक पारे । पक्षी सब उरइ यन पला अनुसारे ॥
कवि सब निबधय लोक व्यवहारे । कतो निज कतो लम्भा कथा अनुसारे ॥

मैन (वाल्मीकि की कथा का) जमा अर्थ समभा उसे सक्षिप्त कर लिखा । गमन्य रस का कौन जान सकता है । सभी पक्षी अपन अपन पंगे (की शक्ति) के अनुसार उड़ते हैं । सभी कवि 'नाक-व्यवहार' के अनुसार रचना करत हैं वे बुद्ध अपनी धार स और कुछ विस्तृत कथा के अनुसार कथा ग्रहण करत हैं —[३६६७ ८] ।

कन्दली ने सब म ऐसा ही किया है । उनकी रामायण भारतीय-संस्कृति की अममदेशीय विशिष्टता का दर्पण है । इस अर्थ म वाल्मीकि क दृष्टिकोण को अपनाने की चेष्टा की गयी है । अममीया विद्वान श्री कृष्णवात गदिन न एक वार कहा था—संस्कृत रामायण के पाठ-निर्णय और इतिहास आलोचना क लिए प्राचीन अममीया रामायण की सहायता आवश्यक हागी ।^२ कथन म आशिक सत्यता तो है ही । नगरु के इन कथन म भी आशिक सत्यता है—उन्होंने काव्य प्रचार क मूल उद्देश्य स रामायण लिखी रामभक्ति का प्रचार उनका उद्देश्य न था । कहा जाता है कि भक्ति विषयक अश प्रक्षिप्त ह । यदि एमानहा है तो यह मानना पड़ेगा कि कन्दली

१ सत्यद्रनाथ शमा—अममीया साहित्यर इतिवत्त पृ० ४८ ।

२ उपेन्द्रनाथ सत्याह—अममीया रामायण-साहित्य, पृ० ३८ ।

उत्तर एव मध्य भारत के भ्रम प्रचारका एव मध्यात्म रामायण से प्रभावित थे।

इस कवि के सम्बन्ध में विशेष कुछ ज्ञान नहीं है। लखन राम का भक्त है, वह स्थान स्थान पर राम की वन्दना करता है। रामायण के ममस्वर्गी स्थला की उस पहचान है। जिस शली एव पट्टनि में उतने राम कथा प्रस्तुत की शकरदन एव माधवदन न उसी का अनुमरण कर उत्तर एव आदि काण्ड लिखे हैं।

शकरदेव (असमीया उत्तरवाण लखक—१४४६ १५६८ इ०)

श्रीमन्त शरत्देव असमीया गार्हित्य के सर्वोत्कृष्ट लखक, भक्त रामाज सुधारक आर्य सम्प्रदाय प्रवर्तक हैं। इनके जीवन पर अनन्य चरित ग्रन्थ लिखी गयी हैं, जिनके अनुसार यहाँ उनका सक्षिप्त जीव परिचय प्रस्तुत किया जाता है।

प्रायः सभी असमीया विद्वानों शकरदेव का जीवन साल शक सन्त १३७१ से १४६० अर्थात् १४४६ ई० से १५६८ ई० मानते हैं।

बरलावा सन के कथाचरित (१६६७ इ०) के अनुसार हाका जन्म कातिव मारा बहुस्वतिवार अभावस्था शक सम्बत १३७१ में हुआ।

दत्तारि एव अनिरुद्ध ने १४६० शक (१५६८ ई०) में मृत्यु होता लिखा है। मृत्यु का सबत निर्विवाद है तथा शक लखका न स्वीकार किया है कि उनकी आयु ११६ वर्ष थी—

वरियेक मन्द आयु भल छय कुरि ।

(६ कोडी - १२० म एन म - ११६ वर्ष—रामचरण ३६३/)

एक बाग छय बिश वरिय भलत ।

(६५२० = १२० म एन बाग = ११६ वर्ष) - शकर चरित ता० भट्टाचार्य २०६)

इस प्रकार मृत्यु शक १४६० में ११६ वर्ष कम उमर पर उनका जन्म शक १२७१ निकलता है और बरलावा सन के कथाचरित में दिया गया शक की पुष्टि हा जाती है।

शक - शकरदेव का जन्म तिथि के सम्बन्ध में शक गृह जानी है। उनके चार मुख्य चरित-लखका में दत्तारि ठाकुर एव भूषण द्विज न जन्म तिथि के बारे में कहा गया है। रामचरण भाषितन मात में राम का हाना बताना है और रामानन्द फाल्गुन

१. हरिनामयण दत्त वर्मा विनयागम पृ० ११।

शिवरत्न नमाल—असमीया गार्हित्य बुगुञ्जि पृ० २५०।

जसम दीनाराम—नामघाणा-नाम, पृ० १५।

माम म। बेबल वरदोग सन व कथानरित म १३७१ शक त्रिया है और ज म का माम वातिक बनाया है। श्री डिम्बश्वर नमोग १३७१ शक आशिवन माम म जम निधि स्वीकार करत है।^१ इस प्रकार मासानि तिथिया व सम्बन्ध म मतभेद है।

अनिरुद्र नामक एक और परवर्ती लगन शकरदेव का जन्मवाल १३८५ शक मानते है। इनकी पायी १६७७ शक (१७५५ ई०) म लिगी गयी थी और श्री नमोग क मत स इसका १३८५ शक निश्चय ही भूत है। कि तु यही विद्वान अनिरुद्र के मत्यु शक १४६० को ठीक मानते है। साथ ही व एसा भी उल्लेख करते है कि किसी किसी न एक बरिप मत्र आयु छय कुरि क स्थान पर डर बरिप (डढ वप) एक किसी किसी न तर बरिप (१३ वप) करवे अनिरुद्र की आयुनिक पायी स इमे ठीक विठालन वा अनुचित और निराधार काय किया है।^२

शकरदेव जम असधारण पुरुष की आयु ११६ वप की हा सपती है किंतु साधारणत यह असम्भव प्रतीत हानी है। यदि स्वाभाविकता की आर ध्यान दिया जाए ता अनिरुद्र का ज म शन १३८५ अधिक समीचीन प्रतान हाता है। इपर छ कोडी म एक क स्थान पर तरह वप कम करन पर १०७ वप की आयु भी विश्वसनीय प्रवीन हेती है। १।० मुकुमार सन मत्यु शक पर ता विश्वास करन प्रतीन हान है किंतु जम शक पर व मौन है।^३

किंतु शकरदेव की आयु क ११८ वप हान यात्र उनकी मत्यु १४६० शक म हान का उल्लेख ही अधिकारन हुआ है। यदि असमीया भापी विद्वान प्रादशिवता क आवश म अपन दश म उत्पन इस भारतीय सत को जमतिथि का पीछ धवेत्तन का प्रयास नही करत तो जम शक १३७१ स्वीकार त्रिया जा सक्ता है।

जीवन परिचय—प्राप्त जीवन परिचय क अनुसार इनका जम १४४६ इ० म अमम के नोगाव जिला क वटद्रवा क निकट आलिपुखुगी नामक स्थान पर हुआ। पिता कुमुमवर शिरामणि भुजा और माता सत्यसखा दानी इनक जम क कुछ ही वपों के भीतर परलाकगाभी हुए। पावन नानी खेरमुनी ने किया। नानी की डाँट डपट साकर बढी बठिनाई स य १३ वप की आयु म महद्र कदली की पाठशाला म पढन गय और अत्यल्प बाल म इहोन याकरण, वाक्यकाश, पुराण रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थो का अध्ययन कर लिया। इहाने एक एक कर दा विवाह किये किंतु दोना पत्निया इद्व आध्यात्मिक एव साहित्यिक जगत म विकसित होन का अवकाश दे कर इह ससार म अकेला छाड गयी। शकरदेव को पिता बनने का

१ डा० डिम्बश्वर नमोग—असमीया साहित्यर बुरजिज प० २५०।
२ वही, प० २४६ ५०।
३ डा० मुकुमार सन—हिस्ट्री आफ बंगाली लिटरचर, प० ११६।

सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

उन्होंने लम्बी-लम्बी यात्राएँ कर गयी पुरी वंदावन मथुरा द्वारका काशी प्रयाग, सीताकुंड वाराहकुंड अयोध्या और बदरिनाथम आदि तीर्थों का भ्रमण किया था । य अनेक साधु सन्यासियों के सम्पर्क में आये थे और अनेक वृष्णवाचार्थों के साथ इनका विचार विमर्श हुआ था ।

जीवन दर्शन—इनके समय में बौद्धधर्म पूरा ह्रास को प्राप्त हो कर अनेक विकृत रूप धारण कर चुका था । समस्त असम में हिंसारमक शाक्तधर्म प्रचलित था । अनेक प्रकार के तान्त्रिक व्यभिचार और अनाचार प्रचलित थे । शंकर ने एक ईश्वर के ध्यान का प्रचार किया । उन्होंने कृष्णलीला के पट अंकित कर सबको भगवन्मुखी कराने का प्रयास किया । कलि का परमधर्म हरिनाम जप बता कर ब्राह्मण से ले कर चण्डाल तक का सगठन किया । कई मुसलमान और भीरी, गारा आहाम भाटिया आदि पहाड़ी जन इनके भक्त बन गए । अहिंसा अस्पृश्यता मादक द्रव्य वजन, प्राणी मांस पर दया आदि इनके धर्म की मूल नीति थी ।^१

एकदेव एकसेव एक बिने नाइ केव ।

नाहि भक्तित जाति आचार विचार ॥ (कीर्तन)

शंकरन्व ने भक्ति में दास्यभाव को प्रधानता दे कर राधाकृष्ण-तत्त्व की उपासना का और निष्काम भक्ति पर जोर दिया । कृष्ण ही परब्रह्म हैं व सनातन तथा शाश्वत हैं । अथ देव दवी मिथ्या हैं । तान्त्रिक उपासनाओं से लोगों को विरत करके व निए उन्होंने विष्णु के अतिरिक्त किसी को भी उपासना करने अथवा किसी भी अथ उपास्य के मन्दिर में जान का वजन किया । उनकी भक्ति एक शरणीया भक्ति कहलाती है । उनके ऊपर रामानुज एव शंकराचार्य दोनों का गभाव है । इनके धार्मिक दर्शन के विषय में मतभेद है । कई उह विशिष्टाद्वैतवादी कई भूतवादी एव कई सारग्राही दार्शनिक मानता है ।^२

भागवता धर्म के प्रचार द्वारा जनता की रुचि परिष्कृत रान के लिए उन्होंने बौद्धा के सपारामा की पद्धति पर सत्र नाम के मठ बनवा कर बहून से विरक्त और गृहस्थ भवता का वसान को चष्टा की थी । उन्होंने सत्रा का गणनात्रिक-पद्धति से चलाया । इनमें धोष्य बनाने की गिन्ना चित्रविद्या तथा कारीगरी आदि अनेक विद्याओं की चर्चा आदि की भी व्यवस्था थी ।^३ अगम के गाँव-गाँव में नामपर हैं जहाँ कृष्ण का नाम जप ता जाता ही है साथ ही य नामपर गाँव का पचायत का

१ हरिनारायण दत्त बरघा—चित्रभागवत (भूमिका) पृ० १२ ।

२ बोरडकुमार भट्टाचार्य—धर्मसुग (५ गिउम्बर ६१) पृ० १८ ।

३ हरिनारायण दत्त बरघा—चित्रभागवत (भूमिका) पृ० ६५ ।

काय भी सम्पादन करते हैं। नामधर म काइ मूर्ति अथवा चित्र नहीं हाता वदी के मिहासन पर एक कीतन पुस्तिका तथा मिट्टी का एक दीपक होता है।

शकरदत्त असमीया साहित्य जगत के मूय है। असम के धम, ललितकला और साहित्य के क्षेत्र म उनका दान अनुलनीय है। वे कवि, ममाजसस्कारक, धमप्रवक्तक, नाटयकार, अभिनता, संगीतन और भक्त थे। उहान सस्कृतग्रथा के सहार जनसाधारण की भाषा म काव्य, नाटक, गीत आदि की स्वय रचना की और अनक लागा को भी इस काय मे लगाया।^१

माधवदेव न इनक शारीरक रूप का जसा बणन किया है उसमे प्रकट होता है कि य अत्यन्त चारुदशन एव प्रभावा व्यक्तित्व वाल थे। इनके भय और दिव्य व्यक्तित्व स भी प्रभावित हा कर बहुतर शिष्य बन हाग।

ब्राह्मण विरोध—अनेक ब्राह्मणा न इनका विरोध कर आहोम और कोच राजाया स शिकायत का, किन्तु इहोन अपन पाण्डित्य स राजाओ का सतुष्ट किया। शकरदत्त न स्वय कभी ब्राह्मण जाति का विरोध नहीं किया। अनक ब्राह्मण इनके शिष्य हा गये थ। य ब्राह्मण शिष्य को स्वय नाम मत्र दे कर पोथी को प्रणाम कराते थे, ब्राह्मणो की सत्या बढने पर मत्र देन आदि का काय इन्हाने गुरु का सौप दिया। ब्राह्मणा के कहने पर कि गूढ का मन देन का अधिकार नहा है ये तथा इनके ब्राह्मण शिष्य कह दिया करत थ कि ठीक है, गूढ ब्राह्मण को मत्र देन का अधिकार नही रखता किन्तु अय का तो मत्र दे सकता है।^२

ग्रथ

काव्य—(१) इग्श्च उपाख्यान (२) रविमणीहरण काव्य (३) बलि छवन, (४) अमून मयन (५) गजद्व उपाख्यान, (६) अजामिल-उपाख्यान और (७) कुरुप्रथ।

भक्तितत्व प्रहागक सग्रह—(१) भक्ति प्रदीप, (२) भक्तिरत्नाकर (सम्कृत) (३) निमित्तवमिद्ध-सम्वाद।

अनुवाद मूलक—(१) भागवत (१, २, १०, ११, १२, स्वघ), (२) उत्तराकाण्ड रामायण।

मकोया नाट—(१) पत्नी प्रसाद, (२) कालियदमन, (३) कलिगापाल, (४) रविमणी-हरण, (५) पारिजातहरण और (६) रामविजय।

गीत—(१) वरगीत (२) भटिमा।

नाम प्रसंग—(१) कीतन और गुणमाला।

१ सत्यद्रनाथ शर्मा—असमीया साहित्यर इतिवत्त पृ० ८१।

२ बाणीकाल कावती—मि मदन गोंडेस कामाख्या, पृ० ७६ ७७।

शकरदेव के 'कीतन' का असम भवही स्थान है जो तुलसीदास के रामचरित मानस का हिन्दी भाषी क्षत्र म है ।

भाषा साहित्य के प्रथम नाट्यकार और अभिनेता—शकरदेव असमीया साहित्य में तो प्रथम नाट्यकार है ही साथ ही उत्तर भारत की समस्त भाषाओं के भी प्रथम नाट्य लेखक है । सस्वृत नाटका की शली के अनुरूप ही इन्होंने गद्य पद्य में नाटका का सजन किया है । विद्यापति की मधिली हिन्दी से प्रभावित हो कर इन्होंने भी अपने नाटका में कृत्रिम ब्रजबुलि भाषा का प्रयोग किया है । इनका गद्य लयात्मक है । उन्होंने नाटको के अभिनय का भी प्रवर्धन किया था । ये स्वयं ही नाट्य के अनुरूप पदों का निर्माण करते थे स्वयं अभिनय भी करते थे । अभिनय में कभी कभी नृत्य और संगीत की प्रधानता रहती थी ।

इनकी प्रोत्तरचना कीतन है । भक्ति-तत्त्व को अत्यन्त सुचारुरूपण प्रस्तुत किया गया है । कवि ने भक्ति विभोर हो कर स्तुतियाँ भी की हैं । सुन्दर अभिव्यक्ति चित्रारमक वर्णन मौलिक शली एवं लयात्मक प्रवाह के कारण यह ग्रंथ आधुनिक पाठकों को भी अत्यधिक आनन्द देता है । वच्चे इसके गीत और कथा से प्रसन्न होते हैं युवका का काव्य सौन्दर्य का रस मिलता है और बद्धजना का इसमें धम और जान की चर्चा मिलती है । शकरदेव ने इतना अधिक एवं इतना उत्कृष्ट लिखा है कि असमीया साहित्य के इतिहास ग्रंथों का लगभग आधा कलवर इन्हीं की चर्चा से भर जाता है । इनकी सम्पूर्ण प्रतिभा का परिचय देना प्रस्तुत ग्रंथ में सम्भव न होगा ।

रामायण का उत्तरकाण्ड—माधव कदली की रामायण में शकरदेव ने उत्तर काण्ड जोड़ा था । इन्होंने भी आख्यान को भक्ति परक दृष्टिकोण दिया है । वाल्मीकि रामायण से केवल भक्ति-परक दृष्टिकोण का ही अन्तर नहीं है चरित्र चित्रण में भी मौलिकता का परिचय दिया है । कल्याणप्लावित विरह का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हुए इन्होंने सीता को कुछ नवीनता के साथ चित्रित किया है । सीता अपनी छोछालदर के कारण राम से अत्यन्त कुपित हो कर माधारण पतिव्रता नारी के समान राम को खूब जली-कटी सुनाती हैं । राम उनके श्रोत्र से भयभीत हो जाते हैं । फिर भी उनके श्रोत्र का परिचालित करने वाला भाव उग्र पति प्रेम ही है । वास्तव्य का भी हृदयग्राहक चित्रण है । सीता के पाताल प्रवेश की मार्मिकता का निर्वाह कवि ने जिस कुशलता से किया है उससे ही उसमें महाकवि के पूर्ण लक्षण मिल जाते हैं । भाजन भट्ट दुर्वासा का प्रस्तुत कर लेखक ने हास्य की सृष्टि की है । इतना सब हात हुए भी लयक न मूलकथाकार कदली के वर्णन से साम्य स्थापित करने का प्रयास किया है ।

माधवदेव (कायम्य) (१४८६ ई० १५६६ ई०)
(श्राण्टिकाण्ड-लेखक)

शकरदेव व एक चरित-लेखक रामानन्द का कहना है कि शकरदेव श्रीग माधव देव के पूवज कर्जी से आय थे। शकरदेव के आत्मेन को सबल बनाने का श्रय माधवदेव को है। गुरु के अनुमार चला भी वृष्ण भक्त था किन्तु इहाने भी रामायण के एक बाण की पूर्ति की है इसी नात असमीया रामायणकार के रूप म इनका भी सक्षिप्त जीवन-वत्त प्रस्तुत है।

जीवनकाल—१४११ शक (१४८६ ई०) म तपीमपुर के नारायणपुर अक्षत म लामकणा अथवा गोविन्दगिरि भुइया व श्रीगम श्रीग मनागमा के गम स इनका जम हुआ है। दत्तारि नामक चरित लेखक ने इनका मल्यु शक १५१८ (१५६६ ई०) लिया है। इस प्रकार इनकी आयु १०८ वष की होती है।^१

जीवन-परिचय और ग्रन्थ

माधवदेव शाकनधर्मी एव गवित विद्वान थ। पिता की मल्यु के पश्चात व्या र का भार इहाने सभाल लिया था। माता बीमार पनी तव इहाने मनौनी मानी थी। उनके रोगमुक्त हाने ही देवी की बलि के लिए दो श्वेत वरगो के श्रय के लिए इहोन अपने वहनाई रामदास को बाजार भजा। व शकरदेव व भागवतीधम से प्रभावित हो कर हिंसा से विरत हो उठे। माधवदेव ने पाण्डित्य के दप म आ कर शकरदेव से बहस की, उमम वे पराम्त हो कर शकरदेव के शिष्य हो गय।

वे शकर की बहुत सवा करन थ। गमछा गरम जल तेल-वस्त्र श्राण्टि की व्यवस्था व ही करते थे। गुरु की सवा व लिए माधव ने आज्ञम कौमाय त्रन स्वीकार कर लिया था।^२

राजा रघुदेव न इह शिष्य मण्डी सहित एक वार पकट लिया था क्याकि कुछ रोगा ने जा कर राजा म अनुरोध किया था कि एक त्रूट अनाचार कर रहा है। वागीश भट्टाचार्य के अनुरोध पर ये छोड लिय गये।

श्री सत्यद्रनाथ शर्मा ने शाकी प्रतिभा को भी वट्टगुपी बताया है व धम प्रचारक, मास्त्रवत्ता भक्त वनि नाटयकार और मुगायक थ।

पद्य—

- १ रामायण (श्राण्टिकाण्ड)
- २ वग्गीन
- ३ राजमूवकाव्य
- ४ ज म रहस्य
- ५ नामघोषा
- ६ नाममातिका का अनुवाद

१ द्विन्यशकर नेमाग—असमीया गान्धित्यर वुगज्जि, प० ४१०।
२ सत्यद्रनाथ शर्मा—असमीया साहित्यर इतिवत्त प० ६४।

७ भक्ति रत्नावली	८ चोरघरा
९ पिपरागुचोवा	१० भोजन विहार
११ भूमि लेटावा गट	१२ दधि मथन
१३ अजुन भजन	१४ नसिंह-यात्रा
१५ गोवद्धन यात्रा	१६ रामयात्रा

नामघोषा—माधवदेव का सवश्रुष्ठ ग्रथ नामघोषा है। स्व० बाणीकांत वाक्ती ने कहा है—इसमें तीन धाराएँ मिलकर विशाल आनन्दसागर की धार प्रवाहित हो रही हैं—(१) श्री शवरदेव की स्मृति (२) माधवदेव की आत्मलक्षिमा और (३) कृष्णभक्ति का माहात्म्य।

इसके हजार घोषा छंदा में ६०० छंद विभिन्न पुराणा के भक्ति प्रधान श्लोका के अनुवाद हैं जो ४०० छंद इनके स्वयं के रचे हुए हैं। अनुवाद को भी इन्होंने मूल को आत्मसात कर ही प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में कृष्ण-नाम का माहात्म्य भक्ति की श्रेष्ठता और उसका स्वरूप, गुरु महिमा नाम रूप का अभेद, यभिषारी यक्ति की निष्ठा कवि की विनीत स्तुति आदि का वणन कवित्वमयी शली में हुआ है।

काव्य की दृष्टि से राजसूय काव्य भी उत्कृष्ट है। बरगीतो में ललित भाषा के भाष्यम से कृष्ण की वाच-लीलाओं का सुमधुर वणन किया गया है। इनमें कवि के मन की सफल अभियोजना हुई है।

सख्या ८ से १६ तक की पुस्तकें नाटक हैं। इनमें स अधिकांश नाटका में कृष्ण की वाच-लीलाओं का आत्मलक्ष्य और हास्यरस के वणन के साथ ग्राम्य जीवन का प्रतिबिम्ब उपलब्ध है। प्राधुनिक एकाकी से इनका सादृश्य भी है। अतिस तीन नाटका का अभिनय भी किया गया था नसिंह का अभिनय स्वयं माधवदेव ने किया था। अब ये तीन नाटक उपलब्ध नहीं हैं।

आदिकाण्ड—रामायण के आदिकाण्ड में निम्नतम समय माधवदेव ने वाक्ती के दृष्टिकोण को अपनी प्रकार हृदयगत कर लिया। वा प्रयाग किया है। वणन-पद्धति, कथा प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण एवं अस्तुत-योजना आदि की दृष्टि से उन्होंने अपने काण्ड का वाक्ती रामायण में गया देन का प्रयाग किया है।

पता नहीं वाक्ती ने रामायण का प्रारम्भ करने में क्या दृष्टिकोण अपनाया होता माधवदेव का प्रारम्भ तो वगना रामायण का प्रारम्भ से ममानता रखता है। या तो माधवदेव ने अपने पूर्ववर्ती वगना रामायणकार कृत्तिसाम का ग्रथ पढ़ लिया था अपना दाना का प्रेरणाग्रथ एक ही था।

काव्य प्रतिभा का गुरु परिचय का निष्ठा तो माधवदेव का कृष्ण विषयक माहात्म्य का ही अभ्ययन करना था। वहाँ उनकी प्रतिभा अपने का मुक्त रूप से

बंगला-लेखक वृत्तिवास

१०३

वृत्तिवास का प्रामाणिक जीवन-वृत्त नहीं मिनता। वृत्तिवास द्वारा लिखित आत्म-परिचय मिनता है जिसकी मूलप्रथम मूचना स्व० श्री हाराधन दत्त न म्० श्री दीनेशचन्द्र सन को दी। उन्होंने दीनेश वावू को मूल पोथी न दे कर उसकी प्रतिनिधि दी थी इसी को दीनेश वावू ने अपनी पुस्तक 'वग भावा श्री साहित्य क' स्तित्य सस्वरूप म प्रकाशित किया। उनका है हाराधन क कारण बड़ी गडबड हुई जमा कि प्राग के वषण न स्पष्ट है। हाराधन न पोथी का लिखित १५०१ ई० बताया था। उन्होंने नगेन्द्र बाबा नामक एक महिला न पोथियाँ दच दी इस महिला न आत्म-हत्या कर ली अथ मूल पोथी अप्राप्य थी। विद्वाना ने आत्मचरित वाली पाथी तथा इसके बताया ग्य निषिकाल (१५०१ ई०) पर मदेह किया और इस अप्रामाणिक माना जान लगा।

जान हुआ कि नगदनाथ वसु के पास वृत्तिवास के आदिवाण की पोथी के आरम्भ के तीन पत्र थ इसम वृत्तिवास का आत्म-परिचय था। १० ननिनीवात भट्टशाली तथा अथ विद्वाना का वसु महाशय १ १ ता पोथी दी आर १ उगकी तक करने दी। जिस समय वृत्तिवास के जम सान का ल कर इनकी चर्चा हो रही थी, इनका चुप बठ रहना रहस्य माना गया।

वसु की मत्यु के पश्चात इनके उत्तराधिकारिया म भट्टशाली न जो पोथियाँ खरीदी उनम आत्मपरिचय वाल तीन पत्र भी थ। इनम कई स्थना पर काटछाट है तथा कुछ अश जोड़े भी गय हैं। मदेह यह किया जाता है कि यह हाराधन वाली पोथी है और जहाँ ही इसम काट छाट की थी। विशपना यह है कि हाराधन ने दीनेश वावू के पास जा नन भेजी थी उनम तथा इस काटछाट म भी तानमेन नहीं है। यह भी रहस्य बना है कि वे तीन पत्र नगेदनाथ वसु के पास कम पहुँचे।

इस तीन पत्र वाली पोथी का शेपाण वगीय-साहित्य-परिपत्र क पुस्तकान म प्राप्त हुआ। इसकी पुणिका म लिखित १२४० वगाण (१८३३ ३४ ई०) किया हुआ है। इस प्रकार हाराधन द्वारा घोषित इनका लिपिकाल १५०१ ई० भी खणित हो जाता है।^१

भट्टशाली ने १८वीं शताब्दी क उत्तरार्ध म अनुनिखित चार पाथिया म भी वृत्तिवास का आत्मपरिचय प्राप्त किया है। इनम अल्प परिवर्तन के हात हुए भी बहुत साम्य है। इन पाथिया क आधार पर भट्टशाली द्वारा प्रस्तुत आत्मपरिचय विश्वतानीय माना गया। इसी के आधार पर वृत्तिवास क जीवन-वृत्त को उभय करने का प्रयाम हो रहा है। किसी भी निष्प पर पहुँचने के पूव सवप्रथम प्राप्त आत्मपरिचय की मुख्य बातें नीच द दना मभीचीन होगा।

^१ अगितकुमार क'घोषाध्याय—वाग्ला साहित्यर इतिवत्त प० ४७६ ८२, द्रष्टव्या।

पूर्वी वगल म प्रमान (उपद्रव) होने से कृत्तिवास के पूव पुण्य नरसिंह ओभा जो ि वेदानुज (पाठांतर 'य दनुज) राजा के पात्र थे, गगा (हुगली) के पूर्वी तट पर आये । यहा एक गांव म माली जाति रहती थी । उम गाव का नाम इहोंने इमोनिए पुलिया रख दिया । यह वश इम प्रकार आये वन—नरसिंह ओभा—गर्भेश्वर—मुरारी—वनमाली । वनमाली ओभा पिता और माता मालिनी (पाठभेद मेनिका आदि भी) के पुत्र कृत्तिवाम ने आन्तियवार श्री पचमी पुण्य (हाराधन वाल परिचय म पूणपाठ) माघ मास म ज म त्रिया । पितामह मुरारी न उत्तम वस्त्र म षपट कर ह गोद म त्रिया । पितामह दक्षिण की ओर जाने वाले थे इग्निए (दक्षिण क प्रधान उपास्य शिव के एक नाम क आधार पर) उहाने पुत्र का नाम कृत्तिवाम रखा ।^१ ११ वष की आयु ेप क कृत्तिवाम बड़ी गगा (पद्मा) पार कर उत्तर की ओर पत्न गये और विद्या समाप्त कर घर लौट आये ।

कृत्तिवाम की भेंट गौडेश्वर से हुई थी । सप्तघटी व्यतीत हान की बेला (वगभग ६॥ बजे प्रात) घोषित हुई । उस समय लथ म स्वर्ण यष्टि ले कर दूत न कृत्तिवाम को राजा से साक्षात् करन के लिए बुलाया । व नौ डयोड़ी पार कर राजा के पाम पहुँच । राजा का वभव देख कर व चमत्कत हुए । जगदानन्द, मुन, केदार खा नारायण मधवराय केदार राय तरणी श्रीवत्म तथा कुछ श्रय सभा मदा के साथ राजा धूप गान हुए हास परिहास कर रहे थे । कृत्तिवास न राजा से ४ हाय दूर खडे हो कर सात शोक पते । राजा ने प्रमत्त हो कर पुण्य माल चन्दन और रशमी चादर से सम्मान कर घन भी देना चाहा किंतु कवि न घन की उपेक्षा कर केवल गौरव माँगा । बाटर धान पर जनता न अभिनन्दन कर बहा—पुलिया क पडित धय हा मुनिया म बाल्मीकि का ब्यानि है और पडिता म गुणी कृत्तिवाम की । वाप माँ क आशीर्वा गु के बल्याण और बाल्मीकि के प्रसाद म उहाने मानसाण रामायण की रचना की ।^२

कृत्तिवाम ने मिनिवार और माग का उत्तरग तो किया किंतु सवत् का नहा इग्निए उनका जम-मरते प्राप्त करना कठिन है । उहाने गौडेश्वर के वभव का पर्याप्त वणन ना किया किंतु उनका नाम नया लिया । अतएव उनके ममगामयिक गौडगायन का कवि अभाव होने न भी उनका गीत-काव्य निर्धारित करना कठिन है । गुणमय मुगानाध्याय का उपाय है ि वगगा क त्रिमी प्राचीन कवि न सामकथा म अपने नाम-मका का उत्तरग नया किया है ममगामयिक राजा क नाम का उत्तरग भी प्राय नया किया गया है ।^३

१ मुत्तमान मर ि मी धान बेंगाली लिखवर पृष्ठ ६३ ।

२ भागवत (अरण्य १ ६६ वगला प० ५६७ ६८) म प्रकृति भट्टनाली बाबा पथक क आचार्य रिच म गा ली ३ ।

३ धा गुणमय मुगानाध्याय—कृत्तिवाम आसन-परिचय प० ५२ ।

जीवनी के लिए विचारणीय विषय

(अ) वेदानुज महाराज और नरसिंह श्रोत्रा - वेदानुज' पाठ को य दनुज पढ़ कर 'दनुज महा' नामक अथवा उपाधिधारी कुछेन राजाआ के जीवनकाल के आधार पर उनके पात्र नरसिंह श्रोत्रा के जीवनकाल का अनुमान लगाया गया फिर उसके आधार पर पाचवी पीढ़ी में उत्पन्न कृत्तियाम का । अग्राह्य मता का उल्लेख न कर केवल जो मता का उल्लेख समीचीन होगा । डा० मुकुमार मेन कृत्तियाम के पून-पुण्य नरसिंह श्रोत्रा का राजा गणेश (१४१७-१८) का पात्र स्वीकार करते हैं । किंतु इसके पून विद्वान्ना ने राजा गणेश का कृत्तियाम का गौडेश्वर मान कर काल निर्धारण का चेष्टा की है । मुख्यतः मुयापाध्याय वेदानुज पाठ को मही मान कर कहते हैं कि हा मकता है इसी नाम का कोई राजा हुआ है जिनके काल स्थान के सम्बन्ध में हम कोई पता नहीं है ।

(आ) आदित्यवार श्रीपञ्चमी पुण्य माघ मास - हागयन वाले विवरण में 'पूण' पाठ था, भट्टशास्त्री वाले में 'पुण्य' । आचार्य यागशचन्द्र राय ने पूण माघ का अर्थ माघी शक्रानि २६ माघ ले कर आदित्यवार श्री पञ्चमी पूण माघ मास का मवत बताया १३५८ शक (१४३२ ई०) । भट्टशास्त्री ने इसी मवत या इसके आमपाम के मवत का स्वीकार कर लिया । किंतु इसमें एक असंगति थी । जो जो कृत्तियाम का स्थान करन काल गौडेश्वर को राजा गणेश (१४१७-१८ ई०) मानने थे उनका मत मिला कि वह राजा था कयाकि तब इस समय तक कृत्तियाम का जन्म ही नहीं हुआ था । यह यह खोज हुई कि शक पूण नहीं पुण्य है । बंगला में ण और 'न' नहीं ही हैं कि न म मिनत जुनत हैं । बंगला ण की नाज जरा उपर निवान दा जानी है इसके अर्थ जमी हो जाने के कारण ऐसा पता गया । अब डा० यागशचन्द्र ने पुण्य पाठ का आधार पर गणना कर जन्ममवत १३२० शक (१३६८ ई०) की प्राप्ति की । इस जन्ममवत की संगति गौडेश्वर गणेश का शासनकाल में ही हो जाना थी । नरसिंहवाल्मिजी भट्टशास्त्री आदि ने इसी मवत का स्वीकार कर लिया था ।

श्रीपञ्चमी वसन्तपञ्चमी को कहते हैं । यह माघ मास में ही पड़ती है । रविवार का वाग म गणना हुई है किंतु रविवार का वसन्तपञ्चमी का अनेक वर्षों में पड़ी है । अतएव इसमें किसी निश्चित मवत की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

(अ) कृत्तियाम का समसामयिक गौडेश्वर - कृत्तियाम ने गौडेश्वर से भेंट का उल्लेख किया है । उनकी नौ ड्यौरी और राज गणेश आदि में प्रकट होता है कि वे

१ आ यागशचन्द्र राय ने वस्तुतः इस गणना द्वारा जन्म मवत खोजा - १२५६ शकाल अथवा १३५८ शकाल । उद्घाटन दूसरे शकाल १३५४ अथवा १४३२ ई० ११ फरवरी रविवार राति में कृत्तियाम का जन्म स्वीकार किया ।

वगत के प्रतापशाली राजा थे। इनका जन्म १६१७ ई० माना गया। कत्तिवाम के पठपापक और उनके प्वपुत्र नरसिंह के पठपापक के सम्बन्ध में यगानी विद्वानों की धारणाएँ समय-समय पर बदलती रही। यहाँ उनकी त्रयी गीतों ही दी जाएँगी। डा० सुकुमार सेन वृष्णनाचाय जीव भोस्वामी के माध्यम के आधार पर गणेश अनुमन्त्र को नरसिंह का पठपापक स्वीकार कर कत्तिवाम के समय को १५वीं शताब्दी के द्वितीयाब्द में स्वीकार करते हैं। उनसे मत में कत्तिवाम पठान सुनतान की गथा में गये थे यह सुनतान रकुनुद्दीन बारबक शाह अथवा मुसुफगाह अथवा हुसैनगाह भी हो सकता है। वे तब दते हैं कि कत्तिवाम द्वारा वर्णित अनक मधी घाटि हुआ शाह की राजसभा में थे जैसे वेदारराय नारायण और जगन्नादराय। कत्तिवाम ने केदार खी सभामद का नाम लिया है। हिन्दुआ का राँ की उपाधि १५वाँ शताब्दी के द्वितीयाब्द से ही दी गयी।^१

डा० सुकुमार सेन से एक वर्ष पूर्व ही श्री सुखमय मुखोपाध्याय ने केदार राय को बारबक शाह का नायब बना कर माना है कि कत्तिवाम बारबक शाह की राजसभा में गये थे। बारबक शाह विद्या और साहित्य के विख्यात संरक्षक थे। श्रीवृष्णविजय के रचयिता मालाधर वसु और बहमणि मिश्र को इनका आश्रय मिला था। मुखोपाध्याय कहते हैं कि बारबकशाह का राजत्वकाल सवमम्मति से १४५६-१४७४ ई० माना गया है। इनके द्वारा सर्वाधिक कवि कत्तिवाम १४६० ई० में जीवित थे इसमें सन्देह नहीं है।^२ श्री सुखमय मुखोपाध्याय ने मुझे एक पत्र में सूचित किया था कि वे इनका जन्मकाल १४४० और १४५० ई० के बीच मानते हैं।

गौडेश्वर की राजसभा का तथा कत्तिवाम के सम्मानित होने का जसा वर्णन है उसमें तो यही प्रकट होना है कि वे किसी हिन्दू राजा के सहाय गये थे हो सकता है वह कोई साधारण राजा अथवा वरुण जगीन्दार रहा हो और कवि ने आदरवश उसे गौडेश्वर कहा हो। अस्तु आश्रयलता के आधार पर कत्तिवाम का जीवनकाल निर्धारित करना उचित नहीं है फिर भी बुद्ध अथ साधना पर भी विचार किया जा सकता है।

अथ साधन—(१) कत्तिवाम की रचना में चतुर्थ महाप्रभु जैसे महान् पवित्रत्व का उल्लेख स्पष्ट अथवा संकेत किसी भी रूप में नहीं हुआ जबकि उनके शिष्या की रचनाओं में कत्तिवाम का हुआ है। अतएव कत्तिवाम को चतुर्थ महाप्रभु से व्योम्बेष्ठ माना जाता है। महाप्रभु का जन्म १४८६ ई० में हुआ।

(२) कत्तिवाम की एक उत्तर काण्ड की पाथी की पुष्पिका में १५०२ शताब्द (१५८१ ई०) तिथि दी है। नूकिय पौरी बहूत पुराना प्रतीत नशी होनी प्रसन्नित डा० सुकुमार सेन इसके शताब्द को आश्रय-पाथी का शताब्द मानते हैं। इससे कम

१ सुकुमार सेन सिन्धी घाफ वेंगानी निटरेचर, प० ६८।

२ सुखमय मुखोपाध्याय—कत्तिवाम परिचय पृष्ठ ४६।

वानी पोथी के अनुसार जान जाता है कि राजा की छाया में उठता रामायण विन्नी —
बाप मायेर छापीयदि गुरु छाता दान । राजामाय रति गीत सप्तकाण्ड गान ॥

डा० मुकुमार सेन का 'राजागण मन्त्र पर मन्त्र' है । यह साधुविक्रम प्रभात मानते हैं ।

ननिनीकान्त भट्टशानी द्वारा प्राप्त पोथी में पाठ यह प्रकार है —

बाप माएर छापीयदि गुरु कल्याण । वाल्मीकि प्रसादे रचे रामायण-गान ॥

श्री मुगमय मुन्नीपाध्याय रामायण रचना में गुरु का अर्थात् स्वीकार करने हुए रहते हैं — उगता है प यरी गुरु है तिनस रतिताग ३ मयस दान म निशा पायी और तिनको उगान व्याग वगिष्ठ वाल्मीकि और चयन क गमान बताया है ।^१

मुन्नीपाध्याय ने यह दृष्टिकोण में भी मैं महसूस है कि राजा में भेंट के पूर्व ही उगान रामायण का कुछ अंश निगम लिया था जिसमें कि जनता में कवि रूप में उनकी ख्याति हा गयी थी और वे वाल्मीकि का गमान समझ जान गये थे

कृत्तिवास की प्रामाणिक पोथी का अभाव

कृत्तिवास की विपुल ख्याति उनकी रामायण का कुछ पाठ के लिए पातक हाती गयी । रामायण गायका ने अपनी अपनी बोनियो के अनुसार रामायण को भाषा परिवर्तित कर दी । उन्होंने अनेक आख्याना का समावेश कर दिया । चन्द्रकालीन अनेक वक्ष्यव कथाएँ भी इस रामायण में समाहित कर दी गयी, पर यह हुआ कि १७वां शताब्दी तक लखव के नाम तथा कुछ विकीण छन्दों के अतिरिक्त मौलिक रचना का और कुछ शेष न बचा ।^२ कनकता विश्वविद्यालय वगीय साहित्य-परिषद् एवं शांति निवेदन में कृत्तिवासी-रामायण का कम से कम १५०० पौधियों का सफलन हुआ है जिनमें अधिकांश अठारहवीं या उन्नीसवीं शताब्दी की हैं । सत्तरहवीं शताब्दी के अन्त से प्राचीन फोर्स पोथी नहीं है इन पौधियों में परस्पर भिन्नता भी है । यहाँ यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि कृत्तिवासी रामायण की सप्तकाण्ड पौधियाँ बहुत ही कम उपलब्ध हैं । गायक नाग के निगम पूरी रामायण का गान कर सकना असम्भव था इसलिए वे एक एक कांड का गायन करते थे । यही कारण है कि रामायण के भिन्न भिन्न भागों की पौधियाँ ही अधिकांश मिलती हैं ।^३

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कमचारियों को बेंगला सिलाने के लिए श्रीरामपुर के मिशनरी प्रस से सन १८०२ ई० में कृत्तिवासी रामायण सबसे प्रथम प्रकाशित हुई ।

१ श्री मुगमय मुन्नीपाध्याय—कृत्तिवास जीवन परिचय प० २७ ।

२ डा० मुकुमार सेन—हिन्दी भाषा बेंगाली गिटरचर प० ६८ ।

३ श्री अमिननुमार बन्नीपाध्याय - बागना साहित्यर इतिवत्त (१) द्वि० स० प० ५१३ १४

१८३० ३४ ई० म स्व० जयगोपाल तत्कालकार न इय प्रथम संस्करण का समाधित कर इसी प्रम स इगवा द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया । तत्कालकार पण्डित थ उटाने कतिवाम की भाषा को संवार कर नया रूप दिया । यह स्थान पर इटान तत्सम शत्रु कर स्थि वर्द्ध छत्र भी सुधार स्थि । बटतला के एक पुस्तक विचना श्री माहन चाँद जी न न १३ पडिना की गृह्यता स तर्जालकार क संस्करण का भी समाधन कराया । इग प्रवार वाजार म उपलब्ध संस्करण अधिकांश बटतला स प्रकाशित एक तत्कालकार द्वारा समाधित संस्करणा क पुनरुद्धार मात्र हैं ।

सबप्रथम स्वर्गीय हीरान्द्रनाथ दत्त न निम्नलिखित कर प्रकाशित किया कि वाजार म प्रचलित रामायण के संस्करण वस्तुतः वृत्तिवाग की रचना नहीं है । उन्होंने वगीय-साहित्य-परिषद् को प्रेरणा स रामायण क अष्टाध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड लिख । १३०७ और १३१० बगाल म इनका प्रकाशन हुआ । यह पुरानी पोथिया क आधार पर सम्पादिन इन दाना काण्ड ती प्रामाणिकता पर सन्देह किया गया ।^१ स्व० नलिनीकांत भट्टशानी न भी परिश्रम कर १५०२ शकाब्द वाता प्रति क आधार पर १९३६ ई० म आदिकाण्ड प्रकाशित किया । व सम्पूर्ण रामायण का सम्पादन करना चाह रह थ इसी बीच उनकी मृत्यु हा गयी । अत्र वह पाथी नी जापता है । डा० मुकुमार सन न इन प्रकार सम्पादित काण्ड का (composite text)^२ कहा है । डॉ हान पर उन्होंने काण्ड की मौलिकता का सङ्गन किया और कहा कि जिन पोथिया का इन्होंने उपजीव्य माना ह उनम न अन्त पर पडा हुआ सजत उतना पुराना नहीं है ।^३ सब पुझा जाण ता इन विद्वाना न कई पाथियों सामन रूप कर अपनी दष्टि से कुछ इसका और कुछ उसका ल कर आवश्यकता स अधिर सम्पादन कर दिया है । यदि पाथिया की प्राचीनता स्वीकार कर ली जाए ता भी य सम्पादिन संस्करण मौलिक नहीं हा मजन ।

डॉ० मुकुमार सन श्रीरामपुर के प्रथम संस्करण को Editio princeps (आदि प्रतिलिपि) की सना देने हुए कहत हैं कि यह संस्करण कई पुरानी पाथियों और परवर्ती छत्र हुए संस्करणा स उत्तम है ।^४ सद् है कि अब यह प्राप्य नहीं है ।

अब रामायण क मूल-पाठ का उद्धार हुनकर और अनुसन्ध प्रतीन हाता है । कतिवासी रामायण क इस वक्तमान रूप म जनता न अन्न परिवर्तन एवं परिवर्धन करत हुए भा कतिवाम के उन अशा को अवश्य सुरक्षित रखा हागा जो कि सुदर और उत्कृष्ट थ ।^५ रामायण का यह रूप बगाल की अनेक विशेषताया का समाहित कर

- १ मूत्रेव चौधरी—बागला साहित्यर इतिहास, प० १२० ।
- २ मुकुमार सन—ब० सा० इतिहास (१) प० १०५ फुटनोट ।
- ३ कतिवासी बगला रामायण और मानस (२० न० त्रिपाठी), उपोद्धान, प० ६६ ।
- ४ डा० मुकुमार सन—हि० आक बंगाली लिटरचर प० ६६ ।
- ५ ममनाथ गुप्त—बंगला साहित्य दशन—३७।२८ ।

अपन प्रश्न में अनप्रिय दृष्टा तथा अन्य प्रश्न के भारतीयों के लिए बगान की सांस्कृतिक विशिष्टता पाता करता ता साधन भी पाता । कृत्तिकाग की मूल पापी सम्मनन इतना प्रचार न कर पाती ।

व्यस्तित्व — कृत्तिकाग मुगलिया में उत्पन्न हुए थे इसका उद्देश्य अभिमान था । उनके पूर्व राजाशा द्वारा सम्मानित हुए थे । कुल पात्र में वे प्राप्त थे । ब्राह्मण तथा गज्जन आ कर उनमें घातार सीगन थे ।

वे अपन शरीर में सम्मती एव पतन्य का अधिष्ठान माना था । अपनी रामायण में भी उद्देश्य स्थान स्थान पर बता है— कृत्तिकाग पण्डित कवित्वे विचक्षण ।^१

वे स्वाभिमाना ब्राह्मण थे । गौश्वर से सम्मानित हा कर उद्देश्य था सना अस्वीकार कर कवन गौश्व मांगा था ।

वाल्मीकि के प्रति स्थान स्थान पर भक्ति प्रदर्शित की है किन्तु उनका निम्न कथन अत्यंत उपयुक्त है—

मुनिर वाक्य श्रुतिर वेह ना करिह हला ।
इहाते अमत आछ कत रसकला ॥
पोथार भितर कवित्व छिला बेहो नात्रि बुझे ।
कृत्तिकासेर कवित्व सब्बसोके पूजे ॥

(मुनि के वाक्य सुनन में किंगी को भी अवहलना नहा करनी चाहिए । इनमें कितना ही समय अमत है । (वाल्मीकि के) पोथ का कवित्व कोई समझ न पाता था कृत्तिकाग के कवित्व का गभी ने सम्मानित किया ।)

सच ही सत्यत से अपरिचित राम वाल्मीकि के पोथ का रस नहीं ले पाते हांग भाषा में पूत रामकथा प्रस्तुत कर कृत्तिकाग ने ही नहीं मय रामायणकारों ने भी जनता का कल्याण किया है और इसके लिए वे सम्मानित भी हुए ह ।

बलरामदास (उडिया रामायणकार)

उडिया में पचसखा बण्णव भवन हुए हैं इनमें बलरामदास और जगन्नाथदास को क्रमश बलराम एव जगन्नाथ का अवतार माना गया । फलत इनकी महिमा अनिर्गमित हा कर चमत्कारपूण विम्बदन्तिया का रूप धारण करती गयी आर सत्य जीवन परिचय आच्छन्न हा गया ।

अन्त साम्य के आघार पर इतना ही पात हाता है कि वे महामन्त्री सोमनाथ

महापात्र के पुत्र थे इनकी माता का नाम मनमाया था। उनका जन्म गूढ़-यानि म हुआ था।^१ वे अपने का जन्म मूल एवं अल्पउयस्व कह कर ३२ वर्ष की आयु में रामायण रचने की बात कहते हैं। उन्होंने दारा-सुत आदि का गुण भाग किया था।

जन्म मूलत मोर अल्प वयस । प्रथं कला काले मोते वरप वतिग ॥
दारा सुत धन जन सुत भोग गिरी । अल्पे आपणे देइ आद्यन्ति ता हरि ॥^२

वे सदैव राम-नाम का स्मरण करते थे। गौतमिगिनाथ जगन्नाथ में उनकी अत्यन्त भक्ति थी। उन्हीं की प्रेरणा से यह रामायण लिखी गयी, जिसका नाम उन्होंने जगमोहन रामायण रखा। इसी का दाण्ड रामायण भी कहते हैं।^३

उह तुलसीदास के समान ही दुष्टा की निन्दा की चिन्ता थी। उन्होंने प्रत्येक कारण विशेषत सुन्दर तथा एक उत्तर में अनेक विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य कहा है किन्तु बार-बार जगन्नाथ के प्रति भक्ति भाव के अनिग्नित जोरनी के विषय में कुछ अधिक जान नहीं होता।

जीवन-काल—वलरामदास के जन्म और मृत्यु तथा रामायण रचनाकाल के विषय की बात भी निश्चिन्ता नहीं है। उनकी रामायण पर चर्चा का प्रभाव नहीं है और चतुस्रदेव १२०६ ई० में पुरी आये थे। इसमें स्पष्ट है कि इसके पूर्व ही वलरामदास रामायण लिख चुके थे। अमरावती राजा प्रतापमन्दार ने १५१० ई० (१७ अक मकर-मास, शुक्ल-पक्ष) में वलरामदास से बंगाल मार्ग गुप्त गीता सुनी थी और उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया था। इसमें भी स्पष्ट है कि इस समय तक रामायण लिख कर वे प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। चतुस्रदेव (१४८६ ई०) अवश्य ही अवस्था में इनमें छोट रहें होंगे, क्योंकि उन्होंने जगन्नाथदास का वलरामदास द्वारा दीक्षा दिलायी। उक्त समय जगन्नाथदास की आयु १८ वर्ष की थी। उन्हीं कुछ आचार्य के शूत्र में उलिया विद्वान् उनके जन्म मनु का अनुमान लगाते हैं। मूयनारायण दास १८७३ या १४८२ ई० मृत्यु-वय १४७० ई० के आसपास, ५० विनायकराव मित्र १४८० ई० के कुछ पूरे एक डा० मायाधर मानसिंह १४७२ ई० में इनका जन्म होना मानते हैं। १४४० ई० में प्रताप-रत्न के अवसान के पश्चात् इनका जीवित रहना सिद्ध माना गया है।

अनुमानत य १४७० एव ८० सन के मध्य कभी उत्पन्न हुए तथा १४४० के

- १ महापात्र मन्त्रि सामनाथ महापात्र । वलरामदास य तात्पर मुटि पुत्र ॥
मनमाया भ्रष्टे मार जननीर नाम । जाम हाइण मु पावनि महानान ॥ ७ २१४ ।
मुटि हीन पापी य विशेष गूढ़ यानि । सुत गने कथ न कग्नि एहा गुणि ॥
६ ३४ ।
- २ उडिया रामायण—७ २१५ ।
- ३ दाण्ड शब्द के अर्थ के लिए दण्डि नामक अथर्ववेद का छन्द प्रयोग ।

धामपाय मत्स्यु त्वा प्राप्तः ॥ १५०० ॥ ० ॥ दा तात् यय पश्यात् तत् य रामायण
लिखतुके थ ।

इनके प्रथा की संस्था प्रतिष्ठा है । उनका उपाय एव धार इत्यादि राजपाय
श्रीर वत्सतः ॥ ॥ का प्रभाव है जाति उनका प्रथा वेदात्तसारगीता गुप्तगीता विराट
गीता श्रीर सप्तमं योग सारगीता म प्रकृता है दूगरी धार षट्षयनाय म व
जगन्नाथ की राजसभा म तनीय काटि इत्यादि व मायः ॥ गौरिक दत्तात्रेय की
उपस्थिति भी लिखान है । भवसमुद्र म रथ दाना म त्रिगुणित बलरामायण का धाराय
मय भक्ति प्रकाश है । उनके म्गुनी-स्तुति एव सम्भी पुराण नामक प्र था का अभिनय
जनता द्वारा धार भी होता है ।*

व्यक्तित्व जगन्नाथ स्वामी व परमभवन बलरामायण प्रतिभागात्वा वरि
थ । उहान धार्मिक गार्हस्थ्य का पानाजन किया था । उनका प्रथ म धनक पुराणा,
साम्प्रदायिक प्र था एव शास्त्रीय वाचा का प्रभाव दगा जाता है । ॥ का भी शष्-
करण नहीं दिवाया पडन जा बुद्ध लिगा ॥ जम कर लिगन है । कई बार धार्मिक
कथा स हट कर प्रायिक कथाका का उत्तम करन म उहान रचि लिगायी है ।

बहुमता—सम्पूर्ण रामायण म उ हाा काव स्थता पर ज्यानिय राग रागिनी
विभिन्न तीथ पत्यग व रथ धातु रत्न म्गुनी पर गौर फून देश नगर द्वीप
स्वप्न विचार गाधिणा लक्षण आदि की विस्ताररहित चर्चा की है । भीड का मना-
विचान युद्ध विद्या धाडा हाविया व स्वभाव आदि का भी वर्णन किया है ।

राम विचान का उ ह अन्वया पान था । स्त्री-मुख के उत्तजित रामालाप एव
रतिनीडा के चित्रात्मक वर्णन म ललक की रसिकता प्रकट हाती है । ललक चुन चुन
कर प्रसंग प्रस्तुत करता है एव रस म डूब कर शीलता अश्लीलता का विचार न कर
सम्भोग शृङ्गार व माधुय म निमज्जित हा जाता है ।

स्वयं पूद्र हाने पर भी ललक न ब्राह्मण-वग एव स्व संस्कृति के प्रति विद्वप
का भाव प्रकट नहीं किया है । तप पूत ब्राह्मणा व आगे उसन मस्तक नत किया है
किंतु निरक्षर एव ढागी ब्राह्मणा पर व्यथ वसन म वह चूबा नहीं है ।

पूर्वावस्थीय रामकथाकारा की पक्ति म वह अपनी विशिष्टता के साथ शोभित
है एसा कहा जा सकता है किसी किसी क्षत्र म वह इनसे बढ कर ही है ।

१ श्री आत्तबल्लभ महात्ति के अनुसार उनका रचित प्रथय है—रामायण गीता
वदात्तसार षट्षयनाय भावसमुद्र गुप्त गीता, ब्रह्माण्ड भूगोल वक्रा परिक्रमा
कमल नाचन चोतिशा श्रीर कान्त कोहली ।

२ डा० मायाधर मानसिंह—हिस्ट्री आफ आरिया लिटरचर प० ६२ ६४ ।

तुलसीदास का जीवन परिचय

अथ कविया के समान तुलसीदास जी ने भी अपने जीवनवान, जन्म स्थान एवं कुल परिवार आदि के सम्बन्ध में परिचय देने वाले सकेत वचन ही दिये हैं। तुलसीदास के समय का अथवा कुछ वर्षों के बाद का भी पर्याप्त वहि साक्ष्य नहीं मिलता। उनके ऊपर जो जीवन चरित लिखे गये, वे प्रायः विश्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के हैं तथा किम्बदन्तियाँ और जनश्रुतियाँ पर आधारित हैं। इनमें ऐसी चमत्कारपूर्ण घटनाओं का वर्णन है जिन पर सहज विश्वास नहीं किया जा सकता। इनके तथ्य भी परस्पर-विराधी हैं। ये चरित दस प्रकार हैं—(१) तुलसी चरित, (२) मूल-गोसाइ चरित, (३) घट रामायण, (४) गोसाइ चरित, (५) गौतम चरित्रा और (६) तुलसी-पकाश। मिथुनधु, रामचन्द्र शुक, पीताम्बर बडध्याल, श्यामसुन्दरदास, रामनरेण शिपाठी और डा० माताप्रसाद गुप्त ने इनमें से कुछ अथवा सभी चरितों की आलोचना कर देह प्रायः पूणत अप्रामाणिक ठहराया है।

इन चरितों में १ से ३ तक में तुलसीदास का जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। ४ और ६ इस विषय में चुप हैं। २ से ५ तक के चरित सूवरत्न की स्थिति सरयू घाघरा के समान पर बताते हैं। केवल छटा चरित सोरा नामग्री के अनुकूल है।^१

अन्त साक्ष्य पर गड़ी हुई किम्बदन्तियाँ—तुलसीदास ने अपने ग्रन्थों में कहीं कहीं अपने सम्बन्ध में जो कुछ कहा है उनमें से कुछ सकेतों का धोर पकड़ कर जनश्रुतियाँ चली हैं। या तो इनके आधार पर किम्बदन्तियाँ गड़ी गयीं, या अनुमान लगाने में। जनश्रुतियों की सीमा नहीं होती। सामान्य सा अनुमान ही विश्वास के नये-नये रूप धारण करता गया। मूलगोसाइ चरित तथा अधिकांश अन्य ग्रन्थों में भी तुलसीदास के ही जीवन सकेतों की सगति बढायी गयी है। तुलसीदास के महत्त्वपूर्ण जीवन-सकेत निम्न हैं—

- (१) बढे गुरुपद कज कृपासिधु नर रूप हरि । (वा० का०)
- (२) मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूवरत्नेत ।
समुझी नहिं तति बाल पन तव अति रहउ अचेत ॥ १-३० क
- (३) मातु पितर जग जाइ तज्यो । कविता० ७ ५७ ।
- (४) दिव्यो सुकुल जनम सरौर सुन्दर । वि० प० १३५ ।
- (५) कुछ स्वना पर हुलसी का उल्लेख ।
- (६) एक ही स्थला पर रामवाला शब्द का उल्लेख होने से उनके नाम का अनुमान ।

१ डा० रामचन्द्र भारद्वाज—गो० तुलसीदास, पृ० ३८ ।

चरित-लेखका तथा स्थान के पत्नीया 'नरहृति' और 'गुणराज' का लेखक तरह-तरह की कथाओं का प्रचार कर दिया तथा तरह-तरह अथवा नरहृति-द अथवा नरहृति की शिष्य परम्परा भी दूना निवाली गयी। सारा-नामों में ता उपरि लिखित बातों का सुचारु रूप से तारतम्य प्रस्तुत करने वाली पुस्तकों भी प्राप्त है।

सक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत करने के पूरे उनके जन्म सवत मृत्यु सवत एव जन्मस्थान पर सविस्तार विचार कर लेना आवश्यक है।

जन्म सवत

(१) सवत १५६० - राममुखावती नामा वृत्ति गा० तुलसीदास की बतायी जाती है और स्वर्गीय जगन्मोहन वर्मा न निम्न पंक्ति के आधार पर तुलसी की जन्म तिथि स० १५६० बतायी—

पवन तनय मो सन पह्यो पाँच बीस अर बीस ।

वर्माजी ने पाँच बीस अर बीस का अर्थ $५ \times २० + २० = १२०$ लगाया और गोस्वामी जी के मृत्यु सवत १६८० में इस घटा कर उपयुक्त सवत प्राप्त किया। डा० माताप्रसाद पहले तो राममुखावती का शली विचारधारा तथा छन्द-योजना आदि के आधार पर तुलसीद्वन नहीं मानते फिर उनका यह भी कहना है कि उपयुक्त पदांश का अर्थ $५ + २० + २० = ४५$ भी हो सकता है।^१

(२) सवत १५५४—(१) मानस मयक के रचयिता और (२) मूल गोसाइ चरित के लेखक बाबा बेणीमाधवदास ने जन्म सवत १५५४ माना है।

४ ५ ५ १
मन ऊपर सर जानिये सर पर दीहें एक ।

तुलसी प्रकटे रामवत राम जन्म की टक ॥^२

पद्म सो चउवन विदे कालिंदी क तीर ।

सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी धरेउ शरीर ॥

श्री बदन पाठक ने भी इस तिथि को स्वीकार किया है और श्री रामवहोरी गुप्त भी इसे स्वीकार करते प्रतीत होते हैं।^३ डा० माताप्रसाद गुप्त ने मूलगोसाइ चरित की तिथि सवत १५५४ श्रावण शुक्ल सप्तमी की गणना की और यह तिथि गृह्य नहीं ठहरी। यदि सवत १५५४ सत्य मान भी लिया जाए तो डा० गुप्त आयु की दीघता के आधार पर इसका सण्डन करते हैं क्योंकि तब गो० तुलसीदास की आयु १२६ वर्ष की हो जाती है। किसी किसी मनुष्य की आयु दीघ होती है किन्तु

१ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास पृ० १३८ ।

२ श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका वाक्य पृ० ८४, त० स० ।

३ श्री राम बहारी गुप्त—तुलसीदास, पृ० ७ ।

यहां कठिनाई यह है कि मानस का रचनाकाल सन्त १६३१ निश्चित है और जन्म-संवत् १५५४ ठीक मान लने पर मानस के प्रणयन के समय गोस्वामी जी की आयु ७७ वर्ष की सिद्ध होती है।^१ डा० भगीरथ मिश्र गुप्त जी के इस तथ्य का स्वीकार नहीं करते, वे संवत् १५५४ वा ही समर्थन करते हैं।^२

(३) संवत् १६००—विल्सन (ए स्केच आफ दि रिलीजस भक्टम ऑफ दि हिंदूज) और उनके आधार पर तानी (इस्तरार द ला लितररत्यार इदुइ ए इदुस्तानी, ३ २३६) न मानस का रचना-काल ३१ वर्ष की अवस्था में मान कर जन्म १६३१ ३१ = १६०० विक्रमी में माना है। गोमय चंद्रिका तथा अथ साध्या के आधार पर श्री रमड आलचिन भी यहां संवत् स्वीकार करते हैं। ऐसी अपरिपक्वावस्था में डा० गुप्त इसकी रचना संभव नहीं मानते।^३ डा० रामदत्त भारद्वाज इस इसलिए स्वीकार नहीं करते कि सारा-सामग्री के अनुसार गोस्वामी जी १६०४ वि० में सारा छोड़ कर चले गए थे, जबकि उनकी पत्नी २७ वर्ष की थी।^४

(४) संवत् १५८३—गिर्वासिंह सेंगर (सरोज पृ० ४२७) न लिखा है—यह महाराज म० १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए। सेंगरजी न गोसाइ चरित का आधार लिया है किन्तु उसमें नाम संवत् १५५४ दिया है। ऐसा क्या हुआ? इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता। इस संवत् में एक विशेषता यह है कि दीप-फाल वाली समस्या इसमें नहीं है। इस कारण गुप्तजी न लिखा है—फिर भी यह तथ्य किसी प्रकार असंभव नहीं कही जा सकती।^५ स्व० श्री रामनरेश त्रिपाठी न रामा कमलकुवरी तबू (रियासत सरोला, जिला हमीरपुर) के पद्यात्मक तुलसीदास जीवा चरित का उल्लेख किया है। इसमें भी तुलसी का जन्म १५८३ वि० माना है। साथ ही और भी महत्वपूर्ण बात का उल्लेख है। (१) तुलसीदास सनाढ्य ब्राह्मण थे (२) उनका जन्म राजापुर में हुआ और उन्हें गंगा पार कर ममुराजाना पटा (किन्तु राजापुर में यमुना है) (३) नन्ददास और तुलसीदास गुरु-भाई थे। त्रिपाठीजी न स० १९५२ को छपी हुई इसकी प्रति देखी थी।

(५) संवत् १५८८—प्रियसन न लिखा है—सबसे अधिक विश्वस्त विवरणों से यह बात प्रकट होता है कि कवि का जन्म स० १५८८ में हुआ था (द्विपिन एटीकरी १८९३ ई०, प० २६४) किन्तु विश्वस्त विवरण का उद्घान कोई परिचय

१ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास प० १३६।

२ तुलसी (संपादक उदयभानुसिंह) डा० मिश्र का लग—तुलसी-जीवनी और युग, प० २४।

३ वही, प० १३६।

४ स्व० रामदत्त भारद्वाज—गोस्वामी तुलसीदास पृ० १७१।

५ डा० मानाप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, प० १४०।

नहीं दिया। रामगुलाम द्विवेदी भी जो अपने को तुलसीदास की शिष्य परम्परा में कहते थे, यही जन्म तिथि मानते थे। स्व० रामनरेश त्रिपाठी ने भी इसे स्वीकार किया है।^१

हायरस वाले तुलसी साहब ने घटरामायण (४१५) में लिखा है कि जब उन्होंने पूव-जन्म में मानस की रचना की, उनका जन्म स० १५८६ भाद्रपद सुदी ११, मंगलवार का हुआ था। गणना से इन तिथि का शुद्ध मान कर डा० गुप्त ने लिखा— यह अधिकांश में सम्भवतः किसी प्राचीन स्वतंत्र और निरपेक्ष परम्परा के साक्ष्य के आधार पर लिखा गया है फिर उस तिथि को मानने में कोई असम्भावना भी नहीं दिखायी पड़ती, इसलिए हम तिथि को हम कवि की जन्मतिथि के रूप में ग्रहण करते हैं।^२ चन्द्रवली पाण्डे लिखते हैं— तो भी उपलब्ध सामग्री में भूढ़ मारने से जो कुछ सूझ पड़ा उसका निष्कर्ष यह निकला कि तुलसी का आविर्भाव हुमायूँ के शासन में स० १५८६ में अयोध्या में हुआ।^३ डा० रामदत्त भारद्वाज इस तिथि पर विश्वास नहीं करते। उनका कहना है कि यदि प्रियसदन साहब की घटरामायण का पान होता तो घटरामायण में ही कुछ पूनतिथि का उल्लेख करते। प्रियसदन साहब ने किसी जनश्रुति का आश्रय लिया होगा। भारद्वाजजी घट रामायण की तिथियाँ बान धरा को प्रियसदन से परना ल कर लिखा हुआ मानते हैं प्रतीत होते हैं।^४ घट रामायण में सात तिथियाँ का उल्लेख है जिनमें तीन की गणना की गयी है इनमें दो अशुद्ध और एक शुद्ध है जो कि जन्मतिथि से सम्बन्धित है। इसकी सभी तिथियाँ के साथ मंगलवार जोड़ा गया है।

(६) स० १५६८ वि०—इस अवतार का उल्लेख अविनाशराय के 'तुलसी प्रकाश' में इस प्रकार है—

राम राम मही सब सित सावन मास।

रवि तिथि भगु दिन दुतिय पद नयत बिसाया वास ॥२५॥

इनके अनुसार जन्म श्रावण शुक्ल सप्तमी शुक्लवार शक स० १४३३ (तनुगार १ अगस्त १५११ २०) में हुआ। श्री रामान्त भारद्वाज गणना से इस शुद्ध मानते हैं। इनमें उनकी धानु ११२ वष का हानी है और मानस का रचनाकाल ६३ वष टहरता है। मारा-गामरी के अनुसार स० १५८६ वि० में रत्नावली का विवाह गाम्वामी जी से हुआ था। इसलिए डा० भारद्वाज १५६८ वि० का अधिक विश्वसनीय समझते हैं।^५

१ श्री रामायण त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका काव्य पृ० ८४।

२ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास पृ० १४०।

३ श्री चन्द्रवली पाण्डे—तुलसीदास का जीवन भूमि पृ० १७५।

४ डा० रामान्त भारद्वाज—गो० तुलसीदास, पृ० १७०।

५ व। पृ० २४७।

स्वमत—गोस्वामी जी के जन्म के सम्बन्ध में जिनके भी सबत दिए गये हैं वे या तो जन श्रुतियाँ पर आधारित हैं अथवा एम ग्रंथों से ग्रहीत हैं जो कि अप्रामाणिक हैं। यह हो सकता है कि इनमें कोई एक सही हो। अधिकांश विद्वान सबत १५८१ का ठीक मानते हैं। गोस्वामी जी का मानस रचना का समय सम्रत १६३१ दिया है, उनका मृत्यु सबत १६८० स्वीकार किया जा चुका है। इन दो तिथियों के आधार पर मानस रचना के समय उनकी अवस्था (४२ वर्ष) और पृथक् आयु (६१ वर्ष) का औचित्य स० १५८६ के अनुसार अधिक सम्भाव्य प्रतीत होता है। किंतु कठिनाई यह है कि मृत्यु सबत १६८० के पक्ष में ही पुष्ट प्रमाण नहीं है। स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है— परन्तु तर्क कोई एक करना चाहते तो कर सकता है कि असी (अक) और अमी (नमी) का तुलनात्मक दाय कर किसी न उक्त दोहों में १६८० संबत डाल दिया है। सम्भव है तुलसी यथ दो वर्ष आगे पीछे योग्यतरित हुए हों। इसका उत्तर ही क्या हो सकता है? मेरी राय में उक्त सबत पचावीं राय के सिवा और कोई बन नहीं सकता। 'पुष्ट प्रमाणों के अभाव में अमी तो मुझे पचावीं राय ही ठीक जान पड़ती है।

मृत्यु-सबत

गा० तुलसीदास की मृत्युतिथि के सम्बन्ध में दो दाह प्रचलित हैं—

सबत सोरह सौ असी असी गग के सीर ।

सावन सुक्का मत्तमी, तुलसी तजेउ सरौर ॥

सबत सोलह स असी असी गग के सीर ।

सावन स्यामा तीज शनि तुलसी तजे गरीर ॥

मू० गा० चरित—११६

दाना ही लोहा में सबत १६८० स्वीकार किया गया है मतभेद है तिथि और पक्ष का। प्रथम दोहों जन्मश्रुति के अनुसार है और उमर धारण शुक्ल सप्तमी का उल्लेख है। इन तिथि के सम्बन्ध में यह आपत्ति की जाती है कि धाघ या भदर की अनन्त कहावता में 'सावन सुक्का सप्तमी' का उल्लेख हुआ करता है। उसी का प्रभाव इस दाह पर पड़ गया है।^१

भूल गोसाइ-चरित में धारण कृष्ण तृतीया शनि तिथि दी हुई है। इस तिथि की पुष्टि एक अन्य प्रमाण से भी होती है। श्री विजयानन्द त्रिपाठी का कथन है कि गोस्वामी जी का घटाडे में और टाडरमन का वंश चौ० लखनहाटुर के यहाँ भी आर्य

१ श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका वाक्य तू० म०, प० १११ ।

२ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास (तू० स०) पृ० १८६ ।

श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका वाक्य (तू० म०), १

नहीं दिया। रामगुलाम द्विवेदी भी जो अपने का तुलसीदास की शिष्य-परम्परा में कहते थे, यही जन्म तिथि मानते थे। स्व० रामनरेश त्रिपाठी ने भी इस स्वीकार किया है।^१

हाथरस वाले तुलसी साहब ने घटरामायण (४१५) में लिखा है कि जब उन्होंने पूव जन्म में मानस की रचना की उनका जन्म स० १५८६ भाद्र शुक्ल ११, मंगलवार को हुआ था। गणना से इस तिथि का शुद्ध मान कर डा० गुप्त ने लिखा— यह अधिकांश में सम्भवतः किसी प्राचीन स्वतंत्र और निरपेक्ष परम्परा के साक्ष्य के आधार पर लिखा गया है फिर इस तिथि का मानने में कोई असम्भावना भी नहीं दिखायी पड़ती इसलिए इस तिथि को हम कवि की जन्मतिथि के रूप में ग्रहण करते हैं।^२ बद्रबली पाण्डे लिखते हैं— तो भी उपलब्ध सामग्री में भूढ़ भार्गवे से ता बुद्ध सूत्र पडा उसका निष्कर्ष यह निकला कि तुलसीदास का आविर्भाव हुमायूँ के शासन में स० १५८६ में अयोध्या में हुआ।^३ डा० रामदत्त भारद्वाज इस तिथि पर विश्वास नहीं करते। उनका कहना है कि यदि प्रियसन साहब का घटरामायण का पान होता तो घटरामायण में ही कुछ पूर्णतिथि का उल्लेख करते। प्रियसन साहब ने किसी जनश्रुति का आश्रय लिया होगा। भारद्वाजजी घट रामायण की तिथियाँ बाल अश की प्रियसन से परणाले कर लिखा हुआ मानते हैं प्रतीत होते हैं।^४ घट रामायण में सात तिथियाँ का उल्लेख है जिनमें तीन की गणना की गयी है इन्हीं दो अशुद्ध और एक शुद्ध है जोकि जन्मतिथि से सम्बन्धित है। इसकी सभी तिथियों के साथ मंगलवार जोड़ा गया है।

(६) स० १५६८ वि०—इस सवत का उल्लेख अविनाशराय के 'तुलसी प्रकाश' में इस प्रकार है—

राम राम मही सक सित सावन मास।

रवि तिथि भगु दिन दुसिय पद नपत विसाया वास ॥२५॥

इनके अनुसार जन्म श्रावण शुक्ल सप्तमी शुक्रवार शक स० १४३३ (तदनुसार १ अगस्त १५११ ई०) में हुआ। श्री रामदत्त भारद्वाज गणना से इस शुद्ध मानते हैं। इससे उनकी आयु ११२ वर्ष की होती है और मानस का रचनाकाल ६३ वर्ष ठहरता है। मारो-सामग्री के अनुसार स० १५८६ वि० में रत्नावली का विवाह गोस्वामी जी से हुआ था। इसलिए डा० भारद्वाज १५६८ वि० को अविनाश विषयसनीय समझते हैं।^५

१ श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका काव्य पृ० ८४।

२ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास पृ० १४०।

३ श्री बद्रबली पाण्डेय—तुलसी की जीवन भूमि पृ० १७५।

४ डा० रामदत्त भारद्वाज—गो० तुलसीदास पृ० १७०।

५ वही पृ० २४७।

स्वमत—गोस्वामी जी के जन्म के सम्बन्ध में जिनने भी सबत दिया है व या ना जन श्रुतिया पर आधाग्नि हैं अथवा ऐसे ग्रन्थों से ग्रहीत हैं जो नि अप्रामाणिक हैं। यह हा सक्ता है कि इनमें कोई एक सही हो। अधिकांश विद्वान् सवत १५८६ की ठीक मानते हैं। गोस्वामी जी न मानस की रचना का समय सम्बत् १६३१ दिया है उनका मृत्यु सवत १६८० स्वीकार किया जा चुका है। इन दो तिथियों के आधार पर मानस रचना के समय उनकी अवस्था (४२ वय) और पृष्ण आयु (६१ वय) का औचित्य स० १५८६ के अनुमार अधिक सम्भाव्य प्रतीत होता है। किन्तु कठिनाई यह है कि मृत्यु सवत १६८० के पक्ष में ही पुष्ट प्रमाण नहीं है। स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी न लिखा है— पर इसी तरह कोई तक करना चाह, तो कर सकता है कि असी (अक) आर अमी (नदी) का तुक मिलता देव्य कर किसी न उक्त दोहे में १६८० संवत डाल दिया है। सम्भव है तुलसी वय दो वय आगे पीछे भोजन-तरित हुए हा। इसका उत्तर ही क्या हा सकता है? मनी राय में उक्त सवत पचा की गय के सिवा और कोई वन नहीं रमता।^१ 'पुष्ट प्रमाणा के अभाव में अभी तो मुझे पचो की राय ही ठीक जान पड़ती है।

मृत्यु सवत्

गा० तुलसीदास की मृत्युतिथि के सम्बन्ध में दो दोहे प्रचलित हैं—

सवत सोरह सौ असी असी गय के तीर ।
सावन सुक्ला मत्तमी तुलसी तजेव सरौर ॥
सवत सोलह स असी असी गय के तीर ।
सावन स्यामा तीज शनि तुलसी तजे शरीर ॥

मू० गो० चरित—११६

दाना ही दाहा में सवत् १६८० स्वीकार किया गया है मतभेद है तिथि और पक्ष का। प्रथम दोहा जनश्रुति के अनुसार है और उसमें श्रावण शुक्ल सप्तमी का उल्लेख है। इस तिथि के सम्बन्ध में यह आपत्ति की जाती है कि श्रावण या भद्र की अनक कहावता में 'सावन सुक्ला सप्तमी का उल्लेख हुआ करता है। उसी का प्रभाव इस दाहा पर पड़ गया है।^२

मूल गोसाइ-चरित में श्रावण कृष्ण तृतीया शनि तिथि दी हुई है। इस तिथि की पुष्टि एक अथ प्रमाण से भी हानी है। श्री मित्रयानन्द त्रिपाठी का कथन है कि गोस्वामी जी के अग्रपौत्रे में और टोडरमल के वंशज चौ० नानयहादुर के महा भी श्रावण

- १ श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका काव्य त० म०, पृ० १११।
- २ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास (तु० स०) पृ० १८६।
- श्री रामनरेश त्रिपाठी—तुलसीदास और उनका काव्य (त० म०) १११।

गुवना तीज को तुलसीदास की निधन तिथि मनायी जाती है।^१ इस तिथि को सोघा वोगा जाता है और वर्षा मनायी जाती है।

डा० माताप्रसाद गुप्त न इस तिथि की गणना की और इस अगुद्ध पाया। 'सावन स्यामा तीज' गति म कोई कोई गति के स्थान पर को शब्द बताता है। श्री रामदास गौड़ इस दिन गुरुवार होना मानते हैं।^२ डा० मानाप्रसाद गुप्त के कथा स प्रतीत होता है कि व द्वितीय तिथि का तो ठीक मानने हैं किन्तु वार को अगुद्ध जिसके कारण सम्पूर्ण तिथि की गणना अगुद्ध हुई। उनका विश्वास है कि कवि की मृत्यु तिथि स० १६८० थावण वृष्ण तृतीया थी।^३

डा० रामचन्द्र भारद्वाज जनश्रुति का अधिक ठीक मानते हैं एक और जन श्रुति की गथा और दूसरी ओर टार कुटुम्ब की परम्परा। व्यक्ति तो विस्मिति के कारण धोखा या सकता है पर जनश्रुति तो बहुत स लोगो की जिह्वा पर विराजती रहती है। अतएव मरा हुकान थावण गुवल सप्तमी की ओर है।^४

स्वमत—मर विचार स जनश्रुति ही भमित है। सावन स्यामा तीज' को तुलसीदास की वर्षा मनायी ही जाती रही साथ ही जनश्रुति म भी इसका प्रचार रहा होगा। कानातर म एगके भमित हान के दा कारण हा सकते हैं—(१) घाघ या भन्वरी के सावन गुवना सप्तमी वान अनज दाहा के प्रचार क कारण अथवा सम्भवत गुनमी के जम क सम्बन्ध म भी सावन गुवना सप्तमी की एक धारणा के कारण।^५ गोस्वामी जी की मृत्यु थावण वृष्ण तृतीया सवत १६८० की स्वीकार की जा सकती है।

जम-स्थान

तुलसीदास क जम-स्थान के सम्बन्ध म वग्न अधिव विचार रहा है। उनके जमस्थान का निम्न स्थाना पर माना जाता रण है—

- | | |
|---------------------------------------|--------------|
| १ झाड़ीपुर | २ इम्तिनापुर |
| ३ तारी | ४ कानी |
| ५ रात्रापुर (बोग) तथा ७ अथ रात्रापुर। | |

१ डा० माताप्रसाद गुप्त तुलसीदास (त० म०) प० १८६।
 २ डा० रामचन्द्र भारद्वाज—तुलसीदास और उनका काव्य (त० म०) प० १११।
 ३ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास (त० म०) १८६।
 ४ डा० रामचन्द्र भारद्वाज—तुलसीदास काव्य प० १७।
 ५ पण्डित माधवदास सिंह काव्यिका क भाग।
 मृत्यु तिथि स० १६८० मनाया गया। धरत गरीब ॥ — (मृत माता-चरित)

६ अयोध्या—(अ) रामपुर अर्थात् अयाध्या, (आ) वाराणसी जिले का राजापुर, विहार का राजापुर ।

७ सोरा—(अ) योगमाग मुहल्ला (आ) श्यामपुर (पहन का रामपुर) ग्राम ।

प्रथम चार महत्त्वहीन हैं फिर भी उनका सम्मिश्र परिचय दिया जाएगा । शेष तीन ही विचारणीय हैं । इनमें अन्तिम दो का मुख्य आधार 'सूकरमेत' एवं वार्ता में वर्णित रामपुर हैं । अयाध्या-पक्ष वाले सूकरमेत का सरसू घाघा सगम पर मानकर वही-वही (अर्थात् अयाध्या में) तुलसी का वचन और जन्म स्वीकार करते हैं । एक और सज्जन ने इसी सगम के पास एक नया राजापुर खोज निकाला है जिसे ही वह तुलसी का जन्मस्थान मानते हैं ।

सोरा-पक्ष के लोग सूकरमेत की स्थिति मारा में मान कर तुलसी को योगमाग मुहल्ला का मानते रहें । वात्ता-साहित्य में तुलसीदास और नन्ददास के सम्बन्ध में कहा गया है—'मा व रामपुर के हत ।' अयाध्या पक्ष वाले इस रामपुर को अयाध्या कहते हैं और सोरा पक्ष वाला न अपना पक्ष मजबूत कर सोरों के पास रामपुर खोज कर कहा कि तुलसीदास पदा तो सोरा के पास रामपुर में हुए थे किन्तु उनका वचन योगमाग मुहल्ला में बीता । सोरो के पास का ग्राम श्यामपुर है रामपुर नहीं इसके लिए सोरो वाला का कथन है कि इस ग्राम का नाम पहले रामपुर था नन्ददास ने कृष्णभक्ति के आवेग में बदल कर श्यामपुर कर दिया था ।

(१) हाजीपुर—विल्सन साहब ने जन्मस्थान चित्रकूट का निकट हाजीपुर बताया था । श्री चन्द्रबली पाण्डे ने श्री रामवहोरी गुप्त का समर्थन कर कहा है कि विल्सन साहब को जो मामग्री मिली वह फारसी में थी और सम्भवतः राजापुर का हाजीपुर पड़ गया । उद्दान सिद्ध बालेज का पृथ्वीनामाध्यक्ष मथुरानाथ जी तथा काशी नरेश के मुशी मीनलमिह जी का विल्सन साहब का मामग्री-दाता बताया है । मुशी की फारसी के पण्डित थे इनकी फारसी समझ में विनया साहब को भूल हुई होगी ।

(२) हस्तिनापुर—भक्ति मित्र का अनुमान हस्तिनापुर की गई स्थिति या स्वीकार की गयी किन्तु यह मन चतन न सका ।

(३) तारी—ग्रियसन पहले दोआब स्थित तारी की ओर मुझे प्रतीत हुए । राजापुर और मारा वाला न तारी ग्राम की दो स्थितियाँ प्रस्तुत कर दी । जाला मीनाराम ने राजापुर में ८१० कास यमुना के किनारे पर बसे तारी ग्राम का तारी बताया । यमुना का भी इसके उत्तर में वही और काशी दक्षिण में, इसलिये उनके मतानुसार यह दोआब में है । मोगा के निकट तारी ग्राम का ताँती बताया कर डा० रामदत्त नारदाज ने श्री महावीरप्रसाद त्रिपाठी का समर्थन किया है कि मारा के निकट दोआब

म स्थित तारी (तारी) ग्राम म तुलसी की गर्भस्थिति हुई थी। उनकी माता हुतगी इसी ग्राम की थी। तुलसी क माता पिता द्वारा जन्म म प्राप्त तारी म रहे म ममती पुष्टि के लिए भारद्वाज जी प्रीव्र क-उभ रीतारामशरण भगवातप्रसाद, मन्वृत भवनमाला और तुलसीप्रवाण का प्रमाण न हैं।^१

तारी तुलसीदास का जन्मस्थान तो है ही न। हुतगी का था या तारी यह सोरो सामग्री की मत्पता प्रमत्पता पर निर्भर करता है।

(४) काशी—तुलसी के निम्न दो उद्धरण त साधारण पर श्री मन्वृतात सास्यो काशी या ही जन्मस्था मानत हैं—

यह भरतखड समीप सुरसरि थल भसो सगति भसो । वि० प० १३५
मुक्ति जन्म महि जान जान एतनि अथ हानि कर ।
जह थस सभु भवानि सो काशी सेइय बस न ॥ वि० प० १३६

प्रथम पवित के अनुगार गगा-तट पर अर्थात् काशी म जन्म माना गया। सोरा वाला न काशी का सणन कर नहना आरम्भ किया कि सोरा गगा-तट पर है। डा० माताप्रसाद गुप्त न निम्न छन्द म सिद्ध किया कि उनका जन्म केवल काशी म ही नही अपितु बदायित गगातट-वर्ती किसी भी स्था म नही हुआ।^२ म छ द मे तो यह प्रतीत होता है कि व अथ वही उत्पन्न हुए थ और गगा के तट पर आ कर बस गये थ।

चेरो राम राय को सुजस सुनि तेरो हर ।

पाइ तर आइ रह्यो सुरसरि तोर हौं ॥ वि० ७ १६६

इस प्रकार सोरा साक्ष्य का भी खण्डन होता है इसलिए चन्द्रवली पाण्डे भी अयोध्या के पक्ष म इस तथ का प्रयोग कर लते हैं।^३

द्वितीय छन्द म मुनि जन्म महि का अर्थ लगाया गया—मोक्ष और (मेरे) जन्म की भूमि। यह तो अर्थ की खीचतान मात्र है।

काशी को सामग्री—काशी म तुलसी विषय निम्न सामग्री है—

(१) तुलसी घाट के पास पुरानी कोठरी म हनुमान जी की मूर्ति और उस नाव का काष्ठखण्ड जिससे वे गगा पार जात थ।

(२) एक जोड़ी खडाऊं।

(३) गोपाल मन्दिर के अहाते म एक नीची कोठरी जहा रह कर तुलसीदास ने 'विनय पत्रिका' के कुछ पत्र लिगे थ।

१ डा० रामदत्त भारद्वाज—गोस्वामी तुलसीदास प० १५६।

२ डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, प० १४१।

३ श्री चन्द्रवली पाण्डे प० १०६।

(४) प्रह्लाद घाट पर गमाराम ज्योतिषी का स्थान जहा तुलसी काशी में सबप्रथम ठहरा था ।

(५) गास्वामी जी का एक चित्र जिसे जहागीर ने बनवाया था । रामकृष्ण दास इसे स० १६५५ का नहीं मानते ।

(६) स० १६६६ वि० का पचावन-नामा । टोडर के एक पुत्र की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकारियां में भगडा हुआ तुलसीदास पंच बनाये गये । पंचनामा फारसी में है किन्तु सबप्रथम जो श्लोक लिखा हुआ है वह गोस्वामी जी का है ।

(७) वात्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की एक प्रति स० १६४१ की जिस में त्रिपिकार के रूप में तुलसीदास का नाम है ।

(८) मवत १६६६ की विनयपत्रिका की एक प्रति जिस पर तुलसीदास के मशोधन हैं ।

उपयुक्त सामग्री वस्तुतः तुलसीदास से कहा तब सम्बन्धित है, वह सब कल्पित है किन्तु यह तो स्पष्ट है कि काशी से उनका सम्बन्ध घनिष्ठ रहा है, फिर भी काशी का उनका जन्मस्थान नहीं माना जा सकता ।

(५) राजापुर ग्रामग्री

(१) तुलसीचरित, भूतगुमाश्चरित और घटरामायण का परिशिष्ट ।

(२) माफी की सनदें ।

(३) अयाध्याकाण्ड की हस्तलिखित प्राचीन प्रति ।

(४) मन्दिर और प्रतिमाएँ ।

(५) अयाध्याकाण्ड का तापस प्रसंग ।

(६) शामचीय विवरण ।

(७) जनश्रुतियाँ ।

१ उपयुक्त तीनों चरित्र ग्रन्थों में है । स प्रथम तुलसी का जन्मस्थान राजापुर मानते हैं किन्तु तुलसी सम्बन्धित ग्रन्थ विवरणों में पारस्परिक मतभेद है । इसलिए ये प्रामाण्य रहा हो सकते ।

२ रामवहोरी गुप्त का कहना है कि राजापुर में उपाध्याय (सरसूपागीण) वंश है इस वंश के नाम अर्धन का गोस्वामी जी के शिष्य श्री गणपति उपाध्याय का वंशज मानते हैं । इनको माफी मिली हुई है । जो कि मगधत अक्षर की दी हुई बताया जाती है । निर्वाणह एव रामगुणाम द्विपदी भी राजापुर के सम्बन्ध में हैं ।

चन्द्रशेखरी पाण्डे इस अक्षर का द्वितीय अक्षर (१८०६ ३७) मानते हैं । एक पट्टे में उल्लिखित— गाँव तुलसीदास का वे मगधत गाँव तुलसीदास नहीं मानते । इन्द्रगिरि (मृत्यु १८०६) ने रामदास लोहा का एक गना मगधत कर मगठा से टारर सी थी । पट्टा का गाँव तुलसीदास के विषय में पाण्डे जी कहते हैं— राजापुर

के उपाध्याय वंश का सम्बन्ध है इस विरिगासाद ग, महात्मा तुलसीदास ग कथावि नहीं ।^१

यदि यह पट्टे गही भी मान लिए जायें तो अधिक म अति यह माना जा सकता है कि तुलसीदास की शिष्य परम्परा माफी का भाग कर्त्ती चनी आ रही है इससे यह सिद्ध नहीं होता कि तुलसीदास का नाम राजापुर में ही हुआ ।

३ अयोध्याकाण्ड की हस्तलिखित प्राचीन प्रति — कहा जाता है कि तुलसीदास के हाथ की लिखी हुई सम्पूर्ण प्रति उपाध्याय वंश में पास थी । यह मन्त्र कर भाग विष्णु पीठा करने पर उसे अपने नदी में फेंक दिया । पुस्तक प्राप्त करने लगी किन्तु बचने अयोध्याकाण्ड बचा रह गया । चन्द्रवती पाण्डे आशय्य करने हैं कि तेज अयोध्याकाण्ड बच बचा रह गया । यह इस अपने में सम्पूर्ण पद्य काण्ड मानते हैं । डा० माताप्रसाद गुप्त इस प्राचीन मानते हुए भी तुलसी की स्वहस्तलिखित प्रति नहीं मानते—(प० १४८) ।

४ मन्दिर और प्रतिमाएँ — राजापुर में तुलसीदास जी द्वारा स्थापित मकटमोचन नाम की हनुमान की एक मूर्ति है । एक बच्चे घर की गोस्वामी जी का निवासस्थान बताया जाता है जिसमें उनकी मूर्ति स्थापित है । काल पत्थर की यह मूर्ति ५० वर्ष पूर्व यमुना के तट से प्राप्त हुई थी । रामदत्त भारद्वाज इस मूर्ति को राजा साधु की बचत हैं जिगये नाम पर गोस्वामी जी ने राजापुर का नामकरण किया ।^२ चन्द्रवती पाण्डे इस भक्तराज छीतूदास की बताते हैं ।^३

५ तापस प्रसंग

तेहि अवसर एव तापसु भ्रवा । तेज पुज लघुवयस सहावा ॥

कधि अलङ्कित गति वपु विरागी । मन श्रम बचन राम अनुरागी ॥

श्री विजयानन्द त्रिपाठी आ० रामचन्द्र गुप्त श्री रामबहोरी गुप्त आदि अनेक विद्वानों ने तापस प्रकरण के आधार पर गोस्वामी जी का तापस मान कर जिस स्थान की ओर इंगित किया है उस राजापुर समझ कर गोस्वामी जी का जन्मस्थान घोषित किया गया है ।^४

शम्भुनारायण चौर इस प्रसंग का अप्रामाणिक मानते हैं । चन्द्रवती जी तापस को तुलसीदास मानते हुए भी इस प्रसंग को राजापुर से जोड़ने के लिए सहमत नहीं हैं ।

१ श्री चन्द्रवती पाण्डे—तुलसी की जीवनभूमि प० ८८ ।

२ डा० रामदत्त भारद्वाज—गा० तुलसीदास प० १३३ ।

३ श्री चन्द्रवती पाण्डे—तुलसी की जीवनभूमि प० १११ ।

४ डा० रामदत्त भारद्वाज—गो० तुलसीदास प० १२८ ।

अप्रासंगिकता—प्रमग चल रहा था ग्राम जता था—सुनि सविपाद सकल पदिनाहीं । राती राव कीह भल नाहीं ॥ इमके पश्चात ही तापम प्रकरण आया । फिर इमके पश्चात तुम्ह त य पकिनया है—

ते पितु मातु करहु सलि कसे । जिह पठए बन बालक ऐसे ॥

इस स्पष्ट है कि तापम प्रसंग जाटा हुआ है । अत्र प्रश्न है कि यह तुलसी-नाम न ही पुन सशासन कर जोला है या यह प्रक्षेप है । मानम के गुड पाठ के शोधक प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपना काशिराज मन्वरण की भूमिका म लिखत है— राजा-पुर की प्रति म तापम प्रसंग गृहीत पद्धति क विपरीत और प्रवहमान कथा क बीच जोडा हुआ है । तुलसीदास के प्रत्यक्ष शिष्य रामू द्विवेद के प्रेमरामायण म भी इस प्रसंग का अनुवाक प्राप्त है । इसलिए इसकी प्राचीनता का दैगत सम्भावना हाती है कि स्वयं कर्ता न ही इसे जाना होगा । —उक्त प्रमग म जा तापम आया है उसे कोई अग्नि कोई उपायक भगत और कोई तुलसीदास मानता है । उसे तुलसीदास मानने की कल्पना ही अधिक मटीक जान पडती है ।^१

यदि यह तापम तुलसीदास ही हा ता यह कस कहा जा सकता है कि राजापुर से जन्मदान क सम्बन्ध के कारण उसे प्रस्तुत किया गया ।

६ नासपीय विवरण—विभिन्न गजटियर आदि सरकारी विवरण से ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी सांग क निवासी थे, उहान अक्बर के शासनकाल म राजापुर की स्थापना की । गजेटियर का विवरण बहुत कुछ जनश्रुति पर आश्रित है और जनश्रुति सही नहीं कही जा सकती । श्री अयोध्याप्रसाद पाण्डे न लिखा ह कि राजापुर का हा पुराना नाम विन्मपुर था जमा कि उन सनदा स जात होता है जो गणपति उपायाय के बशज उपाध्याय मीनाराम को स० १८१२ तथा १८१३ म मिली ।^२ यदि विन्मपुर और राजापुर एक मान लिए जाएँ ता सरकारी विवरण मत्य प्रमान नहीं होत ।

७ जनश्रुतियाँ महत्त्वपूर्ण एवं विश्वसनीय नहीं है । श्री रामनरेश त्रिपाठी एव डा० मानाप्रसाद गुप्त ने इनका खडन किया है ।^३

दा और राजापुर का वषन आगे होगा ।

(६) अयोध्या सामग्री

तुलसीनाम अपन इष्टदेव का जन्मस्थान होने के कारण बहुत दिना तक

१ डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—मानम काशिराज मन्वरण भूमिका, १६ ।

२ राजागती—भाग १ (१६४६) प० ४४ ।

३ डा० मानाप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, प० १४६ ।

अयोध्या रहे थे। यहाँ उनके दो विद्वान् हैं—तुलसीदास एवम् स० १६६१ मं लिगी हुई वालकाण्ड की एक प्रति। प० चन्द्रवती पाण्डे ने तुलसीचौरा का तुलसी की जन्मभूमि माना है। अयोध्या के पक्ष में निम्न तर्क दिये जाते हैं—

(क) तुलसीदास ने कवितावती में लिखा है— तुलसी तिहारो घर जाया है घर को—(७।१२३) जिसका अर्थ निकाला गया राम अयोध्या का है और तुलसी भी अयोध्या के। बाना की भाव प्रकाश टीका में नन्ददास और तुलसीदास का भाई मान कर नन्ददास का पूरव और रामपुर का बताया गया है। श्री चन्द्रवती पाण्डे का कथन है कि यदि टीका का यह तथ्य गलत है तो पूरव और रामपुर—राम का पुर सोरा न हो कर अयोध्या है। वैसे पाण्डे जी नन्ददास का तुलसीदास का सहोदर नहीं मानते वे गुरु भाई हो सकते हैं। ज० रामदत्त भारद्वाज भी पीछे नहीं रहे उन्होंने सोरा वाले रामपुर को ही तुलसी का जन्म स्थान मान कर सिद्ध किया कि राम भी रामपुर (अयोध्या) के हैं और तुलसी भी रामपुर (सोरो) के हैं अतः एक वे राम के घर जाये है।^१ सारा के पास श्यामपुर है रामपुर नहीं। सारा बाला ने सिद्ध किया कि नन्ददास कृष्ण भक्त थे इसलिए उन्होंने रामपुर ग्राम का नाम रत्न कर श्यामपुर कर दिया है। रामपुर का लंका खीचतान की गयी है। 'तिहारो घर जायो' उक्ति के प्रसंग में गुप्तजी ने कबीर की एक पंक्ति दे कर सिद्ध किया है कि तुलसी का यह कथन सामान्य है उसमें जन्म स्थान का संकेत नहीं है—कहि कबीर गुनगु घर का।

(ख) विभी अन्वय कवि की रचना का काल स० १८६० के पहले मान कर पाण्डे जी इस कवि की एक पंक्ति के उद्धरण से सिद्ध करते हैं कि तुलसी का जन्म कोशल देश अयोध्या में हुआ—कोशल देश उजागर की हो।

(ग) तुलसीचौरा—पाण्डे जी न साधु मत के मोहन साधु का काल १८१२ वि० माना है। इनका एक गीत प्रसिद्ध है जिसका सार है—जहाँ आज तुलसी का चौरा है वहाँ एक बट बक्ष का नीचे एक योगिराज आसन जमाय थे। तुलसी के वहाँ आने पर योगिराज ने सब कुछ देह सौंप कर अग्नि ममाधि ले ली। स० १६३१ मं तुलसीदास ने रामायण लिखी एक गीता राम हनुमानादि की मूर्तियाँ स्थापित की। रामनवमा के दिन यात्री यहाँ आते हैं। यहाँ तुलसीदास की एक पुट आकार की प्रस्तर मूर्ति है। राजा मार्गिह न वहाँ पर फज और छत्री बनवाया थी। पाण्डे जी का मत है कि यही तुलसी का जन्म स्थान है।^२

(घ) 'मार्गिह नवयो मर्मात्त का गाथा—कविता० ७ १०६ स पाण्डे जी ने सिद्ध किया है कि १५८५ वि० में राम का जन्म स्थान पर बावरी शासन हो गया

१ डा० रामदत्त भारद्वाज—गाथागी तुलसीदास प० १५३।

२ प० चन्द्रवती पाण्डे—तुलसी की जीवन भूमि प० १८३।

या और मन्दिर मस्जिद बना दिया गया था। इसी के निबट वही तुलसी के पिता माता रहते थे।

(ङ) सूकरसेत और नरहरिदास—ना० सीताराम न सूकरसेत का गाडा जिना म सरयू घाघरा के संगम पर माना है। भवानीदास के तुलसी चरित्र म लिखा है—

दुतिय घास अघ नास किय पावन सूकरसेत ।
 श्रययोजन जो अवध ते दास दरस सुख हेत ॥१॥
 जहा श्री गुरु नरसिंह सन, सुनी क्या सहि ज्ञान ।
 सो अनादि तौरय विदित, सगुन दब अस्थान ॥२॥
 घारो वपु बाराह जब, आदि पुरुष श्रीतार ॥३॥
 सबद घुग्घुरा ते नयो, घाघर सरित प्रजाह ॥४॥

—४ चरित, पृ० ६२ ८३

पाण्डे जी ने लिखा है कि महन् रामचरण की टीका (म० १८५०) एक रामायण मानस प्रचारिका (म० १८३२) म सूकरसेत की इसी स्थिति का समथन है। बाबा वणीमाधवदाम का मूल गासाऽचरित भी इसी के पक्ष म है। प० रामचन्द्र गुका बाबू श्यामसुन्दरदाम श्री रामबहागी गुवन और डा० भगवतीप्रसादमिह सूकरसेत का सरयू घाघरा के संगम पर ही मानत हैं। इस पसका अथवा पसका संगम बनाया जाता है। यहां बागह की मानवाधार प्रतिमा है पीप माम म मला लगता है। कई जिला के लाग्ना स्नानार्थी आत हैं। डा० सिंह न पसका (पगुका) शब्द के अर्थ बनाये है—वह स्थान जहा पगु रहते हैं वह स्थान जहाँ भगवान न पगु रूप धारण किया था कुत्मित पगु—शूकर। य इस उपवासिका शब्द का अपभ्रंश भी मानत हैं क्योंकि बागह भगवान के रमातल स न लाटन पर आशका की दष्टि म श्रुतिया ने उपवास किया था।^१

डा० भगवतीप्रसाद सिंह न शूकर क्षेत्र के मन्दिर स मिली हुई एक प्राचीन कुटी का वणन किया है जिसके द्वार पर बरगद और पीपल के पुरान पड लगे हैं य बाबा नरहरिदास के लगाए कह जात है। यह कुटी भी उही की है। डा० सिंह न नरहरि दाम की १०वी पीढी के बाबा राम अवधदास का भी नाम लिया है। य लाग पसका के राजाभा की वति का शिष्य-परम्परा स भाग करत आ रह हैं।

लखनऊ के शिर्वासह सरोज ने 'हिन्दुस्तान साप्ताहिक' म लख प्रकाशित कर

१ डा० भगवतीप्रसाद सिंह—मानस पीयूष, द्वि० स०, भाग १, पृ० ५०५ ७ (अध्याया)।

२ श्री शिर्वासह सरोज—हिन्दुस्तान (साप्ताहिक) १२ ८ ६२ प० ६७।

इस रोज को और आग बलाया है। व वाराहक्षत्र का ज्योध्या स ८० मील उत्तर पश्चिम घाघरा और सरयू के संगम पर पगुरा ग्राम में मानत है जिस पछवा भी कहत हैं। इहाने भी वाराह और वाराही के मंदिर। एव मेल आदि का वणन करत हुए लिखा है— हिरण्याक्ष के मलकाट में नष्ट कर उस मारने के लिए ही भगवान को यह अनंतर लता पडा। यही स लगभग दो मील पूर्व वाराबकी जिले में मला गाँव भी है। कहते हैं यही पर हिरण्याक्ष ने मलकोट बनवाया था। घाघरा और सरयू के संगम की इस बन्दार में बनले बागहा के भुण्ड-क भुण्ड अब भी लाटते रहत हुए दिगायी पडन हे। वाराबकी जिले का नाम भी इसी के आधार पर रखा गया, जो वाराह जन का अग्रभ्रश बताया जाता है। इहाने भी नरहरिदास की कुटिया और पीठियो आदि का वणन किया है। किन्तु प० चन्द्रबन्धी पाण्ड पहल ही नरहरिदास का मास्वामी जी का गुरु होना अस्वीकार कर चुके हैं। ये नरहरिदास उनकी दृष्टि में अग्रदास के अगाड के प्राणी हैं जो बहुत बाद में उत्पन्न हुए थे।^१

वाराबकी का राजापुर मकरसत के आधार पर तुलसी का जन्मस्थान रामपुर तोरा अथवा रामपुर अर्थात् माना जा रहा था। एक तीसरा दृष्टिकोण भी सामने आया जो मकरसत का सरयू घाघरा संगम पर ही मान कर तुलसी का वास्तविक जन्मस्थान एक नये राजापुर का मानना है। यह गाँव बागहा से लगभग ४५ मील दूर बना बताया गया। यहाँ भी तुलसीजन्म के वंशज निरन आय—श्री रामजन्म दुःख। इस नये राजापुर के १२ मील उत्तर तुलसीजन्म की समुरान बताया गयी। सराज जी का कहना है कि जन्म राजापुर के निवासियों ने बाँगा जिले के राजापुर का तुलसी की जन्मभूमि हान का दावा बड़ी चतुराई से काट दिया है। उन्होंने बताया कि तुलसीजन्म के घर से समुरान उतरी ही दरहानी चाहिए जहाँ नदियाँ का पार कर रात में ही पहुँच जाया जाए। गारा और राजापुर (बाँगा) दोनों के पास तुलसी की बताया गयी समुरान के बीच नदी नगी पडती। तुलसी के बाजो के पास अब भी वनाशनी गुर्गात है और व अब भी पितृवक्ष में तुलसीजन्म का पिण्डदान किया करत हैं।

साराज जी का तर्क भी जाश्रतिया पर गात्रिन है उ।।। भाषा के आधार पर जो तर्क लिये हैं वे स्पष्ट हैं। जन्मस्थान में प्रकृतिये मुख्य स्थानों का भी वणन किया गया है—वर्ष का मीनापुर, गर्गय टुलीनी का तुलसी चतुराग। वानपुर चौड़ीमी (बागवती) नामक गाँव में अब तक उनका जन्म भूमिगत माना जाता है।

सोमरा राजापुर (बिहार)

विनाय राजापुर के वंशजों में है। तीसरे राजापुर का वणन कर लाता

समीचीन हागा । ३० ८ ६३ के हिन्दुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी) में प्रकाशित समाचार का सार यहाँ प्रस्तुत है—

रघुनाथपुर जुलाई २६—पटना डिवीजन के कमिश्नर श्री श्रीधर वामुदेव मोहनी ने तुलसी जयन्ती के अवसर पर बताया कि गो० तुलसीदास का जन्म त्रिहार के शाहाबाद जिला रघुनाथपुर ग्राम के निकटस्थ राजापुर में हुआ था । वे तुलसी जयन्ती विषयक सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे । यहाँ के तुलसी चवूतरा पर भी सहस्रांश्रामीण एकत्र हुए । श्री मोहनी ने अपने दावे की पुष्टि में भाषा-तत्त्व विषयक प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा कि तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त अनेक शब्दाँ सिद्ध हाताँ हैं कि वे भोजपुरियाँ थे । उन्होंने यह भी कहा कि विद्वान् अभी तक दादा एव वाराँ वकीँ जिलाँ के राजापुर के पक्ष में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके हैं ।

एक ही राजापुर का विषय खटाई में पड़ा हुआ है इन दोनों के पीछे तो कोई पुष्ट आधार भी नहीं है । जनश्रुतियाँ पर विश्वास किया जाए तो एंगी जनश्रुतियाँ तो अनेक स्थानों के वार में हैं ।

धर नवभारत टाइम्स (१८ ७ ६८) श्री वादम्बिनी, (अगस्त ६८) में समाचार प्रकाशित हुआ था—नपान राज्य में गो० तुलसीदास का जीवन के सम्बन्ध में एक प्राचीन पाण्डुलिपि उपलब्ध हुई है । इससे उनके जन्मदि के वार में प्राचीन विवाद का समाप्त हान की सम्भावना है । पाण्डुलिपि में लिखा है कि गो० तुलसीदास के पूर्वज ग्राम वामडीहा मभीनी ग्यामन के रहने वाले थे । गाँव में मूला पडन पर वह राजापुर आ गये जहाँ उन्हें राजपुत्रोहित बनाया गया । यह राजापुर वाराँवकी वाराँ ही है । अभी तब तो इस पोथी का कुछ हुआ नहीं ।

(७) सोरो सामग्री

अभी तक प्राप्त सामग्री में सबसे अधिक उपस्थित सामग्री सोरा के पक्ष की है इसके प्रमाणों में प्रामुख्य भी है । इस सामग्री के सबसे उड़े प्रचारक डा० राम दत्त भारद्वाज हैं उन्होंने सम्पूर्ण सामग्री का उपयोग कर जो सार निकाला है उसका सार यहाँ प्रस्तुत है—गोस्वामी जी के नाना सोरा के निकट तारी ग्राम के रहने वाले थे उनकी कन्या हुलसी का विवाह आत्माराम सुकुरा के साथ हुआ था । आत्माराम भारद्वाज-गौत्रीय मुकुल मनाडय सोरा के निकट रामपुर के निवासी थे । छोटे भाई जीवाराम की पत्नी और सास में भगडा हुआ, तुलसीदास के माता पिता शिशु महित सोरा आ कर यागमाग मुहल्ल में रहने लगे । १४३३ शक श्रावण शुक्ल सप्तमी का तुलसी का जन्म हुआ था । हुलसी तुलसी की पूजा किया करती थी, इसीलिए पुत्र का नाम तुलसीगम रखा । हुलसी अचानक हैजा से मरी अथमास में ही आत्माराम का भी निधन हुआ । राम राम कहने के कारण इनका नाम रामचाला कहाया । गंगा के किनारे नसिंह जी के आश्रम में इनकी शिक्षा हुई, सायं में चचेरे भाई नन्ददास

पत्त ये । गंगा के पश्चिम में बदरिया ग्राम के वसिष्ठ गोत्रीय दीनानाथ पाठन ने १२ वष की अपनी कन्या रत्नावली का विवाह इनसे कर दिया ।^१

डा० भारद्वाज ने समग्र रामग्राम को दो विभागों में विभाजित किया है— (१) गह्य सामग्री एवं (२) बाह्य गामग्री । गह्य गामग्री में अतगत आन वाली सामग्री का सक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है—

१ गह्य सामग्री—(क) भवन साक्ष्य—(१) रामपुर ग्राम का विष्णु नन्ददास के कारण श्यामपुर का नाम से ख्यात है सोरा से डेढ़ मील पूर्व की ओर है । इसका नामकरण बलराम के नाम पर रामपुर किया गया होगा । बलदेव छठ पर यहाँ मला लगता है । (२) नसिंह मंदिर—तुलसीदास और नन्ददास के गुण का विद्याभवन है । यहाँ हनुमान जी की मूर्ति है । नगिह व वशज भी है । (३) वाराह मंदिर और घाट—यहाँ वाराह भगवान के उलक्ष्य में प्रतिष्ठापन मना लगता है अब गंगा जी यहाँ से हट गयी हैं । (४) तुलसीदास मह—मारा के यागमाय मुहल्ल में तुलसी का घर है जहाँ उनकी दादी तथा माता पिता शिगु सहित आकर बसे थे । अब यह घर मुमलसमाना का अधिकार में है । कण्ठ रोग की शांति के लिए लाग इसकी पवित्र मिट्टी ली जाती है । (५) सोता रामजी का मंदिर—यहाँ हरिहर स्वामी नामक साधु रहते थे जिन्होंने तुलसी और नन्ददास को संगीत की शिक्षा दी थी । (६) बदरिया—सारा के सामने गंगा पार बदरिया नामक छोटा ग्राम था जहाँ तुलसी की मसुरास थी । १६५७ वि० में गंगा की बाढ़ में यह गांव डूब गया था । अब उसी स्थान पर वह ग्राम विद्यमान है यद्यपि गंगाजी चार मील हट गयी है ।

(ख) वशज—नसिंह जी की पाठशाला के पास ही एक भव्य गृह में नसिंह जी की सतति निवास करती है । नन्ददास के वशज प० धारुराम गुजल और भतीज शिव नारायण गुजन भी विद्यमान हैं । सुना गया है कि इनके पास भी वशावरी है ।

डा० भारद्वाज ने जाश्रति भाषा जली गास्वामी जी का आत्म परिचय एवं पाण्डुलिपिया पर भी विचार किया है ।

२ बाह्य सामग्री—(१) नाभादास का भक्तमाल (रचनाकाल १७१५ वि० के लगभग—गुप्तजी) में केवल इतना लिखा है—कलि कुटिल जीव निस्तार हिन बाल्मीकि तुलसी भयो । (२) प्रियादास की टीका (१७६६ वि०—गुप्त जी) में रत्नावली से तुलसी के उग्र प्रेम एवं ताडना का वर्णन है । (३) सेवादास की टीका (१८६४ वि०) में सूकरसेत और बदरी समुराल का नाम आया है । (४) नाभादास ने नन्ददास को रामपुर ग्राम निवासी बताया था । प्राणेश कवि ने उन्हें तुलसी अनुज सनीदिया मुमुल बनाया । प्राणेश कवि के सत्समत की पोथी १८६५ वि० की एवं द्वितीय १७६७ वि० की है । (५) अष्टछापों-वार्ता (६) भावप्रकाश वाली वार्ता (१७५२ वि०) और

(७) भावप्रकाश की टीका (१७२६ वि०) में वर्णित कृष्णदास का सार है कि नन्ददाम रामपुर में रहते थे तथा वे तुलसीदास के छात्रे भाई थे। (८) २५२ वर्षों की वार्ता में भी तुलसीदास के छात्र भाई नन्ददाम का उल्लेख जाना बनाया गया है। इसमें तुलसीदास के माया नवाने आदि की बात है।

एटा-वदायू से कुछ पाण्डु लिपियों का भी संग्रह किया गया है इनके विवरण में तुलसीदास की जीवनी का तात्पर्य ठीक बतल जाता है। (१) रत्नावली चरित (दा प्रतिया) (२) रत्नावली के दाह (चार प्रतिया) (३) रामचरितमानस के बाल-वाण एव अरण्यवाण्ड — तुलसीदास ने अपने भतीज कृष्णदास का भेंट करन के लिए मानस की दा प्रतियां बरगयी थी, उनके बेचन एक एक वाण्ड शेष हैं। (४) सूकर धर्म महात्म्य (दा प्रतिया) (५) कृष्णदास-वशावली (६) भ्रमरगीत (१६७२ वि०) (७) वप फल—१६५७।

सरकारी विवरण—श्री गणेश्वर शास्त्री हृष्टर आदि विद्वज्जन तुलसी का सम्बन्ध मारा में स्थापित करते हैं। श्रियसन ने जनश्रुति का उत्तर विद्या है जिसमें दुव आत्माराम, हुलमी दीनबन्धु पाठक एव रत्नावली का समर्थन है।

श्री० भागद्वज के अनिर्दिष्ट १० रामारण त्रिपाठी डा० दीनदयाल गुप्त, प० हरिजन शर्मा डा० धीरेंद्र वर्मा प० गाविंदर वल्लभ भट्ट, प० कृष्णदत्त भारद्वाज, डा० गजाराम गम्तागी आदि अनेक लोग मोरा का समर्थन करते हैं। इस विषय पर पर्याप्त चर्चा हुई है। डा० मानाप्रसाद गुप्त सारा-नामग्री के आलोचक हैं। डा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र सोरा के पक्ष में प्राप्त पाण्डुलिपियां का प्रामाणिक नहीं मानते। दोनों विद्वानों का दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण है। श्री० मानाप्रसाद ने नामग्री की जाँच की है। डा० मिश्र ने मानस के शुद्ध पाठ के उद्धार का प्रयास किया है। डा० भारद्वाज मानस की भाषा बजावधी मानते हैं जबकि अत्यन्त परिश्रम के पश्चात् मिश्रजी के सम्पादित बाणेश्वर-सम्बन्ध की भाषा अवधी है। यदि मिश्रजी का पाठोद्धार गुदता की दिशा में है तो मारा पक्ष के अधिकांश तक धराशायी हो जाएँगे एव अधिकांश पाण्डुलिपियाँ (जिस कि सोरा नामग्री वाल मानस के दो वाण्ड और उनका विवरण) जानी मिद्ध होगी।

डा० मानाप्रसाद गुप्त सोरा का प्राचीन नाम सौकरव मानते हैं। सूकरवध के पक्ष में जितने भी प्रमाण हैं वे सबके सब मानस की रचना तिथि से एक शताब्दी से भी अधिक बाद के हैं। फिर भी गुप्तजी यह तो मानते हैं कि सम्भवतः तुलसीदास तीर्थ-यात्रा करने सूकरवध की ओर गये हों।

डा० मानाप्रसाद गुप्त ने मोरा-नामग्री की अनेक प्रकार से परीक्षा की है।

१ डा० मानाप्रसाद गुप्त—तुलसीदास, तृ० स०, पृ० १५७।

उनके कुछ तक यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

वधपल की रचना स० १६५७ म हुई बतायी जाती है, जिससे प्रकट है कि रामपुर श्यामपुर स० १६५७ के पूर्व हो चुका होगा किन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि सम्बत १७१५ के लगभग लिखे गये भक्तमान म नामादास ने नन्ददास को रामपुर ग्राम निवासी कहा है, श्यामपुर ग्राम निवासी नहीं। यदि १७१५ वि० तक भी रामपुर का श्यामपुर हो गया था तो उन्हें क्या पड़ी थी कि वे सत्तर वष पुराना नाम राज के सोरो उजायकी की भाँति राज निवालते और नन्ददास को उसी का निवासी बताते।^१

पाण्डुलिपियों म प्राप्त तुलसी के परिवार का विस्तृत एवं व्यवस्थित परिचय भी डा० गुप्त की शक्ति करता है। वे कुछ पाण्डुलिपियाँ की तिथियाँ पर भी शका करते हैं। उन्होंने एक स्थल पर व्यंग्य करत हुए लिखा है— फलत ऐसा लगता है कि सोरा के तुलसीदास और नन्ददास ने जो काम स्वतः नहीं किया उसके लिए उन्होंने अपने बेटे भतीजा को और इन बेटे भतीजा ने अपने जिन्या प्रजिन्या का उपदेश कर दिया था, ताकि उनके दिवगत हो जाने के बाद भी उनके जन्मस्थान जातिपाति, वंश-परम्परा का इतिहास केवल काव्य सग्रहा चरिता श्रय प्रकार की कतिपा और वधपला म ही नहीं पुष्पिकाश्रम म भी सुरक्षित रहे।^२

भाषा के आधार पर मैं सोरा सामग्री पर शका प्रकट कर चुका हूँ। मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि मारो सामग्री की सागता एवं व्यवस्था ही उस दौर भी अधिक सन्धि करता है। कई पाण्डुलिपियाँ का सबसे भी सदह उत्पन्न करता है। दो स्थान पर डा० भारद्वाज की दुबलता भी प्रकट होती है। अयोध्या म वातवाण्ट की एक पाषी तुलसीदास द्वारा शाधी हुई बनायी जानी है। विद्वानों को तुलसीदास द्वारा मशाधित होने म सदह है किन्तु डा० भारद्वाज लिखते हैं— धारणा बना लेने के पूर्व यह विचार करना चाहना होगा कि महापुराणों के पास प्रायः समयाभाव रहता है और वे अपने अन्वयानुसार का भी काय मौप दिया करते हैं।^३ माना इस तरह की घाट म वे साग-सामग्री के सा कारण के सन्दर्भ का दूर कर लेना चाहते हैं। इस प्रकार तत्कालीन के राम मन्त्री माते ने मन्त्र किया।^४ परन्तु का आगम, हूँ मुकुन्द मुन्त्र और धन भन्ता श्रुति का धय व जमग धारमागम हूँ मी मुकुन्द मनाइय लख मुकुन्द मन्त्र है।^५ यह वधपल मुकुन्द मन्त्र म व तुलसी का मन्त्रित शायी

१ डा० माताप्रसाद मन्त्र—तुलसीदास म० स० प० १२६।

२ व० प० १२४।

३ डा० रामचन्द्र भारद्वाज—डा० तुलसीदास प० ३२२।

४ विनयानुसंधा प० १५।

५ डा० रामचन्द्र भारद्वाज—डा० तुलसीदास प० ३०८।

मोजते हैं। यह नव व्यय की खीचतान है।

मोरा सामग्री विष्वसनीय नहीं है, किन्तु नवधा उपेक्षणीय भी नहीं है। सोरों-मामग्री पर डा० भारद्वाज ने जितना परिश्रम किया है, खण्डन करने वाला ने इस सामग्री के सत्यासत्य की खाज में जतना परिश्रम नहीं किया है। श्री रामनरेश त्रिपाठी ने भी सारा-पक्ष में भाषा सम्बन्धी जो तक दिये हैं उनमें अधिकांश विचारणीय हैं। तुलसीदास ने ब्रजभाषा में जो काव्यग्रथ लिखे हैं उनमें मुद्गा-नरेदार कथित भाषा का मुच्चार प्रयोग है। यदि उनका जन्म पूर्व की ओर हुआ और उनका अधिकांश जीवन कात् पूर्व की ओर ही बीता, तो ब्रजभाषा पर इतना अधिकांश वे कसे कर सकते थे। यह प्रश्न भी विचारणीय है।

मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी सामग्री को सामाजिक नहीं मान पा रहा हूँ। कई स्थानों पर नृसिंह-सम्बन्धित वासस्थल हनुमान की मूर्ति तुलसी अथवा नृसिंह के वंशज विद्यमान हैं। लगता है जनश्रुतियाँ भ्रमित हुई हैं तथा कम-से-कम एक स्थान को छोड़कर सभी स्थानों की सामग्री जान या अज्ञान में एक बड़े झूठ पर आधारित है। श्री भूदय शर्मा ने लिखा है कि तुलसी का वंश गुरुत्वात् वंश कथा सिधु नर रूप हरि वाना सोरठा जावानिसहिता के इस श्लोक पर आधारित है—

बड़े गुरुपदाब्ज यो नररूप स्वयं हरि ।
यद वाक्यसूर्योदयतस्तमो नश्यत साम्प्रतम् ॥

यदि यह सत्य है तो मोरा सामग्री के नृसिंह मन्दिर एवं उनके वंशजों तथा ग्राम उपकरणों की क्या स्थिति होगी !

वेद का विषय है कि हमारी जनता अपने महापुरुषों के स्यात आदि का स्मरण नहीं रख पाती। उनके ग्रामवासी अपने तुलसी को एकदम भूल तो नहीं गये होंगे। सम्भावना इसी बात का है कि कई प्रचारित-स्थानों में कोई एक स्थान उनका जन्मस्थल ही अवश्य ही उसके सम्बन्ध में कालक्रमानुसार बढ़ अतीव-तत्त्व भी जुड़ गया है। ऐसा भी संभव है कि उनका जन्म किसी महत्त्वहीन ग्राम में हुआ हो फिर वे उठा-जड़ा बसत बस वहाँ के लोग उन्हें कनी का मानते गये और कालांतर में उनके नाम पर कुछ स्थान एवं पुराणों को उनका अवज्ञाप मानकर परम्परा जीवित किया रहे और ऐसी किन्तु-तिया गतन रह जिनका आधार तुलसी का अत साध्य था, जैसे कि अचेतावस्था में नरहरि गुरु से रामकथा सुनना, रामराजा नाम होना, तुलसी का माता होना आदि। इतना तो अवश्य ही मत्स्य प्रतीत होता है कि अयाध्या, वाशी, राजापुर (वादा) एवं सोरा से उनका सम्बन्ध रहा था।

प्रतीत एसा होता है कि उनका जन्म 'पूर्व' की ओर कहीं हुआ होगा। कवितानवी में उद्दान लिखा है—

जीविका विहीन लोग सीधमान सोचवत

कहाँ एक एकन सोँ कहां जाई का करी' । ७ ६७

या तो चाकरी, 'कृपा करी' और 'हहा करी' की तुल्य के लिए 'कहाँ जाई का करी' का प्रयोग हुआ है, अथवा ऐसा माना जा सकता है कि मातभाषा का यह वाक्य सहज ही उनके मुख से निकल गया है।

सक्षिप्त जीवन परिचय

(१) जीवनकाल—१५८६ १६८० वि०।

(२) जाति—तुलसीदास की जाति और उनके कुल का निणय नहीं हो सका है। इतना निश्चित है कि उन्होंने मुकुल^१ और भल कुल^२ म—अर्थात् ब्राह्मण कुल में जन्म लिया था।

(३) नाम—

राम को गुलाम, नाम रामबोला राख्यो राम। वि० प० ७६

रामबोला नामु हौ गुलामु राम साहि को ॥ कविता० ७ १००

—के आघार पर उनका नाम रामबोला (डा० भारद्वाज के अनुसार मुहबोला नाम रामबाला) बताया जाता है, किन्तु बरव रामायण एवं कवितावली के निम्न छन्दों से प्रतीत होता है कि उनका मूलनाम तुलसी या दास जोड़ दिया गया।^३—

केहि गिनती महँ गिनती जस बन दास।

राम जपत भये तुलसी तुलसी दास ॥ बरव—५६।

नाम तुलसी प भोडो भाग तें कहायो दासु। कविता० ७ १३

(४) जन्मस्थल—उनके जन्मस्थान के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। उन्होंने बचपन में सूकरखेत में रामकथा सुनी थी। वे किसी सूकरखेत के आसपास के ही रहने वाले होंगे किन्तु देश में अनेक वाराह-क्षेत्र हैं इनमें तुलसी बाल सूकरखेत का निर्धारण करना कठिन है। हो सकता है व 'पूरव की ओर कहा उत्पन्न हुए हा।

(५) बाल्यकाल—हुलसी शब्द के एकाधिक प्रयोग से कुछ विद्वानों ने उनकी माता का नाम हुलसी माना है। हुलसी का अर्थ प्रसन्न या उल्लसित ही ठीक है। इतना निश्चित है कि बाल्यकाल में ही उनके पिता माता का दहात हो गया था।

१ शिवा मुकुल नाम मरीच मुन्दर हनु जो पत्र चारि का। वि० प० १३५।

२ भक्ति भागवत भूमि भव कुत्र जन्म ममाजु मरीच भला तन्नि क। कवि० ७ ३३।

३ १।० माताप्रगाण गुप्त—तुलसीदास, त० स०, प० १७६।

वे आश्रयहीन होकर परमुखापेयी हुए थे। इस तथ्य का उहोने अनेक स्थलो पर व्यक्त किया है।^१ दास्य भाव की भक्ति अपनाने के कारण उहाने विनयपत्रिका में अत्यधिक दीनता दिखायी है। उह अवश्य ही दीन जीवन यापन करना पडा होगा। किंतु उनकी दांनता में राम के महस्व चापन का उद्देश्य भी था, यह भूलना नहीं चाहिए।

(६) विवाहित जीवन—

लरिकाइ बीती अचेत चित चचलता चौगुने चाय।

जोबन छुर जुबती-कुपथ्य करि भयो त्रिदोय भरि मदन बाय ॥^२

उपयुक्त छंद के अनुसार उहाने विवाहित जीवन-यापन किया होगा। 'बाहुक' के अनुसार भी वे 'लोकरीत' में पड़े होंगे। किसी कारण-वश वे दाम्पत्य-जीवन अधिक दिन नहीं भोग सके थे, किंतु स्त्री की फटकार में विरक्त होने वाले तथ्य की सत्यता सन्दिग्ध है।

(७) भ्रमण—अयाध्या और काशी में तां वे रह ही, राजापुर में भी कुछ दिन रहे होंगे। राजापुर में उनकी शिष्य परम्परा का निवास हो सकता है। सोरो के साथ इतनी जनश्रुतियाँ और जीवन-परिचायक काव्या सं ऐसा अनुमित होता है कि उस स्थान से भी तुलसीदास का कोई सम्बन्ध अवश्य रहा होगा, अथवा तोरा सामग्री का इतना प्रचार सम्भव न हाता, भल ही इस सामग्री में भ्रान्ति अनिरजना, दुराग्रह और अलीकता ही क्यों न हा।

(८) उनके कष्ट—रामचरितमानस आदि ग्रन्थों के सज्जन के फलस्वरूप जनता

१ मातुपिनाँ जग जाइ तज्या, विधिहँ न तिखी कठु भाल भलाई।

नीच निरादर भाजन कादर, कूतुर-टूकन लागि लताई। कवि० ७ ५७।

तनु जयो कुटिल कीट जया तज्यो मातु पिना हँ ॥ वि० प० २७५।

जननी जनक तथा जनमि करम विनु विधिहू मृज्यो भवडर।

फिरयो ललात विनु नाम उदर लागि दुखउ दुखित माहि हेर।

वि० प०, २२७।

हाहा करि दीनता बही द्वार द्वार बार बार परी न छार फुह बाधो।

भ्रमन बमन त्रिनु बावरा जहँ तहँ उठि घामा ॥ वि० प० २७६।

जाति के सुजाति के कुजाति व पटागि बस

साए टूक सबब, विन्ति बान दुना मा। कवि०, ७ ७२।

बारें तें लतात बिलवाल द्वार द्वार दीन

जानत हो चारि फल चारि ही बनक को। कवि०, ७-७३।

विनयपत्रिका प० ८३।

म तुलसीदास का प्रचार होने लगा होगा ।^१ इससे वाणी क पण्डिता न उह तग किया होगा । किसी किसी ने जाति-पाति के विषय म कुप्रचार भी किया होगा ।^२ श्वा ने भी उन्हें सताया था ।^३

तुलसीदास को भ्रम-पीडा और बाललाड अथवा फाडा के कारण अत्यन्त छट-पटना पडा था—

पाय पीर पेट पीर बाहु पीर मुह पीर
जर जर सकल सरीर पीर भई है । हनु० वा० ३८ ।
सातें तनु पेपियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निक्सत लोन रामराय को । हनु० वा० ४१ ।

(६) व्यक्तित्व—रामभक्ति म आकठ निमज्जित सरल सात्विक एव निरभिमानी भक्त तुलसीदास अत्यन्त कामल स्वभाव क थे । मानस क बालकाण्ड म ही उन्होंने अपनी विनय प्रकट कर सत जना के साथ ही असत जना की बदना की है । राजा राम की सभा म वे अत्यन्त दीन भक्त के रूप म प्रस्तुत होत हैं । इसका यह अर्थ नहीं कि वे चाटुकार हैं । ऐसा होता तो व भी प्राकृत-जनो के गुणगान करन म गिरा का सिर धुनकर पछतान दते ।

व सरल थे सज्जन के लिए किंतु दुष्टा को व तजोदीप्त वाणी म फटवार लगाया करत थे । राम ऐसे सुंदर सुशील सशक्त आदश पुरुषोत्तम पर न रीभने वाले व्यक्ति के जीवन का व सर गूबर और श्वान समान निष्फल मान कर ऐसे जनो क प्रति अत्यन्त अनुदार हो उठत थ । अध विश्वास, वेद विरोध पीरा आदि की पूजा म लिप्त रहने वाले तथा भूतिया के धाखे सिल तोपे को फाड डालन वाले यवना आदि को भी उहाने सरी-खरी सुनायी है ।^४

उनका अध्ययन गम्भीर था उहनि नानापुराणनिगमागम तथा नाटक-काव्यादि

१ हौं ता सदा सर की असवार तिहाराइ नाम गयद चढ़ाया । कविता० ७ ६० ।

२ मर जाति पाति न चहौं बाहु की जाति-पाति ।

मर याऊ काम को न हौं बाहु न काम का ॥ कवि० ७ १०७ ।

३ विनयप्रिया छ० ८ कवितावली ७ १६५ ।

४ उनी आंगि नव आंगरें बाभ पून कय त्याइ ।

कय बाड़ी बापा नही जग यहगयच जाइ । दाहायरा ५८६ ।

गामी मवनी आहरा कनि विहनी उपमान ।

भगनि निरुपहि भग्न कनि तित्ति वर पुरान ॥ ५१४ ।

गाइ ग्यारि नमान मति जमन मग मन्पान ।

गाम न गान न न कनि कवन दह करान ॥ ५२८ ।

पारनि गिन माडा मग्न मागे छडक पनार ।

बाबर कूर कुतुब कनि पर पर मग्न दहार ॥ ५६० ।

युगीन परिवेश का प्रतिबिम्ब

भाषा रामायणकारा न नेता-युग म उत्पन्न राष्ट्र की कथा का वर्णन किया है। वाल्मीकि रामायण-लेखन के समय और इन ग्रन्थों के रचनाकाल म युग का व्यवधान है। वाल्मीकि का वह गौरव पूर्ण जाय परिवेश इन ग्रन्थों म नहीं है किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों की भूमिका म लिखी गयी य रामायण अपन युग के राजनीति धर्म और समाज ससृति विषयक तत्त्वा का समावेश किया है। इसीलिए वे जनप्रिय भी है। इन रामायणों के माध्यम स असम बगल उड़ीसा और हिन्दी भाषी क्षेत्र की मध्यकालीन समाज ससृति का अध्ययन इस अध्याय म प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न प्रदेशों की राक्षस पद्धतियाँ पढ़ कर हमारा चानबदन हाता है मनोरजन हाता है और साथ ही विभिन्नताओं के मध्य भारतीय एकात्म का स धारण भी मिलता है। जार्याविधू सीता अपन अपने प्रदेश की युगीन कुलवधू का रूप धारण कर कहीं पलकचूड़ी पहनकर द्युम दष्टि करती है कहीं मुख पर हल्दी मलकर शृंगार करती हैं कहीं काहूबर म बठ कर राम के साथ लहवोर करती है। इस प्रकार क असस्य धरेनू चित्रा स रामायणों भरपूर है। आज के जिनासु पाठकों के लिए इस प्रकार के युगीन चित्रण ही प्रस्तुत लपक की दष्टि से अधिक मनाग्राह्य प्रतीत हाग।

राजनीतिक प्रतिबिम्ब

भाषा रामायणों क रचनाकाल तक भारत का बन्ग भू भाग मुमनमाना के शासन म जा गया था। कवन मुस्लिम हान म कर्द घुणापात्र नहीं कहा जाएगा किन्तु इनका मतव है कि इस्लाम म धोर जगत्पिपता है और उच्च-जातिन चिन्तन का अभाव है तथा कम अनुपातों गायन अत्यन्त घूर एवं धार स्वार्थी मिद्ध हूण है। एतद्वाने इस्लाम क शिखरों सामन मुस्लिम विन-जातिम का जा पत्र निरस्त था उसम ही इस्लाम क प्रति मुमनमाना की नीति का पना चित्र जाना है— अल्ताह कन्ता है कि काकिरा का मन छोडा उनका मन काट टा। समस्त ता यत् अल्ताह का भाग्य है कि काकिरा का मरणा मर टा कनाकि कमन नुशार काद का मिद्ध

म देर हागी ।' मुसलमान आतनायी विजेता आनमण करन के पूव ही भाग म पडने वाल गावा को जलाते आने थे, सम्पत्ति लूट लते थे, खडी फसलें उजाड दत थे, बुद्धे और बच्चा का भी तलवार के घाट उतार दत थे, नारी का सम्मान नहीं करत थे, युद्ध म छत्र प्रपच करत थे शरण मे आय शत्रु का भी ताला की सख्या म काट फेंकते थे, हिन्दुआ की अत्यन्त प्राचीन बनावृत्तिया को ध्वस्त कर दत थे । उदार से उदार कह जान वाले अथवा कवि हृदय यादशाहान भी जा निरीह जनता पर बहर दाय्या, उसे फिराजशाह, सिकन्दर लादी, शरशाह एव अकबर के कारनामा म देखा जा सकता है । प्रस्तुत लेखक न मुसलमान इतिहासकारा के प्रमाण क आधार पर ही इसे अपन अर्थ ग्रथ म अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन किया है ।' मुस्लिम शासका के शताब्दिया तक चरने वाले अत्याचारा की विभीषिका का अनुभव स्त्री लखन वारान्निकाव' एव अग्रेज विद्वान रमड आलिचन का भी हुआ है ।'

अमम का सौभाग्य ही था कि यह आतनायी शक्ति उसके दुग्म प्रदेश म पराभूत हाकर बारवार नोट गयी । उड़ीसा न अपने दबताजा का अपमान सह्य, अनक मंदिर तोडे गय किन्तु रामायण-लखक के समय प्रबल पराक्रमी हिन्दू राजा का ही शासन था । हिन्दी और बंगला भाषाआ के क्षेत्र बुरी तरह पददलित हुए थे । अममीया एव उडिया रामायणा म मुस्लिम अत्याचारिया की प्रतिक्रिया दखने की नहीं मिलती ।

सन १२०० ई० के आसपास बख्तियार खिलजी न बगाल पर आक्रमण किया था । दसन भी लूट आग घमान्तरण मंदिर विध्वंस एव भयकर जनसंहार आदि के कुवृत्त्य क्रिय । सबसे अधिक शक्ति बौद्धा का उठानी पडी । बडे-बडे पुस्तकालय और चत्प बिहार जलाकर ध्वस्त कर दिए गये, असह्य भिक्षु मार डाले गये विशपता यह है कि कुछ बौद्धा न ही मुसलमाना के गुणधर बनकर विभीषण का काय

१ इतिपट डसन—हिस्टारियन ऑफ सिंध पृष्ठ ३६ ।

२ ददिए कृत्ति० बंगला रामायण और रामचरितमानम, पृष्ठ ८, १२ एव २०-३७ ।

३ उन्होंने भी इन अत्याचारिया के शासन का सार निकाला है—'युद्ध-सम्बन्धी जुम लूटपाट, हिमा, शहरा और गावा क नाश और तामकारी भूस की ज्वाला और धार्मिक अत्याचार—दक्षिय मानस की स्त्री भूमिका पृष्ठ १-३ ।

4 The Conquest was not accomplished without murder pluder and rapine In the early stages in some provinces there was large scale conversion by force to the foreign creed Muslim rule also brought opp e s e measures against non Muslims special taxation religious intolerance and expropriation

किया था। १३वीं शताब्दी में लगभग के वाजार में बल्लभ ने तीनों स्त्रियों का हत्याकाण्ड कराया कि दसन बाल बहाण हा गय ।^१ पीराज तुंगन न एग लाग अस्सी हजार से अधिक बंगालिया ने गिरकटना डान थ ।^२ १३ १४वीं शताब्दी में उथल पुथल का कारण बंगाल में या तो साहित्य लिखा नहीं गया अथवा बहू प्राण नहीं होता। १५ १६वीं शताब्दी में विजयगुप्त एव जयानर न अपन बंगला-बाव्या में इन मताका के अत्याचारों का जो बणन किया है उसका सक्षिप्त रूप यह है— ब्राह्मणा का यनोपवीत तांडे जात थ मुह म धूवा जाता था, जिगक घर शय की घानि मुनायी पडती थी उसे मार डाला जाता था तिनक जोर यनापवीत दर व्यक्ति का घरबार लूटकर उस नीहपाश से बांध दिया जाता था। तुलसी जादि का पीथ उताड लिये जात थ। गंगा स्नान कानूनन बंद था।^३ य वृत्त्य उन मुसलमान शासकों में किये हैं जिन्हें आज बंगाली लखक उदार और बंगला भाषा का पोषक बताते हैं। विद्यापति ने भी कीर्ति रत्ना में खूबवार तुकों एव उनका दूर अनाचारा का बणन किया है।^४

स्वर्गीय राघव राघव ने लिखा है— इस्लाम का फमला तनवार का जाण था वे बौद्धों की भाँति प्रेम से धर्म फलाने नहीं निकले थे। व शकर की भाँति प्रकांड पाण्डित्य के बल पर विजयी नहीं हुए थे।^५ किसी भी मत के प्रवक्तक ने तलवार उठा कर धर्म प्रसार का नारा नहीं लगाया था। ईसा बुद्ध गुरुनानक, शकर रामानुज चनय आदि शांति और अहिंसा के सन्देश-प्रवक्ता थे।

इस्लाम खडग के बल पर जीत कर भी भारत का सांस्कृतिक पराजय नहीं दे सका। जहाँ-जहाँ मुसलमानों की सेनाएँ पहुँची, देश के देश इस्लाम में दीक्षित होते गये किन्तु भारत इस नये उमत्त मत की टक्करों पीता हुआ बसा ही दृढ़ बना रहा।

मानसकार गास्वामी तुलसीदास का ग्रंथ में युग चतना अपक्षाकृत अधिक देखी जाती है। हमारे इतिहास लेखक शरशाह और जबर की प्रशंसा करते नहीं अघते किन्तु य दोनों भी दूध के घोड़े नहीं थे। संगुण भक्ति का प्रवाह में तीन हमारा भक्त समाज अपने अत्याचारियों में राक्षसत्व की झन्क देखने लगता था। वस कृष्ण की ही जाति का था और राम का प्रतिद्वंद्वी रावण पितृपक्ष में ब्राह्मण ही था किन्तु

१ जियाउद्दीन बर्नी (इनियट लसन)—मुम्मडन पीरियड पृ० ३, प० ११६।

२ शम्से शिराज अफीफ (इनियट डामन)—फिरोजशाह प० ३२।

३ दीनेशचंद्र सन—बङ्ग भाषा में साहित्य प० २४२।

जयानर—चनय मंगल ११६४।

४ विद्यापति—कीर्तिरत्ना द्वितीय एव चतुर्थ पल्लव।

५ राघव राघव—प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास प० ४८८ ४९५।

दुराइया के साकार प्रतीक य दाना दुष्ट अत्याचारी हमारी धार घृणा व पात्र है, तत्कालीन नशम-शासका एव उनका साथी मनानुयायिया के दुराचरण एव अमहिष्णुता व कारण यदि हिंदी-जनता उन पर राक्षसत्व का आरोप कर ता आश्चर्य क्या । इसी-लएक वारानिकाव न भी रिखा है—तुलसीदास उस समय मे हुए जबकि उनका विशिष्ट एव प्राचीन सस्कृति-ममन्वित दश मुसलमाना स पदानान्त था । हिन्दू उनका ववर समझते थे ।^१ डा० नगद्र व य शब्द भी द्रष्टव्य हैं—सामयिक जीवन म भी ब्राह्मण का हनन करन वाले मुसलमाना के विरुद्ध विवश होकर ही तुलसी न गा-ब्राह्मण प्रतिपालक दुष्ट-दलक राम की कल्पना की थी ।^२ श्री आल्चिन भी इन लेखका की उक्तिया से साम्य रखते प्रतीत हात हैं ।^३

गो० तुलसीदास न राक्षसा का चित्रण निम्न शब्दा म किया है—

जेहि द्विधि होइ धम निमूला । सौं सब करहि वेद प्रतिमूला ।
जेहि जेहि देस घेनु द्विज पार्वहि । नगर गाउँ पुर आगि लगावहि ॥
सुभ आचरण कतहु नहि होई । देव विप्र गुरु मान न कोई ॥^४
तेहि बहु द्विधि त्रासइ देम निकासइ जो कह वेद पुराना ॥

१-१८२ छन्द

वरनि न जाइ अनोति घोर निसाचर जो करहि ।

हिंसा पर अति प्रीति, तिह के पापहि क्वनि मिति ॥ ११८२

आम उहान स्पष्ट कह दिया—ऐसे आचरण करने वाल मभी प्राणी निशाचर हैं —

जिह के यह आचरण भवानी ।

त जानेहु निसिचर सब प्राणी ॥ ११८३ ३

बंगला रामायणकार म वसी युग चेतना नही फिर भी उनके परवर्ती

१ मानस की इसी भूमिका, पृष्ठ १ ।

२ डा० नगद्र—विचार और अनुभूति पृष्ठ ८ ।

3 These centuries may with great justification be called a dark age for the Hindus of North India and there is little doubt that when these Poets used the terms Kaliyuga they had in mind the very real oppressions under which they themselves suffered just as when they used such terms as Mleccha barbarians they referred to Muslim invaders—P 18

Raymond Allchin—Translation of KavitaVali—Introduction

४ मानस—१ १८२ ६, ७ ।

उपयुक्त बगला-लेखका के ऐतिहासिक वर्णन को स्मरण में रखकर उनकी निम्न पक्तियों पर विचार करना होगा—

राक्षसों के सामंत चारा और घूम घूम कर तथा ब्राह्मणों में प्रवेश कर अनैव्य उपद्रव करते हैं। यज्ञ आरंभ करने पर वे निकट आते हैं और यज्ञ नष्ट कर देते हैं। बेचारे ब्राह्मण डर कर भागते हैं। वे राक्षसों के डर से घरा में छिप बैठे रहते हैं। राक्षस उनके फल-फूल छीन लेते हैं और बलसी (आदि पूजा की सामग्री) नष्ट कर देते हैं। (पृष्ठ—१३२)

मुस्लिम अभिवादन पद्धति

बगला रामायण लेखक कृत्तिवास ने सम्भवतः अनजान में ही मुस्लिम शासकों एवं रावण में साम्य स्थापित किया था। राम की राज-सभा में उपस्थित हान पर लोग उन्हें राज-व्यवहार के अनुसार केवल प्रणाम करते थे—

१ राजव्यवहार बुक्कर नोआय माथा पृष्ठ ५३०।

२ हनकाले दुइ चर घये आगुसरे। प्रणाम करित सवे राज व्यवहारे॥

प० २६१

किन्तु रावण की राजसभा का अभिवादन था तीन बार सिर झुकाना—

१ तिन बार माथा नोडाय राज्य व्यवहारे प० २८७।

२ बापर चरण माथा नोडाय तिनबार प० १३३।

तीन बार माथा झुकाकर प्रणाम करने की पद्धति में मुसलमानी प्रभाव न होता तो राम के दरबार में भी इस पद्धति का प्रयोग होता। बुगरादाँ बगल का सूबदार था। अपने पुत्र बादशाह कबुबाद के सामने अपना मस्तक झुका कर उसे तीन बार पृथ्वी चूमने की रस्म अदा करनी पड़ी थी।

Bughra Khan bowed his head to the earth and Three times kissed the ground as required by the ceremonial of the court¹

घाईने झकवरी—(आईने ७४) में भी तस्लीम की पद्धति में तीन बार झुकने की प्रथा थी। दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग का भूमि पर रखकर धीरे धीरे उठाते थे, फिर शरीर के बिल्कुल सीधा हो जाने पर अपनी हथेली को सिर पर रखते थे। विशेष परिस्थितियों में तीन बार तस्लीम करने की प्रथा थी।

पृथ्वीराज रासो (१०० २०६) में वर्णन है कि जब पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को बन्दी बना लिया तो उसी की मुसलमानी पद्धति से अपने को तीन बार सलाम कराने के उपरांत छोड़ दिया—

‘किय सलाम तिय बार

१ जिमाउद्दीन-बर्नी (इनियर एण्ड डामन)—तारीखे फीराजशाही प० १३१।२

अत्याचारी मताब्ध शासक को राक्षस के रूप में देखा गया है। कोई समस्त जाति विशेष राक्षस नहीं कही जा सकती। राम सत के प्रतीक है और रावण तम का। सत शक्ति पर विश्वास रखने वाली सभी जातियाँ तथा व्यक्तियों के राम आदर्श मानव हैं, हाँ जिन सत शक्ति पर विश्वास नहीं उसकी बात ही दूसरी है।

पहले ही कहा जा चुका है कि असम एव उड़ीसा प्रदेशों में इस प्रकार की समस्या नहीं थी, अतएव उनके ग्रथों में इस प्रकार की भूलक नहीं है।

● राजनीति चित्रण के अंतर्गत अनेक बातें आती हैं—शासक के कर्तव्य सुराज्य का रूप, राजकर्मचारी गण, साम-दाम नृद भेद का प्रयोग, दूत प्रेषण दूत की अव्ययता गुप्तचर व्यवस्था युद्ध के समय ललकार एव रण वाद्यों के साथ प्रस्थान, चार प्रकार की सेना, अस्त्र शस्त्रों का वर्णन आदि। राम की मुख्य-कथा के साथ ही परम्परानुमोदित प्रथाएँ अपना लेने के कारण रामायण में जो राजनीति विषयक चित्रण है वह पारस्परिक साम्य रखता है। जहाँ कुछ विशेषता दिखायी पड़ी, उसी का चित्रण यहाँ किया गया है।

योधन-नीति (strategy) और रण-चातुर्य (tactics) आदि

सामान्य रण (battle) में जो दक्षता दिखायी जाती है उसे रणचातुर्य एव दीर्घकाल-यापी युद्ध (war) के प्रत्येक प्रकार के मोर्चों पर विस्तृत सामरिक तयारी, कूटनीति, रण चातुर्य आदि का ज्ञान योधन-नीति कहा जा सकता है। सत तुलसीदास शासकों की छाया से दूर रह उर्हें राजनीति या रणनीति आदि का ज्ञान नहीं था। पूर्वोक्त लेखकों का सम्बन्ध समसामयिक राजाओं से था। अपने काल में प्रचलित युद्ध-कौशल अथवा रण चातुर्य सम्बन्धी ज्ञान का परिचय उनके ग्रंथों के मध्य कहीं-कहीं मिल जाता है। रणनीति समरसज्जा आदि का सहज-स्वाभाविक एव विस्तृत परिचय उडिया रामायण में मिलता है। यहाँ रामायण के कुछ विशिष्ट वर्णन प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

● धर्मभीया रामायण में राम ने हनुमान से पूछा—जका गड की बात कहा। उसकी चौड़ाई और लंबाई कितनी है सत्रम कितन है ?

हनुमान गड का अध्ययन कर आय थे, उन्होंने बताया—चारा फाटका पर दड किवाड है चारों द्वारों पर चार सत्रम हैं। द्वारा पर लौहयत्र सत्र लगे हैं, जिन पर दिनरात सशस्त्र राक्षसों का पहरा लगा रहता है। गड का चारा और खाई है। (प० २८७)।

सत्रम—खाई के ऊपर का पुल सत्रम कहलाता था। यह प्रायः लकड़ी का होता था। दुर्ग की रक्षा के समय इसे खींच लिया जाता था।

लाहा यत्र-सत्र—सत्र का युद्ध शब्द सयत्र होना चाहिए। लाहा यत्र का अर्थ है ताला और सयत्र का बंद ताला। इन दोनों शब्दों के अर्थोंद्वारा स मुझे डा० यामु देवशरण अग्रवाल की महायत्ना प्राप्त हुई है।

० बंगला रामायणकार १ रावण की एक महान भूत की आर कुम्भकण द्वारा दग्ध कराया है। वह रावण म कहा है राम गुप्त बाहर गयी मय आ गया मुगल स्वयं समुद्र के उम पात्र जाकर आश्रमण का १ किया।' मय ही मय रावण १ गुप्त १ बनने किया होता तो राम मुगलमा म विजय लाभ १ कर पात।

महाँ जसमीया रामायण वं कुम्भकण की मय ज्ञा जाती है उमय रावण म कहा था कि इतने मत्रिया स पित बर हा। और जीवित हाभी क मी निरामना चाहत हो। मयि गीता १। हगना ही था ता पहल राम का मार शक्तता मदिग था।'

० उडिया रामायण म युद्ध विद्या पात्र का जसदा परिचय मिलता है। दशरथ के पात्र जाकर विश्वामित्र १ का प्रश्न विय जषया दशरथ ने अभिषेक की कामना रखकर राम का जो जगम मयि उमय तस्तामीय राजनीति तय युद्धनीति का परिचय मिल जाता है।

शत्रु वं भय की दान मन म दियेग रगनी मयि पुरात जमात्यो व परामण पर निवार काना चाहिण। ब्राह्मण तय गुप्त के प्रिय बनता चाहिण नित्य साधन (व्यायाम) करता आवश्यक है। धनुष मण ल वर ही पर स बाहर निवचना चाहिण। शिलोभी का भण्डार सोपना चाहिण। (२२१)

विश्वामित्र न दशरथ स पूछा था— क्या गड ने जासपास गार्ड है ? मय वं भीतर पर्याप्त तेल और जल का सचय है क्या गड वं द्वार पर कुत, शवल आदि अस्त्र लाग और तेल (भुणा जउ तेल) तथा यारु गोत्री और पत्थर रखे हैं ? किवाड लाह क हैं या नहीं उमय कयिणर कोले लगी है या नहीं ? साय मग होने पर प्रयाग होने के लिए क्या चोरद्वार है ? रात्रि म गय-द्वार पर क्या पहरा लगता है ? शत्रु के स य म्थाय पर क्या रात्रिहणा (रात्रि आश्रमण) होता है ? मय जीतने की कोई सधि ता नहीं जानता ? हमर की साग का गड के भीतर तो नहीं रखा जाता ? माग म चलत ममय गुप्त बातें तो नहीं कही जाती। (१६०-६१)

रावण ने राम के विरुद्ध युद्ध की तयारी करायी है। लखव का युद्धनीति सम्बन्धी विशद ज्ञान यहाँ भी प्रकट होता है—

१ बंगला रामायण प० ३१०।

२ जसमीया रामायण ५४४०।

३ कुत शवेति आरु भुणा जउ तेल। दार गालि पथर तु रमिनु दुआर ॥ १६०। ताल और तेल (भुणा जउ तेल) द्वारो पर रखे जाते थे शत्रु के आश्रमण के समय द्रष्टे गरम कर फेंका जाता था। यही सन्दर्भ दाह शब्द पर है। उडिया कोशा में दाह के तीन अर्थ हैं—मदिरा, बाण और बाहद। लखव ने दाह गोलि शब्द का प्रयोग किया है। इस का तब तक कम म कम यूरोपियो और मुगल स उडिया लोगो का परिचय हो गया होगा और वे दाह का प्रयोग जान गये ह्य। यही साव कर मैंने दाह का अर्थ बाहद दिया ह।

‘(शत्रु पर ऊपर से पेंकन के लिए) तल गरम करा। प्राचीनो पर साग शावन जादि तीक्ष्ण अस्त्र रखा। निरतर मीढी लगाय रहा। चोरद्वारा पर मत्त गज रखा। रात्रि म निरतर मशालें जलात रहो। काइ जवेला न जाए, एक दूसरे की पीठ की रक्षा करा। बिना बोले मोर्चों पर जागते हुए बठे रहो। एसा भी लिखा है कि राक्षस लोग राम की सेना पर ऊपर से गरम तेल और जस्त गन्ध की बषा कर चोरद्वार से जात्रमण कर दते थे। (६-१६-१७ एव ३६)

मत्र पढ कर चुम्बक द्वारा बाणा के पत्र घावा से निकाले जाते थे। (६-८५)

वज्रबाण बनाने की सामग्री में इन वस्तुओं के उपयोग का वर्णन है—गाम की अस्थि गव तल (अरण्य तन) हरिताल गवज अक यत्रक्षार (मोडा-पोटेशियम) और लाहानली।—(६-१७)

सत्य प्रस्थान का भी सजीव चित्रण किया गया है—राजा हाथी की पीठ पर चलता पीछे सेना चलती। वाद्यकार राजकमधारी भृत्य नटभाट, ज्यातिपी भडारी आदि भी साथ चलते।^१ रात्रपुरोहित मंगल आरती गाराचन तिलक दूवादित अकुर दधि मल्लय बबूतर हस आदि द्वारा शकुन करते। राजा ब्राह्मण का प्रणाम कर प्रस्थान करता।^२ हाथी के मिर पर सिद्धर एव वान तक कस्तूरी का लपन होता। रेशम की रंगीन डारी माने की सावत और चानी-जटित कास्य-धटा एव मणि रत्नो से उसका शृंगार होता।^३

राजकमचारिया के पद इस प्रकार थे—राउन, माहुति रथी पदाति महा रथी आदि।^४

रावण की सेना में मुकुट-वधा योद्धा (विशेष योद्धा) अनिवाय ब्राजि, टट्टू और मत्तगज थे। योद्धा लोग स्वर्ण आच्छादन पहनकर उसके ऊपर कनकर पगड़ी बांधते थे।^५

पत्र लिखने की पद्धति—राम ने रावण के पास पत्र लिखकर भेजा है। यह पत्र तालपत्र पर मुपेण से लिखवाया गया। इस श्रीमुख कहा गया है। पत्र को मुद्रा युक्त कर हनुमान के द्वारा रावण के पास भेजा गया है। रावण हनुमान से ही पत्र पढ़ने को कहता है व मुद्रा तोड़कर पत्र ह।^६ उड़ीसा में तालपत्र पर लिखने की प्रथा रही है। लिपि की अर्थ प्रकाश की सामग्रिया का भी प्रयोग वर्णित हुआ है। रावण

१ उडिया रामायण ६-१७४।

२ वही, १-१७२।

३ वही ६-१७३

४ वही २, ६६।

५ वही ५-१०० ६-६३।

६ वही ६, ५७।

अनमिल आकर अरय न जाय । प्रगट प्रमाउ महेग प्रतापू ॥
निगुन निला पुषेव कपाली । अणुल धगेह दिगवर ब्याली ॥^१

मगलमय रूप

कुद इदु सम देह उमा रमन बदना अयन ।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मदन मयन ॥ १४

सममित शुद्ध रूप

ससि ललाट सुन्दर सिर गगा । नयन तीनि उपवीत भुजगा ।

गरल कठ उर नर सिर माला । अस्थि वेप सिव धाम कृपाला ॥ १६१ ३,४

(१) शिव-वधएव सम-वय—गभी रामायण लक्ष्मणा न अल्पाधिक रूप म इन उपासनाआ के मध्य सम-वय करने का प्रयास किया है। सरसे अधिक सफलता गो० तुनसीदास का ही मिली है। काकभुगुणि की कथा के द्वारा यद्यपि इन विवाद का उठाकर महत्ता राम की ही सिद्ध की गयी है किन्तु फिर भी शिव को रामचरित मानस म महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

वे एस योगिराज हैं जिनकी बुपित दष्टि स कुसुम सायक भस्म हो जाता है। वे एस जादश पति हैं जा सती की आत्मिक ग्नानि स अत्यन्त दु ती हैं, किन्तु सयम और दढ प्रतिना स तिल भर भी विचलित नहीं होते। वे स्वय ही अशिव वेप धारण कर नत है। चरित्र शिथिलता तो कहा नाम मात्र को भी दयन म नहीं आती। य शकर राम के विह्वल भक्त है और राम भी शकर के द्रोही को सह नहीं सकते। इन शकर के बिना सिद्ध जन अपने अत करण म स्थित ईश्वर का नहीं दल सकते। शकर जादश भक्त तो हैं ही साथ ही वे मानस पाठवा के लिए सयमी विवकशील एव स्नहासु पति के भी आदश हैं।

(२) शक्ति—शक्ति क दो रूप है—कोमल और उग्र। प्रथम रूप म वे मातरूपिणी गणशजननी एव शिवप्रिया है। उनके द्वितीय रूप म रक्त छाडा आदि का सम्बन्ध है यहा उनके नाम भी काली कराला उग्रचडा जाति हैं। उह सष्टि की जादि देवी भी बहुतेरे लेखक न माना है।

सभी रामायणा म मातरूपिणी देवी पावती का थोडा-बहुत चित्रण है। वगना रामायण एव मानस म अम्बिका पावती का भव्य चित्रण है। बँगना रामायण म देवी अम्बिका की स्तुति स्वय राम करत हैं—इस प्रसंग म शाक्त बगाल की धार्मिक मनोवृत्ति का प्रभाव है। मानस म भी जिस गौरी का वणन किया गया है व पावती रूप म पतिप्राणा पत्नी एव सीतादि भक्ता पर दया करने वाली जगत जननी भवानी हैं। सधवा स्त्रियाँ जपन सुहाग जयवा मनावाछिन पति की प्राप्ति के लिए उनकी उपासना करती हैं।

असमीया रामायण म भी दवी का जल म्यल एव त्रिभुवन की सृष्टि करने वाली कह कर स्तुति की गयी है। उडिया रामायण म आदेश गहिणी के रूप म पावनी का चित्रण है। गुम काय करत समय दुगा का स्मरण भी किया गया है। अय कोई विस्तृत चित्रण नहीं है।

उग्ररूप—दवी के उग्ररूप का चित्रण याडा वहुत सभी रामायणा म है और विशपता यह है कि उन्के इस रूप का सम्बन्ध राक्षसा से जाडा जाता है।

० असमीया रामायण म रावण वानरो के रक्त स चढी माँ का तपण करने की इच्छा रमता है—वानरर रधिर नविवो चणी माव । इद्रजीन यन करत समय वकर क रक्त और उमम डूवी हुई लकडिया की आहुति दता है।^१

० बगला रामायण म उग्रचण्डा की सप्तर-नीटा सहित लोल रसना विक्ट-दशना ध्याघ्रचम तथा मुण्डमाल धारिणी प्रचण्ड मूर्ति का चित्रण है।^२

० उडिया रामायण म पत्नी दवी के लिए भस और वकर की भेंट दी गयी है।^३

० मानस म इद्रजीत द्वारा किय गय यन म रधिर और भस की आहुति का वणन है। परोक्ष रूप स भूतप्रतस पिरी चामुण्डा एव पराला-कालिका का भी उल्लेख हुआ है।^४

(३) कृष्ण—कृष्ण राम क परचाा प्रादुभूत हुए इगलिए रामकथा क साथ उनका सम्बन्ध नहीं जुगता निन्तु भाया रामायण तपका क काल तक कृष्णभक्ति का प्रचार जनता म हा चुका था अतएव इन ग्रन्था म कृष्ण का प्रसंग किसी-न किसी रूप म आ ही गया है।

असमीया रामायण के प्रथम और अंतिम काण्ड के ललक कट्टर कृष्ण भक्त थ। व कृष्ण का परब्रह्म मानन थ। इन दाना न ही अपन-अपन काण्डा म कृष्ण का ब्रह्म मान कर स्तुति की है। शकर दव अपन को कृष्ण विकर कहत हैं। असमीया रामायण क मुख्य मध्याण म भी इन दाना कृष्ण भक्त कविया न कृष्ण का रग दन का प्रयास किया हागा।

उडिया रामायण का भी यही स्थिति है। उसका ललक बलरामदास श्री जगनाथ स्वामी का दास है।—नीलगिरी जग नाथ मु थत भत्य तथा मुहि बलरामदास श्री कृष्णर दास।^५ राम भी एक स्वयं पर कहत हैं कि जगते जम म

- १ असमीया रामायण—विण प्रमश छत्र-सख्या ५२६४ और ५६४८, ४६।
- २ बगला रामायण, पृष्ठ २२२।
- ३ उडिया रामायण, १ ५५।
- ४ मानस—दानो प्रसंगा क लिए दक्षिण प्रमश ६ ८७, ८ एव १, ४६, ६।
- ५ श्री नीलगिरी र जगन्नाथ का भत्य है।—श्री बलरामदास काण का भक्त है। ४२।

मथुरा में लक्ष्मणावतार हुआ। इस लक्ष्मण महाभारत के भी पात्रों एवं पर-भारतवर्ष का भी नाम दिया है।

बंगला जीर उडिया रामायण में कृष्णभक्ति विषय में एवसमान प्रमग आया है। राम लक्ष्मण का नागपाश में मुक्त करने के लिए मर जाय हैं उनके अनुरोध पर राम ने मृत जन्म म हाने वान वृष्णावतार का रूप मर का लिया है। बंगला रामायण का यह प्रमग प्रक्षिप्त जान पडना है क्योंकि इस पर म० चतुर्थव का प्रभाव स्पष्ट है। वृत्तिवासी के ऊपर जयन्त वाली वृष्णभक्ति का बिल्कुल प्रभाव नहीं है।

मानस में वृष्ण का उल्लेख इस रूप में है कि जन हुए राम की पत्नी का वर दिया जाता है कि उमना पति आगे चतुर्व वृष्ण-तनय हुआ — १ ८७ २। उडिया रामायण का छोड़ कर शेष तीनों के राम जन्म पर भागवत के वृष्ण-जन्म का प्रभाव है।

(४) ब्रह्माह्वय साधनाओं की उपेक्षा—असमीया रामायण के तीनों लेखक ब्रह्माह्वय साधनाओं के विराधी थे। असमीया रामायण के जय-वाकण्ड में राम के पीछे प्रजाजना के साथ दौड़ने हुए एक यागी का चित्रण है। यह नाथ योगी लगता है। लेखक इसके प्रति सहानुभूति रखता प्रतीत नहीं होता। योगी कथ पर फटी भाली हाथ में द्वादश बाध (१) और बंगला में तृन्वी धारण क्रिय है। यह धकावट से चूर शिव शिव कहता हुआ जस्त व्यस्त भागा जा रहा है। बंगला रामायण में सीताहरण के समय रावण का वंश नाथ योगी का चित्रित किया गया है। वह वान में शख कुडल पहन है रक्त वस्त्र धारण क्रिय है और उमरु बजाता हुआ भिक्षा मागत है।^१ लेखक ने नाथ यागिया की स्पष्ट निन्दा नहीं की है किन्तु उनका पात्र अगद जिस प्रकार इस रूप के कारण रावण की भक्तना करता है उससे स्पष्ट है कि वह रावण के इस रूप की उपेक्षा करता है। राक्षसा के यज्ञ में ही रक्त वण पुष्पमाला एवं मुरक्त चदन के साथ बकरों की बलि वाली उपासना का वणन है— तीक्ष्ण अस्त्रे छागल छेदिया काटि काटि—प० ३२८।

गो० तुलसीदास ने श्रुति पथ तज कर वाम पथ पर चलने वाला की निन्दा की है।^२ वीर यागिया को उहाउ जघ पानि पापिया की कोटि में रख कर शब के समान माना है। तत्कालीन भूत पिशाचा आदि की उपासना से भी लेखक सन्तुष्ट प्रतीत नहीं होता—

जे परिहरि हरिहर चरन भजहि भूतगन घोर।

तेहि बइ गति मोहि देउ विधि जौ जननी मत मोर ॥ २ १६७

१ बंगला रामायण पृष्ठ २७५।

२ मानस—दसिए प्रमग २ १६७ ७ ८ एवं ६ ३०, २—४।

(५) उडिया रामायण की योग साधनाएँ तंत्र मंत्र—केवल उडिया रामायण पर ही तंत्र मंत्र का प्रभाव दिग्यायी पड़ता है। प्रतीत हाता है कि सिद्ध एव नाथ पथ की परम्परा का प्रभाव होगा। कई स्थानों पर ऋषयतिथो का चित्रण नाथपथियों जसा तो हुआ ही है, माकण्डेय रूपि का भी इसी रूप में प्रस्तुत किया गया है वे वास का दण्ड लिए तथा कक्षा-कीपीन मद्राक्ष माल और पिगत जटा धारण किये हैं। साथ में सबस्ता धेनु भी है।

हथयोग योगदर्शन—इस रामायण में हठ योगिया की इडा त्रिगला मुपुम्ना का वर्णन है।

इञ्जोला पिञ्जोला सिपुमुना नाडि येनि । कुल कमल नाल र हस यहि चरि ॥

याहा कुहि योगि जने श्रलपा आचरि ॥ ६ ७३

उत्तरकाण्ड में मोता के निर्वाचन से दुःखी राम का लक्ष्मण योगदर्शन का उपदेश देते हैं। वे कहते हैं प्रह्व शरीर कभीतर है। अपने-आपना पहचानने पर ब्रह्माण्ड की पहचाना जा सकता है। य किन्दु अर्थात् गुन का ही प्राण वाता कर उसके पतन का मत्स्य बताते हैं।

से महापराण ये आबोरि अद्यि पिण्ड । से प्राणवण्ड अटइ जाण विदुगण्ड ॥

येणे से निपात होइ तेणे से मरण । ७ १२४

जामे वे कहते हैं कि गुनत्रय तज ही तद्र है। इस महारम को उच्चमुख करा। मन को दृढ़ कर पवन की साधना करो। धातु मूल कर पवन के साथ उड़ता है। मम नियम पूर्वक मन का साधा। अष्टांग युग में इस तत्त्व का वर्णन है। अज्ञा का जप करो जात्मा का पहचानन यात्रा ही महात्मा होता है।—७ १२२

जाडू टोना—रावण का एक राक्षस तावक पात्र में बाँधे हाथ से घाने की नींद लगाकर उमम पिगी हुई मिच डालकर अंधरे में प्रता बनाकर आँसु में लगाता था इससे दूर तक दिखायी पड़ता था। वह मन पत्रकर बाँधे पर भी धूँट सिर पर जानता था ता लक्ष-योजन तक का समाचार जान कर जाता था।

आज की पुरानी जड, गाराचन, कुकुम जालि के प्रयोग से जलोन्मत्त का म किया जा सकता है। (६ १२)

(६) अथ देव तथ सामा य विश्वास—कथ ता त्र गभी राम-कथा तसका न हिन्दू भ्रमात्र में प्रचलित कई देवों का मंत्र-तंत्र उत्तरण किया है किन्तु यह चष्टा उडिया रामायण में अधिक देखी जाती है। लुगा गगा, गणेश माधव लक्ष्मी नरगिन् नवग्रह सरस्वती इन्द्र और छाया माया सहित एक चतुर्गामी मूय का स्मरण अथवा स्तवन किया गया है। प्रायः किसी शुभकार्य के प्रारम्भ अथवा उनीगा त्रस में प्रचलित किसी वन विषय के अवसर पर इनका स्मरण है। प्रस्थान के समय मंगलाष्टक का पाठ, मित्र पर विशाखा-दूवा रखना, स्नान के पश्चात् लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा देखना तथा विप्रभोज एव गृह शान्ति आदि का उत्तरण है। मानस के पात्र में यात्रा के पूर्व 'हर गुरु गौरी गनमु या स्मरण कर लन है।

तीसरी नदी स्नान शकुन जपशकुन गुह्य-वायु के प्रारम्भ में ज्योतिष गणना आदि पर विश्वास का सत्तालीन विषय इन रामायणों में उपलब्ध है।

उडिया का घम देयता — द्वितीय अध्याय में घम-ठाकुर नामक एक आचरित देवता का वर्णन हुआ है। संपाति जोर भगद व यात्रात्राण के मध्य घम-प्रता का दो बार उल्लेख हुआ है। हा नवता है यह घम देवता घम ठाकुर ही है।—८ ८६ ८८।

सामाजिक प्रतिबिम्ब

(१) वरुण—अत्यंत प्राचीन काल से हमारा समाज चार वर्णों में विभाजित रहा है। हमारे महाकाव्यों में भी वर्ण व्यवस्था की भक्ति मिल जाती है। रामायण में चारों वर्णों और उनमें ब्राह्मण के श्रेष्ठ हान का वर्णन है। प्रत्यक्ष रामायण में वर्णानुसार आचरण पर भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जोर दिया गया है। किंतु साथ ही सभी रामायण लेखकों ने उच्च और निम्न वर्ण के सम्बन्ध के प्रथम दो प्रकार से किये हैं—(१) उच्चवर्णीय पात्रों वसिष्ठ भरत आदि का चढाल से स्नेह मिलन (२) अधूना को भी रामभक्ति का अधिकार प्रदान।

० असमीया रामायण की इस पंक्ति से घ्वनित होता है कि निम्न जाति के व्यक्तियों का वद पढ़ने का अधिकार नहीं है—हाडि जाति हुआ पढिबाक चास वेद। असमीया के जादिकाण्ड व लखक कायस्थ माधवन्द भी वर्णानुसार आचरण का उपदेश देते प्रतीत होते हैं। राम के द्वारा ब्राह्मण के गुण शम दम दान दया और क्षमा बना कर परशुराम से इन्हीं का आचरण करने के लिए कहा गया है। माधवदक ब्राह्मण से द्रोह न करने की बात भी कहते हैं।^१

इस रामायण में नट भाट तनी मानी त्ति ठगारि गोनारि कसार (कास्यकार) मेरु खारी (शयकार) बनिया चमार कमार (नाहार) सुतार (बढई) घोवा (घोबी) कु भकार जोर हाडि आदि जातिया का तथा छत्तीस जाति का नामोल्लेख भी है।

० बगला रामायणकार ने भी ब्राह्मण की श्रेष्ठता दिखाकर उसकी हत्या से विषम पालना की प्राप्ति बतायी है तथा पात्रों द्वारा उपदेश दिनाया है कि सदैव द्विज भक्ति करना। छुआछूत की भावना का प्रतिबिम्ब भी इस रामायण में मिल जाता है। हरिश्चन्द्र ने अपने को डाम के हाथ देखा किंतु विनयपूर्वक यह प्रतिश्रुति ली कि उच्छिष्ट भोजन खाने को न दिया जाए। दूसरी समस्या थी सुअग्रे के मन्मूत्र से स्थान स्वच्छ करने की। शूकरा ने स्वयं ही राजा को उबार लिया, वे राजा का ध्यान रखकर दूर मल मूत्र त्यागत थे। गीता राक्षसिया का छुआ अन्

१ असमीया रामायण छ० सं० ३१७६।

२ वही छ० सं० १४२२ एवं ३८०।

नहीं खा सकती थी, इसलिए इन्द्र उन्हें नित्य मुधाफल दे आते थे। अहत्या के ब्राह्मणी हान से लक्ष्मण राम का पदम्पश त्रेन में रोवत है।^१

० उड्डिया रामायण लक्ष्मण न भी परम्परानुसार ब्राह्मण की श्रेष्ठता का बणन किया है—देवता ब्राह्मणकु करिखिव भवति—७/२०७। उन्हनि वण-व्यवस्था एव यणानुमार कर्मों को भी स्वीकार किया है।^२ फिर भी कही कही ब्राह्मण के प्रति सुप्त-द्वेष उभर आया है।

उड्डिया रामायणकार का वण विद्रोह—अयोध्या के एक राजकुमार सत्यवत न ब्राह्मणकुमारी से भाग किया। ब्राह्मण ने राजा से शिकायत की राजा ने राजकुमार का दण्डित किया। राजकुमार के इस कथन द्वारा माना स्वयं लक्ष्मण अपने विचार व्यक्त कर रहा है—

राजाङ्कर भिप्रकु त ब्राह्मण निग्रह । ब्राह्मणर भिन्न कि राजाकु न योगाइ ॥

(राजा की पुत्री को तो ब्राह्मण ग्रहण कर लेता है किन्तु ब्राह्मण की पुत्री क्या राजा का नहीं मिन सकती—? १२१)

विश्वामित्र-वमिष्ठी सघष म वमिष्ठी तेजस्वी तपस्वी सिद्ध न हाकर सत्ता लालुप से दिशाय गय है। इसी प्रकार गया के पडा के रूप म भी ब्राह्मणा की निंदा है। विभीषण अपनी पवित्रता की साक्षी राम के सम्मुख देकर कहता है कि यदि मिथ्या भाषण करूँ तो कलियुग का ब्राह्मण बनूँ। वह कलियुग के ब्राह्मणा के विषय म कहना है कि कलियुग म ब्राह्मण नरक जाएँगे। य समय पर सध्या नहीं करेंगे।

इससे तो यह प्रकट है कि लक्ष्मण ब्राह्मण के परम्परागत गुणा का मानता हुआ उनका आन्तर करता है, किन्तु वह अपने कान के लोभा ब्राह्मणा से सतुष्ट नहीं है।

इस लेखक न भा अनक जातिया का नामालास किया है—तती तनी, ताम्बनी मानी, कुम्हार गुनिया (हनुवार्क) रानी आदि।

० तुलसीदास ने पुराणों की पद्धति का अनुसरण कर कलियुग का बणन किया है इस बणन म उन्हनि भारत की तत्कालीन सामाजिक स्थिति का विम्ब प्रस्तुत किया है—

वणाश्रम धम का पावन नहीं जाता है। कोई भी वेदा का अनुशासन नहीं मानता है दभिया न जनक पथा का प्रचार कर दिया है। जिसे जा मार्ग अच्छा लगता है उसी का अनुसरण करता है। व्यथ नववाग पाण्डित्य ममभा जाता है। नम और जटा बनाकर तापस कहलान वाला की सख्या बढ़ रही है। तपस्विया और विरक्ता के पत्र का मूल्य इतना घट गया है कि अधम-वण वाते तनी, कुम्हार, शपच विरात का न बनवाग आदि स्त्री मर जान और सपत्ति नष्ट हो जान पर सिर मुड़ा कर सयामी हा जान है और एसे निरुष्ट जीव ब्राह्मणा म अपनी पूजा करान है। सब

१ वगना रामायण पृष्ठ ११ १५७ ७५ पर उपर्युक्त विभिन्न प्रसंग।

२ उड्डिया रामायण ७६८।

का निष्पत्ति है। सामान्य मसारी व्यवस्था का शासन का समाज के प्रतिष्ठित नियमों द्वारा ही होगा। वे वषाथम इस के नियमों से छूट नहीं पा सकते।^१

डा० भवनिवाचन न तुलसीदास — भीतर ब्राह्मण-जाति के प्रति पक्षपात दिखा है।^२ अममीया समायण के जादियों — अतः काण्ड के लेखक द्वय वायस्य के एक उद्धिया समायणों पर गूढ़। इन तीनों ने ही ब्राह्मण तपस्वी एक गा के प्रति जादर व्यक्त किया है इनके निष्पत्ति क्या कहा जाएगा ?

(२) नारी— स्मृति शासित समस्त भारत में नारी विषयक दृष्टिकोण में अमान्य रही है — उसके विषय में प्रायः तीन प्रकार की धारणाएँ अपने समाज में रची हैं— (१) वह कुलवधू है, उस परिवार के सभी यक्षियों का ध्यान रखना चाहिए। उसके निष्पत्ति ही एक गति है। माँ की कुलवधू के रूप में उस कुछ सुविधाएँ भी दी गयीं। पति का अथवा पारिवारिक व्यक्तियों का आदेश लिया गया कि वह नारी को प्रभावित करें। (२) उस अवनत समझा गया तथा उस स्वतंत्र न रहने देना का उपदेश दिया गया। (३) वह चंचल अस्थिरसनीय एक पतन की आरंभ जान वाली मानी गयी।

आचार्य समायणों में यही दृष्टिकोण अध्याधिक रूप में व्यक्त है। पूर्वोक्तलीय जना का स्त्री अधिक प्रिय होती है अतएव वे उसके प्रति उनका उग्र नहीं है। मके जितने कि मत्त तुलसीदास।

अममीया समायण की गीता का उपदेश दिया गया कि स्त्रियों का भूषण स्वामी है। राम के वचन का कभी उल्लंघन न करे सवक्षण एक भित्त से सवा करना चाहिए। साग मसुर की गया करना चाहिए तथा देवर लक्षण की कभी अवहनना नहीं करना चाहिए। नारी की गति पति है अथवा देव नहीं—

नारी के पति से गति प्राप्त देव नहीं। १७६०

गीता के ताम्बिनी कुलवधू का चिन्तन कर नारी के प्रति लगन का सम्मान प्राप्त किया है किन्तु माय ही परम्परागत उक्तियों की दमन का मिलती हैं। वह निरक्षरणी स्त्री जाति पराधीन है पर स्वतंत्र नहीं है। स्त्री जाति चंचल और अस्थिर (उत्थावा) और पतन में पतन वाली है।

- १ अथ स्वभाव निदाण स्त्री जाति।
- २ माँ जाति पराधीन नाह स्वतन्त्री।
- ३ स्त्री जाति उत्थान गन्तव्य भाषि।
- ४ स्त्री जाति चंचल क्षण के उलटय।^३

१ डा० बमनीनारायण शुक्ल— मानस की रगी भूमिका की भूमिका, पृ० ६० की पद टिप्पणी देखिए।

२ डा० रामनिरंजन पाण्डेय— रामभक्ति-शास्त्र पृ० ३५२।

३ अममीया समायण— दण्डि प्रमथ छन्द मन्त्रा-३११८ ६३०१, ५११६ ५११५।

उसका रमण सुपदायक—नेक कहता है कि स्त्री के साथ रमण न करने पर जयम सुग कहता है ।^१ वह ब्रह्मा विश्वामित्र आदि महानुभावों के स्वतन्त्र स्वरूप मनाना का उल्लेख करता है ।

उसका स्पष्टीय मनोहर रूप—स्त्री के अधरों में अमृत है, मुख में चन्द्रमा नयनों में पद्मबाण । उसका यौवन स्वादु फल है उसकी गाद में जीवन सफल है । ब्रह्म ने उसे अत्यन्त यत्न से बनाया इसलिए उसका प्रमदा नाम दिया है । देवत ही पुत्र की माहित कर लेती है इसलिए उसका नाम वामा है । युवाओं को माहने के कारण उसका नाम युवती है । माह का सेतु होने के कारण वह वल्लभी है । उसमें कुटुम्ब उत्पन्न होता है इसलिए उसका नाम कुटुम्ब है और अग शाभा के कारण वह अगला है । भाग्य देने के कारण वह सौभाग्या (सउभागी) है । उसके सहयोग से पुत्र्य धर्म का आचरण कर पाता है इसलिए वह धर्मपत्नी है । बल न रहने से वह प्रवृत्ता है ।

यहाँ नेक ने उसकी सित्कटि मगनयन गजमोती-दत्त अर्णु अघर, तिलफूल-नासिका, कृष्णभ्रमर-वेश, वामधनु झूलता श्रीपत्र-पयाधर आदि का मोहक वणन भी किया है ।^२

नारी के दोष—इस लेखक ने भी नारी के दोष दिखाए हैं । मधु शय्या के दिन राम और सीता ने मामास्य नारी और तर के चित्र दाया का वणन कर प्रतिपादित कराया है, उस समय राम के शब्दों में नारी के ये दोष बताए गए हैं—तुम स्त्रिया का चित्त चञ्चल और अस्थिर होता है मन और प्रकृति में अन्तर होता है । विद्यावान् धनवान् कुलीन युवा वीर धर्मत्मा एवं अमध्य-सम्पन्न स्वामी भी क्या स्त्री के शृंगार की तुष्टि कर पाता है । अपनी स्त्री को प्राणा के समान मानने वाले भर्ता का भी युवती छाडकर विट-पुत्र (लम्पट) में प्रीति करती है ।^३ निर्दामिता सीता के शाक में दुखी राम का लक्ष्मण समझात हुए नारी की निन्दा करन है, उनके वचन का मार है कि स्त्रिया के कारण ही जो भयकर युद्ध हुए उनमें अपार अवगुण हैं स्त्रिया का विश्राम करना बड़ा दाप है ।

वई स्थानों पर बलरामदास का नारी-समुदाय जत्यन्त कामुक रूप में चित्रित किया गया है । जनकपुरी की स्त्रियाँ अत्यन्त प्रयत्न हाकर तथा समय खोकर काम भाव का प्रकाशन करती हैं । पूर्ववर्ती सारलतादास ने भी शृंगार भाव के विषय में नारी का मनावनानिक चित्रण किया है । सम्भव है इसमें देशकाल का प्रतिबिम्ब हो ।

वतिपय दाया के अतिरिक्त उरिया रामायण की नारी पुत्र्य की आदेश एवं

१ स्तिरी न रमिते ये जनम सुग बाहि । उ० ग० ७ ६३ ।

२ उरिया रामायण ७ ६३ ६४ ।

३ वही, १ २०४ ।

प्रियसगिनी के रूप में ही जगित चित्रित हुई है। तारी के गण स्वभाव का भी रूप प्रथम चित्रण है—जाती से भक्तिपर स्वन का तुल्य गुणों का सामान्यता का अनुभव स्त्रियो के प्रीय गण लभना (सीता शवर-नृत्याया से प्रीय करती या पथ में राम लक्ष्मण के पीछे छट जाती है) पति की जूठी पत्तन में सबके पश्चात् भोजन करना आदि।

० मानस में अनुसूया के मुँह से सीता को जो उपदेश दिये गये हैं उनका मार इस प्रकार है—

१ स्त्री को स्वन मन्ता पिता और भाई से अधिपति मान अपन पति को स्ना चाहिए।

२ पति के वद्ध गंगी रूप निषेध बंधे वस्त्रे प्रोधी और जत्यत दीप्त होने पर भी स्त्री को उमका अनादर नहीं करना चाहिए।

३ स्त्री के लिए तय किसी कारण पथ से अपमान को आवश्यकता नहीं है यदि वह मनसा-वाचा कर्मणा पति के चरणों से प्रेम करती है तो विना श्रम के ही उसका उद्धार होता है।

४ पतिव्रताचार प्रकार की होती है (१) उत्तम पतिव्रता यही है जो स्वप्न में भी परपुरुष का ध्यान नहीं करती (२) पति के अतिरिक्त अन्य कर्माग भ्राता आदि का पवित्र नाता जोड़ने वाली स्त्री मध्यम कोटि की पतिव्रता कही जाएगी। (३) कुल की गर्मान और धर्म की रक्षा के विचार से पतिव्रता का निर्वाह करने वाली निवृष्ट पतिव्रता है। (४) अधम कोटि की पतिव्रता समाज के डर से पतिव्रता बनी रहती है।

नारी का सहज स्वभाव—सती के रूप में तुलासीदास ने नारी के सहज कुतूहल भयवग गोपन वृत्ति उपशिता नारी की समुराज और मायके में दुदशा और पति व्रत का तेज आदि सज्जगुणा का वर्णन किया है। तुलासीदास की नारी का समझने के लिए मती और पावती का दगाग हागा। इन दो चरित्रों में तुलसी की युगीन नारी का चित्रण है। यहाँ सीता कौशल्या आदि पात्रों का उदाहरण नहीं रखा गया क्योंकि कहा जा सकता है कि राम के नाते तुलसी ने उनका उल्लेख किया है।

नारी के सम्बन्ध में जहाँ भी गोस्वामी जी बोलते हैं उसकी निरालाही की है। वह कपट अथ और अवगुण की खान है उसका मन का कोई नहीं जान सकता युवती नारी को चाहे हृदय से ही क्या न उगाय रहा वह विश्वगनीय नहीं कही जा सकती सुन्दर-वेश पुरुष का देखकर नारी द्रवित हो उठती है। उसमें साहस अन्त, चपलता माया आदि आठ अवगुण हैं। यानि यानि।

इनमें से अधिकांश कथन क्षुध पात्रों की उक्तियाँ हैं और कुछ संस्कृत श्लोकों के अनुवाक हैं। फिर भी गोस्वामी जी नारी के प्रति उदार नहीं हैं। तत्कालीन समाज और साहित्य में उद्धान शृंगार मर्यादों का अभाव दिया था इस स्थिति से व

सन्तुष्ट न थ । व गन परमग म आन थ । नारी बिरका-पुण्या का मानना भ्रष्ट भी करनी है इगीतिल उठान दीपजिगा मी ज्यानिमयी नारी के पाहक-सौंदर्य म पतग के समान जलभुन कर रात न हान के लिए मग को प्रबाध दिया है तथा नारी स दूर रहन क लिए उमकी निद्रा की है ।

गुलमीदामजी न जिग नारी की नि टा की है वह उहा क द्वारा वर्णित अधम बाटि की नारी हो सकनी है । डा० बलदेवप्रसाद मिश्र क कथनानुसार उगना प्रमदा रूप ही निघ है । अनजा जोर तनुजा म भद न एतन बाल कलिबाध के बहाल मनुष्या को भी उहात ग्नी छोडा है तथा नागी का कुदष्टि स दगन बाल का वध भी उन्हागे पाप नही माना है ।

इहाँहि कुदष्टि बिलोकइ जोई ।

ताहि बधे कट्टु पाप न होई ॥ मानस ४८८

(३) स्नान प्रसाधन - स्नान के पूर पूवाचलीय-जा प्राय तेल का सेवन करने हैं । इसरा वणन पूराचलीय रामायणा म भी भिन्नता है । विशेष अधसरा पर उबटन बन का उत्तम माना महिन सभी जालाघ्य ग्रथा म है । स्नान के पश्चात् चन्दन, जगु कस्तूरी जादि के लप का भी उल्लास हे ।

अनमीया और हिंदी रामायणा म नारी क प्रसाधन का विशेष उल्लेख नही है किन्तु बगला तथा विशपत उडिया रामायण का वणन कृद्य अधिक् रोचक और विस्तत है ।

गि दूर और काजल का प्रचार ता मार भारत म ही है किन्तु पूर्वाचल म विशेष रूप से है । नवधीय चरित की नारायणीय-व्यास्या म वर्णित है—

‘प्राच्यो हि मु दर्थो विलोचने नेत्रप्रातनिगतया कर्णोपात्तस्पर्शमाञ्जनरेखया भूपयनि’—१५ ३४ ।

बाजू भी पूवाचलीय-नारियाँ नना म कानल लगाकर उसकी नाकें बाना की ओर निवान देती हैं । उडिया रामायण म राम का वर-वश म प्रसाधा किया गया है, उस समय उनके बाना की धार काजन की नाकें निवाली गयी है ।

आलता—उडिया रामायण म सुरग आलता लगान का वार-वार उल्लेख ह । बेंगला रामायण म मित्रियाँ हिगुन स अपनी उगलियाँ रेंगती हैं ।

हिगुल—डा० गुरुमार सनन पत्र द्वारा मुझे सूचित किया था कि यह हरिताल स बना हुआ रग विशप होता है इसस प्रतिमा भी रेंगा जानी है उस काल की मित्रियाँ अपनी उगलियाँ इसी स रेंगा करती थी । उहाने इस पीत-वण माना है ।

किन्तु गरी समझ म यह रवन-वण था । भारतीय वद्य हिगुल के गुण-दाप

१ दीगशिगा सम जुवनि तन मन जनि होसि पतग, ३ ४६ ख ।

२ डा० बलदेवप्रसाद मिश्र—मानग—माधुरी, पृष्ठ १५५ ।

म परिचित हैं। यह तिक्त, कपाय और कटु हाता है, तथा चक्षुराग कफ पित्त, कुष्ठकर पीड़ा आदि के लिए रोगनाशक है। यह तीन प्रकार का हाता है श्वेत, पीत और रक्त। स्त्रियां जिस हिंगुल का प्रयोग करती थी वह रक्त-वर्ण का था। वगना-वोश इसे पारदगन्धक निर्मित घार रक्त वर्ण द्रव्य मानकर इसे रससिद्धर कहा है। मोनियर विलियम^१ भी इस ऐसा ही मानते हैं।

पत्रावली — गाला जीर उडिया रामायणा में पत्ररचना का वर्णन है। सस्कृत ग्रन्थों में इसके कई नाम हैं पत्रावली चन्दनचित्र, विणपक आदि। तलाट स्तन आदि पर फूँच-गतिमा क कटाव पत्रावली जयवा पत्रलता की रचना की जाती थी।^२

उडिया रामायण में इस पुष्परेखा (१ १७) और पत्रावली (४ ३४) कहा है तथा स्तन जानु जघन जीर नत्र पर इमक प्रयाग का वर्णन है।

अलकातिलका — वगना रामायण में उल्लिखित अलका तिलका भी एक प्रकार की पत्रावली थी। हिन्दी क विद्वाना—राहुल जी बाबूराम जी राक्सना डा० शिव प्रसाद सिंह श्री रामवक्ष बनीपुरी श्री वसन्त कुमार माधुर एक डा० गुणानन्द जुयाल आदि क मता का सङ्ग कर मैं इमका प्रथम चार जयोठार बिया था।^३ मुख पर गाराचन जयवा चदन की पत्रावली का अलकातिलका कहन थे। बंगला रामायणकार ने लिखा है—

बिन्दु बिन्दु गीरोचना गोभा करे प्रति ।

अलकातिलका रखा अद्द अद्द पाति ॥ प० २००

गभवदा सम्युक्त साहित्य में अलकातिलका शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। पुष्पवत् (१०वां शतक) जीर विद्यापति ने अपने काव्यों में इमका प्रयोग किया है। लगना है १५ वीं शताब्दी तक अलकानिनका का प्रयोग भारत के पूर्वाचल में प्रचलित था।

डा० वागुन्धरराज अग्रवाल ने कानिन्नता की अपनी सौमिनी ध्याम्या में अलकानिनका का यही अर्थ स्वीकार कर प्रस्तुत रूपक का अनुग्रहान किया है।^४

अगमिषा रामायण में स्नान प्रशालन का विषय वर्णन नहीं है। इम रामायण क आदि चरण और उतरकाण क लगन ता ब्रह्म क माय नारी शक्ति का स्वीकार ही नहीं करत इनम तुलनात्मक जी जमा ही समय लगा जाता है। फिर भी अगुण चन्दन कस्तूरी कुकुम का तथा गुग्गुलु त्रय से स्नान सिद्धर क मध्य चन्दन का प्रयोग काव्य निर्माता क प्रमाण का उल्लेख हुआ है।

१ ए सिन्दरमन आफ मन्नुरी विम गणक करमीवियन।

२ डा० वागुन्धरराज अग्रवाल—पत्रावली प० २०१।

३ कानिन्नता बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, प० ११७-११८।

४ डा० वागुन्धरराज अग्रवाल—कानिन्नता (मन्नाथी अग्रवाल) प० ८५।

बेंगला रामायण म स्त्रिया जावत का तल जोर उवटन (पिठाली) का सवन कर स्नान करती है। ग्णमी वस्त्र स पानी पोछ कर जलवार धारण क्रिय जात है। केशा म कधी कर फूला से चाटी गूँथती हैं। काइ काइ भूँगे के आच्छादन से सजाती हैं। सिंदूर और काजल का शृ गार ता करती ही है।

उडिया रामायण का प्रत्येक वणन विशेष रचि के साथ होता है। पवित्र जल म सौगभ द्रव्य भरकर पीढ पर बिठाकर स्वर्णकुभ से स्नान कराया। सुगंध तल सिर पर लगाया अगा पर पुष्पवास तल मला। तिल जावला के तेल का प्रयोग किया। जगुं कस्तूरी को मिला कर केशो म लगाया। कोमल पतले वस्त्र से अग पाछे। व्यजन द्वारा केश सुखा कर स्वर्ण कंध स वि यास कर पुष्पा से सजाया, उसके ऊपर कपूर कस्तूरी का नप किया। श्वेत पीत रग की पतनी (मूश्म ताडी) पहनी। परा म जालता जोर कुचा पर पत्रावली। कस्तूरी तिलक ताम्बूल, कज्जल और सिंदूर का प्रयोग क्रिया। अनक जलवार यथास्थान धारण क्रिय। शम्बर की पूँछ स केश प्रभावन का भी उल्लेख है। इससे पक्ठ है कि स्त्रिया कश्मि केशो स अपनी केशराशि का सघन बनाया करती थी।

चतुस्मम — उडिया रामायण म स्थान स्थान पर अगो म चतुस्मम के प्रयोग का वणन है। मानस म भी गलिया का 'चतुस्मम स सीचा गया है इसका अर्थ बताया गया है—च न, केशर कस्तूरी जोर रपूर म बना हुआ एक सुगन्धित द्रव्य।'

(४) सस्कार—समस्त भारत ग्ण म जत्य त प्राचीन काल स सस्कार का पालन हाता जाया है किंतु सस्कारा की सभ्या उनके आरम्भ का काल तथा पालन विधि म थोडा बहुत अन्तर रहा है। सस्कार मानस म उद्देश्य भी मुख्यत तीन रह हैं—(१) गर्भावस्था की अशुद्धि दूर करना, (२) हर्षोत्सव नाना और (३) सतति का विस्तार करना।

गौतम ने सस्कारा की सभ्या ४० बतायी है, जिनम ब्रत जोर यत्ता स सम्बन्धित सस्कार छाट दिए जाएँ ता मुख्यत १० रह जात हैं—गर्भाधान पुसवन सीमन्तान्तरण जानकम, नामकरण, अनप्राशन चूडाकम उपनयन, समावतन और विवाह।'

कई स्मृतिकारो न प्राय पाडश सस्कारा का उल्लेख किया है जा गर्भाधान से प्रारम्भ होकर श्मशान तक चलत हैं। बस किसी किसी न प्रारम्भ विवाह जयवा अथ किसी सस्कार स भी माना है। सोलह सस्कारा म यदि ब्रत चतुष्टय का निवान

१ उडिया रामायण १, १८३, ८५ ३ १८ ४, ३४।

२ वागुववशरण अग्रवाल ने कीर्तिलता की टीका (प० १४५ ४६) मे 'चतुस्मम' शब्द का विस्तृत परिचय दिया है।

३ पी०वी०वाण—हिस्ट्री आफ़ धर्मशास्त्र, बाल्युम २, पाठ १—१६३।

दिया जाए तो शेष तिन १२ सम्कार रह जात ह जिनम अधिनाश सारे दश म प्रचलित ह ।

इनके समागत वणन क पूव रामायणा म वर्णित सम्कार के विषय म यह वता नेता उचित है कि इन लखना न सस्कारा की सूची अथवा उनका विधि-विधान पूवक अनुष्ठान प्रस्तुत करन की चेष्टा नहीं की है । क्या क मुख्य पात्रा—विशेषत राम के साथ होने बान सस्कारा की एकाध भलक द ती हे ।

(१) गर्भाधान— स्त्री क प्रथम रजस्वला हान पर अथवा विवाह क तीन दिन पश्चात चतुर्थी त्रत क तिन स्त्री के पाय समागम किया जाता ह । मन पड़न हुए सतान की कामना स ही यह सस्कार किया जान का विधान हे ।

कवन असमीया रामायण म गर्भाधान का वणन हे । पुनकामना स राजा न तीना रानिया क पास जाकर रत पात्र किया (छ० ६५२) ।

(२) पुसवन पुन सतान की कामना स गभ क ततीय मास म वछन पात्रा गाय का दही अतवस्त्री को गिलाया जाता हे । इम सस्कार का समय किसी किसी स्मृतिकार न ५७ या ८ व मास म माना हे ।

असमीया रामायण म पुसवन मात्र मास म किया गया । देवताशा स प्राचना की गयी कि गभस्थ शिशु की रक्षा कर । (छ० ५६६)

उडिया रामायण म पुसवन शक मास का प्रयोग है । (१५८)

(३) सोम-तोषण— गभवती की गभ-रता के लिए यह हर्षोत्साहपूर्ण सस्कार मनान का विधान है । इमका अधिनाश प्रसार नहीं है और रामायणा म भी इमका वणन नहीं है ।

(४) जानकम— जानकम सम्कार सतान क अ न लन और उसके पश्चात भी कुछ तिन क विभि विधाना स सम्बन्धित है । नाडीच्छेद, शिशु का स्नान उसके मुख म शहद-ही देना और मा का स्तन दान आदि कम सम्पादित किय जात ह ।

असमीया रामायण म शिशु का गुर्गा घत शीतल तल म स्नान करान क पश्चात दुग्ध पिनाकर कोमल शय्या म गुनाया गया ह ।

असमीया रामायण म जानकम क सम्प्र व म १ अ व प्रयाण शि गयी गयी है — १ पछी और २ आठबीडे । जम न छरे दिन पछी-पूजा और निशि जागरण किया गया । यह सस्कार त्रिती भापी क्षत्र म भी मनाया जाता ह जिस छरी कहन है । इम दिन रात्रि-जागरण किया जाना है क्याकि विश्वागानुमार र्ग तिन ब्रह्मा शिशु की भाग्य विधि तिमन ह । आत्मीय प्रथा का अरत न ताम तहा किया है कवन यत्र तिरा ह कि शिशु-जम क आठमें तिन राजा न आठ लडवा का बुतार उहे आठ प्रकार का भुना पूजा अत एव कपड माना जाति वस्तुन दान का ।

बगल म जाज भी इस प्रया का प्रचलित रूप इन प्रकार है - नवजात शिशु के मगल के लिए जाठ बालक बुलाय जाते है । सूप म जाठ प्रकार का भुना हुआ अन रखकर सूप पीटा जाता है स्त्रिया यह भी कहती जाती हैं— 'आटकौडे, आटकौडे छल, आछे भाला ।' फिर अन सहित यह सूप बालका का द दिया जाता ह ।

उडिया रामायण म नाभि-नाडि छत्र, स्नान कुकुम-लेप का वणन है । पठी विजिति (पठ्ठी दबी)की बकर और भैस की बलि देकर पूजा करने एव काथ (गुदडी) पर मीनाघतार के अकित करन का भी उल्लेख है । अष्टदिन के विधि विधान का नाम लेकर रानिया क स्नान प्रसाधन का वणन है । हा सकता है अष्ट दिन का विधान बगला के आठकाडे जसा ही हा ।

मानस म जातकम क दिन धूमधाम का वणन ह । मानसकार न अपन जय ग्रय गीतावली म छठी के दिन निशि जागरण भी दिनाया है ।

(५) नामकरण—प्राय दमवें तिन शिशु का नाम दिया जाता है । असमीया और उडिया रामायण म 'नामकरण का नाम तो नहा है किन्तु शिशुआ के नाम रखे जात है । बेंगला रामायण म जादा प्रागन क दिन ही नामकरण हाता है । मानस मे कुल-पुत्रोहित का बुलाकर नामकरण सम्कार कराया गया है ।

(६) अन्नप्रागन—प्राय छठे महीन म शिशु का पका हुआ अन खिलाया जाता है । कवल बेंगला रामायण म आदन प्रागन के नाम से इसका वणन है । राजा दगरथ न पुत्रा का माद म लकर मिष्ठ अन्न एव जन दिया ।

(७) कण्ठरेव—बगला रामायण जार मानस क क्रमश अरथ्य एव जयाघ्या काड म कगवन का नामो नल हुआ है । उडिया रामायण म ढाई वष की जायु म कर्ण वन किया गया, कुछ दिन म कान सुन गय और बालक लटकन हुए स्वर्णानवार पहन कर घूमन लगे ।

(८) चूडाकम—शिशु के गभ-वश मुडित कर प्रथम बार चाटी रखी जाती थी । यह सस्कार तीसर या पाँचवें वष म होता था और इमी दिन स विद्यारभ होना था । वहा कही भद नी दया जाना है । चूडकरन का नाम केवल मानस म है । बेंगला और उडिया रामायणा म पाँचवें वष म विद्यारभ की प्रथा का लखी छूना बता कर वणन है । मानस म विद्यारभ यनापवीत के पश्चात बताया गया है (मानस १ २०३ ३,४) ।

(९) उपनयन—केवल बगला रामायण आर मानस म उपनयन सस्कार का नाम आया है ।

(१०) समायत्तन—वर्णधयन समाप्त कर गुरु-गृह मे लौट हुए छात्र के लिए समायत्तन सस्कार होना था । वह इस तिन स्नान कर स्नानन कहाना था । घर पर अध्ययन करने वान अथवा आजम ग्रहाचारो रहन बाल छात्र क लिए मत् सस्कार आवश्यक नही था । केवल उडिया रामायण म इसका नामोल्लेख है—१/५८ ।

(११) विवाह—इसका रोज वणन अलग से होगा।

(१२) अस्वेष्टि—सभी रामायणा में दाह क पूरा शय का स्नान, नती के किनारे चिता निर्माण सुगंधित पदार्थों का छिड़कना तपणगन आदि का समान वणन है।

विवाह सस्कार तथा रोजक पद्धतियाँ

वरवधू की साज-सज्जा मंगल उत्सव छायामण्डप क नीचे बेनी के पास पनादि कयादान सखियों का हासपरिहास कया की विदा और वधू स्वागत आदि के वणन सामायत सभी आश्लेष्य प्रथा में मिलेंगे। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष पद्धतिया का भी वणन प्राप्त होता है।

० असमीया रामायण में सक्षिप्त पद्धति का अवलम्बन कर लौकिक और बधिक व्यवहारों का चित्रण है। बरात की आगवाढ़ि (अगवानी) हुई अधिवास हुआ (इसका स्पष्टीकरण आगे होगा), सधवा स्त्रियों ने चारों वर-वधू को स्नान कराया, दिय वस्त्राभूषण पहनाये और हाथ में फूल कटारी और दण दिए। राजा कया सम्प्रदान के लिए बटे। तिल-कुश के साथ राजा ने राम को जानकी समर्पित की। स्त्रियों ने उरुलि(उलुध्वनि) जोर जयकार किया। गज गौ मणि, घस्त्र आदि दहेज में दिये गये। वर वधू ने पुष्प शय्या मनायी प्रात काल स्नान-दान कर वासिबिही^१ हुआ। वधू को शिक्षा दी गयी। अयोध्या में दूर्वा पुष्प और अक्षत की वर्षा के मध्य 'उरुलि ध्वनि' के साथ वधुओं का स्वागत किया गया। दीपघटों की शोभा के बीच सातों ने वधुओं का हाथ पकड़कर गृह प्रवेश कराया।

० बंगला रामायण में विवाह पद्धति तथा अनेक बधिक लौकिक प्रथाओं का विस्तृत वणन है।

अधिवास—विवाह के एक दिन पूव वर-कया का अधिवास किया गया। कुशासन पर विराजमान पुरोहित ने ययाविधान घट स्थापन किया। घट के ऊपर आम्रपत्र और नीचे दूर्वा और धान रखे। ब्राह्मणों की वेदध्वनि के मध्य नाना आभरणों से सज्जित कया आकर स्वण पाट पर बठी। ब्राह्मण ने वेद मंत्र पढ़कर कया के ललाट पर सुगंधित किया। उसे अनेक प्रकार के वस्त्रालकार प्रदान किये गये। जल धारा के साथ कया का घर के भीतर भेज दिया गया। उडिया रामायण में भी अधिवास का वणन है।^२

छौर-कम के उपरान्त वर को यज्ञोपवीत देकर ललाट पर चन्दन लगाकर नूतन वस्त्राभूषणा से उसका भी शृ गार किया गया।

१ दक्षिण आग—बंगला रामायण का वासिबिये।

२ तण्डुलकु मिशाइन अधिवास सारि, १, १६७।

चण्डीमगल-वाधिनी' म लिखा है कि एक ढाला (सूप) म २० मगल द्रव्य रख कर अधिवास किया जाता था। वरवधू व पक्ष म यह प्रथा हिन्दी भाषिया व चढावा प्रथा जसी है। बगल म प्रतिमा का भी अधिवास किया जाता है। अभिपक्व के समय राजकुमार का भी अधिवास किया जाता था।

हरिद्रा—माता वर के हरिद्रा लगाती थी और सगियाँ उसक भ्रगो म पिठाली (पिसा हुआ चावल)। य दाना वस्तुएँ उबटन थी। हरिद्रा लगान का गाये हनुद (गात्र हन्दिद्रा) कहा जाता है। पवित्र जल म स्नान व पश्चात वर के हाथ म माल-सूत्र बाधा जाता था। तत्पश्चात घूम घूम से वरयात्रा प्रारम्भ होती थी।

छायामण्डप—इसके नीच पहुंचकर वर ब्राह्मणो को प्रणाम करता था। यहाँ सखियाँ वर का वरण विधान करती थी। रामायण म लिखा है कि स्त्रियां ने परा पर दही और माये पर दूर्वाधान प्रदान कर यह विधान किया।

आज भी बगल म स्त्रियां वरण ढाला सजाती है। यह वाम का सूप होता है जिस 'कुला कहते हैं इसम पुष्प दूर्वा और चन्दन आदि रखकर उपयुक्त प्रकार से वरण विधान किया जाता है।

इसके पश्चात दोनो कुला के पुराहित अपने-अपन पत्र का शाखीच्चार करते थे। वर-वधू के पिता परस्पर विनीत वचना द्वारा स्वागत करते थे।

रथमी वस्त्रो म सर्वांग ढँक कर कन्या मण्डप व नीच आकर वर के चरणो म पुष्पाञ्जलि अर्पित करती थी फिर सात बार उसके आस पास प्रदक्षिणा करती थी।

गुभदष्टि—यह बगल की एक मधुर प्रथा है। वर-कन्या प्रथम बार इस अवसर पर एक-दूसरे को देखते हैं। इस रामायण म दशरथ और कौशल्या परस्पर गुभदष्टि करते हैं। राम-सीता के विवाह व समय गुभदष्टि का वण न इस प्रकार है—

अन पट घुवाइल घत ब-घुगण। सीता रामेपरस्पर हैल दरगन ॥ प० ८७
बगल म इस समय गुभदष्टि मतान की प्रथा इस प्रकार है—वर वधू दोनो की आँवो पर इस प्रकार पान बांध लिय जान है कि जब उह आसन-सहित ऊपर उठाया जाता है ता उनको दष्टि परस्पर मिल जाती है। उनके सिरा पर वस्त्र भी ढाल दिया जाता है ताकि अय लाग न देख सकें। बँगला रामायण व वणन से प्रतीत होता है कि इस प्रथा के समय वर-कन्या के मध्य वस्त्र की ओट कर दी जाती थी इसके पश्चात व-घुगण वस्त्र को हटा देते थ ताकि वर-कन्या परस्पर-दशन कर सकें।

गुह्यपूत्रो म इस प्रथा का वण न है, तथा दशका नाम परस्पर-समीक्षण लिया है। भास्वलायन गह्यपूत्र परिशिष्ट १ २३ का वण न बँगला रामायण व वण न स

१ चारुचंद्र वचोपाध्याय—चण्डीमगल-वाधिनी, प० १७८।

मिनता है। उमम निगा है गव ग पहन वर छोड़ कया क थीन एक वस्त्र स आ कर दी जाती है। फिर शुभ मुहूर्त म वस्त्र हटा लिया जाता है और दोनों एक-दूसरे को दसने हैं।^१

पंथीपूजन तथा हास-परिहास—पंथी मत्ता प्रजात्री म्नी है। सतिया न सीता को अपकार पूण प्रवाण्ट म निटाकर राम स कहा सीता का हाथ पक कर उठा नाआ। सीता न गव नूनी बजातर सबन कर दिया कि हाथ यही है उह भय था कि वही राम ग्रधरे म उनो तरणा पर हाथ न रग दें। सतिया न राम स परिहास करत हुए कहा, तुमन पैर पकड कर उठाया है।^२

इसके पश्चात कयावान हुआ।

बागरपर—सगियाँ एक कमर का तूख सजानी है इत ही बागरपर (८७) बहो है। नवधोषचरित (१६ ६६) का कौतुकागार यही था। सगियाँ रात्रिभर वर-कया को बागरपर म बिठानकर हास परिहास करती रहती हैं और उह सान नही देता। प्रात कान वर सतिया का अपनी स्थिति क अनुसार धन प्रदान कर ही उठ पाता है।

वासिचिये—इमका शास्त्रिक जय है वासा विवाह अर्थात् विवाह का दूसरा दिन। बंगला रामायण म इमका नामोल्लग है—प० ३५। वास्तव म विवाह इमी दिन पूण माना जाता है कयाकि इमी दिन सप्तपत्नी, वरकया की प्रतिज्ञा आदि प्रयाए सम्पन्न होती ह।

बिदा स्वागत और मुखवशन—कया की माता ने गुरुजना की सेवा का उपदेश दिया। अनुदौन म बठकर कया समुराल आयी। सजल-स्वण कुम्भ ज्वलत घत-दीप कदत्तिलम्भ एव अनेक वण की पताकाआ क शोभा सभार के मध्य तूयनाद के साथ बधू का स्वागत हुआ। उसके बक्ष म बनसी देकर मस्तक स खील और केला गिरात हुए गह प्रवेश हुआ। शुभ क्षण म गुरुजना न अलकारादि देकर बधू का मुल दशन किया। प० ८८ १०।

कालरात्रि^३—वासिचिय क पश्चात वर कया की रात्रि कालरात्रि कहलाती थी। बगाल म आज भी कालरात्रि क दिन वर कया साथ साथ शयन नही करत। दशरथ ने यह नियम नही माना सुमित्रा के साथ शयन किया इसीलिए वह दुभगा हो गयी। बगाल म कालरात्रि का सम्बन्ध बेहुला की कथा से माना गया है। इसी

१ पी० पी० काण— हिस्ट्री आफ धमशास्त्र वाल्यूम २ पाट १, पेज ५३३।

२ हिंदी भाषी क्षत्र की मधुर प्रथा के लिए दखिए कृत्तिवासी बगला रामायण और रामचरितमानस पृष्ठ १०२।

३ कालरात्रि का वणन स्व० दीनेशचन्द्र सेन सम्पादित बगला रामायण (४२) म हुआ है रामानन्द चट्टोपाध्याय इसे उठा गये है।

रात को देहना (स० विपुला) के पति की मृत्यु सप्त-दश से हुई थी। कामिबिम्बे के दिन ही विदा हो जाती है। इसी दिन का रात्रि के समय वरवधू अनग रहत है। वर-कन्या के घरों में दूरी होने पर कालरात्रि माग म ही धीत जाती है। आजकल ट्रेन के टिके म मना ली जाती है।

वगान की यह प्रथा गह्यसूत्रा म वर्णित 'त्रिरात्रिवृत' का ही परिवर्तित रूप है। आपस्तव (८८ १०) और चौघायन (१५ १६ १७) गृह्यसूत्रा म लिखा है कि वर-कन्या अपने मध्य म सुगन्धि-लेप-युक्त उदुम्बर-काष्ठ रखकर साँएँ। चौथे दिन ऋग्वेद के मन्त्रा के माथ इसे पानी में फेंक दें। तीन दिन तक रोना की छटपटा कर चक्का चक्की जैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता होगा। इसीलिए इसे वगान म कान रात्रि कहने लगे हगि। क्योंकि इस दिन वगाती नव-म्पती को भी रात्रिकान का चक्काचक्की म्पती बनना पड़ता था।

कुमुम-गव्या—वगाल म सुहागरान की प्रथा कुमुम शय्या अथवा फून शय्या कहनाती है। दशरथ जीर मुमिन्ना के विवाह के समय कुमुम शय्या का वर्णन है। 'उत्यान कौडि' नेग का भी वर्णन है, जिसे आजकल 'शय्या तुलुनि' कहते हैं। प्रात-कान सखियाँ वर से नेग मागती हैं। पुराने समय में यह नेग कौडियो में दिया जाता था, इसलिए इसका नाम 'उत्यान कौडि' हुआ।—पृष्ठ ३५।

उडिया रामायण का वर्णन भी विस्तृत है, उममें माज-सज्जा एव मामाप्रियो का भी अधिक वर्णन है जिसे छोड़कर पद्धति का चित्रण ही यहाँ किया जाएगा। इस प्रदेश म भी मुद्दत जीर वर-कन्या की राशिया का विचार किया जाता था। जसा कि शांता और ऋष्यशृंग के विवाह के अवसर पर प्रदर्शित है।

वनपुर द्वारा वधू मुखवर्णन—भीता जनक की गोद म बँटी। म्त्रियो की हृति हृति, ज्योतिषिया का मंगलाष्टक-पाठ ब्राह्मणा की वेद ध्वनि एक साथ मुनारी पनी। वसिष्ठ ने गोनोच्चार किया। दशरथ न अपन हाथ से सीता के कपान म वस्त्र हटा कर उह माता के समान देखा शिर पर चन्दन-लेप कर केशा में कुमुम खासा अरक वस्त्रालकार भी प्रदान किये।

वर की सज्जा—माताएँ हटवडाकर कहने लगीं प्रात होने को है जब पुत्रा की तयारी बस हो पाएगी। सात-सात कनक त्रेकर श्रेषेर ही श्रेषेरे जन भर नायीं। इस चीर पाणि से राम नहलाये गये। उह देवाग वस्त्र पत्ताकर भीतर से जा कर दशरथ की गोद म विठाय गया। नूपुर आनता, वज्जत आदि म राम का शृंगार हुआ। चन्दन-नूपुर से ललाट पर चित्रक किया गया।

प्रस्थान का शकुन—विप्रनारी-गण ने दूर्वाभत फेंककर माताजा ने गिर

१ विशेष वर्णन पत्रिये—वृत्ति० व० रा० और राम० मानम की पाल्तिष्णी, पृष्ठ १०४।

सूयन्तर सधवा स्त्रिया न ऋषि, मत्स्य राजह्य वराघात पून कंभ आर्त्ति निया कर शानुन किया ।

हास हरिहास हल्दी लेप—राम का कर्त्ती क पाग बिटारन वरग द्रद्र त्रिगान और नवग्रह की पूजा आर्त्ति क त्रिगात क परगात् त्रिया त मगत धरति करत हुए राम के शरीर म हल्दी का लेप किया । व काम त्रित्तन हास्य अशोच घट्याण करने लगी । दागियाँ दशरथ क भी पात गयी त्रित्तु हल्दी लगात 'वा गाह्य नही हुआ । उहाने स्वय ही उत्साहित त्रिया तो डाकी धना दाढ़ी म हल्दी लगा ली गयी । ऋषि भी नही छाडे गये ।

सयल-चउरी—गभी वर्यात्री स्नान पर भाजा पर बठ । कया क पिता ने वडे यत्न और जाग्रहपूवक सवया भोजन करामा । द्रगक परधात फिर वर-वधू मध स्थान पर एकत्र हुए । वधू ने वर के ऊपर तवण और तावन कीे ।

हिन्ती भाषी क्षेत्र म बहिन वर क डपर गर्नमक उतार कर पेंकती है जिस राईलोन या राईन्नून कहते हैं उद्देश्य हाता है वर पर कुदृष्टि न पडन देना । वर के स्वागत के त्रिए तथा विवाह म अपनी सम्मति प्रकट करन क त्रिए कया-चारा वर के ऊपर चावल फेंके जाते थ । तगता है उडीता की उपयुक्त प्रथा इन दाना प्रथाआ का सम्मिलित रूप सा है ।

कयादान—वरवधू का गोद म सपर उनके पिता बठ । वसिष्ठ ने कुल गोत्र पढा और राम की दक्षिण भुजा पकडी । सीता के हाथ म अक्षत पुष्प देकर और मत्र पढ कर वुश बाधा । जनक न शय म पानी भरकर त्रिया और उराने राम को सीता सोपी ।

प्रेम श्रीडाण

छूत—सीता और राम कीरिया पेंककर गुआ सेतने लग । दोना के सखा और सविया ने कहा जो हारे वह दूसर का सक्क बने ।

सहभोजन—दोना साथ साथ भोजन पर बठ । सीता रत्न चूडियो म राम का रूप देखकर मुग्ध रह गयी और खा नही रही है । सखियाँ रामभती हैं कि राम द्वारा जूटा किये जाने के कारण सीता नही खा रही हैं । वे समझती हैं कि स्त्री-पुरुष एक होते हैं ।

मधुशय्या—सीता को राम के पास ले जाती हुई सखियाँ उनसे गुप्त बात कहती जाती है—राम तुम्हार प्राणेश्वर ह आज की रात उहै मना लना । मधु शय्या के दिन जो नारी अपा स्वामी को तुष्ट करती है वह सदा प्रसन्न रहती है । जो रोप उत्पन्न करती है उसके प्रति सदा स्वामी का अमय रहता है । ब्राह्मणा ने तुम्हें वुश से बाधा है तुम उनकी दासी और प्राणगयी हा । व सीता का केलि त्रिया भी समझती हैं । राम के पास पहुचकर सखिया बगना बनाकर सिगर जाती हैं । राम सीता के प्रति प्रेम की शारीरिक अभिव्यक्ति कर सहयोग करने का जाग्रह करत है ।

चतुर पत्नी की प्रतिज्ञाएँ—सीता राम से प्रतिष्ठा करा लेना चाहती हैं। राम भी स्त्री को चंचला समझ कर प्रतिष्ठा करा लेते हैं। इसका रोचक वणन कथाभा के तुलनात्मक अध्ययन वाले अध्याय में होगा।

० मानस में शिव पावती एवं राम सीता विवाह की पद्धतियाँ मिला दी जाएँ तो जो रूप सामने आएगा, वह ज्या का त्या आज भी गाव गाव में प्रचलित है। इन वणना में लोक-जीवन का सजीव चित्रण हुआ है। जनना में मानस के प्रचार पाने का यह भी एक कारण है।

समनपत्रिका—नक्षत्र, घड़ी एवं दिन शोध कर मूहृत निर्धारित किया जाता था। क्या पक्ष का पुरोहित वर पक्ष के पास पत्रिका ले जाता था। वर-पक्ष का पुरोहित उसे सबके सामने पढ़ कर सुनाता था। जनक प्रकार की वाद्य ध्वनि, सुमनवर्षि एवं मंगल-नलसा की सजावट से प्रसन्नता प्रकट की जाती थी। (१९०४८)

वर को सज्जा और शोभायात्रा—मुकुट, मोर कवण और कुन्ल से वर का शृंगार किया जाता था। अनेक प्रकार के वाहना की शोभायात्रा चल पत्नी थी। सखा लोग वर के साथ उपहास करते चलते थे।

अगवानी—बरात आ जाने पर क्या पक्ष के लोग वर पक्ष का स्वागत वर उन्हें जनवासा देते थे। कहार लोग कावर भर भर कर भोज्य पदार्थ पहुँचाते थे। घरा में स्त्रियाँ उत्सुकता के साथ जानने की चेष्टा करती थी कि बरात कमी आयी है वर कसा है। और कही यह बात हुआ कि वर बूटा है कुरूप है अथवा पागल है, तो कुहराम मच जाता था। बेचारी क्या की माता क्या का लेकर एकांत में बठकर राती थी विवाह के मध्यस्थ को कोसा जाता था।

मना हृदयें मयउ दुषु भारी ।
ली ही बोलि गिरीस कुमारी ॥
अधिक सनेहें गोद बठारी ।
स्याम सरोज नयन भरे बारी ॥
जेहि विधितुम्हहि रूपु अस दोहा ।
तेहि जड ग्रह बाउर कस कीहा ॥^१
नारद कर में काह बिगारा ।
भवनु मोर जिह बसत उजारा ॥^२

द्वारचार—शुभ मूहृत विचार कर बरात क्या के द्वार पर प्रथम बार जाती थी। सजी-बजी स्त्रियाँ गीत गाती हुई परिछन्न की तयारी करती थी। वरकी आरती कर अध्य दिया जाता था, तब वर को मंडप के पास आसन पर बिठाया जाता था। वहा

१ मानस, १९५६८।

२ वही, १९६१।

उगानी आरती की जाती थी। समधी भी पररपर भेंट पर मद्य के पान आने थे। सभी बरातियों का सम्मानकर आसन दिया जाता था।

प्राणिग्रहण और ब्यादान—रातियों मगनमान करती हुई ब्या का मद्य क पास ले आती थी। दोना ओर के कुल-गुण आचार कराने थे। गौरी ओर गणपति की पूजा करायी जाती थी। ब्या के माता पिता वर का पत्र प्रदानन करत थ।

बरब्या के कुल गुण दाना के हाथ मित्राण गातोच्चार करत थ। कुल और जल के साथ ब्या का पिता क दान करत था। त्रिधिपूजक बर-ब्या की गठ जोर कर भाँवरें डाली जाती थी। सबना उचित नम दन के पश्चात् बर ब्या की माँग म सिद्धूर भरता था। अब गुण की जागा स बर रघू एकागत पर बटा थ।

लौकिक आचार—बदिक आचार की समाप्ति पर रातियों मगनमान करती हुई बर वधू को कोहबर (वाप्टर) के निण ल जाती थी। दोना को आगना पर बिटा कर हास परिहास के साथ लहकौर (लघुकौर) करायी जाती थी।

कोहबर—मानस म बेबन इतना लिगा है कि रातियाँ बर वधू का कोहबर म ले आयी और शारदा आदि सखियाँ बरवधू का लहकौर सितान लगी। प्रथा यह है कि एस समय बर सोन की सलाई के दो अनग अलग जलती हुई बतिया को मित्राकर एक कर देता है। लहकौर म बर वधू अपन अपने हाथ पर खीर अथवा मिष्ट पन्थ रखकर परस्पर सिताने है।^१

जेबनार—जेबनार के लिए सभी बरातियों को बुलानर तथा उनके चरण पखार कर उह पीढे पर बिटाया जाता था। बर के पिता के चरण स्वयं ब्या का पिता पगारता था। सबके आगे पत्तल डालकर अनेक प्रकार के व्यजन परोस जात थे। इस समय स्त्रियाँ बराती पुरपा तथा उनकी स्त्रिया का नाम के के कर गाली के मधुर गीत गाती थी। आचमन के पश्चात पान चवाने हुए सभी बराती जनबासे लोट जाते थे।

ब्या बिदा—ब्या अपने पोषित पगु प ती माँ-बाप सखिया आदि से भेंटती थी। बड़े बड़े धयशानी पिताओ का धय भी एग समय भाग गाता था। माँ अपनी बटी को योग्य वधू बन कर सभी की सेवा करन का उपदेश देती थी। बार-बार हृदय से लगाकर बटी को पानकी म बिटा दिया जाता था। दाना पक्षा के लोग भी आपस म सम्मान प्रदर्शित कर बिटा होते थे।

वधू स्वागत—बर पदा की म्त्रियाँ हरिद्रा दूर्वा दधि पान सुपाडी अक्षत आदि मागनिक वस्तुएँ ले कर वधू का परिचलन कराती थी। पुर नारियाँ अगना कुतूहल दमित न कर पाती थी के पानकी का उपार हटाकर बार-बार नव-वधू का मुख देखा करती थी। बर-वधू को अघ्य पाँवड देकर भीतर ने जाया जाता था वहाँ आरती धूप-दीप और नवय से उनका स्वागत होता था।

प्रेम श्रीडाएँ

चतुर्थी—मानग म तिया है—'मुदिन साधि बन कवन छार ।' 'चतुर्थी का नाम नहीं तिया है किन्तु जिम पद्धति के अनुसार कवण छोटे गात हैं उसे 'पतुरभी कहते हैं । यह 'चतुर्थी का ही विवृत रूप जान पन्ता है । धम शास्त्रा म वर्णित 'चतुर्थी नम' म प्रयत्न हाता है, इसी दिन वर प्रयम वार अपनी पत्नी से गमायम करता था । हिंदी भाषी क्षेत्र म भी 'चतुर्मी' व पश्चात ही वर-वधू की भेंट होती है । बगान की 'कानरात्रि' के बघन म समान ही बघन लग जाता है ।

चतुर्मी के दिन प्राय विवाह मन्वन्धी मभी मगल विधाना की समाप्ति हाती है । ब्राह्मण पुराहित इस दिन वर-वधू म अपना मामन बिठा कर हाग-जीत के कुछ भेत्त करता ह । वर-वधू के बघु-बाघवी नाग दोना के कवणा म अनक गाठें लगा दा है । इन दाना म जा एक दूगर की गाँठ रही रोल पाता वह हारा माना जाता है । धुने नुण कवणा के माथ वर के किमी स्वर्ण-आभूषण को ऊपर उछानना वर-वधू का उठ छीनना, शरना जीनना, दाना का एक-दूगर की पीठ पर सात गात बाटे लगाना, वधू का जाटे की मछ नी का घुमाना और वर द्वारा सीक के बाण स लक्ष्य-वध करना आदि अनक प्रयाएँ सम्पादि की जाती हैं ।

(५) मनोरजन—मनारजन के अनेक मस माघन हैं जा समस्त दश म समान रूप मे प्रचरित हैं । चारा गमायणा म भी कुछ मनोरजना का वणन हुआ है ।

असमीया रामायण म नटी का नाट पक्षी-मालन, पामा भेदना, और मल्लयुद्ध के माथ कुछ खेला का भी वणन है जिवा मन्वन्ध वच्चा से अधिव है—कपडे की बनी गैर का खेल (भण्ण टाप) गोवी का मेन (भ्रुण्टि) बवाल ग्वानिन (गुवाल गुवाली) ।^१

बैतला रामायण म रामादि की दिनचर्या-वणन म तत्कालीन कुछ मनोरजना का परिचय मिल गाता है—मल्ल-विद्या गुल्नी डडा (गुलि बाडा) लाठी का खेल (नाटरि) एक मगया । (प० ६३)

उडिया रामायण म अनक मनारजना का वणन—नत्य गीत नाटय, मेला-युद्ध घुट-जैट क्यूतर उहाना जम्पशस्त्र का अभ्यास मल्लयुद्ध, रात म कथा कहना सुनना, जलप्रीला, पामा, शकटा' नामक छूत श्रीला जो अब ताशा से सेवी जाती है । मगया का विमल-वणन यहा सक्षेप म प्रस्तुत है ।

मगया का सजीव वणन—राम तूणीर म बाण भर-वर घाडे पर आरुढ हा कर चने । लाधा, शवर आदि शिरारी माथ म चने । शादू ना को बाग कर लिया गया । शिरार की सामग्री—रम्मी काठ कीला आदि माथ म ल लिय का म आग

१ मानग १-३५६ १ ।

२ असमीया रामायण, छ० ४०७५ ६७ ।

लगाने के लिए मशाल भी साथ ले ली। अनेक जागुण एव रेगमी रमाल (गाट चउतना) भी लिये गये। नर तरिया न उलुधरनि की। घोर जगल म प्रवेश कर बग्ध, लोघ और शवर लोगो न कीलें गाडवर पद लगा लिये। भालू और बाघा को बांध कर जगल म आग लगा दी। भिन भिन वय-गणुआ के रामान तोषा लोग बोलने लगे। कुत्ता को जाग कर के तारो मर स धरा खाने लग। एक आर शाद्रू न आनमण करत और दूसरो ओर स बाणा की वर्षा की जाती। सप, ररगोण, हाथी, बाघ, गूकर मग गेंडा जगली भसा सांभर, अनेक प्रकार के हरिण आदि आदि अनेक जानुओ का शिकार किया जाने लगा। राम की आत्मा स शाद्रू मृगा क भुङ्ग पर छोड़ दिये गये। शंभूठा दिलाकर कुत्ता को लतारा गया वे भी जानवरो पर टूट पड़े। राम ने अनग लग शिकारिया को आनम लिये शिकार की प्रथा के अनुसार पालन भी हुआ। प० ७ २३२ ३४

तुलसीदास ने मानस म मनोरजन के विषय म केवल दस का ही चित्रण किया है—मगया एव चौमान। उन्होंने गीतावनी मे कुछ अधिक मारजना का वर्णन किया है, जैसे—गोनी भौरा एव चकई घोरी।

चौमान—मानस की अपेक्षा गीतावनी (१४३) म इस खेल का विस्तृत वर्णन है। त्रिम के अनुसार यह खेल तत्तार योग ने दत्त णशिया म प्रारंभ किया था। कुतुबुद्दीन की मृत्यु (१२१० ई०) इसी खेल के कारण हुई।^१

आईने-अकबरी^२ मे इस खेल का विशद वर्णन है। इस खेल में दस खिलाड़ी एक बार मे खेलत थे शप प्रतीक्षा करते थे। एक घड़ी बीत जाने पर दो बठ जाते थे और दो नये खिलाड़ी खेलने लगते थे। पनास की लकड़ी हलकी होती है और जानने पर देर तक जलती रहता है। अकबर न इस लकड़ी से रात के समय खेलने के लिए जाती हुई गेंदो का आविष्कार किया था। अकबर खेलन के बल्ल म सोना चानी लग जाता था बल्ले के टूट जाने पर वह जिसके हाथ पड़ता वही ले जाता। बल्ल को हेगुर कहते थे।^३

मगया बाज द्वारा—बाज की आँख पर आच्छादन रहता है। शिकार करने वाला व्यक्ति शिकार के योग्य चिड़िया के पीछे बाज को उमका आच्छादन हटाकर तथा उसकी ओर इंगित कर उडा देता है। बाज भपट कर चिड़िया को पंजो से पकड़ कर अपने स्वामी के पास ला देता है। उसकी चोच बधी रहती है इससे वह स्वयं

१ त्रिम हिस्ट्री आफ दि मोनेम्डन पावर इन इण्डिया प० १६६।

२ आईने अकबरी (ताखमान)—आईन २६।

३ पदमावत-जायम (डा० वासुदेवशरण सम्पादित)—इस खेल का विस्तृत वर्णन ४८६ ६ ६२६ ६ एव ६२८ ८।

महाकवि विहारी न भी इस खेल का उल्लेख किया है वलिये दोहा सं० १७७।

चिह्नियाँ खा नहीं सकती। तुलसीदास ने दुष्ट विचार एवं भयकर वचन की उपमा बाजस दवर दो स्थलों पर मगया की इग पद्धति का अप्रस्तुत-याजना के रूप में प्रस्तुत किया है—

कुमत कुबिहग कुलह जनु सोली—२ २७,८

भिल्लिन जिमि छाडन चहति बचन भयकर बाजु २,२८ ।

स्थानीय चित्रण (Local colour)

वाल्मीकि रामायण युग-युग तक शाश्वत प्रेरणा देगी उसका चित्रण में प्राण है, उनमें गेतिहासिक-मूल्य है किन्तु भाषा रामायण का भी अपनी विशेषता है। राम कथा का भाषा-संयोजन न जपन युग और प्रदेश का जना का परिवेश के अनुकूल ढाल दिया है, फल यह हुआ कि मायारण-जन में वाल्मीकि की ही कथा नूतन आस्वाद के माध्यम प्रचारित हुई। जनता ने भी स्थानीय चित्रण-समन्वित वाक्य के प्रति अपनत्व की अनुभूति की।

प्रायः सम्भार प्रमाण वस्त्रालवार, भोज्य-पदार्थ पशुपक्षी, वनस्पति जाति-धर्म साधना एवं स्थान विशेष का वर्णन करते समय कवि गण अपन अपन परिवेश की भूलक दे गये हैं। आय-राम एवं आर्या-सीता के चरित्र चित्रण में भी तत्कालीन एवं तत्स्थानीय राजा रानी अथवा जमींदार स्त्री का रूप ही अधिक उभरा है।

० अस्मिन् रामायण में बृहत्-बृहत् वाल्मीकि रामायण का अनुमरण है, अतएव अन्य रामायणों की अपेक्षा इतना स्थानीय-परिवेश का चित्रण कम मिलता है। विवाह संस्कार के समय बासरघर और बासिबिया के 'बोकाचार' और नारियाँ द्वारा 'उरुति जोकार' (उनुधनि) किये जाने का वर्णन है। सीता जी को 'शाट म' (शतचूड़ी) पहनायी गयी है। स्थान-स्थान पर सन्देश प्राप्त यदि भोज्य-पदार्थों का उल्लेख हुआ है। अमम में पायी जाने वाली 'साधक' (पृ० १३८) आदि जातियाँ का वर्णन है। वन का वर्णन करते समय भेड़ों (जंगली साँड़—bison) घोंग (black panther) सोनगुड़ (मुनहरी पीठ वाला एक छिपकली-जातीय जीव), राजगोम और माण्डरीक सर्पों आदि जीव-जन्तुओं का नाम आया है। रामायण के रचना काल तक तथा इसके पूर्व अमम में शाक्त धर्म का ही अधिक प्रचार था, अस्मिन् रामायण में इसकी भूलक एक उपमा के द्वारा-प्रयोग में मिल जाती है—अस्मिन् का छाग (बकरा) होना—

आमि भैलो बकेपीर अष्टमीर छाग—छ० २१०३

० बंगला रामायण में भी रामायण के पात्र बंगाल की प्रथाओं का पालन करते हुए शुभदृष्टि पक्षी-पूजन, बासरघर बासिबिये और बालरात्रि पद्धतियों का

१ रामायणों में पायी जाने वाली प्रथाओं आदि का वर्णन या तात्पर्य अध्याय में ही चुका है अथवा आगे होगा।

पानन करते हैं। स्त्रियाँ उलुष्वनि करती हैं। गीता 'गाइसा' (गंगागुठी) और पागुलि^१ पहले है। और योग समाजत यस्त्र की बोरमुक्ति पदनत है। राम व समुग उपस्थित होने पर राशय बगानी-मदति ने गल म यस्त्र डाव कर प्रणाम किया है—

कर बुडि करे स्तय यस्त्र दिया गले—प० ४१५

इस रामायण ने पात्र विशेषत ब्राह्मण पात्र डगोव चित्रित किय गये हैं।

भोज्य-पदार्थों में प्रायः गन्धेश पावन मद्यनी कटहन नाग्वेन तालफल खजूर आदि बगानी रास वस्तुओं का वर्णन किया गया है। मगर पुत्रा के उद्धार के सम्बन्ध में गंगावतरण का वर्णन करते समय उन छोटे छोटे गाँवों का भी वर्णन है जो कि लोखक के समय में उमके गाँवों के समीप बसे थे।

शाकन-वगान म बहु प्रचलित राम की शक्ति पूजा का परिचय भी इस रामायण में विस्तार से मिल जाता है।

० उडिया रामायण की स्त्रियाँ आज भी हल्दी मन कर मुग घोती हैं और केशा को पूजा से सजाती हैं। नयना में कज्जल लगाती और पाव का भी प्रयोग करती हैं। उडिया रामायण की दासियाँ विश्वामित्र को चुभाती हुई मनना और सजी बजी कुवडी के साथ ही मीना के शृंगार प्रसाधन में भी इही वस्तुओं का उल्लेख है—

गाले हलदी ये पुण नयने कज्जल ।
 पुण पुण भिडि करि वा पुचान्ति बाल ॥^१
 काल पाल देखाइए घपइ हलदी ।
 विश्वामित्र मनकु से मदने दगधि ॥^२
 तुण्डे तार पान ये मथारे पुल खोसा ।
 लोककु देखिए ये दिअइ मुडि हसा ।
 गालरे हलदी चुन नयने कज्जल ।
 नाक डिअइ से कुजी घाहें जलजल ॥^३

- १ पागुलि नामक अलवार कसा या कहा गयी जा सकता— इसके पाजेव, बडा एव नूपुर आदि बड़े अथ किय जाते हैं। कवि कवण की चण्डीबोधिनी में इस शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए अथ दिया है पदातकार स०—पाशक पाशनी पागुली।
- २ दासियों गाल में हल्दी और नेत्रों में पाजन लगाये हैं। वे बार-बार लीचकर केश बंध रही हैं—१ ५५।
- ३ मेनका विश्वामित्र को अग प्रत्यग नियाकर हल्दी लगा रही है और उनके मन को मदन से दग्ध कर रही है—१ १३७।
- ४ मथरा के मुह में पान है और वह मिर में पून गोसे है। लोगों को देखकर वह मुक्कर हमती है। गान में हल्दी नेत्र में कज्जल लगाये है वह नाक सिक्कोड कर एक्कट देत रही है—२-२४।

रावण सीता से कहता है—नेत्र के बिना तरे केश, हृत्को न बिना सरीर, नना के बिना चरण, कज्जल के बिना गगन और पान के बिना मुख शाभा का प्त नहीं होत ।

आदिम जनों की उपस्थिति—उडिया तख्त न गुरु को शबर जाति का प्राया है । उसके सार्धियों का वणन करत समय लंगक न शबर और क ध जाति क गो का वणन किया है । उडीसा म य दोना जन-जातियाँ प्रचुर सध्या म पायी ली है । मापीनाथ महाति ने क ध जाति पर जमतर सतान नामक एक बहुत इ रोचक उपन्यास लिखा है । बलरामनास न उडीसा की गाड जाति का भी उल्लेख प्या है ।

उडिया रामायण म गुरु की सना म उडीसा के आदिम-जना का प्रस्तुत फ्या है । कोई लनाट पर गजामान पहन काई जूडा बाध, काई लम्बी चोटी बनाय म रहा है । काई कोडिया की माना पहन है । अजगर का यत्नापवीत, नाक के छद्र म पीतल की अगुठी, भुजाआ म लाक की जजीर (शिकुली) मिर पर 'टापर' कटि म मालू की खाल और घटियाँ परा म घागुरी (घटियाँ) धारण किये है । इनकी मयकर आखें है । किसी किसी की पूछ इतनी लम्बी है कि दूसर का छू रही है । इनके देह के रोम भी भयोत्पादक है । इनकी भाषा समझ म नहीं जाती । काई कोई शबर साकिल म कुर्त को बाध हे । सभी विभि न अस्त्रशस्त्र लिय है । (२-४८)

लका काण्ड की समाप्ति पर राम के अयोध्यागमन क अवसर पर पुन जगली-जाति का चित्रण है । यहा इस क ध कहा है । वनभूपा भी वही है, वही-वही थोडा मा परिवतन मात्र है—

गल म टसर का सूत पहन है । गल म पीतल की कठी है, व नाक फुलाकर और आँख फाडकर देवत है तो दोना गोर मडे नाम करकर भागन लगते है—

नाक फुलाइ के चाह तराटिण आखि ।

बेनि पाख लोकमनि पलाति त देखि ॥ ६३५५

अयोध्या की तारियाँ लखर हर्षित हा रही है और कह रही है दखी सखी म वन के मनुष्य है—

अयोध्या नारीए देखि हृमति हरप ।

बोलति देख गो सखि बनरमनुष्य ॥ ६३५५

स्थान तीर्थादि—लेखक का जहा भी जवकाश मिला, उसने अपने पदश के तीर्थादि का वणन कर दिया है । किष्कि-घाकाण म काणाक और भास्करक्षेत्र के भी बंदर आते हैं । इसके अतिशक्त पंचधारा पवत, यमनगिरि वारणावत, एकामरवन, कपिलास गिरि विरजामडल, वामण्डा आदि का उल्लेख है । ४७१ एव ७६ ।

भगीरथ की तपस्या क प्रसंग म गोकर्णिका, विरजामण्डल म वाराह-नारा यण, वतरणी नदी, लिंग त्रिलोचन एव विरजादेवी आदि पवित्र स्थानों का वणन

किया है और उड़ीसा की ढेंकानाल पहाड़ी को शिव का कनास बताया है। इसी प्रकार पुष्पकविमान पर लौटते समय राम ने सीता का विभिन्न स्थल दिखाते हुए उड़ीसा के स्थान भी दिखाये जिनमें जगन्नाथ स्वामी का नीलगिरि पर्वत भी है। उड़ीसा देश की अनेक चड़ी दक्किया-बुनाइचड़ी रामचड़ी, पापाणचड़ी तथा अनेक गिव लिंगा—रामश्वर बालुवेश्वर तुम्बरश्वर एवं वरणाक्ष का वणन हुआ है। महादेव का स्थान कनास पर्वत न बताकर उड़ीसा का कपिलास पर्वत बताया गया है। रावण विरजाक्षेप में तपस्या कर वर प्राप्त करता है।

जगन्नाथ स्वामी की छाप तो समस्त रामायण पर है। इन्द्र ने राम के पास सहायताय जो गरुडध्वज रथ भजा है उस भी नगीघोष^१ (जगन्नाथ के रथ का नाम) कहा है। नन्दिवेश्वर इसके पहियों में बैठकर घाय करते हैं इसीलिए इसका यह नाम हुआ।^१ राम और जगन्नाथ में अभिन्नता स्थापित कर बार-बार उनकी बटना भी की गयी है। पुष्पक विमान पर आरुह्य हाकर लौटे हुए राम लक्ष्मण सीता की तुलना नगीघोष रथ में बैठे हुए जगन्नाथ सुभद्रा बलभद्र से की गयी है।^१ वनवास के समय राम सीता और लक्ष्मण उड़ीसा देश भी जाने हैं वहाँ वे जगन्नाथ के मन्दिर में जाकर भ्रमण जगन्नाथ सुभद्रा एवं बलभद्र के सम्मुख लड होते हैं।

तुलसीदास का जन्म राम के जन्म प्रदेश में हुआ। उहाँ ने अयोध्या, चित्रकूट आदि राम-सम्बन्धित स्थानों से निकट का परिचय प्राप्त किया था। चरित्र चित्रण एवं भक्तिपरक दृष्टिकोण तथा कवचिद यतीर्षि-उपलब्ध प्रसंगा के ग्रहण के कारण क्या का रूप कुछ बदला है किन्तु उनके वणन पर इन कवियों जसा स्थानीय प्रभाव नहीं है। जो कुछ भी प्रभाव कहा जा सकता है वह युगीन चित्रण के अन्तर्गत कहा न कही वर्णित ही चुका है। फिर भी युगो पूर्व लिखी गयी रामायण और मानस के परिवर्तन आदि में अन्तर अवश्य था और वह मानस में व्यक्त हुआ है। विवाह पद्धति में उत्तर प्रदेश की प्रथाओं का पातन हुआ है। लग्न-सौधना लग्न-पत्रिका भजना वराह की अग्रगामी के समय बच्चा की उत्सुकता स्त्रियाँ का परिधन करना वर के मनानुष्ठान न हान पर मध्यस्थ का कामना आदि। माय ही सीता को गरुडवती आदि श्रियाँ काहरर में न जानी है एवं सहचोर कराती हैं।

१ हृत्तरण्य मान्य द्वारा मण्डलिन मण्डली नाम जासिका में मन्दिर का रथा का वणन इस प्रकार है—

जगन्नाथ का रथ—नगीघोष १६ पंक्ति वनी म ऊँचाई २३ हाथ

बलभद्र का रथ—तानध्वज १४ पंक्ति , २२

सुभद्रा का रथ—कवचिन—१२ पंक्ति २१

पत्र टिप्पणी पृ० ३७

२ उल्लिखित रामायण पृ० ६ २५०।

३ वही पृ० ६ २२१।

स्त्रिया की वेश भूषा का विशेष चित्रण नहीं है, किन्तु जा है वह भी प्रादशिक है। बरुचो के परिधान में भँगुना एवं पीत चौकी का अवश्य प्रयोग हुआ है। राम के वर रूप का भी ऐसा चित्रण है जैसा कि आज भी हमारे गावा में उपलब्ध है।

तुलसीदास मुगल-शासन में जीवन-यापन कर रहे थे। शासक के मनाविनाद 'चौगान' एवं गोला (गोताबाद) का प्रयोग उन्होंने त्रेतायुग के राम के समय दिखा दिया है।

पूर्वाचल के कुछ समान स्थानीय चित्रण

पूर्वाचलीय रामायण में उपलब्ध कुछ समान रीति एवं वस्तुओं का विस्तृत-परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

१ उलुध्वनि—स्त्रिया की एक रोचक मंगल ध्वनि।

जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह आदि के मंगल-अवसरा पर पूर्वाचल की नारिया मुह के भीतर कपोला की ओर जिह्वा को द्रुत गति से ताडित कर 'ऊ ऊ ऊ' जसी ध्वनि करती है, इस ही उलुध्वनि कहत हैं। सस्कृत में इस मुख घटा भी कहा गया है। इस अवसर पर कुछ स्त्रिया शर भी बजाती जाती हैं। बगला-उप-यासो एवं चलचित्रों के सम्पर्क में रहने वाले अथवा बगलिया क मंगलोत्सव में सम्मिलित होने वाले सज्जनों को इस ध्वनि का परिचय मिला होगा। असमीया एवं उडिया भाषी जनता में भी इसका प्रचार है।

प्राचीन-उल्लेख—नथधीय चरित के लखक श्रीहृष बगाली माने जाते हैं।

दमयती के विवाह के अवसर पर उनके काव्य की स्त्रिया भी उलुध्वनि करती हैं—

सवाननेभ्य पुरमुन्नीणामुच्चरलुध्वनिहृच्चचार । १४-५१

इस ग्रंथ की नारायणीय-टीका में उलु (उलु) ध्वनि का गौड देश में विवाहादि अवसरों पर प्रयुक्त स्त्रिया की अथक वण ध्वनि माना गया है—

विवाहाद्युत्सवे स्त्रीणा धवलादिमंगलगीति विनेया गौडवेगे उलूलु इत्युच्यते । सोप्यभ्यक्तवर्ण उच्चायते स्वदेगरीति कविनोक्ता ।

धनधरपाथ नाटक में भी पूर्वाचल में प्रचलित इस ध्वनि का ही चित्रण है। वदेही के हाथ में मगनमूष बांधने के समय ब्राह्मण यजु सूक्त पढ़ रहे थे और स्त्रिया कपोलो को मन्द की तरह फुला कर उलूलु ध्वनि कर रही थी।

वदेही करबधमङ्गलयजु सूक्त द्विजानामुखे ।

नारीणा च कपोलकदलतले, ध्येयानुलुध्वनि ॥ ३-५५

वदिक-साहित्य में—छादोग्य उपनिषद् (३ १६ ३) में वर्णित 'उलूलव' शब्द के सम्बन्ध में शांकर भाष्य में बताया गया है—उलूलव उररवो विस्तीण रवा'

(अर्थात् सुदूर 'यापी शब्द' बाल घोष) अधवच (४ १६ ६) म आय हुए उल्लुत्तय के सम्बन्ध म सायण का कहना है कि य अनुकरण शब्द है ।

पूर्वाचल म प्रचलित ध्वनि का वर्णित वाच्य म वर्णित उल्लुत्तय अथवा उल्लुत्तय स पाथक्य प्रकट होता है । हो सकता है कि यह यदि ध्वनि ही परिवर्तित हो कर पूर्वाचल की वर्तमान ध्वनि के रूप म जीवित रही हो ।

ताम्रिण प्रभाव—शरर की पूजा के समय उपासक लोग मुग्ध से बकर के स्वर जसी ध्वनि निवातत है । दक्ष का सिर काटकर शरर न उसका स्थान पर बकर का सिर लगा दिया था । शरर का इस घटना का स्मरण दिलाकर उह से तुष्ट करन के लिए इस प्रकार की ध्वनि की जाती होगी । शिव से सम्बन्धित साहित्य म मुख वाद्य करने के उदाहरण मिल जात है— गंध पुण्यामस्वारमुखवाद्यश्च सावश ।^१ इस ध्वनि जोर उल्लु ध्वनि म साम्य है । शरर के साथ इस ध्वनि का सम्बन्ध दत्तक विचार उठता है कि कहा यह ताम्रिण पद्धति न हो । यहाँ यह स्मरणीय है कि शरर की उपासना पद्धति पर किराती एक ताम्रिण प्रभावा का दाहृत्य है ।

पूर्वाचल म ध्वनि का स्वरूप असमीया बगला और उडिया रामायणो मे उल्लुध्वनिक तिए क्रमश उरलि हुलाहुलि और हुलाहुलि शब्दों का प्रयोग हुआ है । मोनियर वितियम जाप्टे और वाचस्पति ताराताथ के संस्कृत कोशा के अनुसार य सभी शब्द उल्लुध्वनि (या उल्लुध्वनि) के ही समानाधिक है ।

० असमीया रामायण म

उरलि जाकार बहुविध जय रव—छ० १३५५ ।

ढाक ढाल उरलि मत्त लवा जुरि—छ० ४४८४ ।

असमीया हमकोश म उरलि का अर्थ दिया गया है— मुखेर करा शब्द विशेष तिरालाड मङ्गलकायत जिमालारि करा शब्द अर्थात् मुख से किया गया शब्द विशेष स्त्रिया का मंगल कार्यो म जीभ हिना कर किया गया शब्द ।

० बगला रामायण म भी राम के जन्म के समय स्त्रियाँ हुलाहुलि करती हैं किन्तु बदर लवा का घेर कर हुलाहुलि करत हैं जिससे प्रकट होता है कि पूर्वाचल के पुरुष भी जयध्वनि के रूप म इसका प्रयोग करत थे जयवा उनके जयकार को भी हुलाहुलि कहा जाता था । वैसे यह ध्वनि है स्त्री ध्वनि ही (पूजा गुभवम जानदा नुष्ठान प्रभति ने हिन्दूतारी-मण जिहा ओ तापुर साहायय य शब्द करे उल्लु जाकार बगला-कोश) जोर आज भी स्त्रिया द्वारा ही यह प्रयुक्त होती है ।

० उडिया रामायण म जन्म के पूर्व (दक्षिण युवतीमान चन्ति हुलहुलि) युवतियाँ स्वर्ग म अप्सराएँ और राग का दत्तक जनकपुरी की स्त्रियाँ ता हुलिहुलि करती ही हैं साथ ही इस रामायण म भी युद्ध करत समय वानर तथा लवा-नगरी

के नागर्क भी हृत्निहूलि करते हैं। यहा भी पुण्या के लिए इस ध्वनि का अर्थ होगा कालाहल या जयकार। उडिया बोशा म भी इम म्रिया द्वारा जीभ से की गयी मुखध्वनि बनाया गया ह— म्नी मानङ्कु द्वारा जिह्वावृत्त मुख वाय।'

रामचरितमानस म पत्र शत्र और पत्र ध्वनियाँ का वर्णन ह। टीकाकार पत्र ध्वनिया की व्याख्या इम प्रकार करत हैं—वदध्वनि, जयध्वनि, वदिध्वनि शशध्वनि एव हूलूध्वनि। यदि मानस की पत्र ध्वनियाँ यही ह। तब भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि तुनमी-लग पूर्वाचल की इस विशेष ध्वनि से परिचित थ। उडानि अपन पूर्ववर्ती साहित्य के आधार पर इसका उल्लेख कर दिया हागा।

वदिध्वनि एव लोकिच साहित्य स प्रकट होता ह कि किसी समय भारत के अनेक जनपद अनुध्वनि स परिचित थे किन्तु कथम कथम मयकाल स यह ध्वनि पूर्वाचल की अपनी विशेषता हाकर गह गयी ह। इम विशेषता का उल्लेख पूर्वाचल के रामायण कारा न अपनी कृतिया म किया ह।

(२) नेत्रवस्त्र—तीना पूर्वाचलीय रामायणो म नेत्रवस्त्र का उल्लेख किया गया ह। अममीया रामायण^१ म नेत्रवस्त्र नन-कामलि जीर नतश्रीम्य शब्दा का प्रयोग हुआ ह। बगला रामायण^२ के अनुसार नन-वस्त्र की पताकाए जीर कनातें बनायी जानी थी। म्रिया इनकी साठी अथवा आत्नी धारण करती थी। पुण्य भी नन की बानी पहनत थे। नन की पाछुडी बिछायी भी जाती थी। उडिया रामायण म भी पत्रम की चन्दर तकिया पताका एत्र परिधेय-वस्त्र के रूप म नेत्र का प्रयोग का वर्णन ह।

नन का सम्बन्ध म नेत्र कहणे। डा० मातीचन्द्र^३ से बगल म १४वीं शताब्दी तक प्रचलित मजबूत रशमी वस्त्र मानते हैं किन्तु उडिया रामायण म इसके वर्णन से सिद्ध हाता ह कि पूर्वाचल म इसका प्रचार १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक तो था ही। वाणभट्ट के ह्य चरित म प्रयुक्त नत्र के वर्णन के आधार पर डा० वामुन्वैव शरण अग्रवाल^४ इम महीन रशमी वस्त्र मानते हैं।

विद्यापति की पदावली म भी नेत्रक वमनू शब्द आया ह जिसका अर्थ

१ पत्र सबद धुनि मगन गाना—१ ३१८ ३।

२ अममीया० छ० म० १४४८, ४११२ ५१२८।

३ दक्षिण प्रस्तुत नत्रक का अर्थ कृति० बेंगला रामायण और राम० मानस, प० ११४।

४ उडिया रामायण १ १६ १ २० ५ १०।

५ डा० मातीचन्द्र—प्राचीन भारतीय वेशभूषा पृ० १५७।

६ डा० वामुन्वैवशरण अग्रवाल—ह्य चरित एव मासृत्तिक अध्ययन, प० २३

नूतन वस्त्र अथवा उत्तरीय किया गया है। एकाध लागी ने यह सोचकर कि यह स्त्रिया से सम्बन्धित है इसका जब अनुमान के आधार पर रेशमी वस्त्र कर दिया है।

(३) शल्लूची—सधवा बगालिन शल से निर्मित श्वेत चूड़ी पहनती है। नपथीय चरित्त म कम्बु बलय अर्थात् शल्लू-बलय का वणन जाया है। नागवणी टीना म इस स्पष्ट किया गया है—गौड देश म विवाह के समय शल्लू बलय धारण करने का आचार है।^१ जसमीया रामायण म इसे शल्लू ख एव बगला रामायण मे शल्लू और शाल्ला कहा गया है। सीता इस धारण करती हुई दिलायी गयी है। उडिया रामायणम इसका वणन नहीं है।

१ नपथीय चरित्त (१४ ४५) नागवणीय-जीरा गो-न विवाहका म्म मन्त्रण मन्त्रणमाचार ।

क्या एक चरित्र दाना ही दृष्टिकोणों से रामायणों का मूल आधार वाल्मीकि रामायण ही है। चरित्र की मूलगत विशेषताएँ समान हैं। मूल की रक्षा करते हुए भी प्रत्येक भाषा रामायण में चरित्रों का स्वतंत्र विकास भी हुआ है। वाल्मीकि चरित्रों से भिन्नता का मुख्य चार कारण हैं रामायणों का पारस्परिक-व्यपन्न के भी बहुत कुछ यही कारण हो सकते हैं—

- (१) राम के ब्रह्मत्व का कालान्तर में प्रचार।
- (२) युग का प्रभाव।
- (३) स्थानीय-परिवेश एवं लोक प्रचलित आख्यान।
- (४) व्यक्तिगत-दृष्टिकोण।

(१) वाल्मीकि रामायण में आर्यों की गौरवमयी संस्कृति की भूलक है। राम एक आदर्श गृहस्थ एवं शासक के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। वे अपने सदगुणों के कारण नर से नारायणत्व तक उन्नत हुए और परवर्ती-युग में उन्हें ब्रह्म का अवतार माना जान लगा। यही उनके चरित्र चित्रण का दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया। यह दृष्टिकोण अथवा पात्रों और राम के पारस्परिक-सम्बन्धों पर भी आरोपित हुआ।

वाल्मीकि के राम अथवा कौटिली आदि पात्रों का गुण-गण्य मानवीय थे, उनमें दुर्बलताएँ थीं ताँक भी मानवीय थीं। भाषा रामायणों के रचनाकाल तक राम के ब्रह्मत्व का प्रचार हो जाने का कारण राम अथवा राम से सम्बन्धित कई पात्रों की दुर्बलताओं के कारण ही चर्चाएँ की गयीं। अनेक आख्यानों की कल्पना कर उनका चरित्रों को नया रूप दिया गया।

राम का अवतार मान लेने से चरित्र विषयक दृष्टिकोण में एक नया परिवर्तन यह भी गया कि उन्हें अत्यन्त मधुर एवं मुकुमार चित्रित किया गया। वाल्मीकि की कौटिल्या का चिन्ता है कि राम लोहस्थ (परिष) के समान बटोर भुजाओं का तक्रिया बनाकर कम माँ पात हाथ। वाल्मीकि के एम पुष्ट-मशकत राम शीघ्र करन

पर नाग के समान फुफ्फुकारते हुए धनुष बाण नेवर कालाग्नि के समान पवत की चोटियाँ बाट गिराने, सागर को साख लेने तथा हरे भरे वना को जला कर भस्म कर देने का प्रस्तुत हो जाते हैं। भाषा रामायणों में ऐसे उग्र आवेशमय राम सजल जलद वाक्त्रि, पुष्प सुकुमार एवं नवनील कोमल चित्रित हुए। भक्ता को सुख देने के लिए वे अवतरित हुए थे न। कामन मन न हाथ सा आसजनो की पीडा की अनुभूति उहे कम हागी? मन की छाया तन पर भी हाती है गतएव उनका तन भी कामल हो गया। वहाँ परिध सा तन और वहा दूर्वात्त्रि श्याम सुशोमल शरीर।

इस ब्रह्मत्व के दृष्टिकोण व कारण ही अग्नि के समान तजस्वी एव आदित्य के समान दुष्प्रेथ्य उद्दण्ड अत्याचारी रावण भाषा रामायणों में शाप ग्रस्त भक्त बना दिया गया। वाल्मीकि का रावण कनल भोगी है भाषा रामायणों का भोगी और भक्त दाना ही। वह अपन उद्धार के लिए राम से विराध करता है।

युग युग से प्रचारित भक्ति भावना अनेक आचार्यों एव भक्त कवियों के बुद्धि मन का सम्बल पाकर जन मानस में इतनी अधिर सशक्त हो गयी है कि भक्तिपरक दृष्टिकोण से पथक राम और समस्त रामायणी चरित्रों को हम कल्पना नहीं कर सकते। भल ही एतिहासिक राम का हमने ज्ञाया है किन्तु हमने जा कुछ पाया है उसका मूल्य कम नहीं है।

(२) वाल्मीकि व पाथ बलिष्ठ आय एव तप पूत ऋषि हैं। व अपने बाल व अनुष्ण विपुनास महाबाहु एव मन्त्रास्व हैं। उनका मन रत्नवण है स्वर नगाडे जगा (दुडुभिस्वन) है। भाषा रामायणों में चित्रित ऋषि अथवा ब्राह्मण वर्ग पर युगीन प्रभाव अधिर है। मन्त्रज्ञान के शक्तिहीन दुर्बल ब्राह्मण ही रामायणों के ऋषि एव ब्राह्मण-वर्ग के रूप में प्रतिबिम्बित हुए हैं। अममीया रामायण में भाजन भट्ट कुवामा मयुरा व चार जस प्रतीत हान है वगना रामायण के ऋषि ताम्रपात्र और तुलसी नकर तपस्या करत नियाय गय है जा वभी प्राथ में चिडचिटाते हैं और वभी भय उपस्थित हान पर ऊँच शित पनायन करत हैं। निश्चामित्र मरी हुई तात्वा व पाम नहा जान उनही मांस पून गयी है छाती जोर से घट्ट रही है। उडिया रामायण व ऋषि भी छाता पाथी डण्ड आत्त्रि लिए उडिया ब्राह्मण की तरह जीवनपापन करत में जान है। मानस का यत्न वग निश्चय ही तपुचरित्र रहित है उमम गाम्भीर्य है किन्तु नया है ता वाल्मीकि का तप नज। नागिया के चरित्र में भी युगीन प्रभाव प्रतिबिम्बित है। मध्यराजान नागी का मन्त्र बुद्धूत भय टुगव दुर्मुई हान का भाव आत्त्रि गुण विगप रूप में चित्रित हुए हैं। उडिया रामायण की गीता एव मानस की मना में य गुण विगप रूप में मित जातें।

(३) श्यामाय परिवर्ण का प्रभाव प्रयासा व चित्रण तथा गाम्भीर्य वगन में प्रतिबिम्बित है। चरित्रा पर जा प्रभाव पण है व युगीन प्रभाव व धनगत घा जाना है। चित्र भी प्रकर मयस की धनी आचरित्र विगिष्ठा है जा कि चित्रण में श्यामी

पत्नी है। ब्राह्मण एवं मित्रिया का आचरित वशिष्ठ्य-युक्त प्रभाप प्रत्यक् रामायण के पात्रा म लक्षित हाता है।

स्थानीय पत्रिवश के साथ ही स्थानीय नाव प्रचरित आम्ब्याना का प्रभाप भी चरित्रा पर पडा है। हनुमान की अनता राम की दयातुता लक्ष्मण की उग्रता प्रवट करने क लिए अनक् आम्ब्याना की सहायता ती गया है जिनम पणु-मिथिया एव जन जातिया स सम्पन्नित आम्ब्यान भी मम्मिनित ह। यह प्रभाप बेंगता एव उत्रिया रामायणा पर अधित है।

(४) चरित्र चित्रण म नेवक वा व्यक्तिगत ऽष्टिनाण विपण महत्व रखता है। उनके अनुभव म जस चरित्र धाय हैं अथवा वह जम चरित्र की आण कल्याण वगता है उह उमी रूप म चित्रित करन का उमका प्रयास रहता है। राम-कथा-विषयक अनक् प्रथा म भी वह अन इच्छानुबून चरित्रा का चनाप भी वगता है। अनमीया ननक मकरा क वित्रण म उम भरत क प्रति प्रणय-भाव युक्त ऽष्टियाता है। उत्रिया नक् अधिराश पात्रा की वामुक्ता वा प्रत्यत रस सिक्त चित्रण वरता ह। उगता लयक क पात्रा म अथ विगनित भावुकता अधिन प्राय है। मानकवार भक्ति-रम म तमय हाकर तारा एव मगादगी आण पात्रा का नी उमी रम म आतप्रात कर प्रस्तुत करता है।

अथ रामायणा एव मानस क पात्रा म पारस्परिक अतर की मुख्य विशेषता है मानकवार क अद्भुत समय चित्रण की। अन्य भाषा रामायणा म राम क ब्रह्मत्व एव नरत्व का गण्ड घोला है। एव आर व वाल्मीकि क राम की भक्ति आवश का परिचय दन है ता दूसरी आर व ब्रह्म भी हैं। मानम क व सव ब्रह्म ह इमनिक उनक चरित्र म विराधाभास नहा है। मानम क राम हप विपाण स रचित प्रतीत हात है किन्तु भाषा रामायण म उह हप विपादका यथाथ अनुभव करत दन्ता जाना है। वनवास का समाचार पाकर असमीया क राम का मुन गातुति के मूय सा मनिन हा गया था। सीता क पानान प्रवश कर जान पर व रान रात भर सा न पान थ एव सात हूण वच्चा का बठ म लगाकर रान रहत थ। वगता रामायण क राम अधिपक एव वनवास क समाचार स जमण प्रसन्न एव क्षुण्य हूण ह। रावण द्वारा फेंकी गयी शक्ति का लक्ष्मण की धार जात दल व गि-गिडा कर शक्ति की प्राथना करत हैं। य राम उम ब्रह्म क अनार हैं जा अनार-ग्रहण की प्रतिपा कर विच्छेद क भय स लम्बी के गन म बाट डान कर राय है। उत्रिया क राम भी साधारण मनुष्य जमा मत्य-व्यवहार करत हैं। य एकर भिन्न म सीता क प्रति प्रेमावुन भाषा का प्रयाग करत है और एक सावा रण कामुक पनि स प्रतीत हाते हैं। सीता क विरह म यणी राम युध-युध सोकर प्रमत्ता की भक्ति प्रलाप भी करत हैं। मानम के राम क चित्रण म पूण ब्रह्मत्व है, उयम असगति नहा है। वे सवय ही ब्रह्म रहत ह। जन्म व शाक-हप क आवग का प्रकाश करत हैं वहाँ स्मरण ऽष्टिया दिया जाता है कि वे नर नाता कर रहत हैं।

वाल्मीकि रामायण एव भाषा रामायणा के अग्र पात्र भी आवेश पूर्ण हैं। प्रेम शोक अथवा त्रास के आवेश में कहनी अनकहनी कह जाते हैं। बनवास का समाचार ज्ञात कर कौशल्या और लक्ष्मण को व शोक पूर्ण अविवेक का परिचय देते हैं सीता मारीच की कपट छद्मि से व्याकुल होकर लक्ष्मण के प्रति बटु वचना का प्रयोग करती है। यह अविवेक पूर्ण भाव चित्रण मानवीय सहज-अव्यक्तित्व चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त उत्तम है। मानस के पात्र ऐसे प्रसंगा पर भावों के आवेश का उग्र अनुभव करते हुए भी असयम एव अविवेक का परिचय नहीं देते। यहाँ कौशल्या न तो दशरथ को कोसती है और न ककेयी का। वे राम के साथ चलने का हठ कर उन्हें धम-सकट में भी नहीं डालना चाहती। अग्र रामायणा का अग्रद सीता न खोज पाने पर सुग्रीव के विरुद्ध पडयत्र करता है, बगला रामायण में तो वह राम पर भी सदेह करता है किन्तु मानस में वहाँ भी पात्र राम के ब्रह्मत्व एव उनकी सत्यता पर शक नहीं करता। अत्यन्त साधारण पात्रों में भी विवक्ष्य सयम देखा जाता है। तुलसीदास की यह विशेषता अग्र ग्रन्थों के चरित्रों में दुष्प्राप्य है। इस दृष्टिकोण से उनके पात्र वाल्मीकि के पात्रों से भी विशिष्ट हैं।

राम

०वाल्मीकि के राम दुद्धप वीर वसन्त परायण व्यावहारिक शील सम्पन्न एव सत्यसध उदात्त नायक है जो अपने पारिवारिक प्रेम एव सहज मानवीय गुणों के कारण पुरपात्तम कहलाये। उनके गुणों में देवत्व की झलक देख कर ही कालांतर में उह ब्रह्म का अवतार माना जान लगा।

०कहा गया है कि राम गम्भीरता में समुद्र धध में हिमालय वीरता में विष्णु सौंदर्य में चंद्रमा त्रास में कालाग्नि और क्षमा में पृथ्वी के समान थे।^१ उनके कंधे चौड़े, भुजाएँ लम्बी एव सीता चौड़ा था।^२ उनका समस्त शरीर सावे में ढला हुआ था। उनकी कटघ्वनि नगाड़े के स्वर के समान थी— दुःसुभित्स्वननिर्घोष। जो वीर त्रास में कालाग्नि सदृश है और क्षमा में पृथ्वी के समान वही सच्चा वीर है।

०दशरथ प्रतिष्ठा में बध य किन्तु उनसे जा बर माँग गये उनमें दशरथ का समर्थन नहीं था। यिन में बड़े मान की मानि पुत्रकारत हुए लक्ष्मण राम का साथ देने को तयार थे। उपनिष्ठा बढ़ामाना कौशल्या राम को निरन्तर उक्ता रही थी किन्तु

- १ म च मवगुणापन वीमन्वानवद्धन ।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धर्मो हिमवानिव ॥
विष्णुना सत्ता वीर्ये मामवप्रियत्तान ।
कालाग्निमदत्त त्रास क्षमया पृथिवीमम ॥

—वाल्मीकि रामायण १।१।१७ १८ ।

- २ वाल्मीकि रामायण ४ १५।१५ १६ ।

राम वनव्यच्युत नहीं हुए। वे चाहते ता धन न जात, वित्तु तत्र सम्भवत राजधानी म महद्युद्ध हो जाता। उहान दशरथ के सत्य की रक्षा कर अलौकिक पारिवारिक-आदेश की स्थापना की।

०उनकी वक्तव्य पण्यणता म व्यवहार-कुशलता है। सीता को वनवास का ममाचार देकर उहोने भरत के प्रति शर्वा भी प्रकट की थी—

भरतस्य समीपे तु नाह कथ्य कदाचन ॥ २४

ऋद्धियुक्ता हि पुण्या न सहते परस्तवम ॥ २५(२२६)

०वे शील सम्पन्न थे। दुःख व आवेश म वे भल ही कुछ वा कुछ कह जाएँ, वसे वे किसी के विरोध म कटु शब्दा का प्रयोग नहीं करत थे। विराघ वे चगुल म म पेंसी हुई सीता को देख कर उह इतना दुःख हुआ था कि पिता की मृत्यु एव राज्यत्याग पर भी उहे इतना दुःख नहीं हुआ था। (३।२।२१) इसलिए वे क्षुब्ध हो कर कह उठे थे—माज दूरदर्शिनी क्वेयी के मन की हो गयी। (३।२।१८।२०) 'यथित प्रवस्था म क्वेयी को उहाने कोसा है। अरण्य काण्ड म लक्ष्मण ने भरत की प्रशसा कर क्वेयी को क्रूरदर्शिनी कहा तत्र राम वाल उठ थे—ह भाई तुम ममली माता क्वेयी की निंदा मत करो। तुम तो केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।'

०मत्यसत्र राम ने स्वयं भी कहा था—वीर, मैं बड़ी-बड़ी कठिनाइयो मे पड कर भी भूठ नहा बोला—अत नोक्तपूर्व मे वीर प्रच्छेऽपि तिष्ठता। ४।१४।१४

पिता माता कौशल्या क्वेयी भरत आदि सभी के प्रति वे स्नेहमय वक्तव्य का पालन करत रह। सीता हरण पर वे लक्ष्मण स बोल थे तुम अयाध्या लौट जाओ, मैं सीता के बिना जीवन न रह सकूँगा।^१ और लक्ष्मण के जब शक्ति लगी तो रावण की भयकर वाणवपा के बीच वे लक्ष्मण को पर फलाय हुए पक्षी की भाति ढँके खडे थ।

उनकी मानवीयता सहज, सरल एव अनुकरणीय है। विभिन्न परिस्थितिया म पड कर राम पर तन्नुकून प्रभाव पडता है। उह प्रसंगानुसार क्रोध और हृष की अनुभूति हाती है। वे अपने भावा का प्रकाशा उग्रता के साथ करत हैं। वित्तु शील और सत उनके रज और तम को नियंत्रित करते हैं। अग्नि परीक्षा से पूर्व उनका व्यवहार जितना कठोर ह वसा भापा रामायणकार प्रयास करने पर भी नहीं बना पाव है। वाल्मीकि के राम अपवान के भय से कठोर है वित्तु मन ही मन सीता पर उह अगाध विश्वास और प्रेम है जिस उनका समुद्र सा गम्भीर मन प्रकटनही करता। साना के अग्नि प्रवेश पर उनक नत्र चाप्प-व्याकुल हुए थे और वे एक मूहूत के लिए कुछ

१ न तेऽम्बा मयमा तात गर्हितव्या कथञ्चन।

तामेवेक्ष्वाकुनाथस्य भरतस्य कथा कुर ॥ ३।१६।३७ ॥

२ वाल्मीकि रामायण, ४।१।११४।

सोचने लग थ, लघु मुरपा के समान फफर फफर कर गे नहा गिय थ, जगति पूर्वाचलीय रामायणा म वें प्राय समयहीन स प्रतीत हान गता ? ।

वाल्मीकि न उनस कहा था -तुमन अपनी प्रियतमा का विगुद्ध समभत हुए भी केवल लावापवाद के भय के कारण द्वाडा है—

लोकापवाद क्लृपीष्टत चेतसा या ।

त्यक्ता त्वया प्रियतमा विदितापि मुदा ॥ ७।६६।२३

राम न इस तथ्य का स्वीकार किया था । लावापवाद का इसी भय का कटाव क्लृप्तव्यनिष्ठा के कारण उद्धान साध्वी सीता का निर्वासित किया फिर वाल्मीकि की साक्षी पर भी सभा के मध्य गीता से गुद्धता का प्रमाण मांगा । गीता धरतीमाता की नाद में समा गयी तब माना समस्त पुजीभूत प्राय और शाभ पृथ्वी दबी पर उतग था उस समय वे समुद्र से गम्भीर नहीं कातामि के समान कटार का गय थ । उनकी इस उग्रता की पृष्ठभूमि में सीता के प्रति उनके अगाध प्रेम की प्रतिश्रिया थी । अत्यधिक क्षमाशील उदार महनशील और समयी राम ने उस समय अपना समय सा दिया है जबकि उन पर या उनका किसी प्रिय यज्ञि पर महत विपत्ति टूट पड़ती है । यहाँ उनका असयम और शोध बडा ही स्वाभाविक और प्रिय लगता है । इससे उनका महामानव के ही प्रकट होता है और वे अपने सत्गुणा के कारण मानवता के स्तर से देवता के स्तर तक पहुँचत-गुह्यत माना रह जात हैं ।

राम जैसे चरित्र की कल्पना विश्व के किसी काय में नहीं मिलनी । हमारे क महाकाव्या का कोई भी धीर पात्र राम के समक्ष नहीं हो सकता ।

(१) वाल्मीकि रामायण में राम का ब्रह्मत्व प्रक्षिप्त है रामायण के शेष वचन में कही ऐसा प्रकट नहीं कि राम ब्रह्म है अतएव प्रक्षपा के अतिरिक्त सभी स्थला पर राम मानव है । पूर्वाचलीय रामायणों में राम के मानवत्व का भी लिखाया गया और साथ ही उन्हें ब्रह्म भी माना गया अतएव नरत्व और नारायणत्व का सम्मेलन निवाह नहीं हो पाया । तुलसीदास ने अध्यात्म रामायण से प्रेरणा ली और उन्होंने नर लीला करने वाले राम के सार कायकलापा में सगति स्थापित की । इस सगति का बेंगला रामायण में एवम् अभाव है । उडिया रामायण में भी अभाव हो सकता था किंतु उसमें अपना के प्रेम के कल्पना नर इस दाप का दूर करने की क्षुब्धा की है । अमनाया रामायण का अष्टिकाण मूल से साम्य रहता है ।

(२) भाषा रामायणों के रचनाकाल तब राम के प्रति पूज्य भाव के उदय होने और भक्ति के प्रचार के कारण इष्टद्वय में दया दाक्षिण्य क्षमाशीलता आदि गुणों का दर्शित करने के लिए उन्हें तन और मन दाना से सुकुमार दिखाया गया है ।

असमीया रामायण के राम

•इस रामायण में भी अय पात्रा के मुल से राम के उही गुणा का उल्लस

हूया है जिनका कि वाल्मीकि रामायण म है ।

परम विनोत ब्रह्मास्त्रत कुशल । धनुष्येदं प्रादि विद्या जानत सकल ॥
श्रोथे यमकाल येन क्षमाद् बभुवुमी । गम्भीरे सागर येन बुद्धि बृहस्पति ॥
सव्यगुणो विधि यो वेगत गचब्ध । राजार लभण रामतेमे प्राछे सख्य ॥^१

० राम ब्रह्म हैं । कवि स्थान स्थान पर उनकी स्तुति करता जाता है । अस मीया-लवक तुनसी की भाँति कहत है कि राम परमेश्वर और सीता जगनमाता हैं । व विषयी लागी जसा रूप दिया र है ।

परम ईश्वर राम सीता जगमाव । देसाइलत विषयी जनर इरो भाव ॥ ३३१६

ऋषि ताग राम न दशन म अपना जम सपन मानकर उनक चरणा म भक्ति मांगत है— रहान भक्ति प्रभु तामार चरणे ।^२ राम का ब्रह्म मानकर भी उनके चरित्र पर कहा नी ब्रह्मत्व का प्रभाव नहा दिवाया गया । स्वय राम अपने ब्रह्मत्व म परिचित प्रनीत नही हात । एसा ही वाल्मीकि रामायण म है । ब्रह्मत्व के साथ ही राम सुतुमार भी दिवाय यद हैं—'लवनु पुतलि येन सुकोमल तनु —मवगत की पुतली जसा कामल तन है—१२०० । वे दूबादल श्याम भी हैं—छंद ३३६३ ।

० राम की वीरता म गह नहा । गवण ना युद्धक्षेत्र म प्रथम बार दगजर व बाल पद थ— स्त्री चार आज तरी कुशल नही । —प० ३३४

व आत्मप्रशमा भी करते हैं । ककेयी द्वारा वर माग निय जान पर दशरथ आकुल अवस्था म पड़े हुए थे । राम उनके दुःख क कारण स अपरिचित थे तब उहोन पिता का धम बधान के लिए कहा था—गज, अश्व, रथ या पदल मरे समान नाई उही है । सभी का नष्ट करने म मैं साक्षात यम हैं । मैं खाँडे के प्रहार स सप्तद्वीपा पथी का स्थिरमय कर सकता हूँ । २१ बार क्षत्रिया का सहार करने वाले परगुणम का कुठार भी मेर आग उनक कंधे पर स्थिर होकर रह गया था ।^३ अथ लक्षका की तुनना म राम की दस उन्नित म शील की कुछ कमी प्रतीत हानी है । पिता दशरथ क आग किमी रामायण क राम न एसी दर्पोकिन नही की ।

फिर भी व सखे वीर हैं और उनकी वीरता म क्षमाशीलता एव दयाभाव है । उहाने गमस्त राक्षसा के सहार के लिए प्रस्तुत लदमण स कहा था—उस राक्षस का मत मारना जा शरण ल जो दाँता म तिनका दबाकर आग ।

नगभग सभी स्थला पर राम क मानवीय महान् रूप क ही दशन होते हैं । उनक नरत्व और नारायणत्व क गडबडघोटाने के नहा । उनके मताभावा का प्रका

१ अममीया रामायण २३७३ ७४ ।

२ वही २६७६ ।

३ वही, १६७५।७८ ।

शन अष्टमि है । अभिषेक समाचार से उह प्रमत्तता हुई थी और उहाने कौशल्या से कहा था— माता, स्त्री आचार कर मंगल विधान करा जिससे मर और सीता के विघ्न दूर हो ।^१ बनवास की आज्ञा सुन कर उहाने अद्भुत सयम का परिचय दफर हँसते हुए कहा— 'मैं बन जाऊंगा'— (हास्य करि बालक यादयाहा बनवास— १६६६) । किंतु उनका यह सयम अधिक देर नहीं रह सका था वे बिलस कर बाल उठ थ—पिता सुनिए, पितद्रोही राम कुछ कह रहा है दक्षिण में धार तपोवन में चला जाऊँगा मेरी अनाधिनी माता का पापण कस हागा ?

शुनियोक बापदेशो अजर नदन । पितद्रोही राम हरा बोलय बचन ।

१६६८

अनाधिनी माव मोर पालिव केनने । मइ चलि याओ हरा घोर तपोवने ।

१६६९

निश्चय ही राम भयकर उत्तमन में पड़ गये थे । उह राज्य नहीं मिला इसका उह दुःख नहीं था । रजनी चंद्रकांति का मलिन नहीं कर पाती इसी प्रकार राज्यहीन हाकर उनके मुख की कांति भी लुप्त नहीं हुई थी ।^२ किंतु सम्भवतः प्रियजना पर आयी हुई विपत्ति की कल्पना कर वे दुःखी हुए थे । सीता ने उनके मुख को गोधूलि के सूप के समान मलिन दखा था ।

उहाने यवहार कुशलता का परिचय कर कौशल्या को समभाषा कि कवयी को बहिन मानना प्रबल के साथ ढंढ उचित नहीं है । सीता को समभाषा दप और मान को त्याग कर भरत को सतुष्ट रखना तभी भरत तुम्हारा पानन करग ।^३

कवल इसी रामायण में राम ने मुखलज्जा छोडकर कवयी से क्षुभ हाकर कहा था— मेरे बनवास से पिता को दुःख देकर इस राज्य को पा कर कितना बडा सुन तुम्ह मिलगा ?—

मोर बनबासत बापक दिया दुःख । इतो राज्य भार कत बर हुइवे सुख ।

१७०४

सीता से दान करत समय उहाने कवयी का काला सप कहा ।^४ कवय द्वारा

१ मागल्य दियोक माव स्त्रीर आचार ।

विधिनि विनाश होक सीतार आभार ॥ १५५५ ॥

२ नुगुद्याइत मुतथोर हुया गज्यहीन । रात्रि यन चन्द्रकांति नकरे मलिन ॥

—१७१० ।

३ कवयीक दक्षिणा भगिनी सम हिन । प्रबल सहिन ढंढ नुहिने उचित । १७६१ ।

दप मान एरि तान चित्तक तुपिया । तब अनुरूप तामाक भरते पुपिया ॥

—१८४४ ।

४ पापन सन्चिन करार दगिन कवयीक बालसप । १८२०

वन्दा बनाय जाने पर भी उन्होंने ककेयी के प्रति क्षोभ प्रकाशन किया था—

राघवे बोलत सिद्ध ककेयोर काय । पापिण्डीर काये प्राण याइव वन माज ॥

३३६०

वे शीलस्नेह सम्पन्न भी हैं। लक्ष्मण ने राम से कहा था कि राज्य पर अधिकार कर लो। उन्होंने अनेक तक दवर तथा राम की पौरुपरहित वृत्ति पर क्षुब्ध होकर उन्हें उक्साना चाहा था। राम ने अपने इस छोटे भाई के प्रीति निहित कटु शब्दों के मम का ममभ कर लक्ष्मण का डाँटा नहीं था, अपितु हाथ पकड़कर उन्हें समझा बुझाकर शांत किया था। वे असार ससार के क्षणिक जीवन के लिए अपने गान का नाश नहीं चाहते थे।^१ कौशल्या ने दण्ड्य को दोष दिया। राम ने पिता की निर्दोषिता समझी थी तभी उन्होंने कहा—राजा ने ककेयी को पहले ही वर दिये थे, इसमें पिता का दाप मैं नहीं मरना। छ० १७६३।

भाइया के प्रति उनके मन में अगाध प्रेम था—'भाइ मोर सुबाध भरत शनुषन।^२ रावण विजय के पश्चात् भरत से श्रीघ्न मिलन की चिन्ता में ही उन्होंने विभीषण के प्रस्ताव को आदर-सहित अस्वीकार किया था। अयोध्या लौटने पर उन्होंने पहले भरत का स्नान कराया था।^३

लक्ष्मण के आहत हान पर राम अत्यधिक व्याकुल हो उठे थे— मैं लक्ष्मण ऐसा भाई कहा पाऊँगा। मेरा वज्र ऐसा हृदय फट गया नहीं जाता। सीता के शोक में ही मेरे प्राण क्या न निरल गये। लक्ष्मण का शोक उस शोक से सौगुना अधिक हुआ गया है। लक्ष्मण के बिना मेरा जीवन निष्फल है। पृथ्वी फट जाए तो मैं समा जाऊँ। लक्ष्मण के शोक से मेरी बुद्धि आकुल है। मैं अपने सभी अस्त्र भूल गया हूँ और पागला जसा हुआ हूँ।^४

अपने ऊपर विपत्ति आने पर उन्हें अपने साथिया की पहले याद आती थी। नागपाश-बद्ध होने से मृत्यु की निरन्तर दल उन्हें एक ही काय की चिन्ता रह गयी

१ असमाया रामायण, १७४७।

२ वही, १८४३।

३ वही, ६६४१।

४ काथा गेले पाइबाहो लक्ष्मण हेन भाइ। वज्रसार हिया किय फुटिया नयाय ॥

—६१४८।

सीतार शोकत केन पराण नगल। लक्ष्मणर शोक सातो शतगुण भल ॥ —६१५०।
लखाइ अबिहन मार जीवने निष्फल। पथिवी फाटल दह याओ रसातल ॥

—६१५२।

लक्ष्मणर शके मार बुद्धि भैला आउल। अस्त्र सब पास रहा भला यन बाउल ॥

—६१५३।

धी—बचारे सिभीषण का राज्य न मिल गया 'सिभीषण बाहुगण पाश्र्वत गत्र ।'^१ उपकारी गण्ड का मन से लगाकर धीर उमगा चुम्बत लहर उग गिता श्मश्रु अथवा पितामह अत्र न ममान देगा या ।^२

सीता की अग्नि-परीक्षा के पूरे अनन्त विचित्र स्थिति थी । सीता का मन ही मन स्नेह उमरान गया क्षण मय गच्छण हा जा घोर श्मश्रु म क्काम । सीता का दुःख दग्ग उनरी प्रांगत म अंगू उमरु प्राग किन्तु फिर भी ये अग्निग दाप कर रह थे—

सीता क देखिया राम अन्तगते स्नेह । दाले सक्कण क्षण निक्कण देह ॥

दुःख देति रामर चक्षुर परे पानी । श्रेष करि पुन ताप परे टानि टानि ॥ ६४६६

उनकी उक्तियां वाल्मीकि जमी ही हैं किन्तु उनकी कठोरता नही है । ये सीता का पार्श्वरत्न हाकर सना क धीर ग श्मश्रुण प्राण का प्राण्य दन है कि पुन यदि माँ को देय ता दाप ही क्या है ।^३ ये वाल्मीकि क अतुमार कठी कडी बाने कहन हुए भी यह स्वीकार करन जात है । तुम्ह स्वीकार कर बहून कुयण मिनगा । जा अपवाद क कारण तुम्ह स्वीकार न करूगा ।^४ सीता क निराराहण क समय उनर नेत्रा से आंसू गिरन लग थे । अग्नि से उहान क्काम था—सीता सनी है मैं भरी प्रकार जानना हूँ किन्तु लाग निन्दा न करे कि स्नन त्तिना ता रावण के यहाँ रही इगोलिण मैंने परीक्षा ली । छ० ६५०३४ ।

शकरदेव के राम—राम क दग्ग अन्तिम स्वरुण का ही विराम शकरदेव न उत्तरवाण्ड म किया है । राम कुछ अधिक्क मुशील एव सक्कण जान पडन है । उहान लाज-अपवाद के कारण सीता का निर्गमित ता किया किन्तु अपन इस काय का क गभवती स्त्री का बध मान कर अत्यन्त दुःखित हुए । अश्वमेध यन क समय सीता की स्वर्ण मूर्ति दख कर उनकी आँखें अश्रुपूर्ण हा गयी थी ।^५

दोना पुत्रा का पा कर क उह कठ से लगा कर दुःख भूलन का प्रयास करते थे । सभास्थान म वाल्मीकि की शपथ पर विश्वास करत हुए भी तथा सीता के चरित्र के प्रति आश्चर्य रहत हुए भी वे लोक अपयण से फिर भी भीत जान पडे । सीता ने सात्विक श्रेष मुक्कन ज्वलन्त दष्टि से इह दखा ता इह साहस नही हुआ कि सीता को देख पाते । सीता के पाताल प्रवेश करने पर राम न पध्वी पर भीषण श्रेष किया । दोना पुत्रा का गने से लगा कर उनकी रातें रोने रोते बीत जाती थी । बचारे कत्तय

१ असमीया रामायण ५१५३ ।

२ वही ५१७६ ।

३ वही ६४५८ ।

४ तोमाक आनिले कर कुयण लभिवा । जन अपवात्त हतु तोमाक नेनिवो ॥ ६४८०

५ असमीया रामायण ६७६० ।

शील राम कत्तब्य की बेदी पर अपना मवम्ब याछावर कर घर म एमे रहन थे जस वनवाम कर रह हा—भल यन गह वनवास ।^१ राम को लक्ष्मण-त्याग का एक और कष्ट भोगना पडा था । लक्ष्मण का गले स लगाकर वे मूर्च्छित हा गय थे ।

बेंगला रामायण के राम—बेंगला रामायण मे माल्यवान न रावण से कहा था—तुम इतन दिन स राम के विरम के विषय म मुन रह हा । वे मुजा के बन्धु है एव दुजन के यम है । —पृ० २६६ ।

बेंगला रामायणकार ने राम का मानव दिग्गते हुए भी ब्रह्म भी दिखाया है । राम अत्यधिक उत्तार ब्रह्म है । प्रारम्भ म ही कहा गया है कि विष्णु अपने चार अशो म प्रकट हाग । रामायण के भरद्वाज आदि पात्र भी जानत हैं कि राम ब्रह्म हैं । राम न अपनी शक्ति से मूर्च्छित लक्ष्मण को जिना दिया था । भक्त राक्षसो के प्रति व अत्यधिक उत्तार दये गये उनकी स्तुति मुन कर बार-बार धनुष बाण फेंक देन है और युद्ध म विरत होना चाहत है । तुनसीनाम के राम का ता याद रहता है कि वे ब्रह्म हैं किन्तु बेंगला लेखक के राम अपने का भून रहत है कि ब्रह्म है अतएव जहा कहा भी चरित्र का आवेशमय वणन होता है, वहा उनके हृदय की सत्य स्थिति ही प्रकट हानी है नरनीता का प्रश्न नही हाता ।

० उनके ब्रह्मत्व के साथ ही सहा मानवीय रूप का भी वणन है । दशरथ न राम को अभिषेक का निश्चय मुनावर भरत के प्रति शका प्रकट की थी उम समय राम न मोन धारण कर उनकी शका का प्रतिवाद नही किया था ।^२ अभिषेक के ममाचार स प्रसन्न हाकर उन्हाने लक्ष्मण का गने म नमा निया था । मुमत्र राम को नने प्राया तब उन्होंन सीता म कहा था—जान पटता है विमाना न कोई पडयत्र किया है ।^३ वनवाम की आना न उह दुख और शोभ हुआ था जो कि कीशल्या के प्रति उनके इन शक्त मे प्रकट हाता है—माता, किसलिए हपिन हो रही हो । हाय म आयी हुई निवि दयनाय से चनी गयी । आज तुम, मैं सीता और लक्ष्मण चारों शाकमिषु म निमज्जिन हाग । माता यदि तुमन भी पिता की सेवा की होती तो तुम्हारे ऊपर यह कष्ट क्या आता ?^४

मीना-दृशण हान पर वे श्रावपूर्वक पठत का काटकर खण-खण कर दन के लिए प्रस्तुत हा गय थ—“पत्रत काटिया आजि करि खान खान । सुग्रीव के द्वारा वस्त्रादि प्राप्त कर वे इतन अविश शक्ति-अभिभूत हा गय कि घरनी पर नाट-गोट हाकर राय ।

१ अममीया रामायण ७१५१ ।

२ बंगला रामायण ६३ ।

३ वही, १०१ ।

४ वही, १०३ ।

उनको स्नानशीलना तो घाय कई घनगरो पर भी दिगायी पत्नी है । दगय की मत्यु का समाचार गुनरर वे धरती पर लाट र गेय थ । युद्धभत्र म घन्त्रिका द्वारा रावण की रक्षा करने पर भी गेय । दगी र वगन चुराय तत्र राय और तत्र और वालि का मारकर भी वे राय थ ।

उनके मनोवेग वास्तविक है उन पर ब्रह्मरव का आरोप नहीं है । मारीच के घृत आह्वान म व चिन्तित हो उठ थ और त्रिहुन गवान म उहान व्याकुन होकर देवताया स विनय की थी - आन के स्नि मरी गीता ती रक्षा करो ।' कुटी म गीता को न देखकर वे मूर्च्छित होकर गिर गय थ । वे पथिका स उमाश् वस्त त्रिहिंया की तरह सीता के विषय म पूछने थे । वे गोदावरी के जन म प्राण देा को प्रस्तुत हो गये थ - गादावरी सलिलते त्यजिय जीवन । -पृष्ठ १६० ।

विपत्ति पडने पर उहोन कवेयी को बोमा है । सीता हरण के अवनर पर उहाने कहा - कवेयी का मनोभीष्ट अब गिद्ध हो गया । नागपाण से पीडित होकर उहाने अपन परिवार क प्रत्येक सदस्य की चिन्ता करते हुए कवेयी के लिए सदेश भेजना चाहा था - माता तुम्हारी साध पूरी हो गयी । माया मीना के बध पर व वाले थे - विमाता न वरी वनकर मुझे वन म भेजा । मैंने अपने प्राणो की जानकी आज लो दी ।

विमाता हृदया बरी पाठाइला बने । हारालाम प्राणेर जानकी एत दिने ॥ ३७०

लक्ष्मण शक्ति के समय भी उहाने क्षुब्ध होकर अपना मतय यवन किया था - पिता न मुझ छत्रच्छद प्रदान की आना नी थी मौननी माता कवेयी ने पत्यत्र किया । पृष्ठ ३८४ ।

बगला रामायण के राम स्नेहशील सम्पन्न कत य परायण भी हैं । उहाने उग्र परशुराम के प्रति प्रथमतः विनय युक्त वचन ही कहे थे । सुमत्र ने दशरथ से कहा था - तुम्हें राम ने प्रणाम कहलाया है । राम का जसा शील है वस ही उनके वचन हैं - रामेर येमन शीत तेमन वचन । पृष्ठ ११५ ।

उहाने भरत पर सन्देश नहीं किया था । उहाने कौशल्या से कहा था - माता भाई भरत के शरीर म कोई दोष नहीं है - वान दोष नाइ माता ताहार शरीरे । पृष्ठ १०२ । चित्रकूट म वृद्ध लक्ष्मण को भी उहाने समभाकर कहा था भाई भरत यह सब नहीं जानन । विभीषण से उहाने कहा - भरत भाई ने राजकुल मे जन्म लेकर सुख भोग कित्तु वे मरे दुख स दुखी हैं । ऐमे भरत को आलिंगन करने के वात् ही पवित्र वस्त्र और चन्दन आदि सुगन्धिया को धारण करूंगा ।^१

१ वल्लभ श्रीराम गुन सक्न देवता । आजिकार दिा मोर रक्षा कर सीता - १५७

२ राजकुन जन्मिया भरत भाइ सुगी । केवल आमार दु खे हये आछे दु खी ॥

हन भग्नर यदि करि आनिगन । तत्र स परित्र वस्त्र सुगन्धि चन्त ॥ ४४१ ।

कन्ये को उन्होंने तभी वामा है जबकि व अत्यधिक विषादमयी स्थिति में हैं अथवा उद्धाने सद्वृत्तका सम्मान किया और उसका दोष का दूर करने की चेष्टा की। उनके मुख से वनवास की आज्ञा सुनकर राम ने हँसकर कहा—माता, तुम्हारी आज्ञा से मैं अभी वन जाता हूँ। लक्ष्मण से उन्होंने कहा था—सब विधाता का खेल है सिनी का दाप नहीं दना चाहिए।

भरत ने भी उद्धाने कहा था—माता का मिथ्या अनुयोग (शिकायत) क्या करत हो मैं तो पिता की आज्ञा से वन में आया हूँ—

मिथ्या अनुयोग केन कर विभातार । वने आइलाम आमि आज्ञाय पितार ॥ १२६

राम अपने पिता की निंदा नहीं सुनत थे, जहाँ उनकी निंदा होती वे वहाँ से उठ कर चल दिया करते थे—

येलाने शुनेन राम पितार निन्दन । करेन सेस्थान हते त्वरित गमन ॥ ११२

रथ के पीछे दौड़कर आते पिता की दुःखिता से नहीं दूर सके थे और उन्होंने सुमन से रथ जाग से हाकने के लिए कहा था। पृ० १११

लक्ष्मण के प्रति उनका उत्कट आत प्रेम उस समय प्रकट होता है जब रावण ने लक्ष्मण के ऊपर शक्ति पेंकी। राम ने अशु-प्लावित मनसा शक्ति के प्रति गिड़-गिड़ा कर प्रायना की थी—तुम रावण के पास लौट जाओ, मैं तुमसे अपने भाई का प्राण-दान मागता हूँ। पृ० ३८२।

सुमित्रा माता के अचल की निधि लक्ष्मण का खाकर वे अयोध्या जाने को तयार नहीं थे। उन्होंने कहा था—मुझे राज्य धन नहीं चाहिए, सीता भी नहीं चाहिए। मैं तुम्हारे शासन में सागर में डूबकर प्राण दे दूंगा। पृष्ठ ३८४।

अपने सम्पर्क में आये हुए विभीषणादि सभी का उन्होंने ध्यान रखा था। हनुमान को तो उन्होंने अपने चांग भाइयों में बड़ा माना था—चारि भाइ हैत मम हनुमान बड।

सीता का तो उन्होंने इतना अधिक प्यार किया था कि वन में चलते समय पल-पल में उनकी ओर देखते जाते थे—

कानने चलिये येत जानकी आमार । फिरे येये देखिनाभ तिले शतवार ॥ ३७१

रावण को प्रथम युद्ध में घायल कर उस छाट कर राम ने सच्ची वीरता का परिचय दिया था—एक दिनेर रणे आमि बरी नहि मारि । पृष्ठ ३०४।

सीता की चरित्र परीक्षा का घमसकट इन राम के सामने भी था। राम वाल्मीकि के राम के समान कठोर प्रतीत नहीं हुए। उन्होंने सीता का पर्दा धोकर सभी तागा के बीच आन की दमनिका आज्ञा दी कि राजा की गृहिणी प्रजा की जननी

१ गुनिया कहते राम सहाय्य वन । सामान्य आज्ञाय माता एइ पाइ वने ॥ १०२।

होती है। यदि पुत्र माँ को देगे तो इसमें क्या हानि है। किंतु गांध ही तबोर झार
वे यह भी कहने हैं कि जिनका उद्धार किया गया उम सभी में। जा मनी होगी
वह स्वयं अपनी रक्षा कर लगी।^१ सीता के प्रति बटु बना वाता गमय उक्त तथा
से आँसू भर रहे थे। वे पाल्मीत्र एवं अगमीया-नगर ने गम की सुचना में अधिक
भावप्रवण हो उठे हैं।

अयोध्या में भद्र नामक नरस सीता का कलक सुनकर उनकी आँगा में आँसू
भर आया थे। धारी की बात अपने वात से सुनकर उन्हें टुल हुआ था। गणन क
चित्र पर सीता का साया हुआ दृग उाते मन में सन्देश अकृति हुआ था। वे लो
उपहास सहने का साहस नहीं कर सके थे इमीतिग उहात सीता का निर्वागित किया।
सीता पुन अयोध्या आयी तब सबके समभान पर भी व सीता की परीक्षा क लिए
दड रह उहान किसी की एक न सुनी— राजा हाकर यदि कोई जाय नहीं करता
तो स्त्री के अनाचार से ससार नष्ट हो जाएगा —

राजा हवे स्त्रीर यदि ना करे बिचार । स्त्रीर अनाचारे नष्ट हइवे ससार ॥ ५७१

सीता के पाताल प्रवेश पर उनका विशाल चरम-मीमा पर पहुँच गया था। वे
अपने रोने हुए शिशुआ को देग न सके थे। सीता ने विषय में उहोने कहा था—

सीता समान नारी ना हेरि नयने । कि करिब राजा हैया सीता बिहने ॥ ५७४

(सीता के समान नारी मुझे नहीं िखायी पडती। सीता के बिना राय से
कर में क्या करेगा।)

दोष

०क—बगना के राग में गुरु विश्वामित्र के प्रति वह रिनयणीयता नहीं
दिखायी पडती जा कि मानस के राम में है। वे विश्वामित्र के भीर स्वभाव का उपहास
करते प्रतीत होते हैं। स्वयंवर सभा में भी अत्यंत आत्मविराग के साथ हसते हुए
धनुष उठाते है। सीता से विवाह की प्रथा आदि ने सम्प्रथम व विश्वामित्र की
उपेक्षा सी करत हैं और उह घटक ब्राह्मण बना कर अयोध्या भेजा जाता है।^२

०द—राम के पास विधवा मदानरी आयी और उस उ होने सीता समझ कर
आजन्म सोभाग्यवती रहन का वर न लिया। इसमें राम अपनी ही पत्नी को वर देते
हैं। राम क्या इतन भ्रम थे कि स्व और पर पत्नी में भेद न समझ सके। अच्युत
ऐसा समझे ही थे तो व सीता के प्रति उदार प्रतीत होत हैं जबकि सीता की उपस्थिति
पर वे बठार हुए। उनके चरित्र में यह असंगति है। लगता है पूव प्रचलित आख्यान

१ उदारिला याहारे दखुव सवलोके ।

सती य हइवे स रागिध आपनावे ॥ ४३६ ।

२ बंगला रामायण, दक्षिण, प० ७३ ७६, ८० ।

को जोड़ने के लिए ही राम के माथ यह पटना लिप्यायी गयी है। पृष्ठ ४३४

उडिया-रामायण के राम

० राम के गुणा के विषय म वनिष्ठ न बना था—राम श्रीमन्त पुष्प धार्मिक विद्वान और सकल गुणो मे निपुण हैं—

श्रीमन्त पुरुष सेहू धार्मिक विद्वान । सकल गुणरे राम अटइ निपुण । २-१६

राम का भेजकर लीटे हुए मुमत्र का जब अयाध्यावातिया न धिन्वारा कि क्या तुम भरा की सग करन और पनयी क अदन नगान क लिए जोर हा, तब उहाँन कहा था—राम समुद्र म गम्भीर है, उह मत्य म काई चिरन नही कर सकना ।

० उडिया के राम भी ब्रह्म हैं और वे अपन ब्रह्मत्व मे सुपरिचिन हैं । वे भीना स स्वय वत्त हैं कि असुरो का मग्न रे लिए उहान अवनार निया है—‘असुर मारिवाबु अटइ अवनारि ।’^१ मेघनाथ डाग फेंके गय ब्रह्म-बाण की म्दुनि करन समय भी उहाने कहा— मुहिं नागरण प्रभु मानवावनार ।^२ भीना और शबरी का भी पान था कि राम वामुदव और परब्रह्म हैं म्मा उहाने राम म कहा भी ।^३

राम अपन ब्रह्मत्व से परिचिन हा कर भी मत्य-मत्य ही अपरिचिन हा कर व्यवहार करते हैं । यहा ममानता बेंगना रामायण क राम म है, मानम के राम मे नही । उडिया रामायण के राम शिवा करत समय माग भूल गय ।^४ रावण पर विजय प्राप्त कर उहान ब्रह्म से जानना चाहा कि वे कौन है ?^५

राम के मानवत्व और ब्रह्मत्व दाना रूपो का विकसित निया गया है । लाना म मगनि त्रिगलन के लिए लेखन न कल्पना की है कि शाप क अनुमार ‘अज्ञान राम के शरीर पर छाया है, जिमके कारण राम अपन का जान नही पात ।

इष्टदेवता की भक्त-वत्सलता एव उदारता लिखा के लिए राम के मन की मदुवना एव दूध्वादनश्याम-मौदय की मधुरता का भी बणन हुआ है ।^६ भक्ता क प्रति अथु विगनित भावुकता का चित्रण भी राम के स्वभाव म हुआ है । मुद्र-भद्र म वीर-

१ उडिया रामायण, ३-१० ।

२ वही ६ १२६ ।

३ मा प्रभु तुम्ह त अट स्वय वामुदव (भीना) उडिया रामायण, ३ २७ ।

तुहि राम परब्रह्म शव चक्ररागी (शबरी) वही, ३-५२ ।

४ उडिया रामायण २२ ।

५ वही ६ ३१३ ।

६ परम दयालु राम कल्याणार्थि । परमानन्द पुष्प सब गुणे मिद्धि ॥

दूवादिन श्यामन य मधुर मूरति । उडिया रामायण ६ २१६ ।

बाहु की भक्ति देखकर उस वाण से बीघे के लिए उनका हाथ नहीं चलता ।^१ उगसे बोले—तू भाई लक्ष्मण से भी बड़कर है—'भाई लक्ष्मण हैं ये अधिप अट्ट तुहि ।'^२

•वीर-दात्रिय राम ब्राह्मण भक्त, समदर्शी एवं मुनीत हैं ।

(१) धनुष पर प्रत्येक चरणों का विश्वामित्र का आश्रय सुनकर वे लजा गये थे वीशिव के चरणों में प्रणाम कर और भाई लक्ष्मण की भुजा पकड़कर वे आगे बढ़े थे—

विश्वामित्रं मुहुर एतन्क शुणि । साज सजि होइण उठिले रघुमणि ॥

कउशिक पादसे से करि नमस्कार । लक्ष्मणर भुज धरि हले आगुसार ॥ ११४६

सप्तवक्ष वेध के पूर्व भी उन्होंने अपने गुरु वीशिव को मन-ही मन स्मरण किया था ।^३ मर का मारकर उन्होंने भीता से बहा था—तुम मुझे युद्ध करने से रोकती थी । विश्वामित्र की शिक्षा परशुराम के धनुष और अगस्त्य के अस्त्रादि के बल पर मैं त्रिलोक में किसी से नहीं डरता ।^४ परशुराम का ब्राह्मण होने के नाते उन्होंने कुछ नहीं कहना चाहा था किन्तु बद्ध वयस में ब्राह्मण हावर भी दात्रिया की तरह गव प्रकट करता हुआ देवकर तथा अपने गुरु जना का अपमान देववर ही राम को सात्त्विक शोध पकट कर कहना पडा—चरणों में पड़े हुए मेरे बद्ध पिता पर तुम्हें दया नहीं आती । ब्रह्मा के समान वसिष्ठ और विश्वामित्र के वचन तुम नहीं सुन रहे हो ?^५

(२) वन में अयोध्या की चिन्ता करने पर लक्ष्मण ने राम से कहा—अयोध्या में आग लग जाए सभी मर जाए तुम क्या चिन्ता करते हो ?^६ तब राम बोले—एसा मत कहो । सुमित्रा कवेयी सभी मुझे एक सी हैं । मुझे भरत और शत्रुघ्न तुमसे भी अधिक प्रिय हैं । युद्ध समाप्ति पर भी उन्होंने कवेयी के प्रति सदभाव प्रकट किया । भरत के प्रति उनका इतना अमीम स्नेह था कि चित्रकूट में लक्ष्मण के शका करने पर उन्होंने फटकार कर कहा था—मैं और भरत एक प्राण हैं वह मुझे क्यों मारने आएंगे । भरत मेरे साथ रहेंगे तुम लौट जाओ । तुम अनीति क्यों कहते हो ।^७ वैसे राम लक्ष्मण को भी बहुत अधिक प्रेम करते थे । एक बार शक्ति से मूर्च्छित

१ शरकि विधि धि मोर हस्त न चनइ । भक्त शिरोमणि रे रावण तनधि ॥

६ २२७ ।

२ उटिया रामायण ६।२२७ ।

३ वही ४।२८ ।

४ वही ३।२७ ।

५ वही १।२१५ ।

६ वही २।५३ ।

७ वही २।८२ ।

लक्ष्मण दुबारा युद्ध के लिए चले तो राम ने अत्यधिक मोहग्रस्त और शक्ति होकर कहा था—तरे साथ रहने के कारण मैं सीता को भूत गया हूँ। तेरे जीवित रहने में ही मैं सबसम्पत्ति मानता हूँ—

सीता मुषङ्गलि मु तोहर सड गे थाते । सबु सम्पद मोहर तोहर जीबते ॥ ६७५ ॥

मघनाद से युद्ध के लिए जाते हुए लक्ष्मण का हाथ उहाने विभीषण को सौंपा था अपन हाथ में उनके धनुष पर डोर बांधकर कंधे पर तूणीर कसा था।^१ और युद्ध में लौटने पर रावण ने लक्ष्मण को उनके घोड़े से बाण निकाल दिये थे।^२ दुवासा की उपस्थिति के कारण लक्ष्मण ने नियमभंग किया। राम के सामने धमसकट था उन्होंने लक्ष्मण को निर्वासित किया। उनके जाने पर राम रो पड़े थे।

अपने सम्पत्ति में आये हुए प्रत्येक व्यक्ति का उहाने ध्यान रखा। अनेक पशु-पक्षियों के प्रति उहाने उदारता दिखायी। जटायु को उहाने पिता के समान माता। लक्ष्मण ग्वाला का मारकर उनकी गायें छीनना चाहते थे। निर्दोषा को मारने के लिये राम प्रस्तुत नहीं हुए। उहाने बड़ी ही मार्मिक बात कही—सीता के हरणकर्ता को मार न सका, निर्दोष जना को कैसे मारूँ ?^३ हनुमान के श्लोच जाने पर उहाने हनुमान के प्रति तथा अश्विनो के प्रति वृत्तवत्ता प्रकाशित की।^४ हो सकता है कि सुग्रीव बालि की अकशाधिनी पत्नी रामा को स्वीकार नहीं करता। राम ने उससे अनुरोध किया कि गोमा युद्ध है उसका काँद अपराध नहीं। बालि ने उसका बलात् हरण किया था। पृष्ठ ४।४१।

•सीता के प्रति राम का व्यवहार—(१) साधारण प्रेमी-पति—पुष्प शय्या के निम्न सलिया से हस-हँस कर बातें करत हैं और जस ही बहाना कर सलिया चली जाती है वे भट बिबाड बंद कर लत हैं। वे सीता को गोष्ठ में बिठा कर अत्यधिक आतुर प्रेमी की काम चप्टाया का प्रकट करन वाला प्रेमालाप करते हैं। वे सीता से भी उमी प्रचार की चप्टाया के करने का सहयोग चाहते हैं।^५

वे प्रेमानुल पति हैं किन्तु वे एकतारी व्रत का पालन करत हैं एवं अन्य युवतियों का कोशल्या अथवा सहोदरा के समान ममभते हैं—

एक नारीव्रत मुहि कररिछि नियम । पर युवती मोते य कउशल्या सम ॥ ६-३६७
अथ युवती ये मोते सहोदरा समान । १ २०४

१ उडिया रामायण, ६।१६१।

२ वही ६।१७१।

३ वही, ३।५७।

४ वही, ६।२००।

५ वही, १।२०२, २०३।

वे जनकपुर में सखिया के साथ परिहास का आनन्द लन हैं किन्तु जय व मर्यादा छोड़कर वाम विह्वल चपटाण करती हैं ता राम कुपित हान हैं।^१

(२) त्रापी पति—वाल्मीकि के राम की तरह युद्ध में विजय के उपरान्त सीता ग्रहण के समय कटूकृतियाँ करत हैं और सीता व अग्नि प्रवेश व समय के विलाप करत हुए बहृत हैं—मैंने एम्मी मूर्खता क्या की अत्र तरी जगी मुदरी बहा पाऊँगा।

(३) लावापवाद भीत पति—लावापवाद के भय से उन्हान सीता का निवासित किया और इमीलिए पुन परीक्षा लेन का आग्रह किया।^२

(४) उग्र प्रम—सीता व पाताल प्रवेश पर मुह में वस्त्र दवर राय और मूर्च्छित हो गये। पथ्वी से श्रुद्ध हावर बोने—मरी गीता ला कर दो नहीं ता बाण से नष्ट कर दूगा।^३

०नीतिकुशलता—विभीषण के आन पर राम व पत्न लक्ष्मण को भजा कि भीतर-बाहर की तथा हानि-लाभ की बात जानकर उस यहाँ लाना।^४ विभीषण क सामने धनुष छूकर प्रतिज्ञा की और उसके माथे पर पगडी बाँधकर कहा तुम आज से लका-नाथ हुए।^५ यह सब इसलिए किया कि वह डीला न पड़े। समुद्र पर जो पुल बनवाया था, उसकी रक्षा के लिए घाने (ठणा) बनवाये, जिस से रावण उमे नष्ट न कर दे।^६

बोष—[क] त्रापी—गुरजना की उपस्थिति में अश्लील गीत गान के कारण मथरा को पीटने हैं।^७ ख—सस्ती भाषा बोलते हैं—सुग्रीव से भेंट हाने पर वे पूछत हैं—तुम ता बटर हा य मुकुट-मुण्डल कहां से पा गये? क्या किसी ने दिय हैं या चुरा लाये हो?^८ ग—विभीषण के साथ सिंहासन पर बठने के लिए प्रस्तुत मदोदरी को देखकर राम कहते हैं—तोहर पणतरे दिशह मोर सीता^९—तरी साडी के अचल मे मुमे सीता दिखायी दती है—एक पत्नी-व्रत धारी राम व मुख से ये शब्द उचित नहीं लगते। वे मदोदरी व प्रणाम करन पर उस हाथ पकडकर उठाते हैं और इस प्रकार

१ उडिया रामायण १।२।१०।

२ वही ७।१८०।

३ वही ७।१८०।

४ वही ७।१८२।

५ वही ५।६५।

६ वही ५।१०१ १०२।

७ वही १।११७।

८ वही १ २०८।

९ वही ४७।

१० वही, ६-३०३।

उमे पवित्र करत हैं ।^१ सम्भवत उनके स्मरण की पवित्रता दर्शित करना ही वेगव को अभीष्ट होगा, फिर भी इमम उपयुक्त अनौचित्य ही है ।

०मानस के राम—तुलसीदास के राम का समझने के लिए इन दृष्टिकोणों को समझ लेना आवश्यक है—[१] वे परब्रह्म हैं और उह अपने ब्रह्मत्व का पान है, इमीलिए उनम अदभुत समयम एव समय के साथ ही निर्वेद भाव है । [२] वे पुण और ममाज का प्रत्यक्ष परिस्थिति के लिए आदेश हैं अतएव उनम शील गुण-युक्त वतव्यपरायणता है । [३] बुलियमहू चात्रि बढार अति कामल तुमुमहि चाहि^२ के अनुमात्र के बोधन हात हुए भी आततायी शक्ति के लिए तथा वतव्य-भावन के लिए यज्य-वटिन भी है ।

०ब्रह्मत्व—तुलसी के राम ब्रह्म है और उह अपन ब्रह्मत्व का मन्व पान रहता है । इमम उनके चरित्र चित्रण म मानव-भुनभ भावावेश के स्थान पर निर्वेद-भाव मितता है । अर रत्नाश्रा ने मन्स्वती के पाम जानर दुःख निवृत्त किया, उस समय उहान राम का विस्मय और एग म रहित बताया है ।^३ अथाध्यावाण क मगलाचरण म भी राम के निर्वेद रूप की वटाा की गयी है ।^४ तत्वातीन परिस्थिति या म आनात जनता का गाम्वासी तुलसीदास क राम का पूण समय साकार ब्रह्म रूप अवश्य ही आश्रयस्त करने वाला मिद्व हुआ । मानस के वमिष्ट, कौशल्या आदि पात्र राम के ब्रह्मत्व म परिचित हैं । स्वयं राम ही अपन की ब्रह्म बताकर लक्ष्मण, शबरी आदि आत्रि का अपनी भक्ति आत्रि के सम्बन्ध म विस्तृत रूप से बतात चरते हैं ।^५ राम के ब्रह्मत्व और निर्वेदभावि पर आयात्म रामायण का प्रभाव है । अध्यात्म रामायण के राम क समय का भी तुलसी पर प्रभाव है, किन्तु तुलसी के राम अपन प्रेरणा-स्रोत क राम स भी अधिक मुशीन हैं ।

द्विप प्रधान-मस्ति की एक वही दन है मयुक्त-नारवार । राम मयुक्त-परिवार क लिए चिन्तन आदेश हैं । राम का शीन एव परिवार प्रेम सभी व्यक्तियों को स्नेह के एक सूत्र म अर्थात् विद्य रहता है ।

०उनम सररता तो रतनी अधिक है कि वे शत्रुघ्न का भी प्रिय ह । दशरथ न बकेयी से कहा भी था— जामु गुभाउ अग्निहि अनुकूना । गो किमि करिहि मातु प्रतिवूना ॥^६ इमी प्रकार भरत क शत्रु म अरिहूक अनभन कीन्ह न रामा ।^७ राम

१ उलिया रामायण ६ ३०४ ।

२ मानस ७-१६ [ग]

३ तिमम हरण रहित रघुराउ । तुम जानहु सत्र राम प्रभाऊ ॥ २ ११ ३ ।

४ प्रसन्नता या न गतामिपेवतस्तथा न मस्ते वनवामदु खत ॥ अया० प्रारम्भ

५ पथ कन्त निज भवति अनूपा ॥ मानस—३।१।१४ ।

६ मानस २।३।८ ।

७ वही, २।१८-२।६ ।

इतने सरल हैं कि जब उनका पुनीत मन जनवत्तनया की प्रलीनता का भाव दलवर शोभ मय हुआ तो उन्होंने अपने इस भाव का उद्घाटन केवल अपने अनुज के समक्ष ही नहीं किया अपितु गुण विश्वामित्र के प्रति भी कर दिया—

राम कहा सबु कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुप्रत छत नाहीं । १२३६ २

० राम निश्चयन करने के विलम्ब उनमें सात्विक अभिमान का अभाव न था । जहाँ वे अपने पुनीत मन के शोभ प्रसन्न होने का वर्णन करते हैं, वही रघुवर्णिया के स्वभाव का वर्णन कर अपने ही गुणों का परिचय देते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें इन गुणों पर अभिमान है ।

रघुवसिंह कर सहज सुभाऊ । मन कुपथ पगु धरइ न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीत मन केरो । जहि सपनेहु पर नारि न हरो ॥
जिह क सहहि न रिपु रन पीठी । नहि पावहि परतिय गनु डीठी ॥
मगन लहहि न जिह क नाहीं । ते नरवर थोरे जग माहीं ॥^१

परशुराम के आगे सतत नम्र रहकर भी जब राम बार-बार उनके द्वारा भक्तित्व होने लगे उस समय भी राम ने अति नम्र शब्दा में अपना सात्विक अभिमान प्रकट कर ही दिया—

छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुल बलकु तेहि पावर आना ॥
वहजें सुभाउ न कुलहि प्रससो । बालहु डरहि न रन रघुवसो ॥^२

बलिष्ठ रूप और मस्त गति का वर्णन तुलसीदास ने इन शब्दा में किया है—
वेहरि कधर बाहु बिसाला ।^३ वपभ कध वेहरि ठवनि ।^४ धनुभग के समय जात
हुए राम— सहजाहि बले सकल जग स्वामी । मत्त मजु बर कुजर गामी ।^५ बुद्धदात्र
म के विचलित न होत य कभी साहस नहीं सोते थे—

देखि राम रिपु दल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदह चढावा ॥ ३।१७।१३

व क्रूर वीर नहीं थे । वे होमर के एकीनीज की भाँति नहीं थे जो कि अपने विपक्षी वीर हेक्टर को मारकर उसके शव की एडिया का रथ में बांधकर घसीटता फिरे । राम की सद्यता में वीर भाव है और उनकी वीरता में है सद्यता । राक्षसों द्वारा क्षाय हुए ऋषियों की हड्डियों का ढेर अपने सामने देखकर राम के नेत्रों में जल भर आया था उन्होंने उस समय बाँह उठाकर दीप्त स्वर में प्रतिज्ञा की थी—

१ मानस १।२३।१५ ८ ।

२ वही १।२८।३ ४ ।

३ वही १।२१।५ ।

४ वही १।२४।३ ।

५ वही १।२५।५ ।

पृथ्वी से राक्षसा का विनाश करूँगा ।

अस्थि समूह देखि रघुराया । पृथ्वी मुनिह लागि अति दाया ॥
निसिचर निचर सबल मुनि छाए । मुनि रघुबोर नयन जल छाए ॥
निसिचर होन करउँ महि भुज उठाय प्रन कौह ।^१

आहत बालि क आगे के धनुष पर बाण चलाय उसे फटकारत हैं, वितु उमके वितय बल पर पिघल जान हैं और उस तन धारण करन के लिए कहत हैं ।

वीर-नायक विषयक राम की जो कल्पना है वह विभीषण से वात्सल्य के समय प्रकट हो जाती है । विभीषण न चिंता प्रकट की — नाय न रय नहि तन पद शाना । कहि विधि जितव वीर बलवाना ।^२ उम समय राम ने अपने घम-मय रय का वणन करत हुए कहा—शौर्य और धर्म रयी पहिय सत्य शील की ध्वजापनावा बन विवेक दम्भ और परोपकार के घाटे क्षमा कृपा और ममता की डारा ईश्वर भजन रयी मारयो । राग्य की डाल, सत्ताप की कृपाण दान क परशु बुद्धि रयी प्रचण्ड शक्ति, श्रेष्ठ ज्ञान का कठोर धनुष, स्वच्छ अचन-मन का तूणीर, शम-दम-नियम क बाण और विप्र एक गुरु के चरणा की पूजा रयी कवच वाला घमरय जिसक पास है, उस कौन जीत सकता है ?

०पारिवारिक प्रेम के उदाहरण प्रारम्भ से ही मिलन लग जात हैं । वे प्राण-बान उठकर पिता माना और गुरु को प्रणाम कर उनकी आज्ञा माँगकर ही सार काय करते दिखायी पड़त हैं । परिजन के प्रति उनके प्रेम में भी शील भाव गुणा हुआ है । कचेयी का स्वय विश्वास था कि राम सभी माताप्रा का कौशल्या क समान मानते थे । बुद्धि अष्ट कचेयी से जब उह अपने दुर्भाग्य के विषय में जात हुआ तो अपने शील-गुण क कारण ऐसा भाव प्रकट करत हैं कि जब बुद्ध हुआ ही न हो । बचार बद्ध पिता तथा महत्वाकाङ्क्षिणी सोनेली माता भी किसी प्रकार की मातसिर हिचक का अनुभव न कर अनएव उन्हाने इस महान् अभिशाप का एसे स्वीकार करन की चेष्टा की मानो यह उनके लिए बहुत बड़ा वरदान हो ।

मुनिगन मिलनु बिसैपि बन सबहि भाति हित मोर ।

तेहि मह पितु आपनु बहुरि समत जननी तोर ॥ २।४१

वे वाल्मीकि का समस्त क्या मुनाकर कचेयी को दाप नहीं दत ।^३ चित्रकूट में जब कचेयी भी आयी तो राम उसके मन की दशा समझ रह थे । राम एसा ही शौनमय व्यक्ति अपनी मुशीलता से उमकी ग्लानि दूर कर सकता था । वे सबप्रथम कचेयी से जाकर ही मिलन, इसलिए नहीं कि वे ध्यय करना चाहत थे । उहान सहज

१ मानस, ३।८।६ = एव ३।९ ।

२ वही ६।७६।३ ।

३ तात बचन पुनि मानु हिन, भाइ भरत अस राय । मानस, २।१२५ ।

सरल स्वभाव से उसके चरणा पर गिराए उत समभाषा और सारा लय भाष्य के मध्य मढकर उस निर्दोष सिद्ध करने का चपटा की। चित्रकूट से लौटते समय भी उन्होंने शुचिस्नेहपूर्वक प्रणाम कर उसके मन के सकोच और गान का दून कर उसे पालरी में बिठाने विदा किया।^१ चौन्ह वष की घोर यातनाओं को भेलनेर जब राम लौट तब भी उन्होंने कवेयी का ध्यान रखा। उन्होंने मद्गुण किया कि कवेयी बहुत ग्यान का अनुभव कर रही होगी कि उसके ही कारण इतने प्रनय हुए अतएव वे सबसे पहल कवेयी के घर जाकर उसके मन को सुख करने ही अपने भवन में गये।^२

भाइया के प्रति भी उनके हृदय में अपार स्नेह था। अभिषेक के अवसर पर अग पडकने के समय उन्हें प्रतीत हुआ कि ये शत्रुन भरत के आगमन-गूचक हैं।^३ उन्हें अपने भाइया की हित चिन्ता उमी प्रकार रहती थी जस कि कछुए का मन सदैव अण्डा में लगा रहता है।^४ वे भाइया का साथ बिठाकर खिलाते थे।^५ भरत राम का हृदय पहचानते थे उनके अण्डा में अपराधी पर भी प्रोध न करने बात राम भाइया के प्रति विशेष स्नेहशील थे। कभी खेलते हुए भी उन्होंने भाइया के प्रति प्रोध प्रवृत्त नहीं किया। अपने छात्र भाइया का मन रखने के लिए वे जीती हुई बाजी को इच्छा पूर्वक हार जाते थे।^६ ऐसे राम का अभिषेक का समाचार ज्ञात कर विस्मय हुआ उन्हें इस बात का धाम हुआ कि रघु के विमल वंश में यही एक दोष है कि साथ जमे और पत्र हुए भाइया को छाड़कर उडे का अभिषेक कर दिया जाता है। राम का यह सप्रेम पछतावा (प्रभु सप्रेम पछतानि^७) कितना मधुर है कितना सात्विक है। अपने सकेत पर उठने-बठने वाल लक्ष्मण का भी उन्हें सदैव ध्यान रहा है। जनकपुर में लक्ष्मण की इच्छा समझ कर ही उन्होंने विश्वामित्र से नगर देखने की अनुमति मागी थी। जब लौटने में देर हो गयी तो अत्यन्त भय प्रेम नम्रता एव सकोच के साथ गुरु के चरणा में प्रणाम कर अपराधी की भांति बठ गये थे।^८ आवेशमय लक्ष्मण जब कभी कोई अनुचित शब्द कह दते थे तो वे उन्हें सबेते से वजित कर अपने पास स्नेह पूर्वक बिठा लेते थे कि लक्ष्मण के मन में सकाच न होने पाए।^९ ऐसी ही एक स्थिति

१ मानस २।२४३।८।

२ वही ७।६।१२।

३ वही २।६।५६।

४ रामहिं बहु सोच तिन राती। अर्द्धहिं कमठ हृदउ जेहि भाती ॥ २।६।८।

५ अनुजहं सजुत भाजन करहा। ७।२५।३।

६ मानस २।२५६।५।८।

७ वही २।६।२।८।

८ वही, १।२।४।६।

९ वही १।२५३।४।

तब सामन आयी, जब भरत को समय चित्रकूट में आने दस लक्षमण तडग उठे, तिनु आकाश वाणी द्वारा चेनावती सुनकर अपने बटु शब्दा के लिए लज्जित हुए थे। राम का शील यहा देखने योग्य है। एव धार उहान लक्षमण का प्रीति-पूवक अपने पाम विठाकर उनके हृदय का सकाच दूर कर दिया तो दूसरी ओर उहानि भरत के हृदय का शुद्धभाव इस प्रकार प्रकट कर दिया कि लक्षमण का हृदय दुबने न पाए—

बही तात तुम नीति मुहाई । सर्वते कठिन राजमदु भाई ॥ २।२३०।६

भरतहि हाइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ ।

कबहु कि कांजो सोबरनि छीरसिधु बिनसाइ ॥ २।२३१

सखन तुम्हार सपथ पितु आना । सुखि सुबधु नहि भरत समाना ॥

बहुत भरत गुन सीत सुभाऊ । प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

२।२३१।४,८

ऐसे ही भरत के लिए वे एक बार फिर यम सक्कट में गए थे, जबकि विभीषण ने राम को लवा में रोक्ना चाहा था। राम न उसका भी बुरा न लगने का ध्यान रखकर भानो निहोरा-भा करत हुए बहा था—

तोर कोस गह मोर सब सत्य बचतु सुनु आत ।

भरत दसा सुमिरत मोहि निमित्त करत सम जात ॥

तापस बप गात इस जपत निरतर मोहि ॥

देखी बेगि सो जतनु कर सखा निहोरते तोहि ॥ ६।१।६ क ख

अयोध्या आने पर उहाने मव प्रथम भरत की जगथा की अपने हाथो से सुन-भाया, तब कही गुन की आत्ता प्राप्त कर स्वयं भनाना किया था।—७।१।०।४ ७

लक्षमण के प्रति राम के अगाध स्नेह का पता शक्ति जगने के समय उनकी एक ही उक्ति से लग जाता है—

जो जनतेउं वन बधु बिलोह । पिता बचन मनतेउ नहि सोह ॥ ६।६०,६

कीशल्या तडपकर रह गयी, दशरथ ने प्राण दे लिये, भरत बरागी हो गये, समस्त प्रजा दुखी हुई सीता का रावण चुन ले गया, तिनु राम न भोले के डोने तो लक्षमण की भूर्द्धा पर। एमा मत्यसध एक कठोर कतव्यपरायण व्यक्ति क्या कह उठा ? यहा राम की दबलना नहीं, अपितु भाद्र के प्रति प्रेम की चरम-सीमा है।

०समता भाव—राम केवल परिवार के प्रति ही स्नेह-गीत नहीं थे, अपने सम्पन में भान वान प्रत्येक जन के लिए उनके हृदय में स्थान था। मुमत्र जसे भृत्य का वे पिता के समान मानत थे। प्रजा की पीर से वे तुरत द्रवित हो जाते थे।

१ मानस, २।३८।६।

२ बही, १।८।१,२

जापुरी व गिगुमा का गुण ६। के लिए उक्त पाग जाकर उठा। यों की मानिया से पूछकर ही पूत्र ताए ।^१ का प्रश्न म गर्व भूढ़ वासागिया की घमटा से भरी हुई बाते दग प्रकार प्यार न मुी जग नि वागन गिता रक्का की तागनी बाते मुता है ।^२ य एक-एक बदर न गुगन पूया करा थे ।^३ बर एमा क्यामी पाकर धय हा गय हागे । सता त्रिय के परान् विभीषण प्रसा श्रुगाए मामषिया का उनटे-मीध रंग स पहने बरगा का एगकर न माहूयवक हंगकर भीष्ट म्बर न बाय थ—तुम्हार वन में राय मारया ।^४ एक धार उठान इटा बरगे द्वाग गुरु रगिष्ट का प्रणाम कराकर उगी प्रतिष्ठा रथा की ता दूगगे धार रगिष्ट से उठा। कहा—इहाने मरे निय प्राण तर हा म कर त्रिय है न मुभ भरत व गमा ही त्रिय है ।^५ गुदजता का भी उठान मयागित सम्पा तिया । उठा। विरहू म भग से कहा था—हमार माय पर गुरु (रगिष्ट) मुति (विशामित्र) और मिषिनग (जतर) है अणव तुम्ह और मुभ स्वल्प म भी वनग गी है ।^६ एमा बरर उठाने भरत के हूय का सकाच दूर कर माना उर म्बयन प्रदा करा हूय कहा था—दाना भाई पिता की माता माने । गुरु गिता माता और क्यामी की गिधा का पाना करत से कुमाय पर भी चलने पर पर गड़े म उही पडता अणव पात्रदु धवध धवधि भरि जाई—२।३।४।२।५ । दग प्रकार भरत को समभारर उठाने भरत का वापग जाने व लिए सम्मत कर तिया । त्रिय व समय भरत की एग इन्द्रा थी—राम की खडाऊ ल जान की । राम ता वस ही सकाचभोल थे फिर गुदजता की उपस्थिति म कसे लडाऊँ दत । परंतु सबग अधिर ध्यान है ता भरत के मन का अणव सकोच से ऊपर उठकर उहाने लडाऊँ द ही दी ।

लक्ष्मण

सीता की साडिया एव सामान से भरी बडी सता और धनुष-बाण लकर चलने वाले लक्ष्मण राम के मौन धनुकर बने रहे। राम पर उहें अगाध भक्ति थी । प्रारम्भ से ही यह वीर सच्चे क्षत्रिय के रूप म त्रियायी दता है । राम कई बार विचलित हुए हाग किंतु इस दुष्टप वीर को हम इस्पात की तरह अटन और अश्रेय पाते हैं । लक्ष्मण न अयाय कभी नहीं सहा । वे ककेम्पासकन वद्ध दशरथ का वध करने के लिए प्रस्तुन हो गय थे । भरत के प्रति उहाने भयकर शोध व्यक्त किया था । भारीच की

१ मानस १।२२७।१ ।

२ वही २।१३६ ।

३ वही ४।२१।३ ।

४ वही, ६।११७।४ ।

५ वही, ७।७।७ ८ ।

६ वही, २।३।४।२ ।

कपट-युक्तार के समय बटु-वचन बोलती सीता का उहाने फटकार दिया था। किंतु हृदय के सच से लक्ष्मण। चित्रफूट से भरत के लौटने पर लक्ष्मण उ भरत के गुणा की मुक्तामय प्रशंसा कर चिता प्रकट की है कि भागा स विरक्त हाकर भरत किस प्रकार कष्टमय जीवन-यापन कर रहे होंगे। सीता के प्रति पूज्य भाव ता उनके बंधू आदि न पहचान सकने पर ही व्यक्त हो चुका था। सीता की परीक्षा के समय लक्ष्मण की प्राथमिकित मीन यत्रणा मुख पर लानिभा के रूप म उभर आयी थी। सीता को वा म छोड़कर जाते समय वे सीता की परित्रमा कर उच्च-स्वर म रोय थे। उस समय ही लक्ष्मण अत्यधिक विचलित हुए थे, अयत्र नहीं।

राम ने नागपाश-बद्ध होने पर कहा था—मुझे स्मरण नहीं आता कि शूरवीर लक्ष्मण न श्रुद्ध हाने पर भी कभी मुझ म कठार या अप्रिय वचन कहें हो—

सुरेष्टेनापि धीरेण लक्ष्मणेन न सस्मरे।

पर्य विप्रिय वाऽपि श्रावित न कदाचन ॥ ६/४६।१६

वाल्मीकि रामायण मे कहा गया है—वे बलवान रक्तास और नगाडे जैसी ध्वनि वाले थे। ३।३१।१६। मत्तजगामी, कभी न घबडाने वाल, महात्मा लक्ष्मण धय और बल के साथ राम को रक्षा साधधानी के साथ करत थे।^१

भाषा रामायणा ने वाल्मीकि के इमी लुटिकाण का अपनान हुए भी कुछ-कुछ भिन्नता के साथ लक्ष्मण को प्रस्तुत किया है।

असमीया रामायण म राम ने कहा था—'लक्ष्मण मोर दाहिल बाहु छाया मोर सीता।^२ विश्वामित्र के साथ राम का वा जाता दग्धकर लक्ष्मण ने कहा था— तुम्हारे चरणो के जिना मरी गति नहीं। तुम वही भी जाओ मुझे साथ ल चलो। प्रभु मैं दास बनकर तुम्हारी सेवा करूँगा।^३ इस वीर क्षत्रिय न स्त्री हाने के कारण लडिका बध ठीक नहीं समझा था।—८७६।

तजस्वित म लक्ष्मण वही-वही आदि रामायण के लक्ष्मण से भी आगे बढ जाते हैं। य लक्ष्मण राम का भी फटकारने लगते हैं—

स्त्रीजित बृद्ध बाप कपट चरित। तान बोले बन याइबा किनो विपरीत ॥

ककेयी पापिष्ठी नर्पतित राज्य भागे। चरिणोर बोलत मरिते केन लागे ॥

हन बुलि प्रोधिगत लक्ष्मण प्रचण्ड। बुझारे आगते काटि करो लण्ड खण्ड ॥

(स्त्रीजित उद्ध पिता कपटी हैं, उनके कहन स आप बन क्यों जायें। पापिष्ठी

१ त मत्तमात्तड गविलासगामी गच्छतमव्यग्रमना महात्मा।

२ लक्ष्मणा राघवमप्रमत्ता ररक्ष धर्मेण बलेन च ॥ ४।१।१२८।

३ असमीया रामायण, १६४५।

३ वही, ८५१।

कवेयी त पूपनि स राय माय तिया है । । गिणी क कर्मा म कया मग जाए । मगा
कह कर लक्ष्मण ने प्रण्ड प्राय तिया—मी बुद्ध का कर्मा नाकर मग मग कर
दू ।) —१७३१ ३२ ।

उहान दुद्र को भी जीत कर राम का गुरात्र रतान ता तियाय तिया ।
कामरुभवर्ती बाप ने बाना का उल्लापन कर धयाण्यागरी का राज्य भार भीष्ट म
लने के लिए रहा ।^१ राम प्रभुता त हूण ता तमण तियाकर बाव—

क्षत्रकुले उपजिता भसा बुद्धिनाग । प्रिय बावय बुतिया बरब दिता बाप ॥
पौष्य एरिया दय करिलाहा सार । नपसक बति सब भगत तोमार ॥

(क्षत्रिय-पुत्र म जम कर भा गुणारी बुद्धि भात्र ता गयी है । प्रिय बावय
बहतर बरी को प्राणा बधा रत हा । पौष्य का दुःखार भाग्यार ता मगाय
ल रहे हा तुम्हारी सभी बतियाँ तगता जगो ता गयी है ।) —१७५४ ३० ।

राम का अहित दगार तथा अना अभितार क प्रति उतारी निष्क्रिया दग
कर ही लक्ष्मण न एग कट वचन कह थ नहा ता बायी ही तर म के दीन होकर
अन दग राम म बाव थ—यत्ति तुम मुभ छानार तन जायागे ता म दग से
निकल जाऊंगा अथवा कटार का आश्रय नूगा ।^२ तुमगीताग के तमण न तिसी भी
स्थिति म राम को नपसक नहीं कहा हाता ।

उग्र लक्ष्मण न मुमत्र क द्वारा स्त्रीवशवर्ती राजा का मरा त समय अयाय
करन के लिए कटुवचन तहत हूण यह भी रहा—भरत तुम्हारा अत्र बहुत हित करेगे ।
कवेयी को बाघे पर बिठाकर घूमना—

भरते ताहाङ्क बर करिबेक हित । बाघे करि कवेयीक फुरातोक नित । ३० २११६

भारीच की बगट पुरार म सीता न व्याकुल होकर लक्ष्मण का मनकहनी
बाते कही थी लक्ष्मण तब भा चुप नहीं बन रह सीता ने कटवार कर बोले थे—
क्षिप्रवादी दारणी तोमाक आछा धित । यहाँ भी लक्ष्मण वस्तुतः सीता का अनिष्ट
चाहकर कटु वचन नहीं बोल थे । वे विवश थ । उहोने सीता ने प्रणाम किया और
धनुष-बाण ल कर राम की सहायता के लिए चल लिये, किन्तु लौट-लौट कर स्नह
सहित सीता का देखत जाते थे ।^३ वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक द्रष्टव्य है—

१ कामरुष बापर वचन परिहरि । राज्य भार तयो भाण्टे अयो-यानगरी ॥१७३७

२ तुमि एरि गल मइ याइको देशान्तर । नुहि आजि कटारत करिबोहो भर ॥

१७७४

३ लक्ष्मणे सीताक गया प्रक्षिण करि । करणे प्रणामि हात धनुर्बाण धरि ॥

३११८

अवीशमाणो बहुशश्च मयिर्ली । जगाम रामस्य समीपमात्मवान् ॥ ३।४६।४१

लक्ष्मण को राम पर बड़ा विश्वास था । जान के पहल उहाने सीता को समझाया था कि यह आतवाणी राम की नहीं है। सबती, क्योंकि इस स्य के नीचे राम की पराजय नहीं है। मक्ती— इटो रवितरात रामर नाइ भड ग'— ३१०४ ।

उनके हृदय में कामल लक्ष्मण भी था । रावण विजय के पश्चात् राम के पास आती हुई सीता की पति द्वारा उपदा दगवर लक्ष्मण मुहू म बपडा भर कर रोये थे— मुखत कापर दिया वादन्त लक्ष्मण । —६४६३ । सीता के निर्वासित का निश्चय हान पर भी लक्ष्मण राय थे ।

उत्तरखण्ड के लख शकरदेव ने भी लक्ष्मण के चरित्र का तालमल विगडन नहीं दिया है । उनके लक्ष्मण राम के समझ उपदेशक और दार्शनिक रूप में अवश्य आय हैं । सीता को निर्वासित करने पर दुखी राम को वे समझाते हैं—आप ही सबन हैं, इस आप इन समय भूले हुए हैं । यह अंगार सत्तर मायामय है । छ० ६६३५।३६ ।

बालपुरुष की भेंट के समय दुर्वासा ऋषि के शाप से राम का बचाने के लिए लक्ष्मण न नियम भंग किया । फलत राम ने लक्ष्मण का वजन किया । इस समय लक्ष्मण की अत्यन्त दीनता एक भ्रात भक्ति का सुंदर चित्रण है । जम-जम में राम के कनिष्ठ भाई हान की कामना लेकर उट्ट बाग-दार प्रणाम कर तथा मंत्रिया को अपने प्राणा से भी प्रिय दादा की दगवर मीपकर लक्ष्मण चल गये थे । छ० ७२८७ ।

बंगला रामायण के लक्ष्मण भी बाल्यकाल से ही तजस्वी दिग्गामी पडने लगते हैं । परगुराम के वन्त हुए शोध का दगवर लक्ष्मण भी क्रुद्ध हो कर बोल पडे— वार्ते मारन से क्या लाभ, बीरा का आचरण कर दिगाद्या ।^१ दशरथ के प्रति स्य के समान गत्रवर उन्हाने अपना मन्तव्य प्रकट किया था—श्रीरंश पिता के वाक्या से राज्य छाड कर क्या बन जाया । सभी कहते हैं ज्येष्ठ-पुत्र राज्य पाता है । बद्धावस्था के कारण दुबुद्धि प्राप्त राजा पागन हो गये हैं उहू कवेयी न अपना आतावारी बना लिया है । यदि आप मुझे आना दें तो भरत का बाट कर तुम्हें राज्य दिनाऊँ ।^२ उहान तक भी प्रस्तुत किया था कि सयाता और तपस्या ब्राह्मण के कम हैं । धर्मिय का धम ता सदक युद्ध करना है ।^३

सीता के बटु बचन बोलने पर लक्ष्मण उगी प्रार सयम धारण कर गये जस

१ गणिया कहन शकन सुमित्रा कुमार । तथाय कि फल कर बीरग आचार ॥ प० ८६ ।

२ बंगला रामायण, पृ० १०४ ।

३ वही, पृ० १०५ ।

कि मानस व लक्ष्मण । उहाने केवल कहा था—

आमारे बिदा करो सीता ठाकुरानी । आर किछु न बसह दुरक्षर बाणी ॥ प० १५१

अग्नि परीक्षा के पूव सीता की दयनीय स्थिति को देगवर माँग के समान सदब गरजते रहने वाले इस वीर का क्षयित्व अबनामा के आँगुष्ठा के समान पिघल गया था ।^१ सीता निर्वासन से ही यह वीर राम के प्रति भी क्षुब्ध हो उठा था । गीता से उहाने कहा था—लोक अपवाद से डरकर राम ने बिना अपराध तम्ह वनवास दिया है ।^२ वनवास के बाद जब राम रो रहे थे तब लक्ष्मण ने उनसे भी कहा था—स्वय ही सीता को वजित कर अब क्यों रोते हो—आपनि बज्जिया बन बरह रात्न ।^३ अश्वमेध यज्ञ के समय समस्त सत्य के पराभूत होने पर भी सत्यवाणी और यायप्रिय लक्ष्मण ने महसूस किया था कि पतिव्रता का अपमान करने के कारण ही राम को यह दुःख हुआ है ।—पृष्ठ ५५२ ।

राम पर इन लक्ष्मण का भी अमनीया के लक्ष्मण के समान अटूट विश्वास था कि प्राण जान पर भी राम के मुँह से वातर बाणी नहीं निकल सकती—'प्राण गेल रामेर वातर नेइ बाणी ।'^४ मारीच के कपट-स्वर से डरी हुई सीता से उहाने ऐसा कहा था ।

लक्ष्मण बुद्धिमान और समझदार भी प्रतीत होते हैं । उहाने राम को स्वयं मग के पीछे जाने की सम्मति नहीं दी थी । कबंध द्वारा बंदी बनाय जान पर जब राम शोक के कारण विवेक गूँस हो रहे थे तब समय लक्ष्मण ने ही युक्ति सुझा कर उसे मारा और दोना को मुक्त किया था । उहाने रागरग में मस्त सुग्रीव को सीता की खोज न करने के कारण धमकाया तो था किन्तु जब वह शरण में आ गया तो उससे स्वयं ही क्षमा मागकर वे बोल थे—राम को वातर देखकर ही मैंने ककशवचन कहे हैं मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था कपिगज मुझे क्षमा कर दो । पृष्ठ १८६ ।

० उडिया के तेजस्वी लक्ष्मण भी वनवास की आज्ञा पर राम से हाथ जोड़ कर बोले थे—राजा बन भेज रहूँ हैं आप क्या जाए । यदि कोई विराध करेगा तो मैं उसका माँस काटकर बलि दे दूँगा । मैं धनुषबाण लेकर यह कह रहा हूँ । मेरा शरीर (क्रोध से) काँप रहा है । मैं इसी समय दशरथ मंत्री अमात्य, भरत और

१ कृत्तिवासी बँगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन पृ० २४५ ।

२ लोक अपवादे राम पाइला तरास । बिना अपराधे तोमा न्तिता वनवास ॥ पृ० ५२७ ।

३ बगला रामायण पृ० ५२८ ।

४ वही पृ० १५० ।

शत्रुघ्न को मार डालूंगा, अथवा पिता चारो भाइयों को राज्य बांट दें, ऐसा न करने पर मैं अयाध्या जला डालूंगा। असत पुरुष मेरा पिता कस हा सकता है—असत पुरुष से आम्बर किस पिता।^१ इसको युवती ने अपनी माया से मोह दिया है। राजा ने कामातुर होने के कारण पान खा दिया है।

मायारे एहाकु मोहिलाक से युवती। कामातुरे ज्ञान हराइला नरपति ॥ २।३६

जिस समय राम ने वन में अयाध्या के सुख दुःख का चिन्ता की, लक्ष्मण अत्यन्त क्रुद्ध होकर बोले पड़े थे—अयाध्या जल जाए, दण्डय मृत्यु को प्राप्त हो, भरत शत्रुघ्न का नाश हो हम इनके बारे में क्यों सोचें।

अथ स्थला पर लक्ष्मण तजस्वी प्रतीत नहीं होते। सीता की कटु-वाणी सुन कर उन्होंने केवल इनका ही कहा था—तुम्हें स्तिरीजन शिना म्बभार चञ्चल—(तुम स्त्रियाँ स्वभाव से चञ्चल होती हो—३।३७)।

राम का भग मारकर खाता दम कर रो पड़े थे लक्ष्मण, कि जिसके कंधे पर जगत लक्ष्मी रहीं हैं उसके कंधे पर मृग।^२ राम के भक्त होने हुए भी वे राम के सखा से प्रतीत होते हैं। राम ने जब भाई प्रेम के मोहवश लक्ष्मण को इन्द्रजीत से लड़ने के लिए रोका था तो वे राम पर तडप उठे थे।

सीता के कारण इस वीर ने भी करुणा का अनुभव किया था। अग्नि परीक्षा के पूर्व सीता के प्रति राम के कठोर वचन सुनकर लक्ष्मण मुहं म कपडा देकर विलस पड़े थे—मुझे दमन देखने का दन्ति लक्ष्मण ॥^३ सीता निष्वासन के प्रसंग पर भी 'विधि विधि कहकर वे माया पीट रहे थे—विधि विधि बालि कर मारइ वपान। ७।१११।

उडिया रामायण के भी उत्तरकाण्ड में राम ने लक्ष्मण का वणन किया है। लक्ष्मण इस बात से दुःखी हुए कि तब तो वन जाने पर दोना भाई साथ थे, अब अकेले वन जाने पर क्या निर्वाह होगा? ७।२०१।

लक्ष्मण के चरित्र में दो दाप दिवायी पड़े हैं—

(१) वन में राम का भूख लगी। सामने एक ग्वाना गायें चर रहा था। अत्रिय होने के कारण लक्ष्मण दूध की भीख मांग नहीं सकत अतएव उन्होंने निश्चय किया कि इस ग्वान को मारकर इसकी गायें छीन लेंगे।^४ लक्ष्मण का यह दस्युवत उग्र-अत्रियत्व शोभा नहीं देता।

१ उडिया रामायण, पृ० २।३६।

२ वही, २।५२।

३ वही, ६।३०६।

४ वही, ३।१७।

(२) राम के भेजे हुए लक्ष्मण विष्किंधापुरी में विलास प्रमत्त सुग्रीव को डाँटने गये, वे अत्यधिक क्रुद्ध थे किन्तु शृगार सज्जिता तारा को देखकर वे ऐसे सन्तुष्ट हुए जैसे हथिनी को देतकर मस्त हाथी होता है—

हातुणिकि देखि येह्ले मस हस्ती तोष । श्रीरामर भाइ देखि होइला सन्तोष ॥४।६१

सुग्रीव से मिलने पर वे तारा की प्रशंसा भी करते हैं । नारी द्रवित उनका यह चरित्र अयन नहीं है ।

मानस में लक्ष्मण राम की छाया के रूप में चित्रित हैं किन्तु उनके मोक्ष को संखन न समझित करने की चप्टा की है । साथ ही उह परशुराम के आगे चपन एव गृह के साथ दार्शनिक दिखाकर भौतिकता भी दिखायी है जिसके कारण तुलसी पर श्रस्वाभात्रिक चित्रण का आराप हुआ है ।

मानस में सीता के साथ ही लक्ष्मण का राम की परिछाही कहा गया है । वे राम की कीर्ति पताका के सुन्दर आधार थे ।

रघुपति कीरति बिमल पताका । दड समान भयउ जस जाका ॥१।१६।६

लक्ष्मण का तेजस्वी रूप इन शब्दों में चित्रित हुआ है—

छत्रज नयन उर बाहू विसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ॥६।१२।१

उनके तेजस्विता एवं रोपपूर्ण चरित्र का परिचय जनकपुरी की स्वयंवर सभा में ही मिल जाता है जब कि जनक की धिवन्तारमयी वाणी सुनकर वे तडप उठे हैं । दुष्ट राजाओं के पडयन से परिचित होकर भी उनकी भवुटि कुटित हो जाती है । अयोध्या में लक्ष्मण नाहू का घूट पीकर रह गये थे तभी जब उन्होंने देखा कि भरत सस्य विसी पडयन के उद्देश्य से चित्रकूट आ रहे हैं तो माना बीररस सोने से जाग उठा । वे भरत और शत्रुघ्न दाना का युद्ध में मुलादन के लिए जटाजूट बांध कर और धनुष-बाण सभालकर खड़े हो गये । इस बीर क्षत्रिय को अपन धनुष पर गव है फिर वहाँ तक मन मात्र कर आयाय मढ़ता रहता—

बहू लगि सहिअ रहिअ मनु भारे । नाथ साथ धन हाय हमारे ॥२।२२।८

पिता दशरथ के आयाय के प्रति उन्होंने अयोध्या में भक्त ही कुछ न कहा हा किन्तु वे अगन्तुष्ट अवश्य थे । इनका सवेन मात्र तुलसीदास ने किया है—

पुनि कछु लखन बही बटु बानी । प्रभु बरज बड अनुचित जानी ॥२।६१।४

श्रूषणगा से वार्तादास के समय वे एक सीमा तक ही चुप रह फिर एकदम विगड पड़े थे—

सठिमन बहा तोहि सो बरई । जो तन तोरि लाज पहिरई ॥३।१६।१८

गमुद में राम की याचना उन्हें रती भर नहीं मुझायी । उनके मत से वायव

श्रीग आनमी नाग ही दर की शरण जाने हैं। जब राम ने चाप चढ़ाया, तभी उनके मन की हुई।

वितन भी ब्रुद्ध श्रीग रापमय होने पर भी वे राम के एक सवेन पर मत्र-मुग्ध मय म शान्त हाकर बठ जात थ। राम अपने इम आजम्बी भाई का स्वभाव पन्चानन थ। सीता को भी अपने इम धनुषधारी दवर पर गव था।^१ राम लक्ष्मण का शिनना प्यार करत थ यह शक्ति लगने पर उनके विलाप से प्रकट हा जाता है। राम श्रीग सीता के प्रति उनका पूज्य भाव इतना अधिक था कि वे माग पर बन हुए सीता राम ने चरण चिह्न पर भी अपने चरण का स्पश नहीं हान दत थे।^२

तजस्वी श्रीग लक्ष्मण किमी भी परिस्थिति म दीन या कातर नहीं हुए केवल दा स्थना का छोडकर। राम व बनगमन के समय उहाने ध्यानूल हाकर राम के उरण पकड निय थ भावावेश के कारण उनका बठ भ्रवरद्ध हो गया था। इमी प्रकार सीता की अग्नि-परीक्षा के समय वे केवल खडे-खडे आसू वहान लगे थे, जत कि बान्मीकि रामायण म प्राथ स उनका मुह तमतमा गया था।

माग म लक्ष्मण का वहन अधिक सयमित करने की चेष्टा की गयी है। अथाध्या म विद्राह की बात व नहीं करना। मारीच के कपट आह्वान से डरी हुई सीता के मम उचना पर भी वे चुप रहन हैं। पूर्वाचनीय रामायणो म कई स्थला पर लक्ष्मण राग हुए दिग्वाय गय ह जम बालि-बध पर, किन्तु मानस के लक्ष्मण ऐसे म्दाशीन नहीं हैं।

स्वयवर मभा के लक्ष्मण का चरित्र उनके शेष चरित्र से मेल नहीं लाता। परशुगम स बातचीत करने म उहाने जिस व्यग्य कीशल और बिनाद प्रियता का परिचय दिया है, वह बहुत मनाहर है। उनकी इम चपलता का तारतम्य पूर्वापर-मन्त्रघ गहन है।

इमी प्रकार गुरु के माय सीता राम की रखवाली करते समय जो दार्शनिक विचार प्रकट करत हैं वे भी उनके धानियाचित शेष चरित्र स ताल मेल नहीं रखता। अध्यात्म रामायण से प्ररणा देने के कारण तुलसीदास ने भी ब्रह्मनिरूपण का अवसर हाथ स नहीं जान लिया।

लक्ष्मण के हृदय म उदारता भी था। रावण के दूता को पकडकर वानर राग नाक वान वाट रह थ तब लक्ष्मण ने ही दया-पूर्वक उह छुड़ाया था। बनेयी का य धामा नहीं कर सके थ। अथाध्या लोट आन पर शायद उमे चिह्नान के लिए ही अथना नोषावेश म वे बनेयी स बार-बार मिल, किन्तु उनके हृदय का क्षोभ

१ मानस २।६८।१।

२ गीय राम पर भव घराण। नखनु चलहि मगु दाहिन साएँ ॥२।१२२।६।

दूर नहीं हुआ ।

लक्ष्मणन सब मातह मिति हरय आसिप पाइ ।

ककड़ कह पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥ ७ ६(ग)

भरत

वाल्मीकि रामायण में सभी पात्र किसी न किसी दाप से युक्त हैं । राम भी परिस्थिति आने पर प्राकृत पुरुषा जमी दुबलता लिया जाने हैं । किन्तु भरत का चरित्र सभी पात्रों की तुलना में सबसे निष्कलक एवं अविचल है । दशरथ कीशल्या राम लक्ष्मण आदि अनक पात्र भरत के सम्बन्ध में कही न कही एक विचार व्यक्त कर दल है जो भरत के विरुद्ध जात हैं किन्तु भरत ने अपने त्याग भाव से सभी लोगों के हृदय पर विजय प्राप्त कर ली । यहाँ तक कि लक्ष्मण जसा उग्र-यान भी भरत का घमन सत्यवाणी जित श्रिय, प्रियाभिलाषी मधुर भाग विरक्त आदि विशेषण प्रदान कर इस प्रकार की चिन्ता व्यक्त करता है कि वराम्य भाव धारण करने वाले भरत जाड़ के दिना में पाला से ढँकी हुई नन्ही में अति प्राण बाल कसे स्नान करत हागे ।^१ वनवास का दृढ-व्रत धारण करने वाले राम भी भरत का स्नेह स्मरण कर बच्चों की भाँति 'याबुल हो जाते थे ।'^२

भ्रात भक्ति के चरम आदर्श भरत के चरित्र का वणन सभी ग्रन्थों में परिश्रुता के साथ किया गया है । उडिया रामायण के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ में भरत के चरित्र का विस्तृत वणन है ।

असमोया रामायण में भरत अपनी माँ से प्रारम्भ से ही प्रसन्न नहीं जान पड़ते हैं । अयोध्या से आय हुए दूतों में उहाँको पूछा— पति सुभगा कलहप्रिया प्रचण्ड स्वभान वाली मरी माता स्वामी की सेवा करती हुई प्रसन्न तो है ?

बापेर सुभगा कलहप्रिय प्रचण्ड यार स्वभाव ।

स्वामी सेवा करि भाते कि आछत आमार ककेयी भाव ॥ २२२७

कनेयी द्वारा सभी ममाचार पाकर उहाँको भयकर शोध किया था और उस अनेक शान्तिया दवर कहा था तू नरक में सडेगी ।^३

यहाँ वेचारे भरत पर कीशल्या, लक्ष्मण आदि ने तो सदेह प्रवट किया ही

१ वाल्मीकि रामायण अरण्य सर्ग, १६ ।

२ निश्चिन्तादि हे में बुद्धिवनवासे दन्त्रता ।

भरतस्नेहगतपत्ता बालिशीश्रियने पुन ॥ ३।१६।३८ ।

३ शुषिणी, नागिनी, निवारणी, संहारिणी, निहृदिणी, राक्षसिनी, वाधिनी, दारणा, यगिणी, डाहिणी, स्वस्वामी, भक्षिणी, पिशाचिनी, रडी, सानगुड, निलाजी और बरिणी । २२७६।७८ ।

था, वसिष्ठ भी वाले—तुम्हारा पहले का कपट प्रकट हो गया है। तुमने धन कर माना के हाथ से राज्य माँग लिया है। इस समय तुम्हारे हृदय की शुद्धता की मैं कसे जान सकूँगा। २३६४।

अमयीया रामायण के भरत तजस्वी भी हैं। वे वसिष्ठ के शका करने पर मानस के भरत के समान मतत विनयशील नहीं बने रहें अपितु क्रुद्ध होकर बोले, 'तुम भी मुझे कपटी समझ रहें हो। मैं तुम्हें हृदय चीरकर नहीं दिखा सकता। तुमन बठार वाक्या से भरे हृदय पर आघात किया है। तुम कुलगुरु होकर भी आज काज को ग्रस्त किया है। —

तुमिओ जानिला मोर कपट चित्तन । शिया नोहू फाटि देखाओ तोमार आगत ॥
निदारुण वाक्ये दिला हृदयत नाल । कुलगुरु हुया आजि लाइला तुमि काल ॥

२३६६

भरत ने राम का अपना गुरु-सम मानकर अपने का उनका भक्त्य कहा है—
'ज्येष्ठ भाइ गुरु सम ता मइ अय । २३५२ । और उहान यह भी निश्चय किया था कि मैं अब तण शय्या का सवन कर ब्रह्मचर्य मरण करेगा। मैं राम का सेवक हाकर उही का धम धारण करूँगा।

तण शय्या बरहो पिघोहो बक्षधम्म । रामक सेवक मइ धरो तान धम्म ॥

२४४१

बेंगला रामायण के भरत पर अय पात्र भल ही आक्षेप करें किंतु राम ने कभी भी भरत के विरुद्ध एक शब्द नहीं कहा वरन् उहान यही कहा था—

कोन दोष नाइ भाइ भरत शरीरे । बड तुष्ट आछि आमि तार ब्यबहारे ॥ —१०७

जिम माता के कारण इतना अनर्थ हुआ उसके प्रति भरत अत्यन्त क्रूर हो उठे हैं। वे त्रौप से ज्वलन्त अग्नि के तुल्य धधककर बोले—तेरे पिता और मातामह धमकम करत रहें हैं उम वश मे राक्षसी का जन्म क्यों हुआ ? मैंने पूव जन्म में अनक कदाचार किये थे उही पापा के कारण तेरे गभ से जन्म लिया। मा होकर पुन को इतना शाक दिया, इच्छा होनी है तुम्हें काट कर परलाक भेज दूँ।^१

उही के कारण पिता की मृत्यु हुई एव भ्राता राम बनवासी हुए, ऐसा जान कर भरत को घट्ट मनाति हुई। पहले से नात हान पर वे अयोध्या न आय होते।^२

१ तोर पिता मातामह कये धम्म कम्म । स वशेने बेन हैल राक्षसीर जन्म ॥

पूवजन्मे करिनाम कत कदाचार । सेइ पापे तोर गभे जन्म आमा ॥

मा हइया तनयेरे निति एत शोक । इच्छा हय काटिया पाठाइ पर लोक ॥ १२०

२ आमाहेवु पिता मर भाना बनवासी । एतेक जानिले कि देशत आमि आसि ॥

उन्होंने राम की भाँति ही भागा म दूर रहकर जग और उल्लेख धारण कर विरक्ता का जीवायापन करना प्रारम्भ किया था— ४४६ ।

इस ग्रंथ के भरत का दो स्थानों का चरित्र शेष म मन गही साता । (१) प्रारम्भ म जब दशरथ विश्वामित्र का ठगार राम-नशमण के स्थान पर भरत शत्रुघ्न की दे दते है उम समय भरत वनमाग म वायरता का परिचय दन है । (२) उहान औपध वाहक हनुमान का गिराकर उनक गामन उन परीक्षा दन समय पारस्य बयाप्रा जसा चमत्कार दिसाया है ।

उडिया रामायण म भरत का चरित्र बिलुन मामाय है । उनक चरित्र का वणन वाल्मीकि के चरित्र के अनुसार ही किन्तु आवश म रहित हाकर किया गया है । मानवीय चरित्र की विणपता की आर तमन न ध्यान न दवर कई दिना स दौटकर आध हुण हुनो के घाड की थकावट आदि के वित्रण की आर अथिक रचि दिवायी है ।

कौञल्या एन नशमण म भरत ही भरत के प्रति कटु शला का व्यवहार किया हा किन्तु उडिया के राम भरत पर अत्यपिन विश्वाम रसन हे । वन म तशमण के भरत पर शका करन पर राम उहे बुरी तरह दुत्कार कर कहत है— अच्छा है तुम लौट जाओ भरे साथ भरत रहग ।

इस गथ म भी भरत के त्रपाक स्वभाव का वित्रण कर उनकी चरित्र गरिमा कम की है । औपध वाहक हनुमान न भरत म कहा— शीघ्र परिचय दा नही ता पत्थर मार दूगा । भरत न त्रकर परिचय दिया— म राम का भाई हूँ । उहान लाह की वाटुकि मारकर हनुमान का गिराया था । उहान हनुमान स कहा कि किसी से कहना नही नही ता क्षत्रिय हसेंगे कि इनकी वाटुकि स हनुमान बच गया । यन्ति तुम किसी स कहोग ता मैं निप खाकर मर जाऊगा । ६।१६६ ।

मानस के अतगत तुलसीदास न भरत का बवल आदश भाई के रूप म ही चित्रित नहा करना चाहा है अपितु न भरत का भवता के आदश रूप म भी प्रस्तुत करना चाहा है । भरत राम के केवल भाई ही नही है व उनक ब्रह्मत्व से परिचित भवन भी है । एम भवनप्रवर मुणीन भरत के प्रति गामन का कोई भी पात्र स रह ता प्रकट करना ही नही अपितु दुषटना के फलस्वरूप उनके हृदय पर लगन वान आघान के प्रति ही गभी योग अथिक चिन्तित कियायी पत्न है । भवन होने के नात ही प्रवृत्ति न भरत का स्तना ध्यान रगा गितना कि उसन राम का भी नही ।^१ पूर्वाचरीय रामायणा के भरत म मानस के भरत म यही एक बडा अंतर स्पष्ट है ।

१ किण जाहि छाया जन मुग्ध रहइ कर बात ।

तग मगु भयउ न राम कह जग भा भरतहि जान ॥ २।२।६ ।

राम के वनगमन का समाचार सुनकर उनका इतना गहरा धक्का लगा था कि वे पिता की मृत्यु की वार्ता ही भूत गए। सभी अर्थों की जड़ अपने का समझ कर उन्हें अत्यंत वनश हुआ। फिर भी उन्हें विश्राम था कि राम और सीता को छोड़कर डम विश्व में उनका हृदय का आग काई नहीं समझ सकेगा। चित्रकूट की यात्रा के समय वे राम के कष्ट का स्मरण कर स्वयं भी थोड़े से उतरकर पदल चले। उनका वामन चरणा में उड़-बड़ छान पड़ गया।^१

भरत का इस वार्ता से अत्यधिक ग्लानि का अनुभव हो रहा था कि उनके कारण राम-सीता दुःखित हुए।^२ सारी रात साधन साधत बीत जाती थी, उन्हें न नींद आती आरंभ भूषण लगती। जा पहल से ही ग्लानि का अनुभव कर रहा था उससे फिर काई मूल हो जागे ता यह अपने का इतना अपराध तुच्छ और धिक्कृत अनुभव करेगा। लक्ष्मण के उपचार मवादा उपस्थित कर उहान हनुमान सहा था—

अहह दव मे कत जग जायड । प्रभु के एकहु काज न आयजे ॥ ६।५।३

उनकी चरित्र श्रुता और शील-स्वभाव की सभी न मुक्त नठ से प्रणमा की है। पुरवासिया में यदि किसी एक न भरत के चरित्र पर रचमान भी सदाह प्रकट किया तो दूसरा काना पर हाथ रखकर और जीभ का दाता से दबाकर एसी पाप शर्त्ता कहने से निषेध करता। अनहानी भल हो जागे किन्तु भरत कभी राम के प्रतिकूल नहा हो सकते।

चहु चव वर अनल कन मुषा हाइ विपतूल ।

सपनेहु कबहुँ न करहिं किछु भरत राम प्रतिकूल ॥ २।४८

दशरथ न राम और भरत का समान स्नह दिया था उन्हें विश्वास था कि, भरत कभी राज्य के गामी नहा हो सकते।^३ वाशल्या का भरत के साध का इतना डर था कि उन्हें सीता और राम के वनगमन की भी चिन्ता नहीं रहे गयी थी। जनक चित्रकूट में रात भर जागते हुए भरत की चिन्ता करते रहे। राम का भरत पर अधिक विश्राम था। लक्ष्मण की शर्त्ता का दूरकर उहान कहा था—भरत को चाहे विधि हरिहर का पद ही क्या न मिल जागे उन्हें कभी राजमद नहीं हो सकता।^४ चाहे मच्छर की फूँक से पवत का उडना सम्भव हो किन्तु भरत का नपमद नहा हो सकता।^५ भरत के गुण शान और स्वभाव का वर्णन करते हुए राम

१ मानस २।२०२।४, २०३।१, २१२।५।

२ वही २।१८१ ५ ६।

३ चरन न भरत मूपतहिं भारें । २।३२ १।

४ भरतहिं हाइ न राजमट्ट विधि अगिहर पद पाइ ।

कबहुँक काजी मीकरनि छार सिधु विनमाइ ॥ २।२३१ ।

५ मसक फूँक मनु मरु उडाई । हाइ न नप मनु भरतहिं भारें ॥ २।२३१।३ ।

अत्यधिक तमय हो जाया करते थे ।

कहत भरत गुन सील सुभाऊ । पेम पयोधि भगन रघुराऊ ॥ २।२३।१८

चित्रकूट की सभा में उनके शील सक्ताच का मूख परिचय मिलना है । राम ने तो वन से लौटकर कत्तव्य की अवहेलना करना चाहा है और न भरत का अनुरोध ठुकराकर उनका जी दुस्ताना चाहत है । इसी प्रकार भरत भी राम का सभी कष्टों से मुक्त कर पूवस्थिति में लाना चाहत है चाहे राम व बन्धन उह ही क्यों न वनवास भोगना पड, किंतु इस बात की भी उह चिन्ता है कि राम का लौटने के लिए विवश कर उह कत्तव्य विमुक्त न किया जाए । सघष पारस्परिक सदभावों का था स्वार्थों का नहीं इसीलिए सुस्थिर समाधान भी खोज लिया गया ।

मानस के भरत में केवल एक दाप न्या जाता है वे अपनी माता के प्रति अत्यधिक अनुदार हैं । ननिहाल से लौटे हुए भरत का एक साथ दा दु खद समाचार दिये गये—पिता की मृत्यु और भाई भाभी का दश निवाला । यह सब घटित हुआ उही की माता के द्वारा और उही के स्वाय के लिए । ऐसे समय पर यदि उहान अत्यधिक क्षाम शोक ग्लानि खीळ और क्रोध के वशीभूत होकर कवेयी से कटु वचन कह ही दिये तो उनकी यह प्रतिनिया त्रिलुल स्वाभाविक थी । अथ भाषा रामायणो में भी भरत ऐसा ही करने है ।

बर मांगत मन भइ नहि पीरा । गरि न जीह मुह परेउ न कीरा ॥ २।१६।१२

स्त्री जाति के सम्बन्ध में भी उहान इसी क्षाम और खीळ के कारण कुछ कटु वचन कहे हैं—

बिधिहूँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अथ अवगुन जानी ॥ २।१६।१४

वहस्पति ने शकानु देवताओं से कहा था— 'भरतहि जान राम परिछाहा' ।^१ वे राम की छाया थे उनका अनुसरण करने वान थे । साथ ही व राम के गुणा में भी उनकी छाया थे । भक्ति की दृष्टि से वे राम से भी बढ कर हैं । राम यदि समता की सीमा हैं तो भरत स्नेह और ममता की ।

भरतु अवधि सनेह ममता की । जद्यपि रामु सीम समता की ॥ २।२८।६

दशरथ

वाल्मीकि व दशरथ दीर्घार्थो महानजस्वी प्रजाप्रिय धरत जित्द्वय एव मत्पमध^२ बनाय गये हैं । सभी देश एव काना में राजा लाया के कई रानियाँ

१ मानस २।२६।१४ ।

२ वाल्मीकि रामायण, १।६, १—६ ।

रही हैं, छाटी और सुदरी रानी के प्रति राजा का मोह रहता भी स्वाभाविक है। दशरथ भी कबेयी पर लुब्ध थे किन्तु उन्होंने कतव्य का कभी विस्मरण नहीं किया। वे राम का केवल इसलिए ही अभिप्रेत नहीं करना चाहते थे कि वे उन्हें प्राण प्रिय थे अपितु नियमानुसार भी वे राम का ज्येष्ठ पुत्र के नाते अधिकार प्रदान करना चाहते थे। कबेयी प्रिया थी किन्तु अभिप्रेत के विषय में राजा उसका तथा उसका पुत्र का विश्वास करते प्रतीत नहीं हान। यदि राजा ने भरत को बुलाकर अभिप्रेत का निणय किया होता तो सम्भवत अनध न होता किन्तु कौन जाने कसी स्थिति में राजनीति की क्या स्थिति हानी जनता की मन स्थिति क्या होती और लोग की सहानुभूति किम आर होती।

सम्भवत कबेयी से विवाह के समय उन्होंने उसका पुत्र का युवराज बनाने का वचन दिया होगा किन्तु सूप वध की प्रयानुसार वे राम को युवराज बनाना चाहते थे इसलिए उन्हें छल करने पड़े।

माया रामायण में भी इन्हीं दशरथ के चरित्र की रक्षा हुई है। मानम और वैंगला रामायण के दशरथ में कुछ भिन्नता है जो आग स्पष्ट हो जायगी। प्रमी (३) अति-वत्सल पिता।

• असमीया रामायण में दशरथ के अनेक सतगुणा का वर्णन किया गया है। वे सन्त शीतल स्वभाव स्वधर्म में शुद्ध-बुद्धि सुन्दर शरीर रमणी रमण रतिरग महावीर सदा धरत एवं विष्णु भक्त बताये गये हैं। उनके स्वभाव के विषय में कहा गया है—

धर्म धन मेरु गिरि गम्भीर सागर । प्रतापत आवित्य क्रोधत महेश्वर ॥
दाने बलि कण हरिद्वन्द्व समसर । बले बुद्धि समान भोगत पुरन्दर ॥
अस्य गत्त्र शास्त्र नाना गुण सुमण्डित । बहुस्पति सम राजा परम पण्डित ॥^१

राम के प्रति उनका गगाव प्रेम उसी समय प्रकट हो गया था जब विश्वा मित्र द्वारा राम लक्ष्मण की याचना पर उन्होंने गिड़गिड़ाकर कहा था—मैं दाँतों में तिनका दवाकर आपसे याचना करता हूँ राम को मुझे दो दाँतों उठते तब धरि तोमान मागोहो रामक त्रिआक माक—८३०।

भरत के चरित्र पर विश्वास करते हुए भी उन्होंने नीति निपुणता का परिचय देकर राम से कहा था—भरत तुम्हारी भक्ति करता है। तुम्हारी आज्ञा मानकर ही वह अनपान करता है फिर भी तो कुमार भरत का स्वभाव मैं नहीं समझता (विश्वास करता) जब तक वह दण नहीं तोड़ता शीघ्र ही राज्य ग्रहण कर

१ असमीया रामायण १७५, ७६।

लो ।^१ स्पष्ट है कि राजा भरत पर विश्वास नहीं करते थे ।

‘बृद्धर तस्मा भायां आति वर रति — दशरथ वामुन थे, इसीलिए कवेयी पर वे आसक्त थे । इसके निग्न आगे उन्हें कौशल्या और लक्ष्मण द्वारा मरी-गाटी भी सुननी पड़ी । वामुक होत हुए भी उन्होंने कवेयी का वर मांगने पर फटकारा है— किन्तो अघोगामी तद् पापिष्ठी दारुणी । बिहता स्वामी त केन भक्ति निवारणी । १८६१

उन्हें स्वयं भी अपने पर घोर ग्लानि हुई । स्त्री के अधीन हाकर प्रिय पुत्र का परित्याग कर उन्होंने अपने को धिक्कारा है—

हाय प्रिय पुत्र मइ परिहरो किक । स्त्रीर अधीन मोक आछ विक्विक ॥ १८८६

इस ग्रथ के दशरथ में कोई नवीनता नहीं है । उनके चरित्र की गरिमा का नष्ट नहीं किया गया है । वे राम के शाक में अस्यधिक दुःखी हैं । कवेयी की उक्तिया भी उनकी छाती पर वज्र प्रहार करती हैं फिर भी वे बहुत कुछ समय से काम लते हैं । मानस के दशरथ की भाँति उनका मौन गभीर गरिमा मण्डित है ।

बंगला रामायण में दशरथ का चरित्र आवेग मय है । उनके चरित्र में समय की गरिमा कम है वे भावावेश में आने वाले पात्र हैं । उन्होंने एक क्षुद्रता भी की है । विश्वामित्र को प्रवर्चित कर उन्होंने पहले राम लक्ष्मण के स्थान पर भरत शत्रुघ्न को दिया था । इस प्रकार एक ओर वे मिथ्याचारी और वपटाचारी हुए तो दूसरी ओर राम-लक्ष्मण से अधिक स्नेह रखकर अपने ही शप दो आत्म का विपत्ति में भोक् दना उनके चरित्र की गभीरता कम करता है । हो सकता है इतना अश परवर्ती कथको (कथा वाचक) न जोड़ दिया हो ।

दशरथ राम को बहुत चाहते थे । उनके न अत्यंत बानर हाकर दशरथ से मिथिला में कहा था—रामसीता को एक वप के लिए छाड़ जाया तत्र दशरथ न अस्वीकार करते हुए उत्तर दिया था मैं अपने प्राण को यहा छाड़कर शरीर ल जाऊ ?’ (शरीर लइया याव रागिया जीवन १० पच्छ ८७) राम का कहना था कि परम ऋद्धावस्था में भी राजा मुझ देगनर हँम पडन ये—कोप यदि करेन हासन ग्रामा दम । १०२ ।

मथरा न कवेयी का समभाण हुए कहा था—राजा तुम्हारे ऊपर दत्तन ग्रामक्त है कि यदि तुम राजा के प्राण मांगो तो राजा प्राण दे देंगे । वे राम जस प्राण प्रिय पुत्र का भी वन भञ्ज नवन है ।^२

१ तामात्र भक्ति मन भग्न कुमार । तामार र आत्मा पाति आ गान कर ॥

तपापिनो नुबुवाह । कुम्भर स्वभाव । शोध राय लयाव गन नाटियाव ॥ १६४८

२ बगना रामायण पच्छ ६८ ।

दशरथ ने दुःस्वप्न दखे थे, तभी उहान चितित हाकर राम का बुलाकर अभिषेक का निश्चय प्रकट किया। भरत व प्रति व अनुदार दख जात है। ये कहते हैं—तुम्हारा कनिष्ठ भरत का आशय (अभिप्राय) म नही जानता। उस राज्य दना कभी उपयुक्त नही है।

कनिष्ठ भरत तार ना जानि आशय। तारे राज्य दिते कभु उपयुक्त नय। ६३

उहान भरत द्वारा श्राद्ध लाग भी अस्वीकार कर दिया था—भरत ना लइव श्राद्ध वा तपण—१०६।

मथरा न दशरथ की वामुनता की ओर सरेत किया था। आग स्पष्ट किया गया कि दशरथ अत्यन्त बद्ध हैं और तदयी युवती है। ककयी के बिना उनकी गति नही। ककेयी युवती नारी है और दशरथ वृत्ते हैं। वृत् का अपनी युवती नारी प्राणा स भी बढकर प्रिय हाती ह।^१

राम व प्रेम के आग उहान अपनी युवती नारी के प्रेम का भी महत्ता नही दो पहल ता व ककेयी के परा पर लाटन ह उनका सारा शरीर आमुआ स तर हो जाना है।^२ त्रिनु जब भी वह नही पनीजती ता उम पटकार त्त ह।

बगला-रामायण के भावप्रवण दशरथ के हृदय म माल्मीकि रामायण क दशरथ की तरह ही उग वात्सल्य भाव है। वे रथ पर जान हुए राम के पीछे नग पर दाड पडे काटा को रौदत हुए। जम नहा दौड पाय ता अचेत हाकर भूमि पर गिर पडे।

काटा खोचा भागी राजा उद्धवासे धान।

भूमिते पडेन राजा ह्ये अचेतन ॥ १११

उडिया रामायण व दशरथ दुःखी दरिद्र का दान दत थ। धमशान्त्र पुराण और आगम मुनत थ। वे प्रत्यक्ष धम भूति थ। ये त्रिवरणील मयागवान शास्त्रन और धनुष्य धात्रिय थ।^३ उहान राम का प्रजापालन आदि के जा उपत्श दिये ह उनसे प्रकट हाता है कि वे स्वय नी इन नियमा का पालन करत हाग।

विश्वामित्र से उहान कहा था, इस युत्प म मन पुत्र पाय है, उहें तव दण

१ वाल्मीकि रामायण म भी बणन है कि यदि भरत राज्य पारर प्रमन्न हा तो उमका लिया तपण श्राद्धादि का जल और पिड भुके न मिल। २ ४२ ६।

२ दशरथ अनिवद्ध ककेयी युवती। ककेयी त्रिपुन तार आर नाहि गनि। प० ६६। ककेयी युवती नारी, दशरथ युत्प। युत्पार युवती नारी प्राण हैत वात्प। प० ६६।

३ ककेयीर पाये राजा ता भूमितन। मर्वाग त्रितिन तीर नयनर जने ॥ १०० बगना।

४ उडिया रामायण, १।८।

के लिए भी त दगार में लिखाय मर जाऊगा ।^१ गणराज्य के प्रतिष्ठा के न गण म यो न थ— तुम था मा जाया । वात में लिख है वाय मयदा मा मुभ ।

उदिया न दशरथ राय नहीं नाम भाव तहा लिखा । लिख न थ दशरथ हा वामुन । तभी दशरथ त उक्त प्रति धरणा कटु-नयन भावकर उक्त गणराज्य की द्दम दुब नता की धार मयन किया है—

भायारे एहानु मोहितार से मुयती । वामापुरे मात हरादता मरपति ॥ २।३६

दशरथ का नाममुदा कयन क लिए मयन । एव कयना भी था है । दशरथ का भेदा हुआ दुरव दशरथ क मरीर म प्रयन कय उहें एता दुबन बना दता है कि य कयो के वाता क शिखर हा मय घोर प्रतिष्ठा क लिखरण का प्रयाग त कर सव ।

मानस गाम्यामी नतमीनाम त दशरथ क पतिष्ठा का गणमगीन घोर निष्कनुप वातन की कटा की है । दशरथ क मद्गुणा का यणन गान्धीति क मनुगार ही किया गया है तित्तु शीतगाभीय म गार्यामी जा क दशरथ मभी प्रया क दशरथ स विशिष्ट है ।

उहाने भरत के प्रति कभी मरुत प्राट तहा किया । य भरत का 'कुन दीप' कहा करत थ । कयो स भी उहा शपथ-गूतक कहा था— मारे भरतु रामु दुद माली ।^२

दशरथ सभी पुत्रा गो प्यार करत थ फिर भी राम क जिना क प्राण धारण करने म समय नहीं थ दशरथ का उहान विश्वा भाव म स्वीकार कर लिया था यद्यपि मदाथ दुष्टा कयो बुद्ध भी मुनन क लिए प्रस्तुत नहीं थी । दशरथ का राम प्रेम धाय पुत्रा क प्रेम के लिए बाधन नहीं हुआ । बगला के दशरथ के समान उहान भरत के प्रति दुयवहार नहीं किया । राम लक्ष्मण की याचना पर भी क बहुत दीन हो गय थे । वहाँ दशरथ त धार कठार निशाचर और कही परम विशार मुदर राम ।^३ उनकी इस वात्सल्य-दुब नता पर विश्वामित्र जसा उग्र ऋषि भी मन ही मन मुग्ध हो गया था । उनका वात्सल्य हम बहुधा के प्रति भी दसते है । उहाने पत्निवा को मालेश दिया था—

बधू तरिकनों पर धर झाड़ । राखेउ नयन पतक की नाद ॥^४

१ ए वद बयसे मोर बाकक तनय । दण्ड ना देखिले मु य मरिवि निश्चये । १।६२

२ मानस २।२८२।५ ।

३ वही, २।३०।६ ।

४ वही, १।२०७।६ ।

५ वही १।३५४।८ ।

वन जाती हुई सीता का उद्धान हृदय से लगाकर समभाषा था। मुमन से उद्धान कहा था—वन की भयकरता दस जब जानकी डरता उनसे कहा—पुत्री, वन में अन्न कष्ट है, तुम घर लौट चना। कुछ दिन यहाँ और कुछ दिना मापने म रह कर अवधि काट लना।

यह उनका उग्र वात्सल्य ही था कि कवेयी के चरणा पर गिरकर उद्धाने मानन की चेष्टा की थी, किन्तु उसके न मानने पर पटवार भी दिया था—

अब तोहि नाँक लाग कइ सोई । लोचनु छोट बडु मुहु मोई ॥^१

वाल्मीकि रामायण के अनुगार ही भाषा रामायणा (विशपत बगला) के दशरथ भी पुत्र प्रेम के माह म एसी बातें कह गय हैं जा राम का कतव्य विमुक्त कर सकती थी। वे राम के विरह की कल्पना से इतन ध्याबुल और समय-हीन हो जाते हैं कि न ता अपन कतव्य का ध्यान रखत हैं और न राम के कतव्य का। कभी स्वयं राम को एक दिन के लिए ही रक जान के लिए कहते हैं और कभी समस्त समय और निधि का राम के साथ भेजा की बात करते हैं। किन्तु तुलसीदास के दशरथ न राम को कही एसा उपदेश नहीं दिया, जिससे कि वे कतव्य-पराङ्मुग हो। साथ ही वे यह भी नहीं चाहते कि राम आस्था की आट हा। वे चाहते हैं कि कुछ ऐसा हो जाए कि कतव्य की अवहलना भी न होने पाए और राम वन का भी न जाएँ। वे इसके लिए मन ही मन शंकर का मनाकर कहा है—

अजसु होउ जगु सुजसु नसाऊ । नरक परीं यह सुरपुर जाऊ ॥

सब दुख दुसह सहाबहु मोही । लोचन छोट रामु जनि होही ॥^२

दशरथ की वामुवता पर तुलसी ने भी पर्दा नहीं डाला है। रानी का कोप भवन म सुनकर वे सहमकर टिठक गये थे। त्रिशूल बज्य और तलवार की चोट खाने वाले दशरथ कामदेव के पुष्प-बाण नहीं सह सके थे।^३

इस दाप के अतिरिक्त दशरथ ने और कोई दोष नहीं देगा गया। अथ कोई पात्र भी दशरथ के विरुद्ध कोई बात नहीं कहता जबकि अथ रामायणो म कौशल्या, लक्ष्मण, भरत आदि अनक लोग अत्यन्त कटु बातें कहते हैं। मानम मे मथरा अवश्य ही उनक प्रियभाषी-गुण म भी दाप दूर लती है। कवेयी को भडवां के लिए वह राजा के विषय म कहती है— मन मलीन मुह मोठ—२।१७।

एस वनन्यपरायण राजा दशरथ ने रघुकुल की सदा से चली आन वाली रीति का पालन भी कर दिया और पुत्र के विना जीवित न रह सकने वाले अत्युग्र

१ मानस, २।३५।६।

२ वही, २।४।१२।

३ मूल कुलिस अमि अगवनि हारे । ते रतिनाथ मुमन सग मारे ॥ २।२४।६।

वत्सल पिता की प्रतिभा का भी पूरा कर लिया अतः ही आपन प्राणा तो जीव पर लगा कर। भरत ने शत्रु मारने सुधीर और धर्मरत प्रणाम राजा वगिष्ठ व शत्रु मारने दृगा है न है और न हागा ही।

भयन अहं न अय होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥ २।१७२।६

मानव व दशरथ जसा समय कुछ-कुछ असमीया रामायण म दसा जाता है। उडिया का अथायावाण सक्षिप्त है उसम दशरथ व चरित्र की मार्मिकता का उल्लेख नहा है। वगला रामायण व दशरथ का बणन विस्तृत है। तीना पूर्वाचारीय रामायणा म दशरथ के पराक्रम मार विनाहा का विस्तृत बणन प्रथम बाण्ड म हुआ है। तुलसी न अथायावाण वान अश पर ही अधिक जार दकर कवल इतन अश का ही अत्यंत त मयता एव मार्मिकता व साथ चित्रित किया है।

हनुमान

वाल्मीकि व हनुमान प्रभुभक्त सस्कृतज्ञ राजनीति कुशल एव वीरपुंगव है। प्रथम भेंट व समय ही राम न उनके पांडित्य की प्रशंसा की है। अज्ञान न म सीता स बात करने व पूछ व मन ही मन साचन। इनस सस्कृत भाषा म वातचीत की जाए या किसी अन्य भाषा म। एक आर जहा वे सुप्रीव व योग्य सचिव रह वहाँ दूगरी आर राम व प्रति भी उतान प्रभु भक्ति का उत्कट आदेश प्रस्तुत किया। उनकी दूर वीरता और बुद्धि पर ही विश्वास कर राम न उहें सीता के लिए अंगूठी का अभिनान दिया था।

भाषा रामायणा के हनुमान और वाल्मीकि रामायण व हनुमान म पाथक्य हा गया है। ग्रह राम व भक्त दिवान न वारण उहें पंडित की अपेक्षा भक्त रूप म अधिा चित्रित किया गया। बहा नही व भक्त नही अत भक्त व रूप म चित्रित निय गय हैं और व एक सामान्य वादर मात्र रह गय है।

असमीया के हनुमान वाल्मीकि रामायण के हनुमान स साम्य रसत हुए जनत है। उनम अगरी कोई विशयता परिनिात नहा हाती। वाल्मीकि व हनुमान व गुणा का भी पूण विकास उनम नहा मिलता। राम स भेंट सामान्य रूप स हुई। अग व विद्रा भग करने व समय उनक तन भी दीवृत्त-बचन व लिए हैं। इनम कुछ कुछ वानरी-वृत्ति लियायी पडती है किंतु उतनी नहा जितनी कि शय दा पूर्वाचारीय रामायणा म है। रावण व साथ साथी मन्त्री का आत्मगमपिता सीता ममभक्त य रा व। फिर मह सुपन म मन्त्रि की साथ पाकर तथा बेणो की तान घाठ हाय म वम पाकर ममभ गय नि य सीता तथा ग मवी।

अथाया रामायण म हनुमान व परिा नवन और वानर रूप का मिश्रण

हुआ है। राम ने भेंट के समय ही उहान अपनी नीति कुशलता का परिचय देन हुए कहा था—सुग्रीव के पास राय गरी है और तुम्हारे पास नारी नहीं है। उमे वानि न राय छीनकर निवान लिया है। सुग्रीव तुम्हारी महायता से राज्य पाएगा और वह तुम्हारी सीता का उद्धार करेगा।^१

विश्वामित्र ने जब लक्ष्मण सुग्रीव का डाँटन पहुँचे तो वह भी बड़ा क्रुपित हुआ था। उस समय तीक्ष्णमति हनुमान न ही उस समय भाया था।^२ सीता को न राज मकर पर सुग्रीव के डर से अग्रद न पडयत्र विया कि काइ भी बदर नोट कर न जाए। हनुमान न अपन तर्कों से उमना पडयत्र नष्ट कर यह भी कहा कि सभी वानरा के स्त्री पुत्र हैं, तुम्हारी तरह मय उन्हें न छोड़ेंगे। बचल तुम्ही अकेल बना म घूमन फिरना।^३ सीता न उन्हें बुद्धि म बहस्पति और पंडित कहा था।^४ व बुद्धिमान प्रपची भी जान गन्त हैं। व रूप बलकर म दादरी और चडीपाठ रत वून बहस्पति का ठग आने हैं।

व राम के ब्रह्मत्व से परिचित ग्व उनके भक्त थे। लक्ष्मण ने कहा था—तुमसे बचकर राम का काइ भक्त नहीं—श्रीराम भक्त नाहि तोमार समान ४६२। किन्तु उनकी भक्ति म अन्तता है। गणपति के समय गरुड के अनुग्रह पर राम न सब से छिपकर उन्हें कृष्ण रूप दिखाया था। हनुमान महायाग से इन तथ्य को जान लत हैं और गरुड के प्रति घोर ईर्ष्या का भाव रखकर प्रतिशाप लेना चाहते हैं। सीता द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य माना के दान इसलिए फीट टाकते हैं कि उनसे राम सीता का रूप नहा है। लक्ष्मण के व्यग्र करने पर व अपन हृदय का फाड़कर अग्नि अग्नि पर राम-नाम अर्पित किया दो हैं। सीता का लका म न योज पाकर वे रा देने हैं।

बही नही य वानर-वृत्ति-युक्त भी दियाय गय हैं। मनु वनान समय नल वायें हाथ म पथर ता रहा था उस य मारन दौन पडे। गितहृगिया का पकडकर समुद्र म फटा। मघनात् के यन कुण्ड पर मून त्याग कर आय।^५ महीरावण के द्वारा ठग

१ सुग्रीव राय गारि नाहि नाहि नत्र नारी। वानि राय हरिन वगि देशान्तरी ॥
सुग्रीव पाइव राज्य माहाय तामार। सुग्रीव वगि तव गीता उद्धार ॥

वै० रा० १६४।

२ महामत्री हनुमान अति तीक्ष्णमति। बहन दितापत्र सुग्रीव प्रति ॥

वै० रा० ८५३।

३ तामा हन स्त्री पुन छान्वि वान जन। एकात्री बचल सुमि फर वन वन ॥

व० रा०, २०३।

४ जानरी वन सुमि विचार पण्डित। महावीर हनु सुमि बुद्धे बहस्पति ॥

वै० रा०, ८७७।

५ यज्ञकुण्ड उपरते हनुमान मत्। प० ३७३।

जाकर खिसिया जाते हैं। गीता का सतान वाली राक्षसिया के दत्त और वेष उखाड़कर उनका मुख बानू म घिसना चाहते हैं। विभीषण ने इ हों बनजंतु बुद्धि-हीन वानर कहकर इनकी गणना पशुआ म की है—

१—विभीषण बले हनु पशुते गणन ।

२—बन जंतु बानर से बुद्धि नाइ घटे । ३७१

हनुमान की बीरता म सन्देह नहीं है। वे अहकारी भी है। राम न उनका अहकार दूर किया है।^१

उत्तरकाण्ड म सीता ने इहे पहचाना कि य तो भोलाशंकर के अवतार हैं। बेंगला रामायण म हनुमान का चरित्र वतव्य परायण मरल बुद्धि प्रिय धरेन भत्य जसा है उनके चरित्र म भत्य सुलभ अनता भी है।

०उडिया रामायण के हनुमान बेंगला रामायण के हनुमान जम भक्त तथा वानर वृत्ति युक्त हैं।

राम से मिलते ही इहाने उहें देव देव भक्त-वत्सल अपारमहिमा और दास हितकारी समझ लिया था।^२ कथा के अंत म उहाने राम स वर माया था कि जब तक राम की कीर्ति रहे तब तक उनके मन म भक्ति बनी रहे।^३

नल को बायें हाथ से पत्थर नता देग ये भी रष्ट होकर भपट पड़े थे।

इनके चरित्र म और भी कामियाँ हैं। १—रावण की गोद म पडी मन्दोदरी को खेकर उस सीता समझ अपन को बिकरागते हुए अपन गान की खड खड कर देने की प्रस्तुत हा गय थ। २—सीता को य माता कहते हैं— दिअमि सदेश मा गो विलम्ब न कर। ४ साम ही उनके वक्ष स्थन और क्षीण मध्यभाग (वटि) की प्रशसा भी करते हैं।

धय वक्षस्पल धन्य एहा मजा क्षीण । ५।१८

इहें धमड भी था। भरद्वाज राम के कार्यों की प्रशंसा कर रहे थ इस मुनकर हनुमान मन ही मन दुःख हुए कि काय किया मैंने और यश हो रहा इनका।^४

फिर भी राम के प्रति उनके मन म भक्ति तो थी ही और उहोन राम के धनक काय सम्पादित त्रिय थ इमीनिण राम न भी उनके प्रति वृत्ताता प्रकाश किया

१ त्रेनिण अध्याय ६—उत्तरकाण्ड ।

२ उडिया रामायण ४।६ ।

३ वही ७।६६ ।

४ वही ५।२२ ।

५ वही, ६।३२६ २७ ।

हे—मनु यश मोत जाण हनुमत देला—६।२०० ।

मानस के हनुमान राम के भक्त हैं। यदि भरत प्रबुद्ध भक्त हैं तो हनुमान एसे अन भक्त हैं जिनकी रखा स्वयं राम उन्हें शिशु पुत्र समझकर करत हैं। (वे बंगला० के हनुमान की तरह अन कदापि नहीं हैं।) राम को प्रथम भेंट में ही उन्होंने पहचान लिया कि यही प्रभु हैं। वे राम के चरणों में गिर पड़े, उनका शरीर पुलकित हो उठा मुह स वचन नहीं निकले।

हनुमान के लिए ममस्त विश्व राममय है। चंद्रमा की कालिमा विषयक उक्तिवा के समय उनकी उक्ति विचारणीय है। वे चंद्रकलक में राम की श्यामता का आभास पाते हैं। चंद्रमा के हृदय में राम बसते हैं इसीलिए वह काला है। हनुमान अपने मन की बात कह रहे हैं। यही बंगला के हनुमान का स्मरण ही आता है, जो माना के दान पाइकर उनमें राम सीता के दर्शन करना चाहते हैं।

वाल्मीकि-रामायण में हनुमान सीता से बात करते समय पति एवं नीति कुशल दूत प्रनीत होने हैं, मानस में वे एक आत्माकारी भक्त्य के रूप में देखे जाते हैं। सीता भी उन्हें पुनर्वत स्तुति करती है।

इन हनुमान के चरित्र में बंगला के हनुमान जसा विराधाभास नहीं है। न वे पति हैं और न वानर। वे तो राम के अनन्य भक्त हैं, भक्ता के आदर्श हैं, अथवा स्वयं मूर्तिमान तुलसीदास हैं। उत्तर भारत के गाव-गाव में वज्ररग बली की जो पूजा होती है वह मानस का ही प्रभाव है। उत्तर भारत में तुलसी ने उन्हें भक्त और वीर रूप में अमर कर लिया है। आज भी मानस का पाठ करते समय विश्वास किया जाता है कि हनुमान अल्प रूप से कथा सुनने आते हैं अतएव पाठ के पूर्व ही उनके आसन की व्यवस्था कर दी जाती है। बंगला-लखन न भी हनुमान के विषय में कहा है—तुम वही भी रहा, जहां रामनाम प्रसंग होगा, तुम उस स्थान पर (अवश्य) पहुंचाया।

रामनाम प्रसंग हृदयें थेंइ स्थाने । यथा तथा याक तुमि आसिबे सेखाने ॥६२

रावण (प्रतिनायक)

वाल्मीकि रामायण का प्रतिनायक रावण 'ज्वलन्त पावक' के समान तजस्वी एवं आदित्य के समान दुष्प्रेक्ष्य था।^१ वह चमकीले पन्ने की भांति शरीर की कान्ति वाला 'गुद्धस्वर्ण-बुडलधारी लम्बी भुजावा, स्वच्छन्द एव विशाल मुख वाला तथा पर्वत के समान लम्बा था।^२ उसका शरीर पर अनक युद्ध के घावों के चिह्न थे, वह

१ वाल्मीकि रामायण ३।३२।५ एवं ६।१६।२७ ।

२ स्निग्धवह्नयमकाश तपकाञ्चनकुण्डलम् ।

मुमुज मुकन्दशन महास्य पवतापमम् ॥ ३।३२।६ ।

चित्रित हुआ। दक्षिण ही बढ़त गया, बेचारा शापग्रस्त रावण राक्षसयोनि से तभी उद्धार पा सकता है जब कि उसके अत्याचार इतनी अधिक माना तब बड़ जाएँ कि उसके सहार के लिए ब्रह्म को नररूप धारण करने के लिए बाध्य होना पड़े।

वाल्मीकि का रावण भीता का कामुक प्रेमी है किन्तु भाषा रामायणो का रावण भक्त भी है अतएव इन लेखका न रावण के चरित्र को कामुकता एव भक्ति के रंग को मिश्रित कर चित्रित किया है—विशेषतः अमभीया का छोड़ शेष तीन रामायणों में।

इन प्रमुख परिवर्तनों के साथ कुछ अर्थ अममताएँ भी हैं जिनका पृथक् पृथक् उल्लेख नीचे किया जाएगा।

असमीया रामायण का रावण—रावण का चरित्र बहुत विस्तृत नहीं है, जितना कुछ है वह आदि रामायण से समानता रखता है। यहाँ रावण क्रोधी अहंकारी और निर्भक्ति योद्धा के रूप में प्रस्तुत है। वह राम के ब्रह्मत्व से परिचित प्रतीत होता है किन्तु वही भी वह भक्त नहीं दिग्याया गया। एक ही स्थल पर ऐसा वचन है—

जानो मइ सीता लक्ष्मी जनक जियारी ।
आर जानो राम मधुसूदन मुरारी ॥
रामर हातत जानो मोर याइव जीव ।
तथापि निदिबो सीता जनकर जीव ॥

(मैं जानता हूँ कि जनक की पुत्री सीता लक्ष्मी हैं, और यह भी जानता हूँ कि राम मधुसूदन मुरारी हैं। मुझे तात है कि राम के हाथ से मेरे प्राण जाएँ तथापि मैं जनकपुत्री सीता का नहीं दूंगा। ४६६६।)

उसने सीता का हरण लक्ष्मी समझकर नहीं रमणी समझकर किया था। वह हर प्रकार से सीता को मुग्ध करने की चेष्टा करता है। अपनी विजयों पर अहंकार प्रकट कर सीता का अनेक प्रकार से अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है—राम से मिलने की आशा भंग कर, अपना ऐश्वर्य-वचन कर और दीनता प्रकाश कर।

रामे तोक निबहेन आशा परिहर ।
चरणत धरो मोक अनुग्रह कर ॥
पुष्पक विमान तिति भुवन ते सार ।
इहाते रमण हौक तोमार आमार ॥
दशगोटा शिरे तोर चरणत झाण्टो ।
मुखे खेर धरिया कातरि करो मातो ॥

(राम मुझे छोड़ा मर्के इम आशा को छोड़ दे। मैं पर पडता हूँ मुझ पर अनुग्रह कर। तीना लोका के सार पुष्पक-विमान में भरा तरा रमण हो। मैं अपने दगा मिर तर चरणा में रख रहा हूँ। मुह में तिनका रखकर गिडगिडा रहा हूँ। ३२७५ ३२७६)

सीता के शब्दों में वह चौन्ह शान्त्रा में पारगत एव धम अधम का ज्ञाता था। किन्तु उसने स्व रूप का वही विवाम नहीं देखा गया। सीता जब उसकी अनुनय को

ठुकरा देती हैं तो वह समयहीन ढाकर काध से बोसला उठता है—

हाओरो पापिष्ठी मोक हेनय सिद्धात । चवरर चोट तोर सारि एरो दात ॥ ३१८३ ।

असमीया-लेखक ने अय पानो द्वारा उसकी अधिक भत्सना नहीं करायी है । हनुमान एव अगद आदि स उसके वार्तालाप सक्षिप्त हैं ।

वगला उडिया के रावणो के समान वह दीन नहीं है वह मानस के रावण के समान निश्शक है । सभी योद्धाओ के मार जाने पर वह युद्ध के लिए अकटता हुआ चला—आज मरा बल देखा राम लक्ष्मण सहित समस्त पानर सेना को मैं मार डालूंगा । पृष्ठ ३२८ ।

० वगला रामायण का रावण—भोगी और भक्त दोनो एक साथ है । सीता का हरण करते समय वह रूप लीभी ही प्रतीत होता है । परस्त्री देखकर उस प्रसन्नता हुआ करती थी ।^१ उसने अनेक नारियां वा अपहरण किया था ।^२ सीता के प्रति वह कामातुर चेष्टाओ का प्रकाश करता है । वह सीता को मनाकर कहता है—डरो मत, मेरी लका म देवता भी नहीं आ सकते । तुम मेरी ईश्वरी हो मैं तुम्हारा सेवक हूँ । तुम्हारी आत्मा पाकर तुम्हें अत पुर म ल जाऊँगा । वह सीता के चरणो पर गिरकर कहता है—राजा दशानन किसी के परा पर नहीं पडता, किंतु तुम्हारे चरणो पर दशा मस्तक लुठित कर रहा हूँ—

बारो पाये नाहि पडे राजा दगानने । दगमाया लोटइलाम तोमार चरणे ॥

प० २२६

० भक्ति के क्षेत्र म वह अत्यन्त गलदशु भावुक है । उसकी भावुकता मानस के रावण से भी बड़ी हुई है । मानस म उस राम के ब्रह्मत्व का गान प्रारम्भ म ही हुआ है और वेंगला रामायण म जब उसके प्रमुख वीर मारे जात हैं तब होता है ।

मने मने चिन्ता बरे राजा दगानन । एकांत जानिभू राम देख मारायण ॥

यदिच रामेर हाते हयत मरण । एकांत बकुष्ठ धाव ना याय लण्डन ॥

(राजा दशानन मन ही मन चिन्ता कर रहा है कि मैं बिल्कुल जान लिया, राम देव नारायण हैं । यदि राम स मरी मरु हाती है ता मैं निश्चय रूप स बकुष्ठ जाऊँगा । पृष्ठ ३८१ ।)

घपने सोभाग्य पर गव बरन हूण उसन मन्त्री स कहा था—महालक्ष्मी मीना-टाकुरानी शक्ति रूपा है तुम मुझ क्या समभाआगी मैं यह जानता हूँ ।—मुनि घोर ऋषि ध्याना करन हूए भी त्रिनका ध्यान नहीं कर पात ब राम जलाहार किये हूए मरा भजन कर रह है । श्री राम घपन मन म मरा रूप जापन तिय हूए साच

१ परम्प्री दगिन तुमि बड हमा मुगी । १४७ ।

२ हएण मनन नागी पणय निम्तार । १४८ ।

रहे हैं कि कब मेरा वध करोगे ।^१

यही एक दुबलता भी है उसमें । मन्दोदरी के समभाने पर वह अवश्य ही सीता को वापस कर देना, वित्त अब जगहेंमार्द का डर है—वह विभीषण और इंद्र की हंसी कस सह सकता है । इससे तो अच्छा है राम के बाण से ही मृत्यु हो ।^२

उसकी अशु विगलित भावुक भक्ति का परिचय मित्रता है राम के सम्मुख रणस्थल में, जहाँ वह गले में घाती बाधकर बगाती श्ली में प्रणाम कर रहा है और उसके धीसा नना स जलघार बह रही है । राम भी उसकी विनय देख कर घनुपवाण फेंक देत है ।^३

० भक्ति की विह्वलता के अतिरिक्त अय कई दुबलताओं से भी इस रामायण का रावण तत्राहत किया गया है । सतुग्रह हो जाने पर उसका अहंकार टूटने लगा था ।^४ वह बड़ा शोक वातग्र हो गया । प्रिय महारथियों के मरने पर वह बड़े-बड़े आसू गिराकर लोटपोट होकर राया ।^५ मभी प्रमुख मोद्धाओं के मार जाने पर वह राया भी है और क्रुद्ध भी हुआ है । युद्ध की तयारी के लिए वह अपने ही हाथों सज रहा है ।

भये अभिमाने राजा आलि छत्रदल ।
कीपमने युक्षिते चलिला रणस्थल ॥
आपनि बरिछ साग लका अधिकारी ।
मेघेर बरण अगे धवल उत्तरी ॥ ४०६

वह डरपाक भी है । युद्ध की स्थिति विपन्न हो जान पर वह यह भी कह उठता है एमे सारहीन युद्ध से अब और प्रयोजन नहीं है, मैं विवाह बंद कर लूंगा प्राण से बच कर बाई धन नहीं है—

हेन धार युद्धे आर नाहि प्रयोजन ।
याकिब कपाट दिया प्राण बड धन ॥ ३३५

० उसकी दुर्गतिता की कमी की ओर कुम्भकण ने अच्छा ध्यान आकृष्ट किया है । कुम्भकण न उससे कहा, तुममें राम को सतु बनाने ही क्यों दिया । समुद्र के उसी पार जाकर युद्ध क्यों नहीं किया । असमीया रामायण में अवश्य ही कुछ ऐसा ही संकेत है वहाँ कुम्भकण कहता है, हाथी के दात उखाड़ लाय और हाथी छोड़ आये । सीता को लाये थ तो राम को मार आत ।

१ बेंगला रामायण, पृ० ४१० ।

२ वही, ४१० ।

३ वही, ४१५, ४१६, ४३१ ।

४ बाँधा गेल गागर, बटक हैन पार ।
ल्लिने दिने रादणर टुट अहवार ॥ २६० ।

५ दक्षिण, कुम्भकण की मृत्यु—३१६ तरणीसेन वध—३५६, मघनाद-वध पर—
उच्च स्वर डेके बने बोधा इंद्रजित ।
प्राछाड खाडया पडे हड्या मूच्छित ॥

पुत्र शाके कादि राजा गडागडि याय ।
दशमुण्ड बनेवर घूलाने लोटाय ॥ ३७८ ।

० रावण का पराभव विजय करनी की छार भी लगक न ध्यात गिया है । वह स्वयंवर मे सफल न हुमा ता यका टिप्पारी दा हण उत मन्ता है । मुद्रमपन म नील उसने मस्तन पर मूय-व्याग करत है । हनुमान और मगन उत उमकी ही गज सभा म खरी-खाटी मुनात है ।

० इत टवलतामा के प्रतिरिवन उमम दा गुण भी है—वाकानुय और नीति कुशलता । उसका वाकचानुय मानग व रावण का स्मरण गिना दाता है । उमम मगन से कहा था— क्या चण्डाल का मित्र राम यह गाच रहा है नि जगती बन्ता की सहायता स वह सीता का उद्धार कर लगा । राम की जिजनी भी मोम्यता है गव दख रहा है ऐमा न हाना ता क्या उमका भाई उम दश स मदद दता । यह स्त्री का लेवर वन म क्या चला घाया, भाई का भारतर राय ग्रहण कर दश म क्या नही रहा ।^१

मुपाश्व न रावण को सीता चुराकर स जात दता ता उस मारने के लिए घेर लिया । रावण ने नीतिकुशलता का परिचय दे कर उससे छुटवारा पाया । उसके तर्कों म कितना बल है—१ हमारी तुम्हारी काई शत्रुता नही (तब तुम क्या धोलो) २ राम ने मरी सहोदरा बहिन के नाक-बान काट लिये और सार दूयण भाइया का वध किया—(इन अपराधो के निण) मैंन उनकी नारी का हरण किया है ।^२ इसी प्रकार उसने मगद को फुसलाकर अपने पक्ष म बरना चाहा था— राम को जो करना है आकर ररें मुभसे तुभे क्या बरना है—(क्या शिकायत है) । (उसने) शूयणखा की नाक काट ली, मेरे जीवन को धिक्कार है ।^३

वह राजनीति का पण्डित था स्वयं राम ने उसके चरणा की और खडे होकर आसन्न-मत्यु रावण से राजनीति की शिक्षा ग्रहण की थी ।

उडिया रामायण का रावण—वेदपाठी पण्डित, राजनीतिन वाकचतुर, गण ग्राही, विष्णुभक्त और घोर कामुक है । उसके लिए कहा गया है कि वह सग्राम म शक्त एव सभा मे वक्ता है— सग्राम शक्ता तु ये सभारे वक्ता ६।१५ ।

० सीता को छतपूवक हर लान के दिए वह सयासी वेश म जाकर बणाट राम

१ एइकि भेवछे गुहक चण्डालेर मिता । वनर वानर सहाय करे उद्धारिखे सीता ॥
रामर योग्यता यत सब देखते पाइ । नले केन नश धक धूर करे देय भाइ ॥
नारी सग लइया स वने केन प्रवेशे । भाइ के मेरे राज्य लय रय ना वन देश ॥

२ बंगला रामायण १५५ ।

३ राम या पारे करक एमे तार सन मार कि ।

सूपणखार नाक काट, वधा ग्रामि जी । २७६ ।

मे चारो वेदा का गान करता है तथा उँकार गायत्री सावित्री आदि का पाठ भी करता है—

चारिवेद उट कारि कणाट रागे गाइ । अँकार आदि गायत्री सावित्री पढइ ॥३॥३८

वसे भी वह स्नान-समापन कर चारो वेदा का पाठ करता और विष्णु नाम के लक्ष पदो का परायण करता था—५।१।१२ ।

वह अपने मंत्रिया को दूत बनाकर विभीषण और सुग्रीव के पास भेजकर उन्हें प्रलोभन देकर फोड़ने की राजनीति चलता है । विभीषण से उसने कहलाया—
तू शत्रु की शरण कसे गया ? लौट चल । सुग्रीव से कहा बालि के नाते तुम मेरे छोटे भाइ हो तुम्हें अयाध्या के सिंहासन पर बठाऊंगा ।^१

सीता के आगे राम का हीनवीर्य सिद्ध कर वाकबौशल से वह अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है—‘राम निबल है तभी तो वन म आया है और कनिष्ठ भाई राज्य करता है । तुझ जसी सुन्दरी को वह वन म कष्ट द रहा है । सुदरी मेरा हाथ पकडकर मुख दा ।’ सीता को अनेक प्रलोभन दिय, न मानने पर उसने कहा तो आज राम अपनी नारी की रक्षा करें । और वह सीता को बलात रथ म बिठाल कर भाग आया ।^२

राम से युद्ध कर और लका नीटकर मेघनाद से राम के परानम की प्रशंसा करता है । मेघनाद क्षुभ हा कर कहता है युद्ध से लौट आय हो इसीलिए एसा कहत हो । रावण समझता है कि जीत ता अपनी ही हागी विन्तु आज का समर था अपूव ।^३

अग्रय ग्रथा के समान इस ग्रथ म भी रावण राम का भक्त है, वह श्रीराम के हाथा मरने के निमित्त ही राम को सीता प्रदान नहीं करना चाहता—

श्रीराम हस्तरे मुहिँ मरिवा निमते । तेण मुहिँ सीताकु न देवि कदाचिते । ५।६

उमने गेर खडी और कस्तूरी से स्थान-स्थान पर ऐसा निख दिया था, जिसे पत्कर हनुमान ने सोचा था कौन कहता है रावण नान-हीन है । उसने राम को विष्णु जानकर ही सीता का हरण किया है ।^४

रावण घोर कामुव भी दिवाया गया है । वेदवती से अमयादित वाते^५

१ उडिया रामायण, ५।१०६ १०७ ।

२ वही, ३।४०, ४१ ।

३ वही ६।७७ ।

४ वही, ५।६ ।

५ बाहे बाहा वाचि करि करिइ काल । गाडेण मद्दि वि ये पयोधर मण्डन ।

है और उसे पकड़ कर चूम लता है। नारी स भेंट हाथ ही वह वामनाम्य की वनामा का पान प्रवट करने लगता है।^१ मदार्री स वतना कर यह वामनाम्य जानर सीता के पास जानर प्रेम निवेदन करता है। विीपण का टोकर करता है—‘मुद-स्वण-जघामा और धमत भरे कुचा वाली सीता क माय रनि गुग त्ना छाड सता। सीता चतुर युवती और शृगार से परिचित है तभी ता राम क माय प्रापी है मैं ऐसी रमणी को छोड नही सवता।^२ सीता स भी उगन क्ता तारा ह्ण्य मुदर पापाण जसा है। तर कारण मेरे अनेज याद्धा मार गय। तर यौन म धमत है उसे बिना पाय म मर जाऊगा। तरा मूह गिन रमन सा है।^३ यह वना रमित प्रतीत होता है इसी प्रसंग म वह कह जा रहा है मुमम नागिका पुनातर हेंगकर वात करो। चुम्बन देकर मेरी देह रक्षा करो—

नासिका कुलाइण हसिण कया कह। चुम्बनदान देइण रल मोर दह ॥ ६।२४८

०उसके चरित्र म दो स्थला पर परस्परिक विराध भी है। (१) वह मन्दोदरी को समभाया करता है कि वह अपन उद्धार क लिए सीता हर नाया है एक अय स्थल पर वह मन्दोदरी स कहता है कि वह राम-लक्ष्मण का मारकर सीता का मास खाएगा।^४ (२) उसके अतुल प्रताप का वणन किया गया है सभी देवता उसके यहाँ नौकर हैं शकर भी उही म एक हैं। इही शकर को नत्य की आना द कर उनके ताडव को देखकर सहमकर नत्य बद करन के लिए करता है। ५।२८।

मानस का रावण—यहाँ भी रावण भोगी और भवन एक साथ है। भोगी की अपेक्षा भक्त अधिक होते हुए भी बंगाली राजण के समान वह विह्वल भक्ति का प्रकाश नहीं करता। किसी पान के भी सामने उसन राम को ब्रह्म नहीं बताया। खरदूषण की मत्यु के समय ही उसने समझ लिया था कि राम साधारण नहीं है। यदि पृथ्वी के भार को हलका करने के लिए ही भगवान ने अवतार लिया है तो उनसे हठ पूवक कर करना ही उसने उचित समझा क्योंकि इस तामस देह को लेकर वह भक्ति नहीं कर सकता। यदि राम साधारण पुरुष हैं तो फिर बहना ही क्या वह इन्हें मारकर इनकी मुन्तर नारी हर लाएगा।^५ सीता का हरण करते समय उनके कटु वचन सुन कर वह वन्त रण्ट हुआ था किन्तु मन ही मन उसने सीता के चरणों

१ ए तोहर अघर चुम्बन मोर मन। नये वितारिवि ए ताहर यउवन ॥
तोते यव भुजे भिडि करियइ काल। ताहर सङ्गे बाजिव आगि रणगोल ॥ ७।७३।
(अपने भतीजे की पत्नी रमा के प्रति राजण कहता है।)

२ उडिया रामायण ५।६०।

३ वही ६।२४६।

४ वही ६।२।५१।

५ वही ३।२२।६।

की बदनामी थी।

सुनत बचन दसतीस रिताना । मन मट्टे चरन बदि सुए माना । ३।२७-१६

वह बड़ा प्रतापी था, सुर-नर सभी उससे आतंकित थे। मानस म उससे प्रनाप का वणन इम प्रकार हुआ है—

घलत दसानन द्रोतत अयनी । गजत गभ खर्वाहि सुर रयनी ॥

रावन आवत सुनेउ समोहा । देवहि तके मेरु गिरि सोहा ॥ १।१८१।५,६

उम अपनी भुजाभा पर विश्वास था। राम से मर्षि का प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले प्रहस्त को ठुकराकर वह अपनी भद्रदर्शिता एवं हठधर्मी का परिचय भले ही देता हो किन्तु उसका आत्मविश्वास तो देगिरा, प्रहस्त को फटकार कर वह अपने महल की ओर निम अचढ़ के साथ जा रहा है—'भवन चलेउ निरगत भुज वीसा।' वह शत्रु के प्रति शत्रुता का ही व्यवहार करता है, कभी दानता नहीं दिखाता। लक्ष्मण की भेजी हुई चिट्ठी उमन अत्यन्त उपक्षा-भूवक बायें हाथ से ली थी। युद्ध भ अन्व महारथियों के घेत होने पर भी, वह रचमात्र भी नहीं भवडाया। उसने अपनी भुजाभा के बल पर बर बनाया था। शत्रु चढ़ आया है तो क्या हुआ, उसको उत्तर दिया जाएगा।

निज भुज बल में बयह बढ़ावा । देहऊँ उतर जो रिपु चढ़ि आवा । ६।७७।६

उसे अपने योद्धापन का गव था। इसीलिए कभी-कभी वह बडबोला सा प्रतीत होता है। मारीच को उसने फटकार बताया थी—

गुह जिमि मूढ करसि मम बोधा । बहु जग मोहि समान को जोधा । ३।२५।२

इसी प्रकार भयभीत मन्दोदरी से भी उसने कहा था—

मुनु त प्रिया बथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना । ६।७।२

अनुत्तमीदास रावण के पाप कृत्या एवं राम विरोध से इतने अधिक असंतुष्ट हैं कि उन्होंने हनुमान, अगद तथा उनके अपन ही दूता द्वारा अपशब्द कहलाये हैं। कम से कम उसके अन्न भोगी दूत तो उसका प्रति शोध व्यक्त करन का माहस नहीं कर सकते।^१

असि रिसि होत दसउ मुह तोरों । लका गहि समुद मह चोरों । ६।३३।२

—ऐसे वचन रावण अपनी ही राजसभा में राम-दूत के मुख से सुनकर बड़ा मुस्कराता रहता है—जुगुति सुनन रावन मुसुकाई।^२ मन्दोदरी भी उसे जसा

१ मानस, ६।६।६।

२ सुन खल बचन दूत रिस बाढी । नाथ वचाइ जुडावहु छाती ॥ ५।५५।५ ।

३ मानस, ६।३३।५।

गिरावर राम से सधि करन के लिए बहती है उगत भा घोषित्य घोर मर्गांग का सीमा का उल्लापन हाता है। पर पुत्र्य का शूय घोर पति का जुगुनू चानन तथा शत्रु के चरणो म अपमान जनन स्थिति म जातर समपण तत्रा की सम्मति गया पत्ता दे सक्ती है? मन्दोदरी तो एगदम भविान हा उठी है।

तुम्हहि रघुपतिहि अन्तर कसा । तालु तघोत दिनकरहि जसा । ६।२।६

रामहि सोपि जानबी नाइ कमल पद प्राय ।

सुत बहु राज समपि मन जाइ भजिय रघुनाथ ॥ ६।६

हां बसे तुलसी ने स्वय रावण का कभी दीन हीन तहा हान लिया। उमा राम के साथ अपमानपूर्ण सधि का प्रस्ताव करन घाना का मन्व टुलारा है। मन्दा दरी को भी उसने नारी कहकर तथा नारी के महज अष्टगुणा का उल्लाप कर उगता मुह बंद कर दिया है। एसा लगता है इन पात्रा के बहा नुनगीदास न रावण के प्रति अपना रोप प्रकट किया है।

रावण वाक्पटु और व्यगप्रिय था। तुनसीदास न मन ही मय पात्रा के द्वारा रावण के प्रति अनुचित वचन बहनाथ हा किन्तु वह स्वय कभी अप्रतिभ नहीं होता। अगद के बार-बार श्रेणी वधारन पर वह कहता है यदि तुम्हारा स्वामी बडा योद्धा है तो दूत क्या भेजता है शत्रु से प्रीति (सधि) करत टुण उस लज्जा नहीं आती? अपन दूता द्वारा राम की मना का पराक्रम सुनकर तथा यह जानकर कि राम ममुद्र से माग मांग रहे हैं वह हसकर बोला— जब एसी बुद्धि है तभी तो वानरा को सहायक बनाया है। रे मूढ़ तू यथ म क्या प्रशंसा कर रहा है, मैंने शत्रु के बल और बुद्धि की थाह पा ली।

सुनत वचन ब्रह्मसा दससीसा । जो असि मति सहाय कृत कीसा ॥

मूढ़ मया का करसि बडाई । रिपु बल बुद्धि थाह में पाई ॥^३

राम द्वारा उसके छत्र मुकुट आदि काटकर गिरा लिय जान पर भी वह कसी युक्ति द्वारा भयभीत-सभा का आश्वस्त करता है—

सिरउ गिरे सतत सुभ जाहीं । मुकुट परे कस असगुन ताहीं । ६।१३।४

हनुमान ने भी जब राम की शरण म जाने का तथा उनके भजन करने का उपदेश दिया था तब भी वह हसकर बोला था—

मिता हमहि कपि गुर बड म्यानी । ५।२३।२

१ रिपु उतकरप कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु तहा हइ कोउ । ५।३६।३ ।

२ मानस, ६।२७।६।७ ।

३ वही, ५।५५।४।६ ।

सीता

सीता पतिव्रत की परिभाषा है ।

वाल्मीकि की सीता कुशीना, तजामयी पतिव्रता, म्महमयी सरना वधू है ।

हमारे देश की कृषि प्रधान महत मस्वृति बहुत बुद्ध नारी के त्याग और सहज निष्ठा पर आधारित है । हमारी सस्वृति म नारी से जा अपक्षा की जाती है तथा समाज म उसका जा स्थान है, वह सीता के चरित्र से स्पष्ट हा जाता है ।

०जीवन म आयी हुई घटनाएँ ही यकित के चरित्र का कसौटी पर कसकर उसके खरेपन को उभारती हैं । सीता के जीवन म मुख्यतया चार प्रसंग आय हैं, जहाँ उनके चरित्र का विकास दखा जाना है । (१) राम के लिए सकट का अवसर, (२) मारीच की पुकार से राम के प्रति आणका और हरण (३) अग्नि-परीक्षा, (४) निष्कासन ।

०राम न दीघ वियाग की सूचना दन के लिए सीता का उनके बडप्पन की याद दिलाकर, उह कुल महति सम्भूने धमनेधमचारिणि^१ कहकर ही बनवास की सूचना दी थी, तथा उनसे अयाध्या म रहने के लिए कहा था । सीता प्रीति युक्त शोध प्रकट कर— प्रणयादेव सकुद्धा^२—वाली थी 'वीर मुझे निश्चक होकर साथ ल चलो, मैंन कोई पाप नही किया है । मुझे सभी अवस्थाम्रा म पति के चरणा की छाया ही हितकर है—

नय मां वीर विलम्ब पाप मयिन विद्यते । २।२७।७

सर्वावस्थागता भतु पादच्छाया विगिप्यते । २।२७।८

सीता ने सभी सम्बन्धो के आगे पति का नाता सर्वोपरि माना । पति के सान्निध्य म उनकी सेवा करत हुए वन के अनक कष्टा को उहाने तुच्छ समभा । किन्तु जब राम निरन्तर उह अयाध्या म रहन की शिक्षा देते रह तो जानकी तडप गयी, उसन डरकर कानते हुए भी प्रेम और अभिमान के साथ राम का उपहास कर कहा—

किं त्वाऽमयत वदेह पिता मे मिथिलाधिप ।

राम जामातर प्राप्य स्त्रिय पुरुषविग्रहम् ॥ २।३०।३

(यदि मेरे पिता मिथिलेश यह जानते कि तुम आकारमान क पुत्र्य हा व्यवहार म स्त्री हा ता व कभी मेरा विवाह तुम्हारे साथ कर तुमको अपना जामाता न वनात ।)

अनुसूया से उहोंने कहा था, पाणिग्रहण के समय अग्नि के समीप मेरी मां ने

१ वा० रा०, २।२६।२० ।

२ वही २।२७।१ ।

जो उद्योग सिद्ध भवति मुझे माता है ।^१

•सायगी व मुग म राम की वर कावच्यति मुनहर पतिवरा भीता वरदा गयी थी । राम मन्त्र भव मुग्ध गतावता सिन्धी पाठित । द्विती राम की गतिव के घटव विरागी सम्पन्न तिन गती से व गव स्थापुत्र मत्र की घमसावण सिन्धी म विरेव का मन्त्रन गारव हा भीता वान वरा भी । एव स्वभाव भाग है शूरी के लिए भावा है । या विर वर भव का भव हवा है । ये मेरी माप शूरी मदा हाने दूगी । ये द्वितीव राम एवं वमन-नया राम का भाववत सिन्धी मुद्दन को पति बनाने की घमसा प्राप्त द दूगी ।^२

•सायगी राम का देववत माता । घावण मुद्दपू के भीत का वलिवर द वर उगत स्थाता तिया । राम न भीता जगी श्वरीय मागे एव मतीवत पर मदा देगी थी — एव स्था मया तारी दुष्पूरा मतीवत ।^३ वर भीता के उनव वृणावत, सट हण वलिया पीन तत हण गुग्ग वामन धीर गतावत के ममात मना की वरवा करता हवा कह रग था — का । त्रिग वरार गी जव व वेव मे वृव का हरण करती है उगी भीति शू मत्र मत्र का हर रही है — मागे हरणि म वान मनी वृनमिवाग्भवा ।^४ भीता । एव सायगी का वरवत घाव वरव हण वरवगगुगार भासन धीर घव्य भाति वस्तुत प्रगात वी । व वर रही थी ति वही सायगी माव त दे दे किन्तु एव वृद्ध घनाग सायगा म उर् वर घवव्य मग रहा था अभी वे वा के उस माग की धीर भी देव रगी वा त्रिगम राम धीर सम्पन्न एवं हण थे ।

रावण के वास्तवित हण का मगभार भीता । तेजोनीप-भर म रावण को पटवारा — वृ शृगान होवर सिन्धी की वामता वरवा है । वृ राम की भावा को प्राप्त कर माना प्रवन्नित घणि को वस्त्र म वीघता गारवा है ।

अशोकवन म सीता ने राधागिया के पुगनाते घमवाने पर कहा था—ये निशाचर को वीधे पर स भी नहीं छुऊगी, फिर मैं रावण जैसे विगहिता की वामना वसे कर सकती हूँ ?

चरणनापि सत्यन न स्पशेय निशाचरम ।

रावण कि पुनरह कामयेय विगहितम ॥ ५।२६।८

१ पाणिप्रदान वाने च यत्पुरा अग्निसन्निधौ ।

अनुशिष्टा जनयास्मि वाक्य तदपि मे घतम् ॥ २।१।८।८ ।

२ वा० रा० ३।४५ ।

३ वही, ३।४६।२२ ।

४ एतावुपचिती वती सहती सप्रविलगती ।

पीनोन्नतमुत्ती काती स्निग्धो तालपलोपमी ॥ ३।४६।१६ ।

५ वाल्मीकि रामायण, ३।४६।२१ ।

सीता का पतिव्रत लादा हुआ पतिव्रत नहीं था। रावण बलिष्ठ, सुन्दर और प्रतापी राजा था। सीता न चाहा होता तो वनवासी और असहाय राम को छोड़कर उसे ही स्वीकार कर लिया होता। किन्तु अग्नि की निधूम शिक्षा सी सीता अपने सत्य पर दृढ़ रही।

० रावण-वध का समाचार प्राप्त कर हृष से स्तब्ध रह जाने वाली सीता ने मले कुचले रूप में तुरन्त ही राम का दखने की अभिलाषा प्रकट की थी किन्तु विभीषण के द्वारा राम का आदेश सुनकर उन्होंने स्नान प्रसाधन किया। उनका विश्व मोहिनी रूप देखकर वानर रीछ डीले के आसपास एकत्र होकर माग अवरुद्ध करने लगे। विभीषण ने उन्हें बेंत से पीटना प्रारम्भ किया। राम ने सीता को पर्दा रहित होकर आने के लिए कहा। लाज के मारे सिकुड़ती हुई सीता आपी और आर्षपुत्र कह कर रो पड़ी। वे विस्मय, हृष और प्रेमपूजक राम का तमतमामा हुआ मुख देख रहीं थी। प्यार के मुख से प्यारे वचन सुनने की आशा लगान वाली मधिली ने सुना—रावण की गोद में परिभ्रष्ट हुई तथा उसकी बुदबिष्टि से देखी हुई तुमको मैं बड़े कुल में उत्पन्न होकर कैसे ग्रहण करूँ।

रावणाङ्क परिभ्रष्टा दष्टा दुष्टेन चक्षुषा ।

कथं त्वा पुनरादद्या कुलं व्यपदिशान महत ॥ ६।११८।२०

इतना ही नहीं राम ने यह भी कहा दसो दिशाएँ खुली है, जहा चाहो चली जाओ। लक्ष्मण विभीषण सुग्रीव आदि जिसे चाहो उसे स्वीकार कर लो। मैंने तो रावण का वध इसलिए किया कि मेरे पवित्र इक्ष्वाकु वंश पर कलक न रह जाए। मैं तुम्हें स्वीकार नहीं कर सकता। सीता की बदनामि का छोर नहीं था उन्होंने भी उत्तर दिया—तुम प्राकृत जन्म जन्मों वारों कर रहे हो। मैं बसी नहीं हूँ जसा तुम समझ रहे हो। यदि तुम्हें यही करना था तो हनुमान से पहले ही कहला देते, मैं क्या प्राणधारण करती।'

० अग्नि शुद्धा सीता सहज रूप से गहिणीधम पालन कर रही थी। राम सीता के कारण लोकापवाद से डर गया और उन्होंने वंचारी को वनदशन के बहाने लक्ष्मण के द्वारा घोर वन में निर्वासित किया। इस महान संकट-काल में भी राम की गमस्थ यात्री की रक्षा के लिए उन्होंने प्राण त्याग नहीं किया। राम पर उन्होंने दोषारोपण न कर उनके प्रति शुभकामना ही भेजी।

उन्होंने सच ही कहा—विधाता ने मेरे शरीर का दुःख भागन के लिए ही बनाया है।

पारस्परिक अन्तर

० वाल्मीकि की यही तर्जस्विनी सीता पूर्वाचलीय तीना रामायणा में गहीत हुई, इसीलिए इन श्रयो में सीता की तर्ज-भूषण उक्तिर्दा हैं। मानस में उसकी तेजस्विता

तो है किंतु वे किसी के प्रति भी ऋटु वचन नहीं बोलती, उसी तजरिजा पतिव्रत की है। राम या लक्ष्मण के प्रति उहाने वभी ऋटु वचन नहीं कहे।

०वाल्मीकि म सीता उत्तम कुल-वधू हैं भाषा रामायण म वे लक्ष्मी की अवतार भी है इसीलिए वे जगत माता क रूप म चित्रित हूद। पूर्वात्तीय रामायण म सीता के मानवी चरित्र का अतिव प्रकाश है, उसम सीता की आध्यात्मिक गरिमा नहीं है। मानस की सीता के चित्रण म लक्ष्मण बहुत सजग है। उसी राम की भाषा शक्ति का चित्रण अधिक पवित्रता क साथ किया है।

०मध्ययुगीन-नारी अपेक्षाकृत कुछ अधिक झगला हो गयी थी उमका यह रूप ही आलोच्य रामायण म है।

इसने अतिरिक्त प्रत्येक लेखक की सीता की अपनी विशिष्टता है।

असमीया०की सीता ०इम रामायण की सीता पर वाल्मीकि की सीता की छाप ही गहरी है। सीता को अपन दीधवाहु और महावीर सुस्वामी पर गव है। सीता की अभिलाषा है कि जम जम म राम उनक स्वामी हा और बौशल्या सास हा।^१

०सीता ने राम के अभिषेक का समाचार पात कर अतीव हृष का अनुभव किया था। किंतु गोधूँसि के मतिन सूय की तरह राम को श्रीहीन देखकर उह अत्यन्त चिंता हुई। वे राम की गदक्षिणा कर हाथ जोडकर उनके पीछे गडी हो गयी। राम से दु खद समाचार जात कर वे भूमि पर पछाड खा कर गिर पडी। अत्यन्त भयभीत होकर उ हाने राम के वस्त्राञ्चल का छोर पकडकर गिडगिडाकर कहा मत जाओ प्रभु —न याइबा प्रभु बुलिया जानवी अञ्चलत धरिलत। छ० १८२५।

सीता ने राम के प्रति ऋटु वचन नहीं कहे। माधव कदली न सीता को समर्पित किया है, किंतु शंकरदव ने सीता को उत्तर-बाण्ड मे अत्युग्र दिखाया है। यहा सीता ने दीन होकर पूछा—क्या मुझे शांतिरिक् सौ दय की दृष्टि से हीन देखा है किस कारण प्रभु मुझे उपक्षित कर जा रह हैं।

कमन अज्ञत मोक हीन देखिलाहा। कि कारणे मोक प्रभु उपेक्षिया याहा ॥ १८४१

सीता ने अपना तेज केवन इस रूप मे प्रकट किया है तुम्हारे छाड जाने पर मेरा जीवन निष्फल है या तो म कटार का आश्रय लूगी या विपणन कर लूगी।^२ प्रिय के सानिध्य म उहाने हिंस्र पशुप्रा के भय की भी परवा नहीं की। राम के साथ वन सौदय देखने की अभिलाषा से भी वे राम के साथ जाने का हठ करने लगी।

१ तुनिया गोमाती बीनो सीता परवासू। जमे जमे राम स्वामी तुमि हैवा शानु ॥

१—६४३।

२ तुमि एरि गले मार जीवन निष्फल। कटारत मर नुहि भुञ्जियो गरल ॥

—१८६२।

० लक्ष्मण से बालक समय अवश्य ही सीता उग्र हो गयी थी—तब शरीर बाध का है और मुह हर्षित था। तेरे मुग म प्रमत है और तेरा चित्त विष घट है। र चणाल भरत की घूस ग्रावर और चाटुवारिता कर राम के माथ आया है। स्वामी के विना प्राण दूँगी, किंतु पर पुण्य का चरण से भी नहीं छुँऊँगी। तू इतर होकर गरी कामना करता है—३१०७ १२। गीता के उग्र प्रतिग्रत की प्रतिक्रिया स्वरूप ही य वचन उमाद प्रस्न अवस्था म वह गय है अथवा यही गीता रावण को घमवाकर कहती है कि लक्ष्मण के बाणा की चाट से तू प्राण त्यागगा। अथाव्या जान पर भी उहान लक्ष्मण के प्रति मदभाव प्रकट कर कहा था—द्वर क प्रसाद से गभी आपत्तिया से उद्धार हा गयी— आपद नगिला म देवर प्रसाद । ६६५५।

० सीता ने रावण को गधा बतवाकर कहा था मिह का छाडकर तेरा भजन क्यों करू—गाधा भजिवो वेन मिहक गरिया।^१ तू ज्वनन्त अग्नि का वस्त्र म बाधना चाहता है—ज्वलन्त अग्नि बटा वस्त्रे बाधिनम।^२ उहान राम क प्रति अपनी दद निष्ठा प्रकट कर कहा मैं परपुण्य की छाया चरणा से भी नहीं छुँऊँगी— चरणे न चुडवा परपुण्य पर छाया।^३ मुझे काम भाव से देखन से तेरी आँखें भी न निक्ल पडी। राम की भार्या से लाघव-वचन बोलने से तेरी जीभ भी न गिमककर गिर गयी—

मोक काम भावे चाहते रावण, चक्षुषो बाज न भलो।

रामर भार्याक लाघव बोलते जिह्वायो खसि न गल ॥ ४१७६

राक्षसिया के मनाथ जान पर उहान रावण क ऐश्वर्य की उपग्रा कर कहा— रावण भने ही प्रलाक्य का राजा हा तथापि मैं उनकी छाया पर पर नहीं रखूगी— प्रलोक्यर राजा होवे यद्यपि रावण। तथापि छायात तार नेदिवो चरण। ४२१६

० कुलवधू सीता को वनप्रवाम क समय धीर पहनना नहीं आया था और वचारी राम का मुह दखन लगी थी। गगानीर पर लक्ष्मण द्वारा निमित्त तण शया पर राम के पाम बटन म वे लजा गयी थी। अशाक वन म द्रुद्र द्वारा परमान देने पर उनके तीन भाग कर दो भाग रामलक्ष्मण के नाम समर्पित कर तब उहान ग्र्ण किया था। रावण से बात करते समय वे पीठ दे लनी थीं।

रावणक लाजे भवे पिठि दिया, सीताये दिला उत्तर। ४१७३

हनुमान से भेंट हान पर उहान राम की कुशल क साथ ही उनके शयन स्नान और भोजन क विषय म भी जिनामा की—

सार करि क्या मोत कह हनुमत। मोहोर कि स्वामी राम कुगले आछन्त ॥

किमन शयन स्नान भोजन करत। किवा चिन्ता करि मोक प्रभु सुमिरत ॥^४

१ असमीया रामायण ३१६१।

२ वही, ३१५५।

३ वही, ३१६२।

४ वही ८२८२३।

सवा से वे हनुमान की पीठ पर जान के लिए तयार गयीं हुईं । मुझे सारा जगत सती मानता है । पर पुण्य का भ्रम बस छड़ें । यदि वही नि रावण हर कर ल ग्या तो मैं पराधीन स्त्री-जाति की हूँ जा कि स्वतंत्र नहीं है—

मद्द शान्ती कया हन जानय जगत । पर पुदपर भ्रम छद्मो धन मते ॥
मुलिब रावण यिटो भ्रानिलेव हरि । स्त्री जाति पराधीन नोह स्वतन्तरी ॥^१

अग्नि परीक्षा के समय सीता की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण है । उनके डोल का पर्दा हटा दिया गया डर के कारण सीता के तनू स भ्रामू भरने लगे । अलकार की रनभुन के साथ वे विरही और न दग्धती हुई और अपन शरीर को छिपाती हुई राम के पास पहुँची । ताज भय छाडकर स्वामी को अत्यधिक स्नेह स दखने लगी । उन्होंने अपने का शुद्ध जानकर धय धारण किया । चिरकान स देखने की अभिलाषा लेकर वे राम की ओर कटाक्ष स दरती हुईं एव और खडी रही ।^२

राम ने महाप्रोध प्रकट कर बटु-बचा कहे, सीता ने धीरे धीरे कहा— मैंने उत्तम कुत म त्रम लिया, पिता ने महत कुल म याह दिया । तुम मुझे तुच्छ नारी के समान देखते हा और नट की नारी के समान भ्रय का दे दना चाहत हा । पापिष्ठ रावण मुझे हर लाया । मैं पराधीन स्त्री जाति हूँ जो कि स्वतंत्र नहीं है ।^३ तुम जसी शका करने हो बसी नहीं हूँ । देवता धम और पृथ्वी को मैं साक्षी और प्रमाण कर कह रही हूँ ।

सुमि येन शडि क भ्रामि नरो डेन ठान ।

देव धम साक्षी हुइबा पथिवी प्रमाण ॥ ६४८४

सत्य ही पुरुष कितना कठोर हाता है वह पत्नी के एक दिन के भी गुणो का स्मरण नहीं करता एसा निदय हो जाता है । सीता का निम्न कथन कितना बेदना सिक्त है—

न मुमिरा मोर एक दिबतर गुण । निदय पुरुष जाति किना निदारुण । ६४८६

उत्तर-बाण शकरदेव ने लिखा है । शकरदेव ने पति-पतित्यक्ता अभागिनी नारी की व्यथा पहचानी है । उहाने बदली की सीता स साम्य रखत हुए भी उनकी प्रतिक्रिया एव उनके सात्विक राप का वणन किया है । सीता का यह नि सहाय

१ असमीया रामायण, ४३००१ ।

२ वही ६४६२।६४७२ ।

३ उत्तमकुलत भ्रामि जनम लभिला । महत कुलत मोक वापे त्रिहा दित । ६४८२
भ्रामाव न्तर नारी सम दन्विलाहा । नटर नटिनी यन भ्रानक विताहा ॥

पापिष्ठ रावण माव भ्रानितक हरि । त्रिरी जाति पराधीन नहीं स्वतन्तरी ॥

किन्तु नेजामय रूप पाठका को रला दता है। वे राम के प्रति अत्यधिक-वटु हो गयी हैं। उनकी वटुता विल्वुल स्वाभाविक है। ऐसा मार्मिक वणन ता वाल्मीकि अथवा अन्य पूर्वाचलीय रामकथाकार भी नहीं कर सके हैं।

लक्ष्मण ने जब उन्हें घोर वन में पहुँचा कर बताया कि व राम की आना से निर्वासिता हुई हैं, तो उन्होंने रोते हुए लक्ष्मण को सान्त्वना बघायी, किन्तु व स्वयं भी ता अकुला गयी—ऐसे घोर-वन म एक अचला नारी गर्भावस्था म कहा जाए, किस दिशा म जाए—

कौन दिशे यात्रों एवे न पात्रों उदिदग्ग । ६७१६

राम के भेजे हुए चार लोग सुपेण हनुमान, विभीषण और शत्रुघ्न सीता का वाल्मीकि आश्रम से लेने गये। सीता उनके साथ जान को तयार न हुई। अयाध्या जाकर सुख भोग की उनकी इच्छा नहीं रह गयी थी। वे वाली—अब मैं फिर यदि राघव की गहिणी कहलाऊँ तो मुझसे बढ कर निलज्ज कौन नारी हागी? मुझे मारन के लिए गर्भावस्था म त्याग कर अब राम किस साहस मे मुझे ग्रहण करेंगे। दुजन के कहन से उन्होंने मुझे निकाल दिया, मैं ऐसे स्वामी राम को अपना यम समझती हूँ।^१

श्रुति वाल्मीकि के वचना का उल्लघन न कर सकी। उनके कहन स सीता लाज और अपमान से सकुचित होती हुई उनके पीछे-पीछे सिर झुकाय और किसी और भी न देखते हुए चली। वाल्मीकि ने भरी सभा म कहा—मैं बाह उठा कर समाज म शपथ कर रहा हूँ, मैंने करोडो जन्मो म जो भी सत्कर्म किये तथा इस जन्म म जो भी तप धम किये हैं व सब नष्ट हो जाएँ यदि सीता दोषी हो।

वाल्मीकि की शपथ से राम सतुष्ट हुए किन्तु सीता का शोध न गया। शोध-अपमान से उनका चित्त स्थिर नहीं था—'कापे अपमाने आति चित्त नुहि थिर'^२ तभी वे कटु शब्द कह गयी—छन पूवक मुझे वन भेजा गम के दो पुत्रो को मारना चाहा, स्वामी के गुण-वणन करत समय मेरा शरीर जलता है। एस यम सदण राम का मुख मैं कसे दखू। दुजनो के कहने से मुझे वनवास लिया।^३

सीता न अगले जन्म म जनक, दशरथ, कौशल्या, भालू वन्दर और लक्ष्मणादि भाइयो को प्रमश पिता, श्वशुर, सास पुत्रतुल्य सहायक और दवर हान की कामना की साथ ही राम को पति-रूप म पान की भी कामना की। पाताल प्रवेश के पूव राम के प्रति शाक-माह से भर कर सीता न राम की तीन बार परित्रमा की, उनके चरणो की धूलि मस्तक पर मलकर कहा—दु खी हृदय स मैंने जो बुद्ध कहा उसके लिए

१ असमीया रामायण, ६६६४ ६।

२ वही ७०७४।

३ वही, ७०५६।७०६० ६२।६६।

मुझे क्षमा करता । तू मेरा दुर्भाग ही है कि तू गेह चरने में मुझसे चरने की सेवा न कर गयी ।

हृदय भरन वि चित्त बुझियो ह सोय क्षमा सामान ॥

तोमार चरण भविष्य म पाहयो मारे मे कर्म बिलान ॥ ७०६३ ॥

धारा गंगा तुम का भयना न करे का उदर नया क्षत्री दान देकर तुम फिर ली ही है का धर्मोत्तम पानन कर दुर्गिणी गीता पाता न पानन कर लयी ।

० जयत प्रथम म धर्मगीता-रघुन गीता का मी (७०६३) कटा है कि-तुम चरने गीता क मातर न्य का प्रभार कि पाता ही भयन का मभी न है ।

बगला की सीता ०-ग घब की गीता का परिश्रम निराद क समय न ही पात हाः मया था । उदर मा म राम क प्रति पत्र भाव का उदर रामकाण्ड की प्रथा क समय ही न्या जाता है जबकि गीता क परिश्रम स्वयं राम उ मी है म हाथ पकक उता है गीता बुझियो बखारन मना करी है कि हाथ मरी है । उदर भय है कि पति का हाथ करी उदर म पर नया राम ॥ ७०६३ ॥

राम क बचसंग का समापन जात कर माता । माय पता का अनुग्रह कर कहा—सामा रिता स्त्रीनाहर धार तां गति न्यामी क बिना स्त्री की माय गति नहीं है । प्राणाय धरन क्या का जाण नगी माय पनगा । तुम्हारे मुग को न्य कर धन क माटा तुम का भी मुभ अनुभर न । हाण । राम उ माय माता स्त्रीनार नहीं लिया । तब गीता बुझियो हातर धारी—पति हातर विबोध की न्या बाना हा । पिता न क्या मग का मुभ लिया । जा धपरी स्त्री की न्या गरी कर मना उस कौन मगा धीर पुण्य है जा धीर न ।

पण्डित हृदय बल निर्व्योधर प्राय । जन हन जो पिता दिले प्रामाय ॥

निज नारी राखिते य करे भय मने । देख तारे धीर बले कौन धीर जने ॥ ७०१०६ ॥

अनुग्रहा स वात करन समय उहाने दूर्वात्त श्याम राम का ही धपनी समस्त सम्पत्ति वतात हुए उनस आशीर्वात् मांगा था कि दूरी राम म मरी गति रट । प०१३३ ।

० यहाँ भी सीता ने लक्ष्मण को मिर पीठ पर गाती दन हुए कट-वचन यह हैं— 'सीतेला भाई कभी अपना नहीं हाता । लगता है तुम्हारा मन मुझ म है । भरत ने राय छोन लिया तुम नारी न लो । भरत ने साथ तुम्हारी माँठगाँठ है । माय-मुष्पा की धार यदि मरा मन गया तो पन म कटाग मारकर प्राण द दूगी ।' प्रोध के कारण ही

१ वमानय भाइ कभु नाइ त आपन । प्रामा प्रति लक्ष्मण तोमार बुझि गत ॥

भरत नइल राज्य तुमि लह नारी । भरतेर सने तज आछे सारि भारी ॥

अपर पुरुषे यदि याय मम मन । गलाय काटारि दिया त्यजिब जीवन ॥ १५० ॥

सीता ने ऐसा कहा था। रावण के सत्य रूप का दर्शन कर उठाने लक्ष्मण के विक्रम और अगाध विश्वास प्रकट कर पश्चात्ताप भी किया है कि हाय मैंने लक्ष्मण को क्या बंदा किया ?

० रावण का दुराचारी, पापिष्ठ और दुज्जन कहकर उठाने डाटा था। रावण द्वारा परा पर गिम्बर अनुनय करन पर उठाने स्पष्ट कह दिया था— मैं अधार्मिक नहीं हूँ, राम की पत्नी हूँ। मैं जनकराज की कन्या कुलनारी हूँ। राम मेरे प्राणनाथ हूँ, राम मेरे देवता हूँ। राम का छाड़ कर सीता और किसी का नहीं जानती।—

अधार्मिको नहिं आदि रामेर सुदरी । जनक राजार कन्या आदि कुलनारी ॥

—प० २२६

राम प्राणनाथ मोर राम से देवता । राम बिना अय जने जाहि जान सीता ॥

—प० २२७

० राम की यह कुलनारी जिसे राम राज्यलक्ष्मी^१ मानत थे राम के विरह में अस्थिचम-सार रह गयी थी। खर स युद्ध में आहत राम के घावा का देखकर उसके नना स भर भर आसू बहन लग थ। तब उसन कवेयी के अनय का स्मरण-मात्र किया था, उसक प्रति कोई दुभाव प्रकट नहीं किया था। रावण द्वारा अपहृता हाकर समुद्र पार करते समय यह भीरु बधू समुद्र का विस्तार देखकर मूर्च्छित हो गयी थी। इन्द्र द्वारा भेजे गय परमान्न का तब ग्रहण किया जब भारतीय-पत्नी की प्रथा के अनुसार राम का भाग लगा दिया। रावण का देखकर ही सीता अपन मन वस्त्रा से शरीर का छिपान लग जाती थी।

० पवित्रत में तजोमयी सीता अग्नि-परीक्षा के समय मध्यकालीन छुईमुई नारी के समान ही आती हैं। राम द्वारा उपेक्षित होने पर उठाने कटुता प्रकट नहीं की। अपनी पवित्रता की सफाई का— प्रभु मेरे स्वभाव को अच्छी प्रकार जानत हो, फिर जानबूझ कर मेरी दुर्गति क्या करन हो। मैं बाल्यकाल में खलत समय में पुरुष-शिगुआ का स्पश नहीं करता थी। मैं दुष्टा नारी नहा हूँ जा दूमर का दान कर दो। सभा के मध्य में इतना अपमान क्या करत हो।

भाल मते जा प्रभु आभार प्रकृति । जानिया शुनिया केन करिछ दुर्गति ॥

बाल्यकाले खलिताम बालक मिलाते । स्पश नाहि करिताम पुरुष द्वाप्रोयाते ॥

दुष्टा नारी नहिं आदि परे कर दान । सभा विद्यमाने कर एत अपमान ॥^२

यदि यही करना था तो हनुमान से पहले ही कहला दिया होता, तो मैं प्राण त्याग दती।^३ राम के प्रति पूण भक्ति का भाव रखकर सीता ने राम की सात बार

१ बंगला रामायण, पृष्ठ १५८ ।

२ वही, पृ० ४४० ४४१ ।

और अग्नि की तीन बार परिश्रमा की और पिता पर बठ गयी। अग्नि ने उट्ट राम को मीपते हुए कहा—आज सती गीता का स्पश कर मरा जीवा सफल हा गया ।^१

बेचारी भाली सीता लक्ष्मण के साथ बन भजी गयी। माग व अशपुत्र देखकर के राम और कौशल्या की कुशल के लिए चिंतित हो उठी थी। आसू बहात लक्ष्मण से सम्पूर्ण समाचार जान कर भी निरपराधिनी सीता ने जन्म-जमानत म राम को ही पति रूप म प्राप्त करने की कामना की ।^२

उनके दो पुत्रा का मुद्ध राम-स य रो हो रहा था सीता को यह जाल न था। सीता ने माता, पतिव्रता और क्षत्राणी के गुणा का एक साथ परिचय दन हुए अपन पुत्रो के प्रति मंगल कामना की — यदि मैं काय मनो वाक्य गती हाऊ तो तुम मुद्ध म अप्रतिहत होओ ।^३

वस्तुस्थिति का परिचय पाकर सीता मणिहारा भुजगिनी के समान दौड पडी थी उहे चिन्ता थी कि अपने ही पुत्रो स ग्राहन प्रभु का स्पश कुत्ते और सियार न करने वाले । उहाने सिर घोटकर अपन पुत्रा का धिक्कारा ।^४

बार बार परीक्षा देने के लिए बुलाय जान स सीता को क्षाम हुआ उहान कहा—आज स तुम्हारा राजा दु ख दूर हा जाएगा। अब तुम जानकी का मुल नही देख सकोगे। निरंतर मुझे अपयश दे रह हो, बार बार सभा म परीक्षा देने के लिए बुलाते हा ।

सीता का क्षोभ है किंतु असभीया० के उत्तरकाण्ड-लेखक शकरदेव की सीता की कटुता उनम नही है। वे जन्म ज म म राम को ही पति रूप म प्राप्त करने की कामना लकर तथा अय किसी जन्म म एमी छीछालेदर न करन का अनुरोध कर राम की आर दलती हुई पाताल म समा गया उस समय उहोन दोना शिशुआ की आर भी नही दला—

जन्मे जन्मे प्रभु मोर तुम ह्यो पति । आर कौन जन्मे मोर करो ना दुगति ॥
नाहि चाहिलेन सीता उभय छाओपाले । श्रीरामे निरखिया प्रवशे पातले ॥^५

बगाली-लेखक न सीता का लक्ष्मी का भवतार माना है। किंतु स्वय सीता

१ आज्ञि हैत राम मार सफल जीवन । करिताम आज्ञि सनी सीता परशन ॥ प० ४४२ ।

२ राम हन स्वामी हुअक जन्म जमानतर ॥ प० ५२६ ।

३ काय मनो वाक्य यदि धामि हइ सती । तो सबार बुद्धे वारो नाहि अव्याहति ॥ प० ५५६ ।

४ व० रा०, प० ५६५ ६६ ।

५ वही प० ५७३ ।

अपनी शक्ति में अपरिचित हैं। उनमें मानस की सीता जमी अलौकिकता नहीं है। उन्हें साधारण मानवी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परगुणम प्रदत्त धनु का चढ़ाने समय के राम से प्रसन नहीं है। उह भय है इय धनुष के चतान से राम को और एक नारी न मिल जाए। सीता का मौनिया उह हाता है। उडिया की सीता का भी यही उह हाता है। बेंगला की सीता मध्यकालीन उच्च जमींदार की कुलीना कया जसी प्रतीत हाती ह।

उडिया^० की सीता—अथ पूवाचलीय रामायणा की सीता के समान इस सीता के समक्ष भी वे परिस्थितिया आयी हैं, जहा उहान अपनी तास्विता का परिचय देकर कुछ कटु-वचन कह ह। राम के प्रति कटु-वचन का कुछ समयिन किया गया है। उडिया की सीता में कुछ मौलिकता और यथाथता भी है। उनका पत्नी-रूप विशेषत पठनीय है।

अरम्भ में सीता न स्वयम्बर के समय मन ही मन ब्रह्मा से जा विनय की है उसमें वे मही नारी प्रतीत नहीं हाती। वे कहती हैं— ब्रह्मा, मुझे गिराण न करना। मर युवा-सन न बहुत दुःख भोगा ह।^१ बंगला सीता के समान उह भी उस समय सीतिया उह हुआ है जब राम परगुराम के दिव्य हुए धनुष पर प्रत्यचा चढ़ाते हैं।^२ उनके चरित्र में साधारण नारीत्व भी देखा जाता है। वन पथ पर चलते चलते वे शबर-जाति की स्त्रिया से बात करन लगती हैं और राम लक्ष्मण बहुत आग निकल जाते हैं। नारी-मुग्ध एसी मनावृत्ति दिग्गम के लिए राम उह गन्त हैं।^३

अथ स्थान पर सीता लज्जाशीला, चतुर पत्नी कुलधरू कुशल गहिणी और दृढ़ पतिव्रता के रूप में देखा जाता है।

उनमें लज्जा भाव था। धनुषम के पश्चात् राम की वधू हा जान पर वे अपने पिता के सामने लजा गयी था— पिता कु दक्षिण सीता लाज लाज हाइ।^४ रावण को मयामी जान कर वे उडिया में दिव्य कर लजा लजा कर वाली थी—मर स्वामी घर में नहीं आचना पूजा करनी।^५

राजा नाग यौवन ढल जान पर अपनी ज्यष्ठा गनिया की उपशमा कर नयी नवेली रावकुमारिया का ग्रहण करन रहते थ। चतुर सीता न अपने क्षणिक यौवन और पुष्प की चंचल मनावृत्ति से भलीभाँति परिचित हाकर मधुशय्या के दिन राम से प्रतिना करा ती सी कि वे एकपत्नी जन पालन करेंग।^६

१ उडिया रामायण, १ १५१।

२ वही, १ २१५।

३ वही, २ ५५।

४ वही १ १५५।

५ वही, ३ २८।

६ वही, १ २०३।

सीता अपने को राम की ज-ज-मातर का ज्ञानी मानती थी— ज-ज-मातर मु झटई तोर दासी।^१ वे राम के बिना एक क्षण क त्रिए नहीं रह सकती थी। राम क भगा के लिए वे अपने को छाया क समान मानती थी।

मुहूर्त्तक निमित्तक रहि ये न पाइ । ए सुम्हर धरुतर मु होइ थाइ छाइ ॥ २४०

राम का वनवास सुनकर साध्वी गीता साथ जात का तयार हुई। उन्होंने उपयुक्त वचनों के साथ ही कहा—जिस दिन तुमन शिवधनु भग किया उमी दिन स तुम मेरे प्राणा को आकृष्ट कर मेरे हृदय म बस हा।^२ राम न वन का कष्टा का वणन कर उह छोड जाना चाहा तो उहान तडपकर कहा— पिता न शुभ तुम्हें समर्पित किया है मैं ज-ज-म-म तुम्हार चरणा की दासी हूँ मैं किसका मुह दतकर रहूँगी। भली प्रकार जान लो, मैं निश्चय ही प्राण द दूँगी।^३

वन के मध्य वे आदश गृहिणी देखी जाती हैं। सीता रसोई बनाकर और राम को स्नेहपूर्वक खिलाकर उन्हीं की जूठी पत्तल म खाती था। व राम क चरण दवाया करती—सीता श्रीरामद्वार य चार्पाति चरण।^४ हाथी-द्वारा ताडी गयी लकडिया को ब-य लता से बांधकर नाव बनायी गयी, उसम बठी तो डर गयी राम न सहारा द कर गाद म बिठाया। वट वृक्ष के नीचे स्थित होकर भीरु कुलवधू सीता न मंगल कामनाए की हैं। सीता ने वर मांगा— मेरे स्वामी त्रिभुवन के राजा हा। मैं कभी विधवा न होऊ सदा रूपवती रहूँ। उहोन दशरथ, जनक और अयोध्या के कल्याण की कामना की। राम सुन-सुन कर हस दिय।^५ चित्रकूट म राम की भीरु प्रिया न अनक केलिया से उह प्रसन किया। राम के साथ जल म छीटे फककर उहाने जल थ्रीडा की, फिर खिलखिलाकर व बाहर निकल कर गेरु की शिला पर आ बठी। भीगी साडी के स्पश स भागी हुई गरु स राम न उनके माथे पर बिन्दी लगा दी। सामन बदर का देख सीता डरकर राम स लपट गयी और गरु राम के भ्रगो म राग गयी। दोना हस पडे।

०उडिया की सीता न भी लक्ष्मण पर स-देह किया था— तुम मुझे भरत की गृहिणी बनाने क लिए आय हा और कपट पूर्वक नियम का पालन कर रह हा। तुम चडाल और कुटिल हो।

०रावण का प्रस्ताव सुनकर तेजस्विनी पतिव्रता सीता पहल तो डरकर काप गयी, फिर बडककर बोली—सिंह की पत्नी को शृंगाल नहीं हर सकता तू भाग जा।

१ उडिया रामायण, १ २०४।

२ वही, २४०।

३ वही २४१।

४ वही २५८ और ३ २१।

५ वही, २५७।

रे चण्डाल, पुरुष हीन घर में आकर तू असस्कार वचन बोल रहा है। राम के बाण से तेरी मृत्यु होगी—

पुरुष नाहिं मोहर घरे तु पंगिलु ।

असस्कार बचन कहिलु कहू मोते । आज रामचन्द्र बाणें मरिबु नियते । ३।४१

हनुमान ने विरहिणी सीता को राम-नाम की माला जपने देखा। वे कपाल पर दोना हाथ रखकर दृष्टि नीची किये हती। उन बिम्बोष्ठी सीता का मुख दुःख से सूख गया था।^१

हनुमान ने सीता का पीठ पर बिठाकर उद्धार करने का प्रस्ताव किया था। मानिनी सीता न निम्न कारणों से यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया—१ इससे रावण जीना रहगा और स्वामी की प्रतिष्ठा पूरी नहीं होगी, २ वह चुरा लाया, तुम भी चुराओगे (यह अनैतिक है), ३ तुम छोट हो। हनुमान ने अपना बड़ा रूप दिखाया, तब सीता न कहा, ४ जिस समय तुम लेकर चलोगे राक्षस पीछा करेंगे ५ ममूद्र देखकर मैं डर जाऊँगी, ६ पर-पुरुष का स्पर्श नहीं कर सकती तब विवशता थी रावण बलात् हर लाया था।^२

अग्नि परीक्षा के समय राम ने सीता से वही व्यवहार किया जो वाल्मीकि के राम ने किया। वह उग्रता नहीं है किन्तु वचन वही हैं। सीता ने भी कहा—मुझे नट-नारी समझ कर बाल रहे हो। मैं दाना कुला में पवित्र हूँ। लक्ष्मण ने चिता तैयार कर दी व अपने चरित्र की दुहाई देकर घघकती अग्नि में इस प्रकार प्रवेश कर गयी जैसे यह पानी है।^३

वन में अकेला छाड़न पर सीता ने विलाप तो किया किन्तु परिवार के सभी लोग भी चिता में ही। लक्ष्मण से कहा राम के नित्यकर्म ठीक से करा देना।^४

अश्रम से अयोध्या लौटते समय व हाथ जोड़े हुए एवं अभिमान से सिर झुकाय हुए आयी।

करपत्र योद्धि ये आसद् देवी सती । अभिमान भरे ये अर्धद्वि मुल्य पोति । ७ १७८

उहान अपमान न सहकर तथा अपना जीवन निस्सार समझकर कहा—
'श्री राम का छाड़कर यदि मेरा मन और किसी में स्थिर हो तो हूँ पृथ्वी तुम शीघ्र

१ स्फटिकर जपामालि गोष्टि धे नथाइ । सबदा तहि रे तोर नाम बु जपइ ।
कपानरे बनि हस्त मदनीकि दृष्टि । दु मेण मुख गुण्याइ अछि बिम्ब ओष्ठी ॥

२ उचिया गमायण ५।२४ ।

३ वही, ६ ३११ ।

४ वही, ७ ११७ ११८ ।

विदोष हो जाओ। 'ग गगार वा तु ग गी पा गी है। दाता क्यवर रानी राम का मुग त देगी दुर् रा गी।'

उडिया रामायण की गीता का भी गगता का घनता गानार जगता गता गता गया है किन्तु गीता मय याग ता गती कि थ गता माता है।

प्रलोक्षर टापुराणी जगतर छाड । ० ६३

परम लक्ष्मी ए जगज्जनदुर माता । ७ १८५

उडिया रामायण लगव न दयताघा व रिगट परिवार म गीता का हिन्दू मयुक्त परिवार की आन्त गहिणी व रूप म भी चित्रित किया है।

मातल की सीता ०गमृत-नाटयकारा व अनुमाग तुलसीदास ने भी गीता का पूव राग लिखाया है। प्रण का पूण करन वान व्यकि स ही गीता का रिवाह हो सकता था अतएव सीता का पूवराग मर्यांग की दष्टि म अनुचित था किन्तु तुलसी के समय तक राम और गीता व सम्बध म अन्तारवाद वाली धारणा बढभूत हो चुकी थी अतएव विवाह के पूव का आनपण प्रीति पुरानन^१ के कारण था। यह दृष्टिकाण सामने रखने पर फिर हम गीता के पवित्र प्रेयसी रूप के ही दशन करत हैं। प्रेयसी रूप म भी उहाने कहां शील मकाध का परित्याग नहा किया। स्वयवर-स्यत्र पर माला लिए हुए सीता के भाव सधप का बडा हा मनाग्म चित्रण हुआ है।

०कुलवधू के शील और उज्जगुणा स मुक्त सीता की अत्यत पवित्र मूर्ति तुलसी ने गडी है। राम के ऊपर आन वानी विपत्ति को नात कर के पाकुल होकर सास के पाम दौडी गयी। मयादा वण व सास के समक्ष बुध्द कह सकती नही। व सास के चरणो म प्रणाम कर मिर भुकाकर बठ गयी। नमित मुख सीता अनेक प्रकार की चित्ताए करती हुई अपन चरण नखा स वरती कुरेदन लगी। उम समय उनके नूपुर मधुर घ्वनि कर रह्द थे।^२ राम उह यहाँ छाड जाएगे गेसा साचकर उनक नत्रा म पानी भर आया व निरुत्तर हो गयी। विपत्ति के समय मर्यांग नहा रहती। सीता ने मास के पर छूकर अविनय के त्रिण क्षमा मागकर ही राम स अनुराध किया कि वे उह अपने साथ ल चलें।

०गीतमयी वृत्तधू के उाके गुण व गाय ही पतिव्रता का गुण भी जुग हुआ है। उहोने राम के माथ अपन नम्बध की स्पष्ट घोपणा इन शदा म की—

१ श्री रामतृ मन यत्र आन मार थात् । दुश्मण्ड हाद फाटि याड वेग मही ।

सठि न पारइ मुहि ए ससाग्ग दु म । वान्ति वइन्ही न चाहि राममुय ॥

—७ १८० ।

२ प्रीति पुरानन नल १ कोई—१ २२८ ८ ।

३ मानम २ ५७ १ ५ ।

जिय बिनु देह नदी यिनु बारी । तसिअ नाथ पुछ्य बिनु नारी । २ ६४ ७

उन्होंने राम से कहा था—क्षण क्षण मे आपके चरणवमन देखकर मुझे माग म बकावट नही होगी । मैं आपके पर धोकर पडा की छाया मे बैठकर आप पर पला ऋता करूंगी । पत्नीने की वूदा से शोभिन आपके श्याम शरीर को देखकर दु ख के लिए मुझे अबकास ही कहा मिलेगा ।^१ कहीं भी राम के प्रति कोप या अभिमान नही दिखायी पटता ।

पति के प्रति सीता के मन मे इतना अधिक पूज्य भाव था कि माग मे चलते ममय वे राम के चरण चिह्ना तक पर भी अपने पर नही पडने देती थी ।^२

पणकुटी म प्रियतम के नाथ रहत समय मुग्ध चकारी के समान वे पति का मुखचन्द्र न्यकर मुख का अनुभव करती थी । वन के जीव-जन्तुओ को उन्हाने अपना कुटुम्बी बना लिया था ।^३

वन मे लौट आन पर भी सीता मदा अनुकूल रही । घर म अनक दाम-दासिया के होत हुए भी वे राम की सेवा स्वय ही किया करती थी । राम के माय ही सामा की भी सेवा वे स्वय ही करती थी ।^४

सीता के पतिव्रत म तेजस्विना भी थी । रावण का अपने भयावह सत्य रूप म देखकर पहले तो वे डर गयी कि तु तुरन्त ही धय धारण कर आज पूण वाणी म बोली—खडा रह दुष्ट, मेरे स्वामी आ गय—

आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढा । ३ २७ १४

उसके बार-बार प्रलोभन न और घमकाने पर भी सीता विचरित नही हुइ । तिनके की ओट स ही वे रावण म बात करनी थी । उन्हाने अपना निश्चय रावण पर प्रकट कर लिया था—या तो इम कठ पर प्रभु की श्यामल चाह हागी या तरी भयकर चद्रहास तलवार ।

अपरिचित हनुमान जब निकट आय, ता सीता पीठ दवर बठ गयी थी । कुल बधु मुलभ उनकी यह भीमता भी बडी प्रिय ता लगती ही है माय ही पतिव्रत के दढभाव को भी प्रकट करती है ।^५

१ माहि मग चरत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी । २ ६६-१ ।

पाय परगारि बठि नर छाही । करिहउ बाउ मुनि मन माही । ० ६६ ३ ।

श्रम वन महित स्याम तनु नेत्रे । कहें दुख भमउ प्रान पति पत्र । ० ६६-४ ।

२ प्रभु पद रग बीच बिच सीता । घरति चरन मग चरनि समीता । ० १२० ५ ।

३ मानस, ० ३६-१, २ ५ ।

४ वही, ७ २३ ३—८ ।

५ वही, ५ १२ ८ ।

अग्नि-परीक्षा के समय उहाँन आत्म विश्वास से भरी ओजस्वी वाणी में कहा था—

जौ मन बच जम मम उर माहीं । तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥
तो कृसानु सब क गति जाना । मो बहूँ होउ धीखड समाना ॥

६ १०८ ७,८

परिवार के अग्र्य लोगों के प्रति भी सीता का सदभाव देखा जाता है। भरत की चिन्ता के कारण दुःस्वप्न देखकर वे व्याकुल हाती है। लक्ष्मण को तो उनसे स्नेह की छाया में इतना सुख मिला था कि उन्हें कभी स्वप्न में भी अपन माता पिता आदि की सुधि नहीं आयी। चित्रकूट में अपन पिता और माता को दग्ध कर इतनी अधिक प्रेमविह्वल हो गयी कि अपन को सभाल नहीं सकी थी।^१ जनक ने भी गदगद स्वर से कहा था— पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ।^२ सीता अपनी माता से मिलने उनके शिविर में गयी। रात्रिकाल में वे गम्भीर धम सकट में पड़ गयी। सासो की सेवा छोड़ कर वे माता के पास कसे रह। पिता माता पुत्री के शील सकोच से बहुत ही प्रसन्न हुए थे।

राजा दशरथ ने जानकी को बहू न समझकर पुत्री माना था। राम से भी अधिक चिन्ता उन्हें बहू की थी। मरने मरने के यही चाहते रह कि सीता तो कम से कम लौट आती।

तुलसीदास ने राम की तुलना में सीता के चरित्र में सहज मानवीय-गुणा का चित्रण किया है। सीता मानवी रूप में प्रस्तुत हुई हैं लक्ष्मी या आद्याशक्ति होने का उन्हें स्वयं ही ज्ञान नहीं रहता। फिर भी एक-दो ऐसे स्थान आये हैं जिनके कारण उनका महज मानवीय रूप उभर नहीं पाता—

१ चित्रकूट में वे अनक रूप धारण कर साता की सेवा करती हैं^३, यहाँ सीता की अतीक्ष्णता प्रकट है।

२ राम की आज्ञा में सीता अग्नि में समा गयी थी और जिस सीता का हरण हुआ वह मायासीता थी। इन प्रसंग में त्रियागिनी सीता का चरित्र उभर नहीं पाता। वह लक्ष्मण को मारीच की पुकार पर मम वचन मानकर रह जाती है। मम वचन क्या था नहीं बताया गया। अग्नि-परीक्षा की अग्र्य रामायणा जमी स्थिति भी नहीं था पानी।

{ २ } तुलसी ने सीता-परित्याग और पानात्र प्रवण वाली घटनाएँ नहीं लिखाया

१ मानस ० २८६ ।

२ बही - ८६ - ।

३ माय गगु प्रति बय बताइ । मान्द करइ गरिम भववाई ।

मया न मरमु राम बिनु का^३ । माया नव निय माया माहूँ । २ ०५१ ० ३ ।

जिसमें भी सीता की व्यथा और उनके धर्म-त्याग सहनशीलता आदि गुणा पर प्रकाश नहीं पड़ सका। यद्यपि यह प्रमग प्रक्षिप्त माना जाता है किन्तु तुलसी ने उसे प्रक्षिप्त नहीं माना है, क्योंकि उनके अर्थ ग्रन्थों में सकेत रूप में इस घटना का वर्णन है।

गंगा तो केवल तीन स्थानों हरिद्वार, प्रयाग और गंगासागर में पवित्र मानी जाती है, किन्तु सीता की कीर्ति ने अनेक मत समाज-रूपी तीर्थ बना दिये हैं—

जित्ति सुरसरि कीरति सरि तोरी। गवन्तु कीह बिधि अड करोरी॥

गंग ध्रुवनि थल तीनि बढेरे। एहि किए साधु समाज धनेरे॥

—२२८६-३४

जनक का यह कथन सबका मत्स्य है। जानकी गंगा से भी बढ़ कर पवित्र है।

कौशल्या

• वात्सल्यमयी राजमहिषी कौशल्या का चरित्र अत्यन्त गरिमामय है। यह स्वाभाविक ही होता है कि राजा लोग अपनी ज्यष्ठा-पत्नी का सम्मान करने हुए भी नव-युवती छोटी रानियों की ओर अधिक आकृष्ट रहते हैं। लज्जा विभ्रम से युक्त उद्दाम प्रणय की उष्मा उन्हें अपनी प्रौढा सगिनी में वहाँ मिल सकती है। राजा क्वेयी में अनुरक्त हो गये और अपने को व्रत उपवासा में व्यस्त करती हुई गौरागी कौशल्या दिनदिन मूलकर दुबल होने लगी। उनके जीवनाधार राम को अभिषिक्त किया जाएगा इस समाचार से उन्हें अनीब हृष हुआ किन्तु क्वेयी के पडयत्र के कारण राम के वन प्रवास का उन्हें समाचार मिला तो वे साल-बृष की सूखी डाली की तरह घरती पर गिरकर मूर्च्छित हो गयीं। उनके धूलिलुठित शरीर को उठाकर राम ने गाद में भर लिया था। जिस प्रकार दुबल गी बछड़े के पीछे जाती है उसी तरह वे राम के पीछे-पीछे वन जाने को तयार हो गयी थीं।

लक्ष्मण हाथी की तरह फुमकारकर घनुप छू-छूकर राम की महायता की प्रतिष्ठा कर रहे थे। कौशल्या ने अनुकूल अवसर देखकर राम का उक्मान की चेष्टा की। कौशल्या का मातृत्व एवम स्वाभाविक है, उनकी गरिमा में वही भी कभी नहीं आती। कौन माता चाहेगी कि उसका एकलौता और निर्दोष बेटा चौदह वर्ष तक घोर जगला में मारा मारा फिरता रहे। इसके लिए पति के प्रति कटु शब्दों का प्रयोग करने से भी कौशल्या का शौरव कम नहीं हुआ बल्कि उनका यह रूप वात्सल्य की उग्रता की प्रतिक्रिया ही प्रकट करता है।

उनमें मयम भी था। नारी प्रकार परिस्थितियों पर विचार कर उन्होंने जल में आचमन कर आर पवित्र होकर कहा— श्रव मैं तुमका नहीं राखूंगी जिस धम का तू पाल रहा है वही धम तरी रक्षा करे।'

सयम धारण करने से क्या होता है, व पुन पुत्र वियोग की कल्पना में विवन्

होकर विध्वंस होने लगी। रथ में बठे हुए राम को जाता देख दशरथ के साथ वे भी रथ के पीछे व्याकुल होकर दौड़ी थी।

भरत से भेंट के समय यदि उन्होंने कुछ बटु-वचन कह भी दिया तो यह भी उग्र-वात्सल्य की ही प्रतिक्रिया थी, अथवा आगे वे भरत की जिता करती प्रतीत होती हैं।

० पूर्वाचलीय तीना रामायणों में कौशल्या के इसी वात्सल्य एवं वात्सल्य के कारण ही उप्रता का वर्णन हुआ है।

० भास की कौशल्या की सबसे बड़ी विशेषता है उसका अद्भुत समय जिसे डा० माताप्रसाद गुप्त ने विवेक^१ कहा है। भास की कौशल्या वात्सल्य में किसी भी रामायण की कौशल्या से कम नहीं है किन्तु इसमें साथ ही वे विवेकमयी हैं। वे नहीं चाहती कि वे स्वयं उनका पुत्र और साथ ही पति कभी कृत्य हीनता का अनुभव करें। इसलिए उन्होंने विगी के प्रति भी बटु शब्द नहीं कहे।

० अक्षमोद्या रामायण में उपनिता कौशल्या पूजार्चना दिवायी गयी है। वे हाथ बांध गच्छि में बटा करती थी—घ्राष्टन दवर धर कृताञ्जलि करि।^२ वे मरल स्वभाव की थीं वे मंत्र का ध्यान रखती थी। उन्होंने राम से कहा था—भरत हृदय-नदन तुम युवराज हुए तो सभी ब्राह्मणों का पालन करना प्रजा को पुत्र के समान पालना सभी मानासों को भरत समान दखना।^३ बंधारों को जब सत्यस्थिति का पता चला तो वे मूर्च्छित हो गयी थीं।

० उन्होंने राम का समभावों का विचार से माँ बनी होती है। मरीदान माना या मुझे साथ ले जाता। म्यां नारा पराजित जिता का वचन तुम मत मानो वन न जा कर तम भरत पाग रहा।—१७३०।

० वात्सल्यमय कौशल्या कभी भी राम से राम की चिन्ता करने का विचार कभी नहीं करता। माता की रक्षा करना ही उनका धर्म था।

शन शून बाधु मोर स मण्डुमार । सीतार रातिव भावे बनर भितर ॥ १६८८

० अक्षय विपन्न न उन्हें समय मिल कर दिया और वे बार-बार मरत्य के प्रति कष्ट व्यक्त करती हैं। विपन्न बाल्य में राम प्रसन्न कर कर-वचन करने का विचार परमात्मा करना है। उन्होंने मरत्य से राम अक्षय में दुःख नम लज्जा का अनुभव नहीं करना है। मुझे पालित कर तम ले जाती का बाध-आपत्त किया

अक्षय बुराग्मा तामार नाति साज । माय विवि मापिताटा कक्योर बाय ॥ २१६

१ डॉ० माताप्रसाद गुप्त—अक्षयमय (१० म०) पृ० १००।

२ अक्ष० पृ० १५५०।

३ पृ० १७१९-१७।

मुमिता ने ममभाया कि स्वामी का निष्ठुर वचन नहीं बोलना चाहिए कौशल्या भी मान गयी और दशरथ ने पर पकड़कर क्षमा माँगी - क्षमियोक प्रभु बुनि चरणे घरिन ।^१ उहान स्वीकार कर लिया कि युव शाक के कारण उनका मन विमोहित हो चुका है इसीलिए प्रभु से उहान तुच्छ-वचन वाले -
 पुनर गोवत विमोहित मोर मन । प्रभुक बुलितो ताते लाघव बचन ॥ २१४०

किंतु अल्प क्षण पश्चात उनका शाकावेग फिर उमड़ता है और वे दशरथ के प्रति अत्यंत निष्ठुर-वचन बोलन लगती है -
 बढ की तरणी भाया ने विपय म सुना था । व सब बातें तुम म मिल गयी । असती का सेवन कर तुमन कौन फन पाया । केवल क्वेयी ही तुम्हारी दवी हो गयी उस कथ पर विठावर सारे राज्य म घूमना । तभी तुम्हारी शपथ पूरी होगी ।^२

स्वामी की मृत्यु पर भी वे समय खाकर क्वेयी पर बरम पड़ी थी—री पापिष्ठी तू न स्वामी को या लिया । तू नरककुण्ड म गिरेगी और तुझ कीडे खाएंगे ।^३

०व भरत और राम को एक शरीर मानती है ।^४ फिर भी ननिहाल स लौटे हुए भरत का व गात्र म लेकर रोती भी जानी है और कुननाशिनी का बटा बहकर बटु वचन भी बोलती हूँ—उठो बटा मुक्त राजा दूर करो । तुमने माँ के हाथो राज्य माँग लिया । राजा का मरवाया राम को बनवाग दिया । तुमन मुभस कहा होता तो राम न तुम्ह स्वय ही युवराज बना दिया होता ।^५ कौशल्या का यह आवेश क्षणिक था वास्तव म व भरत के गुदभाव को समझनी थी तभी उहाने भरत की शपथें मुनकर कहा था—तुम्हारी दारुण शपथें मुनकर मरा शरीर दग्ग हो रहा है । कौशल्या बोलत तोर जानो शुद्धभाव । दारुण शपत शूनि धोरे मोर गाव ॥ २३१४

०इम रामायण की कौशल्या अपन पीत्रा लव और कुश दाना को गल स लगा कर स्नेह द्रवित होकर वाली थी— मेर दोना पौन वन म पलरर बच हूण । अपनी

१ अम० रा०, २१३० ३६ ।
 २ यदर तरणी भाया लोवत गुनिल । सिमव सक्तो कथा तोमात मिलिन ॥

कौन पल पाग्ला तुमि असतीक सनि । क्वेयी तोमार मात्र भल मुम्य देवी ॥ —२१४० ।

—२१४५ ।

—२१४६ ।

३ ताहाक का घत लया कुरियो ाग्यत । तवे परिपूण हैव तोमार शपत ॥ २१४६ ।
 ४ अम० रा०, २२०२ ३ ।
 ५ वही २२०४ ।

५ वही २३०६ ६ ।

सुचरिता बहू सीता के कष्टों का स्मरण कर भी वे दुःखित होकर बोली थी—हरि हरि, बहू सीता तो कष्ट उठाने के लिए उत्पन्न हुई है। छ० ६६६१।

असमीया रामायण की कौशल्या बहुत कुछ वाल्मीकि की कौशल्या का ही अनुसरण करती है।

धमला० में कौशल्या अत्यधिक विषाद के कारण सयम हीना प्रतीत हो रही हैं। उन्होंने स्वयं ही कहा है—'जिस नारी का गुण सागर पुत्र बन जा रहा हो, वह कैसे धय धारण कर सकती है। भल ही वह राजा की उपेक्षिता हो गयी हो किन्तु उन्हें राजा की प्रथम पत्नी और महारानी होने का स्वाभिमान है। वे खीभकर बक्यो को चण्डाली कहती हैं।'

०माता कौशल्या ने तीन बातें यहाँ भी कही हैं—(१) स्त्री के वाक्य सुन कर जो पिता बन भेज र० हा उनकी बात मत सुना। (२) तुम भरत को राज्य दे कर एक वचा का पालन करो दूसरे का नहीं। (३) पिता से माता का पद बड़ा है। वह गम म धारण कर स्तन देकर पोषण करती है। एसी माँ की आना का उल्लघन तुम नहीं कर सकते। लक्षण क्या कह रहे हैं इस ओर भी उन्होंने संकेत किया है।
—प० १०४।

अत म वाल्मीकि की कौशल्या के अनुसार व भी सयम धारण कर देवतामा स मनाती हैं कि मेरे बच्चे का अष्टपाल आदि १४ वष तर बन म सुरक्षित रखें।
—प० १०५।

०भरत के माथ उनका व्यवहार पूर्ववर्ती-नयका के जसा ही है। कौशल्या ने पुत्र कटकर भरत को माथ म उठा लिया जाना क ही राने म दाना क शरीर भीग गया। कौशल्या न कहा - ककयी-पुत्र नम माँ-वत् मित्रकर राज्य करो। राम न किमका धन चुराया था किमकी नाती का अपहरण किया था? भरत पुत्र को किस दाय क कारण निर्वागित किया गया? धय मुझ भी दूरकर वाँटा दूर करा।
—प० १०७।

कौशल्या का आचरण यहाँ भी मान्य हा जाता है और व स्त्रीतर कर लती है कि गम का हृदय त्रिम प्रकार धम म तपर रहता है पुत्र तद्भाग हृदय भी उगी गरह है—

रामर हृदय धर्म धमन तपर । सोमार हृदय पुत्र एवइ सोतर ॥ प० १०७

०कौशल्या रामायण की कौशल्या का माधारण स्त्रिया जसा नीतिया डा म

१ सुगर माथ पुत्र मार या बन । म नाग कमन रागिर आर जीवत ॥
राजार प्रथम आग धामि मारागता । धर्यायी हृदय मार ककया मरिनी ॥

है। वे आरम्भ में सुमित्रा के दुभगा होने की कामना से क्वेयी का साथ देकर शकर की पूजा करती हैं। उन्होंने सुमित्रा को अपने चरु का अर्घाश इस शत पर दिया था कि उससे उत्पन्न पुत्र कौशल्या के पुत्र की सेवा करेगा।

कौशल्या का यह चरित्र शेष चरित्र से भेद नहीं खाता। आगे सुमित्रा के व्यवहार के प्रति भी उन्हें वही जगन नहीं हाती है। हाँ मकता है बँगला रामायण में इतना प्रारम्भिक अश वाद की जाट-ताड हो।

० उडिया रामायण में कौशल्या के चरित्र का बहुत कम विकास हुआ। कोई विशपता नहीं है। कौशल्या राम से कहती है— तू मरी बात मानकर वन की मत जा। राजा के तीन पुत्र (श्रीर) है। तू तो मेरा अकेला पुत्र है। तर बिना भरा कोई सहारा नहीं है। इस राजा से मुझे कोई प्रयाजन नहीं है। मैं अथ राज्य में जाकर भिक्षा माग कर रह लूगी।^१

० राजा के प्रति कटु शब्दों का विशेष प्रयोग नहीं हुआ। उडिया की कौशल्या में अथ पूर्वाचलीय रामायणों की कौशल्या की तरह न आवग है और न मानस की कौशल्या जसा विवेक। भरत को देखकर उन्होंने अवश्य ही पम्परानुसार कहा— शाक बंधो करते हो। तुम्हारे लिए यह आनंद का समय है निष्कटक होकर राज्य करो।^२ भरत शपथें देकर उग्र रूप से प्रदत्त कर उठे थे। कौशल्या बोली नहीं, वे कुछ कहती इसके पूर्व ही वमिष्ठादि आकर भरत को समझाने लग। किंतु कौशल्या का भरत के शुद्ध भाव का विश्वास रहा होगा। भरत के ननिहाल से लौटने के पूर्व ही उन्होंने कहा था— श्रीराम और भरत दोनों विलग नहीं हो सकते। पानी को पीटने से क्या वह दा भागों में बट सकता है—अर्थात् राम को भरत से अलग नहीं किया जा सकता।

पाणिनि पिटिले कि से बेनिभाग होइ। २ ३६

पुत्र को इगुदीफल के पिंड देता देखकर उन्होंने विलखकर इतना अवश्य कहा था—राम के आग तुमने प्रिया का बड़ा माना—

श्री राम ठाह तु प्रियाकु ये बड कलु ॥ २ ८७

० मानस की कौशल्या के सामने भी वही सभी परिस्थितियाँ और पात्र हैं। उनके भी हृदय में राम के प्रति अगाध वात्सल्य है, किन्तु किसी का भी लाछित करन का आवेश उनमें नहीं है। सबके एव समथ राम की माता होने का सफल गौरव उन्होंने पाया है।

इस अद्भुत समय का कारण राम के ब्रह्मत्व का उनका ज्ञान भी हाँ सकता

१ उडिया रामा०, २-३६।

२ वही, २ ६७।

है। पूवज म म वे शनरूपा की और राम को पुत्र रूप म पान क लिए उहाने तपस्या की थी। राम शिशुकाण्ड म ही कौशल्या को अपनी गौरीवकता का परिचय दे देते हैं। कृष्ण विषयक आख्यान के समान राम भी अपनी माता का विराट रूप क दशन कराने हैं। अवश्य ही आग एता कोई अरगर फिर नहीं आया। केवल एक और अवसर का छोकर। वनगमन का समाचार पान कर कौशल्या राम क चरणों से लिपट जाती है।^१ या ना अतिशयेन के कारण क एमा क गयी है अथवा सम्भवत उह ब्रह्म मान कर ही वे चरणा म निपटी है। बुद्ध हा एमा लिखाना ठीक प्रतीत नहीं होता।

●कौशल्या की बाणी गगाजल मी पवित्र बताया गयी है। वे अत्यन्त वात्सल्यमयी थी। अपन पुत्र क अभिषेक का समाचार पान कर उहाने अपन स्नेह की वर्षा किस प्रकार राम पर की यह खान ही बाम्य है।^२ किन्तु जब राम क मुह स दु रादायी समाचार गुना तो व वात्सल्य के भावस म आकर बुद्ध का बुद्ध बक नहा गयी उहान बट ही धय से बाम चिया। उट ट ग न हुआ हा एसी बात नहीं था। समाचार सुन कर ही व महमकर मूष गयी थी। सिंहनाद स नयभात मगी मी के स्तभित रह गयी थी। उनक नत्रा स मीमू भर र्थ शरीर काँप रहा था। व बुद्ध भी ता नहीं कह पा रही था। यदि बहना कि वन मन जाघा ता मयाग भग हानी घर भादया म विराध हाता किन्तु जा क तिल भी बग बहना^३

●एग व्यक्ति बान घाण हात है जा विपत्ति पान पर अपन मस्तिष्क का अनुचन ठीक रग मों। मय विपत्ति क टूट पान पर तथा अयन कष्ट का अनुभव हात पर कौशल्या अपन घा अपन एकमात्र पुत्र क बहना पर ध्यान न कर नाचा बहना है ता अय जना का। अय ता म नागय दशम्य रग और प्रजापत स है जाति राम का विषय मयन करन म अममय^४

राजु बत बहि दोह बत मोहि न तो बुल लेगु।

मुह बिनु भरतहि भूरतिहि प्रजति प्रचड बचमु ॥ ४ ११

●भय क मन की शानति का कौशल्या एमा मयागमी ताग ही ममम करता था। भयन का शानत ता क कारण ता मय मय अन्ध दृषा यदि वासीति का कौशल्या एगति अरन का बुद्ध क ता क भा मया म ता ताका ताप ताग था बानि कुल ता क उरगति हा ताका मय कितन का भा मामन घा मया था। मानग म कौशल्या क शान का घा मुय परिचय मित्रता है। आदम म आकर घनात्रार की मागे भयम विहाता क तिल किमा ति तेन पर र्थ पचना कय भा हा किन्तु

१ बत विधि विरति करन मयगातः । ३ १ ।

२ बत बत मुन बरति मया । नयन नर अजु पुनक्तिन दाता । २ ११ ३ ।

३ = तिल पुनि हूय मया । सदा अम रग पान मुगातः । २१ ४ ।

४ मय १ २३ — ६ पया २४ १—६ ।

विवेक नहीं है। दूमरी की भी भावनाया का परिचय ममादर होना ही चाहिए। मानम की कौशल्या भरत का देगन ही उनस मितो भगट पडती ह और म्मह 'ोक के आवेश म मूर्च्छित हा जाती है।^१ सरल स्वभाव की जननी कौशल्या न भरत का माद म पा कर एसा अनुभव किया था माना उह राम ही मित गय हा। भरत व आँसू पाछ कर तथा मीठे बचना द्वारा उहान भरत के मत्ताप की बहुत कुछ दूर करन की चेष्टा की थी।^२

कौशल्या को भरत की बहुत चिन्ता थी। राम का राज्य के स्थान पर उन वास मिला, ठीक है। उन्हें आत्र कप्ता का सामना करा पनेगा यह भी ठीक है। किन्तु राम अपने कतव्य का पातन कर रहे। इसका उह नतिक्रम जल ता है। निर्दोष भरत ता व्यय ही अनेक आर्थों क कारण हा गय। उह राज्य दिलान के प्रयास का फल हुआ मादया और भाभी का बनवास पिता की मृत्यु और गमस्त अयोध्या वासिया का शोक-पीडित हाता। इमानिए भरत की यथा पहचानार कौशल्या न गदगद स्वर स कहा था —

सतनु रामु सिय जाहुँ बन, भत परिनाम न पोचु ।

गहवरि हिय कह कौसिला मोहि भरत पर सोचु ॥ २ २८२

कौशल्या न अपने एकलोन बट राम की कभी शपथ नहीं ली थी काइ भी माता नहीं लेगी किन्तु भरत की निर्दोषता तथा उाकी मदाशयता प्रकट करन क लिए कौशल्या ने ऐसा भी किया। जनक की पट्टमहिषी स चित्रकूट म वात्तानाप करते समय उहान गुड हृदय स भरत की प्रशमा की है —

राम सपय में कौहि १ काउ । सो फिर कहउ सखी सति भाऊ ॥

भरत नील गुन त्रिनय घडाई । भायप भगति भरोम भवाई ॥

कहत सारदहु कर मत हीचे । सागर सोप जि जाहि उलीचे ॥^३

कौशल्या न विवेकमयी-न्यायशीला माता का भी परिचय दिया है। उहाने राम का धम-सकट म नहीं जाना वे उनके साथ जान का हठ भी नहीं करती। चित्र कूट म उहाने मन ही मन कष्ट सहकर भी यह तहा चाहा कि राम घ ताट कर कतव्य विमुख हा और यह भी नहीं साहा कि भरत शाक सतपन ही बने रहें इसलिए उहान जनक की रानी से कहा था नि राता स बहान लक्ष्मण का पीटावर भरत को बन में राम के साथ भज दें।^४ दशरथ से भी उहान कुछ भी नहीं कहा था। जिस

१ भरताहि देखि मातु उठि घाई । मुहछित अवनि परी भई आई । २-१६३ १ ।

२ सरल सुभाय माय हिय ताए । अति हित मनहुँ राम फिरि आए । २ १६४ १ ।
माता भरतु गोद बटाने । आँसु पोछि मूडु बचन उचारे । २ १६४ ४ ।

३ मालम २ २८२ २४ ।

४ वही, २ २८३ २ ।

समय राजा जन से बाहर पड़ी हुई मछली से छुपता रहे व कौशल्या व मधुर-वान उहाँ जल की छीटा जस गुणमय प्रतीत हा रह थ ।

सक्षप म तुलसी पी कौशल्या विवक गयमगीता अच्यन्त गुनीना एव एमा स्नेह-दयामयी गृहिणी हैं जि हैं अपने परिवार व एव एव ध्याति का ध्यान है और जिनका असीम निश्चयन-वात्म्य एव और पयाधन म बार बार उम उम घाना है ।

ककेयी

वाल्मीकि रामायण म ककेयी का स्वाभाविक वणन है । वह स्वभाव से आरा कामा सदाचरणी शोधना प्राप्तमानिनी थी ।^१ एव ता वह स्वयं कुटिल थी दूगरदशरथ ने दुराव छिपाव लिया । मथरा न दशरथ व इस छिद्र का लाभ उठाकर उस भडका दिया । वसे राम के अभिपेक निश्चय तक वह राम व प्रति ममनामयी दती जाती है भले ही यह ममता राम की विनयशीलता व ही कारण क्या न हा । वाल्मीकि रामायण म ककेयी क चरित्र के तीन अंग है - (१) अभिपेक निश्चय के पूव की ककेयी (२) मथरा द्वारा भडकायी गयी ककेयी और (३) स्तानि स गलती हुइ ककेयी ।

परवर्ती लेखका न ककेयी की कुटिलता का ढकन के लिए बहाना रोज हैं । असमीया रामायण को छोड कर शेष तीन भाषा रामायणा म भी एसा ही प्रयास है भरत जसे आदश पान की माता होने के कारण ही य प्रयास किये गय है । इनसा चरित्र की स्वाभाविकता नही रही है । पूर्वाचलीय रामायणा म ककेयी को डरपोक भी दिताया गया है । वह भरत या अनुघ्न का शोध देखकर भागती है । मानस म एसा वणन नही है ।

असमीया की ककेयी बहुत-बुद्ध वाल्मीकि की ककेयी के समान है । भरत उसके स्वभाव को इन शब्दा म बताते हैं—तप्त सुवर्णर वण निकारुण मति । कलहत प्रिया एहो प्रचण प्रभाव । २४८२ ।

अभिपेक के पूव ककेयी राम और दशरथ के प्रति उदार देखी गयी । उसने मथरा से कहा—राम भाई का पुत्र के समान दलेंगे । ज्यष्ठ पुत्र को राज्य घन काप देन म राजा दशरथ का मैं कोई दाप नही देखती । गुण मंदिर राम शुद्धमति है और व कौशल्या स भा अधिक मुभ म भक्ति रखते हैं । १५८० ८२ ।

ककेयी की कुटिलता का रूप वाल्मीकि रामायण के जसा नही है । यहाँ कवल एक विशेषता है । सभी रामायणा म ककेयी स्तानि स घुलती प्रतीत होती है, वसा यहाँ नहा है । रामादि क लौटन पर उस उनके लौटने का हृष या अपने किय पर

गानि न होकर विपाद होता है। मुह से मधुर बोलते हुए भी मन ही मन वह सोच-विचार कर रही है। वह सब के पीछे पीछे जा ता रही है किन्तु उसके दिल म छुगी है।

मनत विपाद बर भला ककेयीर । ६६०७

मुखत मधुर मने मने गुणि भ्राछे । हृदयत धुर चन्नि भला पाछे पाछे ॥ ६६०८

बेंगला रामायण म भी ककेयी ने राम, दशरथ और कौशल्या के प्रति अपना मदभाव व्यक्त कर कहा था— राम मुझे अनिश्चय गौरव प्रदान करते हैं। राम की बुराई करना उपयुक्त नहीं है। राम गुणसागर और विचार म पंडित हैं। पितराज्य ज्येष्ठपुत्र ही पा सकता है। राम भरत को स्वय ही राज्य द देंगे। बड़ी रानी भरा गौरव रखेंगी।^१

ककेयी राम के गुणों को दलदल तथा जनता पर उनके गुणों का प्रभाव जान कर लुप्त और माध ही शक्ति भी थी। वह मथरा पर पहले तो क्रुद्ध हुई और राम की प्रशंसा करने लगी किन्तु जब भविष्य का प्रवक्ता मय चित्र खींचा गया तो उमका कुटिल रूप उभर आया। उसे चिन्ता थी कि राम के मधुर वचनों से सभी सतुष्ट हैं। उस राम को राजा बन क्या भेजेंगे ?

सत्रे तुष्ट श्री रामेर मधुर बचने । हेन रामे केमने पाठावे राजा बने । प० ६७

या तो ककेयी को राम मुग्ध जनता का भय है अथवा वह स्वय ही उदार है। वह कानी है—राम राजा के प्राण और गुण के सागर हैं। उन्हें बन किस भेज दू। अन्तों तो यही है कि उन्हें घर म रख लू और राज्य न दू। उन्हें किस दोष के लिए बन भजू ?

नृपतिर प्राण राम गुणेर सागर । केमने पाठावे तारे बनेर भितर ॥

घरेते राखिव बर राज्य नाहि दिव । कोन दोषे श्रीरामेरे बने पाठाइव ॥ ६७

ककेयी को दोष मुक्त करने का प्रयास दो प्रकार के हैं—(१) अथाध्याकाण्ड म कहा गया है कि वचन म इमन एव ब्राह्मण पर व्यग्य किया था। उसने शाप दिया कि सबत्रोका म सारा अपयश होगा।^२ (२) राम जब लौट आय तब उसने कहा, मुझे क्षमाता बनाकर तुमसे देवताओं का काय किया है। राम गलती करते पकड़े गए और उ होन सजा भाव प्रकट कर माता स्वीकार कर लिया कि व स्वय बन जाना चाहिन थे दर्मान य सब घटनाएँ हुई। अध्यात्म रामायण म राम न चित्रकूट म उमग कहा है—मयव प्रेम्ता बाणी तव वक्त्राद्विनिगता (मुभम प्ररित होकर ही

१ बंगला रामायण, ६६-६७।

२ बही, ६८।

निर्वासन की वाणी तुम्हारे मुग्ध स निवर्त्ती । २ ६ ६३

स्तानि का अनुभव करन वाली यह कवयी अभिगानि भी है । उमन मा ही मन निश्चय कर लिया था यदि राम न मुभ मा बहुरर पूववत् भादर णिया तो मैं विषयान कर प्राण द दंगी । राम न उगव मान की रक्षा कर ती ।

बंगला रामायण म कवेयी के दो भय रूपा का भी विषय है—(१) सीतिया डाह और (२) पतिव्रत । चरु के वितरण के अवसर पर जय कौशल्या न अपन भाग का भाषा भाग सुमित्रा को दिया तो कवयी ने भी एसा ही किया ताकि उसके पुत्र का भी एक साथी सुमित्रा के गभ स उत्पन्न हो सके । राम के जन्म पर उस विषाद हुआ था कि पहले उसके पुत्र कयो न हुआ । राज्य का अधिवारी भव उसका पुत्र न हा सकेगा । इसी प्रकार जब दशरथ न सुमित्रा स विवाह किया था तब भी कवेयी को सीतिया-डाह हुआ था । वह शंकर की पूजा कर मनाती थी कि सुमित्रा दुभगा हो जाए ।

उसके पतिव्रत का उदाहरण दशरथ का उपचार है । दशरथ प्राणघातक व्रण की पीडा से छटपटा रह थ उसन वच के निर्दोशानुसार अपने रसीत झाडा से व्रण की पीव चूसकर राजा को पीडा मुक्त किया था । शम्बर-मुद्ध म भाहल राजा की उसने परिचर्या की थी ।

०उडिया० के अनुसार मथरा के मुत्त से राम के अभिषेक का समाचार सुन कर वह प्रसन्न ही हुई थी—तुम्हारे थ वचन अमल-समान हो । मेरा ज्येष्ठ पुत्र राम महीपाल हो ।

ए तुम्ह वचन गोठि अमल गो हेउ । ज्येष्ठ पुत्र राम मोर महीपाल हेउ ॥ २ २५

आगे उसे भय लिखाया गया कि कौशल्या राजमाता और सीता पटरानी होगी । सीतेल भाई राम की सेवा करेंगे । तुम्हारी बहू का सीता की सेवा करनी पडेगी । सभी सेना और सेनापति राम के वश म होग उस समय तू कुड कुडकर मरेगी । कवेयी मथरा की इन वाता स भमित हुई ।^१

किन्तु कवेयी का चण्डी रूप नहीं आने पाया है । उडिया लेखक ने आरम्भ से ही उसे निर्दोष सिद्ध करने की चप्टा की है । वह बाल्यकाल म एक वद्ध एव अधिर घाह्यण को देखकर हँसी थी इसलिए उसने शाप दिया कि तुझे देखकर जग हँसेगा । इसके अनिश्चित वसिष्ठ और वामदेव ऋषि योगबल स जान लते हैं कि कवेयी बुरी नहीं है देवताआ न ही यह सब किया है ।

देव उपाय कले कवेयी मोह म'द । २ ३५

यहाँ मानस से समानता मिलती है । देवताआ ने यटा भी उपाय किया है ।

ब्रह्मा ने खन और दुबल भाइया को भेजकर त्रमश ककेयी और दशरथ के शरीर में प्रविष्ट होने के लिए कहा है। खल ही ककेयी को क्रूर और दुष्ट बनाये है।

उडिया रामायण में ककेयी के उग्र बड़ी रूप का वर्णन तो नहीं है किन्तु कपट चारिणी रूप का है, जसा कि अन्य किसी रामायण में नहीं है असमीया के लकावाड में अवश्य कुछ है। उडिया रामायण में वह राम के वनवास के अवसर पर सब के रोने पर स्वयं भी ऊपर ऊपर से रोनी है।

लोक आचारकु सेहि करइ रोदन । २४६

रामादि के जौटन तक वह सुघर जाती है। सीता के प्रणाम करने पर वह सीता को आलिंगन कर उनका मुँह चूम लेती है। ६-३६५

मानस की ककेयी कोपभवन में जान की स्थिति के आने के पूर्व तक अत्यन्त हसमुख और प्रिय स्वभाव की जान पड़ती है। मथरा को लम्बी साँसें भरता देखकर उसने हँसकर कहा था— तू गाल बहून बजाया करती है लगता है लक्ष्मण ने इसीलिए मरम्मत कर दी है।^१ फिर भी जब मथरा नागिन सी फुफकारती रही तो ककेयी चिन्तित होकर दशरथ और राम आदि भाइया की कुशल पूछती है। उसके हृदय में सौतिया डह नहीं था। (कठार होने पर ब्राह्मण स्त्रिया आदि ने उसे समझाकर कहा भी था— कबहु न वियहु सवति आरेसू २४८७) मथरा के मलिन मन से परिचित होकर वह अत्यन्त कुपित होकर उसे 'घरफोरी' कहकर उसकी जीभ निकलवाने को प्रस्तुत हो गयी थी।^२ उसकी विनोद प्रियता का भाव फिर उमड़ आता है वह मथरा को 'कुबडी' कहकर मुक्करा पड़ती है।^३

राम के प्रति उसका हृदय अत्यन्त स्नेहाद्र था। उसे मव था कि राम उसे कौशल्या से भी अधिक प्यार करने हैं। उसने राम की प्रीति की खूब परीक्षा कर ली थी। एसे प्राणप्रिय राम के निलक पर मथरा का क्षोभ देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह तो इस गुण समाचार के लिए मुहमांगा पुरस्कार देने के लिए प्रस्तुत थी।^४

मथरा ने सीता के कष्ट की कहानी कहकर उस भय दिवाया—'तुम्हें और तरे पुत्र को चाकरी करनी पड़ेगी तभी निम्नार हागा। भरत बन्दीगृह का सेवन करेगा और लक्ष्मण राम के सहकारी बनेंगे।^५ फिर तो स्वाभिमानिनी ककेयी भी कह उठी—

१ हमि कहि राति गालु बड तोरे । दीह तखन मिल अस मन मोरें ॥ २-१२७ ॥

२ पुनि अमि कइहुँ कहमि घर फोरी । तत्र घरि जीभ बढावहुँ तोरी ॥ २ १३८ ॥

३ मानस ७ १४ ।

४ वही २ १४७—८ ।

५ वही, २ १८८, २ १६ ।

महर् जनमु भरव यह जाई । जिप्रति न करविय सव्रति सेवजाई ॥ २-३० १

कोपभवन म जान क पश्यात तन्धी बडी कटार हा जानी हे । यहाँ कलह प्रिया कुटिला और कटुभाषिणी नारी के स्वाभाविक चित्रण म लग्न क। अय रामा यणकारो की अपेक्षा अधिक् मफनता मिनी है । उसरा चणी म्म निम्न शक्त म वर्णित है—

आपें दीलि जरत रिति भारी । मनहुं राव तरवारि उघारी ॥ २ ३० १

उसके सवादा म बडी तिकता आ जाती है वह दशरथ के घावा पर नमव छिडकती हुई कहती है—क्या भरत तुम्हारे पुत्र नहीं । मैं क्या तुम्हारी रजल हूँ । या तो उत्तर दो या ना कर दो । तुम ता रघुबुल म सत्यवादी विख्यात हो ।^१

दशरथ के बहुत समभाने पर भी वह नहीं मानी—‘कराओ उपाय कयो न करो तुम्हारी माया यहाँ न लगेगी । या तो वचन पूरे करा या ना कर अपयश लो । मुझे बहुत प्रपच अच्छे नहीं लगत ।’^२

अपनी कुटिलता के लिए बुझ्यात यह स्त्री सम्भवत सभी चैती होगी जब कि इसके ही गभ स उत्पन्न पुत्र ने ग्राकर इसे लाक्षण किया । फिर तो यह ग्नानि का अनुभव करती है और उसके हृदय की सात्विकता पुन प्रकट होती है । चित्रकूट पहुचकर सीता सहित दोना सरल भाद्रयो के कष्ट देखकर यह कुटिल रानी अधा कर पछताती है और पथ्वी म समा जान की इच्छा यक्त करती है ।^३ चित्रकूट म जनक की उपस्थिति म तो यह और भी अधिक् सकुचा गयी ।^४ १४ वष की अवधि बीत जाने पर जब राम वापस आये और सबसे पहल उसी स मिल, उस समय तो वह कट कर रह गयी होगी ।

अय पात्र

सुमित्रा और शत्रुघ्न—लक्ष्मण जननी सुमित्रा गुणो म कीर्तया जसी है एव लक्ष्मण अनुज शत्रुघ्न स्वभाव एव चरित्र म अपने सहोदर अग्रज जसा है । चित्तु दोना का चरित्र विकास न कर सका । रामकथा मुख्यतया राम को केन्द्र मानकर चलती है, अनएव उनके चरित्र को विकसित करने वाली घटनाओ और पात्रो को कथा म विशेष महत्व मिला है । लक्ष्मण राम का सात्त्विक पाकर अपनी चरित्रगत विशेषताए दिखा गय चित्तु लक्ष्मण स सम्बन्धित पात्र—अनुज माता एव पत्नी के चरित्रा का विकास

१ मानस २ २६८ २ २६२ ४ ।

२ वही २ ३२ ५ ६ ।

३ वही, २ २५१ ५ ६ ।

४ वही २ २७२—१ ।

न हो सका। सुमित्रा एव शत्रुघ्न त्रमण कीशल्या एव भरत के पिछनगु बने रह गये। उमिला विस्मति के गहन अत्रवार म लुप्त हा गयी जिसके कि कारण रवींद्र बाबू आचार्य द्विवेदी और मुष्ट जी को अपना दोष प्रकट कर मानो क्षतिपूर्ति का प्रयास करना पडा है।

भाषा रामायणा के इन पात्रो म कोई उल्लेख-भाग्य विशेषण नही है। उाका जितना भी चरित्र अंकित है वह उज्ज्वल है एव पारस्परिक माम्य से युक्त है।

विश्वामित्र—विश्वामित्र का श्रेय प्रसिद्ध है। पूर्वाचलीय रामायणा म दशरथ पर विश्वामित्र अत्यंत कुपित हान हैं। उडिया रामायण मे बमिष्ठ के साथ उनके सघष का रूप भी अंकित है। अममीया और बगला ग्रथा म विश्वामित्र को ताडका म भीत और हास्यास्पद स्थिति म अंकित किया गया है मानो उहें तत्कालीन ब्राह्मण बना दिया गया है। बँगला० के राम उहें विशेष आदर नही देन। मानस म विश्वामित्र मोम्य ऋषि के रूप म प्रस्तुत किय गय हैं। वे दशरथ के पुन मोह पर क्रुद्ध न हारर मन ही मन मुग्ध हाने हैं। राम-लक्ष्मण भी अपन स्नेह मय गुरु का पिता जसा आदर देने हैं।

सुग्रीव—सभी रामायणा का सुग्रीव राम को ब्रह्म मानता है। वालि ने प्रथम युद्ध म मार खाकर पूर्वाचलीय-रामायणा का सुग्रीव राम के प्रति श्रेय प्रकाश करता है। सभी रामायणा म वह राम का योग्य सखा है, मानस म वह राम का भक्त अधिन प्रतीन हाता है। बँगला और उडिया रामायणा का सुग्रीव राम की शक्ति पर महज विश्वास नही कर लता। बँगला० का सुग्रीव निर्भीक एव अकृतन प्रतीत हाता है। लक्ष्मण के श्रेय करन पर वह डरता नही बहता है—मन किसी का अपराध नही किया, मुझे बिनका डर है। उडिया० का सुग्रीव बहुत अधिक डरपोक दिखाया गया है। वह रसिक और चालाक भी जान पडता है।

वालि के चित्रण म पूर्वाचलीय रामायणा ने मूल रामायण के साथ ही हनु मनाटन आदि ग्रथा स भी प्रेरणा ली है। इन ग्रथा म वालि का भक्त लिखान के माय ही राम क प्रति उसके उग्र श्राध का भी वर्णन है। मानस म उसका भक्त रूप अधिक उभरा है। अगद बहुत दुःख हनुमान जसा है। पूर्वाचलीय ग्रथा का अगद सीता की खात्र न पारर सुग्रीव के भय म उसके विरुद्ध पड्यत्र करता है। बँगला रामायण का अगद अत्यन्त वाक्पटु है वह राम के प्रति भी सदेह प्रकट करता ह। वह वालि वष का राम का बुकाय बहता है। मानस म अगद का विद्वान भक्त दिनाया गया है, वन् बहा भी पूर्वाचलीय अगद जमी मनावलि नहा दिखाना। अघाघ्या पडूचकर राम मे विछुडन हुए अगद की भक्ति विद्वानता दखन ही बनती है। यह अगद भी रावण से बान करने ममय अपनी वाक्पटता का परिचय षता है।

विभीषण धार्मिक था— राम-राज्य को स्वीकार का मन्थन मही किया।
 पाता राजन म उग मायकर तिराज किया। धर्मवीरा एक बल म रामायणी म बट
 था। गौर म भाई बुद्ध क मही मता वही मकर का छात्र पाकर बट राम को लक्षण
 म पाया। बँगना० का विभीषण भवत ला है ही स्वार्थिणा ले भी है। १५१ - क
 पितृभ्रातृ पर बट बटता है— मा गुरु म त म १३ पर भी है— रामायणी मही है
 भी त ता पर २-५ का हण किया है घोर म पर मता का। व- भीर स्वर्षी भी
 प्रीत हाता है। तापनाम बट राम क प्रति सगुभूति कर करत क स्वाइ पर व-
 राम पर छा इत करता है। तुम्हारे कारण से जीवित हा मर गया। पर तिम बट
 रणात तता भी वही ब्रह्म। उद्विग रामायण एक माताम क विभीषण क भ्रिभारक
 दृष्टिकाना म समाता है। रामन म पानार्थाइ विभाषण तो हा व वो म राम क
 दमन म घटा का मय करत क तिम भ्रिभार मय हाकर गया है। एक स्वर्ष पर
 उद्विग रामायण क विभीषण का मतामार्थाइ पणत है। रामन की मनु पर व-
 बहूत विनाश करता है। राम १ पूछा— राजन का जीवित कर दू ? वग विभाषण
 क मीमू रक मय द्य बान पर बट तयात त १ हूया। रामन क जीवित हा। पर बट
 राज्य कम कर पाणगा। तुमभीनाम १ विभीषण का भवागत्र विवित कर व व दया
 क दस पान म अधिक् गौरव मय भक्ति किया है।

पुत्रीत्याय धत्ताय तारिणी मयावसर धत्ता रामद्वय प्रकृ कर ती है। ताग
 एव मन्नादरो राम पर कुति हाती है। व गिनयो समभारत है एव म व धत्ता परिषदा
 को उचित परामना दनी हैं। तुमभीनाम का दृष्टिकान भवितरजित है। राम क प्रति
 इन स्त्रिया की दृष्टि तुलसी की दृष्टि हा जा ति है घोर म गिनयो धत्ता परिषदा का
 सदन राम की भक्ति करत का गुभाउ दनी रहती है।

कथा—विधान

भाषा रामायणा का रचना काल १४वीं शती की समाप्ति से १६वीं शती के उत्तरार्द्ध तक लगभग २०० वर्ष का है। पूर्वाचलीय रामायणा को वाल्मीकि-रामायण का भाषानुवाद कहा जाता है वस्तुतः यह सत्य नहीं है। समस्त रामायणा का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष आधार वाल्मीकि रामायण ही है, किन्तु प्रस्तुत करने में अन्तर है, साथ ही मूल-रामायण से भिन्नता के अनेक कारण भी हैं—

१ कथा का आधार मूल रामायण के अतिरिक्त अनेक कई काव्य-नाटकादि एवं लोक प्रचलित आख्याना का होना।

२ समस्त कथा का भक्ति-परक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना।

३ लेखक का निज का दृष्टिकोण।

४ युगीन परिवेश के मध्य कथा को प्रस्तुत करना।

भाषा-रामायणों की पारस्परिक विभिन्नता के कारण भी उपयुक्त ही हैं। वाल्मीकि रामायण के अनिर्गुण कई राम-कथा सम्बंधी ग्रंथ प्रचलित थे, किसी ने कहीं से प्रेरणा ली किसी ने कहाँ से। सभी में ममानता का आधार भक्ति-परक दृष्टिकोण है। यदि समस्त भाषा रामायणा को किसी भी भारतीय भाषा में अनूदित किया जाए तो उनकी कथा अथवा प्रतिपाद्य विषय से भारतीय जन मान तादात्म्य कर लेगा। रामायणा के विचारा और दृष्टिकोण में मूलन एवम् है। भारतीय-संस्कृति भाषा का जीना आवरण ढालकर केवल दृश्यमान भिन्नताओं के साथ अभिव्यक्त हुई है।

वाल्मीकि का वणन महामानव का है अतएव कथावस्तु एवं चरित्र चित्रण में महापुरुष के युगीन आदर्शों का पूर्ण चित्रण है। भाषा-रामायणा में मानव-चरित्र का नहीं, अपितु नारायण की भाषा-लीलाओं का वणन है। अतएव बीच-बीच में चमत्कार-पूर्ण कथाएँ, स्तुतियाँ कथा का फल भक्ति अथवा नाम का महत्त्व मिद्ध करने के लिए अनेक कथाएँ सम्मिलित की गयी हैं। ब्रह्म राम एवं उनके परिवार के अनेक जन्तु के दोष टकन के लिए भी कई वस्तुतः आख्यानों की उद्भावनाएँ की गयी हैं। काव्य की दृष्टि से इनका मूल्य कम है, किन्तु युगीन आवश्यकता देखते हुए अधिक है। इन कथाओं को संस्कृत जनता की उपेक्षा कर साधारण जन के लिए प्रस्तुत किया गया है।

प्रथमीया रामायण में अथांतर कथाएँ बहुत कम हैं। बँगला रामायण या शुद्ध पाठ उपन्यास नहीं है उतम अथवा प्रक्षपा का रामायण है। मानस में अथांतर कथाओं का अभाव है उतम अध्यात्म रामायण का आधार पर मुख्य कथा कही गयी है उस पूरा स्थला का मार्मिकता के साथ चित्रण हुआ है। त्रितु मानस में अथांतर, भक्ति ज्ञान आदि का निरूपण एवं तद्विषय व्याख्या अवश्य ही कथा के सहज विभाग में बाधा उत्पन्न करती है। फिर भी तुलसीदास का अथांतर प्रसंग कृशानता का साथ विभीषण प्रभाव को ग्रहण किये हुए मुख्य-कथा से समुक्त है। उद्दिष्ट रामायण में अथांतर प्रसंग का भरमार है लेकिन जिस विषय का भी वर्णन करता है जम कर करता है। जितने पौराणिक आख्याना का वह रामकथा के साथ सम्बद्ध कर सकता था किया गया है, उसने अपनी बहुतायत का भी विस्तृत परिचय दिया है।

वाल्मीकि रामायण में भी विस्तृत वर्णन है वही कही अथांतर कथाएँ भी हैं। वह आदि महाकाव्य था जिसके विस्तृत वर्णन अपने स्थान पर शाभा पात्र है साथ ही उतम कालांतर के जनक प्रक्षपा ने उसका दो काण्ड आदि एवं उत्तर में कथा का अर्थ विस्तार किया है। भाषा रामायण का भी प्रथम और अंतिम काण्ड में शकित्य एवं व्यर्थ विस्तार है। पुत्रोच्छेद यज्ञ से लेकर राम के राज्याभिषेक तक की कथाओं में मोटे रूप में समानता मिलती है। पूर्वाचलीय रामायण का उत्तरकाण्ड में भी समानता है। मानस का उत्तरकाण्ड एकदम भिन्न है। आदिकाण्ड में सभी रामायणों में अपने अपने ढंग की खोजतान करी जाती है। सभी का प्रारम्भ भिन्न भिन्न ग्रन्थों के आधार पर हुआ है। यही कारण है कि आदिकाण्ड का तुलनात्मक अध्ययन में कठिनाई उपस्थित हुई, उसका विस्तार भी हुआ गया है।

यहाँ यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि वाल्मीकि रामायण का तीन संस्करणों में एक गौडीय संस्करण भी है जिसमें कई नूतन आध्यात्म पात्र हैं। पूर्वाचल में इसी का प्रचार होना का कारण पूर्वाचलीय रामायणों का प्रसंगों में पारस्परिक समता के साथ ही मानस से व्यपन्न भी है।

वक्ता श्रोता बचिब एवं लौकिक दोनों साहित्या में वक्ता श्रोता की परम्परा रही है। वाल्मीकि रामायण में भी ब्रह्मा नारद का कथा सुनाते हैं और नारद वाल्मीकि को। वक्ता श्रोता की याजना सम्बन्ध कथा के महत्त्व—वृद्धि के लिए हुई है कि एसे एसे महानुभावा ने कथा का कहा और सुना। द्वितीय उद्देश्य हा वक्ता है—युगीन शकजा का समाधान। राम के ब्रह्मत्व की पुष्टि के लिए किसी जिनासु शकानु श्रोता के प्रशास्त्र रूप में सवाद चला है। प्रत्येक रामायण में किसी न किसी रूप में वक्ता श्रोता है किन्तु उर्ध्व रामायण और भास में य विशेष रूप से है। समस्त उद्दिष्ट रामायण शिव पावती के सवाद रूप में जाद्यत प्रस्तुत है। शिव पावती को शाकभरी शशिमुखी गौरी पावती महामाया आदि अनेक नामों से अभिहित करते हुए कथा सुनाते हैं। अध्यात्म रामायण भी इसी प्रकार कथित हुई है। मानस में

चार चार बक्ना थाता हैं। भरद्वाज याज्ञवल्क्य, शिव पावती, वाक्भुजु ि गरुड और तुलसीदास सत्तजन ।

कथा-संगठन—वाल्मीकि रामायण की कथा वस्तु म शकित्य हे उमम अनेक स्थला पर पुनरुक्तिर्या हैं। पूवाचलीय रामायणा म पुनरुक्तिया देखी जानी हैं। जो बातें पाठका का स्वय नात हे अथवा जिनके सम्बध म वह स्वय कल्पना कर सकता हे, उसका बार-बार वणन करत बला एव रोचकता की दष्टि से ठीक नहीं रहता। जब कभी दो पात्र मिलत हैं ता वे पूव घटित प्रसंग सुना जात हैं। एसा कई स्थला पर होता हे। गोस्वामी तुलसीदास एसं प्रसंग उपस्थित होने पर प्राय इस प्रकार की पक्तिया का प्रयोग कर आग बढ जात हैं—

नर धानरहि सग कहू कस ।

कही कथा भइ सगति जमैं ॥ ५-१२ ११

स्वयप्रभा की कथा का विशप सम्बध मुख्यतया से नहीं हे फिर भी पूर्वाचलीय रामायणा म उसका विस्तत परिचय हे। तुलसीदास केवल इतनी सी पक्ति से काम निवाल लेत हे—तौह सब आपन कथा सुनाई। बँगला और उडिया रामायणा म गंगा की उत्पत्ति-कथा विस्तार से वर्णित हे। मानस म विश्वामिन राम लक्ष्मण सहित गंगा-सट पर पहुचत हे एव तुलसी एक जवाली का प्रयोग करत हे—

गाधि सुनु सब कथा सुनाई ।

जेहि प्रकार सुरसरि महि छाई ॥ १ २११-२

असमीया-लम्बक भावब कदनी न प्रनिधा की हे कि लम्ब वणन छाडकर मार सार का वणन हागा। वास्तव म हुआ भी एसा ही किन्तु वाच अस्तराशरन भाज्य पदाथ आदि के वणन म तीना पूवाचलाय रामायणा म लम्बी नम्बा सूचिया प्रस्तुत की गयी हं। कथा की एकमूर्तता धार धार टिन हाती हे। उडिया रामायण विशृ खलित हे किन्तु राक्षक वणन करत म सबसे जागे हे। असमीया म एकमूर्तता हे किन्तु असमीया विद्वान् स्वय ही स्वीकार करते हैं कि उनकी भाषा की रामायण म बँगला रामायण जसी कथा की रगीनी नहीं हे। बंगला रामायण म कथा संगठन का अभाव परवर्ती प्रक्षेपा के कारण भा हो सकता ह।

मानस म भी ऐस स्थन ह जा रसिक पाठका के लिए अराचक हा सकत हे, जहा तुलसीदास का भक्त दाशनिक एव समाज सुधारक रूप उभर जाता हे वही कथा प्रवाह शिथिल हा जाता हे। वसे तुलसीदास न कधी हुई चुस्त भाषा म समस्त कथा वर्णित की हे। कथा म नाटकीय चमत्कार प्रस्तुत करन का भी उह ध्यान रहा हे। धनुषग के पश्चात राजाओ के विवाह एव रतिवास की चिन्ता क मय प्राध-मूर्ति परगुराम की अवतारणा जस प्रसंग नाटकीय चमत्कार से परिपूर्ण हे। राक्षेप म कथा की दष्टि से महज प्रवा र स्वाभाविता, राचरता नाटकीय चमत्कार एव मानेनिकता जादि अनेक गुण मानस म अन्य रामायणा की अपक्षा अधिक हे।

तादा की नीच काय-अवस्थाओं (१ प्रारम्भ २ प्रसन्न ३ दास्यता ४ विपत्तयि और ५ पतनम) की दृष्टि में है। पर सुतगी की काय-अवस्था का पता लगता है। राम-नयन पर रामायण की स्थापना ही पतनम है। महाकाव्य की दृष्टि से क्या यह समाप्त हो जाती पाठिका की किन्तु पूर्वाचरित रामायण में इसके परसार् भी कई किन्तु-वर्तित आस्थाओं का पता है। रामायण का भवगत विधान भारतीय महाकाव्य परम्परा में धनुकृत तदा है।

आदिपाण्ड

(सभी रामायणों में वाल्मीकि रामायण का अनुगार इस आदिपाण्ड कहा गया है पतन मानस में मानस्य नामकरण है।)

(१) प्रारम्भ आदि रामायण की प्रेरणा—सामोचि रामायण प्रारम्भ ही ही है वाल्मीकि-नारद सदास्य स। मानस्य जातया पाहा है कि गुण पूरा भी-य धमप्रियता चरित गुणा विद्वता धम मुष्ट्या स्वभावगनाय आदि अत्र विभय ताया स युन व्यक्ति वीन है ? नारद इत्यानुवग प्रभव राम का इन सभी गुणा स अलङ्कृत वनात है। व स अप म रामकया कहत है यही मूख रामायण है।

आग वर्णित है कि वाल्मीकि तमसा-तट पर गय। वहाँ सिमी व्याप त अपन पला स मादा का डक हुए कामानुर नर त्रौच का मार लिया। बन्धन से बानर मुक्ति के मुय स इस्मात शत्रव निरन पडा। य अपने इस मूजा पर विचार करने लग। ब्रह्मा ने बताया कि यह उहा की प्रेरणा स दृष्टा है और धव उह नारद क कथानुगार रामायण की सष्टि करनी चाहिए। य रा कुछ चित जाण्य राम जम सरर वही करेगे।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में भी सवा पद्वैत है। वाल्मीकि का रामायण लिखने की प्रेरणा मि ती—१ नारद और ब्रह्मा की आणा स २ राम क गुभवचरित स और ३ त्रौच की कटना स।

माया रामायणों का प्रारम्भ भक्ति-परक प्रेरणा भाषा रामायणारार क युग तदा महामानव राम अपन गुण चरित के कारण भवनवत्मन परब्रह्म हा चुके थे, जनएव भक्ति निवेदन जयवा माहात्म्य बधन के बिना भाषा रामायणें भला कैसे लिखी जा सकती थी।

पूर्वाचरित प्रवेश में कृष्णभक्ति का प्राबल्य था, जिसका प्रभाव पूर्वाचरित की तीना रामायणों पर है विशेषत असमीया एव उडिया रामायणों पर। असमीया रामायण का आदिपाण्ड चक्र माधवदेव स्थापितप्राप्त कृष्णभक्त शकरदेव क शिष्य थे उनकी रचना पर कृष्णभक्ति का प्रभाव स्वाभाविक है। उडिया रामायण लेखन बलरामदास जग नाथ क भवन और चत य महाप्रभु के राम सामयिक थे। उहान भी जग-नाथ कृष्ण और राम का अभिन रूप में देखा था। कृतिवास चतय महाप्रभु के पूर्ववर्ती य जिसस चतय की कृष्णभक्ति का प्रभाव उन पर न पड सवा। कृतिवासी रामायण के प्रक्षपा पर अवश्य ही कृष्णभक्ति की छाप है।

असमीया रामायण के प्रारम्भ में ही ब्रह्मा हर-वर्धित ऋष्ण की वन्दना है । कवि ने तुलसीदास के समान ही अपनी विनमता का वणन किया है ।

बेंगला-रामायण में नारद न गालोक में गदाधर और लक्ष्मी को चार रूपों में प्रकाश करते हुए पाया । रहस्य जानने के लिए वे ब्रह्मा को लेकर शिव के पास गये । शिव ने रावण के वधाध नारायण के चार अंशों में अवतार लेने की भविष्यवाणी की और नारद को आदेश दिया कि वे 'रत्नाकर' नामक दस्यु का राम-नाम से उद्धार करें ।

उडिया रामायण में जगन्नाथ की वन्दना है । जगन्नाथ मन्दिर की मूर्तियों तथा जगन्नाथ के रूप का वणन है । इस रामायण के अकाराण्ड में त्रैलोक्य की वरणाओं को रामायण लिखन की प्रेरणा बताया गया है ।

मानस के प्रारम्भ में भी स्तुतियाँ की भरमार है । गणेश सरस्वती, शंकर, गुरु वाल्मीकि, हनुमान, सीता, राम, सत असत, चौरामी, लावण, यानिया सहित पूर्ण ब्रह्मांड की वन्दना कर तथा रचना का स्वान्त सुखाय उद्देश्य प्रेरणा ग्रन्थों की ओर सकेत, प्राकृत जना के गुणगान की ओर विरति प्रकट करते हुए तुलसीदास का मानस प्रारम्भ होता है । प्रारम्भ में ही तुलसी ताक की शकांश और समस्याओं के प्रति सजग हैं अतएव तुरन्त ही राम नाम का महत्त्व वर्णित कर सगुण निगुण समन्वय में प्रयत्नवान् दिखायी पड़ते हैं ।

(२) वाल्मीकि उपाख्यान और रचना की प्रेरणा—वाल्मीकि रामायण में वर्णित त्रैलोक्य में वाल्मीकि के हृदय में वरणा के उद्रेक वाला प्रसंग केवल असमीया और बेंगला रामायण में मिलता है—

असमीया रामायण के अनुसार एक दिन वाल्मीकि शिष्य भरद्वाज का नेत्रर गंगा स्नान करने गये । डाल पर बैठे त्रैलोक्य के व्याध ने तीर से मारा मुनि के मुख में शलाक निकले । जगत हित के लिए राम का अवतार जानकर ब्रह्मा ने नारद सहित आकर वाल्मीकि से रामचरित-वणन के लिए कहा ।

बेंगला-रामायण के अनुसार एकबार सरायर के तट पर वाल्मीकि राम-नाम जप कर रहे थे । प्रणय मत्त त्रैलोक्य में स एव को व्याध ने वीध दिया । पक्षी उनकी गोद में गिरा । मुह से छन्द निकल पडा । नारद ने बताया इसी छन्द में रामायण लिखा । उहान राम का सक्षिप्त वक्तान भी वर्णित किया ।

उडिया-रामायण और मानस में आदिकवि की आदि प्रेरणा का वणन नहीं हुआ । वस उडिया रामायण के आदिकण्ड के मध्यभाग में बलरामदास कहते हैं—

शोराम चरित ए सामबेद बाणी ।

बालमीक आगे एहा ब्रह्मा गले नसि ॥

उन्ने यम्न छीने के शत्रु तोह मुदगर लवर भगदा विन्तु उमता हाय न उठा । ब्रह्मा न कहा, मयागी ता उग्र महापाप है फिर भी यदि तुम मारना ही चाहत हा ता एमे स्थान पर मारो, जहाँ हमारे शरीर बं गिरा स चीटी आदि न मरे । और तुम पर जाकर पूछ भी ता आओ कि क्या तुम्हारे आशिन तुम्हारे पाप के भी भागी हैं ? वह पिता माना औरपत्नी स पूछा गया । सभी न कहा कि उनका पालन करना उमका धम है । व क्या जाने कि जीविका का रूप क्या है । रत्नाकर ब्रह्मा और तारद की शरण म आया । उहान स्नात कर आन के लिए कहा कि तु दसवी दष्टि स मरोवर मूत गया तब उहान कमलु का जन छिक्कर उसे राम नाम का मंत्र दिया । पाप स जड दुद जीभ मे बह राम न कह गया तब उमसे पूछा तुम मत व्यक्ति का क्या कहत हो ? वह बोता मडा । मूत्रे पन् का दिखा कर पूछा, यह क्या है ? दस्यु न कहा मरा काष्ट । वम 'मरा मरा' कहता कर ही उमस राम कहला िया । वह ६० हजार वष तप करता रहा । ब्रह्मा न आकर देगा वह वत्मोक व भीतर है । ब्रह्मा न इद्र का आग दवर मान दिन तक जलवष्टि करायी औ उमे सबोधित कर बोले, आज मे तुम वाल्मीकि हुए ।

(४) महाभारत मे वाल्मीकि— श्री बुल्के ने वाल्मीकि के दस्यु जीवन और उदार का मूल स्रोत महाभारत म खोजा है ।^१ अरण्यपर्व (१२२) म ध्यवन ऋषि के उग्र तप का वणन है जा कि तपस्या करते हुए वल्मीक म आवत हुए थ । सभप्रत च्यवन ऋषि के ममान ही उग्र तप करा व कारण प्रंगला-रामायण म वाल्मीकि च्यवन पुत्र बना दिय गय । महाभारत के अनुशासन पर्व (४६) म वाल्मीकि कहत हैं कि विवाद म मुनिया न मुभका एक बार ब्रह्मघ्न कहा था । इत कथन मात्र स में पापी बन गया था । हो मवता है कि महाभारत के इसी प्रसंग से अध्यात्म रामायण न प्रेरणा ली हा ।

अध्यात्म रामायण के श्रयो-यावाण्ड^२ म वाल्मीकि न स्वय ही अपनी पूर्व-कथा सुनात हुए कहा है मैं पहल विगता के साथ रहकर बना हुआ । मैं केवल जम का ब्राह्मण था मरे आचार तूदा के थ । तूदा के शम स मर अनक पुत्र उत्प न हुए । मैं चारा की मगत स चोर हो गया । एक दिन मैं सप्तपिया व पीछे भी उनके वधाय दौड़ पडा । उहाने कहा पहल अपन वृट्रिया स पूछ आओ क्या वे तर पाप म भागी हंगे । जत्र मुझे पान हुआ कि मर वृटुम्बी मर पाप म भागी न हाग तो मैं सप्तपियो की शरण म आया । उहाने राम का नाम उतटकर जपने के लिए कहा । तपस्या करते समय मेर आगपाग बल्मीक बन गया । ऋषिगण न ही मरा नाम वाल्मीकि रखा ।

अध्यात्म रामायण व वणन की शशी सक्षिप्त है, कृत्तियाम ने शघिक चाम्ता

१ श्री वामिल बुल्के—रामकथा द्वि० म०, अनु० ३२ ३३ ।

२ अध्यात्म रामायण, २ ६-६५, ६६ ।

महेश्वर और तागवण के नाम से। तागवण । ब्रह्मा के चरण का समान था। भुजा लिया । तागवण के चरण पगारों के लिए तैयार । चरण कमलजुवा जैसी । १ । शिया । उगी का चरण भगीरथ चरण पर ।

तेरावत मानभय आग चरणर गगा सुभय ५ गगा गगा । उ १११११—
एरावत का सुता माया यह पता थीर । एरावत का अभिमान हुआ उमा कदा
गगा साथ रहा का प्रस्तुत ही तो यह वाय कर सकता है । गगा गतमउ ही गया कि तु
इस शत पर कि वह उतरी आई तरंगे गए स । एरावत । पता पार शिया कि तु गगमें
नहीं सट गया ।

आग गगा का शिव की जटाओं में समाता काशी मूर्ति का चरण गगन पर
का उद्धार एव गगा माहात्म्य का वणन हुआ है ।

भगीरथ पुत्र यत्नाप पाद मीवात' की कहानी हमो प्रम म हे कि तु उमका
तुनतात्मक अध्वयता मातत के प्रतापभानु के साथ जाग हागा ।

(४) रघु कीर्ति - राजा शिरीष (द्वितीय) के पुत्र रघु ने वास्यराज म ही
इन्द्र का परास्त किया एव उसने एक ब्राह्मण वरदत्त की मुशंगिणा जुटा के लिए
कुंवर की सम्पत्ति लूट ली । राजा रघु तिल्य मभी सम्पत्ति प्राप्त कर मिट्टी के पात्र स
जल ग्रहण किया वरत थ ।'

(५) अज्ञ-इन्दुमती—रघु के पुत्र जज भी बहुत पराक्रमी थे । इन्दुमती के
स्वयंवर म अनर राजा जा की उपस्थिति म वरणमाल उही का प्राप्त हुई । इनके एक
पुत्र दशरथ हुआ । नारद की पारिजात माना के गिरन म इन्दुमती की मत्यु हा गयी
उसी माना स अज की भी मत्यु हुई ।

असमीया और बगला रामायणा का वणन साम्य

सूय वश के वणन प्रम म दशरथ चरित स दोनो का साम्य प्रारंभ हा जाता
है । सच पूछा जाए तो सम्पूर्ण रघुवश प्रस्तुत करना उचित भी नहीं था ।

दशरथ चरित के वणन म यदि वही उडिया रामायण एव मानस स साम्य
दिखायी पडगा तो उमका भी उल्लेख कर दिया जागा ।

दशरथ चरित

(क) दशरथ के विवाह—वाल्मीकि रामायण म दशरथ के ७५० रानियाँ है
जिनम मुख्य वीशल्या के वैयी और सुमित्रा है । असमीया म ७०० बगला म ७००
और एक स्थान पर ७५० रानिया हैं ।

१ बगला रामायण प० २५ २७ ।

२ पद्म पुराण—पातालखण्ड (गौ० स०) ।

असमोया रामायण म कौशल्या स विवाह मान का उल्लेख है, कंबेयी का विवाह विस्तार स वर्णित है। उसके नखशिख का वपन है। उसन दशरथ को स्वयंवर म वरण किया था। सुमित्रा सिंहल-द्वीप के राजा सुमित्र को पुत्री बनायी गयी है जिसक माय ग्राह्यरीति स विवाह हुआ।

बेंगला रामायण म कौशल राज्य से निमत्रण पाकर व कौशल्या स धूमधाम-सहित विवाह कर लाय। गिरिराज के शामक क्षेत्र की अत्यधिक सुन्दरी पुत्री कंबेयी स्वयम्बर हुई। कंबेयी के साथ मयग दासी भी आयी। इम रामायण म भी सुमित्रा का सिंहल द्वीप के राजा सुमित्र की पुत्री कहा है। दशरथ सुमित्र का निमत्रण पाकर मगया का बहाना कर चुपचाप विवाह कर लाय हैं। पुन हीन हाने पर राजा न ७५० विवाह किय। कौशल्या और कंबेयी की मनोनी के फलस्वरूप सुमित्रा दुभगा हा गयी।

मानस म तीन प्रमुख रानिया का उल्लेख मान है। विवाहादि वर्णित नहीं है।

(ख) शनि प्रसंग—इसका वपन तीना पूर्वाचलीय रामायणा म ही हुआ है। असमोया और बेंगला रामायणा का वपन समान है। राजा दशरथ के अत्यधिक स्त्रीरत रहन के कारण राज्य की दशा शोचनीय हा गयी। अकाल पड गया रोहिणी पर शनि की दृष्टि पडने से वर्षा नहीं हुई। पत्नी-जाटे स सवाद सुनकर राजा को होश आया। व इद्र से मिनकर शनि की जार चल। शनि की दृष्टि स उनके रथ घाडे जन कर नीचे गिरन लग। गम्पाति के भाई जटायु ने पख पसारकर उन्ह गिरन स बचाया। राजा न उसके साथ मत्री कर नी। राजा दोबारा गय, तब शनि न प्रन न होकर राहिणी म सचार बढ कर दिया जिसम बपा हुई। उसन एक कहानी सुनायी कि एक वार उमन गणेश को दग दिया ता उसका शिर कटकर गिर गया। पावनी शनि को मारन दोडी। दबनाआ न समभाया। एरावन का सिर काटकर गणेश क जोड दिया गया।

दाना म अन्तर यह ह—(१) असमोया रामायण म राजा के न जलन का कारण बताया गया है—शनि का सूय-मुत्र और दशरथ का सूय-वशी हाना। बेंगला रामायण म गनि कहता है कि तुम घम क अबतार हो इसलिए मरी दष्टि सह गये। तुम्हार घर नारायण का जम हागा। (२) बेंगला रामायण म पावती गणेश का गजमुख दम्बर दु खी हागी ह। ब्रह्मा कहन है कि गणेश को सबका राजा बनाय दना है। गणेश के पहल यदि किसी देवता की पूजा की जाएगी तो उसके सभी पूव धर्म नष्ट हो जाएंग। असमोया रामायण म यह वपन नहा है।

उडिया रामायण म ज्यानिपी न गणना कर बनाया कि शनि राहिणी-राशि म गया ता अनावष्टि होगी। दशरथ न बाण मारा रक्त वष्टि हुई। सभी दवता पर गय। शनि नम्म कर दन का प्रम्नून हुआ। ब्रह्मा न समभाया इनके घर राम

जम लकर राक्षसा का नाश करेंगे। पति प्रमत्त होकर राक्षसा राक्षस न न जाना स्वीकार कर लेता है।

(ग) तिस्रुमुनि वध—श्रवण कुमार की पितृ मातृ भक्ति प्रगट है। ब्रह्मपुराण में इसका वर्णन है। या गौडि रामायण के अयोध्याकाण्ड में श्रवण कुमार के वध की कथा है कि 'शुभ्रवणकुमार का अध मुनि पुत्र कहा गया है। पंचमपुराण के गौडीय पातानगण्ड में इसका नाम गिंधु है। असमीया और बंगला रामायणों में भी इसका नाम गिंधु है। राजाशय में पाती भरत हुए गिंधु का हाथ ममभकर दशरथ का शर साधान गिंधु की मृत्यु उसका पिता माता द्वारा दशरथ का शापदान प्राप्ति की कथा सवपात है यही दाता रामायणों में वर्णित है। अध मुनि के शाप से दशरथ प्रसन्न होकर कहा है आपका शाप लिया कि पुत्र के शाप में मैं भी तडप कर मरूँ। यह ता मर लिए बरता हुआ गया। शाप से पुत्र ता हागा। अध मुनि मरने के पूर्व दशरथ का श्रीफल देकर कहते हैं कि अपनी रानिया का पिलाना, इससे पुत्रा की प्राप्ति हागी। उडिया रामायण और मानस में इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में है। उडिया रामायण में वर्णन सक्षिप्त है। उसमें राजा दशरथ के मुख से ऋषिपुत्र को हाथी समझ कर मारना तथा प्रथे माँ-बाप द्वारा अभिशप्त होने मात्र का वर्णन है—(अयोध्याकाण्ड पृष्ठ ६१)

मानस के अयोध्याकाण्ड में इस कथा की ओर संकेत मात्र है—

तापस अथ साप सुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥ २ १५४ ४

पूर्वावलीय रामायणों में रामजन्म के कारण स्वरूप इस प्रसंग का उपयाग किया गया है। असमीया और बंगला रामायणों में यदि एक थयाध्या दाना काण्डों में इसका वर्णन है।

(घ) ककेयी के दो वर—वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में राजा दशरथ इंद्र के लिए शम्भुरासुर से युद्ध करता है। राहत हान पर ककेयी उनकी सहायता करती है। फलस्वरूप ककेयी दशरथ से दो वर प्राप्त करती है।

असमीया और बंगला रामायणों में वर प्राप्ति के दो कारण बताये गये हैं। प्रथम वर की प्राप्ति वाल्मीकि रामायण के अनुसार होती है। दाना रामायणों में मथरा के कहने से वह समय आने पर वर माँगने के लिए कहती है।

द्वितीय वर की प्राप्ति—दशरथ के महाव्रण का उपचार करने से ककेयी को दूसरे वर की प्राप्ति हुई। बंगला रामायण के अनुसार देवता दशरथ की उगली में व्रण कर देते हैं। वचन कहता है कि या तो घोष का शोरवा पियो या कोई इसकी पीठ को चूम लें। दशरथ शोरवा पी नहीं सकत और उनकी पीठ को भला कौन चूसता। ककेयी ने पति के पीठ को चूसकर उनकी व्याध दूर कर दी और द्वितीय वर प्राप्ति किया। असमीया रामायण में देवता पण्डित नहीं करते तथा घोषे के शोरवे का उपचार

नहीं बताया जाता। ब्रह्म उगली में दिवाकर मुह्य के भीतर दिवाया है—शापद ककेरी का महत्त्व बड़ान के लिए कि उमने एमे घणिन स्थान का फाडा चूस त्रिया। उडिया रामायण के अथा-याकाण्ड म कवेयी क वरो का वणन बिल्कुन वाल्मीकि क वणन क समान है। मानस म वरो क कारण पर कही प्रकाश नही डाला गया।

उडिया रामायण का प्रारम्भ—इस रामायण का प्रारम्भ जगन्नाथ वन्दना स हाना है। पुत्रेष्टि-यन क पूव इमम मुख्य प्रसग म हैं—(१) शिव पावती सम्वाद, (२) रावण दिग्विजय (३) अवतार का कारण (४) दशम्य शनि प्रसग और (५) ऋष्य शृग की त्रिस्तत कथा।

दशम्य शनि प्रसग का वणन हम पिछने पण्डो म कर चुके है। कुछ प्रसगा का अध्वयन मानस के प्रसगा के साथ कर शेष का अध्वयन आधिकारिक-कथावस्तु मे साथ हागा।

मानस का प्रारम्भ—पुत्रेष्टि-यन क पूव की कथा का तीन खण्ड म बाँटा जा सकता है—(क) स्तुति एव महात्म्य-वणन—सरस्वती गणेश शिव पावती, गुरु हनुमान सीता राम ब्राह्मण वाल्मीकि, सन असत, एव जीवमात्र की वन्दना राम-भक्तिमयी कविता की महिमा, मानस का रूपक एव महत्त्व तथा साथ ही अपना दैव्य प्रकाश (ख) शिव-वत्ता-त—सती पावती एव कामदहन की कथाएँ और (ग) श्वनार क हेतु—नारद प्रतापमानु मनुगतत्पा की कथाएँ एव रावणादि का जन्म एव अत्याचार।

उडिया रामायण और मानस की प्रारम्भिक समान कथा

(१) शिव पावती प्रसग—मानस के चार वक्ता और चार श्राना हैं। शकर-पावती भी उनम हैं। समस्त अध्यात्म रामायण ही शिव पावती सवात् रूप म कथित है। इसी प्रकार उडिया रामायण भी शकर द्वारा पावती का सुनायी गयी है। वेदत धाति वाण म हा शकर पावती का उमा शकभरी जादि नागा स १०० स अधिक बार संबोधित करत है।

शिव-पावती प्रसग बवल-उडिया रामायण और मानस म है। रामकथा से इतना सीधा सम्बन्ध नहीं है, इसलिए शप दा रामायण म इस प्रसग को स्थान न मिला।

मिन्नता—उडिया रामायण म वाल्मीकि रामायण के अनुसार तारवासुर कथाय स्वर का जन्म दिखाया गया है। मानस म राम की ब्रह्मत्व सिद्धि क लिए शिव-पुराण स कथा और टक्नीक की प्ररणा ली गयी। अतएव उद्देश्य एव कथा क प्ररणा कथा की भिन्नता हान क कारण दाता के वणना म भा अममानता है।

एक बात की समानता है इन दोनों रामायणा में पावती प्रश्न करती है कि अरुण होकर भी ब्रह्म अवतार कैसे लेता है ।^१

पावती की जिज्ञासा—उडिया रामायण के प्रारम्भ में ही पावती शंकर से राममहिमा पूछती है । ब्रह्मा के आने पर शंकर कहते हैं कि पावती मुझे बलहीन और दुबल कहती है इसका क्या कारण है बताओ । ब्रह्मा बोल—तुमने तामस भाव धारण कर महापाप अर्जित किया है । जप यज्ञ और तीर्थवास पुण्य कम हैं तुमने इसका उल्लंघन किया इसीलिए तुम अस्वस्थ और दुबल हो । राम का नाम लेने से पाप नहीं रहेगा । शंकर ब्रह्मा को पितामह कहकर स्तुति करते हैं । तब से शंकर का व्रत रामनाम जपना ही गया । पावती ने जिज्ञासा की कि विष्णु का सहस्र नामा में राम नाम ही क्या गण है ? राम की कथा का विस्तार के साथ कहिए, जिसे सुनकर मैं मुक्त हो जाऊँ । शंकर ने ब्रह्मा के वचन उत्पन्न रावण और उसकी दिग्विजय से कथा का प्रारम्भ किया । वाल्मीकि रामायण और बाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में रावण की दिग्विजय का वर्णन है अतएव इसका तुलनात्मक अध्ययन नहीं होगा ।

उडिया रामायण शिव पावती मन्वाद का रूप में कथित है अवश्य किन्तु इस रामायण में दक्षिण शिव की कथा का महत्त्व राम की ब्रह्मत्व सिद्धि न होकर तारकत्व है ।

किन्तु मानस में सती और पावती की समस्त-कथा राम के ब्रह्मत्व का महत्त्व प्रतिपादित करने के लिए ही है ही मानस के इस प्रसंग में पवित्र दाम्पत्य प्रेम का भी रूप मिल जाता है । स्त्री का मनाविज्ञान का भी अच्छा चित्रण है ।

सती दाह मानस में सती ने राम के ब्रह्मत्व पर शंका कर उनकी परीक्षा मना ली । शंकर ने उह अर्जित किया । सती स्त्री सुभक्त सहज कुतूहल का न दबा सकी और उहान मीना बनकर राम की परीक्षा ली । सती का सज्जन होना पड़ा । उहान शंकर से भय डर अपनी पगलकी की बात नहीं कही किन्तु शंकर सब कुछ जान गए । वे बड़े धम-धकट में गए । सती परम पवित्र है उनका त्याग करने नहीं बनना किन्तु सती ने मीना का रूप धारण किया इसलिए ग्रहण भी करने नहीं बनता । शंकर मन ही मन बहूत दुःखी है । वे सती का स्नान-मस्तिष्क पाम बठाकर कपड़े मुनाद हैं किन्तु उनके साथ पवित्र आचरण नहीं करने । सती मन ही-मन धर्मपति व्याकुल रहकर मृत्यु-कामना करती रहती है । इसी बीच उह अवतार

१ अरुण अर्धर्ग म अपूर्व नाम यार ।

मय नाह विष्णोः स ह्यवतार ॥ पृ० ५ उडिया रामायण ।

ब्रह्म या व्यापक विरक्त अत्र भक्त अनीह अभः ।

मा किं ह परि हाद नर जाहि न जानन वः ॥ सतीप्रश्न मानस १ ५० ।

श्री नर नर न ब्रह्म विमि नाहि विरहें मति भारि । पावती प्रश्न, मानस

१ १०८ ।

मिल गया। अपने पिता दक्ष के यहाँ या का समाचार पात कर वे अनिमग्न ही पत्नी जाती हैं। वहाँ पति और पिता द्वारा उपेक्षित सती पर उनकी बहनों दम्प-मुष्कामें फेंकती हैं। या में अपने पति की उपेक्षा देखकर पतिव्रता मनी अत्यधिक कुपित होकर प्रोगाम्नि से अपना शरीर दग्ध कर देती हैं। शकर न भी वृद्ध होकर अपने गण भेज कर मन नष्ट कर दिया।

उडिया रामायण में सती के म्यान पर भी पावती नाम ही है। राम ने विष्णु-मित्र में गंगा की छोटी यहिन उमा के धारे में पूछा, तब उन्होंने पावती की कथा कही है। दक्ष ने पावती को मुण्डमानधारी योगी की पत्नी होने के कारण नहीं बुलाया था। इसमें पावती असंतुष्ट होकर आंगकुण्ड में कूदकर गाय्य हो गयी। (पावती जयवा मती न तो राम की परीक्षा लेती है और न शिव द्वारा त्याज्य ही होती है।) शकर ने दम्प और देवताओं को मारना प्रारम्भ किया। कृष्ण के समझाने पर वे शान्त होकर हिमालय पर तपस्या करने लगे।

पावती विवाह—मानस में मती ने पावती के रूप में जन्म लिया। व शकर का पति-रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या करने लगी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर रामचन्द्र ने शकर से अनुरोध किया कि शलजा से जाकर विवाह करो। शकर जो नला स्वामी के बचन कसे टाल सकने थे। सप्तर्षि आदि ने पावती के प्रेम की परीक्षा ली, व अविचल रही।

मदन दाह—मानस में तारक के उत्पातो से अकुलाए हुए देवा का ब्रह्मा ने बताया कि शकर के वीर्य से इसका महार हागा। देवताओं ने शकर के पास कामदेव का भेजा। परम विरागी शिव ने तृतीय-नेत्र खोलकर उसे भस्म कर दिया। रति के विनाश करने पर वर जिन्हा कि तेरा पति कृष्ण के पुत्र रूप में जन्म लगा, तभी तेरा मिलन होगा।

तुलसीदास ने शकर पावती के विवाह के रूप में हिन्दू-कथा के विवाह का ही भव्य एवं यथाय चित्रण किया है। तुलसीदास अपने मानस में जिस प्रसंग का टालना चाहते थे, बलरामदास ने उडिया रामायण में उसी का विशद चित्रण किया है। उन्होंने विवाह के बाद की स्थिति—तारकामुर का वध करने वाल कार्तिकेय के जन्म का वणन अधिक किया है।

उडिया रामायण में पार्वती की मत्स्य के पश्चात् शकर दु ली हाकर हिमालय पर तपस्या करने लग। पावती न भी हिमवत में महा जन्म लेकर तपस्या प्रारम्भ की। तारकामुर के अत्याचारों में पीडित देवताओं ने कामदेव का शिव का तप भंग करने के लिए भेजा। शिव ने काम को जला दिया। कामदेव के पीछे ही पावती खड़ी हाकर शिव की स्तुति कर रही थी। उतक जल जान पर व शरर का दिवायी पडी। शिव न हँस कर परिचय पूछा वाला, मैं हिमवत मेंका पुत्री और जन्म-जन्म की तुम्हारी

पत्नी है। शंकर बोले मरणाश्रमुगी मैं तुम्हारे विवाह में तुम्ही था। मरण्या के पक्ष में ही तुम्हें पाया है। ब्रह्मा ने विवाह कराया। शंकर बोले बहुत त्रि में मुक्ति-उप-पासी है समा खाटा है। उमा ने क्या आहार में दुख त्रिपद व्यक्ति रति मरी कर मयता त्रिपि पूवन विगत के दर्शन कराता। त्रि ने अपनी नियता स्त्रीरार नहीं थी। उन्होंने सज्जा त्रिये में रति होकर रति-वति थी। देवताओं के सिद्ध करन पर उद्वेगि जमोष वीष छोडा। पृथ्वी और अग्नि शोना ही प्रथम उमे धारण न कर सके, अबुला उठे।

पाषती ने देवताओं को शाप दिया तुमने मुझ पुत्रजी होने में वधि किया अतएव तुम भी पुत्र प्राप्त न कर सकोगे। तभी से रामगुणी राममृत्यु शीत है।

शंकर का वीष गया नी धारण न कर सकी उमान भी पति दिया त्रिगम जटघातुर्गे बनी। ब्रह्मा ने पंड कृतिपात्रा स क्या उमान उम छत्र टुक्का म बोट लिया। सबसे अनय अराग पुत्र हुए ब्रह्मा ने उह पाठपर एक कर दिया इगन छह मुह जीर बारह हाथ हुए। यही वात्तिकय पक्का स्वामिकात्तिक बहनाया। देवताओं के सनापति बनकर इमने राशम-वप किया। स्वामिकात्तिक को अपना पुत्र जानकर पावती के स्तन बहने लगे। वाल्मीकि रामायण के संग ६ और ३७ म यह प्रसंग है।

(२) रावण विषयक आख्यान—उडिया रामायण एव मात्स म मय-दानव की पुत्री मन्दोदरी से विवाह कुवेर से लका एव विमान छीनना कनास उठाना एव देवताओं पर विजय प्राप्त करने के वणन हैं। ब्रह्मा द्वारा तीना भाष्यो का वर प्रदान का भी वणन है। उडिया का विष्णु सभी विभीषण अमर हान का वर प्राप्त करता है। उडिया रामायण म रावण की जय पराजय का वणन कुछ अधिक है। रावण अनेरण्य यम, वासुकि बलि जाति को परास्त करता है एव माघाता सहसाशुन बालि आदि से हारता है। वह ब्रह्मा इन्द्राति देवताओं को हराकर इनसे सवाएँ भी लता है। उडिया रामायण म नरि दकेश्वर शाप का भी उल्लेख है।

ब्रह्म के अवतार ग्रहण का वारण प्रस्तुत करने के लिए ही रावण का परिचय दिया गया है।

(३) नारद मोह—मात्स क अनुसार नारद न कामदेव को परास्त किया इसका उह अभिमान हो गया। शिव के वजन करन पर भी के विष्णु स भी अपनी जय का उन्मुख कर जाय। विष्णु न नारद का अभिमान चूण करने के लिए माया रची। शीतनिधि की कन्या विश्वमाहिनी को दत्त नारद मुग्ध हुए उहाने विष्णु से रूप मागा। विष्णु की माया से नारद सामा य जनता के लिए प्रकृत रूप म दितायी पडने हैं। इस कन्या के स्वयम्बर म विष्णु नी उपस्थित न। कन्या ने उही का स्वीकार किया। हरगण नारद की काम-व्याकुलता तथा वानरमुख दत्तकर उपहास कर रहे थे क्रुद्ध नारद न उह राशस होने का शाप दिया। अत्यंत असंतुष्ट होकर के विष्णु के

पाम जा पहुँचे, उनका शाप दिया कि मनुष्य बनकर तुम भी म्पी के विग्रह में इसी प्रकार दुखी होंगे।

उडिया रामायण के किष्किन्धाकाण्ड (४१-८८) में भी कुछ मिनता जुलता प्रमग है। नारद और पवत ऋषि जिम कर्मा को प्राप्त करने के लिए परस्पर विवाद करने हैं वह लक्ष्मी हैं और यह स्वयम्बर मभा में अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित विष्णु को वरण करती हैं। दोनों ऋषिया ने राजा का शाप लिया उसे अज्ञान छोड़ने लगा। विष्णु ने कृपा कर अनान का अपने ऊपर उस समय धारण करने का वचन दिया जिस समय वे नर रूप में प्रकट होंगे। इस प्रमग का विस्तृत-वर्णन किष्किन्धाकाण्ड में हुआ है।

मानस में इस प्रमग का उपयोग अवतार के हेतु के लिए हुआ है और उडिया में राम की जाति विस्मयित मित्र करने के लिए।

इन दोनों के कुछ प्रागम्भिक प्रमगा का अध्ययन आगे अवतार बाने प्रकरण में होगा।

आदि-काण्ड की मुख्यकथा-वस्तु

पूर्वाद्

- १—अवतार, उद्देश्य और विष्णु से निवेदन।
- २—पुत्रेष्टि-यज्ञ और रामादि का जन्म।
- ३—सीता का जन्म।

उत्तराद्

विश्वामित्र का आगमन और राम-संभोग का नकर जनकपुर पहुँचने तक की कथा—

क—ताडना वध

ख—अज्ञान्या

ग—जनकपुर का धनुष-यज्ञ और रामादि का विवाह

घ—परशुराम मवाद

ङ—अथ प्रमग

अमोया जगता रामायणों और मानस में अन्तर-प्रमग प्रायः प्रारम्भ में आये हैं उडिया रामायण में इनकी स्थिति मध्य में है। उन ऋष्यशृंग की कथा से प्रारम्भ ही होती है। अतएव अब प्रमुख प्रमगा के तुलनात्मक अध्ययन के साथ ही उडिया की अवान्तर कथाओं का परिचय भी दे दिया जाएगा।

अवतार, उद्देश्य और विष्णु से निवेदन

चान्दीकि रामायण के आदि, युद्ध और उत्तरकाण्डों में अवतार का उल्लेख है

यदि इसे पक्षिप्त भी माना जाए तो भी यह स्पष्ट है कि इन प्रक्षेपो ने भी परवर्ती रामकथा लेखका का अवतारवाद की कल्पना दी।

वाल्मीकि रामायण में रामादि चारों भाई विष्णु के चार भ्रशों से उत्पन्न हैं किंतु आध्यत्म रामायण में ये चारों भाई विष्णु शेष शत जीर सुदशन के अवतार माने गये हैं।

वाल्मीकि के अनुसार ही असमोया (छ०३१) बंगला (१) एवं उडिया (१ ६४) रामायणों में एक ब्रह्म के चार रूपा में अवतरित होने का वणन है। उडिया-रामायण में इसके साथ ही शत्रुघ्न एवं भरत को क्रमशः शत जीर चक्र का अवतार माना है। यही पर लक्ष्मण को मृद बताया है किंतु जय स्थला पर उह शेष ही माना है। स्पष्ट है कि उडिया रामायण पर अध्यात्म रामायण का प्रभाव है। मानस में एक ही ब्रह्म को चार भ्रशा में अवतार ग्रहण करता हुआ नहीं दिखाया गया है। तुलसीदास ने लक्ष्मण को शेषावतार माना है किंतु भरत एवं शत्रुघ्न को किसी का अवतार नहीं दिखाया गया। भागवत पुराण (१० १) में कृष्ण के जन्म के समय शेष का भी उनके भाई के रूप में होना वर्णित है। संभव है राम वाच्य भी कृष्ण विषयक इस उपाख्यान से प्रभावित है।

अवतार का कारण—महाकाव्य रचना की दृष्टि से वाल्मीकि-रामायण का उद्देश्य है रावण-वध। धीरे धीरे कथानक का विकास इसी जोर होता है। आगे चलकर भक्तिवाद का प्रचार करने पर राम के अवतार का उद्देश्य भी रावण वध हो गया। चारों भाया रामायणों के प्रारंभ में रावण के अत्याचारों का वणन किया गया है जोर प्रारंभ से ही पात हो जाता है कि विष्णु राक्षसा का उद्धार करने के लिए ही अवतीर्ण हागे।

मानस में तुलसीदास ने राम के अवतार के सम्बन्ध में शाप वर की अनेक कथाएँ जोड़ी हैं, इनमें से अधिकांश मस्मृत वाच्य-पुराणादि से गृहीत हुई हैं। मानस में राम तो एक ही हैं किंतु रावण कल्प-कल्प में बदलता रहता है। चार कल्पों में अलग-अलग रावण होत हैं।

(१) प्रथम कल्प में जय विजय^१ रावण तथा कुभकर्ण हुए इस कल्प में कश्यप और अश्विनी^२ को वर देने के कारण राम ने जन्म लिया।

१ जय विजय—देगिरा श्रीमदभागवत (७ १ २५४६) जोर मानस-रामायण (राजकाण्ड—१४ १ ३०)।

२ कश्यप और अश्विनी—मध्यम रामायण (१ २ २५-२७) में तुलसी को प्ररणा मिली।

(२) द्वितीय कल्प में जनघर^१ रावण हुआ । राम को भी वंदा के शाप के कारण जन्म लेना पड़ा ।

(३) तृतीय कल्प में हर गण^२ रावण और कु भवण हुए और राम को नारद के शाप के फल स्वरूप अवतार लेना पड़ा ।

(४) चतुर्थ कल्प में प्रतापमानु आदि रावणादि हुए तथा मनुशतरूपा^३ को वरदान देने के कारण राम उनके पुत्र बनकर अवतीर्ण हुए ।

बंगला रामायण के युद्धकाण्ड में जय विजय का नाम तो नहीं आया किन्तु सक्त इन्हीं की कथा की ओर है । वणन इस प्रकार है—हे राम रावण बकुण्ड नगर में तुम्हारा द्वारपाल था पृथ्वी पर वह तीन जन्म से भटक रहा है (युद्धकाण्ड, पृष्ठ ४२५-४३१) ।

उडिया रामायण के उत्तरकाण्ड में द्वारपाल जय विजय के तीन जन्मों का वणन है । इन रामायण के लकाकाण्ड में रावण स्वयं ही मदोदरी का बताता है कि वह और कु भवण विष्णु के द्वारपाल चण्ड प्रचण्ड अथवा जय विजय थे । (इनके शापों का विस्तृत वणन पढ़िए लका काण्ड के तुलनात्मक अध्ययन से बचे हुए प्रसंगों में ।)

इसी प्रकार कश्यप भ्रदिति का नाम भी बंगला रामायण में नहीं आया किन्तु उनकी कथा की ओर भी सकेत मिल जाता है । दशरथ और कौशल्या का मैं जानता हूँ । पूव जन्म में उन्होंने मेरी बहन सेवा की, अतएव उनके घर में जन्म लेने का मैंने वर दिया है । (जादिकाण्ड पृष्ठ ५४)

उडिया रामायण में कश्यप ऋषि और अदिति का दशरथ और कौशल्या होना लिखा है ।

वाल्मीकि रामायण (१-२६-१६ २०) में कश्यप भ्रदिति की तपस्या और भगवान् का वामन रूप में उनका पुत्र होना वर्णित है अर्थात् रामायण में उनके दशरथ-कौशल्या होने की कथा है । भाषा रामायणकारों का प्रेरणा-स्रोत यही रामायण ही सकती है ।

१ जनघर—निघण्टु (युद्धकाण्ड २३) पद्मपुराण (उत्तरकाण्ड) एवं आनन्द रामायण (सारकाण्ड ४७८-११८) में वंदा के सतीत्व के फलस्वरूप अजेय जनघर को मारने के लिए विष्णु ने वंदा का सतीत्व भग्न किया और उसके द्वारा अभिषिक्त हुए । तुलसीदास ने इसमें इतना और जोड़ दिया कि जनघर रावण हुआ ।

२ निघण्टु (रुद्र संहिता सप्तम-खण्ड अ० ३४) हरगण और नारद का शाप ।

३ मनु और शतरूपा—श्रीमद्भागवत क० ८ और १० स्वर्ग में मनु शतरूपा के तपस्या आदि का वणन है । पद्मपुराण (उत्तरकाण्ड) में मनु तपस्या द्वारा भगवान् का पुत्र-रूप में पाने का वर प्राप्त करत हैं ।

बगला रामायण म युग शाप की आर भी मका है। युद्धकाण्ड म गरुड राम उक्षमण को नागपात त मुक्त करने ममय कहत है— प्राय विष्णु क अवतार हैं किन्तु पतिव्रता ने शाप स अपन का भू रण है। (पृष्ठ २६१)

उच्चिवा रामायण म काम विह्वल नारद ढाग विष्णु के अनिमल्ल हान का वणन विष्णि धा काण्ड म दृगा है। कथा म भिन्ना है णिण प्रस्तुत प्र य क विष्णि धा काण्ड अध्ययन का प्रतिम प्रश्न पावती की कथा नारद और परत ऋषि का विष्णु को शाप।

राजा प्रतापभानु और सौदास बल्मापपाद

भागवतपुराण (६ ६ २० ३८) जीव पत्रमपुराण पातात्रण्ड (गोडीय मन्करण) म राजा सौदास का जा वणन है उगम तुलसीदास और कृत्तिवास दानान प्रेरणा ती है। कृत्तिवास न सौदास नाम ही रया कि तु तुलसीदास त उमका नाम प्रतापभानु कर दिया है। राक्षस शत्रु द्वारा राजा ने याचन का रूप धारण कर तथा ब्राह्मण का नर माग परोमने तक की कथा समागता रयती है। शाप म अ नर है। कृत्तिवासी बगला रामायण और पुराणा म ब्राह्मण राजा को १२ वष तक राक्षस रहन का शाप देते ह और मानस म प्रतापभानु को तीग तीन जम तक राक्षस हाने का शाप मिला।

मानस म इस कथा का उपयोग हुआ अभिशप्त प्रतापभानु के उद्धार क लिए रामायणवार क वणन म जीव बगला रामायणवार इस कथा का उपयोग करना चाहत है गगाजन के महत्त्व-वद्धन के लिए। तभी उहान पुराणा क अनुमार ही कथा का विस्तार किया है। यह विरपाथ राजा ब्राह्मण स अभिशप्त हा कर स्वय भी जल ल कर ब्राह्मण का शाप दना चाहता है किन्तु पत्नी क समभान पर जल अपन ही परो पर टात सेना ह जिसस पर जल जाने के कारण वह बल्मापपाद कहलाया। राक्षसत्व की प्राप्ति कर यह राजा वरत नामक एक ब्रह्मराक्षस स गगाजल का महत्त्व नात करता ह जीव य दाना एक मति स गगाजन का एक एक बूद प्राप्त कर शाप स मुक्त हा जात है। बगला रामायण— पृष्ठ २५ २७।

अवतार के लिए देवताओ का विष्णु रतवन

वाल्मीकि रामायण म पुनर्नि-यन क ममय आहृतिधा से लिचकर देवता एकत्र हान ह चहा विष्णु प्रकट होत है और देवताओ के कहने स अवतार लने को प्रस्तुत हा जात हैं।

भागवत पुराण (१० १) के अवतार दत्ता स आनात हाकर पृथ्वी रभाती और राती हुद गी क रूप म ब्रह्मा के पाग गयी। व देवता गण जीव शकर के

साथ क्षीर मागर के तट पर पहुँचकर स्तुति प्रारम्भ करत हैं। ब्रह्मा ने आवाश वाणी सुनी।

भाषा रामायणें भागवत-पुराण के वणन से अधिक प्रभावित जान पड़ती हैं।

असमीया-रामायण म पृथ्वी महित देवता गण क्षीरोदधि के तीर पर पहुँचे जहाँ लक्ष्मी और नारायण अच्यवन तीर अगाध रूप म निवास करत है। स्तुति करन पर व मय-शय्या से नीचे उतर आय। विष्णु न पृच्छा 'तुम्हारी ऐसी दुर्गति क्या?' तब वे रावण के अत्याचारा का वणन करत ह। भगवान आश्वासन दत हैं। असमीया रामायण म क्षीरोदधिवासी भगवान का नाम कृष्ण और विष्णु दोनों लिखा है।

उद्दिष्टा रामायण पर वाल्मीकि रामायण का ही अधिक प्रभाव प्रतीत होता है। पुराणिक यम क समय विष्णु की स्तुति की जाती है। विष्णु की राजमभा लगी है देवता स्तुति करत है और वे अवतार लन का आश्वासन दत हैं। यहीं व मधुकटभ के जन्म और वध तथा अपन अवतारों की कहानी सुनत है। प० (४६ ४७)

बंगला रामायण म वाल्मीकि रामायण और भागवतपुराण का सम्मिलित प्रभाव तो ह ही उनकी अपनी कल्पना भी है। सभी देवता मिलकर ब्रह्मा व साथ विष्णु भगवान के यहाँ क्षीर मागर गये। भगवान एक निश्चित किन्तु उदार शासक प्रतीत हात हैं। व सा यह व। ददताशा क जगन पर उठ रावण क प्रति शोध एव आवेश प्रदर्शन करन लग। ब्रह्मा ने बताया, रावण एसे नहीं मरगा आपका अवतार लना पड़ेगा। अब तो विष्णु बिगड उठे, ब्रह्मा वर देन म ता तुम आय हा जान हा किन्तु फिर सकट जान पर मुझ दुका त हो। विष्णु म वियोग की सभावना क कारण लक्ष्मी रोत लगनी है। विष्णु भी रोत है। तब ब्रह्मा लक्ष्मी को भी जयानिजा हाकर जन्म लेने के लिए कहत है। वसे असमीया रामायण म भी लक्ष्मी प्रश्न करती हैं कि विष्णु के जन्म का पर उनक लिण क्या हागा ह। विष्णु स्वय ही उ ह अया निजा होकर जन्म लेने के लिए कहत हैं। अन्तर्गतना नहीं ह ता। बंगला रामायण म ही भावव्यक्त-पूर्ण वणन अधिक हैं। (बंगला रामायण पृष्ठ ५४)

मानस का वणन भागवत से अधिक माम्य रजता है और राम क ब्रह्मत्व का उन्मथन करत है। गौ देवता और ब्रह्मा यह निश्चय नहीं कर पात कि प्रभु कहीं हैं। शिव उहें सब-व्यापक बताकर यही स्तुति करन के लिए कहत हैं। भागवत पुराण क समान ही आवाशवाणी सुनाया पड़ती है, अच्यवन ब्रह्मा की जगज-वाणी म नरवश धारण का सबल्य सुनायी परता है। प्रभु की राज-व्यापकता प्रकट करन की दृष्टि से तुलसी का यह प्रयोग सभी रामायणों से विशेषताएँ रखता है।

२ पुराणिक-यम—पुराणिक-यम ही रामायण का जन्म हाता है और मुरय क्या प्रारम्भ हो जाती है इसलिए मनी रामायणों की कथावस्तु म समानता भी प्रारम्भ हा जाती है।

विद्वाना का कहना है कि वाल्मीकि रामायण में पहले दशरथ व अशमेघ यज्ञ का ही वणन था पुत्रेष्टि-यज्ञ का वणन बाद में जाटा गया। बाद की राम-कथाओं में केवल पुत्रेष्टि-यज्ञ ही रह गया।^१ अगनीया-रामायण में दाना ही यज्ञ का वणन है।

पुत्रहीन दशरथ का शोक—असमीया रामायण में राजा बहुत चिंतित है, कहते हैं कि सभी यज्ञ पुत्र व विना विष्णु-तुल्य हो जाते हैं। वे यमिष्ठ ने अथ मुनि और दुर्वासा के आदेश व बार में कहते हैं कि ऋष्यशृंग व यज्ञ पराने से पुत्र की उत्पत्ति हो सकती है। बगला रामायण में अपुत्रक होने के कारण राजा का कोई मुत्त नहीं देखना चाहता। जब व पितरा का अर्जा भगवत जनदान करन है ता उनके उष्ण नि श्वासा में यह पानी भी उष्ण हो जाता है।^२ उडिया रामायण में भी अपुत्रक राजा की मना-यथा का मार्मिक चित्रण है। मानस में दशरथ मुत्त न होने से ग्लानि का अनुभव करते हैं।

ऋष्यशृंग वत्सात—वाल्मीकि-रामायण में सुमंत्र दशरथ से कहते हैं कि विभाङ्क-पुत्र ऋष्यशृंग स्त्रिया के सहवास से अपरिचित हैं यदि उन्हें किसी प्रकार लाकर यज्ञ कराया जाए तो पुत्र प्राप्ति होगी। वेश्याएँ मुनि के पास जाकर उन्हें मिष्ठानो का फल बताकर खिलाती हैं और भरमाकर अन्न देश में लाती हैं। वहाँ वर्षा होती है। दशरथ पुत्री शांता से उनका विवाह कर दिया जाता है। वही पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए व निमंत्रित हुए।

बस इतने से सक्षिप्त प्रसंग का चकर पूर्वाचनीय रामचरित लेखको न खूब कल्पना की। वेश्याओं की काम चेष्टाओं—जातिगन चुम्बन कुच स्पश आदि का वणन तथा सामारिकता से अपरिचित ऋष्यशृंग को बुद्धू बनाये जान का राक्षस वणन किया गया है।

असमीया रामायण में ऋष्यशृंग की जन्म कथा नहीं दी गयी किन्तु वेश्याओं की काम चेष्टाओं का वणन है।

१ कामिल बुल्के—रामकथा, द्वि० स० अनुच्छेद ३५६।

२ रघुवश १६७।

३ बस तो मित्र की पुत्री अपनी पुत्री के समान होती है किन्तु शांता दशरथ की पुत्री न होकर मित्र की पुत्री थी। हरिवश मत्स्य वायु तथा वराह पुराणों के अनुसार अगस्त्य चित्ररथ के दो पुत्र थे—दशरथ और लोमपा शांता इन्हीं अगस्त्य दशरथ की पुत्री थी जिन्हें भ्रमवश वाल्मीकि-रामायण में पश्चिमी उत्तरीय एवं गौडीय संस्करणों में जयाध्व नरेश दशरथ की पुत्री माना गया।

४ कहा जनी हृदयर यस्त्र दूर वरि। उच्च कुच भाग ताव दखाव मुदरी ॥
आपोनार उर तान उरत सगाय। कटाक्ष निरीति हामि ताल मुधुवाइ।

छ० स० ४८१ ८२ जाति।

उडिया रामायण में विस्तृत वणन है। सुमन्र कथा सुनाने हैं। कौशिकी नदी के तीर तप रत विभाडक न उबशी का देसा। नमन सौ दय का अश्लील चित्रण, विभाडक का वीथपतन, मदनिका नामक शापग्रस्त अप्सरा मगी द्वारा पान। वह पुत्र जन्म कर चनी गयी। आकाश-वाणी सुनकर रात गिशु का परिचय पाकर विभाडक उसे उठा लाय। उन्होंने पुत्र का वेद शास्त्र का अध्ययन कराया। ऋष्यशृग ने इंद्र का प्रमन्न जानकर वर माँगा कि उनका शरीर रम्य है अतएव जहा जाए वहा पानी बरम।

चम्पावती के राजा लोमपाद ने एक ब्राह्मण का अपमान किया था उसने शाप दिया था कि पानी नहीं बरसगा। बहुत मनाने पर कहा कि ऋष्यशृग के आन पर वट्टि हागी। लोमपाद दशरथ के यहाँ गय। दोनों राजा चितित हुए। वसिष्ठ ने उपाय बताया। जरस्कुणा नामक वश्या के नतत्व में सुन्दरी तरुणी वेश्याओं का दान भेजा गया। वेश्याओं की वशभूपा और प्रसाधन का सुन्दर चित्रण है। माग म प्रकृति का सुन्दर वणन है। विभाडक मठी के वत वक्ष के नीचे गालिग्राम की तपस्या कर रहे हैं—(मुगीन प्रभाव) वान म ताव के कुण्डल म्द्राप और तुनमी की माला तथा अठारह गाठी की शुद्ध म्फटिक माला धारण किय हैं। वश्या स्वभाव वणन मासानुमार वना का वणन ऋष्यशृग और वश्याओं का वणन। अपहृत ऋष्यशृग चम्पावती ले जाय गय लोमपाद स भँटे हुई। वश्याओं ने क्षमा मागी वषा हुई। लामपाद ने दशरथ का बुताया। मुनि ने दशरथ स प्रश्न किय और उनकी पुत्री शांता के वार म जानना चाहा फिर देखने की इच्छा प्रकट की। कथा का देखकर राजा से उसे माँगत भी है। विना किसा सकाच के उसके कट म जपन कठ की माता डान दते हैं। ज्यातिप की गणना का लम्बा वणन विवाह सस्कार। ऋषि विभाडक चम्पावती गय, सम्मानित हुए पुत्र वधू के दजर किय दोनों राजाओं का पुत्र प्राप्ति का वर दिया। अलकार वाद्य वश गान नगरी देश आदि का लम्बा वणन किया है। शबरा का अपव्यय बहुत है। उडिया रामायण के समस्त वणन इसी प्रकार के हैं—

(प० ३१-४१)

बंगला रामायण—बंगला रामायण म भी सुमन ही लोमपाद के यहा ऋष्यशृग के आन का वस्तात सुनाते है। राजा लामपाद के राज्य म अनावट्टि का कारण कुमारी वयस्काभा का रहना बताया है। एक बूढी रत्री बुवनियाँ लेकर मुनि के पास जाती है। इन वश्याओं के हथकड जय पूवाचलीय रामायणा जसे हैं। ऋष्यशृग के पिता विभाडक साम्रघटी और तुनमी की माला लकर तपस्या करते हुए दिखाय गय हैं। उडिया और बगता रामायणा म मुनि तत्कालीन योगिया जयवा ब्राह्मण पुजारिया जस हा गये है। ऋष्यशृग के आने स वट्टि और शान्ता विवाह भी वणित है। इही ने राजा दशरथ के यहा पुत्रेष्टि-यन कराया।

मानस म तुलसीदास ने कथा विस्तार और मयादाहीनता के कारण पूरे

कथानक की उपमा की है। एकदम ऋष्यशृंग बुता दिय जाने हे जीर यन हान लगता है। (१ १८८ ५)

चरु की प्राप्ति और वितरण वाल्मीकि रामायण म स्वयं विष्णु यन म प्रकट हाकर चरु प्रदान करन हे। असमीया म विष्णुतुल्य मुग्ध पक्ष्य बेंगला जीर उडिया रामायण म स्वयं विष्णु प्रकट होन हे। मानस म अध्यात्म रामायण का अनुसरण हान के कारण स्वयं जग्गिदव पकट हाते हे।

चरु क चारु अशा क अनुपात म पूवाचलीय रामायण संगता रखता है किन्तु मानस म भिन्नता है। चरु के अशा से ही चारो भाग्या का जन्म हुआ, अतएव जिस कवि ने चारो भाइया को विष्णु के चार अंश माना है उसने रघुवश और अध्यात्म रामायण क अनुपात चरु क बराबर बराबर चार भाग कराय है। इस प्रकार के अणन म गुणिधा भी थी। किन्तु जा कवि राम तथा उनके भाग्या म नमानुसार उच्चता त्रियाता चाहन थ उहान अशा क अनुपात म समता नहान रखी।

वाल्मीकि के अनुपात म विपन्नता थी। तुलसीदास को वाल्मीकि के अनुपात म एक जापत्ति थी—भक्त शिरामणि भरत का अंश लक्ष्मण से कम हो जाता था। वाल्मीकि रामायण क उत्तर पश्चिम संस्करण पर आधारित रामायण मजरी काय का वितरण तुलसी क मनानुकूल था। उस अनुसार जया-याकाण्ड क नायक भरत का राम क परचाय स्थान मिल जाता है। तत्पुत्र रणाय रामायण म भी ऐसा ही है।

राजिया का चरु प्रदान के ढंग म असमीया और बेंगला रामायणो मे समानता है।

मुमित्रा वचन बद्ध—असमीया म दशरथ का शल्या जीर बकेयी का आधा-आधा भाग दन है। मुमित्रा जाकर पूछती है कि बजा रा रही तो तब दाना अपन अंगा का एक एक आधाभाग उनी देकर अणन न ननी है कि उनक अंश से उत्पन्न हान बाता पुत्र जमश आता रागिया क पुत्रा क गाव है। बंगला रामायण म भी वितरण और वचन-अणन दोगी प्रकार है केवन चरित्र चित्रण म भिन्नता है। मुमित्रा जत्यधिक दीन बनकर दाचना करती है तभी को न्याय पगीकर उम पर अनुग्रह करती है।

१	बीश-या	कक्यो	मुमित्रा	
	राम	भरत	सम्पन्न	अन्नधन
वाल्मीकि रामायण				
रामायण मजरी)	(१/०)	१/८	१/४	१/८
रत्नाथ रामा०)	(१/०)	१/४	१/८	१/८
मानस				
रघुवश अध्यात्म रामा०)	(१/४)	१/४	१/४	१/४
और पूवाचलीय रामायणों)				

ककेयी सोनिया दाह-धरा अपना अधाध इपनिठ दती है कि वह ना अपना साथी बना मक् ।

उडिया रामायण म लिखा ह कि कवउ तीन रानिया न वउ किया, जिहान नही किया उनस राजा जमनुष्ट टुण । राजा न चर वा दा भागा म बटकर प्रथम दा रानिया का किया । कौशल्या न मुमित्रा की आर मकन किया । दागा रानिया न अपन अपन जडाण मुमित्रा का द रिय ।

मानस म राजा दशरथ न पढ़ने बुन का जाधा भाग कौशल्या को दिया, फिर आध का जाधा जवान चतुर्वीण कँवयी का किया । शन चतुष्पाज के भी दा भाग कर कौशल्या और केकयी क हाथ स मुमित्रा का दिलाय ।

गर्भिणा स्वभाव - उडिया रामायण म गभवती रानिया की स्थिति और गमा धान के पश्चात क अनक वन सम्कार आदि का वणन है । बँगला रामायण म भी गर्भिणी के आनम्य, मत्तिका भक्षण और पाण्डुर वण आदि का विप्रण है ।

रीड्य धानरादि क रूप म दवनाना क जम लन का उल्लेख गभी रामायणा म ह ।

राम का जन्म और भागवत का प्रभाव

असमीया रामायण क आदिनाण्ट-लेखक माघबदव वस्तुन कृष्णभवन थ । बँगला रामायण-लेखक कृत्तियाम पर भी भागवत का प्रभाव पडा हागा । अनएव राम जन्म का वणन कृष्ण-जन्म जमा हो गया है । भागवत के इस प्रसंग का प्रभाव संस्कृत क अथ पुराणा आदि पर भी पया है ।

भागवत म जन्म क उपरान्त कृष्ण देवकी-वसुदेव का अपना चतुर्भुज रूप दिखाने है । परम-पुराण क उल्लेख पर भागवत पुराण का प्रभाव है जन्म भगवान् अपना रूप स्वप्न म दिखाने हैं । असमीया और बँगला रामायणा म भी जन्म के पूर्व स्वप्न म राम कौरव्य का चतुर्भुज रूप दिखाने हैं । मानस म क भागवतपुराण एव अध्यात्म रामायण के अनुसार जन्म क उपरान्त प्रत्यक्ष ही कौशल्या का चतुर्भुज-रूप दिखाने है । कौशल्या दसकर भीन हुइ उहान विनय की, तउ राम शिशु रूप धारण कर रान लग । उडिया रामायण म यह वणन नही है । जस्य राम क पच्छी आदि सम्कार और ज्यातिप-गणना का बार-बार वणन है ।

रावण की चिन्ता—रघुवर्ण-वाच्य म वणित है कि रावण के मुकुट के मणि के बहाने माना राक्षसा की लक्ष्मी आसू बहाने लगी ।

इसका प्रभाव असमीया और बँगला रामायणा पर है । असमीया रामायण म रावण का मणियाँ गिनी हैं और बँगला रामायण म मुकुट ।

जसमीया—भूमिते वेक्त येदे भला दामोदर ।
 खसिल मायार मणि राजा रायणर ॥ ६७३ (छन्द)
 बगला—आचम्बिते रावणर सिहासन टले ।
 मायार मुकुट खसि पइ भूमि तले ॥ पृष्ठ १८

बंगला रामायण पर यहाँ भागवत का प्रभाव भी है। भागवत में कृष्ण-जन्म का उपरांत योगमाया की आकाशवाणी द्वारा अपन सहारण्य का जन्म जान कर कप्त नव जात शिशुजी के वध के लिए सन्नद्ध हो गया था। उसन कई चर भी राज के लिए भेजे थे।^१ बंगला-रामायण में भी आकाशवाणी हुई जिसे सुनकर रावण ने गुप्त तारन को पता लगान भेजा। (पृष्ठ ५६)

सीता जन्म

सम्भवत राम के जीवन पर अधिक जार दन के कारण सीता का जन्म-वत्तात कुछ उपक्षित था। वाल्मीकि-रामायण के प्रक्षपो एव अथ रामकथा साहित्या में इस कमी को अनेक कल्पित कारणाना द्वारा पूरा किया गया। साम्प्रदायिक दृष्टिकानो का भी प्रभाव पडा है। जनक के अतिरिक्त दशरथ और रावण भी सीता का पिता मान गये हैं। किन्तु भाषा रामायणा में वाल्मीकि रामायण के भूमिजा और वेदवती का पुन जन्म वाले प्रसगा का अनुसरण हुआ है। की बुल्के के अनुसार ये दाना प्रसग प्रक्षिप्त है किन्तु हे प्राचीन।^२ मेरी समझ में सीता जनक की आरस पुत्री थी वदिक साहित्य में कृषि की अधिष्ठात्री देवी सीता का उल्लेख है। सीता शब्द का अर्थ हल से खींची हुई सिरा भी होता है। वदिक सीता हल से खींची हुई सिरा का मानवीकरण है। जनक पुत्री का नाम भी सीता या लगता है कि सीता का सीता — हल से खींची हुई रेखा से सम्बन्ध बिठान के लिए उह भूमि में उत्पन्न माता जान लगा। एस कई उदाहरण दिये जा सकत है कि किसी का नाम उसकी जन्म कथा का कारण बन गया।^३

वाल्मीकि रामायण के वणन के अनुसार—

(१) रावण से बदता सन के लिए वेदवती ने सीता का रूप में जन्म लिया। वेदवती और सीता के साथ अभिन्नता दिखायी गयी। किन्तु दन दाना को ही लक्ष्मी नहीं माना गया। वे नारीणामुत्तमावधू हैं।

(२) सीता भूमिजा और जाकपालिता है।

चारा भाषा-रामायणा में सीता को भूमिजा और जनकपालिता तो माना ही साथ में लक्ष्मी भी मान लिया गया। वेदवती वाला प्रसग सभी में नहीं है।

१ भागवतपुराण, दशम अध्याय प० ४

२ श्री वामिन बुल्के—रामकथा, द्वि० स०, अनु० ४०७

३ श्री वामिन बुल्के—रामकथा द्वि० स० अनु० ४०८।

वदवती—वाल्मीकि रामायण के अनुसार कुशध्वज ऋषि की पुत्री वेदवती नारायण का वर रूप में प्राप्त करने के लिए तप कर रही थी। एक दिन रावण ने उस देवी को देखा। उसने मुग्ध होकर उसके कण्ठ में चढ़ा। वेदवती अपने को मुक्त कर अग्नि में जल कर दग्ध हो गयीं मृत्यु का भय वह मूना दे गयी कि रावण का नाश करने के लिए वह जयानिजा होकर जन्म लगी। जब राम को विष्णु माता जान लगा सीता भी लक्ष्मी हो गयी। वदवती नारायण का वर रूप में प्राप्त के लिए तप कर रही थी, अतएव वदवती सीता और लक्ष्मी अभिन्न हुई। यह अभिन्नता देवी भागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराणों में मिलान लगती है।

असमोया रामायण के माघवदव-वृत्त आदिवाक्य में वेदवती का नाम नहीं आया किन्तु वचन से प्रतीत होता है कि वदवती की आर ही संकेत है। परम ईश्वरी लक्ष्मीदेवी पवत पर तपस्या करने लगी थी लक्ष्मण ने तप कर रथ में बिठा लिया। सीता लक्ष्मी ने शाप दिया कि तप बंधन का जन्म ले जा रही हैं। वे मागरी में कृत पत्नी। पृथ्वी ने जादर-महित गाद में धारण किया। पृथ्वी ने जहाँ लक्ष्मी का गम में धारण किया वहाँ मिथिला नगरी हुई। जनक ने वचन कर हल जोता उसी समय रक्त-वण सुय-मा द्विज निजना। पान्थन पर कथा गत लगी उसे जनक निवास में साथ। हन की मित्र से उत्पन्न है। नये कारण उसका नाम सीता हुआ। (पृष्ठ ४६ ४७)

बेंगला रामायण के दीनचन्द्र सेन और रामानन्द चट्टोपाध्याय द्वारा सम्पादित सम्स्करण में इन प्रकार का वचन है—जिस स्थान पर वदवती ने प्राण त्याग किया था मिथिला नगरी बस गयी। सन्तान की इच्छा से हल जोतने समय जनक का एक मित्र (अश्व) मिला। उससे एक कथा निकली। बेंगला रामायण कुछ अन्य सम्स्करणों में एक और वचन है जिसका वचन अक्षरा प्रसाद नाम से दिया जा रहा है।

उडिया रामायण के उत्तरकाण्ड में वदवती की कथा वर्णित हुई है। इस कथा का कुछ विस्तार है। वदवती का आस्थान बेंगला-रामायण के भी उत्तरकाण्ड में पूरा आया है, अतएव इन दोनों रामायणों के आग्यान का तुलनात्मक-अध्ययन उत्तरकाण्ड के अन्त में दिया।

अक्षरा प्रसाद—असमोया रामायण के मुख्य कथा लेखक माधव कदली ने सीता अनुभूया मन्दा के समय सीता जन्म के एक नये वचन का वचन किया है। अपुत्रक जनक भाया सहित या भूमि जातने गये। उहान आकाश में मेनका अप्सरा नामक माहिनी कथा दन्वी उस रूप जनक बहुत दुःखी हुए। उसी समय आकाशवाणी हुई

१ बेंगला रामायण - रामानन्दी-सम्स्करण पृष्ठ ५५।

बेंगला रामायण—दीनचन्द्र सेन सम्स्करण, पृष्ठ ६३।

विषय भूमिजोता सुभगा मारण पूरा हाता । सुभगी क ममात गतात मिलगी । (२६४६ ४८ ६०)

उडिया रामायण का वणन भी ंगी प्रकार है । जगत मीना ंग क विषय म यताने हुए कहत हैं—गहगा वण पूरा पुत्र की कामता म यत कर । ममय मीन आवाश माग स मावा का जा । हुए दगा यह शाप मुक्त हाकर जा रही थी । उग देस कर इच्छा हुई वि इसी के ममात पुत्री प्राप्ता हा । मावा त कहा श्रद्धा क शाप स मुक्त हाकर जा रही है नहीं त इच्छा पूरी करनी । जगत त यज्ञभूमि पर हा चनाया मजूपा म कया मिनी उस मीना ताम श्या । श्रद्धा न कहा इमर र्पा विष्णु हाग यह अपातिता कमता है । उहात रिगु की पहता तें लिए धनुष की सहायता लन क लिए कहा ।

इन दोना रामायण-तरात न वालमीकि रामायण के गोपीय सहरण स प्रराण ली है । वही भी कथा का स्थान अनुभूया मीना गवात है । अतामीया रामायण का प्रसग इसक अधिष निषट है ।

बंगला रामायण के सुबोध मजुमदार द्वारा सम्पादित सस्वरण म इस प्रसग को कुछ परिवर्तित कर प्रस्तुत किया गया है । अपतरा माता क स्थान पर उवशी है एष जनक के हृदय म वात्सल्य क स्थान पर उस दगकर प्रणय-भाव उलात होता है । हल जोतत समय जनक आवाशमाग स जाती हुई उवशी को दगकर सगलित हुए । उस समय पथ्वी ऋतुमती थी जतएष वह गभवती हो गयी । उरास ही डिम्ब का निर्माण हुआ । डिम्ब प्राप्ति की कथा अय सम्पादका ने भी लिखी है प्रतीत होता है जशलीलता के भय सेजनक-उवशी प्रसग वर्जित किया गया है ।

मानस म सीता राम के जम विषयक विशी भी प्रसग का वणन नहीं है । तुलसी ऐसे अवसरो पर मीन रहन हैं । वंश जीर नारद न विष्णु को शाप दिया था कि तुम भी स्त्री के विरह म दुखी होकर नर-रूप म भटकोगे । इसी को सत्य करने के लिए उहोन अवतार लिया । इस प्रकार सीता लक्ष्मी हैं । मनु शतरूपा को वर देते समय राम अपनी आदि शक्ति के साथ है । ये जादि शक्ति सीता राम के साथ गिरा अरथ जल दीचि सम अभिन हैं जतएव दोनो का एक साथ अवतीण होना आवश्यक था ।

धमिगप्त गुह चडाल की कथा—कवल जममीया एव बंगला रामायणो म गुह के साथ मत्री का वणन आया है । कुछ विभिन्नता क साथ दोनो म सगानना है दोनो का उगम एक है ।

असमीया रामायण मे— दशरथ चार पुत्रो के साथ गगा स्नान करन गये । गुह पहले स्नान करना चाहता है । युद्ध मे व री होकर जब वह राम का दखता है तो उसे

स्मरण होता है कि वह पहले ब्राह्मण था। जब भगीरथ गंगा लाय तो उसने भव किया कि ब्राह्मण ज्ञान के कारण गंगा आदि नीचे उसके ही शरीर में हैं। गंगा ने उसे चंडाल ज्ञान का शाप दिया।

बंगला रामायण में दशम्य सूय ग्रहण के अवसर पर राम-सहित गंगा-स्नान करने चले। नारद ने बताया गंगा जिनके चरणों में निकली है वह भगवान् तुम्हारे घर में है। दशम्य लौटने से ता राम ने गंगा का महत्त्व समझ कर उन्हें गंगा-स्नान के लिए पुनः सम्मन कर लिया। गुह ने तीन-कोटि मैत्रिकों के साथ मांग रोक कर कहा, तुम वाग्-वार यात्रा कर मरा राज्य उजाड़ देते हो। अथ पथ से यात्रा करो अथवा राम का दिवाओ। दशम्य ने राम को छिपा कर उसपर वाण-वधा की फिर भयकर युद्ध के परधान उस पाशुपत से बांध लिया। बंधे ज्ञान पर भी वह पैरों से शर-मघान करता रहा। भक्त के कहने पर राम कुतूहल वश उसका कौशल देखने के लिए भक्त हैं। राम का देखने ही वह प्रणाम कर कहता है कि मैं अभिशप्त वामदेव हूँ। राम उस रात देख रात ही जीर अग्नि बना कर मित्रता करते हैं। गुह अपने पूर्व-ज में कर वत्तान्त बताता है। दशम्य अचमुनि के पुत्र का मार कर वसिष्ठ पुत्र वामदेव की शरण में आया। वामदेव ने तीन बार राम-नाम लेने के लिए कहा। वसिष्ठ को जब तात हुआ तो वह पुत्र से अप्रमत्त हुए कि केवल एक बार राम कहने में कोटि ब्रह्म हत्याओं के पाप में मुक्ति मिल जाती है, तीन बार राम-नाम लेने की वया आवश्यकता थी जाओ तुम चलाए हो जाओ।

दोनों में कथा की सम्मानना यह है कि गंगा-स्नान के लिए जाते समय गुह से युद्ध होता है वह बन्धी जाना है। राम के दशन से उसे अपने पूर्व-ज में का ब्राह्मणत्व याद जाता है। अन्तर है युद्ध के कारण एवं पूर्व-ज में-वत्तान्त में।

दानों ही रामायण में कथा का उद्देश्य है—१ गंगा माहात्म्य २ उससे भी वह कर राम अथवा रामायण का माहात्म्य और ३ लेखकों का कुलीनता-बोध। मन्वन्त चंडाल के साथ राम की मन्त्री इन लेखकों को खटकी होगी इसलिए अपने से पूर्व प्रसिद्ध किमी आख्यानों को लेकर इन्होंने दिनाया कि वह चंडाल ने हाकर अभिशप्त ब्राह्मण है।

उद्धिया रामायण में गुह में मन्त्री का वणन अयोध्याकाण्ड के प्रारम्भ में ही हुआ है। राम-लक्ष्मण मैत्रिका मन्त्रित हाका करता हुए मृगया में रहे थे। वे अनेक मृगों को मार कर तमसा पर पहुँच। राम मांग भूत गया। वहाँ गुह नारक शबर से भेंट हुई। वह शृंग वनपुर के राजा शबर का अधिपति था। राम ने उस वन से लगाकर प्राण सत्वा कहा। यही लक्ष्मण से भेंट हुई। राम ने गुह का आतिथ्य ग्रहण किया।

उत्तराद्ध

विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण की याचना तथा राम के जनकपुर पहुँचने तक की कथा—राक्षसों के उपद्रव से पीड़ित विश्वामित्र दशरथ से राम-लक्ष्मण की याचना करन हैं राजा दशरथ पुत्रस्नेह के कारण बड़ी कठिनाई से राम को दान के लिए प्रस्तुत होते हैं। विश्वामित्र ने उन्हें अस्त्र-शस्त्र संचालन की शिक्षा दी। रामलक्ष्मण ने ताड़का सुबाहु जादि राक्षसों का वध किया। अहल्या का पवित्र करत हुए वे जनकपुर जा पहुँच।

वाल्मीकि-रामायण के अनुसार मुख्य कथा इतनी है। यदि आदिकाण्ड संपूर्णत प्रक्षिप्त हो तो कथा का यह अंश प्राचीनतम प्रक्षेप होगा। यह अंश आधिकारिक कथावस्तु से सम्बंधित है किन्तु वाल्मीकि रामायण में अनेक प्रसंग जोड़ दिये गये हैं जिनका सम्बंध आधिकारिक कथावस्तु से नहीं सा ही है।

अयोध्या से जनकपुर तक पहुँचने के माग में जितने स्थान मिले उनका पौराणिक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। कई पौराणिक आख्यान इसमें जोड़ दिये गये हैं। भाषा रामायणकारों में बँगला और उडिया रामायण लेखकों ने इन प्रसंगों के साथ कुछ अर्थ प्रसंग भी जोड़ दिये हैं। अक्षयमीया रामायण में इनका उल्लेख कम है। मानस में कथावस्तु के संगठन का अच्छा परिचय मिलने लगता है। उसमें या तो प्रसंग जाये नहीं हैं अथवा वही एकाध पक्ति में उनकी आर सकेत कर दिया गया है।

वाल्मीकि रामायण के मुख्य प्रसंग ये हैं—

- (१) विश्वामित्र द्वारा रामलक्ष्मण को बला-जितवला विद्या सिखाना।
- (२) गंगा पार कर सरयू का परिचय देना।
- (३) ताड़का का पूव वत्तात एवं वध।
- (४) रामलक्ष्मण को अस्त्रदान।
- (५) सिद्धाश्रम का पूव वत्तात तथा वामन की कथा।
- (६) यत्न-रक्षा करत हुए राम द्वारा सुबाहु जादि का वध मारीच का फँसना।
- (७) जनकपुर के लिए यात्रा सोन नदी पर विवास।
- (८) विश्वामित्र के वश का वणन।
- (९) कुशनाभ की कथा का कामविह्वल पवन द्वारा अभिशप्त हाकर बुझाए होना कायकुञ्ज दश का नामकरण, चूली ऋषि और सामदा गंधर्वों की मन्त्रान ग्रहदत्त (कपिला का शासक) द्वारा कथा का वरण कर उन्हें शापमुक्त करना।
- (१०) इही कुशनाभ से गांधी की उत्पत्ति। विश्वामित्र और उनकी बहिन मत्स्यनी का वणन।

- (११) गया और उमा । दो बरना का वगन, उमा का देवताओं को शाप कातिकेय का जन्म ।
 (१२) सगरवश अश्वमेध सगर-पुत्रा का नाश गया आनयन का प्रयास आदि ।
 (१३) विशालापुरी का इतिहास—दिति अदिति का वत्तात समुद्र मथन ।
 (१४) ४६ पवना की उत्पत्ति ।
 (१५) अहल्योपाख्यान ।
 (१६) शतानन्द द्वारा विश्वामिन वत्तान-वचन । शवना के कारण वसिष्ठ से

युद्ध । ब्राह्मशक्ति स पराजित हाकर ब्राह्मण बनने का प्रयास । निशकु अम्बरीष शुन शप मेनका रमा आदि प्रसंग । मुख्य प्रसंगो के तुलनात्मक अध्ययन के पूव पूनचलीय रामायणो के अवान्तर प्रसंगा का अध्ययन अधिक उपयुक्त होगा ।

प्रसमीया और बंगला रामायण का प्रारम्भ अथवा रघुवण अथवा पदम पुराण के पाताल-खण्ड (गौनीय सस्करण) के आधार पर हुआ है अतएव उनम से अविकाश अवान्तर कथाएँ गहीत हुई हैं । इन रामायणो म वाल्मीकि रामायण की उपयुक्त प्रासंगिक कथाएँ नहीं हैं । प्रसमीया रामायण म कायकुञ्ज देश और ४६ पवन की उत्पत्ति का इतिहास है ।

बंगला रामायण म ४६ पवन की उत्पत्ति भूमि का नामाल्लेख मात्र है । इसम राजा हरिश्चन्द्र वत्तात और सगर के अश्वमेध तथा गया आनयन का विस्तृत बणन अवश्य है किन्तु ये प्रसंग राम-जन्म के पूव हा आये हैं ।

उडिया-रामायण की अप्रामाणिक कथाएँ

उडिया-रामायण की अनन्त कथाएँ वाल्मीकि रामायण के अनुसार होत हुए भी उनम स्वतन्त्र कल्पना की हुई हैं बुद्ध और भी प्रसंग त्रय पुराण से लिए हैं । (१) सुविदत्य और इन्द्र—विश्वामित्र गया पार करके वन का बणन करत हुए कहते हैं कि जब इन्द्र गुचि नामन दत्य से हार गया तो उन्होंने अपनी दो पत्नियों शची और गुची स दत्य की मन्त्री करा दी और उसका मम-स्थान नात कर उस मार डाला । विश्वासघात करन स इन्द्र न यहाँ रहकर तपस्या की और पवित्र हो गया । (प० ६६)

(२) अगस्त्य ऋषि प्रसंग—मित्रावरण के पुत्र अगस्त्य तपस्या कर ब्रह्मपि हुए । पितृग न कटा पुत्र क बिना तप करन स बाई लाभ नहीं । अगस्त्य न विदम्ब के राजा मे उमकी पुत्री मांग कर गा घन विवाह किया । पुत्र हाने पर क तपस्या करने चले गये । तपस्या का रूप तीयवाया है ।

घातापि वातापि राक्षसो वा वध वाल्मीकि रामायण के अनुसार है। समुद्रपान और विन्ध्याचल की बाढ रोकने के प्रसंग भी हैं। (प० ६७ ६८)

(३) कायकुब्ज देग तथा विश्वामित्र और परशुराम—क्याओ का कुब्जा होना उनका उद्धार आदि वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही है। इही क्याओ के पिता कुशनाभ के पुत्र कौशिक उनके गाधि तथा गाधि के विश्वामित्र हुए। विश्वामित्र की बहिन सत्यवती रचिक (वाल्मीकि-रामायण में ऋचीक) ऋषि का व्याही गयी। उनके पुत्र जमदग्नि और उनके परशुराम। सत्यवती नदी हाकर कौशिकी कहलायी। उमी के तट पर विश्वामित्र न तपस्या की। (प० ७८-८०)

(४) वामन अवतार और गगा जन्म कथा—माग में वामन की पापाण प्रतिमा को जन्म देखकर राम ने प्रणाम किया। विश्वामित्र ने बलि के यज्ञ और वामन के तीना लोका के नापन की कथा सुनायी।

जिस समय वामन ने विशाल-रूप धारण कर एक पर से समस्त स्वर्ग-लोक का नापा ब्रह्मा ने उनके चरण प्रक्षालित कर जल कमडल में भर लिया, यही गगा है। मरुपुत्री मेनका गगा और उमा ह्रस्वत की दा सतानें—गगा और उमा का भी वणन है। (प० ७३ ७६)

(५) सगर-पुत्रगण और गगा घानघन—सगर पुत्रों की दुष्टता दलित करने के लिए इंद्र ने यज्ञीय-अश्व चुराया। नारायण कपिल बन। सगरपुत्र खोज करते एक दिग्गजा से पूछते हुए कपिल के आश्रम में पहुँचे। अपमान करने पर कपिल ने क्रुद्ध होकर शाप लिया—न मरा न जीवित रहा।

शाप के कारण—राम ने प्रश्न किया सगर पुत्र क्या अभिशप्त हुए? विश्वामित्र शका-समाधान करते हुए कहते हैं कि (१) सगरपुत्र अयाय करते थे। वे ऋषि तपचारी थे और ब्राह्मण का मारते थे। इन्होंने पृथ्वी खाद डाली उससे दैव-सभा में गुहार की। इसी लिए विष्णु ने कपिल बनकर शाप दिया। (२) जगत्स्य ने समुद्र पी लिया था वह खाली था। उसके भर जान की आवश्यकता थी। गगा द्वारा भरने के लिए भा सगर पुत्र अभिशप्त हुए। समुद्र सूखने का कारण इस प्रकार था—समुद्र वासी कान्यकण जनवध करने थे। ब्रह्मा ने शंकर में असुरों के वध के लिए कहा। शंकर चिन्तित हुए कि कम वध करें। विष्णु ने शस्त्रामुखवध किया था वे ही इनका भी मार सकते हैं। विष्णु के कर्म में जगत्स्य समुद्र पी गये अब दैवताओं ने राक्षसों का मार देना।

भगीरथ-तप—सगर का एक पुत्र अश्वत्थामा (वाल्मीकि रामायण में अश्वत्थ) उगका पुत्र नरेश्वर (वाल्मीकि रामायण में अश्वत्थामा) तृतीय भगीरथ। भगीरथ ने शापन में तपस्या की। ब्रह्मा ने प्रकट शक्ति गमात्रन की उत्पत्ति बनाकर विष्णु के स्मरण के लिए बना। यही उगीमा के पुद्ग तीर्थों का वणन है। विष्णु के कहने पर बनरिणा के तट पर यागुमार्तग स्थापित कर रचिक के माथ घृत्नीय जना

कर तपस्या की। शंकर ने गंगा का धारण किया। भगीरथ के स्तुति करने पर उह जटाआ से छोड़ा। गंगा मेरु-पर्वत पर लुप्त हुई स्तुति करने पर पुन प्रकट हुई।

ऐरावत मानभग—मेरु पर्वत पर तुप्त हो जाने पर गंगा ने भगीरथ से कहा, यदि चार दाता वाला ऐरावत मेरु-पर्वत फोड़ दे तो मैं बाहर जा जाऊँ। ऐरावत तयार हुआ किन्तु बोला कि गंगा का उसके साथ रमण करना होगा। भगीरथ चिंतित हुए गंगा मा से ऐसी बात कैसे कहे। गंगा ने रागवन से सब जान लिया बोली—'उससे कहना मैं अपना नाम बहन करने वाली स्त्री हूँ निबल पुम्प के पास नहीं जाती। तुम तो बलवान हो। भगीरथ बोल, ऐसा कमे बहू मेरे लिए दोनो बडे हैं। समभान पर गय। ऐरावत का एक दाँत टूट गया। वह गंगा की धार में बहन लगा। जहा रखा वहा हस्तिनापुर नगर बसा।

काशी के तीर्थों की कहानी का विस्तृत वर्णन है।'

ब्रह्मचारी और शुडनी प्रेमकथा—प्रयाग-तीर्थ में मद्र मन का जाप करने वाले एक युवा ब्रह्मचारी ने एक युवती शुडुआणी (शुडनी) का देखा। वह विचलित होकर बोला—सुदरी प्राणा की रक्षा करा। उमन कहा पूर्णिमा के दिन ग्रहण है उसदिन सभी स्नान करने जाएंगे पति मदिरा बचन जाएंगे तभी रतिरग हा सकेगा। नित्य गंगा स्नान करने से वह उज्ज्वल होकर सुदगी हो गयी थी। ग्रहण के दिन दाना न रमण किया इसी बीच स्त्री का पति आ गया। ब्रह्मचारी को माली मदिरा भाड में बिठा कर वह बाहर आयी। दोनो स्नान कर लौटे ता पति न खाली भाड में मदिरा भर दी। ब्राह्मण ब्रह्मचारी न शरीर के दसा द्वार राककर मदिरा भीतर न जाने दी। वह मर गया। शंकर ने मरने से पूर्व उनके कान में राम तारक मन कहा, जिससे वह तर गया। (पृष्ठ ६५ ६६)

गंगास्नान एक राम-नाम के महत्त्व-वर्द्धन के लिए कथा की कल्पना हुई।

गंगा के तीर्थों का वर्णन—जाराणसी के तीर्थों का विस्तृत वर्णन है, लगाता है लखक वहाँ गया होगा। काउंगी दश जाकर गंगा उत्तर की ओर चली। भगीरथ ने प्राथना की ता बानी बाजा बजाते चले। भगीरथ काहाल बजात हुए चल जिससे गंगा का नाम काहालिया गंगा हुआ। शान बहन के धारण पदमावती नाम हुआ। शची के कहने से उहान इन्द्रायणी नाम धारण किया। ब्रह्मपुत्र म मीनी, भागीरथी नाम हुआ। सगर-पुत्र तर गय। चत्राकार घभी इसनिए चत्रीघाट नामकरण। श्वेतद्वीप मुकुलकड और गंगासागर तीर्थ आदि का भी नाम जाया है।

बेंगला रामायण का गंगावतरण—उनिया और बेंगला रामायण का इस प्रमग में समानता है। गंगा की जन्मकथा में अंतर है साथ ही गंगा माहात्म्य-वर्द्धन मन्व-घी सयुक्त आभ्याना में भी अंतर है। ऐरावत मानभग के वर्णन में समानता है।

(६) सागर मथन पवन-उत्पत्ति—दक्ष प्रजापति के ६० बच्चे थे, उनमें से उसने १३ बच्चे बश्यप ऋषि का दी इनमें दो का नाम दिति और अतिथि था। इन्हीं की सन्तान राक्षस और देवता। दोनों न समुद्र मथन कर १४ रत्न प्राप्त किये, राहु का सिर काटा गया वितरण आदि के सबध में जो युद्ध हुआ उसमें दत्य मारे गए। दिति दुःखी हुई उसने बश्यप से सातान का वर प्राप्त किया। इन्द्र चिंतित हुआ उसने अवसर पाकर दिति के गर्भ में घुस कर शिशु के ४६ पड किये वह फिर भी न मरा यही पवन हैं। (पृष्ठ १०६-१०)

(७) विश्वामित्र की कहानी—उडिया रामायण का यह प्रसंग वाल्मीकि-रामायण के प्रसंग से समता रखता हुआ भी कई स्थानों पर भिन्न भी है। इसमें वसिष्ठ, त्रिशकु हरिश्चंद्र मालव और जम्बरीश जाति की कथाएँ भी जुड़ी हुई हैं।

(क) सत्यवत त्रिशकु—शत्रुता गाय के कारण वसिष्ठ और विश्वामित्र का संपर्क चिरपरिचित है। इससे आगे उडिया रामायण का वर्णन भिन्नता रखता है। वाल्मीकि रामायण में विश्वामित्र अपनी स्त्री को लेकर दक्षिण दिशा की ओर जाकर तप करने लगते हैं और उडिया रामायण में वे स्त्री का तपनाशी राजा कृष्णपारि के यहाँ छोड़ जाते हैं। वाल्मीकि रामायण में त्रिशकु सत्यवाती और जितन्द्रिय था। वह वसिष्ठ से वन का वर लेने मग्न जाना चाहता था। वसिष्ठ पुत्र ने गुह (वसिष्ठ) की बात न मानने के कारण त्रिशकु का ब्रह्मण्डल का शाप दिया था। उडिया रामायण में वर्णन भिन्न है। त्रिशकु का पुत्रनाम सत्यवत था वह राजा कृष्णपारि का पुत्र था। अयाध्याय में एक कुमारी ब्राह्मण का नाम था जो वर की प्राप्ति न हो सकी सत्यवत का उमक साथ प्रेम हो गया। ब्राह्मण के शिष्यवत तप पर राजा ने सत्यवत का ब्राह्मणों के साथ ब्रह्मण्डल बन कर वन में रहने का दंड दिया। सत्यवत वसिष्ठ से कहता है कि ब्राह्मण शत्रुद की कथा न सचता है ता शत्रुद ब्राह्मण की कथा क्या न उ यह अश्याय है। वह वन में मटी बना कर रहने लगता है।

उसके तीन पाप—राजा कृष्णपारि विश्वामित्र की स्त्री की अपराध करना भूल गया। इसके अज्ञान पडा। वह भ्रमा भरन लगी। उमक पुत्र का बचना चाहा किन्ता न नहा शरीर। सत्यवत अज्ञान पर न गया। उमकी गव पूजी जब समाप्त हो गयी ता एक दिन नाराच में वसिष्ठ का गाय चोर कर उमक मास को मृगमास बना कर विश्वामित्र के यज्ञ का गिरा दिया। तान पाप करने के कारण वसिष्ठ ने सत्यवत का नाम त्रिशकु रखा।

आगे त्रिशकु के दो मन्त्र गीत पाठ में उडिया रामायण वाल्मीकि रामायण में बहुत-कुछ समानता रखता है। विश्वामित्र ने वन का गवाही कर कई ब्राह्मणों का निर्मात्र किया किन्तु वसिष्ठ ने उम मास में मोग किया। विश्वामित्र ने दृष्ट होकर

शूद्रा को ब्राह्मण बनाकर चाग वेद पढाये। अथर्ववेद के मन्त्रा से यज्ञ कराया। बहुत ऋषियों के बाद देवता त्रिशकु को स्वर्ग में समादत्त कर लेते हैं।

विश्वामित्र का भेनका-द्वारा तप भंग, रश्मा का विश्वामित्र का शिला होने का शाप, विश्वामित्र का भयकर तप उसमें राजपि और महर्षि का पद पाना, अन्त में वसिष्ठ द्वारा महर्षि पद स्वीकार कर लेना आदि वाल्मीकि रामायण के अनुसार है। उडिया-रामायण में स्थान-स्थान पर स्थानीय प्रभाव दृष्टिगत होता है जैसे कि मनका मुख में लगी हुई हल्दी घाने के बहाने अपने नग्न अंग विश्वामित्र को दिखाती है। उड़ीसा में स्त्रियाँ अपने मुख पर हल्दी मला करती हैं।

ब्रह्मपि-पद की प्राप्ति के पूर्व के तीन प्रसंग और हैं।

(ख) हरिश्चन्द्र वत्तात—यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण से भिन्न है। राजा कृष्णपारि ने सत्यवत (त्रिशकु) के पुत्र हरिश्चन्द्र को राज्य दिया। हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र के तप का प्रभाव देख कर विश्वामित्र से राजसूय यज्ञ कराना चाहा। उन्होंने राज्य विश्वामित्र को दान कर दिया। दक्षिणा के लिए अपने को पुनः-सहित बचने काशी आये। यम ने चंडाल का रूप धारण कर एक लाख सुदृढ स्वर्ण में खरीदकर गुजर घराने के लिए कहा। इंद्र ने ३ लाख में स्त्रीपुत्र का खरीद लिया। विश्वामित्र न धन लेकर राजा का राजसूय-यज्ञ की फल प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। उन्होंने धन अपने नाम न रखकर विन्वेश्वर को देकर भोगराग मंडप बनवाया और कोटि तप स्वी मठ में अर्चिष्ठित कराया।

बंगला रामायण से अन्तर—उडिया रामायण में हरिश्चन्द्र को सत्यवत (त्रिशकु) का बेटा कहा गया है और बंगला रामायण में हरिबीज का बेटा हरिश्चन्द्र स्वयं ही त्रिशकु बनता है। हरिश्चन्द्र के विश्वामित्र द्वारा अभिशप्त होने का कारण भी भिन्न है। दोनों ने ही भिन्न भिन्न आख्यान जोड़े हैं। उडिया रामायण में हरिश्चन्द्र के पुत्र के सपदश का भी वर्णन नहीं है।

(ग) अग्निप्ल विश्वेदेवा—विश्वामित्र और वसिष्ठ पक्षी बन कर भयकर युद्ध कर रहे थे। देवताओं द्वारा भेजे गये पंच विश्वदेवाओं ने आकर विश्वामित्र को फटकारा। विश्वामित्र ने उन्हें शाप दिया कि पाण्डवों के पुत्र होकर तुम्हें १२ रूप धारण करना पड़ेगा और अश्वत्थामा द्वारा मारे जाकर उद्धार पाओगे।

(घ) गालव का इड—विश्वामित्र को यज्ञ के उपलक्ष्य में दक्षिणा देने का अहंकार दिखाने से मुनि ने क्रुद्ध होकर ८०० मुलक्षण घोड़े भाग दिये। राजा परा पर गिर पड़ा, तब क्षमा कर दिया।

(ङ) अम्बरीष गुन शेष—अम्बरीष द्वारा नरमेघ यज्ञ का आयोजन, इंद्र द्वारा मुलक्षण पुरुष की चारों, उसके स्थान पर चोड़िताय (वाल्मीकि रामायण में ऋचीक) के तीन पुत्रों में बीच बाने गुन शेष का अर्थ, गुन शेष का विश्वामित्र की शरण में जाना, विश्वामित्र का अपने पुत्रों से गुन शेष के स्थान पर अपने को बनि दान क

लिए महारा और तिगो भी पुत्र त त तयार हाने पर प्रुद्ध हाता, चुन वष का मन दार उसकी रथा करना आदि वाल्मीकि रामायण क अनुसार हैं ।

ताडका-वध

विश्वामित्र राक्षसा स यन की रथा त तिम राम-लक्ष्मण की याचना करने राजा दशरथ क पास जात है । दशरथ अत्यंत अनिच्छा मत्र शात्रपूण हृदय म ही माना पुत्र विश्वामित्र का गोपत है । एमा वणन मभी रामायणा म है ।

बगला रामायण म विश्वामित्र प्रचक्षित हाने हैं । दशरथ पहन उह राम-लक्ष्मण के स्थान पर भरत शत्रुघ्न दत हैं । विश्वामित्र न वन के दो भागा का उल्लस्य किया, भरत ने डर कर सुगम माग चन लिया यही भण्णपोड हा गया और विश्वामित्र प्रुद्ध होकर अधोघ्या त्रीट पडे । अत म राम लक्ष्मण का साथ तवर लोट । राम ने दो मार्गों म ताडका वाला माग चुना । असमोया रामायण म भी राम ताडका वाला माग चुनत हैं ।

असमोया और बगला रामायणा म डरपोक विश्वामित्र का विषण है । बंगला रामायण के विश्वामित्र तो एकदम और रगानी-प्राक्ष्यण से प्रतीत होत हैं जा ताडका का दखने ही डर कर भाग जाते है । उसक मर जान पर भी व निकट नही जाते । उडिया रामायण म भी व वाल्मीकि क विश्वामित्र के समान निर्भीक प्रतीत नहो हात ।

पूर्वाचारीय रामायणा म राम से ताडका के युद्ध और उसक सहार का वणन है । मानस म केवल दो अर्धालिया म ताडका क आने एव राम द्वारा एक ही भाण म प्राण हरन का सक्षिप्त उल्लेख है । सभी रामायणो म विश्वामित्र राम लक्ष्मण को विद्यादान करते हैं ।

स्त्री वध पर प्रापत्ति - असमोया रामायण म राम स्त्री वध की अनिच्छा प्रकट करते है । लक्ष्मण उह समभाते है कि गुर की जाना से काय करना अधम नही होता । विश्वामित्र भी उह समभाते है यह गा ब्राह्मण तथा अनक मनुष्या का वध कर चुनी है इसलिय इसका वध पाप नही है ।

अहत्या

कुमारिण भट्ट ने अहत्यापाख्यान मे सत्य देगकर इस रूपक माना है । वाल्मीकि रामायण के अनुसार इन्द्र न अहत्या के रूप पर मुग्ध होकर उसकी सह्य सम्मति स उमरु साथ गग सग किया ।

वाल्मीकि के वणन म यथायता और स्वाभाविकता अधिक है । भाषा रामायण के का न तक अहत्या का यह वृत्त्य परिर्वसित रूप म यणित हुआ । इस व्यभिचार के दाग से अहत्या को मुक्त करने की चष्टा की गयी ।

असमोया रामायण के अनुसार गौतम की तपस्या से इन्द्र भीत हुआ । उसने

तप भग के लिए कामदेव का भेजना चाहा किंतु उसने जस्वीकार कर दिया, तब वह स्वय गया। वहाँ ऋषि गौतम को देख डर कर छिप गया। इसी बीच अहल्या को देख कर वह मुग्ध हुआ और अपने आगमन का उद्देश्य भूल गया। उसने गौतम के आन पर उनका वेश धारण कर रति-याचना की। अहल्या समझती है कि अभी ऋतु-काल नहीं है, वसामा होकर आप नियम-भंग क्या करत हैं। कपटी गौतम इन्द्र अपनी पत्नी से आनाप अघम नहीं बताता। तब वह कहती है कि अभी दिन है रात होने दो। वह एक गद्दी मुनता तब दाना ने गमण किया। रति-वैल में निपुण इन्द्र के कारणसे देखकर अहल्या ने शक्ति हाकर उसका सत्य परिचय पूछा। अहल्या सत्य स्थिति से परिचित होकर बहूत कुपित हुई किन्तु अपना अघम देखकर डर से काप गयी। इन्द्र ब्राह्मण का वेश बनाकर वहा से भागा। (पृष्ठ ६६ ६८)

बंगला रामायण—श्री रामानन्द और श्री दीनशचन्द्र सा द्वारा सम्पादित सस्करण। म केवल घटना की आर सकेत हैं किन्तु सुवाच बाबू क सस्करण म कृति-वाम का गुण वणन सुगन्धित है। यहा उसी के आधार पर सार प्रस्तुत है। ब्रह्मा ने महस्र मुन्दरी बना कर उनके रूप स अहल्या बनाया और उसका विवाह गौतम स कर दिया। गौतम का शिष्य इन्द्र एक दिन गौतम का वेश बनाकर प्रात काल अहल्या से आकर कहता है कि तुम्हारे रूप का स्मरण हो आन से तपस्या म मरा मन नहीं लगता। काम स मेरा हृदय दग्ध हा रहा है। पतिव्रता ने पति क वचना का उल्लघन नहीं किया। बंगला रामायण म अहल्या इन्द्र के कपटाचरण स तब परिचित होती है जब गौतम आकर उमम पूछत हैं कि तुम्हारे शरीर म शृ गार लक्षण कस हैं। वह कहती है स्वय कम करके मुझे दाप दे रह हा।

उडिया रामायण म गौतम और अहल्या के विवाह के सम्बन्ध म एक नयी कल्पना है। ब्रह्मा ने रूप की राति अहल्या का निर्माण किया। रूप दस कर सुर-नर मुग्ध हुए। ब्रह्मा ने कहा—अपन-अपन बाहना पर बठकर जा पृथ्वी की तीन परिश्रमा कर सब प्रथम आय उम अहल्या मिलेगी। सभी चल गये, गौतम रह गये। ब्रह्मा ने पूछा तुम क्या नहीं गये? उहाँन प्रमन्न-वदन हाकर गौ की तीन बार परिश्रमा कर कहा, यही पृथ्वी है। अहल्या गौतम का मिली। इन्द्र असंतुष्ट हुआ कि वह सुरपति हाकर भी अहल्या प्राप्त न कर सका। अहल्या ने सत्यानन्द पुत्र का जन्म दिया। एक दिन इन्द्र ने जाकर अहल्या स चुम्बन, जालिगन और चुच-स्पर्श की याचना की। अहल्या ने उम पत्रकारा लज्जा नहीं आनी में ऋषिपत्नी और पति प्रता हैं। निराण इन्द्र छिप गया। गौतम तौन कर आय ब तन लकर स्नान करन चले गये। इन्द्र ने घान उपायी कर गौतम का रूप धारण कर आया। अहल्या ने आश्चय प्रकट किया। कपटी-गौतम इन्द्र ने कहा कि स्नानरत स्त्री का दसन म काम

भाव जाग्रत ही गया है। उमर मरण लिया। गौतम चोट खाये और द्वाि माज्जिन बन कर भाग गया। (पृष्ठ ११२ ६१३)

मध्ययुग म परिस्थितिया के कारण नारी पुरिता पर अधिर जाग देने के कारण उपयुक्त तीनों रामायणों म अहल्या म दुर्गाचार क शाप से मुक्त करन की चेष्टा की गयी। इस काल की रामायणों म अहल्या क शाप का रूप भी बदल गया। इसका कारण भी मध्ययुगीन नारी-आन्दोलन ही था। मानस का रचयिता इन सभी म अधिक मर्यादावादी है, उसने दुर्गाचार का उणन ही नहीं किया। गौतम की नारी से प बस' हुई किन्तु बयो, इसका उल्लेख तुलसीदास ने नहीं किया।

शाप—यदि अहल्या की कथा रूपक नहीं है तो बाल्मीकि क उणन का ही ऐतिहासिक महत्त्व है। बाल्मीकि रामायण म उस सभी जीवों से अदृश्य रहकर एरान्त म निराहार तप करन का शाप दिया गया। राम क आने तक उसने अपन उग्र तप से पाप का प्रायश्चित्त कर लिया था। तभी उस तजोहीत नारी के राम-लक्ष्मण ने पर छुए थे।

स्मृतिया म भन्ने ही नारी का ऋतुमती होने पर यभिचार के पाप से मुक्त हो जाने की बात लिखी हो किन्तु साधारणतः समाज नारी के पतित हो जाने पर उसे सहज स्वीकार न करता था। रामायण म ही सती सीता की दो बार परीक्षा ली गयी जतएव दो कारणों से अहल्या क शाप का रूप आगे चल कर बदल गया। नारी पवित्रता के आदर्श की रक्षा हो गयी तथा राम की चरण धूलि का महत्त्व प्रचारित हो सका।

असमीया बंगला उडिया और हिन्दी रामायणों म इसीलिए अहल्या को शाप नश शिला होना बताया गया है। रघुवंश, पदमपुराण (पातालखड्ग मीडीया संस्करण) एव हनुमन्नाटक आदि रामकथा साहित्य म पहल से उसे शिला होना दिखाया है। अध्यात्म रामायण म शिला होने का नहीं शिलाया तिष्ठ हाने का शाप था।

असमीया रामायण म गौतम अधिक उदार जान पडते हैं। अहल्या धर धर काँपती हुई पनि से याचना करती है कि व उसे शाप से जला कर भस्म कर दें। गौतम कहते हैं कि अनान दोष है इसलिए बड़ा पाप नहीं दिया जाएगा फिर भी शिला होकर रहना होगा। राम द्वारा उद्धार ही संक्या। इस आश्रम म कोई न रहगा।

बंगला रामायण म हउक पापाण और मत्र कलवर कहा है।

उडिया रामायण म भी पापाणा हान का शाप है। वह कहती है कि मेरा क्या दोष तब गौतम उम राम ने चरण स्पण से पवित्र हान का वर देते हैं। राम चरण स्पण देकर गौतम म कहते हैं—यत्रात्कार और वपट से स्त्री भ्रष्ट नहीं हानी। गौतम ने उम स्वीकार कर लिया। (११५)

मानस म अहल्या उपल दह धारण कर राम की चरण रज चाह रही है।

अभिषप्त इन्द्र—वाल्मीकि-रामायण में इन्द्र का शाप मिला कि उसके अर्धकोप स्तब्धित हो जाए। भाषा रामायणकार दत्तने से सातुष्ट न हुए, उहान सहस्रभग होने का भी शाप दिलाया। ऋषिपत्नी के साथ दुराचार करने के लिए उहान उसे दाना शर्षों का दण्ड दिया। असमोया और उडिया रामायणों में दाना शाप है, बेंगला रामायण में केवल सहस्रबाणि हाने का। मानस में कथा सक्षिप्त है। तुलसीदास प्रसंग की मर्यादाहीनता की उपेक्षा कर अहल्या द्वारा राम की स्तुति में अधिक मन्त्रि दिखाने हैं।

शापमुक्ति की कथा भी असमोया और उडिया रामायणों में एक ममान है। अभिषप्त इन्द्र लज्जित होकर मानसरोवर में छिप जाता है। असमोया रामायण में शची पावती की पूजा कर इन्द्र का पदमनतुजा में छिपा हुआ खोज लेती है। इन्द्र ने पावती की पूजा कर सहस्रभग में सहस्रलाचन होने का वर प्राप्त किया। वे ब्रह्मशाप से उसे सवथा मुक्त करने में असमयता प्रकट करती हैं। अश्विनी कुमार बकर क अर्धकोप लगा दत्त हैं। तभी से बकरा पवित्र माना जाता है क्योंकि इन्द्र ने उसे वर दिया था। वाल्मीकि रामायण में मय के अर्धकोप लगाय जाते हैं। शाकन प्रभाव के कारण मय के स्थान पर बकरा किया गया है। उडिया रामायण में इन्द्र की अनुपस्थिति से अव्यवस्था हुई और ब्रह्मा ने उम मानसरोवर में छिपा पाया। उन्होंने ही उसे सहस्रलोचन होने का वर और मय के अर्धकोप प्रदान किये। बेंगला रामायण में भी इन्द्र अपने महस्योनि चिह्ना से बटुत दुःखी है वह अव्यवस्था करके सहस्रलाचन बन जाता है।

जनकपुर का धनुष-यज्ञ

धनुष का इतिहास—वाल्मीकि रामायण के अनुसार दक्ष के यज्ञ में अपना भाग न पाने से क्रुद्ध शंकर ने देवा को दण्डित किया, फिर अनुरोध करने पर उसे देवताओं को द दिया। देवताओं ने शंकर के धनुष को निमित्त की छठी पीढ़ी में उत्पन्न देवराज को दिया था। जाक ने इसी के द्वारा पराक्रम की परीक्षा कर सीता का स्वयंवर रचा।

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त अन्य रामकथा-साहित्यो और लोक-कथाओं में धनुष के सम्बन्ध में कई किंवदन्तियाँ जुड़ गयीं। चारों भाषा रामायणों में इसे शंकर का धनुष स्वीकार किया गया है। बेंगला और उडिया रामायणकारों ने कुछ विस्तृत वर्णन किया है। असमोया रामायण और मानस में धनुष का इतिहास नहीं बताया गया। असमोया रामायण में इतना वर्णन ही आया है कि शंकर ने मृग मार कर इसे जनक को द दिया। सीता अनुमूया सवाद में माधव कन्दली ने भी कहा है कि महादेव ने चाप दिया था। मानस में इसे कई स्थानों पर शंकर का धनुष कहा गया है। परमपुराण की उत्तियो से भी स्पष्ट है कि जनक का उन्होंने ही धनुष लिया था।

परमपुराण के पातालखण्ड में जनक शिव से प्रार्थना कर ऐसा उपाय जानना

चाहती है जिसमें बड़ा राम ही माता के पति हो सकें। तब ही वह धनुष देने से त्रिभुवन का राम ही हो सके।

जैतव्या रामायण में जनिनाम से जिनका है कि देवता शक्र के बेटे एक राजा पिता था। है कि वह मया उपाय किया ताकि कि मीमांसा किया कर राम म हा। तब वह धनुष का धनुष देकर कहते हैं कि जो राजा का देकर कहा कि जो राम धनुष का भंग कर मीमांसा उपाय का ही जान। तब धनुष को मीमांसा म हा म रामायण का शोचकर और तब उपाय नहीं करता। तब है कि जनिनाम पर धनुषकाय का पातामस का प्रभाव है।

उडिया रामायण में विष्णु पत्नी है। मां-राज के पति स्थिति पर हमने इतिहास का वर्णन है। धनुषकाय का पर देवता भावनामय में एक राजा उपाय मया रूप। उमी समय रावण बेटे में त्रिभुवन उपाय से जिनका का रामायण करन व समय श्यामाभा न धनुष का इतिहास म प्रकार बताया। तब म सुम्भराजगी म भी का मय म रही बताया। पावती अग्नि म कृत पड़ी। तब म विष्णु क तब म एक प्याय बताया तब रमा का। कि तु विष्णु का तब १२ काटि है और १२ का १२ काटि आपव गिय धनुष म उपाय। विष्णु म उपाय म एक का बग वि वा तब बही व देवा का विनाम कर पाय। उपाय म मिर काकर राम को वि भाय। देवा त लिय पूजा कर गिय का प्रमाण किया। तब म मिर पर वर का मुझ जाहा गया। गिय स्वयं व मा-जीवीत धारी है। व धनुष तब कर बना। तिमि धनुष गिय की नित्य पूजा करता था, उपाय ही दनिया। तिमि म यह भी कहा कि सुम्भारे बेटे वमना का जन्म होगा और तब हरि का दया होगा। जिन समय यण म समय सीता कया रूप म प्राप्त हुए श्यामा ने भी जान स कया कि दम कया व पर विष्णु हाय। जनक ने पूछा मैं पहचानूंगा कय ? उपाय उत्तर दिया धनुष स। जान राम भी धनुष स प्राधना कया है कि यह कया तारायण को ही मिन। (पृष्ठ १४५)

उडिया रामायण में दो स्थला पर लिखा है कि धनुष तिमि का दिया गया किन्तु आदिवाण्ड के जन्म की आर लिखा है कि ईश्वर त देवराज का धनु दिया। एक ओर कहानी जाड़ी मयी है। तब धनुष को सुधर्मा नाम राजा मिथिलेश स छोटा चाहता था। भयकर युद्ध ने पश्चात् वह हार पर भाग गया। वाल्मीकि रामायण में इसका नाम सुधर्मा है जिस मार कर जान ने उगदी साक्षात्पापुरी का राज्य अपने भाई कुशध्वज को दिया। (पृष्ठ ७२)

परशुराम राम भेंट के समय उडिया रामायण में परशुराम भी धनुष का इतिहास बताते हुए कहते हैं कि जिस धनुष का तुमने तोना उमका इतिहास सुना। पृथ्वी के प्रारम्भ में विश्वकर्मा ने दो धनुष बनाये। एक हरि को दिया दूसरा हर को। दोनों का कहना था कि उनका धनुष बड़ा है। भयकर युद्ध हुआ देवताओं ने मध्यस्थता की। पावती के अपमान के पश्चात् हर ने अपना धनुष देनात को दिया। विष्णु

ने अपना धनुष रुचिक मुनि का दिया। रुचिक व पुत्र जमदग्नि और उनका पुत्र में परशुराम हू।

विष्णु शंकर का यह विवाद वाल्मीकि रामायण के आठिकाण्ड (सग ७५) में आया है।

पूर्वानुराग—मीना राम का पूर्वानुराग एतिहासिक नहीं है। राम-सीता का अवतार मान लेने से उनका दाम्पत्य सम्बन्ध स्थायी हो गया। अतएव शृगार विषयक चारता जाने के लिए पूर्वानुराग का वर्णन होने लगा। प्रसन्न राघव नाटक और हनुमन्नाटक में पूर्वानुराग का वर्णन है। मानस पर प्रसन्न राघव का प्रभाव है।

असमीया रामायण में राम के रूप में सीता का मन निमज्जित हो गया। व माहित हो गयीं और उदान मन में निश्चय कर लिया कि यही मेरे पति हूँगे।^१

बंगला रामायण में प्रथम दशम स्वयंवर-सभा में ही हाता है है, जबकि राम प्रवेश करते हैं और सीता अट्टालिका पर खड़ी होकर मरियो से राम लक्ष्मण का परिचय नात कर राम पर मुग्ध हो जाती हैं। फिर पिता की प्रतिज्ञा से दुखी होकर वे दवी-देवताओं की स्तुति करती हैं। इस रामायण पर हनुमन्नाटक का प्रभाव है—

कमठ कठोर धनु थी राम कोमल तनु

केमने तुलिते शरासन।

(कतशत बोर-गणे, ना पारिते उत्तोलने)

पितार दारुण एइ पण ॥ पठ ७६

कमठपठकठोरमिद धनुमधुरमूर्त्तिरसौ रघुनन्दन।

कथमधिज्यमनेन विधीयतामहह तात पणास्तवदाहरण ॥ हनु० १६

उडिया रामायण में स्पष्ट पूर्वराग नहीं है, किन्तु वसी कुछ-कुछ स्थिति है। जनकपुरी में राम व प्रवेश करते पर स्त्रियां मुग्ध होकर अस्मव्यस्त शृगार कर उह देखने के लिए दौड़ पडती हैं। सीता के मन में शृगार विषयक भाव नहीं जागते। व चिन्तित अवश्य हैं कि पिता ने ऐसा कठोर प्रण क्या किया। व अविवाहित रह गयी। उनकी सखी मनमाया समभाती है कि तरे पति विष्णु हैं और वे राम के रूप में विश्वास मित्र के साथ जाये हैं। मीना को शका है कि बानक कुमार कस धनुष उठा सकेंगे, किन्तु सखी के समभाते पर व मनुष्य हो जाती है। राम जब धनुष उठाने खड हात हैं उस समय वे ब्रह्मा में निबदन करती हैं युवातन मदनताप से जल रहा है निराश न करना नहीं तो तुम्हें स्त्री हत्या का पाप लगेगा। ऐसा प्रतीत हाता ह कि सीता वर चाहती हैं राम के प्रति उनके मन में प्रीति भाव का उदय नहीं है। (पठ १५१)

प्रसन्न राघव नाटक में राम मीना व दशम पुष्प-वाटिका में स्थित चन्विका

१ रामरूपत निमज्जित मन में गल दवी माहित—छन्द ११७५।

एहत्तस मार, हैरे निजपति, करिलो मने निश्चय—छन्द ११७६।

यतन म होता है। मानस म भी ऐसा ही है। जममीया और बेंगला रामायणा की भांति मानस मे सीता राम को देखकर एकदम मुग्ध रहा हा जाती। मानस म राम के चरित्र का प्रकप पहले से ही कर दिया गया है। सीता और जनकपुर-वासी राम को बिना देखे ही उनके पराश्रम की चर्चा मून चुक है। पुष्पवाटिका म उन्हें साक्षात कामदेव का अवतार देखकर सीता उन पर मुग्ध हुई। इम प्रेम की पीठिका पहले ही तयार हा चुकी थी। तुलसी पूर्वानुराग दिखाते गय किन्तु मर्यादा का ध्यान उन्हें भूलता नहीं इसलिए साथ म यह भी कह देते हैं—

प्रीति पुरातन ललइ न कोई १ २२८८

प्रस न राघव के अनुसार मानस म उभयपक्षीय प्रेम का चित्रण हुआ है। अस मीया और बेंगला रामायणा म केवल सीता के प्रेम का चित्रण है। उडिया म भी सीता की उहापोह का ही वणन है। तुलसीदास ने मनस म राम सीता के पूर्वानुराग का विभावादि सहित वणन जिस पवित्रता के साथ किया है, वसा ससार का कोई भी कवि *सभवत नहीं कर सका है।*

बेंगला रामायण और मानस में राम की प्राप्ति स लिए सीता जमश कात्या यनी एव पावती की स्तुति करती हैं। उनकी विनय स्वीकृत होती है।

मानस में भी धनुष यो ही नहीं तोड़ दिया जाता। पहले सभी राजा अपना अपना बल जाड़मा लेते है। सभी की असफलता पर विदेह तक विचलित हो जाते है। जिसके कारण लक्ष्मण को दर्पोक्ति करनी पडती है अत में उठ कर राम धनुष तोड़त हैं।

स्वयम्बर विवाह

स्वयम्बर का अवसर एक पराजित राजाओं से युद्ध—वाल्मीकि रामायण म स्पष्ट है कि राम ने जनकपुर पहुंचने के पहल ही स्वयम्बर हा चुका था जिसम परा जित राजाओ ने घर कर सीता का धीनना चाहा। युद्ध म य राजा पराजित हुए।^१ सीता की उकिन स भी नात होता है कि स्वयम्बर के सुदीधकाल पश्चात राम विश्वा मित्र के साथ मन दसन गय।^२ कि तु राम क धनुष के समय पर्याप्त जन समूह एकत्र था।^३

स्वयम्बर न सही मन ता हो रहा था जिसे खन के लिए रामादि जनकपुर

१ वाल्मीकि रामायण—१ ६६ २० २८।

२ वही २ ११८ ४४।

३ जनक के दूता न राजा दशरथ का भूचना दी—

तच्च राजयनुचिय मन्य भग्न महात्मना ॥ १०॥

गणप हि महाराज महत्या जनसत्ति ॥ ११, मग ६८, वाल्मीकि रामायण।

पहुँचे। सभी राजा उपस्थित हा पराजित हा तभी ता गम का महत्त्व बढ़ता। अत एव वाल्मीकि रामायण के पश्चान नाटकादि म स्वयम्बर और यत्र राम के सामन दिताय यत्र और पराजित राजाओं का सम्बन्ध राम म जाडा गया। कथा म इम प्रकार के नाटकीय चमत्कार का प्रस्तुत करने म प्रसन्न राघव नाटक का प्रभाव भी जान पड़ता है। मानमकार अवश्य ही इस नाटक स प्रभावित है।

सभी पूवाचनीय भाषा रामायणा म स्वयम्बर पहल ही हा चुका है, किन्तु राम के जागमन पर भी स्वयम्बर जसी ही स्थिति दिखायी पडती है।

ब्रह्ममीया रामायण म त्रिभुवामित्र गम का बताते है कि स्वयम्बर हो चुका है, जिनम अनेक राजा आय थे। राजाओं के मनाविमान का सुन्दर चित्रण है। न सीता के लोन म अपनी अपनी पत्नियाँ छाट कर जाय थ। अब बठोर धनुष का देखते हैं और निरछी आसों से सीता का देखकर ससिँ भरत हैं। कहत ह कि लौटन पर हमारी स्त्रिया हमेंगी कि क्या आये धनुष। इम रामायण म राम के धनुषम के पश्चात राजा एकत्र हाकर युद्ध के लिए सारद्ध हुए। लक्ष्मण ने सबको पावल किया। राम विश्वामित्र को सीता सोपकर युद्ध म रत हुए। राम चनाकार धनुष घुमाकर राजाओं का मार्ग नगे। जाक त अपा पुत्र अजयकुमार को रथ सहित सहायताय भेजा। सभी पराजित राजा भाग गय।

बंगला रामायण म एमा प्रतीन होता है कि जनक का प्रण सुन सुन कर राजा आने रहते थ और असफल हाकर बच्चा की टिटकारी सुनकर लौट जात थे।

उडिया रामायण स एमा प्रकट होता है कि स्वयम्बर पहल भी हुआ और गम के समय भी। राम के जागमन के पूव अनेक राजा आकर असफल हाकर लौट गये। यत्र राम जाय उम समय यत्र म अनेक राजा निमंत्रित हुए थे। सभी की तयारी भी जोरदार हुई। राम के प्रवेश करने पर सभी दग हुए। राजाओं का साहम ही नही हुआ था कि धनुष धुएँ।

याग म स्वयम्बर के समय ही राम-लक्ष्मण का आगमन होता है। सभी पर राम का प्रभाव छा जाता है और जिन समय सभी राजा परास्त हो जाते हैं तथा जनक अत्यधिक धुंध होकर बह उठने है—'धीर विहीन मही मैं जानी, उती समय राम का उटकर धनुषभंग करना उनके चरित्र का प्ररूप करता है। मानम म भी राजा त्रिद्रा करत ह किन्तु युद्ध की नीवत नही जा पाती। इसी समय क्षत्रिय विराधी परसुराम उपस्थित होकर उन्हें डरा दते हैं। इम प्रकार के नाटकीय चमत्कार प्रस्तुत करने में उन्होंने ममृत-नाटकों से सहायता लकर भी उनसे अधिक सफलता पायी है।

रावण और राण की उपस्थिति

प्रसन्न राघव नाटक में राण और रावण दोना धनुष उठान आते हैं और राणा भगवत हाकर लौटन है। ब्रह्ममीया का छाट शेष रामायणा में राण

और रावण जाते हैं। बेंगला रामायण में केवल रावण है। उड्डिया रामायण में बाण और रावण ने धनुष उठाया धनुष तहा उठा उनकी नाक से रून निकलने लगा। धनुष भग हान के पश्चात् रावण फिर आता है वह राम का प्रताप देखकर भाग जाता है और देवता हंस पड़ने हैं। उड्डिया रामायण में बालि, सहस्राजु न गणपति, कार्तिकेय मुचुकुद सुधर्मा जादि किसी न किसी रूप में धनुष के जागे तजाहत् हुए हैं। बेंगला रामायण में राम के जागमा के पूर्व ही रावण आता है और धनुष उठान में असफल हाकर वहा से चिसक जाता है। मिथिला के बच्च उसका पीछे टिटकारी दत्त हैं। मानस में दानो जाते हैं किन्तु धनुष के केवल देखकर चुपके चलते बने हैं।

तुलसी ने सारी स्वयंवर-सभा का आयोजन ही राम चरित के उत्थान के लिए किया है। वे प्रारंभ से ही धीरे धीरे सभी पर अपना सिक्का बठाते चल जाते हैं। राम के इस प्रकथ क्रम में रावण का विस्तृत वर्णन तथा के मध्य बुद्ध अवधान ही उपस्थित करता जत उसका साधारण रूप से उल्लेख कर तुलसी जागे बढ़ गये। साथ ही प्रति नायक द्वारा धनुष उठान का प्रयास भी न दिताकर उसके चरित्र को पहले से ही नहीं गिरा दिया है।

रावण की प्रतिक्रिया (उड्डिया रामायण में)—रावण लका में जाकर सभा जोड़ता है और १२ वर्षीय राम के पराक्रम का वर्णन करता है। विभीषण राम का विष्णु बताता है तां रावण अट्टहास कर कहता है मनुष्य मेरा क्या करेगा। यदि वह सच ही नारायण है तां उसके हाथ से मरकर स्वर्ग की प्राप्ति हागी।

लक्ष्मण अथवा सीता की चेतावनी—हनुमानाटक में एक नवीन प्रसंग है। राम के धनुष ताडने के पूर्व लक्ष्मण पथवी शपनाम बूम और दिक्कुञ्जरी को सावधान करते हैं। हमारी तीन रामायणा में यह प्रसंग आया है बगला में नहीं है। केवल असमीया रामायण में लक्ष्मण के स्थान पर सीता चेतावनी देती है—छ० १२११ देखिए उड्डिया रामायण १ १२३।

मानस में लक्ष्मण ब्रह्माण्ड को चरणों से घाप कर बोल—

दिसि कु जरहु कमठ अहि कीला ।

धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥

१ २५६ १

धनुष के समय पथवी और धनुष की प्रायना—उड्डिया रामायण में एक नवीन प्रसंग है। धनुष का उठा तन पर धरती राम से प्रायना करती है कि हल मरे ऊपर न रमना धनुष मुझमें भारी है। राम ने दया कर कामपद की बनिष्ठ उगली पर धनुष रखकर दाहिने में डोर ली। जब राम ने धनुष की डार बान तक सीची तां वह बाना मुझ पर दया करे। राम बाल तुभमें बटुन पाप हुए हैं तू पुरा तन है। मैं तर मभी पाप दग्ध कर दूंगा। (पृष्ठ १२३)

धनुष—राम ने धनुष पर राग चनाकर खाचा वह टूट गया—एसी क्या कामीकि रामायण के अनुगार सभी रामायणा में है। असमीया रामायण में

राम कटि म बरन बाधकर हँसकर उठात है टकार के साथ धनुष टूट जाता है । वैगना रामायण म राम विश्वामित्र की आना से धनुषह म जाकर उमे ताड देत हँ ।

उडिया रामायण और भानस म वणन अधिक सुन्दर जोर नाटकीय ह ।

उडिया रामायण के अनुभार मजपा म रखा धनुष मँगाया गया । खूब शोर जोर जयध्वनि हु । सीता बहुत चिन्तित हुई । धनुष उठाने की घापणा हुई मनुषा खोत्र दी गयी । गजा साहम गा बडे । विश्वामित्र न कहा धनुष उठाकर क्या प्राप्त करो । राम लजान हुण उठे । गुट का प्रणाम कर भाई की भुजा पकडकर चल । राम को दख दशक आपस म भाति भाति की बातें करत है । कोइ कहना कि छात्र है तो अय कहना है कि छाटे है ता क्या छाट होते हुण भी ध्रुव प्रह्लाण आदि ने कसे-कम काम किय । राम का दख सभी भुग्ध हैं । सीता ब्रह्मा गो मना रही हैं । म्रिया हुनहुलि ध्वनि कर रही है । राम बायें हाथ स धनुष उठानर रोदा चढात और खीच कर तोड दत हैं ।

विवाह-सरकार—धनुषग के अनुभार दशरथ बुलाय गये । बुलाने वाले प्रत्येक रामायण मे अलग अलग हैं । असमीया और उडिया रामायण म शतानन्द (उडिया म इह मयानन्द त्रिवा है) भेजे गय । बँगला-रामायण म स्वय विश्वामित्र घटा बनकर गय । मानस और वाल्मीकि म दूत भेजे गय ।

उडिया रामायण म मयानन्द का प्रामाद म प्रवेश सुन्दरता के साथ वर्णित है । इस रामायण के अनुभार दशरथ ससय चल पडे । सना के प्रस्थान का सुन्दर वणन वाणभट्ट के ह्य चरित की याद दिला देता है ।

राम के अय भाण्या के भी विवाह का वणन है ।

विवाह सरकार का विस्तृत सुननात्मक अध्ययन अय अध्याय के अंतगत हो चुका है ।

उडिया-रामायण के तीन नूतन प्रसंग

(१) राम और मधरा विवाह—उडिया रामायण मे एक नूतन प्रसंग है । मधरा की कुटिलता के कारण ही अनथ घटित हुआ था । उसकी कुटिलता के कारण स्वल्प ही मभवत यह प्रसंग गना गया है । उडिया रामायण के अनुभार मधरा भी मिथिना गयी थी । बर-बया का दख आनरित हाकर मधरा परिहाम गीत गाती ह । राम मुद्ध हाकर उस पीटत है । यह चरित होकर रक्त-नत्रा स दमती है । राम कहत है गुणना के मध्य अमत भाणो बोलती है । व फिर मारन के लिए उठत है, मानाए राक दना है । (प० २०८)

(२) जनकपुर की युवतियों—विष्णु के समय जनकपुरी की स्त्रियों का म-विवश दिगायी गयी है । युवतियाँ माय चवन का हूठ करती ह राम टाटन है ।

(३) उडिया का भर-नारायण प्रणय तर और नागायण जति का उपासक हुआ है। तर धनुष त उपासना तथा नागायण। जति का उपासक भी। उपासना। उपासी तात म रात उपासना कर मुक्ति प्राप्त किया। नागायण। गभी का नागायण किया। नागायण। शाण शिवा ही तर कभी भक्त म। तर मन्थुनाय म कर्त उठाएगा जोर तर म, धनुष उपासना जोर, गी वा त रात्राभा का मन्थु कर्ण। तर ने कहा, तुम भी मन्थु तात म त म राण। मन्थु ही तात म धनुष और शृणुण हुए। (प० १६७)

महाभारत के तर नागायण श्रुत और शृणुण भी है। धनुष के मातृम म उनवी कथा भी यही। तापी गयी है।

परशुराम दप पूण

वाल्मीकि रामायण म वरान के लीटा ममय परशुराम की राम म भेंट हाता है और प्रगन राघव नाटा म मयवध मभा म ही। यहाँ पूरबीय रामायणो वाल्मीकि रामायण का अनुमण करी है जोर नागय प्रण त रामय तात म प्रस्था लेता है।

वसे श्रुद्ध परशुराम का आगमन वार्ताताग राम की परी ताव तिम धनुष दना राम का धनुष तातर ब्रह्मत्व प्रवट करता तथा परशुराम ता तलिन करता सभी रामायणो म समान है किन्तु वणन पा टग ताग जाग एर विशपता तिम हुए है। पूर्वाचलीय रामायणो के राम मानस के राम के गमात विाय पूण तातरण कम करते हैं।

असमीया रामायण म परशुराम के तागमर के पूव भयपूण वातावरण की सट्टि की गयी। रक्त दष्टि एव जशकुन दत्तकर त्शरथ चितिन हुए। राघ की मूर्ति परशुराम ने आकर पूछा मरे गुरु का धनुष विगने तोडा ? वे पथ्वी का क्षत्रिय हीन करने का उल्लेख करते हैं। कहते हैं राम नाम पवित्र है तुमने यह नाम धारण किया है आज परीक्षा लू गा। राम हसकर कहा हैं त्दनीय ता तुम हा जा ब्राह्मण के शम दम तान दया क्षमा आदि गुणा को त्यागकर राघ और अहवार प्रष्ट कर रहे हो जा कि क्षत्रिय के गुण है। यूत जानकर छाड रहा हू। परशुराम स धनुष लवर राम चतत हैं और बीच स ताड दा है। व हसकर कहा है वस इसी का महत्त्व बखान रहे थे। व अपने धनुष की शोर चढाकर कहत ह कि हार मानो नही तो भस्म कर दिया जाएगा। परशुराम की भीत देखकर उहाता दयापूर्वक कहा मारू गा नही किन्तु मेरा बाण अमोघ है। कौन सा द्वार रुद्ध करू ? परशुराम राम को पहचान कर बोले मेरा स्वग द्वार रुद्ध कर दो। राम ने पूव दिशा की ओर दखकर बाण मारा, फिर हाथ जाडकर कहा मैं क्षत्रिय हू जाप ब्राह्मण ह। मैंने दु ख दिया इसके लिए क्षमा करो। प्रगन परशुराम स्तुति करत हुए चले गये।

बंगला रामायण म लौटती बरात का बाजा सुनकर परशुराम हाथ म कुठार लिए नलकारते हुए दौड़ पड़ने हैं। भयभीत दशरथ ने पुना-सहित उह प्रणाम किया। परशुराम नुद्ध होकर बोले तुमने पुत्र का नाम मेरे समान रखा है राम उह तपस्वी ब्राह्मण बहुर क्षमा मागते ह। परशुराम लाल बालें दिग्गकर वाले, 'तपस्वी ब्राह्मण मानकर मुझे तुच्छ समझते हा मैं २१ बार पथी को क्षत्रिय हीन किया है। लक्ष्मण तडप उठे 'बाता से क्या है वीरा का आचरण करा। तुमने क्षत्रिया का विनाश तब किया था, जब राम लक्ष्मण का जन्म नहीं हुआ था।' तब कुपित परशुराम ने राम को धनुष देकर चढाने के लिए कहा। राम ने एक बाण भी माग लिया। टकार करते ही गगन गूज उठा। बासुकि बाण से दवन लगा। राम ने बाण चढाकर परशुराम का तज हर लिया और उनका स्वर्गपथ अवरुद्ध कर दिया। (प० ८८ ८६)

उडिया रामायण म दशरथ बरात सहिन सिद्धाश्रम से लौटे रह हैं उस समय अशकुन हुए। वीरतूय ध्वनि सुनकर परशुराम क्रुद्ध होकर चल पडे। परशुराम के यागी-वश पर सामयिक साधना का प्रभाव है क्रुद्ध परशुराम को दक्षकर वनिष्ठ आदि आसन छोडकर आय। दशरथ धर धर कापत हैं और बार-बार प्रणाम करत हैं। परशुराम बोले राजाआ म बडे हा वीरतूय बजाकर आय हा। तुम्हारा वह पुन कहाँ है निस्तन सदाशिव का धनुष तांड दिया।' दशरथ ने बताया कि राम वधु क साथ पीछे हैं। वस के पीछे वा आर दौड पडे। सेना भागने लगी। दशरथ बहुत मनाते हैं व नहीं सुनते। राम सुखामन से उतर आय। परशुराम उह हर और हरि के धनुषा का वृत्तिहाम सुनाकर वदने हैं मैं अपन इस धनुष स सहस्राजुन को मार कर २१ बार क्षत्रिया के रक्त से तपण किया है। दशरथ सूयवशी अपुनक थे इसलिए इह छोड दिया। तुम वीरतूय बजाकर यहा आय और तुमने शिवधनु तोडा इसलिए तुम्हारी परीशा लूगा। इस धनुष पर गुण चढाओ और युद्ध करो मैं तुम्हारा सिर काटूगा। राम वाले 'तुम मेरा सिर काटने को तयार हो किन्तु हम गुरु-ब्राह्मण पर रोष नहा करत। तुम ब्राह्मण हाकर क्षत्रिय बनते हो। चरणा पर पडे मेरे नद्ध पिता का अपमान करने हो। ब्रह्मा के समान वनिष्ठ और विश्वामिन का निरादर करत हा। राम न दाहिन हाथ से धनुष लेकर उसे बायी जाप पर रख कर चढाया फिर कान तक मीचकर कहा, 'क्या मटूँ यह नाक या परलोक ? परशुराम वाल, 'बहुत पाप किया है परलोक मटा, जिसस यमालय न जाना पडे।' परशुराम राम की विनय भी करत है। (प० २१० १६) इस प्रकार उडिया रामायण मे राम का दण्ड परशुराम,क लिंग कर बन गया।

मानस के लेखक ने परशुराम की अवतारणा धनुषग के पश्चात् विवाह के पूव कर कर्तामकता का परिचय दिया है। राम न धनुष तोडा दुष्ट-राजा सामूहिक युद्ध की तयारी म तत्पर हुए लक्ष्मण नुद्ध साता वहाँ म सुरत रनिवास मे भेज

दी गयी, दृग्गी गमय रोज की गाजार मूर्ति भुगुणित १ प्रथमात् प्रथम विद्या और युद्ध के विषय सादर राजा राम सत्प्राप्त की ममान दर कर विद्य मय ।

मानस म सवाण का प्रथम बट्ट मया है । मानस म सवण की व्यग्याकियाँ राव्य री दक्षि म गुण्य है तिन म सवण म सांत्त म ही भिन्न प्रथम मगी है, वस अस्वाभाविक नहीं है । म प्रकाश की उतियाँ मानस म अय तिमि म्भन पर नहीं है यहाँ ही है । इम गमय सवण बाण म मण्य याव तावता का रक्षा स्वाभाविक है ।

अय प्रसंग

(१) सीता की ईर्ष्या परशुराम के त्रिय दृष्ट धनुष का पडात ममय हनुमान-टाक' की सीता के मन म मोनिया डाह उत्पन्न था । मी स प्रसिद्द हाण बगला और उडिया रामायणा म भी वणन आय है । उट चित्ता हई तिन म म धनुष रक्षण म मुमसे विवाह हुआ अब इम मुनि के धनुष का सपान म क्या जीव काइ मोन आणगी ।

बगला—आर बार धनुष आनिल भगु मुनि ।

ना जानि हृदये मोर कतेक सतिनो ॥ पण्ट ८६

उडिया—सीतादेवी विचारत मुलातने बसि ।

पुणि सपतरणी मोते हेउ अछि अति ॥ पण्ट २१५

(२) भरत का ननिहाल जाना—वाल्मीकि रामायण म मुधाजित जनकपुर पहुचते हैं फिर अयोध्या नोट कर वही स भरत शत्रुघ्न का अपने भाय ने जात हैं । असमीया म दशरथ ही दु स्वप्ना एव अधमुनि के शाप की स्मति स चितित हाकर भरत-शत्रुघ्न को ननिहाल भेज दत है ताकि उनकी अनुपस्थिति म राम का अभिपेक कर सकें ।

उडिया रामायण के अनुसार भरत के मामा भरत को लेन अयोध्या पहुच वहां न पाकर जनकपुरी आये । विवाह म भाग लकर अयोध्या हात दृष्ट उहें अपन साथ लेत गय ।

बैंगला रामायण एव मानस म अलग स भरत के ननिहाल प्रवास का वणन नहीं आया है ।

(३) उडिया रामायण म मधुगध्या के दिन राम-सीता की प्रतिज्ञाएँ— जनकपुरी म ही दोनो की मधुगध्या हुई । राम के स्नेह व्यक्त करन पर सीता बानी जब तक यौवन है तभी तक प्रम है फिर नयी क'या ल आआगे । म ज्यण्ट पत्नी हाकर सौभाग्य वचित हा जाउगा । यौवन तो कभी न कभी टूट ही जाता है । नाथ मुझे

१ हनुमनाटक—तच्चापमाकपतिताटकारा वाक्वणमाक्वण विशालनेत्रा ।

सामूयमक्षिष्ट विदहजासा क'या किम'या परिणम्यतीति ॥१ ४६॥

सुखी रखना, मैं तुम्हारी जन्म-जन्म की दामी हूँ।' राम ने आश्वासन दिया मैं तुम्हें छाड़ निमी से रमण नहीं करूँगा। अथ स्त्री मेर त्रिण सहादरा के समान हागी। पत्नी भष्ट हान पर मैं तरी स्वण पतिमा गणाऊगा, अथ स्त्री से प्रीति नहीं करूँगा। राम ने कुलदीप, वशवानर एउ दिग्पात्र का साक्षी कर शपथ ली।

राम ने भी कहा—तुम स्त्रिया का चित्त चंचल और अस्थिर होता है, तथा उनकी मन प्रवृत्ति में अंतर होना है। विद्या, धन और युवक स सम्पन्न युवा, वीर, धर्मत्मा स्वामी भी क्या स्त्री के शृंगार की तुष्टि कर पाता है? अपनी स्त्री को प्राण के समान मानने वाले भक्ता जो भी, युवती छाड़कर विटप (विट-सम्पट) पुरुष से प्रीति करती है। सीता ने कहा—सभी स्त्रिया एणी नहीं हाती। यदि कोई मुझे हर लेगा तो भोजन, वशम्पा छाड़ दूंगी। मैं भी कुलदीप छूकर शपथ लेती हूँ। (पृष्ठ २०६)

सबसे अधिक तूतन आरधान उडिया रामायण में है। इस अध्याय में ऐसे आख्यान का अध्ययन प्रसंग के अनुसार किया गया है। जाग के वाणो में अध्ययन से बचे हुए आख्यान का पथक वणन अंत में कर दिया जाएगा।

अयोध्याकाण्ड

रामकथा का वास्तविक विकास अयोध्याकाण्ड से ही हाता है। एक के पश्चात एक मार्मिक प्रसंगों की अंतररणा हाती जाती है। सभी तत्वका में वाल्मीकि के निम्न प्रसंगों का अनुसरण किया है। फलत सभी रामायणों के प्रसंगों में एकरूपता है। अंतर है केवल अभिव्यक्ति की शली और सामर्थ्य में।

वाल्मीकि रामायण का आदिकाण्ड अनेक प्रक्षेपा एवं अवान्तर कथाओं से युक्त है। भाषा रामायणों के आदिकाण्ड में भी इसी कारण कथा की विष्ट सतता और साथ ही पौराणिकता है। अयोध्याकाण्ड में यह बात नहीं है।

सभी रामायणों का प्रारम्भ राम के अभिषेक की तयारी से होता है केवल उडिया-रामायण के प्रारम्भ में गमस्त कांड के पाक्षों भाग को घेरकर परागाम की कथा चलती है।

वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड की समाप्ति राम-सीता की अग्नि-अनुमूया से भेंट के साथ होती है। भाषा रामायणों का अयोध्याकाण्ड भरत के लौटने के साथ ही समाप्त हो जाता है। इनमें अग्नि अनुमूया से भिन्न अरव्यकाण्ड में होता है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार निम्न प्रमुख प्रसंग सभी रामायणों में वर्णित हैं।

सब रामायणसुलभ आख्यान

१—अभिषेक की तयारी

(१) भरत का निनिहान में होना।

(२) दशरथ की वित्ता और राम का युवराज पद देने का निश्चय।

(३) दशरथ द्वारा राम का राजीति की शिक्षा ।

(४) अभिषेक की तयारियाँ और परिजन-बन्धुआ जाति का हर्षित हाना ।

२—ककेयी की घर-याचना

(५) मथरा का दुःखी हाना करयी से सवात् नबयी का हर्षित हाकर अलकार दान । मथरा का रोप उसक तब ।

(६) ककेयी का प्रभावित हाना मथरा द्वारा दा वरा की याद दिलाया जाना ।

(७) ककेयी दशरथ भेंट । दशरथ का ककेयी का प्रस न करने के लिए डीर्घ मारना ।

(८) ककेयी का वर मागना । राजा का अपार शाप । राजा द्वारा ककेयी की भत्सना मान जाने के लिए चाटुवारिता ।

३—राम के वनगमन की तयारी

(९) राम की उपस्थिति । वनवास जाना स्वीकार ।

(१०) राम-कौशल्या सवात् । राम-लक्ष्मण मवाद । राम-सीता सवाद ।

(११) राम के साथ लक्ष्मण और सीता के चलन की स्वीकृति ।

(१२) दशरथ द्वारा राम को समझाया जाना किन्तु राम का अडिग रहना ।

(१३) क्रूर ककेयी का बल्कल दान । तीनों का प्रस्थान । सुमत्र रथ म बिठा कर चल साथ म पुरजन ।

४—वनप्रस्थान विश्रामादि

(१४) तमसा-तट पर प्रथम विश्राम । केवल जल पीकर रहे । रात के समय पुरवासिया का घाखा देकर निकल गये ।

(१५) द्वितीय विश्राम—शृ गवैरपुर जात हुए इगुदी वक्ष के नीचे रुके । गुह राज स भेंट । आतिथ्य अस्वीकार ।

(१६) गुह की सहायना से गगा पार । सुमत्र का प्रत्यावतन । राम लक्ष्मण का जटा बनाना । सीता का गगा पूजन ।

(१७) प्रयाग म तनीय रात्रि । प्रथम बार अकेले तीन लोग ।

(१८) भरद्वाज स भेंट यमुना पार होना वरगद के नीचे विश्राम ।

५—सुमत्र का प्रत्यावतन दशरथ की मृत्यु

(१९) सुमत्र का जयाध्या लोटना । दशरथ कौशल्या-सवाद ।

(२०) अ धमुनि वत्ता मरण मृत्यु । कौशल्यादि का विराप । शव का कडाह म रखा जाना ।

(२१) वसिष्ठ द्वारा भरत को बुलाने के लिए दूत प्रेषण । भरत का दुस्वप्न देखना । लौटते समय अमाध्या की श्रीहीनता ।

(२२) ककेयी से समाचार प्राप्त कर भरत का मोघ । कुब्जा ददित ।

(२३) कौशल्या के आगे अपने को निर्दोष मिद्ध करने के लिए भरत का शपथ करना ।

(२४) दशरथ का अन्त्यष्टि मस्कार । राजकर्मचारियों का अनुरोध टालकर राम का लौटाने के लिए तयार होना ।

६— राम भरत भेंट

(२५) भरत की सना देखकर गृह का सन्द्द, आज्ञाकरण की तयारी, अन्त में भरत के आगे भेंट प्रस्तुत करना ।

(२६) गृह के साथ भरत का वार्त्तागण । राम जिस पड के नीचे ठहरे थे उसके तले की शय्या को भरत का देपना पोक करना ।

(२७) भरद्वाज से भेंट तथा उनका आतिथ्य ।

(२८) भरत की सना दस्त कर लक्ष्मण का पड पर चढ़कर पहचानना और भरतादि के वध के लिए प्रस्तुत होना । राम का समझाना और लक्ष्मण का शात ब्यथा लज्जित होना ।

(२९) राम भरत मित्रान ता मामिक प्रसंग । दशरथ की मृत्यु-सूचना से राम का शाकप्रस्त होना । नदी-तट पर जलाजलि देना ।

(३०) राम, भरत तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों का परस्पर वादविवाद होना । राम का लौटाने में असफल भरत का निराश होकर पादुकाशा-महित वापस लौटना ।

(३१) नदिश्रम में भरत का वाम ।

(१) मथुरा-ककेयी प्रसंग—वाल्मीकि रामायण में मथुरा-ककेयी का स्वाभाविक रूप में चित्रित किया गया है, किन्तु जागे चतुर अवतारवादक विकासके कारण कई शाप-वरा की कल्पना की गयी । कुछ लोगक भरत माता ककेयी को शपथ मुक्त करना चाहते थे इसलिये भी प्रसंगा में अन्तर उपस्थित हुआ । असमीया रामायण वाल्मीकि रामायण का अनुकरण करती है उसमें इस विषय में किसी नूतन प्रसंग का समावेश नहीं है किन्तु शेष तीन रामायणों में है ।

मथुरा—(१) दुदुभी अम्परा—महाभारत^१ के रामायणान्त में मथुरा की कुटिलता छिप गयी । वह दुदुभी नामक अम्परा बनायी गयी । उसका मथुरा रूप में अवतीर्ण होना रावण के वध के लिए हुआ । पद्मपुराण के पातानसण्ड (मौडीय मस्करण) में इसका उल्लेख है वैश्या और उडिया रामायणों में भी इसका वर्णन हुआ

है। बेंगला रामायण में अनुगार विधाता ने रावण के गहार के लिए मंगला मंत्र दिया था (पृष्ठ ६५)। उडिया रामायण में उम देव-अप्सरा रहा गया है। स्वताभा ने माता कहकर उस रावण के वधार्थ अवतरित हान के लिए कहा। (पृ० २३)

(२) मोहित बुद्धि होना—अध्यात्म रामायण में गरम्बती तथा मथरा दोनों में प्रविष्ट हाकर उत्तरी मति बताने लगी है। मानस में गरम्बता पराया विभूति ने स्व सन्ने मान स्वताभा ने अनुगार की अनिच्छा हान हुए भी सन्निहित रखी है। वे केवल मथरा की बुद्धि पर दती हैं।

(३) राम से शत्रुता—मथरा के विराध वरुण का एक कारण राम की शत्रुता भी बताया जाता है। अग्निपुराण^१ में लिखा है कि राम ने उस पर पाण्डुर धमीटा इसी वर के कारण वह राम का मन भ्रजना चांसी है। अग्नि-युगल में वधा का जल्य धिक् सक्षिप्त रत है। उडिया रामायण में वानकाण्ड में बताया गया है कि मिथिला में विवाह के अवसर पर गौरी गालिया गान के कारण राम ने उस मारा था। जया-या काण्ड में पुन उसका उल्लेख हुआ है। अपमान के कारण मथरा ने मन ही मन निश्चय किया कि दखूंगी। (पृष्ठ २४)

इस प्रकार मथरा के बुद्धत्य में दो प्रकार के पड्यत्र देम गये—(१) देवताभा का और (२) व्यक्तिगत। एक तीसरा पड्यत्र राक्षसा का भी माना गया है, जिसका वणन हमारी जानाच्य रामायण में ता नहा है किन्तु महावीर चरित एव अन्ध राघव नाटक में है। यहाँ शूषणखा मथरा का रूप धारण कर जनकपुरी पहुचकर राम का ककयी का जानी पत्र दती है।^२ यहा भी ककयी का दाप मुक्त करन का चष्टा है।

(१) ककयी का दोष-मोचन—ककयी का दाप मुक्त करन के लिए जो प्रयास हुए उनका वणन मथरा के सम्बन्ध में हा चुका है। इस सम्बन्ध में ककयी के एक शाप का वणन भी किया गया है। वाल्मीकि रामायण के गौरीय तथा पश्चिमात्तीय पाठा में लिखा है कि ककयी ने किसी ब्राह्मण की निन्दा की थी उसने शाप दिया कि तारा भी जपवण हागा। बंगला रामायण और उडिया रामायण में भी इस शाप का वणन है। बेंगला रामायण में ककयी ने वाल्यावस्था में एक ब्राह्मण पर यम किया था। उसने ककयी को शाप दिया कि सभी लोग में तारा अपवण हागा। उडिया रामायण में भी बाल्यकाल में ककयी एक तपस्वी बद्ध-बधिर को देखकर हसी थी और उसने भी ऐसा ही शाप दिया था। उडिया नखक कहता भी है कि देव सदा न उरएय किया, ककयी बुरी नही थी।^३

१ अग्नि-पुराण अध्याय ६८।

२ दण्डि का-म्बिनी (माच ६३) में प्रकाशित प्रस्तुत लखक की रचना—मथरा विभिन-रूपणा में।

३ स्व उपाय वन ककयी नाहे मन्—२३५।

(२) खल दुबल—अर्थात् रामायण के सरस्वती प्रसंग से प्रेरणा लेकर ही सभवत उडिया रामायणकार ने खल दुबल (२६ २७) की कल्पना की है। य दाना भाई ब्रह्मा के कहने से त्रमश कनेयी और दशरथ व शरीरा म प्रविष्ट हा गय। खन न कनयी का दुष्प उडि बनाया और दुबल न राजा को दुःख मति। खन और दुबल क रूप म सनता और दुःखता का साकार किया गया है।

(३) केवट प्रसंग—राम-क्या म कवट प्रसंग व दा स्थन है—(१) अहल्या उदार के तुरन्त पश्चात और (२) चित्रकूट-यात्रा क समय। इम प्रसंग का प्रथम उल्लेख अष्टम रामायण म हुआ है और उसम इमका वणन अहल्या उदार के पश्चात ही है। यह स्थन ही अधिन स्वाभाविक है। बंगला रामायण म भीय ही इसका वणन हुआ है। उडिया रामायण और मानस म इमका वणन अयोध्याकाण्ड म है। इन तीना रामायणा की उक्तिया म साम्य है। असमीया रामायण म यह प्रसंग नहीं है।

सगला रामायण के अनुसार खल नौरा खर जगत म भाग गया। विश्वा मित्र ने उस डाटा कि न थान पर उस भस्म कर दिया जाणगा। उसन वातर होकर विनय की—मरी नौका जीण शीघ्र शनद्धिप्रमय है। मैं तीना योगा का कच पर विठा कर पार कर दू गा। पदधूनि से नौरा मुक्त हा गयी ता अपन बाल बच्चा का पोषण किसके द्वारा करू गा। मरी गहिणी गानी दगी कि मुनि के कहन स नौका खो दी। (पद्य ७५ आदिकाड)

उडिया रामायण म कवट (नाउरिया) इस प्रकार कहता है—

क्षणक विश्राम हे करिया रघुमणि ।
ए नाव खण्डिरे मोर बन्वे दग प्राणी ॥

तोहर चरण अछइ येवण रेणु ।
काष्ठ पावाण युवती लागि होए तेषु ॥

प० ५१

मानस का कवट भी ज्ञान पर नग आता। वह कहता है तुम्हारी चरणरज का स्पर्श पाकर शिवा स्त्री बन गयी। मैं नाव स ही अपने परिवार का पानन करता हूँ। यह तुम्हारे चरणों का स्पर्श से मुनि-पत्नी बन जाणगी। अतएव बिना पर धीरे नाव पर पर नहा रखन दूंगा भल ही लक्ष्मण ती मार दे। मुझ उत्तराई नहीं चाहिए।

पूर्वाचनीय रामायणा (असमीया का छोडकर) म कवट सच ही टर गया है। मानस का केवट प्रम पद्य अटपटे वचन बोलन जाला बना ही चलन है। उन नौका क स्त्री बनकर उडन का भय नहीं है वह तो चरण धाने के बहाने भगवान का चरणामल लेना चाहता है। राम भी सीता और लक्ष्मण की आर मुक्तरान हुए दसकर उस अनुमति दे देत हैं।

(४) पवित्र वधुओं का सीता से राम का परिचय पूछना—हनुमन्नाटक म

ग्रामवधुओं सीता व प्रणि ममता प्राप्त करती हैं। अग्य परिचय व गणना म आर पर उमके मन्मथा व पादरग्निक मन्मथ जानन की जिज्ञासा स्त्रिया का महत्त्व म्भारत है। हनुमन्नाटक के इस प्रसंग से बेंगला रामायण उलिया रामायण और मानस के लेखका ने प्रेरणा ली है।

हनुमन्नाटक के अनुगार मानस म पधिया की वधुआ न मीना म जाण्णपूजन पूछा—य नीन-नमल व समान नय वाने तुम्हारे कौन हैं ? लज्जा म विभान नय वाली सीता ने मुम्बगवर गिर नीचा वर निया और हम प्रकार उनके प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दे दिया। अर्थात् सीता न मनज्ज मुस्कराण्ट और अपन मीन स स्पष्ट कर दिया, यह युवक उनका पति है। (३ १५)

बेंगला रामायण म ग्राम-वधुओं मुनि-गलियाँ हैं। व मीता म पूछनी हैं दूवादन श्याम मुन्दर एव धनुधागे तुम्हारे कौन हैं ? पुनर्वित हाण्ण मुस्करा कर तथा अबोधुखी हाकर सीता मीन रह गयी। उहान शगित से स्पष्ट कर लिया, य मरे पति हैं। (प० ११५)

उडिया रामायण म सीता व परा म कुशकन्क छिदन लग। व बार बार राम से पूछन लगी अब कितनी दूर और चनना है। के शबर पल्ली के पाम स निजल। शबर-स्त्रिया न प्रश्न किया—य दो पुम्प तुम्हारे कौन ह ? सीता न कहा जो महाधीर पीछ जा रह है य मेर दवर ह। एक स्त्री वाली मरी एक बात सुनो जा आगे जा रहे है व तुम्हारे कौन हैं ? इस बात से सीता का सकाच हुआ। वे सिर झुकाकर चुप हा गयी। युवतिया बोली यही इनके पति है। (५४ ५५)

मानस का वणन सबसे समानता रखता हुआ भी अपनी विशिष्टता रखता है। सीता के शील एव उनकी मधुर शृंगार चेष्टाजा के चित्रण द्वारा तुलसीदास न अपनी मौनिकता का परिचय दिया है। शरच्चन्द्र जस मुय और कमल जस नेत्र वाले गारे और साबरे किशारा का देखकर ग्राम वधुजा न काटि मनोज लजावन हारे' का परिचय पूछा। सीता जी सकाच म पड गयी। उत्तर दती है तो धट्टता होती है अथवा नना आती है नहा दती तो इन भोली वधुआ की उपक्षा होती है। सीता न बताया मारे रग वाने मरे छान्ण देवर ने। फिर स्त्री सुलभ चेष्टाए कर—मुह का मचल से दनकर प्रियतम की आर दस उहान वानी भौह और खजन-नत्रा के तिरछे तिरछे सनेता के द्वारा बना दिया कि य कौन है।

(२ ११६ ५ ६ ७)

(४) जयन्त-काक प्रसंग—वाल्मीकि रामायण म जयन्त काक प्रसंग दो स्थानों पर आया है—१ जयन्तकाण्ड म राम भरते मिलन के पूव और २ सुन्दरकाण्ड म हनुमान मीता भेंट व समय।

क्या म उत्तुवता व निर्वाह की दृष्टि से सुन्दरकाण्ड का वणन अधिक उपयुक्त है। इस दृष्टा का परिचय केवन राम और सीता को था। उहोने हनुमान

का इगतिष्ठ बनाया गा कि राम का हनुमान पर विश्राम हा जाए । वाल्मीकि रामायण का यही वणन मौलिक है । किंतु यह घटना घटित हुई थी चित्रकूट म, राम-भरत की भेंट क पूर । अतएव वाल्मीकि रामायण क अथाध्यावाण्ड म यह प्रसंग प्रशिप्त हाकर ममाविष्ट हा गया ।

तीना पूवाकपीय रामायणा म जयन्-काक का वणन अथाध्यावाण्ड म भरत क जागमन के पूव हुआ है । प्राय सभी रामकथाआ म इतना प्रसंग एक ममान है— काक का सीता के स्तना पर प्रहार करना राम का एपिकास्व प्रहार करना और काक का चन्दु-हीन जाना ।

असमोया और बेंगला रामायणा म काक न सीता के रूप पर मुग्ध हुकर चनु प्रहार किया था । उडिया रामायण म वणन भिन्न है । उडिया रामायण म उसके द्रुपुत्र हान का भी उल्लेख नहीं है ।

असमोया रामायण क अनुसार राम सीता की जाप पर सिर रखकर शयन कर रह थ । पेठ पर बठा इन्द्र-पुत्र काक सीता के रूप पर लुभाकर उनके स्तना पर बार बार प्रहार करन लगा । सीता के स्तना से रधिर् निकलन लगा, क रा पड़ी । राम जाग पडे उठोने ग्ट होकर ऐपिक बाण मारा । बाण ने दवपुरी तक उमका पीछा किया । कौआ लोटकर राम की शरण म जाकर बोला है जगत क बाप और जगत की माता, मैं तुम्ह समभ नहीं पाया था । राम न उसे एक अग स हीन कर दिया । तभी स कौआ गदन पलटकर एक जाँव म दखना और सच-जित मन स आहार-पानी ग्रहण करता है—

घारगोट पालताया एक आँव चाइ ।

सचकित मन सि आहार पानी पाय ॥ द्द २५०३

बेंगला रामायण के रामानन्दी-सस्करण म जयन्त-काक प्रसंग अश्रीलता-दोप विवाण क कारण द्वाया नगी गया । सुबोधचन्द्र मञ्जुमदार और दीनेशचन्द्र सेन क सम्पाणना म वाल्मीकि रामायण के जना स्थला म समान इगका वणन दा स्थला पर हुआ है । सम ममानता भी है । दीनेश बाबू के सम्करण म जा वणन है वह असमोया रामायण के वणन जमा ही है । अतर केवल यही है कि ऐपिक बाण आज्ञाण का रूप धारण कर काक का पीछा बनाम और स्वग तर जाता है वह बालता भी है ।

उडिया रामायण के अनुसार नीता न भाजन स बचा हुआ माम मुक्ता क लिए गम निमा । एक कौआ माम मान के लिए बार-बार आन लगा । सीता उस बार बार उडा कर थक गयी बानी मेर स्वामी बटिनाद स पशु मार कर लात है । मैं आवश्यकतानुसार रात्र कर गप का पत्ता पर गत कर मुक्ता लती हू । जीव न मितन पर इस ही रापिनी हूँ । तू उडना नहीं । तर अकाल म नत्र फूट जाएँ । कौए न सीता क आटा म काग ओ मन विनोष कर दिया । सीता चीव उठी । राम न मन पड कर बाण माग, उगकी तथा चित्रकूट क सभी कौआ की आँवें फूट गयी, वे वृशा न

नीचे गिर गया। सीता ने स्वयं हाथ राम में प्रायश्चित्त की। राम ने सीता की प्रायश्चित्त स्वीकार कर उसे क्षमा करने का अर्थ में प्रार्थना की। राम प्रार्थना करने पर रामायण में जो साधारण है वह राम पुत्र तथा राम सीता के स्वयं पर सुख प्राप्त प्रहार नहीं करता अपितु भाग्य में बाधा पहुँचाने का कारण है वह रामायण में ही है। राम का नाम से जागत्य बाण से पोदा गया तथा जाना जाता भी वधन नहीं।

कौल के माँग-नाम तथा वधन क्षमता की रामायण मजरी^१ और हीरेन्द्रनाथ दत्त^२ के वगला रामायण के अद्याध्याकाण्ड संस्करण में भी हुआ है। वात्मान रामायण के गौडीय एक परिचयात्मक संस्करण में भी सीता द्वारा सीता का नाम गिराया जान का उल्लेख है।

मानस के वधन पर रघुवश और अद्यात्म रामायण का प्रभाव है। रघुवश में इसका वधन राम भरत मित्र के पश्चान हुआ है। मानस में एका ही हीन के कारण इसका उल्लेख अद्याध्याकाण्ड में न होकर अरण्यकाण्ड में है।

मर्यादावादी तुलसीदास का सीता के स्तना पर चाच प्रहार वाली बात मना नीत नहीं हुई। यहाँ उन्होंने 'जयात्म रामायण' के अनुसार लिखा कि चाच सीता के चरणों में चाच मारकर भाग गया—सीता चरन चाच हति भागा। (३०७) वह राम के बल की थाह न ले जाया था। राम ने सीता का बाण मारा। इन्द्राणि के पास जाने पर भी उसकी रक्षा न हो सकी तो नारद के कहने से राम के ही पास गया। उन्होंने उसे काना बनाकर छोड़ दिया। तुलसीदास कहते हैं कि मोहवश द्राह करने वाली का तो वध ही उचित है। कृपालु राम ने तो दया-वश उसे छोड़ ही दिया। (१२)

केवल पूर्वाचलीय रामायणों के कुछ प्रसंग

बुद्ध एते प्रसंग भी हैं जो केवल पूर्वाचलीय रामायणों में हैं किन्तु मानस में नहीं हैं।

१ रामायण मजरी अरण्यपर्व १४३ १४५।

२ हीरेन्द्र बाबू बाच अद्याध्याकाण्ड के संस्करण में सीता गंगा में मांस धोते समय पक्षियों को मांस खिलाती जाती है। जयंत काक अथ पक्षिया के भाग का नाम भी खा जाता है। सीता के रोकने पर वह उनका स्तना पर बैठ गया। भाजनोपरांत राम सीता के सो जाने पर अचनक हट जाने से खुले स्तना पर उसने नखाघात किया। शेष कथा दीनश बाबू के संस्करण के समाप्त है—देखिए पृ० ५५।

अद्यात्म रामायण में वह श्रृंगुठ में चाच मारता है तथा मांस के लाभ से ही प्रहार करता है—मत्पादां गुण्ठमारक्त विद्वारामिषाशया। (सुन्दर काण्ड, ३५४)

(१) राजा शिवि आदि की कथा—कनेयी राजा दशरथ का वचन। पर दृढ स्न क लिए उक्तानी हैं और कथाए मुनाती हैं। असमीया और बंगला रामायणा म वह शिवि सगर-पुत्र की कहानी मुनाती है। उडिया रामायण म शिवि की कहानी का वणन ह। इस रामायण म कौशल्या दिति अन्ति और पवनात्पति की कथा सौतियाटाह का उदाहरण दन क लिए कहता हैं और राम पिता की जाना का वटा वतान के लिए रेणुका और परशुराम की कथा मुनात हैं। य सभी कथाए वाल्मीकि रामायण क आधार पर हैं।

(२) त्रिजट की कथा—वाल्मीकि-रामायण म त्रिजट नामक बूढे ब्राह्मण स गम न कहा कि डडा पेंक कर तुम जिननी गाये घेर ता तुम्हारी हो जाएंगी। मभी पूर्वाचलीय रामायणा म मका वणन है। कृत्तियाम न त्रिजट नाम भी लिया है। शप दा न केवल बूढे ब्राह्मण कहा है।

(३) सय सज्जा—वाल्मीकि रामायण क ही अनुमार असमीया और उडिया रामायणा म भग्न की सय-सज्जा का वणन है। उडिया रामायण का वणन अधिन विम्नत है। यह भी वाल्मीकि रामायण के अनुमार है।

(४) भरद्वाज का आतिथ्य—वाल्मीकि रामायण म तप शक्ति से भरद्वाज भरत की सेना का अरु मुविघाएँ दत हैं। पूर्वाचलीय रामायणा म अनक मुख-मुवि घात्रा का वणन है जिनम मुल्परिया के सहवाम का भी वणन है। अयाध्याप्तासी मुख म मस्त हाकर राम का भी भूत जात हैं। मानस म आतिथ्य की चचा अवश्य है किन्तु पूर्वाचलीय रामायणा म अनक मुख-मुविघात्रा का वणन है जिनम मुल्परिया के सह वाम का भी वणन है। अयाध्यावामी मुख म मस्त हाकर राम की भी भूत जाते हैं। मानस म आतिथ्य की चचा अवश्य है किन्तु पूर्वाचलीय रामायणा जसा विशद वणन नहीं है।

(५) पिडवान—वाल्मीकि रामायण म राम न डगुदी की खली के पिड दिने कौशल्या दसकर स्न करती हैं। असमीया और उडिया रामायणा म भी एसा ही वणन है। उडिया रामायण के अनुमार पिड सीता न पकाय हैं। दशरथ प्रकट हाकर गम क हाय म पिड नते हैं और त्वमभा क मध्य मम्मामिन हान हैं। ब्रह्म पुराण और शिवपुराण म भी दशरथ प्रकट होकर पिड लेत हैं। बंगला रामायण के कुछ ही सम्बरणा म इसका उल्लग ह। अनाम सम्बरण और हीर-द्रनाय चट्टापान्याय सम्पान्ति अयाध्यावाण म गीता न पिड न्य है और दशरथ न स्वय प्रकट द्वारा हाकर उहें ग्रहण किया है। आन-द रामायण म मित्रता-नुतना प्रसग है।

(६) शरभग की पादुकाएँ—वाल्मीकि रामायण के गौडीय-मस्वरण म शरभग द्वारा राम के पास सडात्र भेजने का वणन आया है। असमीया रामायण

(७) सीताहरण—रावण के सयासी रूप में आकर सीता से वार्त्तानाप कर उन्हें हर लेने का एकसमान वणन रामायणा में है। असमीया रामायण में रावण के प्रभाव का भी वणन है। वह जब आया तो भय से पक्षी मौन रह गया। हवा धीरे-धीरे बहने लगी। उडिया रामायण में रावण यागी का वेश धारण कर वर्णाटगरा में चारा वेद गाता है और आकार, गायत्री एवं माधिनी पढ़ता है। सीता का लज्जा शीला-बधू रूप सुदरता के साथ चित्रित है।

सीता की खोज

(१) जटायु से भेंट—साधु-वेशधारी रावण के प्रकृत रूप का दख सीता की आजस्वी उक्तिया उनका हरण जटायु से युद्ध बंदरा का लखकर आभूषण फेंकना तथा राम लक्ष्मण की सीता खोज आदि प्रसंग समानता रखता है। पूर्वाचनीय रामायणों में राम जटायु को सीता का रक्षक निशाचर अथवा मारीच (उडिया में) समझकर मारने को सनद्ध हो जाते हैं। यह वणन स्वाभाविक है। तहूनुहान जतु और उसके आसपास सीता के अत्रकार आदि दख राम का उस हत्यारा समझना सहज था। मानस के राम एसी भूल नहीं करते। वे ना जाते ही उमक सिर पर हाथ रख देते हैं। वे उससे जीवन धारण करने के लिए कहते हैं। वह नहीं तयार होना तो उसे अपना घाम दते हैं।

(२) कवच—वाल्मीकि रामायण के अनुमार वणन हान के कारण पूवाचनीय रामायणा के वणन में समानता है। स्थूलशिरा ऋषि और इंद्र के शाप के कारण यह राक्षस हुआ और कुरूप भी। इसका सिर पट में आवे कही की कही और भुजाएँ बहूत लम्बी थी। इही भुजाआ से उमने राम लक्ष्मण को पकड़ा। उमकी भुजाएँ बाट गली गया। उसके कहने पर राम उसका अग्निदाह कराने के तब उस दिव्य-रूप की प्राप्ति होनी है और वह राम को मुश्रीव एवं शबरी से मिलने के लिए कहता है।

असमीया रामायण में जब वह राम-लक्ष्मण का भुजाआ में बसता है तो उनके कट शरीर ग जान जाता है कि य क्षत्रिय हैं।

शाप इन वालं ऋषि के नाम में थाडा-मा भेद है। असमीया में स्थूलशिरा एवं उडिया में स्थूलश्रीव नाम है। मानस का प्रसंग बहुत सगिप्त है—आवत पथ कवच निपाता—३ ३० ६। तुनसीदाम न पूवकथा रचि के साथ कही है। वह गधव है तथा दुवामा न शाप दिया है। तुनमीदाम का कवच की कथा से एक मुद्यनमर मिल गया। उहान अय प्राता की उपक्षा कर एमा सकेत निया कि कवच का विप्र द्रोह करने के लिए शाप मिला। इगी ब्रह्म विप्रगुणगान किया है—

पूजिष विप्र सोल पुन होना । सूद्र न पुन गन ग्यान प्रवीना ॥ ३ ३३ ०

(३) शबरी—वाल्मीकि रामायण के अनुमार मतग ऋषि की शिष्या शबरी न राम का स्वागत किया और वह दिव्य रूप धारण कर स्वयं चली गयी। सभी भाषा-

रामायणा में शबरी का एक जमा विषय है। तुलसीदास ने शबरी का उपासक मान सिद्ध करना चाहा है कि भक्ति के क्षेत्र में शक्ति पति मान रहा है।

शबरी के जूटे घास (उडिया में) तान-बघासा में प्रचार है कि शबरी बग को घास तान कर मीठे मीठे राम का गांवा का मिठा मिला करती रहीं थी। शिरी भाषी क्षत्र के गीता में भी प्रचार है— शबरी का घास मुत्तमा का गदुन। वाल्मीकि रामायण में जूटे घास प्रदान करवा का उल्लेख रहा है। घास में भक्ति की शक्ति राम का माय है, यह शिरी का मिठा ही शबरी का जूटे घास की कल्पना हुई है।

उडिया रामायण में वणन है कि शबरी ने घास तान कर मीठे घास तान करके किये थे। उसमें राम प्रचार का घासा का कर राम का मांवा लगा शिरी शिरी राम ने वही फल राय जो तान से कुतर हुए थे। शबरी का पूजन पर व घास में बड़ी घास सा रहा है जिन पर दत्तमुद्रा है। समुद्रिन पत्थर में प्रथम नहीं कर गहरा। (प० ५२)

इस कथा पर घादि वासिया का प्रभाव लीत रहा है। मध्य भारत का वान अपन को शबरी-वशज मानते हैं।

पूर्वाचलीय रामायणा के वे प्रसंग जा मानस में नहीं हैं

(१) सीता का हिंसाभय—वाल्मीकि रामायण में राम का उद्देश्य राक्षस-वध जानकर सीता उह हिंसा से विरत करना चाहती है। वे एक ऋषि का उपाहरण देती है कि कोई उसके पास तलवार रख गया था इस तलवार के कारण ही वह हिंसा वृत्ति में लीन हुआ।

बंगला और उडिया रामायणों में यह वणन है। बंगला रामायण में इस ऋषि का नाम भी बताया है—दक्ष। उडिया रामायण में भी सीता का भय उपयुक्त प्रचार का ही है। राम क्षत्रिय के कत्तव्य आदि बताकर सीता का समाधान कर देते हैं।

इस प्रसंग में वणवा का अहिंसा प्रेम लक्षित होता है। इसका स्थल सुतीक्ष्ण से भेंट के उपरान्त है।

(२) माण्डकणि ऋषि और पचाप्सरसरोवर—उपयुक्त प्रसंग के पश्चात् रामादि आग बन्ते हैं। वे एक सरोवर से गीत-वाद्य की ध्वनि सुनकर जिज्ञासा प्रकट करते हैं। ऋषि लोग समाधि न करते हैं कि माण्डकणि ऋषि न उग्र तप किया। देवताओं ने तप से चिन्तित होकर उनका पास पंच अप्सराओं को भेजा। ऋषि तप भ्रष्ट होकर इन्हीं पंच अप्सराओं को लेकर तप बल से जल का नीचे प्रागाद बनाकर विलास करते हैं। वाल्मीकि का यह वृत्तांत तीनों पूर्वाचलीय रामायणों में उपलब्ध है। असमोया में ऋषि का नाम माण्डकनि है, बंगला में नाम नहीं दिया है और उडिया में माण्डकण कहा गया है।

(३) दिव्य भोजन—तीनों रामायणों में ब्रह्मा के आदेश से इंद्र सीता के

किया कि तुलसीदास ने तापस के रूप में अपने को ही प्रस्तुत किया है। प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का मत है कि संभवतः स्वयं तुलसीदास ने इस वाद में जोड़ा है। कोई तापस का अग्नि, कोई भरत और कोई तुलसीदास मानता है। प० मिश्र तापस को तुलसीदास मानना ही अधिक सटीक समझते हैं।^१

(२) चित्रकूट का राम-वाल्मीकि सम्बन्ध—अध्यात्म रामायण के आधार पर है।

(३) चित्रकूट की सभा का जसा विशद और सुन्दर वर्णन मानस में है वसा अन्य रामायणों में नहीं है। यहाँ जनक आदि भी उपस्थित रहते हैं। भरत तीर्थों का जल जिम कुएँ में डाल दते हैं वह भरतकूप कहलाता है।

अरण्यकाण्ड (तुलनात्मक अध्ययन)

(असमीया और बंगला रामायण में इस अरण्य तथा उडिया रामायण में अरण्यक कहा गया है।)

राम के वनवास की अवधि का अधिक भाग अरण्यकाण्ड की कथा में समाप्त होता है। राम इस अवधि में अनेक ऋषियों से भेंट करत हुए राक्षस-सेवित भयकर वना की ओर दक्षिण दिशा में व्रत गये। गयता है वे जानबूझ कर राक्षसों से बच लेना चाहते थे, ताकि उन्हें दण्डित कर निरीह तपस्वियों एवं जनता का प्राण न सके।

इस काण्ड की मुख्य कथा सीताहरण मानी जाती है। विराध, कवच और जटायु आदि के प्रसंग तथा शरभग आदि ऋषियों के आख्यायिका आदि रामायण में प्रक्षिप्त माने जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि ८१० वर्ष के काल की दूरी पूरी करने के लिए इन प्रसंगों की कल्पना कर वाल्मीकि रामायण की कलेश्वर-वृद्धि की गयी है।^२

इस काण्ड की मुख्य कथावस्तु से भाषा रामायणों की समानता है। यह समानता असमीया रामायण में अधिक है। मानस में मन्त्रि का रंग अपेक्षाकृत कुछ गहरा है तथा उडिया रामायण में पूर्ववत् चमत्कार पूर्ण घटनाओं की योजना है।

वाल्मीकि-रामायण और भाषा रामायणों के समान प्रसंग

(१) धन्त्रि का घातिव्य—अनुसूया-मोता-मन्त्रि अनुसूया द्वारा पतिव्रत का उपदेश और सीता को प्रसाधन नामधेय-ज्ञान (वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग अयोध्याकाण्ड के अन्त में ही आ चुका है।)

१ प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—रामचरितमानस (काण्डराज मन्त्रण), प० १६।

२ तुलसीदास—श्री बुद्ध—रामकथा, तृतीय-मन्त्रण अनुच्छेद ४५७ (एच० यादवी के मत का समर्थन)।

(२) विराध वध—विराध तमक राम का गीता का उग्रा भाग, राम लक्ष्मण द्वारा उग्रा वध और धर्म गन्तार । उग्रा पुत्र रूप प्राण करता ।

(३) गरभग यज्ञांत राम ग गरभग का भेंट व पूरा इन्द्र का उग्रा आश्रम म आता (मांग म ती) । गरभग का राम-राज कर प्राण-प्राण करता ।

(४) सुतीक्ष्ण मिमा सुतीक्ष्ण स भेंट कर अगस्त्य व आश्रम की ता प्रस्था । (यान्मावि रामायण तथा अगस्त्या और वगता रामायण व अनुगार अथ तव १० वध गी जान है और सुतीक्ष्ण रामायण का अगस्त्य व यही गीता व भ्रमकर पढ़न उनके छाट भाग व पाग भजन है ।)

(५) अगस्त्य भेंट—अगस्त्य राम की शक्ति स परिणित (भाषा रामायण म उनके यज्ञांत स भी) राम का अस्थ शम्भ-राज करता ।

(६) जटायु से मन्त्री—उम पिता तुल्य मानता पणशाया बनाकर रजा ।

(७) शूषणला प्रसंग रावण की वहिन का राम पर प्रनुप हाना राम का उस लक्ष्मण के पाग भाना अपनी पराधीन स्थिति रामभाकर लक्ष्मण का उग पुत्र राम व पाग भजना । गीता व प्रति गीतिया यह स प्ररित होकर तथा उ ह अपनी वामना प्रति म कटा रामभ कर रान का टोटना । राम के आश्रम स लक्ष्मण द्वारा राक्षसी के नाथ वान काटे जाना ।

(८) छर दूषण वध—प्रतिशाप की भावना स आय हुए सर दूषण और विशिवा का केवल राम द्वारा वध । लक्ष्मण जीर सीता का कदरा म जाश्रय लना ।

(९) रावण की सूचना—वहिन व जपमान और अपन अनुचर शासको के वध का प्रतिशाप देने तथा सीता की सुत्त्री की वामना रखकर रावण का राम विरोध । मारीच की सहायता मागना उसके नननच करने पर मारने की धमकी देना । विवश मारीच का प्रस्तुत होना ।

(१०) स्वण मग—मारीच का मगहप धारण । सीता के अनुरोध से राम द्वारा मग का पीछा करना मगन के पूव मारीच का आत स्वर म लक्ष्मण और सीता का पुकारना । सीता का ध्रमित होना । लक्ष्मण के समभान पर भी सीता की कृतिकिया । लक्ष्मण का जाना ।

(११) सीता हरण—रावण का साधु भेष म जाकर सीता स परिचय पृथना । जपना पश्चिच देने पर सीता का प्रीय । सीता का बलात हरण ।

(१२) जटायु से युद्ध—जटायु का सीता की रक्षा के लिए भयकर युद्ध करता जीर आहत होना ।

(१३) अभिज्ञता दान—पपासगेवर के पास पवत शृ म पर बठ हुए पांच कदरा की जीर सीता का वस्त्राभूषण फेंचना ।

(१४) अशोक वन—रावण का सीता को अशोक वन म रखना । राक्षसियों का पहरा रहना । सीता को धमकिया देना ।

(१५) सीता की खोज—गूनी बुटिया देगवर राम-सदमण का अत्यधिक दुखी होना । सीता की खोज करना । मरणागन जटायु से समाचार पान करना ।

(१६) कब-ध—बिबनाग और भयार रप कब ध राक्षस से भेंट तथा उगवा वध ।

(१७) शबरी—तपस्विनी शबरी से भेंट । राम ने जातिध्व म्बीधार कर धय किया । उगवा स्वगागहण ।

परम्यराण की कथा मुख्यत तीस भागों में बांटी जा सकती है—क—जत्रि भेंट से पचवटी में निवास तक । ग—सीताहरण (शूषणरा भेंट से जटायु-वध तक) और ग—सीता की खोज— पायल जटायु की भेंट से शबरी मिलन तक ।

अत्रिभेंट से पचवटी में निवास तक

(१) अत्रि अनुसूया से राम-सीता का मिलन सभी रामायणों में वाल्मीकि रामायण के अनुसार है । मानस के अत्रिबिन सभी रामायणों में सीता अपनी समस्त कथा बनला जाती है । पुनर्विन-दाप है । असमीया रामायण में अनुसूया वर देना चाहती है किन्तु सीता म्बीधार नहीं करती । तब वह स्वयं ही सीता के सिद्ध और चन्दन के अणय रहन का वर देता है । विध्य वस्त्राभूषण तो सभी रामायणों में दिय जात हैं । बगला की अनुसूया सीता की मांग में सिद्ध भरण शृंगार करती हैं । उडिया रामायण में सीता का मिलने वाली पाटसाडी की अनुपम कथा है ।

पाटसाडी^१—यह माडी समुद्र मन्थन के समय शकर को प्राप्त हुई थी उद्धान रम प्रज्ञा का दिया । प्रज्ञा ने प्रयाग में यन कर आचार्य दक्षिणा के रूप में इस अत्रि का दिया । अत्रि-पत्नी अनुसूया ने इस पावती का लिया । किन्तु शकर ने दान की हुई वस्तु पावती का नहीं लन दी । अनुसूया से माडी की यह कथा सुनकर सीता बोनी— ब्राह्मण की वस्तु लन से गम श्रुद्ध हागे । उन्होंने उत्तर लिया— मैं तुम्हारी माना हूँ अतएव पुनी के लिए यह अग्रहा नहीं है ।

(२) विराध वध में समानता हात हुए भी कुछ अंतर है । वाल्मीकि रामायण में विराध ने सीता का गोद में इमलिए उठाया था कि उनका उपभाग कर सके ।^२ गम सीता का उसकी गाद में देखकर बोल य इस समय मुझे इतना दुख हो रहा है जिनका पिता की मृत्यु और राज्य हरण से भी नहीं हुआ । असमीया रामायण में भी वह सीता का भोगने के लिए उठाना है । किन्तु जय रामायणों में संभवत मयाग के कारण गमा नहीं दिखाया । मंगला रामायण में वह सीता को खाने के लिए परन्ता है । उडिया रामायण में पचवटी का उद्देश्य नहीं दिखाया है । मानस में तो वह रेवाग आन ही मान दिया जाता है । वह सीता का छू भी नहीं पाता ।

१ पाटसाडी, = ६७ ।

२ इस नारी वरागोहा में भार्या भविष्यति, ३-२ १३ ।

उसके पूव रूप के सम्बन्ध में पूर्वावनीय रामायणों वाल्मीकि रामायण के अनुसार उसे कुबेर का अभिशप्त चर वनवासी है। राम में अन्तर है—अगमीया में डम्बरू, बँगला में विशार और उडिया में सुगह (वाल्मीकि रामायण में तुम्बर)। वाल्मीकि रामायण और असमीया रामायण में वह रभा पर आतंकत हान के कारण अभिशप्त हुआ है। उडिया रामायण में शाप का कारण अय है। उसने कुबेर को दुबल दृष्टि हान के कारण अपमानित किया था इसीलिए अभिशप्त हुआ। मानस में उसके पूव शाप का उल्लेख इसलिए नहीं जान पड़ता कि तुलसी उस राम द्वारा निज धाम पहुँचाना चाहते हैं।

वाल्मीकि रामायण में जमर हान के कारण राम लक्ष्मण उस उसी के कहने पर गडा खोदकर गाडते हैं असमीया रामायण में गाडते और जलाते दोनों हैं। बँगला में जलाते हैं। जेप गे में कुछ नहीं करत। जीवित गाड देन की बात से भाषा रामायण कार तुष्ट नहीं हुए इसीलिए उहान इस विषय में मौन धारण किया या उस जला दिया।^१

(३) ऋषियों से भेंट—रामादि जाग चलकर क्रमानुसार शरभग सुतीक्षण अगस्त्य के भाइ और अगस्त्य से मिलते हैं। सभी प्रसंग समान हैं। वाल्मीकि रामायण में ऋषिया की मर्यादा की रक्षा की गयी है। रामादि आकर ही उहे प्रणाम करते हैं, ऋषि लोग प्रिय अतिथि एव राजा मानकर उहे पूजा-अर्घ्य दत्त हैं। भाषा रामायणों में राम के ब्रह्म हो जाने के कारण ऋषि उहे ब्रह्म मानकर समादत्त करत है। मानस में सुतीक्षण का सम्बन्ध अगस्त्य से नहीं जोडा गया है उह विह्वल भक्त के रूप में चित्रित किया है। अध्यात्म रामायण के द्वितीय सर्ग में सुतीक्षण राम की स्तुति करत है। यहा तुलसी की भक्ति भावना मुखर हा उठी। मानो मुनीक्षण के स्थान पर उहान अपने को ही प्रतिस्थापित कर लिया। प्रेम भक्ति के उमाद का महा अनोखा वनन है जो जय ग्रन्थों में नहीं पाया जाता। मानस में राम मुतीक्षण के हृदय में चतुर्भुज रूप भी दिखाते हैं।

अगस्त्य ने केवल राम की शस्त्रास्त्र दिये थे किन्तु असमीया रामायण में लक्ष्मण ने भी अगस्त्य से माँग कर धनुष प्राप्त किया।

(४) जटायु से मग्री—पचवटी में बस जाने पर राम पणशाला बनाकर रहने लग इसके आगे पीछे ही जटायु से मग्री हुई। बंगला रामायण में जटायु स्मरण करने पर आन गी प्रनिता कर अपन दश चला गया। वाल्मीकि-रामायण के गोपीय-मस्वरण में एमा ही वनन है उसी में प्रेरणा ली है।

१ विराय-वध—असमीया पृष्ठ १६४ १६५, बंगला—१३५, उडिया—७८, मानस—३६७८।

कथा विधा

जिनके अन्तगत गया तीर्थ एवं वहाँ के पतित ब्राह्मण की कथा है। गया ने राम उड़ीसा के तीर्थों में पहुँचाया जाना है फिर वहाँ में वाशी श्रौंग प्रयाग में दिखाय जात है। पृष्ठ १३ पर यह फिर मुनीश्वर ने मिनते हैं। सम्भवत मुनीश्वर की दाता भेटा के नथ्य का कथा प्रसिद्ध है, यदि नहीं है तो यही कहना होगा कि लखन न भौगालिक वयापना एवं महाकाव्यत्व की चिन्ता नहीं की है।

मानस के प्रमग

लक्ष्मण की जिज्ञासा—पचवटी में लक्ष्मण ने एक बार राम से ब्रह्म जीव भक्ति आदि के सम्बन्ध में प्रश्न किया और राम ने उन्हें समझाया। यहाँ लक्ष्मण जम वीर-मात्र के लिए दशन की प्यास अन्वाभावित-मी लगती है। कुछ ही किन्तु तुनगी न इसी के बहाने भक्ति के महत्व और साधन आदि पर अच्युत प्रकाश डाला है। उनके इन सिद्धांतों पर सीता का प्रभाव है।

मायासीता—वाल्मीकि रामायण में रावण सीता को वेश एवं जाँघ पकड़ कर उठाता है (३ ४६-१८)। कुछ नेत्रिका को रावण द्वारा सीता का छुआ जाना अच्छा न लगा। भारत में सीता नारी की पवित्रता की चरम आदर्श है। जिस समय मुसलमानों का शासन था नारी की पवित्रता का प्रयोजन और भी बढ गया था। अतएव रावण द्वारा अस्पृष्ट सीता का वणन करने के लिए माया सीता की कल्पना हुई। तुासी पर अघ्यात्म रामायण (३ ७ २ ३) का प्रभाव है।

मानस के अनुभार जिम समय लक्ष्मण फन मूल लने जान है राम सीता का बुनाकर कहत है—मैं जब तक नर लीला कर राक्षसों का विनाश न कर लू तब तक तुम अग्नि में निवाम बने। सीता अपना प्रतिबिम्ब राम के पाम छोडकर आग में ममा गयी।

इस प्रकार अत्र रावण जिम सीता को दुएगा वह छाया-सीता होगी वास्तविक नहीं। अघ्यात्म रामायण में रावण इस छाया सीता का भी नहीं छूता। वह नखा से खादकर उन्हें पखी-महित उठा ने जाता है। (३ ७ ५१)

इस प्रमग में मानसकार को एक सुविधा और भित्री। त्वाकाण्ड में युद्ध की मगापति पर राम ने सीता की अग्नि परीक्षा ली थी। वाल्मीकि रामायण के राम की सीता के प्रति उक्तिवाँ तुनसी को महन नहीं हुइ। अत्र ऐसी स्थिति में अग्नि-परीक्षा का उद्देश्य ही बदन गया। राम छाया-सीता को लुप्त कर अग्नि से वास्तविक सीता चाहत है इसीलिए अग्नि परीक्षा का डोग भा कर रहे हैं।

उडिया रामायण के उजरकाण्ड में मायामीना की कथा की और मकेत है। देविग प्रस्तुत प्रथ के उत्तरकाण्ड का तुननात्मक अघ्ययन।

नारद भेट—मानस में राम-नारद मिनन की स्वतंत्र उदभावना हुई है। नारद ने मोचा, उहीं के कारण प्रभू राम शाप शिरोघाय कर दु खी हैं, अतएव वे

राम का प्रगलन करने एव उन म वर मौगा जान हैं । दम भेंट न उदश्य निम्न हैं -

- (१) राम नाम का महत्त्व वर्णन ।
- (२) नवन और पानी का भेद तथा राम का भवन र प्रति प प्राप्त ।
- (३) सते लक्षण कथा ।

किष्किंधा काण्ड

(प्रत्येक पूर्वाचरितोय रामायण मे इसे किष्किंधा-काण्ड कहा गया है ।)

समान प्रसंग

१ राम सुग्रीव भेंट—राम नक्षमण का ल्यरर सुग्रीव का चिन्तित हाता कि वाति क भेज हए ता नही । हनुमान का वण बदलकर राम नक्षमण स मिलना । अग्नि जलाकर राम और सुग्रीव की मत्री हाता । सुगार द्वारा गीता क वस्थाभरण राम को देना । राम का विलाप । राम द्वारा बालि वध की प्रतिना करना । सीता की राज क लिए सुग्रीव का आश्रयामन ।

२ मायावी और दुदुभि राक्षसा म वाति का युद्ध । मायावी का मारन क लिए बालि का क दरा प्रवण । वाति का मरण जानकर सुग्रीव का द्वार पर शिला रखकर नगरी म नोट आना । मी तथा द्वारा अभिपक । विजयो वाति का सुग्रीव पर राप । उस राप स खदडकर उमवी पत्नी स भोग । महिप रूप दुदुभि राक्षस का मारकर फरने से मतग कृपि का बालि को शाप कि यदि इन पवत पर आया तो मत्य होगी । सुग्रीव का इमो पवत पर निवाम ।

३ राम की बल परीक्षा—राम द्वारा सप्त वक्षा का एक वाण से भेदा जाना तथा दुदुभि की अस्थिया का पर के प्रगूठ न कई योजन दूर फेंकना ।

४ बालि वध—राम का वन पाकर सुग्रीव का वाति को ललकारना न मार खाये हए सुग्रीव का राम के प्रति क्षोभ प्रकाश कि वाति को मारा क्या नही । पुणमाल की पहचान देकर सुग्रीव का पुन भेजना । तारा का बालि को युद्ध न करने के लिए ममभाना । बालि का हठपूर्वक सुग्रीव स युद्ध तथा राम के वाण स आहत हाकर पतन । राम की भत्मना करना और उसक वध क लिए राम का तक प्रस्तुत करना । वाति का पश्चात्ताप । तारा का विलाप । वाति की अ त्यष्टि । सुग्रीव का अभिपेक ।

५ राम का विरह दु ल—वर्षा और गरम ऋतु म राम की विरह व्यथा । राम का युद्ध नक्षमण को सुग्रीव क पाम भेजना ।

६ सुग्रीव लक्ष्मण प्रद नक्षमण का किष्किंधा जाना । तारा क मधुर वचना स नक्षमण का जान हाता । सुग्रीव का क्षमा मायना । दूत भेजकर वातर सना बुवाना ।

७ साता की खोज—मभी त्रिशाद्या म वातरा का भजा जाना । दक्षिण त्रिशा की धार अनुमान प्रग आति प्रमुखा का भजना । हनुमान को राम द्वारा मूद्रिका देना । मभी त्रिशाद्या म निराग वातरा का नोटना ।

८ स्वयंप्रभा—थके हुए हनुमानादि का एक विवर म जनचरो का बाहर निकलत उग्र जन का अनुमान कर प्रवेश । स्वयंप्रभा स भेंट, उमरे द्वारा आग्र बंद कराके वानरा का उद्धार होना ।

९ अगद की चिन्ता अथवा विद्रोह, हनुमान का समभाना । अगदादि की प्रायापवेशन की तयारी ।

१० सम्पाति भेंट—वानरा के रूप म विपुल आहार दत्त सम्पाति की प्रमत्तता । वानरा के मुख म जटायु का नाम सुनकर उगकी जितामा । सम्पाति और जटायु की -डान की कथा । मुनि की भविष्य-वाणी के अनुसार पत्ता का उदय ।

० राम-सुग्रीव भन्नी - उडिया रामायण म सुग्रीव क भय का वणन विस्तृत रूप स हुआ है । वह दु स्वप्न भी दग्गता है । हनुमान सुग्रीव की भयानान्त स्थिति म इनन शक्ति हू वि गम से मिलन जात क पूव सुग्रीव का शपथ दकर जात है कि यहा स कहा मत जाना । राम-नशमण जामुन क नाच भीना की चिन्ता कर रह थ ।

वैगता उडिया और हिन्दी रामायणा क हनुमान राम के ब्रह्मत्व स परिचिन है । वगता और उडिया रामायणो म हनुमान सुग्रीव का राम का जिम शब्दा म परिचय न्न है उनम समानता है—

यागे यागे योगिगण ना पाय याहारे । सेई राम रमानाय उपस्थित द्वारे ॥

वैगता रामा० प० १६४

से प्रभु ताहर आसिछन्ति दु ख फडि । योगिजन याहाकुटि न पावति लोडि ॥

उडिया रामा०, १०

मानस की राम हनुमान भेंट वटी ही मामिक है । विछुटे प्रभु से विद्वल भक्त मिलकर अमीम हय का अनुभव कर रहा है । उडिया रामयण म राम-हनुमान भक्ति की कथा का उल्लेख है जिमका वणन इमी वाण्ड के अंत म हागा ।

राम की बल परीभा—मानस म केवल त्तना निन्दा है—

दुदुभि अस्थि ताल देखराए ।

बिनु प्रयास रघुनाथ दहाए ॥ ४६१२

किन्तु पूर्वोक्तलीय रामायणों म दुदुभि राक्षस की अस्थियो का फेंका जाना तथा मात-वक्ष बन्ध का वणन विस्तारपूर्ण है । उगता और अममीया म वक्ष तात के है एव उडिया म मात के ।

उडिया रामायण के अनुमात् सप्तद्वीपा के इन मात मात वक्षा का जीतन वाता म्पन द्वीपा का विजता हागा । ब्रह्मा न आधे प्राणा म वाति का और आध स न्न पडा का बनाया । यागिजन की मगनि करन वाता ही इन्ने वध मक्ता है । वाति म्यग इनम म तीन का वेधने म समथ हैं । इनर वेधन स वाति की मत्यु हागी । प० १६ ।

वालि और राम—सभी रामायणों म तारा वालि को युद्ध न कम्न के निग,

गमभागी है। उडिया रामायण की तारा त्रिचित्र तार ऐसी है। वह कहती है, तुम्हारी जय नहीं होगी। मैं गंधमा न शृंगार धारण न कर सकूंगी। त्रिपया हुआर कष्ट भागन हाग— ३४।

सभी रामायणों में वालि राम से जुड़ हातर गतिया देता है। मानस का वालि अवश्य ही हृदय में प्रीति भरकर ही बठोर बचन बानता है। वह राम का भवन है न।

असमीया का वालि उनके ब्रह्मत्व से परिचित होकर भी गरी-सरी गुनाने में चूकता नहीं है। विडाल का ब्रह्मचय धारण त्रिये हो? हे वगुमति तरी यह गति त्रि एक अधम आचार वाला तरा पति है। सूयवशी दानिया के कुल में जन्म लेकर भी ऐसा व्यवहार? सीता के लिए ऐसा बिया सीता को तामें ही ला देता। (प० २२१)

राम के तक—बाल्मीकि रामायण में राम वालि के प्रश्ना से अप्रतिभ नहीं हुए उहाने दडतापूर्वक कहा त्रि तून अनीति की है और मैंने अयोध्या के राजा भरत के प्रतिनिधि रूप में तुम्हें दड दिया है। मैंने युद्ध नहीं बिया है। मैं सुग्रीव को सहामता देने की प्रतिज्ञा भी कर चुका था।

असमीया रामायण में राम उस दुजन बचल मद तरल चोर दुराचार आदि विशेषण प्रदान कर कहते हैं— राजा लोग बन पशुओं को जाल में फँसाकर मारते रहे है। तून कनिष्ठ की भार्या को घर में रखा था। मैंने सुग्रीव को राज्य दिलाने की प्रतिज्ञा की थी।

बगला रामायण में राम के तक ऐसे ही हैं किन्तु राम में आत्मविश्वास की कमी प्रतीत होती है।

उडिया रामायण में राम तजस्वितापूर्वक कहते हैं— तून भाई की पत्नी का भोग किया। सहोदर को मारना चाहा। सूयवशी का राज्य सारी पथ्वी पर है अत एव मैंने अयोध्या को मारा है।

मानस का राम उसकी अनीति की ओर ही सकेत नहीं करते अपितु अपने ब्रह्मत्व की उपेक्षा देखकर भी उसे डाँटते हैं मेरे भुजबल पर आश्रित सुग्रीव को तू मारना चाहता था।

राम की प्रतिश्रिया—राम के ब्रह्मत्व से परिचित वालि अपनी भूल स्वीकार कर लेता है। इसकी प्रतिक्रिया राम पर भिन्न भिन्न होती है। असमीया रामायण और मानस में वे अपरिवर्तित से रहते हैं। मानस के राम द्रवित होते से प्रतीत होते हैं, वे उस शरीर धारण के लिए बहने हैं, किन्तु वह स्वयं प्रस्तुत नहीं होता।

बगला रामायण में राम वालि को मारने से लज्जित और दुःखित हैं। वे वालि से क्षमा भी माँगते हैं। हनुमन्नाटक में भी राम का दुःख हुआ है— महावीर अपराधिन बालिन हत्वा मत्भाग्य कथमह जानकीमुखमनुभविष्यामि। (१-२५)

उडिया रामायण में भी राम विलाप कर उठ हैं। वे धनुष फेंककर विलाप करते हैं और कहते हैं—तू सुग्रीव का भाई मेरा भी ज्येष्ठ है। मेरे दोष न लो,

पात दिव्य भोजन लेकर जाते हैं (अध्यात्म म पायम, योगना म परमान श्री उडिया म अमन) इन्के सेवन से यहाँ तक नींद, भूग आदि का अनुभव नहीं होगा। सीता इन्द्र पर अविश्राम करती है और इन्द्र उन्हें वाताविक रूप सिगाकर मत्तुष्ट करता है।

वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के एक अभिन्न गग म इन्द्र व हवि लान का उल्लेख हुआ है। विष्णु-पा-नाण्ड म मपाति बन्द्य का राम की समस्त कथा सुनाना हुआ इन्द्र द्वारा प्रदत्त पायम का वणन करता है। सीता राम और लक्ष्मण के लिए सीर का अन्न निदानकर रम देती है। (अंगिरा—४ ६० ८ १०)

तुलनात्मक अध्ययन से बचे हुए प्रसंग

बेंगला-रामायण

मुपाश्व —वाल्मीकि रामायण के विष्णु-पा-नाण्ड (अध्यात्म ५८) म मपाति व पुत्र मुपाश्व का वणन हुआ है। वृत्तिवाग ने इनका वणन अरण्यकाण्ड म रखकर इन्के मूल्य से अभिनय कर दिया। वाल्मीकि रामायण म मपाति बनाता है कि एक बार मर पुत्र ने आकर कहा कि मैं एक बाले पुत्र का सुदर स्त्री के साथ जाते देगा। दाता को खाने के लिए मैं मुह खोला ता पुत्र गिडगिडान गया और मैं उह जान दिया क्पाकि मधुर भाषी जना पर प्रचार करन जाना वाई ही इम पथी पर भिन्गा। (३ ५६ १६ १८)

बेंगला रामायण म इम वक्तान का स्थान ही नहीं बना करन रूप भी बदला है मुपाश्व का देवता बनाना है कि रावण सीता का अपहरण क्रिय ना रहा है। वह रथ रोककर अपन पला से सीता-अहित रावण को रक लता है। सीता का चोट न लगे इम बान का वह ध्यान रखता है। वाल्मीकि का मुपाश्व सीता से परिचित नग है वह सीता को भी खान व लिए प्रस्तुत हो गया था। वाल्मीकि रामायण म मुपाश्व रावण को केवल साधारण गिडगिडान, पर धाड देना है किन्तु बाला रामायण का रावण अपन पक्ष म सबल तक देता है और मुपाश्व उसके तकों से प्रभावित होकर ही छोड़ता है—पष्ठ १५५।

अगस्त्य द्वारा घातापि इन्वत्त को दण्डित करन की भी कथा है।

उडिया रामायण

विडवान और फल्यु नदी को गाप-वर—राम सीता-लक्ष्मण मन्त्रि २५४७७७ म गया पहुँचे। उहाने गयामुर का माग। उनक पर मोरखरी म अन्न २५४ ६०७७७ क्षत्र म गिर।

ने पिड दिये है। सीता व उपराध स फल्गु न नही बनाया, तब राम न शाप दिया—
तुमम जन नही रहगा। यात्री तुम्हार हृदय ता विपीण कर जन निरानेगे।

फल्गु के अनुराध पर सीता न कन्या तू वर्षा म नाना कूत्रा का बहाकर बहगी।
शीतकाल म तू गुप्त हा जाणगी। रत निरानन पर तू जन दगी। राम का कथन
मिथ्या नही हा सतता किन्तु मणि काई तर धानू व पिड लकर मात्र उच्चारण
करेगा ता उसक पित स्वग म वास करेगे।

राम यहाँ पाच दिन रहे कयाकि सीता रजावती था। इस तीथ का नाम राम
गया हुआ। (प० १३)

ब्रगला रामायण व कुछ सस्तरणा एव आनन्द रामायण म भी साता व पिड
नन का वणन है।^१

(क) तीथ स्थित ब्राह्मणो का ओछापन और उनका दड गया क
ब्राह्मण—ब्राह्मणा न राम स दक्षिणा मागी। तपचारी राम दक्षिणा कहा स
दन। वे सीता वे गहन मागन गये। स्त्री धन हान व कारण राम न व भी नही
दिया। तब व सामान छीनने गये। वे सीता क पीछ पडकर उनक गहन छीनन का
प्रयास करन लगे। साडी का आचन पकन जान पर सीता राम की गाद म
जाकर आकुन हो उठी। तदमण न राम के कहन पर खड्ग स आचन वाटकर
सीता का मुक्न किया। अब ब्राह्मण शूद्र तदमण के शस्त्रा का देण डर गये और
मालियाँ दन लगे—तुम जटाजूट धारी दोना लोग परनारी का चुरा लाय हा।

राम न नाथ पूवक कहा अब म कभी गया और फल्गु नही आऊगा। ब्राह्मण
कितना भी अर्पित कया न कर दूसर दिन नहा रहगा। राम न धनुष स रेखा खीची
यनी पुण्य-तोया नदी हा गयी पच्छ १४ १५।

बनरामनाम का अपन पूववर्ती कवि सारलादास क उणन स एसी प्ररणा
मिली है। सारलादास क भागवत म ब्राह्मण नाथ राम की अनुपस्थिति म साता का
नान क निग विवश करत हैं। व सम्पूर्ण वस्त्रालकार दान कर पद्म-पत्रा स द्रपना
शीर दन नती हैं। राम त्रोटकर ब्राह्मणा और फल्गु का शाप दत हैं। दाना ही
तबक पूर थ अनन्व ब्राह्मण द्राह स प्ररित हाकर यथाव वणन की चण्टा की है।

(ख) काशी के ब्राह्मण—काशी म आकर राम न मणिकर्णिका घाट पर
स्नान कर विश्वेश्वर क नान लिया। यहाँ भी ब्राह्मणा द्वारा तप विय जान पर उहान
शाप दिया तब न त धन हान पर भी तुम भिक्षक क जाआगे। बाल बद्ध युवा सभी
वाणित्य करण और नाभ क निग वन नन का वचाग पच्छ १६।

१ कतिरागी उगता रामायण और रामचरितमानस— (२० ना० त्रिपाठी)

अनेक तीर्थ भ्रमण—राम भास्कर तीर्थ और चन्द्रभागा सगम पर पहुँचे। माग म राम न गले की म्द्राक्षमाला का एक म्द्राक्ष गिरा। राम ने कहा इसमें एक पद उगगा और वह राम म्द्राक्ष कहनाएगा। चन्द्रभागा सगम पर कुलाइचडी नामक देवी की स्थापना कर उमका रामचडी नामकरण किया। शिव की पूजा का। एक लपण कान्ति पापाण का चीर कर उमका पापाणचडी नाम दिया। एकाग्र वन म जाकर बिहुसागर म स्नान किया। चित्र उत्पला क बून पर विष्णुनाथ क दान किया। दक्षिण वाराणसी पुरी म स्नान किया और वातुका की पूजा कर बालुकेश्वर नाम दिया। एकाग्रवन के एक वन का रामेश्वर नाम देकर मठ का स्थापना कर कुछ दिन रह। यहा से पूव की आग पुष्यगिरि गय वहाँ स नीलगिरि।

जगन्नाथ-दशन - दक्षिण गिःघु म स्नान कर शम्भु का दक्षा। वहा त्रिविधि मूर्ति के दशन किया। राम लक्ष्मण और सीता तमश जगन्नाथ बलराम और सीता के समुप नचे हुए।

पापण न भितने पर तीरा का पूजन किया। ऋष्यकुल्या नदी पहुँचे। अक्षतेश्वर नामक वामदेव की पूजा की। पवत पर कुलाइचडी नामक देवी की पूजा की। उसे राम न अपना नाम दिया। बालुकेश्वर की पूजा की (क्या पुनर्जा ?) पश्चिम की आग नदी क तट पर पहुँचकर लक्ष्मण न राम की आता स तूमा का किया बनाया। राम न प्राण प्रतिष्ठा की और अगूठी का हीरा उमी म तग गया। यह तुम्बेश्वर कहताया—१५ १७।

शम्भु मग की पूछ ने सीता का केन शृंगार - मगयूथ क मध्य कृष्णमग की पूछ त्व सोता न अपन कशो म खासन की दृच्छा व्यक्त की। राम न नागक फेंका फिर साचा कवन आता क त्रिण प्राण नाश करता ह। इस समय मग-वध अनुचित है। दूसरा वाण फेंका उगत पत्र न स कहा— प्रभु का आदेश कवल पछ क त्रिण है। पूछ काटकर सीता का द दी गयी—(१८)

गाहस्थ्य सुख - गाहस्थ्य जीवन के मुदर चित्र खीच गय हैं। राम न त्रिण माग भ्रमण ने माम काटा राम तबडा ताय सीता ने पकाया। चकमक पत्थर स आग जनाने का उल्लेख है। माता गदी म स्नान कर पर धाकर और आचमन कर चौके म जानी हैं। अन्न म सीता ने राम के पर देवाय। लक्ष्मण जागत रह। (२० २१)

मदोत्री की निष्ठा - मन्त्री न रावण का मगनाया कि जटाजूट घारी और कष्टमय जीवन-यापन करन वाता का क्या कष्ट तग ? गुणगा ने अपने निय का पन पाया है। रावण मन्त्री का प्रताप देकर चन पन्ता है—२१।

श्रेयताओं का आन्द—सीता क हृथ पर श्वताया न ह्य प्रकट किया। वत्सपति ने पत्रा तगर भविष्यवाणी की— ११ माग पश्चात रावण तथा अय गधम मरेगे, आज आपात समावस्या है। नृत्केश्वरशाप रम्भा का प्रज्वलित श्राध और

वेदवती का क्रोध सीता एकाग्र हुए हैं। (४२)

लक्ष्मण हृद — कबूत वध के पश्चात् माग म राम के लिए जल न मिलने पर लक्ष्मण ने पवत को चीरकर जल निकाला, यही लक्ष्मण हृद है। वहाँ स तुम्हें तारी म स्नान कर बरुणाक्ष लिंग की पूजा की ५१।

अभिज्ञप्त चक्रवाक — राम त्रिरह प्रमत्त होकर पक्षिया स सीता के त्रिपय म पूछने है। केलिरत्त चक्रवाक श्रुद्ध हाकर बाता — यति रूप धारण कर रमण की इच्छा रखत हो। नग्नावस्था म सयासी और स्वा का दयाना पाप है। तुम शास्त्र नहीं जानते तुमन रति म भा उपस्थित किया है। लक्ष्मण ने शाप दिया — तेरी भार्या तरी रमणी नहीं रहेगी। चक्रवा मुख म तिनका दबाकर राम के चरणो म लाटने लगा। राम ने कहा लक्ष्मण का शाप रहेगा किन्तु कवन रात के लिए। चक्रवी न चक्रों को डाटा सीता को रावण ले गया तून बताया क्या नहीं। एक याघ ने आकर दागा का पटी म बंद कर लिया किन्तु राम का स्मरण कर दोनों पटी फाड़कर निकल गये—५६। आदिवासियो म प्रचलित क्या का प्रभाव है।

गोड-गोपाल को शाप और वर — क्षुधाग्रस्त राम सबाच वश एक गोपाल से दूध न मांग सके। क्षत्रिय लक्ष्मण गाए छीनन को प्रस्तुत हुए। राम अदोषी का मार कर पर सम्पत्ति छीनने के लिए प्रस्तुत नहीं हुए। उनके कथन म मार्मिकता है कि वे स्त्रीहरणकर्ता का कुछ कर न सके निर्दोष को कैसे बच दें। उन्होंने रत्नजटित अगूठी दिखायी। गापात हसकर धोला यह किंग पड म लगता है। म दूध स कुटुम्ब पालता हू मांगने पर तुम्हें नहीं द सकता। लक्ष्मण ने समस्त दूध के रक्त ही जाने का शाप दिया। उसके बिनय बरन पर राम न दया कर कहा तुम्हें क्षमा करता हूँ किन्तु तुमने दूध मांगन पर जो उपहास किया उसका फल तुम्हें कर्तियुग मे भागना पडेगा। तुम्हारी स्त्रिया विदेश म गोरस बँवेंगी सभी गापाल सा याकर निश्चित पड रहेंगे। तुम्हारे ऊपर कोई दया नहीं करेगा। राजा क सबव (दूध आदि) बतात छीन लिया करेगा। साथ ही राम न उन्हें दुर्भिक्षाल म अप्रभावित रहन का वर दिया।

गोपाल न गाय दुहकर शानपत्र का टोना बनाकर दिया। उसन दो पुत्रा का वर मांगा। राम न कहा — तुमन दूध पिनाया इसलिए हम तुम्हारे धमपुत्र हैं। अगले जन्म म तुम्हारे पुत्र हाकर उत्पन होगे — ५७ ५८।

इमम भी लोकप्रचलित आख्याना का प्रभाव तो है ही साथ ही सरल भक्ति और कृष्णभक्ति का भी।

बदम्य का फूल और सीता की स्मृति कर्म्य का फूल देखकर राम उसका तिरा यात्रत रह किन्तु तरी यात्र पाय। तब याद आयी कि कौ प्रचार सीता की यात्र नता कर पाय है—५९।

उडिया रामायण क विषय म एक शका—पृष्ठ ९ पर रामादि की मुनीक्षण म नोट बलित का है इमक आतर अय क्यात्रा के साथ गया-माहात्म्य भी आता है

अपराध क्षमा कर दा ।

सभी रामायणा म वालि अतत तुष्ट हा जाता है ।

सीता की खोज और भूगोल—वाल्मीकि रामायण म ही सीता की खोज के सम्बन्ध म जिन नाना देश जातिया आदि का वर्णन है वह पूणत मत्य प्रतीत नही होना । असमीया और मानस म भूगोल का वर्णन नही है । बंगला और उडिया रामायणों म चतुर्दिशाओं का विस्तृत वर्णन हुआ है । जिन देशा का वर्णन है उनम कुछ मत्य हैं और कुछ काल्पनिक ।

राम का अभिज्ञान—राम हनुमान को अंगूठी दत हैं किन्तु उडिया-रामायण मे सीता से मिलववाली घटना का भी उल्लेख करने के लिए कहते हैं । इम घटना का उल्लेख अयाध्याकाण्ट के अध्यायन म हा चुका है ।

स्वयप्रभा—विवर की रक्षिका स्वयप्रभा की कथा म समानता होते हुए भी उनके नामादि म भिन्नता है । असमीया और हिन्दी रामायण म तो वह राम के प्रति भक्ति भाव धारण किये है विशेषत द्वितीय म ।

वाल्मीकि रामायण म स्वयप्रभा मरु सावर्णी की बटी है । हमा की सखी है । हमा किमी की पत्नी नही है । मय दानव ने इम सुन्दर स्थान का निर्माण किया था । वह जब हमा अप्सरा पर आसक्त हुआ तब इन्द्र ने उसे मारकर यह स्थान हमा का दे दिया । घमचारिणी स्त्री स्वयप्रभा उस स्थान की रक्षवाली करने लगी । वाल्मीकि के इन वृत्तान्त म सभी भाषा रामायणकारों ने परिवर्तन किये हैं । (५१-५३ सर्ग)

असमीया के अनुसार साज-सज्जा के मध्य बठी एक सुन्दरी को प्रणाम कर वानर उसका परिचय पूछन हैं । वह बताती है—मय दानव ने यह नगरी रची है । उसकी पुत्री और विरसन की सुन्दरी हमा अप्सरा यहा श्रीडा करती हैं । इन्द्र ने यह नगरी हमा का दी । मैं उसकी सखी हूँ और यहा रखवाली करती हूँ । वह राम की कथा पूछती है और राम के चरणों म भक्ति भाव रखने की कामना भी करती है । (पृष्ठ २३८-३८)

बंगला रामायण के अनुसार स्वयप्रभा का नाम सम्भवा है और वह हमा की सखी है । हमा मरु-पवत की कथा और मय की पत्नी है । सम्भवा बन्दरो का मय दानव का भय दिखाकर भाग जाने के लिए कहता है । (२००-२०१)

उडिया रामायण म नामा की और भी भिन्नता है । इसम स्वयप्रभा मरु की पुत्री गिरिजा हो जानी है और वह नीललाहित की भार्या है । हमा का नाम इसम विष्णा है जो कि मय की पत्नी है और यहाँ रखवाली करती है । यह जगतमोहनी मृगाभी-तरुणी कथा वस्त्र तथा जटा विभूति धारण किय है । (पृष्ठ ८१-८२)

मानस म उसका नाम-परिचय नही लिया गया । वह एक रक्षिण मन्दिर मे बठी हुई तप पूज नारी है । दूर स ही सबक प्रणाम करने पर वह निज वृत्तान्त

मुतावर तथा गता श्रीरघुवीर कृत । कं विष्णु मन्त्रा मय मून्त्रेण बाह्ये विष्णु ज्ञान
 कं निष्णु कृत गी है । वन्त्रा कं मय ज्ञान पर नर राम कं नाम बाह्ये श्रीरघु
 परणा म विष्णु विष्णु कृत घाताय ती भविष्य प्राण कर्त्तरी है । तन्त्रा पर मय राम
 की घाता निरोधार्थे कृत वन्त्रागत का प नी ज्ञानी है । (४२६ से २५)

मातम कस यह परिवर्तन घट्याय रामायण क प्रभाव से हुआ है । उक्त विष्णु
 है— स्ववस्वा गुणो मोक्ष गतो रामवर्मा विष्णु ६९४६ ।

सम्पत्ति जटायु क माय उपा की प्रतिपादिता म सम्पत्ति क पुन ज्ञाथ ।
 निशावर उ उग बायाया था वि रामदूता म रामकथा गुनार उग प । साम हीगा ।
 बंगला श्रीर उद्विषा रामायणा म नाम विष्णुार ही है घमभीषा म घमभ्य श्रीर मायम
 म पदमा है । विष्णुार श्रीर पदमा पर्यायवा ती भी है । घात म रामायण म राम
 पदमर्मा है । घमभीषा रामायण क घटुगाय यह प्रतिपादिता मुत्तिया क कारण है ।
 सम्पत्ति श्रीर जटायु म घना घना बहण्या क मन्त्राय म विष्णु हुआ । दाता ही
 निपटारे के लिए मुत्तिया के पास पहुँच । मुत्ति माय विष्णुार म डर उठा । उद्वे
 की प्रतिपादिता रण दी वि जा गूय का रण सू घात बनी बदा माता जाण्णा— घम
 मीया०, प० २४१ ४२ ।

उद्वे की सन्निपत्त कथा चारा रामायणा म है । घमभीषा श्रीर उद्विषा कथाघा
 म सम्पत्ति के पुन सुपाश्व द्वारा पिता की सेवा करन का भी वर्णन है ।

पूर्वाचलीय रामायणा के दो प्रसंग

राम को तारा का शाप—वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड म सीता की पुन
 परीक्षा होती है जिसम के पथ्वी म समा जाती हैं । साध्वी सीता की एक बार परीक्षा
 हो गयी थी । राम न दोबारा परीक्षा नकर राजधम का भक्त ही निर्वाह किया हो
 किन्तु सीता के प्रति बढारता ही प्रदर्शित की थी । राम का इस दाप स बधान के
 लिए ही सम्भवत वाल्मीकि रामायण क गौडीय सस्वरण म तारा के शाप की बल्नाना
 हुई ।

अचिरेण तु कालेन त्वया याएष्याज्जिता ।
 न सीता मम शापेन चिर त्वयि भविष्यति ॥
 आत्मन शौचमाधाय पतिव्रतगुणा सती ।
 याच्यमाना त्वया सीता पुनर्मास्यति भूतले ॥

(वाल्मीकि रामायण गौडीय सस्वरण ४२० १५ १६)

पूर्वाचलीय रामायणा पर गौडीय सस्वरण का प्रभाव पडा है । इनम भी वालि
 को मारने क कारण राम तारा द्वारा अभिशप्त हुए हैं ।

घमभीषा रामायण की तारा कहती है कि वह पतिव्रत के बल पर राम को
 शाप दे सकती है किन्तु नहीं देती । वह कहती है, तुम और कभी ऐसा पाप न करो,

इसलिए तुम्हें सीमादंड छोड़कर शाप ले रही हूँ। जिस प्रकार मैं स्वामी के वियोग में मर रही हूँ उसी प्रकार तुम भी महासती सीता के वियोग में तडपोगे। सीता पाताल प्रवेश करेंगी। (पृष्ठ २२४)

बेंगला रामायण में तारा ने राम को दो शाप^१ दिये। १—तुम यह मत सोचना कि तुम नारायण हो। कम के अनुसार सभी को फल भोगना पड़ता है। यदि इस भारत के बीच मैं सती होऊँ तो तुम सीता के लिए रोओगे। २—दूसरा शाप यह दिया कि जिस प्रकार तुमने विना किसी दोष के बालि को मारा उसी प्रकार उस जन्म में बालि तुम्हें मारेगा। हनुमन्नाटक^२ में स्वयं राम कहते हैं—जब तू मुझ पातकी निरपराधी को सुख की इच्छा से सात में मारेगा तब ही मेरे चित्त की शुद्धि होगी। बंगला रामायण पर यहाँ इस नाटक का प्रभाव पड़ा होगा। सोते हुए कृष्ण को भील ने तीर से मारा था। इसी ओर सबेस है।

उडिया रामायण की तारा भी शाप देती है—तुमने जिस सीता के लिए यह वृत्त्य कर मरे निर्दोष स्वामी का मारा वह जनक दुहिता तुम्हें प्राप्त न हो। यदि मैं साध्वी होऊँ तो मरी बात रह।'

राम कहते हैं—तुम महामती हो, दया करो। सीता के बिना मेरा यह शरीर बेकार है। तारा प्रसन्न होकर बोली—तुम नारायण हो, सृष्टि करते हो। मुझ पामरी के बचनो को क्षमा करो। जानकी कमला है और तुम नारायण हो। राम के साध्वी कहने पर वह पूछती है, अब यह कैसे हो सकता है। राम बोले—सुग्रीव की पत्नी होकर अभिषेक कराओ। तू महासतियो में गिनी जाएगी। प्रभात के समय तेरा स्मरण होगा। (२६४०)

सुपाश्व—वाल्मीकि रामायण^३ में सम्पाति का पुत्र सुपाश्व सम्पाति के पत्नो देव के समय आता है और वह सभी बदरों को पीठ पर लादकर समुद्र पार कर देने की बात कहता है किंतु अग्नि तयार नहीं होते। तीनों पूर्वाचलीय रामायणों^४ में इस प्रसंग का उल्लेख है।

असमीया का वणन कुछ अशुभ है। सपाति के समुद्र पार कराने के आश्विन सन पर बदर अविश्वास करते हैं। इससे वह चिढ़ जाता है। वह पीठ फलाकर सबको बिठा लता है। बन्धु डरते हैं कि वही समुद्र में न डुवा दे। उसने सबको भूमि पर उतार दिया।

१ बेंगला रामायण, पृ० १७८।

२ हनुमन्नाटक, ५ ५७।

३ वाल्मीकि रामायण—गौडीय संस्करण ४ ६२।

४ असमीया रामायण, पृष्ठ २४४, बेंगला, पृ० २११, उडिया, पृ० ८८, विष्णु०।

अनमीया-रामायण का प्रसंग

लेखक माधव-कदली ने बाण्ड व अत म ग्रंथ रचना के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण बताया है—पृष्ठ २४५ ।

उडिया रामायण के कुछ अर्थ प्रसंग

अग्नि के अलङ्कृत मूर्त रूप का व दना । इससे ही ऋष्य शृंग का महत्त्व । इसका निवास वृष्ण के चक्र में । ग्रंथ लिखन की प्रेरणा के लिए व दना ।

हनुमान और कुण्डल प्राप्ति की कथा—हनुमान ब्राह्मण रूप धारण कर राम लक्ष्मण से मिले थे । परस्पर परिचय आलाप व पश्चात् लक्ष्मण ने उन्हे कपि रूप धारण करने के लिए कहा । उन्होंने अलवारों से सज्जित रूप धारण किया । राम ने पूछा—तुमन ये अलवार कहाँ से चुराये ? तब हनुमान अपनी कथा सुनाते हैं—मैं वचन में आदित्य को पका फल समझकर भपटा । इंद्र ने वज्रायुध मारा । मरते के कहने से सभी देवता उपस्थित हुए और उहाने अमृत देकर जीवित किया । उन्होंने ही ये अलवार देकर बली बनाया । मैं दुष्टता करने लगा तब ब्रह्मा ने बल कम कर दिया और कहा कि तुम तब तक भूल रहोगे जब तक राम के दशन नहीं करोगे । राम इन्ही कुण्डलों को देखकर पहचानेंगे । तुम मेरे स्वामी हो और मैं दास हूँ मैं अब बल का अनुभव कर रहा हूँ । हनुमान के नाना राजा खडब ने सुग्रीव-बालि को गोद लेकर पाला । इस नाते ये बालि सुग्रीव व भानु वताये गये हैं । (प० ७८)

बालि-सुग्रीव का जन्म-वृत्तान्त—

(क) ऋक्षराज की कथा—कश्यप और मदनिका—सुग्रीव ने राम को बताया—ऋक्षराज कश्यप के पुत्र थे किन्तु वाँदरी के गर्भ से जन्म लेने के कारण वे बंदर हुए । कश्यप तपस्या कर रहे थे उबशी को देखकर उनका रेत स्थलित हुआ, उसे उन्होंने जल में छिपा दिया । मदनिका नामक विद्याधरी देखकर हस पड़ी और मुनि लज्जित हुए । इंद्र की सभा में भी हँसी आ जान से इंद्र ने रुष्ट होकर शाप दिया—वाँदरी हो । वह पहले भी वाँदरी थी किन्तु पापनाशिनी नदी में डूबकर मरने व कारण वह विद्याधरी हुई । इंद्र ने कहा—तब स्वभाव न गया । उसके वितती करने पर इंद्र ने कहा कि पुत्र को जन्म देने के पश्चात् वह पूर्ववत् विद्याधरी हो जाएगी । वाँदरी बनकर वह कश्यप का वीर्य पी गयी और सरोवर के तट पर रहने लगी, वही पुत्र का जन्म देकर चली गयी । निपूनी शबरणी ने उसका पालन किया । शिशु का तज यत्ना गया । ब्रह्मा ने आकर उसका अभिषेक किया और उसका नाम ऋक्ष नपति रखा । (१७ १८)

ऋक्षराज का स्त्री होना—ऋक्ष ने पावती वन में तपस्या करने वाला ब्रह्मा की पूजा की । उन्होंने इस अपन पाम रण किया और उमम कहा कि पश्चिम दिशा की धार मन जाना । किन्तु यह पश्चिम दिशा की धार गया और वहाँ जान ही स्त्री हो

गया। इस बहुत दुःख हुआ। इंद्र और सूर्य अपने अपने विमानों में बैठकर ब्रह्मा से मिलने जा रहे थे। उनकी दृष्टि इस पर पड़ी। दोनों का रेत स्खलित होकर इसके बालों और ग्रीवा पर पड़ा। दोनों ब्रह्मा के पास चने गये।

(ख) ब्रह्मा का तप—उम समय ब्रह्मा लोकालोक पर्वत पर लोकनाथ नामक विष्णु की स्थापना कर उनकी तथा पारेश्वर रुद्र की पूजा कर फह रहे थे। शिव ने अकारण मेरा सिर काटा, जिससे उह हत्या लगी और मेरा उपहास हुआ। मुझे पार कर दो। इसी समय इंद्र और सूर्य दोनों को देखकर ब्रह्मा प्रसन्न हुए। इहे साथ लेकर लौट। दो शिशुओं को एक स्त्री के साथ देख इंद्र और सूर्य खे ब्रह्मा ने योग-बल से जानकर ऋक्षराज से कहा, तुमने मेरा कहना नहीं माना था। अब लोकालोक पर्वत पर आओ। ब्रह्मा आदि नीचे आय। सभी एक स्थान पर पहुँचे तब ऋक्षराज ने पुत्रों के जन्म का कारण सुनाया। इंद्र-सूर्य लज्जित हुए। ऋक्षराज की पूज-सेवाओं से सन्तुष्ट ब्रह्मा ने उन्हें फिर पुरुष बना दिया। बाल से बाल और ग्रीवा से सुग्रीव का जन्म हुआ।

ब्रह्मा ने बताया कि यहा शक पावती विलास करत थे। पावती ने कहा जो यहा आण्णा वह स्त्री हो जाण्णा। ऋक्षराज ने उहान कहा अब तुम पुत्र लेकर दहकारण जाओ। अब पश्चिम की ओर न जाना। इंद्र और सूर्य से ब्रह्मा ने अपने अपने पुत्रों की रक्षा करने के लिए कहा। ये दोनों पुत्र बालान्तर में राजा हो गये। (१८-२०)

(ग) गौतम अहल्या द्वारा बालि-सुग्रीव का पालन—ऋक्षराज ने अपने दो पुत्र गौतमी नदी पर छोड़ दिये। जल लेने के लिए गयी हुई अहल्या ने शिशुओं को देखकर पति का बताया। गौतम ने योगबल से शिशुओं का परिचय ज्ञात कर अहल्या को उह धर्मपुत्र के रूप में पालन की आज्ञा दे दी। शिशु तीन वर्ष के हुए तब खड्ग राजा मगया खेलन गया। गौतम से मिलकर उसने बताया कि वह निस्सन्तान होने से अत्यन्त दुःखी है। उसके केवल एक कन्या अजना है जो केजरी कपि का व्याही गयी है। बालि के समय ही दोनों शिशु आय जिन्हें देखकर खड्ग ने उनका परिचय पूछा। गौतम ने परिचय देकर कहा इह ल जाओ। उहान अहल्या को भी समझा-बुझा दिया। राजा ने अपनी रानी नीलावती का दोनों पुत्र सोप। जब ये सात वर्ष के हुए तब तारा और रामा के साथ विवाह हुआ। बालि राजा हुआ और सुग्रीव युवराज। (२१-२३)

बेंगला रामायण में अशय राजा (ऋक्ष) का उल्लेख मात्र है।

पावती की शका नारद और पर्वत ऋषि का विष्णु की तप—प्रवर्षण पर्वत पर बिरही राम की प्रमाद-पूण म्पिनि अन्तर पावती ने शका की कि जो त्रिभुवन का स्वामी है वह अपनी मर्तिमा नहा जानता। शिव ने कहा मरत नामक राजा ने १०० अश्वमेध कर एक पुत्री पायी थी। नारद और पर्वत ऋषि आकर उम कन्या

पर मुग्ध हुए। राजा ने कहा आप दोनों में कौन ज्येष्ठ है और कौन कनिष्ठ, मैं नहीं जानता। कल स्वयंवर कर दूंगा। वासुदेव प्रातः उठे तो योग से जाना कि भरत की कन्या स्वयं कमला है जिसे कि नारद और पवत स्त्री बनाना चाहते हैं। यह उनका अज्ञान है। राजा ने कन्या को गोद में लेकर उसे बरने की आज्ञा दी। कन्या चिंतित हुई कि बचपन में कङ्क ऋषि ने कहा था कि कृष्ण से विवाह होगा। उसने भगवान् से विनय की। उसे दोनों ऋषियों के मध्य विष्णु दिखलायी पड़े। वे केवल कन्या को दिखलायी पड़े। उन्होंने उसे उठाकर गरुड की पीठ पर बिठा लिया। विष्णु ने बकुल पहुँचकर ब्रह्मा का बुलाया और उनका आशीर्वाद लिया। दोनों ऋषियों ने रुष्ट होकर राजा से कहा—तुमने भूठमूठ स्वयंवर रचा और गोविन्द को बुलाकर कन्या दी। तुम अभिशप्त होगे। तुम जप-तप का पुण्य खा दोगे। राजा विष्णु के पाप दौड़ा गया उसे अज्ञान खींच रहा था—अज्ञान भी जा पहुँचा। विष्णु ने उससे कहा कि राजा निर्दोष है। तुम कुछ दिन मरी देह में रह जाओ। अज्ञान धर-धर काँपने लगा। भगवान् ने कहा—जब मैं मनुष्य देह धारण करूँ तब तुम मरे अज्ञान में भोग करना। इस प्रकार रामावतार में अज्ञान मुनि विष्णु की आच्छादित किए हैं। इसीलिए वे अपने को भूले हैं। (४५-४८)

राम का विरह

स्वप्न-केलि—उडिया के अरण्यकाण्ड के समान इस काण्ड में भी राम बार बार विलाप करते हैं। उन्होंने स्वप्न में सीता के साथ केलि का सुगम लिया। सीता का हार टट गया। वे कपट रोप प्रकट कर कहती हैं—मेरा हार गूँथ दो। इसी बीच वे जाग पड़े और विरह-व्यथा से व्याकुल होकर अवरान्नि में ही बाहर आ गए। (४९)

मेघदूत—बाहर आकर उन्होंने दक्षिण दिशा की ओर घूमने लगे दखा। उस दिशा में लक्ष्मण से बाल इसका उदय जिस दिशा में होता है उधर अवश्य ही उपद्रव होता है। इसी बीच बादल फिर कर रिमभिम बरसने लगे। वे बापला से बात, तुम्हें क्या भी नहीं आती। फिर सीता का नयनिल बतकर बाल एसी सीता से तुम मेरा सन्देश कहना और लौटने समय उमकी वार्ता मुझमें कहना। (५०)

पत्नियों को बरदान

यह जो बरदान और यह पंचक तट पर स्थित वह न कहा तुम मूल की प्रकृति धारण कर क्या रा रह है तथा ब्रह्म का नाप न रह है? राम का परिचय जान कर वह न कहा—सीता का रावण ल गया मैं दत्ता है। जब श्रीमू मरे ऊपर गिर इमनिर्ण मैं उन्नत-वर्ण हा गया हूँ। राम ने उमम बर माँगने क लिए कहा। वह बाना—क्या मैं मुझे कष्ट जाना है भाजन नहा मितता। राम ने कहा—'तुम मरी बडे रत्ना चतुर्मास भर गच्छी भाजन नागगी। वह न कहा—वह कनिष्ठ है

जूठा खाने से नरक की प्राप्ति और धर्म हानि होगी, साथ ही उपहास होगा।' राम वाले—पति पत्नी जन्म-जन्मांतर के लिए हात हैं। वे दाना एक शरीर होते हैं। तुम पत्नी को पराया क्या कहत हो। कार्तिक गुप्त की १० ११ १२-१३ और १५ तिथियाँ बकपक्ष कहलाएंगी। इन दिनाश्रमिप न खाने वाला चतुर्मास्य-व्रत का फल पाएगा। जो मछली खाएगा उसे तुम्हारा पाप लगेगा। उसके मुँह में जन्म-जन्म पयन्त दुःख आएगी तथा उसकी देह में रोग रहूँगा।' बक-पत्नी भी सुन रही थी। तभी सय रामवकी कहलात हैं। (५० ५१)

कुक्कुट को बरदान और पवतों को शाप—कुक्कुट न भी राम का बताया कि रावण सीता को ले गया है। राम ने उस भी बर दिया कि तुम्हारा माथे पर सप्त शान्वा मुकुट होगा। यह अरण्य की रेखाया का समाप्त होगा अथ किसी जीव को मुकुट प्राप्त न होगा।

पवता न उत्तर नहीं दिया इसलिए व राम के शाप से पेड़-वृक्षा रहित हो गये। (६६)

राम अगस्त्य भेंट और माकण्डेय की शका - लक्ष्मण के त्रिपिपापुरी जाने पर अगस्त्य याग-बल से राम को अकेला जानकर उह शास्त्र-बल समभान के लिए आय। वे राम को उनके ब्रह्मत्व और अवाग की याद दिलाते हैं—५५-५६।

इसी समय नग्न और परमहंस्य माकण्डेय आय। वे शका करते हैं—इनके शरीर में कुछ भी लक्षण नहीं है फिर तुम इह कमना-स्वामी कैसे कहत हो ?

अगस्त्य न बताया स्वताया पर रागमा के अत्याचार से विष्णु ने प्रतिज्ञा की—'मैं चनादि चिह्न छाड़कर मनुष्य बनकर इह मारूँगा।' इमीलिए मैं अज्ञान हूँ व परब्रह्म हूँ। २४२ दिन बाद तुम फिर राम का दयागो। रावण-बध, सीता की प्राप्ति और राम का अभिषेक देखकर तुम्हारी आत्मा दूर होगी— २७ ५८।

शजरि दप चूर्ण—विभिन्न दशा के वानर-नायक आकर राम के सामने फला की भेंट प्रस्तुत करते हुए अपना परिचय देने हैं। एमा ही एक नायक शजरि है, जिसके शरीर में १०० हाथिया का बल है। उसका दप चूर्ण बनने के लिए राम ने प्रसाद-स्वरूप उसे एक अम्लान पुष्प दिया। पुष्प के माथे पर पड़त ही नायक मूर्च्छित हो गया। वह राम की प्रणसा कर महायत्ना का प्रस्तुत होता है। राम फिर पुष्प दाना चाहते हैं, वह भयवश नहीं लेता। किन्तु दस बार पुष्प के माथे पर पड़न से उसमें अपाग बल आ जाता है। ७१।

सुन्दर-काण्ड

(पूर्वाचलीय रामायणों में नाम सुन्दरकाण्ड है।)

वाल्मीकि रामायण में राम व समुद्र प्रस्थान, विभीषण की शरणागति और समुद्र पर सतु निर्माण आदि कथाया का वर्णन युद्ध-काण्ड में है। भाषा रामायणा में

इसका उल्लेख इसी काण्ड में होने के कारण इस काण्ड में ही तुलनात्मक-अध्ययन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के गौडीय संस्करण में सेतुबन्धनान पर ही सग की समाप्ति है इसलिए पूर्वचलीय रामायणों में भी ऐसा हुआ है।

मानस में सेतु-बन्धन आदि का उल्लेख लकाकाण्ड में है, किन्तु तुलनात्मक अध्ययन इसी काण्ड में किया जा रहा है।

वाल्मीकि-रामायण के अनुसार सभी रामायणों के समान प्रसंग

हनुमान का सागर-तरण—सभी वानरों का बल-बन्धन। हनुमान का भेजा जाना, (वाल्मीकि रामायण एवं मानस में इतना प्रसंग किष्किन्धा काण्ड में ही वर्णित हुआ, शेष तीन में इनका वर्णन सुन्दरकाण्ड में हुआ) नागमाता सुरसा द्वारा हनुमान की शक्ति परीक्षा मनाक द्वारा सहायता प्रदान की चेष्टा छाया ग्राहिणी सिंहिका राक्षसी का वध और हनुमान का लघु रूप धारण कर लका प्रवेश।

लका में प्रवेश—लका (बड़ी अथवा राक्षसी) में भेंट। रावण के अन्तपुर में पहुँचकर हनुमान द्वारा सीता की खोजना। मन्दोदरी का सीता समझने का सदेह (मानस में नहीं)।

अशोकवन में—(१) अशोकवन में राक्षसियों से घिरी सीता के दर्शन। रावण सीता-सवाद। सीता के तीक्ष्ण बचन से क्रुद्ध रावण का अवधि देकर जाना। राक्षसियों के अत्याचार। (२) त्रिजटा का स्वप्न सुनाकर राक्षसियों को आतंकित करना। (३) हनुमान सीता भेंट अगुठी प्रदान। हनुमान का सीता से पीठ पर ल जाने का अनुरोध सीता की अस्वीकृति (मानस में नहीं)।

अभिज्ञान—राम और सीता के परस्पर अभिज्ञान।

हनुमान का बंदी होना—(१) अशोकवन की लूट। (२) हनुमान द्वारा राक्षसी सेना का विध्वंस अक्षयकुमार का वध। (३) मेघनाद द्वारा ब्रह्मास्त्र से बंदी होना। (४) रावण की सभा में उपस्थित किया जाना। (५) पहले प्राण-नाश की आज्ञा किन्तु विभीषण के समझाने पर पूछ में आग लगाना लका-हन।

हनुमान की वापसी (१) सीता से मित्रता लना (२) लौटे हुए हनुमान का साथी वानरों द्वारा स्वागत।

मधुवन की लूट—(१) सीता की गोज की प्रसन्नता में वानरों द्वारा सुग्रीव के मधुवन की लूट। सुग्रीव का अनुमान कि वानरों ने खान कर ली है। (२) हनुमान द्वारा राम के ममका वृत्त-बन्धन राम-द्वारा प्रशंसा।

रावण को विभीषण का समझाना। विभीषण का रावण द्वारा अपमानित होकर राम की शरण में आना। राम तब द्वारा उस पर मर्ह करना, राम का शरण देना। राम-द्वारा विभीषण का अभिषेक।

रावण द्वारा दूता (गुनगातून एवं मातूल आदि) का भेजना वानरों के द्वारा

पकड़े जाना और राम का दयापूर्वक छाड़ देना ।

समुद्र तट पर समुद्र से माग मागन के लिए राम का प्रायोपवेशन, राद म शर सधान । समुद्र का प्रकट हावर विनय करना । उसके परामश के अनुसार नल (मानस म नील भी) के द्वारा सेतु बनाना । सना का सतरण ।

बलबधन तथा हनुमान जन्म वृत्तांत

वाल्मीकि रामायण और मानस म किष्कि-घावाण की समाप्ति पर ही वानर समुद्र-सतरण के सम्बन्ध मे अपने अपने सामग्य का वर्णन करते हैं । पूर्वचिन्तीय-रामायणा म वानर लका तक जान म असमथ दिखाय गय हैं जाम्बवान बूढ़े हो गय हैं, अगद जाकर लोट नही सकत । तब हनुमान तयार किय जात हैं ।

जन्म-वृत्तांत—असमीया रामायण म स्वयं हनुमान कहते हैं कि कोई मेरा जाति घम मुनाय । तब जाम्बवान न कहा—कुतीकला नामक अप्सरा शाप-वश वानरी हुई । वह कुजर राजा की बेटी अजना हाकर केसरी को ब्याही गयी । सागर मे शिरस्तान क सुदरी अजना को छडा हुआ देखकर वायु ने उस पर मुग्ध होकर उसका आलिंगन किया । सुदरी न प्रकट हाने के लिए कहा तब वायु न प्रकट होकर कहा—'मेर सगम से अघम नही हुआ, तुम्ह वीर पुत्र मिलेगा ।' हनुमान का जन्म हुआ, लाल सूय को फल समझकर वे खाने क लिए दौडे । प्रचंड क्रिया से उत्तप्त हाकर वे गिर पडे जिसस हनु टडी हा गयी ।

जाम्बवान की कथा सुनकर वे उत्साह से विराटकाय हा गय । उहाने अपने पिता केसरी के बल विक्रम की कहानी बतायी—प्रभासतीथ के शलध्वज नामक हाथी का केसरी ने मारा था । तब ऋषिया न वर दिया था कि तुम्हारे प्रतापी पुत्र होगा । (प० २४७ ४८)

बंगला रामायण का वर्णन असमीया रामायण के समान ही है । कुतीकला के स्थान पर कुजर-सनया विद्याधरी का नाम आया है जाकि विश्वामित्र के शाप से वानरी हुई । वायु के मुग्ध होने, पुत्र हाने का वरदान देने तथा प्रभासतीथ म केसरी द्वारा हाथी मारने की घटना आदि का भी वर्णन है । किन्तु सूय पर भपटन का वर्णन विस्तृत है । सूय को और हनुमान को बढता देख राहु न जाकर इद्र से कहा इद्र ऐरावत पर चटकर आये हनुमान ऐरावत पर भपटे तब इद्र न बख्य प्रहार किया । (प० २१४ १५)

उडिया रामायण म हनुमान का शक्ति उबोधन नही हुआ । वे स्वयं जाने के लिए कहते हैं । यहा उनके जन्म का वर्णन नही है । जब हनुमान लका के अशाक वन म मेघना द्वारा बन्दी बनाय जाने ट तब इद्र के आग्रह पर ब्रह्मा हनुमान के बधि जान का कारण बतान हुए उनका जन्म का वर्णन वरत है । यह रोचक वर्णन इस प्रकार है—

बडद की कथा अजना का विवाह केसरी स हुआ । केसरी हमवत पवत पर

तपस्या करती थी। अनुमति प्राप्त होकर प्रयाग में शुद्ध भजना का आरंभ करने में उमवा अचरत परब्रह्म उगत भुग के पास में जाकर गयी गम्भीरा का माय गी याचना की। अनुमति मिलने पर परम तपस्य कर कारण कर भजना विधिया स भजना का सतुष्ट विद्या। परमभूषण इनमात्र का जन्म हुआ। जन्म का ही उद्देश्य कहा— मुझे भूय लगी है। भजना। गूय का पत्र बगलर गिया गिया। हनुमान उड चले। गूय के भ्रनकृत रूप को देख उहाने घाहार मांगा। गूय कुण्डित हुए, हनुमान न उह पृथ्वी स बांध लिया। इन्द्र न बरस मारा। परम भी कुण्डित हुए उहाने देवताओं का तेज लकर हनुमान को जीवित कर लिया। हनुमान त गूय का बांधा था इसीनिय य भी बांधे गए। (प० ४५ ४७)

मानस का वर्णन सक्षिप्त है। बल-वचन शक्ति भ्रममीया और बगला रामायणों में मिलता है। जन्म उत्तात नहीं लिया गया है। जाम्बवान उह उद्बुद्ध अवश्य करत हैं।

मनाक सुरता सिंहिका—पूर्वाचलीय रामायणा में मनाक की पूव कथा का भी वर्णन है। पवता के उडने इन्द्र द्वारा उनके परत काटने, पवन की सहायता से मनाक का समुद्र में छिपने शक्ति की घटनाओं का उल्लेख है मानस में नहीं है। उडिया को छाड़ शप भाषामा की रामायणा में हनुमान उंगली या घोंगूठे स मनाक को छूकर चल जाते हैं।

उडिया रामायण में मनाक के पिता माता का नाम हमबत और मनवा बताया गया है। हनुमान इस पर विश्राम कर फल खाते हैं। मनाक उनके भार स सतुष्ट है।

सुरता की कहानी एक समान है। केवल उडिया रामायण में इतनी भिन्नता है कि हनुमान उसके मुख में प्रवेश नहीं करते। सुरता वसे ही सतुष्ट होकर देवताओं के पास लौट जाती है।

छाया प्राहिणी सिंहिका की कथा में अन्तर नहीं है। भ्रममीया में उस आपारिका कहा है मानस में तिसिचरि और शेष दो ग्रंथों में सिंहिका कहा गया है।

लकादेवी—वाल्मीकि रामायण में लकानगरी राक्षसी का रूप धारण कर नगरी की रक्षा करती है। हनुमान से परास्त होकर वह कहती है कि ब्रह्मा ने उससे कहा था कि जब वह एक वानर द्वारा परास्त होगी रावण का विनाश होगा। भ्रममीया रामायण में हनुमान की भेंट लकादेवी स नहीं हुई। उडिया और मानस का वर्णन समान है और वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

बगला रामायण में लका से नहीं चामुडा दवी अथवा उपचंडा से हनुमान की भेंट हाती है। चामुडा खप्पर खांडा और मडमाल धारिणी तथा शिव की प्रिया है। हनुमान न मभीत पृथ्वी—माता यहा क्यों हो? वे उत्तर देती हैं—जब ब्रह्मा ने स्वर्ण-लकापुरी का स्रजन किया था तभी स मैं इसकी रक्षा करती हूँ। जब तक राम

का भ्रवनार नहीं होता और वानर दूत बनकर नहीं आता, तब तब शंकरजी न यहाँ निवाम करने के लिए बहा है। चामुडा हँसती हुई वहाँ न बलाम चली गई।

(२२२ २२३)

बया-वर्णन स स्पष्ट है कि लवा रामजी का मय परिवर्तित कर चामुडा कर दिया गया है। यह परिवर्तन शिव प्रभाव के कारण बहदम-पुराण^१ में पहले ही हो चुका था।

सीता के चरित्र पर हनुमान का सदेह—पूर्वाचरीय रामायण में हनुमान रावण के अन्त पुर में जाकर सीता की खोज करते हैं। वाल्मीकि रामायण में रावण और मुक्त मुदरिया से भरे अन्त पुर का वणन है। बहुत कुछ इमी का अनुसरण किया गया है। मन्दादरी का देवकर हनुमान दु खी हात हैं कि सीता ने आत्म-भ्रमण कर लिया है। वस्तु स्थिति स भ्रवगत होकर उह र्मानि होती है कि उहान व्यथ ही सीता के चरित्र पर सदेह किया।

असमीया और उडिया रामायणों में हनुमान परीक्षा कर पना जगान हैं कि क्या यह सीता ही है या और कोई। असमीया रामायण में रावण को आनिगित किय हुए एक क्षयवती बया को हनुमान न देखकर सीता समझा था। वे मन ही मन बोल कि मुना गया है सीता की बेणी आठ हाथ की है। उहान बेणी नापी, वह कम निवली। उसका मुह सूषा, मद्य की गध आ रही थी। वे जान गय, यह सीता नहीं हो सकती। (पृ० २५४ २५६)

उडिया रामायण में रावण मन्दादरी की गोत्र में मा रहा था। हनुमान भ्रमर बनकर उडे और मन्दादरी के मुह में मदिरा की गध पाकर आश्वस्त हुए कि यह सीता नहीं हो सकती।

बंगला रामायण में हनुमान इस प्रकार की राज किय बिना ही अनुमान करत हैं कि यह सीता नहीं हो सकती।

मानसकार सीता के प्रति पूज्यभाव रखन क कारण हनुमान के मन में इस प्रकार का सदेह कस दियात। उहाने हनुमान का रावण के अन्त पुर में भी नहीं धुमाया। त्रिभीषण से भेंट करके अशाक-वन का सीधा रास्ता दिया दिया गया है।

अशोक-वन में

(क) रावण सीता-संवाद—प्रत्येक रामायण में हनुमान सीता भेंट जाने के पूव ही रावण सीता से मिलने आता है। हनुमान छिपकर सुत है। रावण समझने का खंटा करता है किन्तु सीता के अग्रमानजनक कटार बचन सुनकर वह पारन दौड़ता है। ऐसी स्थिति में कोई न कोई स्त्री सीता की रक्षा करती है। असमीया बंगला

१ बहदम पुराण अध्याय २०, पृ. १७३।

न करा, विश्वकूट म जो हुआ उमरी घटनाओं सुनावर में विश्वास दिलाऊंगा ।
(१६२३)

मानस म आत्महत्या की इच्छा रखने वाली सीता अशोक वृक्ष के नीचे बैठकर चंद्रमा और अशाक स गाय वरमान क लिए कहती है, इसी समय वक्ष पर बैठे हुए हनुमान नाटकीय ढंग स मुद्रिका टपका देते हैं । सीता अँगूठी उठाकर चिंतित हाती है, राम की अँगूठी महा वस ? तब हनुमान निकट जाकर परिचय दा हैं । सीता उन्हें रावण समझकर पीठ घुमाकर बठ जाती है । मानस पर प्रसन्न राघव नाटक की धाप है ।

सभी गमायणा म हनुमान सीता को विश्वास दिलाने के लिए विराट स्वरूप दिखाने हैं । पूवाचलीय रामायणो मे हनुमान सीता को अपनी पीठ पर ले जाना चाहते है किन्तु सीता पर-मुरूप क स्पश क भय म अस्वीकार कर रती है ।

अभिज्ञान -

वाल्मीकि रामायण मे राम और सीता क प्राय चार अभिज्ञाना का वणन है । सीता न हनुमान को देखा नहीं था । हो माना था कि वे हनुमान का विश्वास न करती, इसलिए राम न उह अँगूठी दी थी । इसी प्रकार ऐसा भी सम्भव था कि राम हनुमान का विश्वास न करते कि उन से सीता की भेंट हुई अनएव सीता न अपनी चूडामणि दी थी । इसके अनतिरिक्त सीता दा और घटनाओं का उल्लेख करती हैं—
(१) जयत वाक की क्या और (२) राम द्वारा तिलक लगाय जान की क्या । तिलक वाली घटना का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के दक्षिणात्य मस्करण म इस प्रकार हुआ है—एक बार तिलक भिट गया था, तत्र तुमने (राम न) मनसिन का तिलक लगा दिया था, इसका स्मरण करा—(सुन्दरकाण्ड—४० ५), वाल्मीकि रामायण के गौडीय सस्करण म इसका विस्तृत वणन है—राम न सीता के कपोली पर तिलक लगाया क एक बन्दर दक्कर डर गयी और राम से भिपट गयी फलत उनका तिलक राम के वक्ष म लग गया । इस प्रकार वाल्मीकि रामायण म कुल अभिज्ञान चार हुए—

- (१) राम द्वारा अँगूठी देना ।
- (२) सीता द्वारा चूडामणि देना ।
- (३) जयत वाक की क्या सुनाना ।
- (४) तिलक वाली घटना का उल्लेख करना ।

सभी भाषा रामायणा म अँगूठी और चूडामणि के अभिज्ञान का वर्णन है । असमोया रामायण म जयत वाक और तिलक वाली घटना का सामान्य उल्लेख है । मानस मे तिलक वाली चबा ननी है जयत वाक की क्या है । सीता कहती हैं—
'तात सत्र मुत क्या सुनाण्डु —५-२६ ५ । उडिया रामायण म उपयुक्त चारा वस्तान्ना । अनतिरिक्त अभिज्ञानस्वरूप एव और घटना का उल्लेख है—वह है राम और सीता का कुल-नीय छूवर एकनिष्ठा का प्रतिगण । इसका वणन आदिनाण्ड म हा चुका है ।

इस प्रकार उडिया रामायण में गीता न हनुमान से कहा कि राम से जाकर इन वषाभा का उल्लेख करना —

(१) मास सुखाते समय कौण द्वारा स्तना पर चबुप्रहार ।

(२) भीगी साडी से गरु का भीगना उमस राम द्वारा सीता क तिलक का लगाना, ब दर देख भयभीत सीता का राम से लिपटना और राम क वक्ष म तिलक लग जाना ।

(३) राम और सीता ने मधुशय्या के दिन कुलदीप छूकर प्रतिनाएँ की कि वे एक दूसरे के प्रति एकनिष्ठा की भावना की रक्षा करेंगे ।

पूर्वाचलीय भाषा रामायण में जब हनुमान सीता से मिलते हैं, उसी समय इन सभी अभिज्ञानों का प्रसंग आया है । मानस में लका दहन के पश्चात हनुमान सीता से जब विदा लेन आया है तब अभिज्ञान दिये जात हैं ।

लका दहन—उपवन की लूट राक्षसों से हनुमान का मुद्द अश्वकुमार वध की एक समान घटनाओं के पश्चात वर्णित इस प्रकार है—

असमीया रामायण—मघनाद ने हनुमान पर नागपाश फेंका वह असफल गया तब वह ब्रह्मा के पास पहुँचा । ब्रह्मा हसकर बोले तुमने गुरु का स्मरण किये बिना नागपाश फेंका है । वह वायु का पुत्र है । हनुमान रावण से भेंट करने के लिए स्वेच्छा से बंध गए । रावण न क्रुद्ध होकर मारन की आज्ञा दी किंतु विभीषण के कहन से वध न कर पूछ म आग लगान की आज्ञा दी । कपडे लपेटते लपेटत रावण का भण्डार खाली हो गया । म दोदगी के भी कपडे लग गये । जब रावण ने सीता के कपडे लाने का आदेश दिया तो हनुमान ने पूछ छाटी कर ली । सीता ने सुना कि हनुमान की पूछ म आग लगायी गयी है तो उन्होंने अग्नि से विनय की यदि मैं पतिव्रता होऊँ तो अग्नि हनुमान को न जलाए ।^१

बगला रामायण में भी हनुमान रावण से भेंट करने के लिए स्वेच्छा से पाशबद्ध होकर गये । सहस्रा राक्षस उन्हें कंधों पर लिये जा रहे हैं वे जिस ओर दब जाते हैं राक्षस चीग उठने हैं । द्वार पर वे अचल हो गये, तब द्वार को तोड़कर उन्हें ल जाया गया । विभीषण के कहने से वध नहीं हुआ पूछ म आग लगायी गयी । यहाँ भी सीता अग्नि से प्रार्थना करती हैं कि यदि मैं मनसावाचाकमणा सती हाऊँ तो हनुमान न जले ।

उडिया रामायण—जायफल के पेड पर बठ हनुमान मघनाद को अनेक प्रकार से तग करत हैं । अत म इन्द्रजीत के मायायुद्ध में पराजित होकर वे बाधे जाते हैं ।

१ वाल्मीकि रामायण—मुरारिण—५३ २८ ३१ में भी सीता अग्नि से ऐसी ही विनय करती है ।

सीता उनका वधन मुनक व्रत करती हैं। रावण की सभा में स्थित इंद्र की जिनासा पर ब्रह्मा हनुमान से बाधे जान का कारण बताते हुए उनका जन्मवत्सात्^१ सुनाने है। रावण ने हनुमान को मारने के अनेक उपाय किये। उनकी खूब कुटम्भस हुईं किंतु हनुमान मरे नहीं। रावण चिंतित होकर मेघनाद से अपने शापो की चर्चा करता है,^२ और कहता है किसी प्रकार मात्र ही डालो नहीं तो यह सब भेद खोल देगा। हनुमान अपने मरण का भेद स्वयं बताते हैं। उन्होंने कहा, मेरा शरीर ब्रह्मा न वज्र का बनाया है। मैं शिशु-काल में ऋषिया की भापड़ी नष्ट कर उत्पात किया करता था। उन्होंने शाप दिया कि अग्नि से जलाये। अनएव मेरी पूछ में आग लगाया। हनुमान की पूछ में इतना कपड़ा लपेटा गया कि लका में कपड़े न रह गये। रावण ने मूल्यवान कपड़े भी लगवा दिये। रावण ने कहा कि बदर न स्वयं ही मृत्युभेद बता दिया है इस बाध सुनाकर इसकी पूछ में आग लगाया। हनुमान ने जलती हुई पूछ से लका को जलाना प्रारम्भ किया। रावण ने अग्निदेव को आना दी वे बुझ गये। हनुमान के सभी अगो म देवताओं का वास हान से उहाने कपाल से पूछ रगड़ कर पुन आग जला ली। रावण ने मारुत से पूछा—उञ्चास-पवन क्यों वह रहे हैं उहाने बहाना किया कि हनुमान को मोहन के लिए वह रहे हैं।

रावण बहुत घबड़ाया इंद्र से वाना, पानी बरसाओ। ब्रह्मा ने रावण को उपाय बताया कि पुष्पक विमान पर चढ़ कर भाग जाओ। ब्रह्मा के कहने से ही हनुमान ने लका का जलाना बंद कर दिया। (४० ६६ पृष्ठ तक)

मानस—हनुमान ने मेघनाद के ब्रह्मशर का स्वयं स्वीकार कर लिया। सभा में हनुमान और रावण का राचक सवाद भी हुआ है। विभीषण के रोकने से ही रावण ने हनुमान का वध न कर पूछ में आग लगाने के लिए कहा। रावण कहता है कि जब पूछहीन वानर बहा जाएगा तो अपने स्वामी को यहां ल आएगा। हनुमान के न जलने का कारण यह है कि हनुमान ब्रह्म राम के दूत हैं और राम ही न तो अग्नि का निर्माण किया है।

अग्निशमन—वाल्मीकि के अनुसार हनुमान ने समुद्र में पूछ डुबाकर आग बुझायी। असमीया रामायण में आकाशवाणी सुनकर पूछ की आग स्वयं चूसकर बुझाया। बेंगला रामायण—सागर में डुबाने पर भी पूछ की आग नहीं बुझी तब सीता के कहने से पूछ का चूसकर मुलामत से बुझायी। उडिया रामायण—अग्नि का जठर में धारण कर बुझा लिया। मानस—याही आग बुझ गयी।

विभीषण की नरणागति—भाषा रामायणों में विभीषण को भक्त चित्रित किया गया है। वाल्मीकि रामायण के वणन से प्रतीत होता है कि विभीषण रावण के

१ इसका वणन पीछे हो चुका है।

२ नन्दिवेश्वर का शाप। अनरण्य का शाप कि मरे वंशज से तारी मृत्यु होगी।

अनतिक कार्यों से असंतुष्ट था उसने रावण को समझाना चाहा, रावण न उसका अपमान किया। गौडीय-सस्करण के अनुगार पदाघात भी किया, पतस्वरूप विभीषण राम की शरण में आ गया। मध्यकाल तक राम जिष्णु के अनार हा चुके थे, अतएव विभीषण के भ्रातद्रोह का दाप भक्ति व आचरण से ढक दिया गया।

असमीया और बंगला रामायणा में समता है। प्रथम में नक्षपी विभीषण से रावण को समझाने के लिए कहता है द्वितीय में नक्षपी विभीषण से कहती है ऐस दुष्ट के साथ नहीं रहना चाहिए। असमीया रामायण में विभीषण ने रावण को समझाया और चाटुकारों को डाटा। रावण ने क्रुद्ध होकर विभीषण की छाती पर लाठी मारी (पृष्ठ २६२)। बंगला रामायण में रावण तलवार लहर बूद पडा और उसने विभीषण की छाती पर पदाघात किया। (पृष्ठ २५६)

विभीषण को शकर कुबेर की भद्रणा का वर्णन भी इन दो रामायणा में हुआ है।^१ विभीषण बड़े भाई कुबेर से पूछकर ही राम की शरण में जाना चाहता है। बंगला रामायण में तो वह एकान्त में बठकर तप करने की आकांक्षा रखता है। असमीया रामायण के अनुसार शकर और कुबेर पाशा लन रहे थे विभीषण के आने पर उन्होंने राम के ब्रह्मत्व के बारे में बताया—पृष्ठ २६४। बंगला रामायण के अनुसार शकर पावती के साथ बल पर चढ़कर विभीषण के कुबेर से मिलने के पहले ही वहाँ जा धमके। उन्होंने राम के ब्रह्मत्व तथा उनके अवतार लने आदि के विषय में बताया विभीषण का पूण समाधान कर राम के पास भेज दिया—पृ० २४८-२५२। तुलसीदास ने गीतावली में अवश्य ही विभीषण का कुबेर और महादेव से मिलन दिखाया है। (५ २७ २८)

उडिया रामायण—विभीषण के समझाने से रावण कुपित हुआ वह गुद स्वर्ण जघाम्रा और अमृत भरे कुचो वाली सीता के साथ रति सुख न छोडन का निश्चय करता है। वह कहता है कि सीता चतुर स्त्री है शृंगार से परिचित है तभी तो राम के साथ आयी। एसी को छाड नहीं सकता। विभीषण ने राम के शीघ्र की पुन प्रशमा की तब वह मारने दौटा। सभासदा ने विभीषण को बचाया। रावण ने महीरावण से कहकर विभीषण को सीमा से बाहर निकाल दन की कहा। रावण ने स्वयं ही कहा कि उसी राम की शरण में जा। विभीषण भी मन ही मन राम भक्त बन कर साचना जाना है—रघुनाथ को पहचान कर अमुर योनि के पापा से मुक्त होऊगा। राम गुण दायर अपना जन्म सफल करूंगा। पृष्ठ ८६ ६२। विल्कुल मानस के विभीषण जमी स्थिति है। इस ग्रंथ में भी जब वह राम से मिलने चला है तो पुनक्ति हाकर राम के चरणकमल दखन की अभिनाया करता हुआ चला जा रहा है—६१

१ वात्मीकि रामायण के गौडीय सस्करण का प्रभाव है।

मानस म विभीषण का दृष्टिवाण त्रिकुल मकर का दृष्टिकोण है। पूर्वा
श्लयी रामायणा म तो रावण ही उस राम स मिलन के लिए विवश करता है किन्तु
मानस म वह रावण का भक्ति का उपदेश देना है जिसम रावण कुपित होना है।

राम की शरण म—मभी रामायणा म विभाषण के आन पर वानर सदह
करत हैं, हनुमान लका हा आय हैं, वे वहाँ की स्थिति से परिचित हँ और वे विभीषण
स परिचित हैं और वे विभीषण का शरण म लेन की बात कहत हैं। राम भी शरणा-
गन वत्नलता का परिचय देकर उस स्वीकार कर, उसका अभिषेक कर देत हैं। अस-
मीया रामायण का वणन सक्षिप्त है। मानस का वणन सक्षिप्त हाने हुए भी अधिक
सुदर है। कम म कम नपे-नुने शब्दा म वणन हुआ है। किन्तु बँगला और उडिया
रामायणा का वणन विस्तृत है।

शपथें—बँगला और उडिया रामायणा म शपथो का समान वणन है। बँगला
रामायण के अनुसार विभीषण अपनी सत्यता प्रकट करने के लिए तीन शपथें लेता है
यदि वह झूठ बोल रहा हो तो कलियुग म १ राजा २ ब्राह्मण एव ३ सहस्र
तनय हो। लक्ष्मण हँस तब राम न उह समझा दिया कि कलियुग म ऐसा होने पर
केश ही हागा।

उडिया रामायण म बड़ी सतवता के साथ वातचीत होती है। राम के आदेश
से लक्ष्मण बड़ी छानबीन करत हैं। अन्त म लक्ष्मण कहत हैं कि समुद्र म स्नान कर
दसा दिशाया का देखकर तुम जा कुछ कह दोग, वही मान लूगा। विभीषण ने अनिल,
सलिल और प्रचंड हुताशन की साक्षी दकर कहा—यदि मैं कपट चित्त होऊँ तो
कलियुग के अन्त म आह्वान होऊँ, बहु-कुटुम्बी होऊँ राजा होऊँ और गाय होऊँ। जब
राम के सहित वानरा का विभीषण की ये शपथें नात हुई, तो वानरा ने कहा यह
तो अपन लाम का निश्चय कर रहा है तब राम ने कलियुग म इन चारो के होने के
दुःख बताय। उन्होंने धनुष छूकर प्रतिज्ञा की कि वे विभीषण को लका-नाथ बनाएँगे।

समुद्र पर मत्तु

उपवास—सभी रामायणो म राम तीन दिन तक उपवास रखकर समुद्र से
माग माँगत रहे। जब वह प्रकट नहीं हुआ, तब उन्होंने धनुष पर बाण चढाया।
असमीया और बँगला रामायणो म बाण मारकर वे समुद्र का सोखन लगत हैं,
तब वह प्रकट होता है। मानस म भी शर-सधान कर जब उदधि के हृत्प म अन्त
ज्वाला उठायी जानी है तभी वह प्रकट होता है। उडिया रामायण मे बाण छोडने
की आवश्यकता नहीं हो पायी। राम अण्व धनुष पर तीर चढाकर वाले—पहले
तुम्हे दत्त लें रावण-वध बाद म हो जाणगा। तून वेद की पोथी चुराने वाले शखासुर
को छिपाया था। तू न हाता तो प्रलय न होनी और ब्रह्मा भी सुन्नी-रहते। अगस्त्य

ने अर्च्छा ही किया था। तू रावण एस दुष्ट का छिपाप है।' राम ने ताराच चढाया। देवता कहन लग, धवल मुखी गंगा विधवा ह। जाणगो, उराका मंगल सूत्र टूट जाएगा। समुद्र प्रवट हाकर स्तुति करन रागा।

वाल्मीकि रामायण व अजुमार उडिया रामायण और मानस म भी राम ने चढे हुए वाण स समुद्र-तटवासी दुष्टा का विनाश भी किया।

नल का शाप अथवा वरदान

वाल्मीकि रामायण (६ २२ ४४ ४५) मे लिखा है कि विश्वकर्मा न अपने पुत्र नल को सेतु बना सकने का वरदान दिया था ऐसा नल ने स्वयं बताया है। पूर्वाचलीय रामायणा ने भी नल को विश्वकर्मा का पुत्र माना है। उडिया रामायण म तो नल की जन्मकथा^१ भी दी गयी है। नल के वरदान के सम्बन्ध म रामायणा म भिन्न भिन्न कथाएँ हैं फिर भी उनम समानता है।

असमोद्या रामायण म वीर विश्वकर्मा न अपने पुत्र को वर दिया है कि उसके छूने से पत्थर तरने लगगे। (पृष्ठ २६६)

वगला रामायण म भी समुद्र व बताने पर राम नल को बुलाकर पूछत हैं। नल स्वयं बताता है कि जब मैं जनक के यहाँ था तो ब्रह्मा को मानसरोवर के तट पर पूजा करता देख उनकी पूजा तामघ्री सरोवर म फेंक दिया करता था। उन्होंने वरदान दिया तेरा छुआ हुआ पत्थर भी पानी पर तरन लगगा। (पृष्ठ २५५)

उडिया रामायण म समुद्र राम से विश्वकर्मा के पुत्र नल सनापति द्वारा पुल बनवाने की बात कहकर ऋषिया के शाप का उल्लेख करता है। ऋषि लोग मूल कमल को चाप कर निश्वास साधते थे। उनका मौनव्रत देखकर नल उनके छाता और पोथिया आदि जल म फेंक दिया करता था। ऋषिया ने उसे बालक जानकर शाप नहीं दिया। उन्होंने कहा—तू जो कुछ फेंकेगा वह पत्थर होकर तरता रहेगा। (११० ११)

बंगला और उडिया रामायण के य वर्णन आनन्द रामायण^२ के वर्णन से समता रखते हैं। काश्मीरी रामायण खातानी रामायण तथा उत्तर भारत के एक वस्तात मे भी शाप के इसी मिलते जुनते प्रसंग का उल्लेख है।^३

१ नल की जन्मकथा—विच्छेद कवि की भार्या इन्दुमुखी को देखकर देव और मुनि भी मुग्ध रह जाते थे। रजोवती होने पर वह रणुवा नदी पर स्नान करने गयी। उस स्नान और शृंगार किये दान विश्वकर्मा न रति-याचना कर अगसग किया फलस्वरूप नल का जन्म हुआ। प० ११४ उडिया रामायण।

२ आनन्द रामायण—१ १० ६७।

३ पादर कामिन बुले—रामकथा, द्वि० स०, अनु०, ५७५।

मानस म पूरी कथा नहीं है। समुद्र कहना है—नाथ, वचन म नल और नील नामक दा भादया ने ऋषि का आशिष प्राप्त किया था। इनके स्पर्श करने से तथा तुम्हारे प्रताप से पत्थर समुद्र पर तरल लगेंगे। (५-५६ १,२)

तुलनात्मक-अध्ययन से बचे हुए प्रसंग

बेंगला और उडिया रामायणो मे

नल हनुमान विवाद—बेंगला रामायण म पुल बनाते समय नल कर्मी के स्वभावानुसार बायें हाथ से पत्थर लेता है। इससे हनुमान क्रुद्ध होकर साबते हैं, देखें इसम कितना बल है। वे गद्यमादन पवत तोडकर रोम राम म पत्थर बाध लाये। भयभीत नल भागकर राम के पास आया। राम ने बीच-बचाव कर मंत्री करायी। (पृष्ठ २५६)

उडिया रामायण के अनुसार भी नल को बायें हाथ से पत्थर लेता हुआ दख कर हनुमान असह्य पत्थर ले आय। सूर्य देखकर डर और २ घड़ी रहते ही छिप गय। राम के कारण पूछने पर जाम्बवान न बताया कि हनुमान २००० पत्थर ला रह है। राम न मेना भेजकर हनुमान का बीच म ही रोक दिया। नल स भी खुशामद की—तुम मरे मामा हो। हनुमान न प्रमन्न होकर राम और अगद के नाम पर उसे क्षमा कर दिया। (पृष्ठ ११५ ११६) रगनाथ रामायण (६ २७) और सेरी राम म भी यह आख्यान आया है।^१

गिलहरी अथवा चूहे की सहायता—बेंगला रामायण म गिलहरिया समुद्र म बूदकर और बालू म लोटकर उम पुल पर भाडन लगी जिससे पुल की सधिया भरने लगी। हनुमान उन्हें पकड़कर समुद्र म फेंकन लगे। वे गम के पाम जाकर रायी। राम न हनुमान का बुलाकर कहा—गिलहरिया का अपमान क्यों करते हो, जिसका जितना सामर्थ्य हो करने दा। राम न उनकी पीठ पर हाथ फर दिया। (पृष्ठ २५७)

उडिया रामायण मे बालू भाडन का काय एक चूहा कर रहा था। हनुमान उमकी प्रशमा कर राम के पास ले आय। राम न प्यार-सहित हाथ फेर कर कहा—तुम परापकार म निरत महात्मा हा। तुम्हें स्वगतोक् की प्राप्ति हो। राम की पाँच उँगलिया उसकी पीठ पर दक्षित हुई। (पृष्ठ ११८)

संभवत उडिया रामायणकार कहना चाहता है कि चूह की पीठ पर हाथ फेरने से वह गिलहरी बन गया। इस प्रसंग म राम की जीवमात्र क प्रति दयालुता सिन्धाना ही अभीष्ट है। रगनाथ रामायण म भी इनका उल्लेख है। उत्तर भारत क कई प्रदेश म इस प्रसंग का प्रचार है।

^१ पालर कामिल बुल्वे—रामकथा, द्वि०, सं० अनु०, ५७६।

बंगला हिंदी और उडिया रामायणा में

शिवपूजा — बंगला रामायण के सुंदरकाण्ड तथा मानस के लकाकाण्ड में शिव-लिंग की स्थापना होती है। दोनों में ही सनु वन जान व उपरांत ही लिंग की स्थापना होती है। यह प्रसंग पुराणा में गहीत है। अनन पुराणा में शिव प्रतिष्ठा युद्ध व पश्चात् की गयी है। स्कंदपुराण^१ में दो बार स्थापना का उल्लेख है। बंगला रामायण पर स्कंदपुराण का ही प्रभाव प्रतीत होता है क्योंकि इसमें भी दो बार ही स्थापना करायी गयी है। मानस में केवल एक बार उल्लेख हुआ है।

बंगला रामायण में नल रावण की आशा स दवल का निर्माण करता है, जिसमें श्वेतवर्ण शिव की स्थापना होती है। हनुमान कुन्नेर के सरावर से श्वेत-पद्म ला देते हैं। पूजा के समय स्वयं शंकर उपस्थित होकर राम के हाथ पकड़ लेते हैं। (पृ० २५८) इस ग्रंथ में लका से नीटने पर भी राम सीता सहित शंकर की पूजा करते हैं, तब लक्ष्मण ने बालू की मूर्ति बनायी है। (पृष्ठ ८४८)

मानस में भी शिवलिंग की स्थापना की जाती है, मुनिया का समागम होता है और राम शंकर की उपासना का महत्त्व समझते हैं।

दोनों ग्रंथों के प्रसंग और संवादों से प्रकट होता है कि दोनों का उद्देश्य श्व-वर्णव समन्वय करना है।

उडिया रामायण में पुल के वन जाने पर केवल इतना उल्लेख है—

रामेश्वर बोलि राम शंकर पुजिले ॥ ११८

रामायणों के कुछ विशिष्ट-प्रसंग

असमीया रामायण में

हनुमान का ब्राह्मणवेश धारण—सीता से भेंट करने के उपरांत हनुमान मधु फल खाने के लिए ब्राह्मण का वेश धारण कर लेते हैं, सीता देखकर हसती हैं। वे राक्षसों से बोले—‘मैं सौराष्ट्र देश का महावेदगर्वी ब्राह्मण हूँ। राजद्वार पर आया हूँ, फल खाने का दो। राक्षसों के कहने से वे स्वयं बूदवार भीतर घुसकर फल खाने लगे। (पृष्ठ २६८)

बंगला रामायण में

बंदरों का मुह काला होना—सीता के कहने से हनुमान ने मुह के अग्रत से पूछ की भाग दुभा ली किन्तु इससे उनका मुह काला हो गया। वे चिंतित होकर बोले भव जाति वाला को कस मुह चिन्ताऊगा। सीता वाली—तुम्हारी जाति में कोई न छूटेगा, मेरे कहने से सभी का मुह काला हो जाएगा। (पृष्ठ २३६)

१ स्कंदपुराण, ब्राह्मण—अ० ७ और ८४।

भस्मलोचन-दण—जब राम-सेना ममुद्र पार कर गयी तो रावण ने भस्मलोचन को भेजा। यह राक्षस जिसे दण भर लेता वही जन कर रावण हा जाता। वह आखा पर चर्माच्छादन लगाकर तथा चर्माच्छादिन रथ म नवार होकर राम के पास आया। विभीषण की बतायी युक्ति के अनुसार राम ब्रह्मास्त्र पर दण लगाकर भ्रमण्य दण उसके सामने प्रस्तुत कर दत हैं। राक्षस अपना ही प्रतिविम्ब दणकर जलकर भस्म हो जाता है। (पृष्ठ २५८ २५९)

बगला रामायण के लम्पाराड म इमका हुबारा उल्लेख है। इसे ब्रह्मा ने बर दिया था। पहले बाल प्रसंग स इतना अन्तर है कि इस बार राम दणपास्त्र द्वारा सभी बानरा क मुसों म दण लगा दते हैं। वह आकर अपना ही मुख दणकर जल जाता है। (प० ३५७ ३५८)

उडिया-रामायण मे

रावण के लेख—धवल-पुर की दीवाला पर गरू स स्वणकथा पर कस्तूरी स और वाचपुर म खडी स रावण ने लिख रखा था—यद्यपि रघुनाथ मुक्त मारेंगे तथापि मैं सीता को न दूंगा। मैं श्रीराम के हाथ स मरने क कारण सीता को न दूंगा। जब हनुमान लका पहुँचे तो इन लेख को पढ़कर चकित होकर बोल—कौन कहता है कि रावण नानहीन है। वह राम को विष्णु जानकर ही सीता का हर लाया है। (प० ९)

रावण की सभा म शिव का ताडव—रावण अपनी सभा म अनेक प्रकार के मनोरजन किया करता था। उसने रूद्र स ताडव-नृत्य के लिए कहा। रूद्र के बहने स देवताआ ने भिन्न भिन्न वाद्य धारण किये। शंकर के नृत्य स रावण भयभीत होकर बोना यह नृत्य न करो। देवताआ ने नृत्य-वाद्य बंद कर दिया किन्तु वे परस्पर देखकर मुस्कराय। इमक परचात ही हनुमान द्वारा वाटिका भग की सूचना रावण को दी जाती है। (पृष्ठ २८ २९)

सीता का व्रत—हनुमान का बचन सुनकर सीता ने विलाप किया। उन्होंने जल के साथ अमोघ की आठ कलियाँ गावर कहा—आज चत्र पुत्र की अष्टमी है और पुनवसु नक्षत्र भी है। आज के दिन जा अमोघ की आठ कलियाँ खाएगा उसका शोक नष्टित होगा। मरी बान युगयुग तक रहेगी। मेरा हनुमान इस सबट स पार हो। जिस समय सीता दवी एमा कह रही थी हनुमान क हृदय म पान का प्रवेश हुआ उन्हें अपना वन याद आया। (प० ४४ ४५)

लका की मरम्मत—लका-दहन क उपरान्त ब्रह्मा न विश्वकर्मा से कहा—लका का सीपुना अच्छा कर दा। आज म ६४ वें दिन रावण का विनाश होगा, तब विभीषण को राज्य मिलेगा। ब्रह्मा ने रावण का अद्वान्त-भणि भी दी उसम उष्ण का गीत और शीत का उष्ण रयन की विमपता थी। (प० ६७-६८)

राजसों का परिचय—नका स लोभे हुए हनुमान से राम न राक्षता का वाचार

पूछा। हनुमान ने बताया—वे चारा वेद पढ़ते हैं। सब के घर में दुःखी आग है। वे घृत, तिल आदि से समीर की पूजा करते हैं। राम ने कहा—एसा का मारकर मैं पाप कैसे करूँगा, तब हनुमान ने बताया यह ठीक है किन्तु उनमें य अथगुण भी हैं— (१) उनमें दया नहीं है (२) वे स्नान नहीं करते हैं (३) शुचिमत नहीं हैं (४) रोप करते हैं (५) मगतो का निराश करते हैं। तब राम ने सीता के अंग का स्मरण कर सेना सहित सिन्धुतीर पर पहुँचने के लिए प्रस्थान किया। (पृष्ठ ८५ ८६)

जाम्बवान का कौष्ठो विचार—सतुवर्ष के समय जाम्बवान ने आठ खान बनाकर उसमें आठ अक्षर लिखे फिर अपठित व्यक्ति को गुलाकर किसी एक खाने पर उगली रखने को कहा। श्री अक्षर पर शकुन पड़ा। जाम्बवान ने राम से कहा—अल्प दिन में ही सीता मिलेंगी और रावण का सगोत्र विनाश होगा।

मानस में

भक्त विभीषण और हनुमान की भेंट—हनुमान लका में सीता का योजित समय एक ऐसे घर के निकट पहुँचते हैं जो तुलसी और रामायण के चिह्न सञ्चित है। विभीषण राम-नाम जप रहा है। हनुमान से भेंट होने पर वह पूछता है राम मुझ अनाथ पर कब कृपा करेंगे। विभीषण ही हनुमान को सीता से मिलने की युक्ति बताता है। हनुमान लकादहन के समय विभीषण का घर नहीं जलाता है। बगला रामायण में भी विभीषण का घर नहीं जलाता है।

लक्ष्मण की चिट्ठी—रावण के भेजे हुए चर वानरा द्वारा पकड़े जाते हैं। राम उन्हें कृपापूर्वक छोड़ देते हैं। लक्ष्मण इन्हीं चरों के द्वारा रावण के पास चिट्ठी भेजते हैं। रावण वारों हाथ से चिट्ठी ग्रहण करता है।

लका-काण्ड तुलनात्मक अध्ययन

(वाल्मीकि रामायण में इस काण्ड का नाम युद्ध-काण्ड है किन्तु सभी रामायणों में इसका नाम लका काण्ड है।)

सभी रामायणों के समान प्रसंग

१ सत्वा पर चढ़ाई—रावण द्वारा चारा द्वारा पर सेना की नियुक्ति, राम द्वारा भी सेना का चार भागों में बाँटा जाना अगद का दूत-वचन, रावण को अपमानित कर वापस आना।

२ मेघनाद का प्रथम युद्ध—(नागपराश-वचन एवं लक्ष्मण पर शक्ति के सम्बन्ध में पूर्वाचलीय रामायणों में समानता है मानस की कथा में अन्तर है।)

३ रावण का प्रथम युद्ध—वानरा का पायल कर लक्ष्मण पर शक्ति प्रदर्शन, उन्हें उत्तान की रावण द्वारा चण्ड हनुमान का प्रात्रमण, लक्ष्मण का उपचार।

(पूर्वाञ्जलीय रामायणा म रावण के तीन युद्ध का वणन है। प्रथम एव द्वितीय युद्ध म वह लक्ष्मण के शक्ति मारता है। मानस म केवल दा युद्ध का वणन है। प्रथम युद्ध कुम्भकर्ण और मेघनाद की मृत्यु क पश्चान प्रारम्भ होता है।)

४ कुम्भकर्ण-वध—मुख्य सेनापतिया क वध के उपरान्त रावण की चिन्ता। अपने शाप-वरा का स्मरण करना। कुम्भकर्ण का जागरण। कुम्भकर्ण रावण मन्वाद एक-दूगरे की भत्सना फिर कुम्भकर्ण का युद्ध के लिए प्रस्थान, कुम्भकर्ण विभीषण भेंट। कुम्भकर्ण का घायल सुग्रीव को लेकर भागना, सुग्रीव द्वारा उसके नाककान काटे जाना। क्रुद्ध कुम्भकर्ण का राम से भीषण युद्ध और उमका नाश।

५ मेघनाद का द्वितीय युद्ध—मेघनाद का अन्त्य होकर युद्ध करना तथा राम-लक्ष्मण को पीडित करना।

६ मेघनाद का तृतीय युद्ध और मृत्यु—माया सीता वध (मानस म नहीं), मेघनाद का निःकुभला-वट के पास यन करना विभीषण के परामश और साहाय्य से लक्ष्मण द्वारा उमका यन विन्वम करना। मेघनाद का मारा जाना। रावण की सीता के वध के लिए जाना किन्तु किसी एक पात्र द्वारा रोका जाना।

७ रावण का युद्ध—रावण द्वारा विभीषण पर फेंकी गयी शक्ति से लक्ष्मण का ग्राहत होकर गिरना। रावण का युद्ध से खदटा जाना। लक्ष्मण का चतय-लाभ करना।

८ रावण-वध—इन्द्र द्वारा राम की सहायता के लिए मातलि सारथि सहित रथ भेजना। राम के बाणा की चाट से मूर्च्छित रावण को सारथि द्वारा रण-क्षेत्र से दूर ले जाना, रावण का क्रुद्ध होना। राम द्वारा रावण क मिर बार-बार काटे जाने पर भी नये सिर उगना राम की चिन्ता। अन्त म बाण से रावण का हृदय फाडकर वध करना। विभीषण का विलाप राम का समझाना। अत्यष्टि। विभीषण का अभिपेक।

९ अग्निपरीक्षा—राम का हनुमान द्वारा सीता के पास समाचार भेजना सीता का हर्षित हाना। राम की आना से विभीषण का सीता को डोले म विठाकर लाना, वानर रीढ़ा की उत्सुकता, विभीषण के अनुचरो द्वारा बेत प्रहार राम का वजन, सीता को डाल से उतारकर पदल नाय जान का आदेश राम का सीता को स्वीकार न करना सीता की कर्णावस्था, लक्ष्मण का चिता सजाना और सीता का अग्नि प्रवेश। अग्नि का प्रकट होकर सीता का निष्कलक बताना, राम द्वारा सीता की स्वीकृति। ब्रह्मा, दशरथ, इन्द्र आदि की उपस्थिति इन्द्र द्वारा मत वानरा को जीवन-दान।

१० विदाई—विभीषण का आतिथ्य स्वीकार न कर राम की भरत से मिलने की आतुरता विभीषण द्वारा वानरगना का स्वागत पुष्पक विमान द्वारा रामादि का प्रस्थान माग म सीता को विभिन्न घटनाप्रा मे सम्बन्धित स्थान दिखाना। भरद्वाज स भेंट।

११ अयोध्या प्रवेश—राम का हनुमान द्वारा भरत का आने की सूचना देना, भरतादि की स्वागत-तयारी, नदिग्राम में राम का स्वागत राम का विधिवत अभिषेक ।

० पूर्वाचलीय रामायणों का वणनराम वाल्मीकि रामायण के अनुसार है, अतएव उनमें कई स्थला पर परस्पर समानता है । वाल्मीकि रामायण के युद्ध-वणन में कहीं-कहीं अनावश्यक विस्तार है कई स्थला पर पुनरावृत्तियाँ हैं । मानसकर ने पूर्वाचलीय लेखकों की अपेक्षा इस विस्तार से बचने की अधिक सफ़्त चेष्टा की है । रावण और मेघनाद के युद्ध-वणन में इसे स्पष्ट किया जाएगा ।

वाल्मीकि रामायण की मायामुड निर्माण और माया-सीता-वध की घटनाएँ पूर्वाचलीय रामायणों में भी हैं । ये घटनाएँ आदि रामायणों में मूलतः नहीं थी, बाद में जोड़ी गयीं हैं । मानस में इनका वर्णन नहीं हुआ । नागपाश बंधन और लक्ष्मण के शक्ति लगने वाली घटनाओं का भी मानस में व्यतिक्रम है ।

असमीया रामायण का यह काट प्रारम्भ से अतः तक मूल में समानता रखता है उसमें अवातर प्रसंग नहीं आये हैं । शेष तीनों रामायणों में अनेक अर्थ प्रसंगा का समावेश है जिनका यथास्थान वणन होगा ।

मायामुड—वाल्मीकि रामायण में रावण विद्युज्जिह्व की सहायता से राम का सिर और धनु बनवाकर सीता को दिखाकर विश्वास दिलाना चाहता है कि सोते समय राम की हत्या कर दी गयी है । सीता विलाप करती हैं । इसी समय मयिमा का सन्देश पाकर रावण वहाँ से हड़बड़ा कर प्रस्थान करता है, साथ ही मुड और सिर लुप्त हो जाते हैं । सरमा रावण की सभा में जाकर सत्य स्थिति का पता लगा कर सीता का बताती तथा समझाती है ।

असमीया और बंगला रामायणों में प्रसंग इसी प्रकार हैं । सरमा पक्षी बन कर पता लगाती है । उडिया रामायण के वणन में मौलिकता के योग का प्रयास है । रावण स्वयं भक्त है साचता है कि सीता मानगी नहै इसलिए वह राम लक्ष्मण का सिर और धनुष दिखाकर सीता को फुसलाता है शृगारादि के वणन करता है । सीता विलाप करती हुई ऋषि-वचन का स्मरण करती हैं कि वे कभी विधवा नहीं होंगी । इस रामायण में सूचना देने वाली राक्षसी सरमा नहीं अपितु सीता की सखी प्रभजना राक्षसी है । (पृष्ठ २८ ३१)

अगद का दूत-काम—वाल्मीकि रामायण में अगद के विश्वाम की परीक्षा के लिए उसे दूत बनाकर भेजा गया है—एसा प्रतीत होता है । पिता के वध से यदि वह मननुष्ट होगा तो रावण से जा मिलगा अथवा मुषीव के अधीन रहेगा । असमीया-रामायण में अगद के भजन में यह दृष्टिवाण नहीं है किन्तु शेष वणन वसा ही है । अगद रावण से बातचीत कर उसके चार राक्षसों का पदार्कण और अटारी ताडकर भाग भाग है ।

शेष भाषा-रामायण। म अगद रावण-मवाद का विस्तृत वर्णन है। यहा सम्स्कृत नाटका का प्रभाव है। देखिए हनुम-नाटक अंक ८। इन तीनों रामायणों में अगद रावण का परिचय पूछकर उमकी पराजयो की ओर व्यगपूण सकेत करता है। उडिया-रामायण में इस प्रकार का व्यग अधिक है। उमम राम का पत्र लेकर भी वह गया है। बेंगला रामायण म—(१) अगद रावण का सिंहासनाखंड दखकर स्वय भी अपनी पूछ की कुडली बनाकर बठता है (आनन्द रामायण म भी ऐसा वर्णन है)। (२) रावण ऐसी माया रचना है कि इन्द्रजीत का छोडकर सभी सभाजन अगद को रावण दिखायो पढते हैं। अगद ने इन्द्रजीत को ऐसा निबकारा तथा रावण के कृत्या का ऐसा बतान किया कि रावण भँपकर अपन प्रकृत रूप में आ गया। (पृष्ठ २७५)

ममा म बल प्रदर्शन का वर्णन असमीया और उडिया रामायणों म समान है किन्तु बेंगला और हिंदी रामायणों में विशेषता रखता है। वाल्मीकि-रामायण क गौडीय-सस्करण की किमी किसी प्रति में यह श्लोक है—

वायुवेग समासाद्य रावणस्य ततोऽद्भुतः ।

जग्राह मुकुटं चौर पादमादाय मस्तके ॥

बंगला रामायण म अगद प्राचीर तोडकर मोचता है कि राम के पास कौन-सी वस्तु ले जाए। अत म रावण के मणिमय मुकुट लेने के उद्देश्य से वह वही से उछाल लगाकर रावण पर भपटना है तथा उस मल्लयुद्ध म पड़ाडकर मुकुट लेकर चला आता है। (पृष्ठ २८१)

मानस म भी अगद मुकुट प्राप्त करता है किन्तु बल-दर्शन का रूप अय प्रकार का है। अगद पर रोप देता है जिसे इन्द्रजीतादि राक्षस तक नहीं उठा पाने। जब रावण स्वय उठान चलता है तो वह उस गज्जिन कर दता है कि पर ही पकडना हू तो राम के पकड। अगद राम की निंदा सुनकर क्रुद्ध हाकर इनने जोर से हाय पटकता है कि रावण डरकर गिरत गिरते बचा। उसके मुकुट पष्वी पर गिर पडे, अगद न उठे उठाकर वही से राम के पास फेंक दिया। (६ ३१ ३ ६)

रावण-पराभव—युद्ध आरम्भ के पूर्व रावण के अपमानित होने का चित्रण किसी-न-किसी रूप म सभी रामायणों म है—असमीया रामायण को छोडकर। अष्ट्यात्म रामायण (६ ५ ४४) म राम रावण के छत्र मुकुट काट फेंकत है। इससे मिलता-जुलता वर्णन ही भाषा रामायणों म है।

उडिया रामायण म रावण पुष्पक विमान पर चढकर युद्ध-क्षत्र म आया। वह लक्ष राजास्रा के जीते हुए लक्ष छत्रों को धारण किय था लक्ष नारियाँ चवर डुला रही थी। रावण ने विभीषण पर गदा फेंकी जिम हनुमान ने उछतकर पकड लिया। राम न वाण से छत्रों के दड काट गिराय। (पृष्ठ ३७ ३८)

मानस म राम ने मुनेन परत पर लड़े हुए लीन लिंगा की धार लियुन शाभित बालन की गुग्गुम्भीर ध्वनि मुनारर विभीषण म त्रिगमा की । त्रिभीषण न स्पष्ट किया—घ्राप रावण के छत्र का बालन म शत्रो म ताउन का बिलनी एव वाद्य ध्वनि की मघ गजन समभ रहे हैं । राम न रावण का अभिमत गमभवर बाण द्वारा छत्र एव ताटक काट गिराय । (५१३ व)

बगला रामायण म छत्र मुटुट काटन का प्रयाग नगी है । रावण ध्यान दुग म राम की सेना का निरीक्षण कर रहा था । त्रिभीषण ने मुभान पर राम न रावण को मारने के लिए धनुष पर बाण चढ़ाया । रावण लग कर भाग गया । (पुष्ट २६३)

वाल्मीकि रामायण का प्रयाग दग प्रवार था—मुनन परत पर राम-गना पदाय टाल है । सुभीष न 'नीनजीभूनमकाश हंसगछान्तिमन्त्रम्' रावण का दगा । मुषाव छत्राग नगावर उसके पास पहुँच और मल्लयुद्ध म उस परास्त कर नोट घ्राय, गाय म उसके मुकुट भी लत घ्राय । (सग ४०)

मेघनाद के तीन युद्ध

वाल्मीकि रामायण म मेघनाद तीन बार युद्ध करता है । एक युद्ध रावण के प्रथम युद्ध और कुम्भरण की मत्यु के पूव है । शप दो युद्ध कुम्भरण की मत्यु व परवान के हैं । चारा भाषा रामायणो म युद्धा का यही क्रम है । उडिया रामायण म पाँच युद्धा का वणन है । प्रथम दो युद्धो को छोड दिया जाए ता शेष तीन अय रामायणो जसे ही हैं ।

प्रथम-युद्ध—मेघनाद नागपाश द्वारा राम लक्ष्मण को बाँध लेता है । रावण सीता को त्रिजटा के साथ भेजकर रणभूमि मे मूच्छित पड दोनो भाइया को लिपाने के लिए पुष्पक यान की व्यवस्था करता है । विलाप करती सीता को त्रिजटा समभा कर वापस ले जाती है । गरुड आकर राम लक्ष्मण को बंधन मुक्त करत है ।

पुत्राचलीय भाषा रामायणा म नागपाश का समान वणन है । गरुड को बुलाने का वणन थोडा मा भिन्न है । वाल्मीकि रामायण म गरुड स्वयं घ्राय हैं । असमीया रामायण मे वायु ने राम के कान म कहा कि गरुड का स्मरण करो । बगला रामायण म इन्द्र ने वायु से और वायु ने राम से स्मरण के लिए कहा । तब उहाने स्मरण किया । गरुड कुशद्वीप मे अजगर अक्षण कर रह थे । राम के स्मरण से उनके माथे पर टकार पडी थी । उडिया रामायण के पाँच युद्धो म नागपाश वाले युद्ध का स्थान तीमरा है । मानस मे वणित तीन युद्धो म नागपाश बंधन द्वितीय-युद्ध म हुआ है । इमम गरुड नारद द्वारा भेज जान है । वणन सक्षिप्त है । सीता युद्ध क्षेत्र म नही भजी जाती ।

मानस और उडिया रामायण के क्रमशः प्रथम एव द्वितीय युद्धा म मेघनाद द्वारा लक्ष्मण के शक्ति लगने का विशद वणन है । जिसका वणन अयत्र होया ।

इसी शक्ति प्रसंग के पश्चात् उडिया रामायण में मघनाद राम लक्ष्मण को तृतीय-युद्ध में नागपाश से आवद्ध करता है क्योंकि लक्ष्मण के जो जान से रावण ने उनके शीश की प्रशंसा की थी और यह मघनाद का अखरी शीश । जाम्बवान से हनुमान बाने वहाँ है गरुड, मैं पकड़ लाऊंगा । जाम्बवान ने अनवर द्वीप और सिंधुआ का उल्लेख कर दूरी बताते हुए कहा— इन सब के पार शीर-ममुद्र में अनतशय्या पर नारायण शयन करते हैं वही रामक पवत पर गरुड है । राम ने गरुड की स्तुति की । गजयक्ष्म और बालखिल्य की कथा की ओर संकेत है । गरुड के आन की आवाज से ही माँप बंधन छोड़कर भाग गया । (पृष्ठ ८८ ९०)

द्वितीय युद्ध—वाल्मीकि रामायण में नागपाश के पश्चात् का युद्ध कुम्भकण की मृत्यु के पश्चात् हुआ । मघनाद अपने तीक्ष्ण वाणा से राम-लक्ष्मण सहित समस्त सेना का वीथ दत्ता है । जाम्बवान के कहने से विभीषण हनुमान का राग लाते हैं । वे औपध-पवत लाते हैं और इसी से सब का उपचार हाता है ।

सच तो यह है कि नागपाश जसी ही स्थिति इस बार है कथा की पुनरावृत्ति सी है । हनुमान भी बार-बार औपध पवत रात दिखाय गया हैं । मानसकार ने मभवन इसीलिए अपने तीना युद्धों में से किसी में भी इसका वर्णन नहीं किया । असमीया और बेंगला रामायणों का वर्णन वाल्मीकि रामायण के अनुसार है । उडिया रामायण का वर्णन का भी मूल आधार यही है—

इसके अनुसार जब मघनाद ने ब्रह्मशर उठाया तो राम ने प्रार्थना की मैं नारायण प्रभु हूँ भरे ही अश से तेरा निमाण हुआ । किन्तु वाण ने सब को घायल किया । विभीषण भाग गया इसलिए बच गया । मघनाद मोचता है कि राम योद्धा हैं बच सकते हैं, अनएव इनका मिर काटा जाए । दवताओं ने चिंतित हाकर सरस्वती की सहायता मागी । सरस्वती से प्रभावित बुद्धि होने के कारण वह लौट गया । ब्रह्मशर राम के ब्रह्मत्व से परिचित तथा उनकी स्तुति से प्रभावित हाकर राम लक्ष्मण और हनुमान को छोड़ सब का काटता हुआ और मघनाद की जय बोलता हुआ लका लौट गया । जोध वर्णन ममान है । इस रामायण में सीता विलाप करती हैं किन्तु अध रात्रि के समय स्वस्थ वानरा के आक्रमण से सीता की चिंता दूर हो जाती है । —१३६ ३७ (उडिया) ।

तृतीय-युद्ध—तृतीय-युद्ध को भी दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है ।

(१) मायासीता बध और (२) मघनाद का यज्ञ विध्वंस तथा बध ।

पूर्वांचलीय रामायणों में वाल्मीकि-रामायण के अनुसार दाना खंडों का वर्णन है । मघनाद मायासीता का बध हनुमान के सामने करता है । हनुमान राम से जाकर कहते हैं राम शाक से बिह्वल हा उठते हैं अतः मैं विभीषण के तर्कों से सभी का विश्वास हाता है कि वास्तविक सीता जीवित हैं । बेंगला-रामायण में हनुमान सीता को देख भी आने हैं ।

उडिया रामायण की मायासीता — मेघनाद न जाम्बवानी न कहा कि यह अपनी विधवा बहिन सुवानि (मकराक्ष की पत्नी) को ले आए। मघनाद ने उसे राम की पत्नी बनाने का लालच दिया। उसे त्रिवेणी के जल से नहलाकर सीता का रूप धारण कराया गया। मेघनाद उसे लेकर चला। इसी मायासीता का सब ही शिरच्छेदन हुआ।

इस रामायण में भी रहस्योद्घाटन विभीषण द्वारा ही हुआ किन्तु विभीषण को सूचना निकुला नामक राक्षसी से मिली जाति त्रिजटा के कहने में कपि-रूप धारण कर आयी थी। इसके अतिरिक्त मायासीता के भाठ और स्तन पर जयत काश के नखचिह्न खोजे गये न मिलने पर विश्वास हुआ कि यह मायासीता है।

मानस में मायासीता का वर्णन नहीं है। मानसकार सीता को निम्नी भी रूप में बार-बार प्रस्तुत नहीं करते, प्रस्तुत करने पर राम को सत्य शोक नहीं होता। हरी हुई सीता तो स्वयं ही मायासीता थी।

मेघनाद का यत्न विवस और लक्ष्मण द्वारा उसका बध सभी रामायणों में एक जसा ही है। यह तृतीय युद्ध उडिया रामायण का पंचम-युद्ध है।

रावण के युद्ध

वाल्मीकीय असमीया और बंगला रामायणों में रावण के तीन युद्धों का वर्णन है। प्रथम-युद्ध कुम्भवन की मृत्यु के पहले एव शेष दो कुम्भवन एव मेघनाद की मृत्यु के पश्चात् हुए। उडिया रामायण में भी तीन ही युद्ध हुए किन्तु रावण का प्रथम युद्ध मेघनाद के नागपाश-बधन वाले युद्ध से मिला हुआ है। पितापुत्र साथ ही युद्ध करने निकल है। मानस में रावण के अन्तिम दो युद्धों का ही वर्णन है। वह सभी मुख्य सेनापतियों के युद्ध के उपरान्त ही युद्धक्षेत्र में आता है।

प्रथम युद्ध — मूल रामायण के अनुसार असमीया और बंगला रामायणों में रावण सर्वप्रथम सुग्रीव हनुमान और नील के साथ युद्ध करता है। नील के युद्ध का रोचक वर्णन है। वह लघु रूप धारण कर रावण के मुकुट और ध्वज पर उछलकूद कर रावण का खिभाता है। (बंगला रामायण में वह रावण के सिर पर प्रस्राव भी कर देता है जिससे उसका मुख भोग जाता है।) तदनन्तर वह लक्ष्मण के शक्ति मारता है। उठाने की चेष्टा में असफल होकर हनुमान की मार खाकर हटता है। राम उसे युद्ध में घायल कर छोड़ देते हैं। वे उसे प्रथम-युद्ध में मारना नहीं चाहते।

उडिया रामायण में लक्ष्मण के शक्ति आदि लगने का वर्णन तो है किन्तु यह शक्ति मघनाद द्वारा रावण की उपस्थिति में फकी गयी है।

द्वितीय युद्ध (लक्ष्मण पर शक्ति) — वाल्मीकि रामायण के दक्षिणात्य-संस्करण में वर्णन इस प्रकार है — अनेक राक्षसों की मृत्यु के पश्चात् स्वयं रावण युद्धक्षेत्र में आया। उसने विभीषण पर शक्ति फेंकी, किन्तु उसकी रक्षा करते हुए लक्ष्मण ने शक्ति

को अपने ऊपर ले लिया। किंतु गौडीय सस्करण म कालनेमि, गणध्व आदि के भी वतान प्रक्षिप्त थे। तीनों पूर्वाचलीय रामायणों में इनका वणन हुआ है। मानस म कालनेमि आदि का वणन अथत्र हुआ है। इस लक्ष्मण शक्ति के प्रमग म आगे स्पष्ट किया जाएगा।

ततीय युद्ध (रावण वध)—रावण का वर मिला था कि उसका कटे सिर जुड़ जाएँगे। फलत राम बार-बार सिर काटने पर भी उसका वध नहीं कर पा रहे थे। वाल्मीकीय, असमीया और उडिया रामायणा म मातलि के याद दिलान पर राम अगस्त्य प्रदत्त वाण से रावण का वध भेद कर मार डालते हैं। मानस म विभीषण न राम को बताया कि इसके नाभिप्रदेश म अमृत है, उस सोख लन पर ही रावण की मृत्यु होगी। मानसकार को अध्यात्म रामायण से प्रेरणा मिली है।

बगला रामायण म रावण की मृत्यु एक विशेष वाण स ही हो सकती थी जिस हनुमान चुराकर लाये थे। राम को दुर्गा की पूजा भी करनी पड़ी थी। इन प्रसगो का पूयक वणन आगे किया गया है।

लक्ष्मण को शक्ति लगना

प्रत्येक रामायण म लक्ष्मण को दो बार शक्ति लगती है। आदि रामायण के अनुसार असमीया और बगला रामायणों म रावण ही अपने प्रथम एव द्वितीय युद्धो म लक्ष्मण को आहत करता है। उडिया और हिंदी रामायणो में पहली बार शक्ति मारने वाला मेघनाद है^१ दूसरी बार शक्ति रावण के द्वितीय-युद्ध म लगती है।

पूर्वाचलीय रामायणो में एक बात की समानता है— इनम लक्ष्मण की शक्ति का विस्तृत-वणन रावण के द्वितीय-युद्ध के समय हुआ है। मानस म मघनाद के प्रथम युद्ध म जब लक्ष्मण घायन होते हैं तभी का वणन विस्तृत है। कालनेमि मकरी आदि प्रसगा की समानता के कारण यहाँ इन्ही प्रसगा का तुलनात्मक वणन अभीष्ट होगा।

लक्ष्मण की मूर्च्छा और उपचार—प्राय विभीषण को बचाने म ही लक्ष्मण शक्ति स घायल होत दिखाये गये हैं। शक्तिहता उन्हें उठाकर ले जाने की चेष्टा करता है किंतु विफल होता है। घायल लक्ष्मण का उपचार सुपेण द्वारा होना है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सुपेण वानर-मय का ही वध था और पूर्वाचलीय रामायणो म भी ऐसा दिखाया गया किन्तु मानस म बताया गया कि सुपेण रावण का वध है जिसे हनुमान घर सहित उठा लात हैं। हनुमन्नाटक (१३७) म भी ऐसा ही है।

कालनेमि—वाल्मीकि रामायण के गौडीय-सस्करण म कालनेमि-वध, गणध्वो से युद्ध रावण के भजे राक्षसा स युद्ध और हनुमान भरत भेंट का वणन है। इनम म अधिकांश का वणन अध्यात्म रामायण म भी है। पूर्वाचलीय रामायणा पर गौनीय

१ अध्यात्म रामायण म भी शक्ति का स्थल यहाँ है यद्यपि शक्तिहता रावण है।

सस्करण एव हनुमन्नाटक का प्रभाव है तथा मानस पर अध्यात्म रामायण का ।

मकरी—कालनमि की माया हनुमान का तब नात हानी है जब व मकरी का मारत है । असमीया रामायण की गधवाली प्रचंड शक्ति में अभिशप्त होकर मकरी हुई थी । बगला रामायण की गधवाली दबकाया कुयर व यहाँ जात समय दशमुनि से टकरा जान स अभिशप्त हुई थी । उडिया रामायण के अनुसार मकर मास में प्रयाग-तीर्थ में विधाता तपस्या कर रहे थे । गधव-यक्ष बालिराज की दुष्टिता ने डुबकी लगाकर पर पकड़ा इसीलिए अभिशप्त हुई । मानस तथा सभी रामायणों में वह शापमुक्त होकर पूर्वरूप धारण करती है ।

गधव-यक्ष—पूर्वाचलीय रामायणों में पवत के रथक असह्य गधवों से युद्ध करना पड़ता है । मानस में यह वर्णन नहीं है ।

सूय को बन्दी करना—बगला रामायण में रावण सभी देवताओं को बुलाकर सूय को आदेश देता है कि समय असमय का ध्यान छोड़कर अभी उदित हो, जिससे लक्ष्मण की मृत्यु हो जाए । सूय उदित होने चलता हनुमान ने उसे पकड़ कर बगल में दबा लिया । पवत लान व पश्चात् राम के कहने से हनुमान ने उसे छोड़ दिया । हनुमन्नाटक (अंक १३) में बेंगला-लखक को प्रेरणा मिली है ।

पवत उत्पादन—श्रीपथ न साज पाने पर पवत ही उखाड़कर लाने की घटना सभी रामायणों में है ।

भरत हनुमान भेंट—असमीया को छोड़कर शेष रामायणों में हनुमान भरत भेंट का वर्णन है । हनुमान पवत लेकर अयोध्या से निकल रहे थे, तब भरत ने हनुमान को नीचे गिरा लिया । बगला रामायण में ८० मन भारी बाटुल (लोहे के गोल) से गिराया उडिया रामायण में बाटुलि से गिराया जाना लिखा है मानस में बिना फन बाल बाण से । मानस में दोनों की वार्ता सौहाद-पूण ढंग से हुई है किन्तु उपर्युक्त दोनों रामायणों में कुछ कहा सुनी हो गयी है । बेंगला रामायण में हनुमान भरत की शक्ति-परीक्षा भी नेते दिखाय गये हैं ।

उडिया रामायण में भरत हनुमान से कहते हैं कि किसी से कहना नहीं कि तुम मेरे प्रहार से बच गये नहीं तो क्षत्रिय होंगे । हनुमान ने कहा तुम भी मत कहना नहीं तो क्षत्रिय मुझ पर होंगे कि ब्रह्मा ने इस वसा वज्राय बनाया कि यह गाल के प्रहार में मोहप्रस्त हुआ ।

पवत की वापसी—राम के कहने से हनुमान पवत वापस रख आये । इस समय रावण के भेजे रावणों को भी उहाँ मार लिया । यह प्रसंग पूर्वाचलीय रामायणों में है किन्तु मानस में नहीं है ।

सीता की अग्नि परीक्षा

वाल्मीकि रामायण में विभीषण सीता को लेकर चल । उनके आस पास बने

घारी राक्षस चल रहे थे। रीढ़-वानरा का दल बड़ी उत्सुकता के साथ सीता का देखन के लिए टूट पड़ रहा था। राक्षस उन्हें वेत्र स पीट रहे थे। राम न क्रुद्ध हाकर सीता को डोले स उतरकर पदल लाय जान का आदेश दिया। सीता न आकर उह प्रणाम किया, किन्तु राम न भयकर आघ प्रकट करत हुए सीता का ग्रहण करना अस्वीकार करते हुए कहा—दसा दिशाएँ खुली हँ, कहीं चली जाया और उपस्थित लागो म किसी को वरण करला। मैं कुल की लाज रक्षा के लिए ही तुम्हारा उद्धार किया था। सीता न भी तेजस्वी आय-नारी जसा उत्तर देकर लक्ष्मण को चिता सजान की आजा दी। लक्ष्मण न राम की स्वीकृति जानकर चिता सजा दी। अग्नि सीता का गाद म लकर प्रकट हुए। राम ने सीता का स्वीकार कर लिया।

बँगला रामायण और मानसकार के राम इतन उग्र नहीं हो सके उहान तो सीता को इसलिए पदल आने दिया कि वे ता जननी-तुल्य हैं और वानरादि पुन तुल्य हैं देखन म दोष नहीं।

शप समस्त वणन असमीया, बँगला और उडिया रामायणो म एक समान तथा मार्मिक है। भाषा रामायणा की सीता का चरित्र उग्र होत हुए भी तत्कालीन नारी की अवशता से भी युक्त है। बँगला रामायण की सीता सफाई दती है कि वे शशव म भी शिगु पुरपा स नहीं मिला करती थी।

मानस के वणन म ऐसी मार्मिकता नहीं आने पायी। सभवत राम को निष्करण होने के कलक स वचाने के लिए मानसकार ने अध्यात्म रामायण के अनु सार छायासीता की कल्पना की। राम इमी छायासीता को वापस कर सत्य सीता चाह रहे हैं इसीलिए उहाने कुछ कठोर वचन कह। अतएव सीता की अग्नि परीक्षा दो उद्देश्या स हुई—१ प्रतिविम्ब के स्थान पर सत्य सीता की प्राप्ति के लिए और २ सीता के लौकिक कलक का नष्ट करने के लिए। बंगला रामायण म भी सीता के कलक को दूर करने के लिए मादोदरी शप की कल्पना हुई है।

पुष्पक द्वारा वापसी—वापसी का वणन समान है। असमीया और बँगला रामायणा म राम हनुमान द्वारा गुह और भरत का सूचना पहुँचात हैं। उडिया रामायण म भी ऐसा है किन्तु जिस समय विमान जा रहा है अगद राम की आजा पाकर विमान से कूट कर गुह से कह आते हैं कि अयाध्या आकर मिलो। अगद पुन विमान म बठ जात हैं। मानस म यान गया के किनार स्वता है। सीता गगा की पूजा करती ह। यही गुह स मिलन हाता है।

बँगला रामायण म वापसी के समय सतु भग करने और शिव की पूजा करने का भी वणन है।

हनुमान पुरस्कृत—वाल्मीकि रामायण के अनुसार, असमीया और बँगला रामायणो म सीता हनुमान का हार प्रदान करती हैं। असमीया रामायण म हनुमान न राम स वर माँगा कि जब तक राम-कथा ससार म रह मैं जीवित रहूँ।

बेंगला रामायण में सीता न बर दिया कि जहाँ कही भी रामकथा होगी, वहाँ तुम अवश्य ही रहोगे। हार के सम्बन्ध में दो आशयान और हैं—(१) हनुमान न सीता प्रदत्त हार का चवाकर फेंक दिया, क्योंकि उसमें राम का नाम अंकित नहीं था। लक्ष्मण ने क्रोध होकर कहा— फिर शरीर क्या धारण किया हा।' हनुमान न शरीर फाड़कर अश्विमेय राम-नाम दिया दिया। (२) नीला हनुमान का भोजन करा रही थी। वे खाते ही चले जा रहे थे। सीता चिंतित हुई उहान ध्यान-भूवक जाना कि य तो साक्षात् शिव के अवतार है। तब सीता न सावधानी के साथ युक्ति पूर्वक उनकी क्षुधा शांत की। (प० ४६२)

उडिया रामायण में भी हनुमान जब तक राम की कीर्ति रहे जीवित रहना चाहते हैं। उह अमर और नीरोग रहन का वर मिलता है। उनकी शक्ति ऐसी ही रहगी और उह यथेच्छ भोजन मिलगा। (प० ३६४)

रामराज्य—पूर्वाचलीय रामायणा के युद्धकाण्ड की समाप्ति पर तथा मानस के उत्तरकाण्ड में रामराज्य का वर्णन है।

तुलनात्मक अध्ययन से बचे हुए प्रसंग

असमीया बेंगला रामायणा में

नदीनाथ—नदी न रावण को शाप दिया था कि नर और वानर के हाथों उमकी मृत्यु होगी। वाल्मीकि रामायण का यह वृत्तान्त असमीया एवं बेंगला रामायणों के इसी काण्ड में और उडिया रामायण के उत्तरकाण्ड में है।

बेंगला-उडिया रामायणों में

गरुड कृष्ण हनुमान—नागपाश से पीड़ित राम-लक्ष्मण की मुक्ति के लिए सभी रामायणा में गरुड की अवतारणा हुई है, किंतु कृष्ण-जन्म का उल्लेख और उनसे हनुमान के विवाद होने का वर्णन केवल उपयुक्त दो रामायणा में है। बेंगला रामायण में गरुड ने अनुरोध किया कि कृष्णावतार का रूप वह अभी देखना चाहता है। गरुड न पक्षा से राम को ढक कर झाड़ कर ली। राम ने कृष्ण रूप दिखलाया। हनुमान को इससे बड़ा रोष हुआ उहने प्रतिज्ञा की कि इसका बदला कृष्ण-जन्म में लिया जाएगा। (प० २६१)

उडिया रामायण में स्वयं गरुड राम के कृष्णावतार की लीलाओं का वर्णन कर कहता है कि जब कालिदास के विष से तप्त होगे तब मेरा स्मरण करोगे तभी भेंट होगी। हनुमान राम से बोले इस जाने मत दो युद्धकाल तक रोक लो यह मेरे सामन रहे। राम बाल—न, यह मर पिता के समान है। (प० ६१)

केवल असमीया रामायण में

सुग्रीव और बालि की उत्पत्ति—रावण के दूता ने उसे दुग पर चढ़कर सुग्रीव और बालि की ओर दंगित करते हुए उनका जन्म वृत्तान्त बताया। ब्रह्मा की आज्ञा में धूल पड़ी—उससे एक सुन्दरी का जन्म हुआ, जिसका नाम रखा गया आखिराज। सूप और इन्द्र ने मुग्ध होकर इस पुत्र का धर दिया। जुड़वा पुत्र हुए, जो बालि और सुग्रीव कहलाए। (पृष्ठ ३०१)

उडिया रामायण के किष्किपा वाण्य में इनकी उत्पत्ति क्या विस्तारपूर्वक वर्णित हुई है।

वैंगला रामायण में

हर-पावती कौदल—(कोदन-भगटा)—हर और पावती में भगडा हुआ। पावती कहती हैं—तुम भेंगेड़ी हो सबके रावण की चिन्ता नहीं करते। शंकर अप्रमत्त होकर कहते हैं तुम बामा जाति की हो। राम विष्णु अवतार हैं, रावण की रक्षा नही हो सकती। यह कौदल बगाल की शिवायन धारा का प्रतीक है। (पृ० २७२)

दुष्ट राक्षस—(क) मकराक्ष—वाल्मीकि रामायण तथा भाषा रामायणों में मकर के पुत्र मकराक्ष के युद्ध का वर्णन है। वैंगला रामायणकार ने नूतन कल्पना भी की है। यह राक्षस अथर्व के आग-वीथे गायत्रा का ममुदाय लेकर आता है। रथ में बने जाने गये हैं रथ चारों ओर से गोचम से ढका है। कुछ दुष्ट ग्रानामक हिन्दुओं का परास्त करन की इसी प्रकार की युक्तियाँ निकालते रहते थे उसी की भूलक इसमें है। राम पवनासत्र की महायज्ञा से गाय-बला को उडाकर मकराक्ष का वध करते हैं। (पृ० ३४४)

(ख) भस्मलोचन—भस्मलोचन राक्षस का वर्णन सुन्दरकाण्ड में हो चुका है, लवाकाण्ड में भी भस्मलोचन आता है। इस बार राम प्रत्येक बानर के मुह पर दपणाम्त्र द्वारा दपण लगा दते हैं जिनमें अपना ही मुख देखकर यह राक्षस जल भरना है। (३५७ ५८)

भक्त राक्षस—रामायणों में अनेक राक्षसों के युद्धों का वर्णन है। कृत्तिकास न वैंगला रामायण में कुछ राक्षसों का भक्त बना दिया है। इन राक्षसों की भक्ति-विलक्षणता देखकर विद्वानों ने मोचन के लिए बाध्य हुए हैं कि वैंगला रामायण के ये अर्थ प्रसिद्ध हैं क्योंकि इस भक्ति विह्वलता पर चतुर्थ महाप्रभु का स्पष्ट प्रभाव जान पड़ता है। चतुर्थ कृत्तिका के पर्वतों हैं।

अतिराज—रावण पुत्र है। राम की स्तुति करना है फिर उही से युद्ध करते हुए मर्यु चाहता है। गिर बट जाँ पर उमका सिर राम-नाम बालता है।

(पृ० ३२४)

तरणीसेन—विभीषण-पुत्र है। गंगा भक्तिवा से अपन शरीर पर लक्ष नक्ष रामनाम अक्विन कर तथा वाद्या द्वारा रामनाम की जयध्वनि के साथ राम पर आक्रमण करता है। मम्मुरा आने पर स्तुति करता है। राम को वध करने से विचलित देखता है ता गाली मलोज करने लगता है। मरने पर इसका भी सिर रामनाम बानता है। विभीषण के परिचय देन पर रामादि विलाप करत हैं। (प० २४६ ५४)

बीरबाहु—इसकी भी स्थिति तरणीमन जमी है। इसका भी कटा हुआ सिर रामनाम बोलता है विभीषण इस उठाकर राम के पदतल में डाल देता है। (प० ३६५)

उडिया रामायण में भी इस राक्षस की भक्ति का विस्तृत वर्णन है।

महीरावण अहीरावण—बगला रामायणके अनुसार महीरावण रावण का मन्दोदरीमर्भोजन पुत्र तथा पाताल का शासक है। रावण के स्मरण करने पर उसके मस्तक पर टकार होती है और वह खड़ी से मान लिखकर स्मरण करने वाल का पता लगाता है। फिर सुरग निमाण कर पिता के समक्ष उपस्थित होता है। विभीषण पिता-पुत्र की मन्त्रणा का पता लगाकर हनुमान को राम लक्ष्मण की रक्षा का भार सौंपते हैं। हनुमान ने सारी सना पूछ के काट के भीतर कर ली। सुदशनचक्र ने आकाश में पहरा दना प्रारंभ किया और नल न पाताल में। विभीषण इधर उधर घूमकर चौकसी करने लगे। महीरावण अनेक रूप धारण करने के उपरान्त भी धोखा देने में समर्थ न हुआ। अंत में विभीषण बतकर राम लक्ष्मण का चुरा ल गया। हनुमान ने लज्जित एवं क्षुब्ध हाकर पाताल तक संधान किया। वहाँ महामाया यागाद्या के सुभाय उपाय से महीरावण का मारकर राम लक्ष्मण का उद्धार किया। उसकी विधवा रानी ससय युद्ध करने लगी। उसके पक्ष में लाठी मारने से अहीरावण का ज म हुआ। वह पदा होते ही युद्ध करने लगा हनुमान ने उस भी मार डाला। (प० ३६६ ४०६)

जमिनी भारत, आनंद रामायण एवं अन्य ग्रंथा में इन राक्षसों का जो वर्णन पाया जाता है वह इस रामायण के वर्णन से नहीं मिलता। संभवत महामाया के प्रभाव की वृद्धि के लिए इस प्रसंग की कल्पना हुई है।

उडिया रामायण के मुदरकाण्ड में महीरावण का नाम आया है।

रावण की भक्ति—तृतीय-युद्ध में जब रावण युद्ध करता हुआ थक जाता है धनुष फेंककर राम की स्तुति करने लग जाता है। राम भी उसकी स्तुति से विचलित हाकर धनुष-बाण फेंक देत हैं। दवताआ ने सरस्वती की सहायता ली। इनके कठ पर चढ़ने से रावण राम की गानियाँ दन लगा, जिसमें राम क्रुद्ध हाकर पुन युद्ध करने लगे। (प० ४१५ १६)

राम की शक्ति-पूजा—राम से युद्ध करत समय रावण यात्रुल होकर दुर्गा का स्तवन करने लगा। दुर्गा ने द्रविण हाकर उस गाद में ले लिया। राम के सामने ममस्या उत्पन्न हुई अब रावण पर कम प्रहार करें।

देवता चार भ्रम सात हैं, देवी की पूजा वसन म होती है। रावण-वध के लिए राम ने उनका अकाल बोधन किया। हनुमान पूजा के लिए बालीदह स १०८ नील पद्म ले आये। राम न पूजा करने हुए फूल चढाना पारभ किया। देवी ने एक पून चुरा लिया। अनुष्ठान को अपूण हाता द्वाकर राम अधीर हा उठे। अत म वे अपना नेत्र ही पद्म के स्थान पर चढाने का उद्यत हुए। देवा न प्रसन्न हाकर उनका हाथ पकड़ लिया और रावण पर विजयी होने का वर दिया। (४१७ २६)

आधार -बालिकापुराण (६२ ६५) म ब्रह्म द्वारा देवी का अकाल-बोधन हुआ है। बहद्म-पुराण (पूर्वखंड २०) म न्वय लका की अधिष्ठात-देवी चंडिका अकाल वाधन के सम्बन्ध म हनुमान का बताती हैं। देवी भागवत पुराण (३ ३०।४१-५८) म राम नारण के कहने स देवी का पूजन करत है। देवी सिंह पर आरूढ होकर राम को दशन दती हैं, तथा रावण क वध का वर दती हैं।

इन पुराणा म अम्बिका द्वारा रावण को गार म लने देवी द्वारा राम को प्रतारित करने तथा राम का अपना एर कमनाय प्रदान करने आदि का वणन नहीं है।

निराला^१ जी का भी अपनी राम की शक्ति-पूजा कविता के लिए इसी प्रसंग स प्रेरणा मिली है।

चंडी पाठ की अशुद्धि -मरु म रावण क मगलाय बहस्पति को चंडी-पाठ करना पन्ता था। हनुमान चर्नी अशुद्ध करने गये। उन्होंने मक्खी का रूप धारण कर पाषी के दा अन्तर चाट लिये। वहस्पति को श्लोक कठस्थ म अतएव वे गुद्ध पाठ कर गये, चंडी का पाठ अशुद्ध नहीं हुआ। उहाने भयानक रूप धारण कर तीन श्लोक पाछे दिये। अब चंडी रावण को निराश कर यत्नाय चर्नी गयी। (पृष्ठ ४२६)

मृगयुवाण—यह्या ने रावण की ब्रह्मास्त्र द्वाक कहा था इसी से तुम्हारी मत्स्य होगी। रावण न यह वाण म-दात्री का लिया और उसने इसे स्तम्भ म चुनवा दिया। विभीषण म यह रहस्य जान कर हनुमान न ज्वातिपी का रूप धारण किया और म-दात्री म यह वाण ठग लाये। राम न म-य पढ़कर तथा विष्वाभित्र का स्मरण कर इसी वाण म रावण का हृदय चीर दिया।

वाण हयानार, स्वर्णनिर्मित और कृष्णवर्ण था। उसके मुख म गुप्त रूप स अग्नि थी। पशुपति मध्य म बैठे थे, पवन उसका सचालन कर रहे थे, मम भी अतन्त्र रूप स वाण क ऊपर विराजमान थे। जाना पुष्पमाल्य स बहु सज्जित किया गया था। संपान क पूव इगवे मुम म ब्रह्म अग्नि जनन लगी और यह महाशक्त करता हुआ गरजन लगा। (पृष्ठ ६२७ २६)

१ हिन्दुस्तान-भाषाट्टिक (२३ अक्टूबर ५५)—राम की शक्ति-पूजा कृतिवात क आधार पर निराला का अध्यायन—डा० रमानाय त्रिपाठी।

रावण की राजनीति विना पावन रावण ने सुगु के पुत्र राम की विनाशा पर विना विनाश ही

१—सर्व कर्मों में ही करी करी पाठित ।

२—सुख कर्मों में ही करी करी पाठित ।

यह तीनों सुख कर्म कराने पाठाने या विनाश पूर्ण कराने में उमा ने लगायी—(१) तपस्या भगना (२) मरणा मृत्यु सुखात्तर उमा ही दुःख और पुत्र में भर देता और (३) मरण के लिए पद विनाश कराने ।

गीता हरण जस सुख पाय म उमा दर करी मगायी श्रीरिण उमका महार हुमा । (पष्ठ ४३०-३२)

मन्दोदरी का सीता को शाप सम्भवन राम का बचोवना के बाद म सुगु करने के लिए मन्त्री के शाप की कल्पना है । राम म मिनता के लिए सुगु सीता को देवदार मन्त्री का शाप दिया—सुम सुभे धनाय कर धान के साथ राम सम्भाषण के लिए जा रही है । सुगुारा का धान विनाश हो जाएगा । राम सुभे विष दृष्टि से दलेंगे । (प० ४३६) यमता रामायणकार को शाप की यह कल्पना गौडीय-संस्करण के तारा वाच शाप म मिला है । पातान प्रयत्न की घटना म राम को दोषमुक्त करने के लिए तारा शाप मन्त्रा गया और धर्मिणी का स राम की कर्तव्य मुक्ति के लिए मन्दोदरी का शाप मन्त्रा गया है ।

रावण की चिर प्रज्वलित चिता—गणन यथ के उपरान्त विषया मन्त्री-री राम के पास जाकर उह प्रणाम करती है । राम उस मीना सम्भ सीभाग्यवती होने का धाशीर्वात् देते हैं । भूल पात हान पर के कहने हैं कि तुम सर्व चिता प्रज्वलित रामो, तुम्हारा सीभाग्य भी चिरवात तर रहगा । (पष्ठ ४३५)

आनन्द रामायण म भी लिखा है कि रावण का शरीर आज भी जल रहा है । शरीर जलन के दो कारण बतलाये गये हैं—(१) राम के हाथ से यथ होने के कारण वह मुक्त तो हो गया किन्तु अनेक ब्रह्म-हत्याएँ एवं पाप-कर्म करने के कारण उसका शरीर जल रहा है । (२) रावण ने राम से वर माँगा था कि लोका के बीच उसका सदक स्मरण किया जाए । राम ने उसकी चिता को प्रज्वलित रखकर मनोकामना पूर्ण कर दी । (राज्यवाड, २० १ १६)

वानर भोज और झालसाड—विभीषण ने वानरा को भोज दिया । अनेक सुस्वादु पदार्थों के साथ पका बटहल दिया गया । साथ ही चरपरा लड्डू (भाल लाडू) भी परोसा गया । खानेवाले सिर लुजलाते थे और धू धू करत थे । (प० ४४६) निश्चय ही इस प्रसंग में नपथीय चरित से प्रेरणा मिली है । नल के साथी बरातियों को इसी प्रकार का पदार्थ परोसा गया था । (१६ ७३ ७४)

सेतुभग और शिवपूजा—सीता के कहने से तथा समुद्र की प्राथना से राम लक्ष्मण को आज्ञा देकर सेतु भग करा दते हैं । आनन्द रामायण म स्वयं राम ने धनुष

से संतु भग विद्या है। (सारकाण्ड १२ ४७ ४८)

लक्ष्मण बालू के शिव बनाते हैं और राम उनकी पूजा करते हैं। इसी कारण संतुग्रथ रामश्वर नाम पडा। (पृष्ठ ४४८ ४८)

उडिया रामायण मे

ब्रह्मादिक देवों की विदा—ब्रह्मान्तिक देवता रावण के दरवार में रहकर सेवा करते थे। राम-सय के गमुद्र पार कर लंके पर रावण ने इन देवताओं से लका छोड़ कर चल जाने के लिए कहा। उमने बताया कि जब अयाध्या में उमका अभिषेक होगा तब वही सब का भ्राना चाहिए। (पृष्ठ ८)

गार्दूल की शक्ति (तत्र-मत्र) —रावण शत्रु मना के सम्भव में शादूल से पता लगवाया करता था। शादूल में किसी समय नारद ने प्रसन्न होकर दो वारों बताया थी—(१) तत्र के पात्र में वार्यो हाथ से घाड का लीड डालकर फिर उममे पिसी हुई मित्र मिलाकर अघोर में अजन बनाकर आग में लगान से रात में भी लिखायी पडेगा। (२) मत्र-विशेष पढकर वार्यो पर की धूल सिर पर डालने से लक्ष-याजन की बान पात हो सवेगा। (पृष्ठ १२ १३)

मुद्र-सर्गा - मुद्र की पद्धति तयारी और अस्त्र शस्त्र का विस्तृत वर्णन है। अथवा यादवाग्रा के नराशिरु गार का भी विशद वर्णन है किन्तु इसमें पुनरुक्ति-दोष है। (पृष्ठ १४ २३)। राशमा की मुद्र-पद्धति का भी सुन्दर वर्णन है। (पृष्ठ ३६)

मुलशिणी-कुलभिणी क लक्षण—रावण द्वारा सीता का राम का मायामुद्र लिखाने पर सीता ने दुःखी हाकर कहा था कि लोग वचन में कहा करते थे कि मैं कभी विषवा नहीं हाऊगी। कुलभिणी श्रिया ही विषवा हाती है। सीता दोनों प्रकार की कथाओं के रूपगुण का वर्णन कर अपने का मुलशिणी नारी बताती है।

लेखक का परिचय—वत्सरायण न सतरह अठारह पक्तिया में अपना परिचय दिया है। इसका उपयोग जीवनी वाल अध्याय में होगा। (पृष्ठ ३४)

हनुमान का दूतत्व—एक हलका मुद्र हा जाने पर राम ने हनुमान को दूत बनाकर रावण के पास मजा। राम ने सुपण से तालपत्र पर श्रीमुख लिखवाकर उस पर मुद्रा लगाकर भेजा। रावण की मभा में हनुमान ने पहुँचकर देखा वह दो नौस ऊचाई पर बटा है। हनुमान भी पूछ की कुडला पर बटकर उतने ही ऊँचे हो गये। रावण के कहन पर उन्होंने मुद्रा ताडकर श्रीमुख पडा।

मनसिल तथा एकस्तनी कथा—हनुमान श्रीपष-पवत से आय। सुपण ने हनुमान से कहा कि स्वयं से मनसिल और तारा नामक एकस्तनी कथा ले आओ। हनुमान ब्रह्मा और इन्द्र से मिलकर दानो को ले आय। सुपण ने कथा के स्तन को तबि के पात्र में डुडकर मनसिल और श्रीपष को पीसकर लक्ष्मण को सुधाया, लक्ष्मण

प्रकृतिस्थ हुए। (२००-२०१)

सया पडा ब्राह्मण और पतिव्रता की कथा— यत्ररणा नामक गाँव क सया पडा नामक ब्राह्मण न प्रचुर धन अर्जित कर एक ब्राह्मण कथा स विराट् किया। वह रविवार के दिन रजोवती हुई। देवी के दोष स एमी कथा क साथ रमण करने स वह कुष्ठ रोगग्रस्त हुआ। एर तिन वह सुन्दरी गायिका का नृत्य देख कामपीडा का अनुभव कर दुःखी गया। पति की इच्छा रखन क तिन माष्ठी पत्नी रात म चुपके केश्या के घर जाकर उगके आँगन को रज्ज्वर मुगधित जल का छिड़काव कर छाती। केश्या ने चकित हाकर छिपार पता लगाकर पतिव्रता से कारण पूछा। केश्या उसकी इच्छा पूरी करने क तिन प्रस्तुत हा गयी। पतिव्रता जब पति को लेकर चली ता शूली पर चट्ट हूण ऋषि स टारा गयी। तारा न राजा के यहाँ चोरी का माल का भाग विभाजन तर एक अश तपस्या रत ऋषि के पास रख दिया था। इसीलिए राजा ने ऋषि को दंडित किया। ऋषि न उस जम म सात वष की आयु म एक पतिगे की शूल नुभाया था इसी पाप के कारण क राजा द्वारा शूली पर चढा दिये गये। टकरा जाने पर उहान शाप किया कि टकरा देन वाला पुरष हो तो सूर्योदय के पूव उसका सिर कटकर गिरे और स्त्री हो ता उगके नाक बान गिरे। पतिव्रता ने कहा— सूर्योदय होगा ही नहीं। सात रातें बीत गयी, ब्राह्मण और गाय अपूजित रह गय। दवता और ब्रह्मा के प्रयास स पतिव्रता ने सूर्योदय होने के लिए कह दिया। दोना पति-पत्नी अमृत-पान कर स्वग गय। (२०५-२०८)

वीरबाहु का युद्ध— रावण का पुत्र वीरबाहु कलास पवत पर मन-पवन को रोककर ब्रह्मानन्द म लीन होकर तप कर रहा था। रावण ने दूता को भेजा। उनके बार-बार चिल्लाने पर भी उसका ध्यान भग नहीं हुआ तब के रात की कथा सुनाने लगे। वीरबाहु ने राम का नाम सुनकर इनसे बात की। वीरबाहु ने रावण क पास जाकर परनारी हरण को अपराध बताया और कहा कि राम विष्णु हैं तथा सीता लक्ष्मी। तुम दोनो भाई बकुठ के द्वारपाल हो। रावण स्वीकार कर कहता है कि असुर मुक्ति के लिए ही उसने सीता हरण किया है। यदि राम विष्णु नहीं हैं तो मैं नाराच से मार डालूंगा। वीरबाहु ने माता म दोदरी से राम के हाथा मरने की आत्ता मायी। वह रोकर रोकने लगी। राम न वीरबाहु का आगमन सुनकर धनुष पर प्रत्यचा चढा कर कहा— यह भक्त है यदि दीनता दिखाय तो इसका नाश नहीं करूंगा किन्तु यदि ऋस्त्र लेकर आएगा तो इसके प्राण ल लूंगा। वह विभीषण से आदरपूर्वक मिला। उसन लक्ष्मण को घायल किया। राम को देखकर स्तुति की। वह राम स सिर काटने का अनुराध करता है। राम वष्णव का सिर कसे काटे, के सीता के बिना चले जाने को प्रस्तुत है। किसी प्रकार दाना म युद्ध हुआ। उसके बाण राम के चरणो पर गिरने लग और राम उस पर बाण फेंकर अपो ती अगा पर चोट पाने लग। वह राम के चरणा पर आ गिरा।

दवता चिन्तित हुए कि कही राम पसीज न जाए। उन्हने सरस्वती को भेजा

कि राम के कंठ पर बैठ जाओ और खलपुत्र को भेजा कि तुम जाकर वीरवाहु के हृदय में स्थित हो। फलतः वीरवाहु स्तुति करते-करते रक्कर युद्ध करने लगा। हनुमान नाक पर हाथ रखकर बाने तेरा कहा हुआ सब पाखंड निकला।

राम ने अपने ब्रह्मत्व का स्मरण कर अनक वाण मारे किन्तु वे अमफल होकर लौट आये। उसने हंसकर स्वयं बताया कि ब्रह्मवाण मारो। मरने के समय वीरवाहु ने राम-नाम का स्मरण किया। वह दिव्य रूप धारण कर देवताओं में समादत्त हुआ। (पृष्ठ २१३-२३०)

रावण-मन्दोदरी-संवाद तथा अनेक उपाख्यान—रावण और मन्दोदरी अनेक प्रसंगों पर परस्पर वार्त्ता कर रहे हैं।

पाताल लोक में—रावण ने बताया कि एक बार उमन पाताल जाकर देव देवी को पासा खेलत देखा। उन्होंने जान-बूझकर पासा नीचे गिराकर उठान के लिए कहा। रावण नहीं उठा पाया। एक गर्भिणी स्त्री बगल और सिर पर घड़े लेकर निकली। उसन पर के अगुठे से पासा उठा दिया। वे दाना फिर खेलन लगे। उन्होंने रावण से कहा कि तुम निश्चय ही विष्णुभक्त हो। तभी इस पुरी में आ सके हो। घाड़े से पाप के कारण तुम राक्षस हुए हो। यह पुर ज्योतिमय है। प्रलयकाल में भी इसका नाश नहीं होगा। इस स्वयं पीतवाम न बनाया है। (पृष्ठ २३३)

रावण यह कथा सुनाकर मन्दोदरी में बाला—विष्णु के हाथ मरने के लिए ही मैं मीता-हरण किया है। उपयुक्त प्रसंग आनन्द रामायण (११३) के वचन से समानता रखता है। इसमें पाना खेनने वाले वनि और उसकी पत्नी हैं। रावण के पास न उठा सकने पर दामी उठाती है। रावण का घोड़ा की लीद उठाकर बाहर फेंकने का काम दिया जाता है।

मन्दोदरी ने वेदवती के शाप और मीता के रूप में जन्म लेने की बात बताया। उसने अपने बारे में बताया कि वह मय-जानव की पुत्री है। अग्नि से उत्पन्न हान के कारण पिता ने उमका नाम मन्दोदरी रखा। वह अपने पुत्र-भ्राता आदि के बारे में कहती है। मन्दोदरी दाना में तिनका देवाकर परों पर गिरी कि मीता को तोटा दो। रावण उसे सखी सम्बाधित कर उमस महमत हुआ किन्तु वह बोला कि बरी उपहास करगा। साथ ही वह मरना भी चाहता है। इसके लिए वह फिर एक आख्यायिका सुनाता है। (पृष्ठ २३४-२३६)

द्वारपाल चण्ड और प्रचण्ड की लक्ष्मी का शाप—पहले रावण और कुम्भरुण नारायण के परम प्रिय द्वारपाल चण्ड और प्रचण्ड थे और ये पश्चिम द्वार की रक्षा करते थे। एक बार महात्मनी दिव्य-वचन धारण कर नारायण के पास जा रही थी। चण्ड ने शाप दिया कि तुम गुरुमुनि बंध हैं। तुम कुतूहल हो, एकान्त में मिलना। लक्ष्मी बानी—वे मेरे पुत्र हैं। मैंने गुरुवार का गमुद्रस्नान किया है, स्वामी का दशन कर दिन मपन करना चाहती हूँ। मैंने विनाशक घाटि बनाकर उन्हें ठराया। उन्होंने

शाप दिया कि राक्षस हो। विष्णु के पास जाने पर उन्होंने कहा—तू जगत जीतगा इसलिए तेरा नाम जय होगा। देवी ने बिना साच शाप लिया है इसीलिए मुझे भी नरदेह धारण करनी होगी। मैं दशरथ-पुत्र होऊँगा और लक्ष्मी सीता के रूप में जन्म लेंगी। चूँकि लक्ष्मी ने तुझे भलाबुरा कहा है तू भी उह भलाबुरा बहगा। मुझे सेवक पत्नी से बढ़कर है। (२३७)

जय और विजय को दुर्वासा का शाप—रावण यहाँ कुम्भवण का पूवनाम विजय बताता है। इससे प्रकट है कि चंड प्रचंड ही जय विजय थे और यही रावण और कुम्भवण हुए। रावण बड़ रहा है कि द्वारपाल के रूप में स्थित होकर हमने दुर्वासा को भीतर नहीं जाने दिया क्योंकि भीतर लक्ष्मी-नारायण विहार कर रहे थे। उन्होंने सी जन्मा तक राक्षस हान का शाप दिया। नारायण से मितन पर उन्होंने प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हें लक्ष्मी का शाप पहले से ही मित चुका है। मेरे हाथ में मरकर तुम्हारा तीन जन्मों में ही उद्धार हा जाएगा। तुम दमघोष राजा के पुत्र शाल्व और शिशुपाल रूप में जन्म लागे। (२३८-३)

रावण को ब्रह्मा का वर—रावण अपने यज्ञ का उल्लेख कर कहता है कि मैंने अपने हाथ से अपने सिर काटकर चण्डाय और उनकी भाग्य लिपि पत्नी। लिखा था यदि सीता का हरण न करे तो मृत्यु नहीं होगी। ब्रह्मा ने भी जल अग्नि और पवन के नष्ट न होने और युग तक जीवित रहने का वर देकर राम सीता का चित्रपट दिखाया। उन्होंने कहा, इनसे विरोध न करना। (पृष्ठ २४०-४१)

मानस में भी रावण अगद से भाग्य लिपि के विषय में कहता है किन्तु वह इस लिपि को बूढ़े ब्रह्मा का मतिभ्रम समझकर उपेक्षित करता है। (६२८-१३)

रावण सीता मन्दोदरी—सीता समझान पर जब नहीं मानी तब रावण बोला—तेरा हृदय सुंदर पापाण सा है। तेरे कारण मेरे अनेक यादवा मारे गये। तेरे जीवन में अमृत है उस बिना पाये मैं मर जाऊँगा। तेरा मुह खिले कमल सा है। मुझमें नासिका पुताकर बात करो। वह क्रुद्ध होकर कहता है, वक्त क युद्ध में राम लक्ष्मण का मारकर तेरा मास खाऊँगा। (पृष्ठ २४६-५१) रावण और मन्दोदरी अपने अपने दु स्वप्ना का वणन करते हैं। (पृष्ठ २५२-२५३)

बन्धा के विभिन्न वक्ता—पावती से शंकर ने रामायण कही उसी आख्यान का वणन बलरामदास कर रहे हैं। ब्रह्मा ने इसे वाल्मीकि से कहा। सबसे पहल नारद ने इस सचित्र किया था। त्रैलोक्यी को साध ने मारा इसलिए ऋषि ने ग्रन्थ लिखा। (पृष्ठ २५५)

नदिघोषरथ—श्वताभ्रा न राम के पास जो गरुडध्वज रथ भेजा उसका नाम नदिघोष रथ था। ब्रह्मा ने नदिघोषरथ से कहा—तुम इसके पहिया के मध्य बठना तथा इसके चलन पर घाप करना। तुम इसमें सदैव वास करोगे इसीलिए इसका यह नाम होगा। इसका सतपुत्र में नाम था—विजयग्रन्थ क्योंकि भगवान न विजय की

थी—पृष्ठ २८१। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि जगन्नाथ स्वामी के रथ का नाम नन्दीघोष रथ है।

राम की भुजाओं का सवाद—राम के दायें हाथ न दायें हाथ से कहा (शर-स धान के ममय) तुम पीछे क्या रहते हो। दायें हाथ न कहा करवाल धारण करने पर तो मैं आग रहता हूँ। (पृष्ठ २८६)

ब्रह्महत्या और रामतारक मंत्र—रावण की मृत्यु हाने पर राम के नेत्रों के आगे प्रधवार छा गया। मानलिन बताया कि ब्रह्महत्या के कारण ऐसा हुआ है। अपने ही नाम का जाप करो, पाप दूर होगा और दिखायी पड़ेगा। ऐसा ही हुआ। (पृष्ठ २६०-६१)

मन्दादरी की निष्कलकता—राम ने मन्दादरी की सुन्दरता की प्रशंसा कर कहा तरे वस्त्राचल म भुके सीता दिखती है। मन्दादरी न कहा जीवित रहते मेरा उपहाम हागा और मरन पर युगयुग तक अस्थायि होगी। राम ने कहा—तुम प्रात-स्मरणीया होगी। प्रणाम करती हुई मन्दादरी को राम ने हाथ पकड़कर उठाया और पवित्र किया। (पृष्ठ ३०३-३०४)

ब्राह्मणों की सेवा सेना—सीता की निष्कलकता एवं अपने विष्णुत्व के प्रमाण के लिए राम ब्रह्मा से कहते हैं कि ब्राह्मण भरी सेवा कर तभी विश्वास होगा। ब्रह्मा न कहा—जब तुम वामन रूप धारण किया तब मैं तुम्हारे पर पवार थे। अब वसिष्ठ जावाल, कश्यप और वामनदेव की सताने तुम्हारी भृत्य होकर सेवा करेंगी। (३१८-१९)

हनुमान का दप-भग—अयोध्या की वापस जाते समय राम भारद्वाज के यहाँ रुके थे तब भारद्वाज ने राम की प्रशंसा की हनुमान को गव हुआ कि मैं सब कुछ किया किन्तु भरी प्रशंसा नहीं की। राम ने हनुमान के मन की जान कर उन्हें पश्चिम वन के पत्र खाने के लिए और प्रातःकाल मेवा में उपस्थित होने के लिए कहा। वन में एक भयंकर पुरुष से भेंट हुई जिसने हनुमान को उठाकर घर पटका और इनको खान के लिए वह प्रस्तुत हुआ। हनुमान के राम-स्मरण से उमन हनुमान को छोड़ दिया।

अष्टक की उपकथा—हनुमान ने उस पुरुष से परिचय पूछा। उसने बताया कि वह सतयुग के बनि राजा का अष्टक मल्ल है। वामनावतार में भगवान ने जब बनि को परा स दवा लिया था, उस समय मैं उनके पर का हटाने लगा। उन्होंने मुझे दूर उठाकर फेंक दिया। मुझे वप में एक दिन आहार मिलता है। अब तुम्हें क्या खाऊँ, तुम भगवान के दूत हो। वप का उपवास हो गया। हनुमान को बड़ी ग्लानि हुई। वे राम के आग क्षमा माँग कर राय। (३२६-३३३)

शिव विष्णु विवाद—हनुमान के मन की शका का वणन करने के साथ उडिया-लेखक ने शिव विष्णु के एक विवाद का भी उल्लेख किया है। शिव अपने को विष्णु की माया से अप्रभावित बताकर उसे देखना चाहते हैं। विष्णु ने भवती

रूप धारण किया, शिव मुग्ध होकर पीढ़ दौड़ पड़े। उनका रेत स्पलित हुआ जिमसे पारा बना। व निबल और लीटने म अशक्त हा गया। उनकी मास फूलन लगी शरीर से पसीना भरन लगा। विष्णु न ख्याकर अपना निज रूप दिखाया। शिव ने लज्जित होकर विष्णु का गौरव मान लिया। विष्णु न वर दिया कल्प-कल्पांतर के लिए तुम्हारी यह अमर हृद। तुम्ह मेरी माया नहा लगगी। (३२७ २६)

जाम्बवान और मुनियो को वर कृष्ण जन्म—राम ने जाम्बवान स कहा—
अगल जन्म म तुम्हारी पुत्री जाम्बवती स विवाह करूंगा, तुमस युद्ध हागा तुम मुझे मणि दाग। (५० २६६)

उहान मुनियो स कहा— तुमन मन ही मा साचा कि सीता भाग्यवती है, हम स्त्री क्या नहीं हूण। में एक पत्नीवत हूँ। मर निण म य स्त्री कौशल्या के समान है। अगल जन्म म कृष्ण होकर गोपपुर म पत वर कालिन्दी क तीर खीडा कर तुम्ह रतिदान दूगा। तुम पर नारी होग। (५० ३६७)

सीता ने अन परोसा—राम न समस्त सना और राजाओ का आमन्त्रित कर सीता का अन परासन क लिए कहा। उहान अनक रूप धारण कर यह वाय सम्पन्न किया। सीतादि न फिर मामा का और उहान कृष्णा को परोस कर खिलाया।

(५० ३६६ ७०)

जोडो के मिलन—सभी भाई और उनकी पत्नियो के शृंगार मिलन और अगद क पहला लगाने का वणन हुआ है। (१७०)

मानस मे

सुबल पवत पर चन्द्रोक्तिया—सुबल पवत पर राम वनराज सुग्रीव की गाद म लट है। विभीषण उनक कान स नग हूण बातें कर रह है। राम न चन्द्रमा को दयकर श्यामता का कारण पूछा। सुग्रीव विभीषण राम और हनुमान न श्यामता के विभिन्न कारण बताय उनम उनकी अपनी मन स्विति की छाप है। हनुमानाटक (अंक ५) स ही तुलसीदास को प्रेरणा मिली है।

नाभि मे अमृत—अथात्म रामायण (१ ११ ४३) के अनुसार मानस म भी रावण का नाभि म अमृत बताया गया है इसी कारण रावण क मिर और हाथ काटे जान पर उग मान थ। विभीषण क बहन पर राम वाण मागरर पहन द्य अमृत का माप नत है तन्तन्तर रावण का धध करत है। (६ १०२ १)

उत्तरकाण्ड

(पूर्वाचलीय रामायण म इसरा नाम है उत्तरकाण्ड)

क कारण म विद्वाना न वान्मार्ति रामायण क उत्तरकाण्ड का प्रशिष्य बताया है। महाकाव्य क रचना-नीशन की दृष्टि स राम क सपाराहण के माथ ही

उमकी समाप्ति हा जानी चाहिए थी । वाल्मीकि-रामायण के अनन्त प्रसंग जम राक्षसा की उन्पत्ति, रावण की दिग्विजय शत्रुक-वध आदि ऊपर से जाड़े दृष्ट से प्रतीत होने हैं । श्री बुल्के के अनुमार उत्तरकाण्ड के प्रारम्भिक रूप में मभवत य घटनाएँ ही रही होंगी—शत्रुघ्न चरित, कुशव जम राम का अश्वमेध तथा कुशव-द्वारा रामायण-गान सीता का भूमि प्रवेश रामादि के पुत्रा की राज्यस्थापना तक्षमण की मत्यु तथा राम का स्वगारोहण ।^१

असमीया-रामायण का उत्तरकाण्ड श्री शकरदेव का निराला हुआ है । इन्हान काव्य-शैली का सुन्दर परिचय देत दृष्ट वाल्मीकि रामायण के अनेक प्रासंगिक-वर्णना एव पौराणिक आख्याना की उपक्षा कर आधिकारिक-कथावस्तु से मबद्ध वर्णन ही प्रस्तुत किया है । श्री बुल्के न जिम कथा का उत्तरकाण्ड का प्रारम्भिक रूप माना है मुष्यनया वही कथा श्री शकरदेव के उत्तरकाण्ड में है ।

पूर्वाचलीय रामायणो न उत्तरकाण्ड की कथा के लिए वाल्मीकि-रामायण में मुख्यतया प्रेरणा ली है । इन काण्डों के कथिया न अपनी मौखिक कल्पना का परिचय नहीं दिया । उडिया रामायणकार तक न वया मयम दिखाया है । इम दष्टि में बँगला रामायण और उडिया रामायण में समानता है । बँगला रामायण में कवन एक प्रमुख प्रसंग—मीना-त्याग एव लवकुश-युद्ध का वर्णन जमिनी भारत के अनुमार वर्णित हुआ । अय आनाच्य रामायणा में से किसी ग्रथ में भा यह प्रसंग नहीं आया है । यहा असमीया और उडिया रामायणों परस्पर माम्य रगन गती हैं । अयया बँगला और उडिया रामायणा का उत्तरकाण्ड बहुत कुछ वाल्मीकि रामायण पर आधारित और एक समान है ।

मानस की स्थिति सजस भिन्न है । तुलसीदासजी न राम के राज्याराहण के पश्चात एक प्रकार से कथा की समाप्ति कर दी है । इसके पश्चात ता कवि दाशनिक हा उठा है । पानभक्ति निरूपण कत्रियुग-वर्णन आदि का उन्लम ही अधिक है । उत्तरकाण्ड की कथा में केवन एक सकेत है कि मीता न दा सुन्दर पुत्रा का जम लिया । वम उहने कविताबली मीताबली और विनयपत्रिका में मीता-वनवास आदि के विषय में सकेत दिय हैं जिमसे प्रकट हाता है कि उन्हें कथा का कवन पान ही न था उम पर विश्वास भी था किन्तु चरित्रा का मयाग शक्ति और महाकाव्यत्व की रक्षा के लिए उहने मीता-वनवास आदि का वर्णन नहीं किया । उत्तरकाण्ड निराला ही मुख्य-कथारहित न हा जाण सम्भवत इमीनिण तुलसीदास न राम के प्रयावसान भरत नें और मिहामनाराहण का वर्णन उत्तरकाण्ड में न कर उत्तरकाण्ड में किया है ।

तुलनात्मक अध्ययन करत समय मानस के प्रमगा का अलग में वर्णन करना ही समीचीन होगा । पूर्वाचलीय रामायणा के प्रमगा का ही तुलनात्मक अध्ययन हा संयोग ।

१ श्री कामिल बुल्के—रामकथा डि० स०, अनु० ६१६ ।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार पूर्वांचलीय रामायणों की समान कथा वस्तु

(यह कथा सभी रामायणों में इसी क्रम के अनुसार नहीं है
किंतु कहीं-न-कहीं है अवश्य)

१ राक्षसोत्पत्ति रावणादि का जन्म शाप और वर रावण की त्रिविजय और उसका पराभव ।

२ हनुमान जन्म की कथा (बंगला रामायण में अत्यन्त) ।

३ सीता परित्याग—सीता का वन देखने की इच्छा प्रकट करना चर द्वारा सीता के चरित्र का अपयश प्राप्त होना राम की आना से लक्ष्मण का सीता को वाल्मीकि आश्रम में छोड़ना, वाल्मीकि का उन्हें आश्रय देना । राम का सीता की स्वयं प्रतिमा बनवाना ।

४ अश्वमेध—राम का नदी तट पर अश्वमेध यज्ञ करना, कुश लव का रामायण गान । दोनों का परिचय पाकर राम द्वारा वाल्मीकि और सीता को यज्ञशाला में शपथ देने के लिए उपस्थित होने का संदेश भेजना ।

५ सीता की पाताल परीक्षा—वाल्मीकि की शपथ के पश्चात् भी राम के द्वारा सीता का शपथ दान से किए कहना सीता की शपथ के साथ ही पृथ्वी का विदीर्ण होना तथा सिंहासन-सहित पृथ्वी देवी का प्रकट होना, सीता का पाताल प्रवेश, राम का विलाप राम का झुंड होकर पृथ्वी को विदीर्ण करने की धमकी ब्रह्मा द्वारा समझाया जाना ।

६ भरत का गन्धर्व-देव जीतना और पुत्रा का राज्य देना, लक्ष्मण का भी देश जीतकर दा पुत्रा में राज्य बाटना । शत्रुघ्न का लवणासुर वध ।

७ रामादि का स्वर्गगमन—(१) कालपुरुष का अश्वमेध में आना राम का लक्ष्मण का पहरेदार नियुक्त कर आश्रम देना कि कोई प्रवेश न करे पाए प्रवेश करने वाले का मृत्यु दान का निरवय । तुर्णिका का आगमन और पयश न दान पर रघुकुंज को नष्ट करने की लक्ष्मण के समान धमकी । धम सफल में पड़े लक्ष्मण का राम का सूचना दान का निरवय । राम का धमसफल कि लक्ष्मण का वध कम करें, अंत में प्राणदंड का स्थान पर त्याग देना । लक्ष्मण का समाधि द्वारा प्राणत्याग करना ।

(२) भग्न शत्रुघ्न मुर्खीय, विभीषण प्राणियों उपस्थिति सभी का राम का गाय चर्चता ।

(३) सभी का मृत्यु के लिए प्रस्थान ।

(४) हनुमानादि का वर प्रदान ।

• गाय चरित्र

वाल्मीकि रामायण व उत्तरकाण्ड का रावणचरित्र ऊपर से जोड़ा हुआ प्रतीत

हता है। बेंगला और उडिया रामायणा में भी इसका वणन कथावस्तु से अलग सा जान पड़ता है। असमीया-रामायण में वणन की स्वाभाविकता आ गयी है। लेखक श्री शंकरदेव ने राम की राजसभा में कुश लव द्वारा रामचरित का वणन करत हुए रावण के जन्म, वर और विजय आदि की कथा भी कहलायी गयी है।

प्रायः वणन का ढंग यह है कि पहले रावण के मातृपक्ष की वशोत्पत्ति दी गयी है। इसके पश्चात् असमीया का छोड़ शेष दो रामायणा में कुबेर की उत्पत्ति और उससे रावणादि के लका छीनन का भी वणन है। तीनों पूर्वाचनीय रामायणों में रावण के इन कृत्या का वणन है—(१) कलास उठाना, (२) स्वर्गादि विजय कर नारिया का अपहरण (३) वालि से पराजय (४) सहस्रार्जुन से पराजय।

बेंगला और उडिया रामायणा में वाल्मीकि रामायण के अनुसार मरुत, अनरण्य माघाता आदि अनेक राजाआ तथा यम वरुण इन्द्रादि देवताआ के नाम भी दिये हैं जिनके कि साथ रावण का युद्ध हुआ। इन दो रामायणा में वेदवती आस्थान भी है, जिनका वणन आगे होगा।

मानस में रावण के चरित का वणन बालकाण्ड में विस्तृत रूप से हुआ है। रावण की दिग्विजय का ऐसा वणन मानस में नहीं हुआ।

हनुमान जन्म—केवल असमीया और उडिया रामायणों में है। मानस को छोड़कर तीनों पूर्वाचनीय रामायणा में ममुद-वार जाने के पूर्व भी हनुमान का जन्म-वस्तान्त आया है। देखिए सुन्दरकाण्ड का तुन्दनात्मक अध्यायन।

सीता वनवास—महाभारत हरिवंश वायुपुराण, विष्णुपुराण तथा नसिंह पुराण में उपलब्ध राम-कथा विषयक अज्ञात में सीता के वनवास अथवा पाताल प्रवेश का उल्लेख नहीं है अतएव अनुमान किया जाता है कि मूल वाल्मीकि-रामायण में भी वनवास नहीं था। उत्तरकाण्ड में इस कालान्तर में स्थान मिला। उत्तरकाण्ड के अनुसार सीता गर्भावस्था में तपोवन दत्तन की इच्छा प्रकट करती हैं। राम उनकी इच्छा पूरी करा के लिए प्रातः जान की व्यवस्था करत हैं। इसी बीच उन्हें भद्र से समाचार मिला कि रावण द्वारा अपहृत सीता को राम ने अपने घर में रक्क लिया है इसमें जनता असंतुष्ट है कि जसा राजा करता है वसा ही प्रजा करनी है— 'यथाहि कुर्वन् राजा प्रजाम्स्तमनुवतते।' प्रजा के समर्थ युग-युग तक भ्रष्ट आदत उपस्थित न हो इसीलिए राम ने स्वयं अत्यधिक मानसिक अज्ञान का अनुभव करत हुए भी सीता का निर्बामित किया। वाल्मीकि रामायण में गौरीय सम्बरण में अनुसार वनवास का एक अर्थ कारण था— तारा का शाप।

इस प्रकार सीता वनवास का दो कारण हुए—(१) लाकापवाद और (२) तारा शाप। कुछ रामायणा में अर्थ कारण भी उनाय गये हैं—(३) राज

वत्तात (४) चित्र वत्तान्त, (५) देव चिन्ता और (६) पत्नी भोग घनोचित्य । अत्र प्रत्येक रामायण के अनुसार इनका अध्ययन करना है ।

लोकापवाद - पीता व्रजा का मुख्य कारण लोकापवाद था । यह कारण असमीया बगला एव उडिया तीनों रामायणों में ही वर्णित है । बंगला रामायण का भद्र चर निष्ठुर प्रवृत्ति का है ।

तारा शाप—राम का दोष मुक्त करने की चेष्टा के कारण ही तारा शाप की कल्पना हुई है । यह प्रसंग भी तीनों पूर्वाचलीय रामायणों में आया है और इसका तुलनात्मक अध्ययन किष्किंधाराण्ड में ही चुका है । उडिया रामायण के उत्तरकाण्ड में भी इस शाप का दुहराया गया है ।

रजक वत्तात - कवल बगला रामायण में है । लोकापवाद को और भी उग्र बनाने के लिए इसकी आयोजना हुई है । गुणाढ्य की बहत्कथा और कथा सरित्सागर में इस वत्तात का मूल रूप है । बगला रामायण में जमिनीय अश्वमेध का अनुसरण हुआ है जमा कि आगे लखक न स्वयं स्वीकार किया है । जमिनीय में स्त्री को घर से निवालेने वाले की जाति घोबी बताया गया है बहत्कथा आदि में नहीं । बंगला रामायण में राम लोकापवाद से दुःखी हाकर स्नान करने जात है तो घोबी घोविन क भगडे के रूप में भी इस मुक्त है । श्वशुर पुत्री का पक्ष लेकर आया, तो दामाद (घोबी) उस पटवार कर कहता है—राम राजा है, वं चाह जा करे किन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकता । आनन्द रामायण^१ में भी घोबी वत्तात है किन्तु इस ग्रंथ में राम स्वयं ही सीता का पानाल प्रवेश तक की घटनाएँ बता देते हैं । सीता भी मुस्कराकर अपनी छाया बनाती हैं यही छाया पानाल प्रवेश करगी । अध्यात्म रामायण क सीता हरण एव अग्नि परीक्षा वाली घटना का प्रभाव स्पष्ट है ।

चित्र वत्तात—यह प्रसंग भी केवल बगला रामायण में है । राम की क्रूरता का मनोवैज्ञानिक आधार दन की चेष्टा ही इसमें दृष्टिगत होती है । सतिया सीता से कहती हैं - रावण का चित्र अमित कर दिलाया । सीता ने कभी रावण का देखा नहीं । उहान हरण के समय समुद्र में उसकी छाया देखी थी इसी के आधार पर उत्पन्न चित्र बनाया । गर्भाशया के कारण क चित्र बनाने बनात यककर वही सी गयी । राम के अकस्मात् आ जान से मखियाँ उठकर चली गयी सीता को रावण के चित्र के पाम सीता का स्वकर राम का मदह पुष्ट हुआ । चन्द्रावती^२ कृत बंगला रामायण में चित्र बनवाने का पन्थ करी बानी ककेयी-पुत्री कुबुआ है ।^३ श्री

१ आनन्द रामायण—जमकाण्ड मग ३ ३७ ५६ ।

२ जीवन चरित के लिए पत्नि बीणा (अकतूरर ५५) में प्रकाशित प्रस्तुत लखक का रचना का रामायण-नविका चन्द्रावती ।

३ पञ्चमामर गभ सीता का आनन पुगाय । अगुनि हलादया कुबुया रामर दनाय—
छन्द ५०, पृ० २६६, पूर्ववग-गीतिका (४२)—श्री दीनशचन्द्र सन ।

कामिल बुलके चित्र-वृत्तान्त का प्राचीनतम उल्लेख जैन-साहित्य में मानत हैं—अनु० ७२२ । भारत के पूर्वी प्रदेशों की रामकथाओं में भी यह प्रसंग मिलता है । वस्त्र के मातृया गौंडा में भी नन्द के आग्रह पर सीता का वस्त्र स गवण अर्पित करती है । अकस्मान् राम व आन पर व अचन स चित्र छिपा लती है किन्तु नन्द अचल हटा कर दिना दती है ।

देवचिन्ता—यह प्रसंग वन उडिया रामायण में है । उडिया रामायण में उपयुक्त प्रथम एक द्वितीय कारणों का वणन ही नुका है । यहा देवता राम व स्वर्ग-प्रत्यावतन के लिए चिन्तित हैं । उनकी चिन्ता का सम्बन्ध वनवास के कारण से नहीं जाडा गया है किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट जाना है कि राम का स्वर्ग में लौटान के लिए ही सीता-परित्याग हुआ ।

तुलसीदास—मानस में सीता के वनवास का वणन नहीं है । बालकाण्ड की एक अध्यायी में इस आशय का अर्थ है—

सिय निन्दक अथ श्लोक नसाए ।

लोक विसोक बनाइ बसाए ॥ १-१५३

'सिय निन्दक' से सीता विषयक लोकापवाद की आशय संकेत है । पोषी द्वारा निन्दा की आशय संकेत दिनपत्रिका की निम्न पंक्ति में है—

बालिस बासी अवघ को वृक्षिये न साको ।

सो पावर पदुबो तहा जहें मुनि मन साको ॥ १५२

कवितावली (७६ एवं १३८) के संकेतों का अतिरिक्त तुलसीदास ने सीतावली में तात्पर्य ही चरा व मुख में लोकापवाद जानकर ही सीता के परित्याग का वणन किया है । (७२७)

पत्नीभोग अनौचित्य—सीतावली में तुलसीदास ने सीता-परित्याग का एक और कारण बताया है । दशम अर्ध अयु भोगकर स्वर्गवासी हुए थे उनकी शेष अयु राम ने भागी । पिता की आयु में सीता का साथ रचना अनुचित जानकर उद्धाने सीता का परित्याग किया—

भोग पुनि पितु आयु को सोड किए बन बनाड ।

परिहरे बिनु जानकी नहि और अन्ध उपाड ॥ ७-२५२

शत्रुघ्न चरित—मथुरा के अमर शासक लवण का वध करने के लिए शत्रुघ्न का राम ने भजा । व वासीकि व आशय में टहर थे किन्तु उन्हें यह नहीं पता था कि यही सीता हैं । वर-द्वारा प्राप्त शत्रुघ्न के कारण लवण अजय था किन्तु अवसर लाजकर जबकि वह शत्रुघ्न हीन था शत्रुघ्न ने उग मार डाला । बँगला और उडिया रामायणों में इस प्रसंग का यथास्थान वणन है किन्तु असमीया रामायण में यह प्रसंग वहाँ आया है जहाँ राम अपने सभी भाइयों का पुत्रा का राज्य बांट रहे हैं

अश्वमेध यज्ञ—राम ने राजसूय यज्ञ करना चाहा था किन्तु भाइयो आदि के परामश से उद्धान नमिपारण्य म अश्वमेध यज्ञ करना प्रारम्भ किया, स्वर्ण सीता बनायी गयी। यही वाल्मीकि की आज्ञा से लव कुश रामायणगान करते आये और उनका राम से परिचय हुआ।

वाल्मीकि की इस कथा को तीनो पूर्वाचलीय रामायणो म अपनाया गया है। बगला रामायण म यहा जमिनी अश्वमेध^१ से प्रेरणा लेकर लव कुश युद्ध भी दिखाया है। श्रेय दा रामायणो म इस प्रकार का सघप नही हुआ।

बगला रामायण मे लवकुश युद्ध—बवल बगला रामायण म दिखाया गया है कि यन्त्राश्व का लव-कुश न बांध लिया। शत्रुघ्न लक्ष्मण भरत सहित समस्त राम सेना परास्त हुई। राम की सना की दुर्गति के तीन कारण बताये गये— (१) सती का निर्वासन।

(२) लव कुश म राम के रूप का आभास पाकर ठीक से युद्ध न कर सकना।

(३) एसा ब्रह्म शाप था कि पुत्रो स युद्ध करत समय पिता परास्त होगा।

(पृष्ठ ५६५)

राम लव कुश पर जो बाण फेंकते थे वे उनके गले म पुष्पमारो धन जाते थे और लव कुश जो बाण फेंकते व राम का चण स्पश कर पाताल म प्रवेश कर जाते थ।

अत म राम परास्त हुए। सीता मणिविहीना भुजगिनी सी विलाप कर उठी। व और दोना पुत्र अग्नि म जलने को प्रस्तुत हुए। वाल्मीकि न उह रोका। सभी जीवित हुए।

मानस मे बवल एव अर्धांगी म लव कुश क जन्म की ओर संकेत है—

दुष्ट मुत सुन्दर सीता जाए। लव कुश बंद पुरानह गाए। ७ २४ ६

भरत-गन्धर्व युद्ध—मामा युधाजित के निमंत्रण पर राम की आज्ञा लेकर भरत न उपद्रवी गन्धर्वों को हराया—दसका वधन भी पूर्वाचलीय रामायणो म हुआ है।

सीता का पाताल प्रवेश

अग्नि-परीक्षा क समान ही सीता का पाताल प्रवेश भी पूर्वाचलीय रामायण कारों न अत्यन्त तमपता क साथ वर्णित किया है। मुख्यकथा है सीता का राम के सम्मुख उपस्थित जाना राम द्वारा पुन परीक्षा क लिए कहना माता की प्रार्थना म पृथ्वी देवा का प्रकट हास्य सीता का अग्नि म समाप्ति करना राम का अपनी साग पृथ्वी के प्रति वाध प्रकट करना और प्रत्याप्ति का समझाना।

१ एद मत्र गादन गीत जमिनी भाग्य। मग्निप्रति थ त्रिधु गाइ वाल्मीकिर मन—
बेगना रामायण, ५६८।

इनमें असमीया रामायण का वणन सबसे अधिक मार्मिक है। राम के भेजे हुए शत्रुघ्न, विभीषण, सुपेण और हनुमान ने मलिन-वेशा दु खी सीता से जाकर कहा— 'हम मुह मे तण रखकर विनय कर रह हैं तुम लौट चलो।' सीता ने अत्यन्त व्यथित होकर कहा—मेरी स्थिति प्रकट है अब तुम मुझमें अनुोध करो तो तुम्हें मेरी शपथ। वाल्मीकि के समझाने पर सीता प्रात का न लज्जा से सिमटी और अग छिपाती हुई किसी भी आर न देखती हुई चली। राम द्वारा वदित वाल्मीकि ने बाह उठाकर सीता की निष्कलकता की शपथ ली। सीता राम द्वारा प्रदत्त आसन पर नहीं बठी। उहाने कडी-कडी बातें मुनायी और राम की तीन बार परिक्रमा कर पृथ्वी देवी की भेजी हुई चार कयाध्री के सिंहासन पर बठकर पाताल मे समा गयी। पाताल और पृथ्वी पर क्रुद्ध हाकर धाण-सधान के लिए प्रस्तुत राम को ब्रह्मा ने आकर समभाया—आप ब्रह्म हैं आप के जम के पूव ही रामायण लिखी जा चुकी थी उसमे जो कुछ लिखा है उस पूण करना ही होगा। राम दोना पुत्रा का देखकर खूब बिलखकर रोय।

बंगला रामायण म सीता निरीह अधिक हैं वे अगमीया की सीता के समान उग्र नहीं हैं। उहाने राम का ही जम जम म पति रूप म प्राप्त करने की आकांक्षा प्रकट की। वे अपने पुत्रो की उपेक्षा करती हुई केवन पति को देखकर पाताल म समा गयी। पृथ्वी देवी न अवश्य ही व्यग किया — लोक लया सुख राम बरब हेयाय।' (राम तुम अपनी प्रजा को लेकर यही सुख भोगो)। राम ने पाताल प्रवेश करती सीता के केश पकडे थे। राम ने पृथ्वी के प्रति क्रोध भी प्रकट किया।

उडिया रामायण म भी राम न लव कुश द्वारा परिवय पाकर मीना को बुलान के लिए सना भेजी। वाल्मीकि क समझाने पर सीता चवन का प्रस्तुत दृष्टि किन्तु वाल्मीकि की उपस्थिति म वे विमान पर बठन को तयार नहा दृष्ट— व शत्रु-नामवत्ता मरे धम पिता हैं।' सीता हाथ जाडे हुए अभिमानवश मिर मुक्राय टूए राम के सम्मुख आयी। वाल्मीकि न निष्कलकता का विश्वास दिलाया राम आह्वान्य दृष्ट फिर भी लाकापवाद स भीत राम न मीना को नमिपारण्य के दार पर परिग्राह्य न को कहा। सीता ने जीवित रहना उचित न समभा और मे प्रायना कृ पृथ्वी म समा गयी। आगे राम के क्रोधादि का वणन शेष रामायणा जसा ही है।

कालपुरुष और लक्ष्मण-वजन—तीनो पूर्वाचलीय रामायणों में कालपुरुष राम को लेने के लिए आते हैं। राम लक्ष्मण को द्वार पर नियुक्त करत हैं कि यदि कोई मुझसे भेंट करने आएगा तो उसका मिर काट लूंगा। दुवाका की परिस्थिति उल्लेख कर देने हैं कि लक्ष्मण को राम के पास जाना पड़ता है। राम अमरमरुग में पट जात हैं। भाई का वध कसे करें और नहीं करत ता प्रतिभा अग शरी है। अउ में व लक्ष्मण का त्याग करते हैं। लक्ष्मण इहसोव त्याग देत हैं।

असमीया रामायण म बुर्वासा के भाजन मद्रु रण आ मृदर चित्रप है।

उडिया रामायण में लक्ष्मण के सिर पर सप्त फण शोभित होता है और वे अनन्त पुरुषोत्तम रूप धारण कर स्वर्गारोहण करते हैं। वे स्वयं पहुँचकर नदीघोष रथ से उतरते हैं और सीता का सूचित करते हैं कि राम आने वाले हैं। सीता और सरस्वती का सौतिया डाह भी प्रकट होता है। वे दानो लक्ष्मण को सादर मिलती हैं।

(२०३४)

मानस में यह प्रसंग भी उपाहित हुआ है। कवितावली में अवश्य ही उसी पद में सकेत है जिसमें सीता वनवास की ओर इंगित है—

धम धुर-धर बधु तज्यो । ७६

राम का प्रयाण—लक्ष्मण की मर्यु का बहाना लेकर राम ने भी देह का परित्याग चाहा। सभी भाई अयोध्यावासी और जीवजंतु भी स्वयं के लिए चले। उनके निवास के लिए सतानलाक का निर्माण किया गया।

तीना पूर्वाचलीय रामायणों में राम को पूर्वस्थिति में पहुँचा दिया गया, वे फिर विष्णु के विष्णु हो गए। मानस में नायक का अवसान नहीं दिखाया गया है।

हनुमानादि को वर—राम स्वयं प्रयाण के पूर्व कुछ लोगों को वर दे गए। अश्वमेधा रामायण में उदाने विभीषण को जगरोग रहित होने का वर दिया। हनुमान के लिए कहा जब तक भूमि पर रामायण का प्रचार रहेगा तुम अमर रहोगे। जाम्बवान का वर लिया कि प्रलय तक अजर रहोगे। (४६४-६५)

बंगला रामायण में भी हनुमान का राम ने वर लिया कि जब तक ससार में राम-नाम का प्रचार रहेगा और जब तक सगर में चंद्र-भूय प्रकाश करेंगे तुम अमर रहोगे। (५८२)

उडिया रामायण में भी अश्वमेधा की भाँति विभीषण और हनु का अमर होने का वर लिया तथा जाम्बवान में कहा—जब कृष्णावतार में भुभस युद्ध वरोग तब भुभस तीन हाथ। उदान जाम्बवान और विभीषण का साथी भी दी। (२१०-११)

बंगला और उडिया रामायण के प्रसंग

वेदवती अगम्यास करन वान कुशध्वज की ब्या बदेवती को तपस्या करता देवकर कामानुर रावण ने परिचय पूछा। उमन कहा—मरी पिता मरा विवाह विष्णु के साथ करना चाहत था। रथ शम्भु ने कुपित होकर उन्हें मार डाला, मरी माँ ने अग्नि में प्रसंग लिया। मैं पिता के मरत्य का पूजा करने के लिए तपस्या कर रही हूँ। अपना प्रस्ताव अग्नीकृत हान पर रावण ने उस वन पहुँचकर साधा। वेदवती ने वन कातर छोड़ दिया और विष्णु-नाम हान की आशाना तथा रावण से प्रतिशोध मन की भावना लेकर वह अग्नि में प्रविष्ट हुई। इसी वेदवती ने जनन की यन्त्रभूमि में अश्वमेधा बनकर जन्म लिया। (वामीकि रामायण, ७-१८)

वामीकि के इस अश्वमेधा का बंगला रामायण में जन्म-वन्त्या से लिया गया।

उडिया रामायण में कुछ हेर फेर के साथ उपयुक्त वणन है। अंतर केवल वहाँ से प्रारम्भ होता है, जहाँ रावण अपनी कामुकता प्रकट करता है। वह वेदवती का उपयुक्त ग्राह्यान सुनकर उसे चूम लेता है। वेदवती जलकर प्राण त्यागती है। वह जनक के यत्न करने पर विघ्न उपस्थित करने जा पहुँचता है। रावण ने वेदवती के जलन के स्थान पर उसका अदृग्ध शरीर देखा वह उसे उठा ले गया मन्दोदरी से बोला इसका मास खाऊंगा। मन्दोदरी ने इस स्वर्ण मजूपा में रखा। नारद के कहने से मन्दोदरी ने स्वर्ण मजूपा समुद्र में फेंक दी। वरुण इसे बहाकर उस स्थान पर ले गये जहाँ जनक यत्न कर रहे थे। (उ० रामायण, ७४६)

नदी का शाप—वानरमुख नदिकेश्वर अथवा नदी का रावण ने अपमान किया था, इससे क्रुद्ध होकर उसने रावण को शाप दिया कि नर और वानर के हाथों तेरी मृत्यु होगी। देखिय, (बँगला रामायण, ४८५ और उडिया रामायण पृष्ठ ४१)

अगस्त्य का हार प्रदान—वाल्मीकि रामायण में श्वेतराजा का वृत्तान्त है, जो अपने तप-बल से स्वर्ग प्राप्ति तो कर सका किन्तु दान न देने के कारण स्वर्ग में भी भूख प्यास का अनुभव करता है। प्रह्ला ने कहा, तुम अपने शव को खाकर भूख शांत किया करो। अगस्त्य ऋषि ने उसे स्वर्ग से आकर शव मास भक्षण करते देखा। वह अगस्त्य को अलंकार दान कर इस निच कृत्य से मुक्ति पा गया। वही अलंकार अगस्त्य ने राम को दिया। बँगला और उडिया रामायणों में यह कथा है।

राम का याय—वाल्मीकि रामायण में राम के याय से सम्बन्धित तीन घटनाएँ हैं इनका वणन बँगला और उडिया रामायणों में है।

शम्बूक वध—शम्बूक नामक गूढ़ के तप करने से ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु हुई जिसके कारण राम ने शम्बूक का वध किया।

वाल्मीकि रामायण के रचनाकाल अथवा सम्पादन के समय बौद्धों के प्रचार से उत्पन्न शिथिलता का दूर करने के लिए वर्णाश्रम धर्म का कड़ाई से पालन किया गया। यदि यह घटना सत्य है तो राम का इसमें दोष नहीं, क्योंकि शास्त्र-व्यवस्था का पालन करना राजा का कर्तव्य होता है। शकरदेव (असमोया रामायण के उत्तर कांड के रचयिता) स्वयं गूढ़ थे तथा ममाज में उठने मुधार भी किये थे उन्हे शम्बूक वध रचा नहीं होगा इसीलिए उठने इसका वणन नहीं किया। वैसे वाल्मीकि रामायण में शम्बूक वध वाद का जाड़ा हुआ प्रतीत हाता है।

कुत्ता ब्राह्मण विवाद—माा में लटे हुए एक कुत्ते को किसी ब्राह्मण ने मारा। कुत्ते ने राम से याय मागा। कुत्ते ने स्वयं ही कहा कि इस कालिंजर का महन्त बना दा। लोग हसता कुत्ते ने कहा यह अगल जन्म में शिव की पूजा का भोग खाने से कुत्ता हांगा।

गृध्र उलूक विवाद—गीध्र और उलूक में वासस्थान के सम्बन्ध में भगडा हथा.

दोना ही अपने को पुराना वासी मांते थे । राम ने दाना से प्रमाण मांगा । उल्लू सृष्टि के प्रारम्भ से ही विद्यमान था वही पुराना निवासी माना गया ।

बगला रामायण में बताया गया कि गीध पहले जन्म में राजा था, ब्राह्मण का भोजन में बाल खिला जाने के कारण गीध हुआ । गौडीय-संस्करण से यह प्रसंग प्रभावित है ।

उडिया रामायण में लिखा है कि ब्रह्मदत्त नामक राजा से गीतम ऋषि ने भोजन मांगा । रसोइया ने मांस परोसा गीतम ने क्रुद्ध होकर शाप दिया—तुम गीध हीने और रसोइया उल्लू होगा । उहोने राम के दशन से मुक्त होना भी बताया ।

मासकार ने अप्रासंगिक घटनाओं को महत्ता नहीं दी है । इसलिए मानस में इनका वर्णन नहीं हुआ । लखक ने अपनी अथ पुस्तक विनयपत्रिका में संकेत रूप में अन्तिम दो का वर्णन किया है—

जेहि कौतुक लग स्वान को प्रभु याव निबेरो । विनयपत्रिका, १४६

बैंगला-रामायण के प्रसंग

लक्ष्मण का समय—बगला रामायणकार कृत्तिवास ने लिखा है कि अगस्त्य ने राम को बताया कि १४ वर्ष तक निद्रा आहार एवं स्त्री का त्याग करने वाला व्यक्ति ही मेघनाद को मार सकता है । राम ने शका की कि क्या लक्ष्मण ने ऐसा त्याग किया था । लक्ष्मण ने निम्न प्रमाण दिये—

(१) मैं सीता के नूपुर छाड़कर अथ अलवार न पहचान सका, यह स्त्री के मुस न देखन का प्रमाण है ।^१

(२) मैं नील का बाण से बीधकर कह दिया था कि राम के राज्याभिषेक तक न आना । भागवे राज्याभिषेक के समय मैं भीम गया था, जिससे पत्ता गिर गया था ।

(३) घाप मुझे पत्र दत्त था किंतु मारने की न कहते थे अतएव मैं व सभी पत्र रचना गया थाय नहीं ।^२

१ राम ने शका का थी कि निरन्तर सीता के साथ रहने पर भी लक्ष्मण ने स्त्री मुस किस प्रकार नहीं दगा ।

२ बिना माय हुए सम्मन जीवन बग रहे इसके लिए बैंगला रामायण का आदि भाग दगना होगा । निगा है कि विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण का एमा मंत्र दिया, जिससे हठारा वष तक दुषा-लक्ष्मण का कष्ट नहा होगा । इन्द्रजीत के वध के लिए सम्मन का अनाहार रहना पडगा । इसीलिए यह व्यवस्था पहल से ही कर दी गयी ।

बन्वान अनाहार चाकिय सम्मन । एक काय हव इन्द्रजित मरण ॥ ७३ ।

मानस में भी विश्वामित्र इस प्रकार का विधा दी है—१ २०८ ८ ।

यहाँ कृत्तिवाम की अध्यात्म रामायण से प्रेरणा मिली है, जिसमें कहा गया है—

यस्तु द्वादशवर्षाणि निद्राहारविवर्जित ॥ ६४

तेनैव मत्पुनिर्दिष्टो ब्रह्मणास्य दुरात्मन ॥ ६५ युद्ध० भग ८

अब रामकथाका म भी इससे मिलता जुलता वर्णन है किन्तु कृत्तिवास की कल्पना अनोखी है ।

हनुमान का गव भग—राम ने हनुमान से कहा कि लक्ष्मण ने जो फल न खाकर एकत्र किये हैं उन्हें उठा लाओ । हनुमान उन्हें न उठा सके तब लक्ष्मण स्वयं जाकर उठा लाय । गायका ने ऐसी घटनाएँ कालान्तर में जोड़ी होंगी ।

यही पर एक बात का और भी उल्लेख है । राम ने सभी फलों का हिसाब लगाया । सात दिन के फलों की कमी निकली । लक्ष्मण ने स्पष्ट किया कि इन सात दिनों पर फल लाय ही नहीं गये थे—(१) दशरथ की मृत्यु की सूचना (२) सीता हरण (३) इंद्रजीन द्वारा नागपाश-बन्धन (४) मायासीता-बन्ध (५) महीरावण द्वारा राम लक्ष्मण का अपहरण (६) लक्ष्मण शक्ति और (७) रावण वन ।
(पृष्ठ ४६६ ६८)

गज गच्छप प्रसंग—लका निर्माण के सम्बन्ध में बेंगला-लेखक ने वाल्मीकि-रामायण के अरण्यकाण्ड से प्रेरणा लेकर तथा स्वकल्पना की योजना कर एक कथा का उल्लेख किया है—

घन के लिये परस्पर भगड़ने वाले दो भाई अगले जन्म में गज गच्छप हुए । जब वे दोनों लड़ रहे थे, गरुड उन्हें सब पकड़कर उठा ले गये और एक बड़े बरगद की डाल पर रखकर खान लगे । डाल टूट गयी उस पर स्थित तपस्यारत ऋषियों को बचाने के लिए गरुड उस डाल को भी लेकर उड़े । डाल से चड़ाला का विनाश कर वे सुमेरु के शिखर पर बैठकर गज-गच्छप को खाने लगे । पवन ने कहा—यह मेरा स्थान है इसे छोड़ दो । दोनों में सघप हुआ । पवन की शक्ति से बचाने के लिए गरुड ने पत्था से सारा पवत ढक लिया । पवन के वेग से प्रणय उपस्थित हो गयी । ब्रह्मा के समभान पर गरुड ने सुमेरु का थोड़ा सा भाग खाल दिया, जिसे उठाकर पवन ने समुद्र गम स्थित चित्रकूट (वाल्मीकि रामायण में त्रिकूट) नामक पवत पर फेंक दिया । सुमेरु के दूरी अग्र से त्रिशुक्पर्ण ने लकापुरी का निर्माण किया । (बेंगला रामायण, पृष्ठ ४७० ७२)

उडिया रामायण के लकाकाण्ड में गरुड के कृत्या की प्रशंसा के क्रम में गज गच्छप और बालकिल्य ऋषिया का उल्लेख मान है । (६ ८६)

१ कृत्तिवामी बेंगला रामायण और रामचरितमानस—रमानाथ त्रिपाठी, प० २२६ २७ ।

उडिया रामायण के नूतन प्रसंग

कुछ अप्राप्तगिव कथाएँ—(अ) तणवि दु (तिरण) की कथा की कथा, जिमक गभ मे विश्रवा (रावण के पिता) की उत्पत्ति हुई । (आ) स्थिया के वारण पुरुषा का स्वलन पावती का वधू-वेश म देय ब्रह्मा का स्वलन विश्रवामित्र मनवा सप्तपिया की भाया अग्नि इद्र ग्रहल्या तथा तारा चन्द्रमा की कथाएँ । (ई) जानुघट परशुराम धेण शिव, जीभूतवाहन हरिश्चन्द्र बलि, नग निमि, अगस्त्य उत्पत्ति ययाति रघु और अज की कथाएँ । इसके अतिरिक्त रावण की दिग्विजय से सम्बन्धित कुछ कथाएँ भी ।

रम्भा के साथ रावण का बलात्कार और अभिगाप—पति ने पास अभिसार क लिए जाती हुई प्रसाधनवती रम्भा का देवकर रावण ने रति की याचना की । वह बानी, मैं ननकूर (कुवर पुत्र) की पत्नी हान के कारण तुम्हारी पुत्रवधू हूँ । रावण ने कहा—तुम सुर नहीं हो अतएव जो धन दे उसकी हो ।' रम्भा न बहा—मैं इद्र के अधीन हूँ वे जिसके लिए कह मैं उसकी हूँ ।' रावण ने उसके साथ बलात्कार किया यही अरथीन वचन है । रम्भा ने अपने पति से जाकर कहा यदि तुमने मेरे मान का उद्धार न किया तो मैं अग्नि म जनकर प्राण दे दूंगी । ननकूर ने कुश-जल भकर शाप दिया कि यदि रावण ने पर स्त्री का स्पर्श किया तो उमरी शतषड हो जायेंगे । इमम ब्रह्मादि प्रमान हुए कि अथ मीता का सतीत्व रक्षित रहेगा ।

(७ ७२ ७५)

अममीया और बंगला रामायण का गुत्तरकाण्ड म ननकूर के शाप का उल्लेख मात्र है कि यदि रावण किसी स्त्री को बलपूर्वक स्तुगा तो उमरी मृत्यु हा जायगी ।

उडिया रामायण का एक पूरा प्रसंग बामोकि रामायण क अनुसार है ।

बनह-सीता—राम मय क माय मय बन । कान मोता का मयकर वे विनिन हुए इमका का कम् । मयप्रतिमा मागान् वामा शरर बानी—मैं यन्त्री माया सीता हूँ त्रिमा रावण का मय किया था । मैं महामाया तुम्हारी मया मगी हूँ । शीर मनु म तुम्हारा पर है मुझ का विरय कर ता । का विर बोनी—विमय कया कर ता है का विर राग करना धान है । दयाय ममान हूया धव धना । पर माया-माया मय म माता का प्रणाम कर धमय हा जाता है ।

(७-२१० और २२०)

अथ विरय—राम की ध्यान द्वारागत त्रय विरय म अंत और उनक तीन जमा का न वचन है । (२११)

राम का बहन परिवार—मय म राम क बहन परिवार का वर्णन है । विष्णु कन्द क विष्णु मनुक-विष्णु क उपासना क रूप म विनिन है ।

मानस के बुद्ध प्रसंग

मानस म कथा का विस्तार राम के सिंहासनारोहण म पश्चात् र्त जाता है । उत्तरवाण्डा म कथा रा सहज विवाम नहीं है उगम अनक धप्रसंगिक कथाएँ हैं, जो अधिकांशतः प्रसिद्ध हैं । इन सब घटनाओं के निराकरण करण पर उत्तरवाण्ड का अस्तित्व नहीं रह जाता । अतएव गास्वामीजी न केवा म राम के प्रत्यागतन के पश्चात् की कथा उत्तरवाण्ड म लिखाकर तथा भक्ति पान आदि का विवेचन कर अपना उत्तरवाण्ड पूरा किया । गिहागन प्राप्ति तक की कथा का तुलनात्मक अध्ययन लवा वाण्ड म हा चुका है । अर उत्तरवाण्ड म कर्त एव ही कथा रह जाती है, वह है काकभुशुडि की कथा ।

काकभुशुडि—जय-जय राम विभिन्न कल्पा म अवतार लेत हैं, काकभुशुडि उनसे दान करने आत हैं । लका म नागपाश-पीडित राम नक्षमण का मुक्त करन के पश्चात् स गरुड क मन ने शर्वाण उलान्न हुआ । शकर न गरुड का काकभुशुडि के पास पानाजन के लिए भजा । काकभुशुडि न बताया कि के पहले शिवपूजक थे, तथा हरि भक्ता की निंदा किया करते थे । गुरु के समभान पर भी जब के न माने तो आकाश-वाणी द्वारा शाप मुनायी पडा कि उन्हें हजार योनिया म जन्म लना पडेगा । शकर की कृपा मे यानियां शीघ्र शीघ्र बीतती गयी । अर मानवरूप म जन्म लेकर काक-भुशुडि मगुण मार्गीय हो गय । लोमश ऋषि ने इन्हें निगुण भक्ति सम गयी किन्तु ये मगुण भक्ति पर आपह दिशात रह । लामश ऋषि न क्रुद्ध होकर कौशा हाने का शाप दिया । किन्तु इनक धय से प्रसन्न होकर इन्हें रामचरित बताया ।

काकभुशुडि-गरुड सम्वाद प्रस्तुत कर तैयक शव-वर्णव, पान भक्ति और मगुण निगुण समन्वय करते हुए भक्ति मार्ग की पुष्टि करना चाहता है ।

कलियुग वर्णन—मानस क इस वर्णन म तत्कालीन-परिस्थितिया की भक्त मिम जाती है ।

० सम्पूर्ण रामचरित-वाक्या क अन्त म विभी-न विमा रूप म राम-कथा-श्रवण के फल का उल्लेख और राम के प्रति भक्ति भाव का प्रकाशन है । उचिया रामायण क अन्त म तयक न अपना जीवन परिचय भी दिया है ।

काव्य-सौष्ठव

भाव-सौंदर्य

वाक्य रसात्मक काव्यम'—साहित्यदपण-कार के इस कथन तथा अथ कई आचार्यों के मत के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है। रस बड़ा व्यापक शब्द है इसके असंख्य अर्थ हैं, इसके एक-दो अर्थ की भी व्यञ्जना करने वाला कोई शब्द अंग्रेजी भाषा में न मिलेगा। रस का एक अर्थ है आस्वाद। साहित्य शास्त्र में इसका प्रयोग काव्यास्वाद अथवा काव्यानन्द के लिए होता है।

रस काव्य का प्राण है, यह सही है किन्तु इसीलिए यदि कोई अपने काव्य में विभावानुभावसचारी-अवयवों की यथान्तम सामग्री एक स्थान पर एकाग्र कर दे तो वह मार्मिक काव्य नहीं हो पाएगा। प्रसंग की मार्मिकता स्वयं ही वाणी द्वारा फूट पड़ती है। प्रस्तुत प्रबंध में विभिन्न रसा से सम्बन्धित मार्मिक प्रसंगा का वर्णन होगा। आलम्बन उद्दीपन, अनुभाव और सचारी आदि के उदाहरण खोद-खाद कर प्रस्तुत नहीं किये जाएंगे।

शृंगार-रस

शृंगार के स्थायी भाव रति अथवा प्रेम का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। समस्त सृष्टि में ही एकोऽह बहूस्याम की भावना है इमने लिए पुरुष और नारी-तत्त्वों का मिलन आवश्यक है। जिस अवस्था में इन दोनों की प्रजनन शक्ति अधिक चलवनी हो सकती है उगी अवस्था में य पारस्परिक आकर्षण का तीव्र अनुभव करत है। मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र इस आकर्षण का अनुभव करता है वज्रानिक एव सद्गुणकविता वनस्पतिया में भी इस घटित देखते हैं। इसीलिए आचार्यों ने इसकी व्यापकता दत्त इस रमराज कहा है। रसरजत्व के अर्थ कारण बताये जाते हैं— १ इसमें सुखात्मक एव दुःखात्मक दोनों प्रकार के अनुभवों की गवाह और विषय रूप में विद्यमानता, २ सभी सचरित्या एव सात्त्विकों को आत्ममान करने का इमका सामर्थ्य (आलस्य उप्रता और जुगुप्सा को छोड़कर)। ३ विभावा की विशेषता—इमके आलम्बन एक-दूसरे के आलम्बन होने हैं राम सीता

से प्रेम करते हैं, तो सीता भी राम से प्रेम करती हैं। शृगार का उद्दीपन भी व्यापक होता है। वारहों मासों की स्थितियाँ वियोग शृगार की उद्दीपन हो सकती हैं।

पाश्चात्य विद्वान् साहित्य का मूल प्रेरक भाव काम मानते हैं। डा० नगेन्द्र भी कम से कम ललित साहित्य को रसात्मक हान के कारण काम वृत्ति से प्रेरित मानते हैं।^१ भारतीय विद्वान् शृगार के स्थायी भाव रति के अतगत केवल काम का ही स्वीकार नहीं करते, वे काम के साथ ही वात्मल्य, आत्मसमर्पण (भक्ति) आदि अनेक मनोवेगों का समाहार भी करते हैं।^२ रति के कई रूप हो जाते हैं—प्रणय-भाव, वात्मल्यभाव श्रद्धा भाव भक्ति भाव एव आदाय भाव।^३ फिर भी मुख्यतः शृगाररस में प्रधानता प्रणय रति की ही है। सभी कालों एव रसा के साहित्य में इसका वर्णन मिलेगा।

हम रामायण-साहित्य में चित्रित प्रणय रति का ही अध्ययन करेंगे।

सयोग शृगार—राम मयागवादी थे। उनका शृगार दाम्पत्य भाव का है। भाषा रामायणकारों ने उनके शृगार-वर्णन में मर्यादा का ध्यान रखा है। राम के शृगार में ही नहीं, राम-कथा से सम्बन्धित अन्य पात्रों के विषय में भी उन्होंने समय का परिचय दिया है। कामशास्त्र विशेषण रसिक उडिया रामायणकार ने अवश्य ही सभोग के नग्न चित्र प्रस्तुत किये हैं।

० अक्षमोषा रामायण में सीता राम के सयोग शृगार का तमय करने वाला वर्णन नहीं है वसी स्थिति तो वियोगावस्था में मिलती है। सयोग में दाम्पत्य प्रेम के एक ही चित्र अवश्य मिल जाय है। सीता श्वी न भनमिल का तिलक लगाया। राम के हृदय में आलिंगन की इच्छा हुई। सीता ने परिहास कर पूछा सुरति शृगार की अभिलाषा हो रही है? इसी बीच लक्ष्मण मग मारने के लिए चले गये। राम प्रसन्नता पूर्वक नदी तट पर माता की गान् में लट गये—२४८६ ६० छ०। माधवत्व न सीता के स्तन, विपुल नितम्ब जीर सुवलिता उर का वर्णन किया है।

० बँगला रामायण में काटछाट हुई है उसके सयोग शृगारातगत आने वाले अश हटा दिये गये हैं। अतएव इस प्रथम में भी तमय कर देन काल अश नहीं मिलेंगे। दाम्पत्य प्रेम के पवित्र उदाहरण का एक सुन्दर चित्र बवाहिक-लाकाचार के समय मिल जाता है जबकि सीता को अंधेर घर में लिटाकर राम से कहा जाता है कि वे सीता को हाथ पकड़कर उठा लाएँ। सीता ने यह सोचकर कि कही पति का हाथ उनके पर पर न पड जाए बायें हाथ की शक चूड़ी भनभनता दी। राम ने उह हाथ पकड़कर उठा लिया—

१ डा० नगेन्द्र—विचार और अनुभूति पृष्ठ १०।

२ डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी—रीतिकालीन कविता एव शृगार रस भूमिका ८।

३ डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—विहारी की वाग्विभूति पृष्ठ ६६।

करिलैन सीता बामहस्ते शशध्वनि ।

हाते धरे सीतारे तालेन रघुमणि ॥ पु० ८७

० रसिक बलरामदास तात्रिक वष्णवभक्ति धारा के कवि थे उनके ज मस्थान के मन्दिर की भित्तियों पर काम भाव को रूपायित किया गया है। यह लेखक शृगार म डूबकर लिखता है। अथ रामायणकारों की अपेक्षा इस लेखक ने शृगार का विस्तृत चित्रण किया है किन्तु चित्रणों में काम भाव प्रबल हो उठा है।

जनकपुर की काम विह्वलता नारी—जनकपुर की स्त्रियों की तो ऐसी दशा हो जाती है कि वे अश्लील चष्टाओं पर उतर आती हैं। उ हाने प्रथम बार राम को देखा तो अस्त-वस्तु शृगार कर। अधमग्न अवस्था में ही राम को देखने दौड़ पड़ी। वे आतुरी में बाजल, आलता आदि का शृगार वहीं का वहीं कर गयी। काई छाती पीटन लगी किसी के नथों से अमू भरने लगे जीर मूत्रम वस्त्र भोग जान से उनके स्तन दिखायी पड़ने लगे। विवाह-नस्वार के समय भी ये स्त्रियाँ राम के शरीर में हल्दी लगान के बगाने उनके भ्रमा का स्पश करती हैं या अपने भ्रमा का स्पश देती हैं। काई उनकी पीठ से स्तन मटा देती हैं कोई उनकी भुजा को पकड अपने व। स स्पश करा देती हैं। यहाँ काम विह्वल नारियाँ की शारीरिक चष्टाओं का मुत्तर वणन है। य चष्टाए हाव और अनुभाव दाता ही की श्रणों में आ जाती हैं—

नासिका पुलाइए ठारति बहू बाली ।

घानि छिटा मारि ब हुप्रति ठेलाठेति ॥

मने मन मिगाइए चुम्बन भावति ।

मदन बिचारे घानु घान से बोलति ॥

स्तम्भीमूत होइ ब मुसकु चारें कंठि ।

मदन बिचारे बहू न सम्भाले नाइो ॥

(काई बाता नर पुताइए मदन कर रही है। कोई कटाग कोंकर टना टरी कर रही है। काई मन ही मन मितन बलिन कर चुम्बन कर रही है और मदन बिचारे ब कागन कुस का कुस बान रही है। कोई स्तम्भित हाकर मुस माइ लनी है और काई काम के बशीमूत हाकर गाड़ी नहीं सम्भालती है।— (१ १६५)

राम गाथा के जनकपुर में बिना के समय भी जनकपुर की स्त्रियाँ काम विवशा हो नी काम बि। ता हाकर राम से बि। ता घूमन अरि। ब कृप्य करन लगती है। व अन्ता पर हाइ राम के गाव जान के बि। ता प्रस्तुत है। राम उन्हें हाँकर दूर करन है १२० ।

घम्य बाथों की कामुह चष्टाएँ—मदन का जहाँ भी अवसान मित्त, उमन रस का बि। ता बन बिना है। गु। ता राम में मयमहीन हाकर चुम्बन उर मदन

कंपोन पर तीक्ष्ण दन्त-सत और आनिगन की याचना करती है ।^१ विश्वकर्मा रेणुका प्रसंग म सहमति से मुग्धि, नख और दन्त के आघात, गति-मुग्ध की वद्धि पर रत-स्मलन तथा मुरति की समाप्ति पर वस्य धारण का वणन है ।^२ वेदवती के प्रति गवण के मुख स इसी प्रकार के प्रस्ताव प्रस्तुत किय गये हैं । इसी प्रकार सुन्दरी रभा को अपने रथ के नीचे पतित कर रावण भयकर रूप से कामविह्वल होकर तथा अनेक प्रकार की काम-कलाएँ दिखा । उसके साथ बलात्कार करता है । विस्तृत वणन है ।^३ रभा अपने पति से मिलकर आप-वीती मुनान समय इसी वणन की पुनरावृत्ति करती है । स्त्री रूपधारी विष्णु के पीछे दौड़ते हुए शकर का रूप तो बिल्कुल कामोभक्त अश्व जसा अकित किया गया है । शकर पावती के दाम्पत्य प्रेम के सम्बन्ध म भी एक उल्लेख है । धनु मग के शब्द से डरकर पावती न शिव के वक्ष से स्तन सटा दिय । शिव वाले चलो आनिगन ता मिला । इसी प्रकार के अनेक प्रसंग हैं ।

ऐस प्रसंगा का वणन मर्यादावादी असमीया और हिन्दी रामायणकारा ने नहीं किया । बँगला रामायण के सशोधना की चचा हो ही चुकी है । उसके ऐस वणन छाप नहीं गये हैं ।

राम-भीता प्रेम—विवाह सस्कारो के मध्य राम और सीता एक ही याल मे साथ साथ भाजन करने बडे । रतनचूडी मे राम का रूप देख सीता मुग्ध हुई ऐसे मुग्ध हैं भेरे प्राणनाथ । बहुत बडी तपस्या के फलस्वरूप मैंने इह पाया है ।^४ उहे भोजन न करता देख सखिया अकित हुइ अत म पोल खुली ।^५ उडिया रामायण का यह वणन तुलसीदास के वणन से मिलता है, निश्चय ही यह उतना मार्मिक नहीं है । तुलसी की कवितावली का वणन तो उनके मानस के वणन से भी बढकर है ।^६

प्रसाधन एव प्रणय क्रीडाए—सीता राम के दाम्पत्य प्रेम के अनेक मुन्दर चित्र खींचे गये हैं । हाथिया द्वारा लोडी डाल को लताजा मे जोडकर नाव बनायी गयी । गीता बठते समय डरी राम ने हँसकर उह हाथ पकडकर गोद मे बिठा लिया ।^७ वन म रहने हुए राम अपनी प्रिया का अनेक प्रकार से श्रृंगार किया करते थे । जूडे म फूल लगात । पत्थर पर अदन धिमकर लेप करत । कृष्ण अगुरु धिस

- १ अधरे तुम्हे चुम्बन दिअसि मोहर । उर मरदन करु वनि भुज तार ॥
तीक्ष्ण दन्तरे पीडन कर गण्ड भार । दुइ भुज भिडि माने कोलाप्रत कर ॥ ३ २२
- २ उडिया रामा०—५-११४ ।
- ३ वही—७ १७४ ७५ ।
- ४ वही—१ २०० २०१ ।
- ५ देखिए—राम को रूप निहारत जानकी कवन के नग की परिछाही ।
यात सबे सुध भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाही ॥ कवि० १ १७
- ६ उडिया रामा०—२ ५७ ।

कर गीता के लीला म मगा। मृगम पिगतर गीता के मग पर पत्तारी रनो।
दोनों ही लक्ष्मण के हाथ ममकर मग गितार क।।

एक नि दोता मग म गितार क गे थे। एत कपोत का देगतर गीता न
पुकी जातर उत पत्तारा चाला कगा उड गया। राम रंग पड। गीता ने क
पितार राम क शरीर पर मगाया और उनी शाभा मगतर मुन्दुरायी। दोता
मदातीने के जन म उतरकर लक्ष्मण पर नागरर के मूला का प्रहार कर प्रोडा
करने लगे। दाना भीम कम्प-गति गालुनिता क बडे। गीता की मारी म क सग
पयो। राम ने गीता के माये पर मरु का गितार मगा गिया। यत्रो का भूण मेर
सीता डरकर राम के हृदय म गिण्ट मयी। सीता का तिलन राम क भी नग रया।
दोनों हेंस पडे। सीता के रसाई आनि प्रस्तुत करने राम की सजा करन आदि के
अत्यंत मुदर पारिवारिक चित्र इस रामायण म उपनय है।

मानस म गो० तुलसीदास ने शिव पावती म ही शृंगार-वणन की अनिच्छा
प्रकट की है, क्याकि वे जगत के भाग पिता हैं फिर वे परमाराध्य सीता राम का मुत
शृंगार कम दिया सवत म ?

जगत मातु वितु सभु भवानो।

तेहि सिगारु न कहउं धरानी ॥

१ १०२-४

फिर भी तुलसीदास ने राम सीता के शृंगार का यणत रिया किन्तु अत्यधिक
पवित्रभाव से। वही कामोत्तेज्य वालें नही तथापि विश्द्यन स्वभाव के सरल विशोर
किशारी का प्रथम स्नेह मिलन पाठको को तमय क देता है। कवण किष्ण-नुपुर
चनि मुनकर पुनवाडी म प्रकाश करती सी सीता का दसकर राम का सट्ट पुनीत
मन क्षुब्ध हा गया। सीता के कमल मुग की शाभा का वे भ्रमर की भानि पीन लग।
उवर सीता की स्थिति यह है कि वे एकटक दसती ही रह गयी। प्रेम के अत्यधिक
भावग म वे ऐमा विह्वल हो गयी कि चकोरी के शरदचन्द्र-दशन के समान देखती ही
रह गयी।

यके नयन रघुपति छवि देखें।

पलरहिहैं परिहरौं निमेवें ॥

अधिक सनेहैं देह भ भोरी।

सरदससिहि जनु चितवचकोरी ॥^१

जागे कोहवर के समय हाथ की मणिया म सीता ने राम की प्रतिच्छवि देखी।
सुशीला सलज्जा कया अपने प्रिय को कसे दख पाती वह भी गुरजनों की उपस्थिति
म। मणि म प्रतिबिम्बित रूप को वह जी भय देख सवती थी किन्तु रूपरस पान मे

वह ऐसी तमय हुई कि रूप वियोग के भय से वह भुजलता का संचालन ही नहीं कर रही है ।

निज पानि मनि महू देखिघति मूरति सुरूपनिधान की ।

चालति न भुजबली बिलोकिनि विरह मय बस जानकी ॥^१

दाम्पत्य प्रेम के अनक उदाहरण मानस में मिल जाएँगे । पति के प्रति पूज्य-भाव केवल एक इस अर्घानी में मिल जाता है—

प्रभु पद रेख बीच विच सीता ।

घरति चरन मग चलत सभोता ॥ २-१२२ ५

वियोग

'यत्र तु रति प्रकृष्टा नाभीष्टमुपति विप्रलम्भाञ्जी —साहित्य-दपण'^२ की इस उक्ति के अनुसार जहाँ अनुराग तो उत्कृष्ट हो किन्तु अभीष्ट (प्रिय-समागम) की प्राप्ति न हो, वहाँ वियोग अथवा विप्रलम्भ शृंगार होता है ।

जब नायक नायिका में किसी एक की मृत्यु हो जाने से अथवा किसी अन्य कारणवश दोनों के मिलन की सम्भावना न रहे तो वहाँ कष्ट रस होता है किन्तु प्रेम की उत्कृष्टता बनी रहने के कारण कुछ आचायक के कष्टात्मक वियोग मानते हैं । सच तो यह है कि करुणात्मक वियोग और करुण रस के मध्य विभाजक रेखा खींचना कठिन है । रामकथा में लक्ष्मणशक्ति मायासीता-वध सीता की परीक्षाएँ आदि कुछ ऐसे अवसर हैं जहाँ प्रिय के मिलन की आशा नहीं रह गयी है ।

भोज ने सरस्वती-कण्ठाभरण में वियोग की चार अवस्थाएँ मानी हैं—पूर्वानु-राग, मान (१ प्रणय, २ ईर्ष्या) प्रवाम और करुण । वियोग की दम दशाएँ भी बतायी गयी हैं—अभिलाष, चिन्ता, स्मृति गुणकथन उद्वेग प्रलाप, उमाद व्याधि जटता एवं मृत्यु ।

हमारे रामायण-लेखकों ने शास्त्रीय भेद प्रभेद के चौखटे में जड़न के लिए विरह-वर्णन नहीं किया । प्रसंग के अनुसार राम या सीता को विरह-दशाया का वर्णन किया है ।

०अमयीया रामायण के अथाध्याकाण्ड में सीता के आमन विरह-दुःख का वर्णन है । राम के वनवास का समाचार पता करके हा प्रभु कहकर पथीपर गिर पनी और छाती पर प्रहार करने लगी । महाभय से शरीर कापन लगा हाथ का बल्य खिसकने लगा । व राम का वस्त्राचल पकटकर गिडगियायी— प्रभु मत जाओ

हा प्रभु बुलि, परित्त नूमित, हृदयल मुठि हानि ॥ १८२२

आति महाभय शरीर कम्पय, हातर खसे बलय ॥ १८२३

नयाइबाहा प्रभु बुलिया जानकी, आञ्चलत घारिलत ॥ १८२४

१ मानस—१-३२६, छंद ३ ।

२ साहित्य दपण—३ १८७ ।

सीताहरण के समय लेगव ने सीता के विरह-वणन की अपेक्षा उनके पतिव्रत तेज का वणन अधिक किया है। राम ने सीता से विद्युक्त होकर विलाप किया है। वे रोकर लक्ष्मण से कहते हैं—सीता के बिना मुझे सारा ससार विष-तुल्य लगता है। मैं प्राणेश्वरी के बिना वन में मर जाऊंगा। असमीया लेखक का दृष्टिकोण भी तुलसीदास जसा है, अतएव विरह की मार्मिकता कम हो जाती है।

परम ईश्वर राम सीता जगन्माव ।

देखाइलत विषयी जनर इटो भाव ॥

(राम परम ईश्वर है और सीता जगन्माता है। वे विषयी जन जसा भाव दिखा रहे हैं। (३३१६)

राम सीता के दारुण विरह का वणन बदली ने अग्नि-परीक्षा के समय एव शकरदेव ने निर्वासन एव पाताल परीक्षा के समय अत्यन्त मार्मिकता के साथ किया है जिसका कि वणन करुण रस के अन्तर्गत होगा।

बेंगला रामायण के राम को ब्रह्मत्व का ज्ञान नहीं है वे हृदय से रोये हैं। वन के पशु पक्षी भी उनके साथ रोये हैं।

कादिया बिकल राम जले भासे आंखि ।

रामेर कन्दने कादे बय पशुपाखी ॥ १० १५८

सीता के बिना उह दसो दिशाएँ शून्य दिखायी पडती हैं। उनके लिए सीता ध्यान पान और चिन्तामणि हैं। सीता के बिना वे फणिहीन नाग के समान व्याकुल हैं।

दग्दिक शून्य देखि सीता अदशने ।

सीता बिना किछु नाहि लय मम मने ॥

सीता ध्यान सीता ज्ञान सीता चिन्तामणि ।

सीता बिना आमि येन मणिहारा फणी ॥^१

मानस के राम के समान बेंगला के राम भी भग-पक्षी-वक्षलता आदि से पूछते हैं कि सीता को किसने हर लिया है—

शुन शुन भग पक्षी शुन बक्षलता ।

के हरिल आमार से चन्द्रमुखी सीता ॥ १० १५८

आगे विरह की उमादावस्था में राम के माग मजठ या चेतन जिससे भी मिश्रित है पागना के समान सीता का सघन पूछने लगते हैं—

याइते देनेन याके जिज्ञासेन ताके ।

देखियाइ तोमरा कि ए पये सीता के ॥ १० १५९

मुग्धोव द्वारा सीता के वस्त्राभूषण की उपनिष्य पर भी राम घट्ट राय हैं ।
पास्थान सीता का विरह-र भी वर्णित है । उनकी मार्मिक उक्तिर्या तो परीक्षा
समय की है उनका वणन जाग होगा ।

० उडिया रामायण म विरहिणी साता का रूप हनुमान के शब्दा मे इम
कार है—स्फटिक की एक माला लेकर सबदा तुम्हारा (राम का) नाम जपती रहती
। वह दाना हाथ कपाल पर गमकर धरती की ओर देखती रहती हैं । विम्बोष्ठी
ग मुग दु र से मूम गया है ।

स्फटिकर जपामलि गोटि घेनि धाइ ।

सबदा तहिरे तारे नामकु जपइ ॥

कपालरे घेनिहस्त मेदिनी कि बटि ।

दु खेण मुस गुलाइ धरि विम्ब ओष्ठी ॥ ५ ८२

वलरामदास विरह चित्रण म भी रसिकता नहीं भूने । अम्नान वस्त्र पहन एव
भर भर आँसू बहाती सीता के प्रसाधन-टीना हान की उह अधिक चिन्ता है । उनके
सना पर पत्रावली नहीं रची गयी ताम्बूल आलता बज्जल आदि का प्रयाग नहीं
किया गया था ।^१ राम को सत्य विरही ही दिखाया गया है, इसम सन्देह नहीं, किन्तु
राम भी विरह-मन्लप्त हाकर सीता के मासल-सौन्दर्य का चिन्तन ही करते अधिक
देखाय गय हैं—

सखी तारा शरीर शीत ऋतु के लिए ऊष्मा प्रदान करता है और उष्ण ऋतु के
लिए शीतलता । ह महासती अब क्या तरी मति पर पुरुष के प्रति हो गयी है । सखी,
मेरा मन प्रस न करने के लिए जूटे म फून खोंसा खाँसा म काजल लगाकर मुझे
दखो ।—अल्प अल्प हँसकर मुभस बात करो, मर दिए यह अमन-मान-तुल्य हागा ।
तर दाना कुच गजकु भ के समान हैं तेरी कटि क्षीण एव जघाएँ विशाल हैं । इन सब
का लकर तुमन किसरो प्राप्त किया है ?^२

राम उमत्त होकर ही उपयुक्त कथन कर रह हैं फिर भी लक्ष्मण की उप
स्थिति म मध्यकालीन लेखक के मुख स नि सत य शब्द शाभा नहीं पाने ।

वसे अय स्थला पर राम का विरह मार्मिक है । मुग्धोव के द्वारा प्रदत्त सीता
के वस्त्रालवारा का छाती स लगाकर व 'सीता सीता कहकर उच्च स्वर स राये ।
उनका रदन मुनकर वन के जीव-जन्तु स्तब्ध रह गय । व भूमि पर लोटकर कहत है
मरी पच प्राण-स्वामिनी कहा चली गयी ।^३

१ उडिया रामा०—१ १७ ।

२ वही—४ ४३ ।

३ वही—४ १३

बध्नाए याद जा जाती है। उग लगता है कि आज भी रात्रण उगनी गा म लटा हुआ दा मुग स दूध पी रहा है और आठ मुगा स उग दगाता हुआ हँस रहा है—

भ्रष्टानि भ्रादय सिगुबाल सुमरए ।
यतानि बोनात मोर भ्रादय रायए ॥
दुद मुग तन पान कर भभिसाये ।
भार भ्राठ मोटा मुसे मोक घाया हात ॥ ४६८६

राजा दशरथ विश्वामित्र द्वारा राम की माघता पर पुत्र विरह व दुग स इतने अधिक आपुन हो गय थ कि दाना म तण दवाकर दीना प्रवास करत हुए राम का न न जान का अनुरोध करन लग ।^१

० बँगला रामायण म माना क आवुल हृदय का वणन हुआ है। राम पलक की भ्राट होते कि कौशल्या व्याकुल हा उठनी। शिषार सनन के लिए गये हुए पुत्रा के लिए माताएँ अत्यधिक चिन्तित रहनी। उाक लीटन पर व एम दीड पडती जस बच्चा खो जाने पर वाषिनी स्नेह पीडित होकर दहाडती है—हम्बूर हाराये यन कुवारे वाषिनी ६३। कौशल्या राम नो गोद म लवर भमभ्य चुम्बन मुग पर भ्रमित कर बहती—तुम मुभ दरिद्र की निधि जीर मेरे नत्रा के तार हा। तुम्हारे एक पल दूर हाने ही मर लिए प्रलय घटिन हो जाता है।^२ इसका वियोगवात्सल्य का वणन करण रस के जतगत आ जाता है।

० उडिया रामायण म राम जादि की बाल चेष्टाआ का वणन उपयुक्त रामायणा स अधिन स्वाभाविक एव सुन्दर है। व कटि म पाट सूता (रैगमी सूत्र) और घागुडि (क्षुद्र घटिवा) पहने हैं चलन पर भमभम का स्वर हो रहा है। पिता को देखकर लजा जात है और अत्यन्त स्नेहपूर्वक धाय की गोद म छिप जाते हैं। दशरथ उह बटे प्यार से पास बुलाते हैं।

कटिरे ये पाटमुता गोहृद घागुडि ।
चालते सुस्वर बाक्य भ्रम भ्रम करि ॥
पिताङ्क देखिए पोये लाज लाज होइ ।
धाइङ्क कोले पशति भ्रति स्नेह करि ॥
दशरथ डाक छति भ्रास भ्रास बाबु ।
मोहर ए सम्पद तुम्भर सिना सबु ॥ १ ५६ ५७

पुत्र का देखकर जिस प्रकार मानस की माताओं के पयोधरो से दूध की धार

१ दान तण धरि तामात मागोहो राम दिबोर माक ८३० (माधवदेव) ।

२ कौशल्या घाइया गिया राम बल कोले। एक लक्ष चुम्ब दिल बदन कमले ॥ दरिद्रेर निधि तुमि नयनेर तारा। पलके प्रलय घटे यदि हृद हारा ॥

बहने लगती है', उसी प्रकार उडिया रामायण की पावती के स्तना से भी कात्तिकेय को देखकर दुग्ध स्रवित होता है—'पुत्र दत्ति स्तनरु स्रविला क्षीर धार १ १०५ । जिस प्रकार मानस की कौशल्या का विश्वास नहीं होता कि मर मुकुमार अल्पायु राम न रावण जैसे शत्रु को मारा होगा' उमी प्रकार उडिया रामायण की कौशल्या को आश्चय होता है कि कोमल राम ने कठोर धनुष बसे तोड़ दिया होगा—१ १७६ ।

वंदही की विद्या के समय विषाण-वात्सल्य का उदाहरण मिल जाता है। प्राणा से प्रिय पुत्री को विदा करते समय किस माना को ऐसा प्रतीत न होता होगा कि मानो उसका सबस्व ही छीना जा रहा है। जनक की रानियाँ हाहाकार करती हुई कहती हैं—

दुग्ध घृत देइ गो मा पोपुयितु तोते ।
परकुइ देलु मो सञ्चुरि सनमते ॥
ब्राजु मोते दण दिग बलु मा गो नूय ।
काहा मुख देखिए हरिबु ब्राम्हे दिन ॥

(दूध-घृत से माँ (बेटी) तुम्ह पोसा था। सबकी समति से तुम्हें दूसरे को दे दिया। बेटी, आज तूने मने लिए दमा दिशाजा को नूय कर दिया। हम किसका मुख देकर त्वि काटेंगी। (१ २०७)

० मानस के बाल एव उत्तर काण्ड में वात्सरय का वणन है। उत्तरकाण्ड के वात्सल्य पर अध्यात्म की छाया है फिर भी शिशु स्वभाव का सहज वणन भी हो गया है। जब बच्चा भूखा होता है तो अपनी सजन दृष्टि स मुँह रुखा-सा बनाकर माँ की ओर देखकर इच्छा प्रकट कर देता है। माता भी जातुरता-पूर्वक शिशु को गाद में लेकर स्तन पान कराने लग जाती है—

सजल नयन बछु मुख करि रुता ।
चित्तइ मातु लागी अति भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि पाई ।
कहि महु बचन लिए उर लाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना ।
रघुपति चरित ललित कर गाना ॥ मा० ७ ८७ ६—८

शिशु और कोए की क्रीडा का भी यथाय चित्रण है। बच्चा का स्वभाव होता है कि कोए का खान की वस्तु दिखाकर पाम बुलाते हैं किन्तु कोए व पाम आने तथा छेन्छाड़ करन पर डर कर भागते हैं—

- १ गोद राखि पुनि हृदय लगाए । सवत प्रेमरस पयद मुहाए ॥ २ ५१ ४ मा० ।
- २ अति मुकुमार जुगल मर वार । निसिचर सुभ्र महावल भारे ॥ ७-६-८ मा० ।
- ३ माँ—पूर्वाचल में बेटी को माँ कहकर मग्नीधित करते हैं ।

चित्तवत मोहि धरा जब धार्यति ।
 घसर्जें मागि तब प्रुप धेतायति ॥
 धायत निबट हेंतारि प्रभु भाजत रदा करारि ।
 जाउं समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ परारि ॥'

यातकाण म भी बच्चा क बीन खेलते हुए राम का कथा है जो दशरथ द्वारा भोजन पर बुलाय जा पर आत नहीं हैं ।

वियोग-व्यात्सल्य का चित्रण ता इतना अधिक मार्मिक है कि वह कण रस के अन्तगत आ जाएगा । राम क विरह की कल्पना म अपना विरह हो जान पर छटपटाते हुए दशरथ एव कौशल्या का दृश्य तुलसीदास जसा व्यक्ति ही पहचान सका है । सत्यवादी दशरथ तो यहाँ तक सोच बठे—अपयश भल ही हा और चाह नरक ही क्यों न जाना पड किन्तु राम लोचन की ओट न हा ।'

कहण

घनजय न कहा है—इष्टनाशादनिष्टान्तो शोकात्मा करणो'नुतम् ।' अर्थात् इष्टनाश स अथवा अनिष्ट की प्राप्ति स करण रस होता है । दक्कवि भी घनजय का समथन करते हैं—विनठ ईठ अनीठ मुनि मन म उपजत सोग । रामायणो मे राम-वनवास, लक्ष्मण शक्ति माया सीता-बंध सीता की परीक्षाएँ लक्ष्मण वजन आदि ऐसे अवसर है जबकि प्रिय का अनिष्ट उपस्थित हुआ है अथवा प्रिय क दीषकालीन विरह की सम्भावना के कारण करण की उत्पत्ति दिखायी गयी है ।

आनन्दप्रवाश दीक्षित लिखते है—शोक का प्रभाव भिन भिन व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार ग्रहण करते हैं—जितना ही अधिक विवेक जाग्रत रहता है उतना ही शोक का कष्ट सहन कर लिया जाता है ।'

इस नाते ता मानस के पात्र अधिक विवेकमय प्रतीत होते हैं । चरित चित्रण के प्रसंग म इसका उल्लेख किया गया है । मानस के पात्रा म शोक अपनी चरम सीमा पर पहुचता है किन्तु पात्र अदभुत सधम एव विवेक का परिचय देते हैं, एसा परिचय पूर्वाचलीय बगला और उजिया रामायणा म नहीं मिलता ।

० असमीया रामायण के दशरथ की अत्यधिक पीडा है । उहे नेत्रो से दिखायी नहीं पडता और बोल सुनायी नहीं पडत । पुत्र का स्मरण करते ही हृदय जादो-लित हो जाता है । उनकी आकाशा है अब तो राम ही बाप कहकर स्नेहपूर्वक कठ

१ मानस—७ ७६ १० एव ७ ७७ ।

२ अजमु होउ जग मुजमु नसाऊ । नरक परी बर सुरपुरु जाऊ ॥

सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन जोट रामु जनि होही ॥ २-४४ १,२ ।

३ घनजय—दशरूपक ४ ८१ ॥

४ आनन्दप्रवाश दीक्षित—रस सिद्धान्त स्वरूप विश्लेषण, प० ३५३ ।

से लग जाए, तो मानो यह अमृत पीकर वे चंच जागें ।' लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम अत्यन्त शाक-संतप्त हुए, उनके हाथा से शर धनु भी गिसक पड़े—

मत्पुत्रात् प्राप्ति मोर मिलिला समरे ।

गर धनु मोहर हातर सति परे ॥ ६१५३

वरण राम का सबसे अच्छा वपन शकरदेव ने उत्तरवाण्ड में किया है । यहा सीता मौन कपोती नही रही, निष्पापा सती बाग-बाग की लाञ्छना से अतीव क्षुभ होकर राम को ऐसे कट्टु वचन बहती है, जैसे किसी रामायण में नही बह गये होंगे । उनके श्लोक का परिचालित बरन वाला भाव पति एव पुत्रा के प्रति अत्यग्र प्रेम है साथ ही अपनी लाञ्छित स्थिति से भी वे अत्यधिक क्षुभ हैं । अन्त में निस्सहाया नारी का वर्णन रूप ही सामने आता है वे कौशल्या को प्रणाम कर बहती हैं— देवी मेरे पुत्रा का अपना पुत्र बहन में राम को लज्जा जाएगी, तुम्हीं इन दोना का पालन करना । फिर व दाना पुत्रा का बण्ड स लगाकर अतिम विदा देने हुए सम-झाती हैं—लडना नही । मेरे लिए चिंता न करना । मैं तुम दाना के दुख-दुर्गति का साथ ले कर जा रही हूँ, तुम मेरी आयु लेकर जीना । अब शोक मोह से हीन होकर सीता ने बड़ी कठिनाई के साथ आखें पाछकर अत्यन्त समादर-सूचक राम की तीन बार परिश्रमा की । चरणधूलि का अपने केशा में मलकर प्रणाम कर बहा— प्रभु सुखसूचक राज्य भोगना । मैं पाताल जा रही हूँ । हृदय के खेद से जो कुछ कह दिया क्षमा कर दना । यह मरा दुभाग्य है कि तुम्हारे जैसे स्वामी की सेवा न कर सकी ।^१

राम बठोर थे, क्या राम ने यत्रणा का अनुभव नही किया ? जिस दिन सीता निवासन हुआ उसी दिन से उन्होंने अनपान ग्रहण नही किया वे अवाक् रहे । रोते रोते उनके मन स्तब्ध रह गये उन्हें बार बार यह बात कचोट उठती कि उन जैसे पापी न गभवती स्त्री की घर वन में त्याग दिया । क्या वह सुकुमारी घोर वन में जीवित रह सकेगी ? सीता के पाताल प्रवेश के पश्चात सारी रात उठत-बैठत बीत जाती । वे सोत हुए शिशुना की गल स लगाकर राया करत । उनका चित्त शान्त न रहता स्वप्न में भी सीता-सीता कहकर चीम उठत ।

शुतिला गय्यात दुइ पुत्र गले धरि ।

सोतके पाञ्जरि मिजे सीताक सुमरि ॥

१ चक्षुवे नेदेखो मइ नुचुनोहो बाल । पुत्र सुमरत भन हृदय आत्तोल ॥

एरे गवे रामे बाप बुनिया मानय । स्नेहहृपे जासि ग्रीवे चापिये धरय ॥

अमृत पीया यन जीवय आतुर । —छंद २१८० ८१ ।

२ असमीया रामायण—छंद-सख्या ७०८८ से ७०९४ ।

३ वही—६७३५ ३६ ।

कोवारत निगास नाहिके चित गान्त ।
स्वपनतो सीता सीता बुलिया चेष्टवान्त ॥^१

० बगला लेखक के ग्रथ म भी शोक के कई अवसर आय हैं । अधिकाश अवसर पर ही पात्र रोत हैं और वेदना से अधीर होकर धूल म लोट-पाट (गडागडि) होते हैं । सीता की परीक्षा वाला अवसर सबसे अधिक मामिक है, यहाँ सस्ती भावुकता नहीं है । सीता ने लज्जा और ग्लानि स अत्यन्त अधीर होकर ही कहा ।

कुलवधु यत नारी तारा थाके घरे ।
सभाते परीक्षा दिते भ्राति बारे बारे ॥
भ्राजि हैते धुचुक् तोमार साज दुख ।
भ्रार येन नाहि देख जानकीर मुख ॥
निरवधि अपवाद दितेछु भ्रामारे ।
समाय परीक्षा दिते भ्रानि बारे बारे ॥
जमे जमे प्रभु मोर तुमि हप्रो पति ।
भ्रार कोन जमे ना करो दुपति ॥

(सभी कुलवधुएँ अपने घर म रहती हैं मैं सभा म बार बार परीक्षा देने आती हूँ । आज से तुम्हारा लज्जा दुख दूर हो और अब जानकी का मुख न देख सको । मुझे सभा म बार-बार परीक्षा देने के लिए बुलाकर निरन्तर क्लक देते हो । हे प्रभु जम जम मे तुम्हीं मेरे पति होना किन्तु किसी भी जम म मेरी ऐसी छीछालेदर न करना । (प० ५७२ ५७३)

अन्त समय उपस्थित होने पर—पाताल प्रवेश करते समय सीता ने दोनों पुत्रा की ओर नहीं देखा । राम को देखती हुई वे पाताल म समा गयी ।^१

अश्रुपूण नत्र वाले राम को भी सीता के बिना सारा ससार शून्य लगने लगा, वे पागल जैसे हो गये और व्याकुल होकर पृथ्वी पर लोटने लगे ।

देखेन ससार शून्य येमन पागल ।

भ्रुमे गडागडि धान हृदया निकल ॥ ४४१

० उडिया रामायण मे माया सीता का वध जात कर राम अत्यन्त शोक ग्रस्त हुए । यहाँ भी लेखक राम के द्वारा सीता के शमोग मुख का वणन कराता है । इसम सदेह नहीं कि राम की विरह-नातरता मामिकता के साथ चित्रित है किन्तु राम के द्वारा सीता के भ्रग प्रत्यगा एव उनके प्रसाधनो का अधिक वणन है । इसमे दाम्पत्य प्रेम की भी भन्नक है किन्तु यह विलाप एक काम विह्वल पति जसा है । वे कहते हैं,

१ असमीया रामा०—७१३६ ।

२ नाहि चाहिलेन सीता उभय द्याआयाल । श्रीराम निरखिया प्रवेशे पाताले ॥५७३॥

अब मैं किसके लिए भग्न भारकर लाऊँगा, मैं किसके साथ पासा खेलूँगा, बेतकी पुष्प किसके जूटे में लगाऊँगा जिसके वक्ष पर कस्तूरी का लेप करूँगा आदि ।^१

निर्वासिता सीता भी दुःखित हावर दाम्पत्य सुख का स्मरण कर चिन्तित होकर लक्ष्मण से कहती हैं—अब राम किसके मुख का चुम्बन दूँगे किसके कुचों पर पत्रावली लिखेंगे, किसका एकांत में लकर बेलि करेंगे किसके मुख को देखकर हँस दिया करेंगे किसके चरणों में आलता दूँगे । किसके नेत्रों में काजल लगाएँगे, किसके मुख में मेरे स्वामी पान खिलाएँगे ।^२

पति का दुलार पायी हुई पतिप्राणा नारी पति की इन क्रियाओं का स्मरण करेगी ही किन्तु पुत्र-तुल्य देवर के सम्मुख ये उक्तियाँ उचित प्रतीत नहीं होती । कहा जा सकता है कि सीता शोक के आवेश में सुधि खा बठी थी । ऐसा नहीं है बल्कि ही सुधि खा बठता है । सीता के भारतीय गृहिणी रूप का चित्रण अवश्य ही प्रशंसनीय है । भारतीय बधू सम्भवतः अपनी मृत्यु उपस्थित हान पर भी पति की चिन्ता करती रहती । इसी प्रसंग में आगे सीता को राम की सेवा के लिए चिन्तित देखा जाता है । उन्हें चिन्ता है कि उन्हें पहनने के लिए खड़ाऊँ आदि कौन देगा । वे लक्ष्मण से अनुरोध करती हैं कि बला के अनुसार सभी नित्यकर्म करा दिया करना—बल जाणि कराइवू ताड कु नित्यकर्म —७ ११८ ।

जिनके चरणों में राज्य-वभव याछावर था उन राम का भ्राता-सहित जटा वनाता देख सुमन के नेत्रों में आसू आ गय, जानकी सिर पीटने लगी और शबर (गुह) ने अभिमान से मुह लटका लिया—२ ५१ ।

लक्ष्मण शक्ति के समय शोक बाध से विह्वल राम के अनुभावा का वणन इस प्रकार है—भाई का मुख देख रघुवीर विवल हैं, नेत्रों से भर भर आसू वह रह हैं । काय शोक से युक्त होन के कारण बोल नहीं पा रहे हैं ।^३

शत्रु पक्ष की नारियाँ तारा और मन्दादरी के शाक का भी वणन सहृदयता पूर्वक किया गया है । मेघनाद की मृत्यु पर रावण उस समभाता है, मन्दादरी बोली नहीं किन्तु उसका मौन अवनत मुख उसके अतस्तल की वदना प्रकट कर देता है—

मन्दादरी राणी ताकु न कहिला कथा ।

शोक मोले तलकु नुग्राइ अछि मया ॥ ६ २३४

एक अर्थ स्थल पर वह मुँह छिपाकर सिमकती पड़ी रहती है । यही मन्दादरी पति की मृत्यु पर अत्यन्त उद्विग्न दिखायी गयी है—

१ उडिया रामा०—६ १५५ ५६ ।

२ वही—७-११७ ।

३ भादर मुख चाहि विवल रघुवीर । नयनु अथु जन वहइ भरभर ॥

बाध शोक भर कहि न पारति वाणी ॥—६ १८८ उ० रा० ।

पुनि ताउरिगिमाति पनाहमा बुद्धि ।
 बुद्ध कर घालि तिन मात्स्यो कोइ ॥

(गुन म मात्स्य उगो बुद्धिगो मात्स्य केर दी । दाना हायां न पन स्यन तादिता करी मगी । ६ २६७)

० शीव न अर्यापिह आसि का पना मात्स्य म मात्स्य का हाया है । उता प्रिय पुत्र अब युवराज ता हा ही तनी मरगा उग श्रीपहाग तात वा के दुग भी सहने पड़ेगे—अगा सोतार दगरय अर्याप काज का अनुभव करी है । परोपी की बटु-बाणी उदीपन का वाय कर रही है ।

म्याहुत राउ सिधित भय गाता ।
 बरिनि बसपतह मातुं निपता ॥
 बटु सुत सुत घाय न याना ।
 जनु पाठीनु शीन बिनु पानो ॥
 पुनि बह बटु बठोर बवेई ।
 मनहुं घाय महू माहुर बेई ॥^१

परबटे परो के समात छत्रपटान हुए राजा राम राम रट रट हैं । य सत्यमानी हैं, जो वचा दे चुने अर्याप तही हो सान । अब ता यनी उपाय रट गया है नि प्रात काल ही न हो और कोई राम को बताये ही तही नि बग हुआ—

राम राम रट बिकल भुमानू ।
 जनु बिनु पल बिहग बेहानू ॥
 हवये मनाय मोह जनि होई ।
 रामहि जाइ कह जनि कोई ॥^१

ब्रह्मत्व के आराप से तुनसीदाम के जय प्रसगा की मामिषता म भने ही बमी आ गयी हो किनु राम के वियोग-जनित दुख म अत्यन्त उतरटता का दशन होता है । वे अपने प्रिय उपास्य से विरह का चित्रण अत्यन्त तमय होकर करत हैं । राम को विदा कर रिक्ता हस्त लौटते हुए सुमत्र की कसी करण स्थिति हो गयी है—

लोचन सजल डीठि भइ थोरो ।
 सुनइ न श्रयन बिकल मति भारो ॥
 सूणहि अघर लागि मुहू साटी ।
 जिउ न जाइ उर अरवि कपाटी ॥

१ मानस—२ ३४ १ ३ ।

२ वही—२ ३६ १ २ ।

बिबरन भयउ न जाइ निहारी ।
मारसि मनहुँ पिता महतारी ॥'

राम के विरह म कौशल्या पुरजन सग मग आदि भी दु खी चित्रित किया है। राजा दशरथ की मृत्यु से भी अया-या की स्थिति भयावह सी हो गयी है। हमण शक्ति प्रसंग म तुलसीदास ने राम का शोक परिपूर्ण चित्र प्रकृत किया है। 'ता क वचना का सत्य करने के लिए जिस राजकुमार न राजसुख छाडा पत्नी हरण कलकित दु ख सह लिया किन्तु वतव्य-पथ स विचलित नहीं हुआ वही राजकुमार ने छाया-सदश भाई की पीडा न वख सका। वह यहाँ तन कट उठा—
जो जनतेउँ धन बहु विछोहू ।

अपने लिए पिता माता का भी त्याग देन वाल एस भाई के बिना राम किस मुह स अयाध्या लौटें। रोग क्या कहेंगे स्त्री के लिए प्यारे भाई को खो दिया। जिस माँ के पुन का हाथ पकडकर उह सौपा था उसका ही वे क्या उत्तर देंगे ?
भरत को जब पात हुआ कि हनुमान को बाण से गिराकर उन्हाने मरणा-सन लक्ष्मण क उपचार म बाधा पहुँचायी है तो उन्हें मर्मतक कष्ट हुआ। अपने को सब अनर्थों की जड समझकर कितनी ग्लानि एव यत्रणा से विवक होकर उन्हाने म वचन बहे हैं—

महह देव में कत जग जायउ ।
प्रभु के एकहु काज न आयउ ॥ ६५६-१

रोद्र-रस

बिभी प्रतिपक्षी दुराचारी अथवा अपकारी व्यक्ति की दुष्चेष्टा म उत्पन्न शोक ही इस रस का मरु-दण्ड होता है। प्राय शत्रु ही इसका आलम्बन होता है। रामायण म अपकार करने वाल पात्रा के प्रति श्राघ प्रश्रित किया गया है। य स्थल है—परगुराम-लक्ष्मण सवा^१ भरत आगमन पर लक्ष्मण का शोक दशरथ के प्रति लक्ष्मण राम के प्रति सीता राधासा क प्रति राम एव रावण क प्रति मगद का शोक तामसिक है अतएव राक्षस एव उद्धत मनुष्या म ही रोद्र रस अधिक दिखाया जाता है। रामायणा म सीता द्वारा प्रताडित होकर रावण श्राघ की व्यजना करता है—

मानस—२ १४४ ३।२ ।

मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहहु बिपिन हिम आतप वाता ॥ ६६० ४।
जहउँ अवष कौन मुहू लार्ई । नारि हनु प्रिय भाइ गवार्ई ॥ ६६० ११ ।
सौपेसि माहि तुम्हहि गहि पानी । सब विधि सुखद परम हित जानी ॥
उतव काह बहउँ तहि जाई । उठि तिन माहि सिम्बावहु भाइ ॥ २६० १४, १६ ।
राजकुमार पाण्य—रामचरितमानस का शास्त्रीय अध्ययन पृ० २६१ ।

(१) असमीया रामायण का रावण सीता के नराशय वचन सुनकर रक्त चक्षु हो गया। उसकी जघाएँ कांपने लगी। हाथ पीसकर एव क्रोध-मूवक देखता हुआ वह दसो सिर प्रताडित करता है—४१८३।

सीतार शुनिया हेन नराशय वचन ।
क्रोधे दशप्रोव भला रक्त नयन ॥
उर दुइ बम्पावय पिने हाते हात ।
कटासे क्रोधिया भ्राञ्चोरय दगमाय ॥

बंगला रामायण में वह बीसो दत्त पक्तियाँ बिटकिटा रहा है—

करे दुष्ट फुडि पाटि दत्त कडमडि—१५२

उडिया रामायण में रावण नाक फुलाकर बीसो नेत्रो से देखता है—

नासा फुलाइए बिश लोचने चार्हिला । ५ ६१

मानस में भी वह सीता पर रूठ होकर उस तलवार से काटने के लिए उद्यत होता है। यहाँ क्रोध की बहुत सफल व्यञ्जना नहीं है।

(२) रावण के अतिरिक्त अय पात्रो में प्रधान हैं क्षत्रिय लक्ष्मण।

असमीया रामायण में क्रुद्ध लक्ष्मण का रूप इस प्रकार है—

हेन शुनि क्रोधिलत लक्ष्मण प्रधान ।
खाण्डक भङ्गुरि कम्पे तरतरि मान ॥
तारा येन रक्त नयन दुइ फुरे ।
अबिरल घारे येन मेघजल भुरे ॥
भ्रकुटि फुटिल आलि भगल बदन ।
रामक सुलिला महा कोप करि मन ॥^१

असमीया रामायण के उत्तरकाण्ड में शरददेव ने सीता के शोध की अति मार्मिक व्यञ्जना की है। गर्भावस्था में राम ने सीता को निर्वासित किया था। भले ही उन्होंने राजघम का निवाह किया हो वित्तु पतिघम का निर्वाह वे नहीं कर सके थे। सीता की मानसिक स्थिति को पहचानकर तथा शुभ लोक हृदय का पथ लेकर सीता के सात्त्विक शोध-युक्त वचन प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है। सीता ने बहुत-कुछ कहा है यहाँ केवल कुछ चुनी हुई पक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

जान्वत्य समान कोपे विस मोहे गान्त ।
धने धने कटासे रामक लागि चान्त ॥
भये लात्रे जानकीक चाहिये नोवारि ।
याकिता सङ्कोच भाव राघव मुरारि ॥

एकचित्ते करिलोहो ब्राह्मण्डे से सेव ।
 मइतो जानो स्वामीसे परम मोर देव ॥
 दुष्टे दिले अपयण ताते भ्रान त्रास ।
 छले निया दियाइलत भ्रामाक निर्व्वास ॥
 येवे लागे एरिखे भ्रागते एरा मोक ।
 गभते मारिखे चाइला बुइ गुटि पोक ॥
 स्वामी हेन निदाहण कत भ्राछा शुनि ।
 चाइबो इहान मुख मइ किवा गुणि ॥
 बोलाइबो तोमार भ्रारो घरर घरणी ।
 तेवे भोत परे नाई नारी निलाजिनी ॥

(उग्र क्रोध के कारण सीता का चित्त शांत नहीं है। वे तीक्ष्ण कटाक्षा से राम की ओर देख रही हैं। राम भय एव लाज के कारण सीता की ओर देख नहीं पा रहे हैं। वे ससङ्कोच स्थित हैं। सीता ने कहा, मैं एक चित्त से सेवा की है। मैंने यही समझा कि स्वामी मेरे परम देव हैं। दुष्ट ने अपयण दिया इसलिए डर गय और मुझसे छल करके निर्व्वास दिया। इस प्रकार गम में स्थित दो बच्चा को मारना चाहा। ऐसा कठार स्वामी तो कही नहीं सुना। मैं कौन से गुण से इनका मुख देखूगी। यदि मैं अब भी तुम्हारी गहिणी कहलाऊँ तो मुझसे बढकर निलज्ज नारी कौन होगी।—७०४८ ७१।)

दुर्वासा ऋषि के क्रोध का भी शंकरदेव ने वणन किया है, जिसमें हास्य का भी पट है।

० बंगला रामायण में क्रुद्धसप के समान फुफ्फारते लक्ष्मण का बार-बार वणन आता है—

प्रबोध ना माने बीर बालसप येन गज्जें ।

सुमित्राकुमार गिगु घनघन तज्जें ॥ १०५

० उडिया रामायण में भी लक्ष्मण क्रोध में अरुण-नेत्र होकर कांप रहे हैं। उनके अंग जल रह हैं। लाठी के प्रहार से जिस प्रकार साप गरजता है उसी प्रकार उनकी स्थिति है—

गुणित सउमित्रिर ये प्रज्वलित अग ।

घट्टि प्रहारे येसने गजइ पन्नग ॥^१

० मानस में भी सान्निव्य क्रोध का उदाहरण लक्ष्मण में मिलता है। जनक के बीर बिहीन मही^१ वाल शब्द किशोर लक्ष्मण सह नहीं पाये थे—

माते सतनु कुटिल मद् भोहैं ।

रदपट करवत तपन रितीहैं ॥ १-२५१ ८

चित्रकूट म भरत क जागमन का उनका आग्रमण समझार भी यह वीर क्रुद्ध होकर जटाजूट बांध शरसघान क तिर तत्पर हो गया था । उसका क्रोध से चारो ओर भय का वातावरण व्याप्त हो गया था ।

राम निदा सुावर मुद्ध अगद का रूप इम प्रकार चित्रित है—

कटकटान कपिकुजर भारी ।

दुहूँ भुज दण्ड तमकि महि मारी ॥

डोलत घरनि सभासद रते ।

चले भाजि मय माहत प्रसे ॥^१

परशुराम क्रोध की साकार मूर्ति हैं । लक्ष्मण अनुभाव हैं एव उनकी चपटाएँ उड़ीपन । राम की विनय से मुद्ध परशुराम कुछ शान हुए ही थे कि लक्ष्मण फिर मन ही मन कुछ कहकर मुस्करा पड़े । परशुराम फिर तडप उठे 'राम, तेरा भाई बड़ा पापी है ।

राम वचन मुनि कछुक जुडाने ।

कहि कछु लखनु बहुरि मुसकाने ॥

हंसत देखि नख तिल रिस ब्यापी ।

राम तोर भ्राता बड पापी ॥^१

वीर रस

भरत मुनि न वीर रस की गणना मुख्य रसाम की है । इसका स्थायी भाव उत्साह है । वीर रस और रोद्र रस का अंतर स्पष्ट करने में कुछ कठिनाई होती है क्योंकि दोनों के आलम्बन शत्रु तथा उड़ीपन उनकी चपटाएँ होती है ।

० असमीया रामायण में रोद्र रस का वर्ण स्थला पर वर्णन है किंतु वीर रस का कोई अच्छा उदाहरण प्राप्य नहीं है । रावण को प्रथम बार युद्ध क्षम में देखकर व युद्ध के लिए सोत्साह सन्निद्ध होकर वाल ५— स्त्री चोरा तोक आजि यमक पाठा इवो — (स्त्री चोर तुम्हें आज यम के पास भेजूगा—५३७२) ।

बेगला रामायण की स्थिति भी बहुत कुछ पूर्वोक्त रामायण जमी ही है । रावण को प्रथम बार युद्ध-स्थल में देख राम का सारा रूढ़ क्षोभ उमड़ आया था । व अपने भाई का आहत करन वाले रावण का दख युद्धोत्त होकर कहते हैं—जिसके लिए मैं अलक्ष्य सागर बाँध लिया जिसके कारण इतना दुःख पाया जिस कारण तुम सब (वानराणि) का इतना दुःख दिया आज उस परनारी चार का मार डालूंगा ।

१ मानस—६-३१ ३ ८ ।

२ वही—१ २७६ ५, ६ ।

यार लागि बाधिला म अलङ्घ्य सागरे ।
 यार लागि एत दुख पेपेछि अतरे ॥
 यार लागि तो सवार दिन दुख भरा ।
 मारिया पाडिब आजि परनारी चोरा ॥^१

किन्तु अनुभावादि के अभाव म बीर रस का पूण परिपाक नहीं दिखायी पडता है ।

० उडिया रामायण म राम के युद्धात्साह का वणन है । वे पुलकित हाकर धनुष^१ टकारते हैं । इस म भी अच्छा उदाहरण है लक्ष्मण का । मूर्च्छा स जाग्रत हान पर शोकप्रस्त राम के जथु दसकर मेधनाद का छल स्मरण कर एव सम्पूण सना के विकल वचन सुनकर लक्ष्मण के मन सात हो गय । उनका शरीर काप उठा । वे बाल में क्षनिय-पुत्र हु । हानि-लाभ तो लगा ही रहता है, एसा पुराणा म भी लिखा है ।

शुणिएण लक्ष्मण ये अरुण वण्ण नेत्र ।
 थरहर हीइएण कम्पइ तार गात्र ॥
 क्षत्रियर पुत्र मुहि मुहसिबि रणे ।
 अपचय उपचय अछइ पुराणे ॥^१

इन्द्रजीत का युद्ध अपने भाग म तन के लिए व युद्ध हाकर बार-बार प्रतिज्ञा करने लगे । इस बार भेंट हान पर वह प्राण लेकर न जा मक्गा । चन्द्र-मूय दाना ही इस वचन के साक्षी रहें—

इन्द्रजित युद्ध ये रहिला मोर भागे ।
 पुण पुण प्रतिज्ञा करइ बीर रामे ॥
 एवे भेटिले कि सेहि यिव प्राण घेनि ।
 ए क्याकु साक्षी भाअ चन्द्रमूय्य बेनि ॥

० मानस म बीर रस के अनेक उदाहरण हैं । सात्त्विक त्रापी स्वभाव के लक्ष्मण त्रोध की 'यजना व' साथ ही युद्धात्साह का भी परिचय दे जान हैं । भरत का ससय आना जान लक्ष्मण का उदाह देसन योग्य है —

उठि कर जोरि रजायसु मागा ।
 मनहु बीर रस सोवत जागा ॥
 बांधि जटा सिर कति कटि माया ।
 साजि सरासनु सापकु हाया ॥

१ वेंगना रामा० ३८०

२ गुणि रघुनाथ कर उडुडिने धनु । गुण टड्कारिण पुनकाइन य तनु ॥ ६-४५ ।

३ उ० रा०—६-७५ ।

४ वही—६ ७५ ।

प्राज्ञु राम सेवक जगु सेऊँ ।
भरतहि समर सिलावन देऊँ ॥^१

भरत से लडने के लिए निपादराज की सना या उत्साह अत्यन्त सुंदर है—

झंगरी पहिरि बूँडि सिर धरहीं ।
फरसा बाँस सेल सम बरहीं ॥
एक कुसल धति छोड़न छाडे ।
सुदहि गगन मनहु छिति छाडे ॥^२

सेवक का कष्ट सुनकर राम के हृदय में करुणा जनित वीरोचित उत्साह जाग्रत हुआ था और वह शत्रु का वध करने के लिए दृढ़ प्रतिन हुआ था ।

मुनि सेवक दुख दीनदयाला ।
फरकि उठों द्व भुजा बिसाला ॥
मुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकाँहि बान ।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गए न उवरिहि प्राण ॥ ४५१४ एव ४६

हास्य

वेश विन्यास, बाणी चेष्टा आदि की विवृति से हास्य की सृष्टि होती है ।

० अक्षमीया रामायण के उत्तरकाण्ड में भोजन भट्ट दुर्वासो की चेष्टाओं से हास्य प्रस्तुत किया गया है । अनेक पक्वान खा जान के कारण उनका पेट फूलकर ढोल हो गया है । फिर भी लाभ-वश खाय ही जा रह है पेट मलत जाते हैं । बोलने के साथ ही पेट से खाद्य-वस्तुएं निकलने लगी । उर्सास नहीं ली जाती गरदन लटक गयी पेट सुडसुडा रहा है डकारें आ रही हैं । पेट फटा जा रहा है । कौपीन ढीला कर रहे हैं ।

घन क्षीर क्षीरिचा टाइलत लागे माने ।
नधरय पेट पिठा पना परमाने ॥
दधि दुग्ध घत घोले भल गण्डगोल ।
ओफादिल उदर देखिय येन ढोल ॥
लोमत भुञ्जन्त तथापि तो जाण्टि जाण्टि ।
नपार त राखिवे मातते आसे याण्टि ॥
नपा त उसास आति ओलमिल धार ।
शुइ शुइ पेट बतो तोलत उगार ॥
टन टन पेट बतो डिलान्त बपिन । छंद ७२४६—५१

० झंगसा रामायण के लकावाण्ड में रावण विजय के उपरांत वानरो को भोज

१ मानस—२ २२६ १—३ ।

२ वही—२-१६०-५, ६ ।

दिया गया। उम समय उनको एक चरपरा लड्डू (भाल लाटू) परोस दिया गया, जिसे गान भर खाते ही आँखा स आँसू गिरन लगे। कोई गना खँखारता और कोई यू यू करता था।^१ लखक न नपथ चरित स इस परिहास की प्रेरणा ली है। इसका वणन कथाओ के अध्ययन म हुआ है।

•पूर्वाचलीय रामायणा म वन मध्य पले एव नारी से अपरिचित ऋष्य शृग का वश्याओ द्वारा मूख बनात हुए दिम्बाया गया है। उडिया रामायण म इसका अपक्षा कृत अधिक हास्यमय वणन है।^२ गोड-गापाल राम द्वारा प्रदत्त मणिजडित अगूठी के नग का किसी वक्ष का फल समभकर उसे कोई भूल्य नहीं दता। चेष्टा-व्यवहार आदि की विवृति के लिए हास्य का उदाहरण अयोध्याकाण्ड म मिलता है। भरद्वाज के आश्रम म भरत की सना और पुरवासिया का अच्छा समादर हुआ। मादक-वस्तुओ के सवन स महावत लाग घोडा की पीठ पर जा बठे और घुडमवार हाथिया की पीठ पर—

महुन्त याइ घोडार पिठिरे ये बसि ।

हाती पिठिरे ये बारुआल बसे आसि ॥

२-७६

• मानस के लखक तुलसीदास इन सभी रामायण-लखका की अपक्षा अधिक गभीर है कि नु हास्य के प्रसंग भी इन्हीं की रामायण म अधिक मिलते हैं। श्री राज बहादुर लमगाडा न ता मानस के हास्य पर पूरा ग्रथ ही लिख टाला है। व्यंग एव वनोक्ति के चमत्कार से युक्त हास्य के उदाहरण मानस के सवादा म अनेक मिल जाऐंगे।

परगुराम बसे ही चिटे हुए हैं और लक्ष्मण वन-वन कर उन पर व्यंग कर रहे हैं—

दूट चाप नाहिं जुरिहि रिसाने ।

बठिय होईहि पाय पिराने ॥

१-२७७ २

नारद मोह प्रसंग म नारद की आकुल स्थिति चित्रित कर हास्य की सृष्टि की गयी है। नारद समभत है विष्णु ने उन्हें अपना रूप दिया है अतएव व बड़े आत्म विश्वास के साथ सभा म बठे हैं। स्वयं द्वारा कथा इह भूलकर भी नहीं देखती। य अत्यन्त आकुल हो टाकर उचकत ही रह जाते हैं। इह क्या पता कि

१ बंगला रामायण—४४६ ।

२ ऋष्यशृग वश्याओ के वक्ष स वक्ष लगाकर उनके स्तना को ठेल कर तथा हँस हँस कर पूछत हैं— यह अपूव द्रव्य हमार यहाँ तो नहीं पाया जाता। एसा अच्छा पदाथ तुमने कहा पाया ?'

हिया कु हिया लगाइ उरन ठेसिला । हम हस होइ मुनि बाक्य पचारिला ॥

एहि त अपूव द्रव्य आम्भ देजे नाहिं । एठे भल पदाथ पाइल तुम्हे बाहिं । १-२१ ।

विष्णु ने बदर का रूप दिया है। हर गण इस तथ्य से परिचित होकर रस ले रहे हैं।

जेहि दिसि बठे नारद पूतो ।
सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूलो ॥
पुनि पुनि मुनि उपसहिं श्रकुलाहो ।
देखि बसा हर गन मुमुकाहो ॥ १ १३४ १, २ मा०

शंकर की बेप भूषा को लेकर ऐसे हास्य की सृष्टि की गयी है, जिसका रस वह भी लेता है जोकि स्वयं ही हास्य का आलम्बन है।

मनहो मन महेसु मुमुकाहो ।
हरि के बिग्य बचन नहि जाहो ॥ १ १२३

अनता एव वप विकृति से उत्पन्न हास्य वानरा की चेष्टाओं में मिलता है। वे मणि का फल समझकर खाने का प्रयास कर थूक दते हैं। विभीषण द्वारा पट भूषणा को उल्टा-सीधा पहनकर वे राम के सामने जा पहुँचे। राम उट देख देख वात्सल्य भाव से बार-बार हस पड़त हैं।^१

रामायण में शप रसा का भी यत्र-तत्र वर्णन मिल जाता है। अनेक स्थलों पर रसाभास भावशबलता एव संचारी आदि के भी सुन्दर उदाहरण मिल जाएंगे। भाव सौन्दर्य के धक्का म तुलसीदास का ही अधिक सफरता मिली है। इसमें सन्देह नहीं कि उड़िया लखन में भी अद्भुत क्षमता है किन्तु वह सबरी सब या तो नारी के मासल सौन्दर्य के चित्रण में व्यय हो गयी जयवा अपनी वदुत्तता का परिचय देने में। बेंगला रामायण में सहज लाकवथा का रस जग सौन्दर्य और असमीया रामायण में सममित सशिष्ट शली अपनायी गयी है। असमीया रामायण में साहित्यिक सौन्दर्य है किन्तु हम कुछ अधिक की आशा कर सकते हैं। तुलसी पर राम भक्ति का रंग गहरा है किन्तु हम पुन कहेंगे कि वे रस चित्रण में भी बजोड़ हैं।

असमीया, बेंगला एव मानस में शान्तरस मिश्रित भक्तिरस की प्रधानता है, एव उड़िया में शृगार-रस भक्ति की, विगुड शान्तरस में पयवसानता किसी का नहीं देगा गया।

प्रकृति चित्रण

मानस की गम्यता का परिवेश कृत्रिम है और प्रकृति का रूप है सहज स्वाभाविक। मानस प्रकृति का ही एक भ्रम है जो स्वयं उस पर हावी होना चाहता है।

१ जाइ जाइ मन भावइ माइ नहा । मनि मुनि मनि डारि कपि नही ॥ ६ ११६ ७
भानु कविह पट भूपन पाण । पनिरि पहिरि रघुपनि पहि आण ॥
नाना त्रिनग दगि सब बीगा । पुनि पुनि ह्यन बीगनाधीगा ॥ ६ ११७ १, २ ॥

प्रकृति से उसका सम्बन्ध अनादिकाल से है और वह अनन्तकाल तक रहगा। आज भी प्रकृति के नाना रूपा का देखने के लिए वह आनुर रहता है। ध्रुवप्रदेश, मरुस्थल, पर्वत के उत्तुंग शृंग महासागर की गरजती तरंगों एवं रत्नपिपासु जंतुआ से समाकीर्ण दुग्म वन उस बार-बार आमंत्रित करत हैं। उनके दुर्निवार आकषण को वह कटा टाल पाता है।

साहित्य में या तो मानव की अन्तःप्रकृति का वर्णन होता है अथवा प्रायः वाह्य प्रकृति के इसी निराडम्बर-मोदक का जोकि देश एवं ऋतु के अनुसार विविध रूपा की अभिव्यक्ति करता है।

प्राचीन-काल में वन-वान्तर प्रदेशों का प्राचुर्य था। जनावास सघन न था। मानव प्रकृति की उमुक्त वाद में स्वच्छन्द विहार करता था। वह सच्चे अर्थों में घरती या पुनः था। ऋषि लोग तो प्रायः ही सघन वनों में रहा करते थे। अनेक वनस्पतियाँ एवं नाना प्रकार के जीव-जंतुआ से जनना का परिचय रहता था। आयुर्वेद के ग्रंथों में वर्णित विभिन्न वनस्पतियों के रूप-रंग-गुण आदि के विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे पूर्वजों का प्रकृति-निरीक्षण कितना सूक्ष्म था, केवल वैदिक ऋषि ही उपास, मूल्य-मरत आदि प्रकृति के नानारूपा में अभिभूत रहना सो बात नहीं है। विजली की कड़क एवं चमक-शोभित गरजत मघ-मयूरा का नृत्य-पपीह की पुकार, शरद का स्वच्छ-हाम-वसत का विकास एवं घरा का पुष्प-समार प्रभृति-प्रकृति-व्यापार यदि रामायणकाल से लेकर मध्यकाल तक के सस्कृत-कवियों को चकित, अकित, प्रमुदित एवं प्रेरित करत आय हैं।^१

समस्त भाषा-ग्रंथों में ही न तो सस्कृत-साहित्य जसा सश्लिष्ट-वर्णन देखने में आता है और न यूरॉप का रोमानवादी एवं एंड्रिक-वर्णन ही। इस प्रकार के चित्रण का विकास तो आधुनिक-युग में हुआ। जिन कवियों ने कविता का रान-मभाश्री की चेरी बनाकर राजस्तुति एवं नारी-सौन्दर्य-वर्णन तक ही अपन को सीमित न रखा उन्होंने प्रकृति के स्वतंत्र रूप के दर्शन कभी-कभी कर लिये थे। ऐसे कवि प्रायः भक्त-कवि रहें हैं और इनका ध्यान ही स्वतंत्र प्रकृति-चित्रण की ओर न था। अपन आराध्य के गुण अथवा लीला-जादि के विकास के लिए ही उन्होंने प्रकृति का चित्रण किया था अन्यथा परम्परानुमोदन करत हुए उद्दीपन एवं अलंकरण के लिए ही उन्होंने प्रकृति का प्रस्तुत किया है।

आलम्बन-स्वरूप चित्रण—वाल्मीकि की रामायण-शताब्दिया-पूर्व के कानन-सौन्दर्य का हमारा सामन प्रस्तुत कर देती है। विभिन्न ऋतुओं के सौन्दर्य-कुहरे से ढकी नदियाँ मग्नताम-जलराशि, शीतल-आमन्त्रिण्डुओं को धूमर-मूँड-सिकाडते हुए

१ कृतिवास बंगला रामायण और रामचरितमानस पृ० २६४।

हाथी, गता व तवमा म भवभीत जन्मुमा आत्ति का विरमय वगत माता इम मय ही प्रतापुग की वार्षा नी म उपस्थित कर रगा है ।

भाषा रामायणकारा की कथर अभिर्गा । तया रहा । वरत उरिगा रामायण कार । अवश ही वार्षीव व अन्तरण वा भन्ता वा है । प्रगमीवा रामायण म राम सीता वा आर वगुन नि वि गा वर उगी गुणात मीगा व प्रगा म वरत है । व विप्रवूट व श्रुवा वा वगत एत जन्मा म वरगा है —

चित्रवूट पश्यतक देगिषोव सीता ।
परा धाम गौर वरा वरित सीमिता ॥
घोपरत मय येन देगिय गोभत ।
घाटिस निवनि येन वृषिवोर तुत ॥
गिरर उपरे मन्दाकिनी गुवत जस ।
तनक ढाकिषा येन वरत्रर घाट्यत ॥

(सीता चित्रवूट पया दया वर गये आमा म वगुति का गौर वण विप है । इसी उगर मय दग प्रवार शाभा वा रहा है । माता पथी वा गत आग वर आया हा । शिगर व उगर मन्दाकिनी वा जत एमा विगापी पन्ता है । अग वि वरत्रारन स्तन का ढौर गता है—२०८४ ८५ ।)

० बगला रामायण म प्रवृति का स्वतंत्र चित्रण वगुन कम है । जहाँ है भी वर महत्त्वहीन है ।

मन्द मन्द गणघट्ट वरे मुत्तमित ।
कोकिल पञ्चम स्वरे गाय कुट्टु गीत ॥
मधुकर मधुवरी भङ्गारे वानने ।
अप्सरारा गत्य करे ध्यानदित मने ॥ ५० १२८

० उडिया रामायण म लगन न स्वभावानुसार प्रवृति का विस्तृत वणन प्रस्तुत किया है । अनेक स्थला पर पगु पथी, फूल वधा आत्ति की सम्बन्धी गूरी प्रस्तुत की गयी है, किन्तु साथ ही अनेक स्थला पर स्वाभाविक वणन है ।

काहिं पुण अजगर विप्रद पवन ।
वाहिं हस्ती दिग्द ये कण्ठ गरजन ॥
समस्त फल वक्षरे पाचिए भङ्गति ।
शुलिसा पत्रमाने वक्षर भङ्गियाति ॥
घाउश वणु जामु अछ त ये मगा ।
केतकी बुदा तलरे गोइछत शशा ॥
काठकटा घाङ्गिया हाणति छडि गछ ।
पलाति जम्बुने ये चाहिए पछ पछ ॥

बेलवक्ष उहाड र मयुर योयान्ति ।
 चुत बन बसिए कोबिल राय छत ॥
 मिहङ्कुर सोज प प्रदइ बाहिं पडि ।
 निम्यफलमान बाहिं पडि अदि भडि ॥

(कही अजगर पन्न पी रहा है, कही हाथी चिपाड रहा है। पक टुए फन वणा स गिर रह है। मूव पत्र वणा म भर रह है। वामा के वन म मच्छर उत्पन्न हा गय है। बतकी की भाडिया म खरगाश मा रह है। कठफाडवा पशो पड पर तिरछे बटे हुए प्रहार कर रह है जिस मुनकर गीदड (मुड मुडकर) पीछे की आर दानन हुए भाग रह है। बलवक्ष पर मार बुहक रह है। आग्रवन म बठी हुई वायन शब्द कर रही है। कही-कहा मिह क पद चिह्न अरित है कही नीम फन विछे हुए है—४१०)

उडिया-नमक न वमन्त, शरन और वर्षा ऋतुजा के भी मुन्दर चित्र प्रस्तुत किय है। गरजत हुए समुद्र के ऊपर म बादला का उटना। चद्रमा और ताराओं का घूमर वान्ति हाना आदि दिखाकर आपान मान की स्थिति का इम प्रकार वणन है

घ्रापाठ मास प्रवेग होइलाक यहू ।
 भिमिभिमि करिए से बरपइ तहु ॥
 विजुलि देखाइए मारइ घडघटि ।
 कि जाएि पवत, शृ ग पडिबकु भडि ॥

(जसे ही आपाठ मान का प्रवेश हुआ रिमभिम वर्षा प्रारम्भ हा गयी। विज्रनी चमक-चमक कर तडतडान लगी। कौन जान पवन के शृग न उलझ पडें।)

—४-४३

गगा नदी का वणन कर लगक न सशिनष्ट चित्र अकित किया है। पृथ्वी मुदरी गगा का साथी पहन है। इस माडी म फूलपत्ती एव तटा का मुन्दर वणन है।^१

० प्रकृति क मुक्त-सौन्दर्य का वणन गोस्वामी जी को अभीष्ट था। इष्ट देव राम के त्रियाकलापा स मन्वर्चिन प्रकृति क रूप का ही उन्हेनि यत्र-तत्र उपस्थित किया है। धारमीकि अथवा बलरामनाम क समान उहनि विस्तृत चित्रण नहीं किय है।

भरना भरहि मत्त गज गाजहि ।
 मनहुं निसान विविध विधि बाजहि ॥
 चक चकोर चातक मुक पिक गन ।
 बूजत मजु मराल मुदित मन ॥^१

इम प्रकार की पकितया म उनक प्रकृति प्रेम का विशेष परिचय नहीं मिलता,

१ उडिया रामायण—१ १०६ ।

२ मानम—२ २३५ ५ ६ ।

किन्तु इगला साहाय यह नहीं है कि उह प्रकृति-मो-य की अनुभूति नहीं भी एवं म
मो-य परिष्कृत बना म अधम म । किष्कि-धावाण्ड व सर्वा मरुद वगन की
अर्द्धातिमा म यि प्रथम परमा का ही पड़ा जाण ता शिवापर बना प्रस्तुत
हो जाण्गो ।

मारण का या-गा का दग तापा वादना का भुंज भुंज कर वगना
शिगरा का जन किन्तुभा की पात्रे गटा दु-ग-ना-या का अ-ग-व-धि ग ही उमद
पडा पृथ्वी व रग म व-लि-ज-न का मटमेना हाता, पाग भार ता गिमटकर जा
का मरावरा म भरता—जा अा-ध्यापार ह्य माग म मिय जाले ।

उद्दीपन-स्वरूप चित्रण—माग हृदय म उठो वा-न गुण-गुण म पूण भाग पर
परियण का अवश्य ही प्रभाय पटना है । जू की दुगली म व्याग म गाय हूण नाम-
नायिका व ह्या म सहारा गम मरुत्यन व प्राणनायक वगदरा व मध्य रति भाग
की उद्दीप्ति नहीं गमी उमय लिए माग व गुणवाटिका जमा वातावरण अनुभूत
रहेगा । इमी प्रकार भय व उद्दीपन व शि-ग-ति का पात्र अ-परार जिजाता उ-
ओर तियारों व स्वर अधिच गहायन रह्य । आत्र भी वया-नाहित्य व तय
आयामा म भावा की सपन अभिव्यक्ति के लिए अनुभूत वातावरण का सहायता सी
जाती है । भारतीय-गाहित्य म उगार रग के समय एव विद्या वग के चित्रण म
प्रकृति व उद्दीपन रग का चित्रण हुआ है । गाहित्य म एमी परम्परा चल पटी कि
सयोग और विद्या पक्ष व उद्दीपना व लिए वध-वधाय चित्रण हात लग, प्राय गिन
गिनाय प्रकृति उपकरण के नाम प्रस्तुत किय जान लग ।

भाषा रामायणों म भी इस परम्परा का निर्वाह हुआ किन्तु बहुत कम माग
म ।

जसमीया रामायण के किष्कि-धावाण्ड म विरही राम की स्थिति का चित्रण
निम्न पत्तिया म है—

मेघर गज्जन सुनि मरा करे नाद ।
सीताक सुमरि रामे करत विषाद ॥
स्वभावे बरिषा काले काम घातिरेक ।
एक गोटा दिने पाय एक बरिषेक ॥^१

बेंगला रामायण के राम सयोग-वालीन सुखदायी प्रकृति का दु खदायी रूप म
वदत जान ता वणन सीता स करत हैं ।

सुधाकरे ज्ञान करिताम दिबाकर ।
ताप भये ताहार ना हताम गोधर ॥

भ्रमर ऋङ्कार ध्रार कोकिलेर ध्वनि ।
श्रुनिते हृदयं ज्ञानं दशे येन फणि ॥^१

उडिया रामायण

सबदा हि से बनरे वसइ वसत ।
श्रीरामइकु धारइ ये विषम ज्वरत ॥

(उस वन में सबदा वसन्त रहता और वह श्रीराम को विषमज्वर से पीड़ित करता—३५।)

मानस में नारद का तणध्रष्ट करने के लिए काम ने प्रकृति में जा नवीन परिवर्तन कर दिया था, वे रति भाव उद्दीप्त करने वाले थे।^१ पुष्प-वाटिका का वातावरण भी राम और सीता जैसे विशोर विशारी के लिए उद्दीपक बन गया था। लता की ओट में छिपे हुए अथवा उसे विलग कर प्रकट होते हुए राम का देख सीता विभोर हो जाती हैं। वे मग, पक्षी आदि का देखने के बहाने राम की छवि देखती जानी हैं।

सीता के वियोग में राम बादला का गजन मनुकर डर जाया करते थे। सीता से मिलकर उन्होंने मुक्तायक प्रकृति को विरहबाल में दुःखदायक रूप में परिवर्तित हो जाने का वर्णन किया है।

कहेउ राम वियोग तव सीता ।

मो कहूँ सकल भए बिपरीता ॥

नव तरु कितलय मनहु वसानू ।

कालनिता सिम निस ससि मानू ॥ ५१४-१२

अलंकरण स्वरूप प्रकृति चित्रण—इस प्रकार के प्रकृति चित्रण में भी प्रधाता भावा अथवा वष्य विषय की ही रहती है उन्हें ही अधिक स्पष्ट करने के लिए लक्ष्य प्रकृति के उपकरणों की सहायता लेता है। भारत में किसी न किसी रूप में प्रायः सबत्र उपलब्ध कमल, काकिल नाग बिम्ब, भ्रमर मग बदली चन्द्र सूर्य, नक्षत्र आदि के उपमानों के रूप में प्रकृति का वर्णन हुआ है।

यदि कवि में सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति है तो इस प्रकार के वर्णन में भी प्रकृति चित्रण की दक्षता का वह परिचय दे सकता है। विषय अथवा भाव का प्रकृति देता हुआ भी वह उनके लिए ऐसे उपमान जुटा सकता है जिससे उसका अथवा पाठकों का

१ (मैं चन्द्रमा को सूर्य समझता था और उरगों ताप के भय से सामने नहीं जाता था। भ्रमर की ऋकार और कायल की ध्वनि सुनने पर ऐसा लगता था माना सप-दर्शन कर रहा हो—प० ४४५।)

२ बुभुमित विविध विटप बहुरगा। कूजहि कोकिल गुर्जहि भगा ॥

चली मुहावनि विविध बयारी। काम वृसानु बढावनि हारी ॥ ११२५-२३।

जिन्ट पगिया है। वाल्मीकि रामायण में हम प्रारम्भ व यथा प्रसन्न मग्ग्या म मित जाणम। अयथा सगत परम्परागुण उपमात्ता की मूर्ता विहित भाग म प्रभुता कर्मेता, जोति पाठा व विण तीरग ही हायी। हम प्रारम्भ व प्रवृत्ति विवण वा यथा दगा अध्याय म अ यत्र हुआ है। दगतिण यही ताता ही पर्याप्त है।

प्रवृत्ति चित्रण व अय प्रचार—अ य तर्दं श्लिष्या म भी प्रवृत्ति वा अण्यथा विद्या जा राता है किन्तु मभी अतालय रामायणा म एक गाथ उता। प्राति तत् हो सकती अतएव उता तुवतात्मा यथा गति है।

गोस्वामी तुलसीदास न प्रवृत्ति म सहानुभूति वा छाभाग पाया है। मग्ग्या जग का सिया राम मय मानने या न गान्ताभी जा वा। राम की उपग्निति मग्ग्या म प्रवृत्ति वा वण-वण सप्राण एव सवत्त शी न टियाया गया है।^१ मुत्तुमार राम का धूप से वचान के लिए मघ छाया वरत फिरा है। राम व प्रिय हान म भगत व प्रति प्रवृत्ति उनस भी अधिन सहानुभूति प्राट करी है।

बोमल चरन घलत विनु पनर्हा ।

मइ मडु भूमि सनुचि मन मनहो ॥

बुस बटक बाबरो बुराई ।

बटक बठोर बूचस्तु बुराई ॥ २३१० ४५

राम एव राम के परिवार से साथ सहानुभूति हान के वाग्ण पशु पक्षी भाजा करना छोड देते हैं।^१ सीता हरण के समय भी उनके दुग स चराचर जीव दुगी दिखाये गये हैं।

सीता क विलाप मुन भारी ।

मए चराचर जीव दुखारी ॥ ३२८६

बगला रामायण म भी प्रवृत्ति यत्र तत्र मानव के साथ सहानुभूति रखाती दिखायी गयी है। कमल नयन राम का रोता देग सभी वय पशु-पक्षी रो उठन हैं—

बादिद्या बिकल राम जले भासे भांखि ।

रामेर क दने कादे व य पशु पाखी ॥ १० १५८

उडिया रामायण म विरही राम के प्रति तर लता रदा करते हैं वक्ष पत्र त्यागते हैं—

१ जब तें आइ रहे रघनायबु । तवतें भयउ बनु मगलदायबु ॥

फूलहि फलहि विटप बिधि नाना । मजु बलित वर बेलि बिताना ॥

३ १३६ ४ ६ ।

२ जहें जह जाहि देव रघुराया । करहि मघ तह तहें नभ छाया ॥ ३ ६ ५ ।

३ पशु खग मगह न कीह अहारु । प्रिय परिजन वर कौन विचारु ॥ २ २७६ ८ ।

१ राम वन यान्त तम् लताम् रोति ।

२ राम वन यात वक्ष पत्र य भङ्ग ।—२ ४४

उपदेशात्मक प्रकृति चित्रण—गास्वामी तुलसीदास १ भागवत से प्रेरणा लेकर प्रकृति चित्रण में उपलक्षात्मकता का मिश्रण कर दिया। जघाली के एक चरण में प्रकृति का सुन्दर निरीक्षण रहता है एक द्वितीय में काइ चुभती हुई मूकित वर्णित हाती है। दोनों का ही महत्त्व है। उनकी मूकियता शिक्षित एवं अनिश्चित दाना का बठस्थ है। इस प्रकार का प्रकृति चित्रण उनके बलाकार तथा सुधारक सत ३ गुणा का समवय सा करता है।

गाँवों में आज भी बपा हान पर लाग बड़ी शक्ति के साथ किष्कि-बाकाण्ड का वर्णन-चरणन गात है। किसी पर आक्षेप करते समय अथवा नीतिकथन के अवसर पर ऐसे उद्ध पढ़ते हैं—

दामिनि दमक रह न घन माहीं ।

खल क प्रीति जया धिर नाहीं ॥

धरपाँह जलद भूमि निभराएँ ।

जया नवाँह बुद्ध बिद्या पाएँ ॥ ४१३ २ ३

आज भी जागे बढ-बढ कर बात करने वाली नारी का तिलमिला देन के लिए निम्न अर्धांगी का प्रयोग देखा जाता है—

महाबष्टि चलि फूटि किन्नारों ।

जिमि सुतत्र भएँ बिगराँह नारों ॥ ४१४ ८

फिर भी शुद्ध प्रकृति चित्रण की शक्ति से उपदेशात्मकता बाधक तो है ही।

सवाद सी दय

सवाद नाटक का प्राण है। सवाद के द्वारा ही नाटक की कथा का विकास होता है। इसके साथ ही पात्रों की प्रकृति, उनके चरित्र आदि का भी पश्चिम मिलता है। चरित्र चित्रण के लिए पात्रों का सवाद से बढकर और कोई अच्छा साधन नहीं है। इसीलिए कथा में भी सवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कथा साहित्य भी इस तत्त्व की उपक्षा नहीं कर सता है। सवाद प्रायः दो या अधिक पात्रों के मध्य होना है और प्रायः पारस्परिक कथना की काट में तब महत्त्व प्रस्तुत किया जाता है।

सवाद के लिए आवश्यक है कि उनकी भाषा पात्रों की प्रकृति के अनुकूल हो, उमर सक्षिप्तता हो, वह पात्र के अंतर्गत का स्पष्ट करना हो एवं वह सहज और राखव हो।

जिस सवाद में पात्रों के प्रेम, नाथ, घणा, व्यग आदि का जितना संशक्त अभिव्यजन होगा, वह सवाद उतना ही अधिक सफल होगा।

समायणा में कई स्थल ऐसे हैं जहाँ पात्र पारस्परिक कथापकथन करते हैं।

निवृत्त परिचय हो। वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार के वणन प्रचुर मन्था में मिल जायेंगे। जयथा लेखक परम्परानुगत उपमाना की सूची निर्लिप्त भाव से प्रस्तुत करेगा, जोकि पाठक के लिए नीरस ही होगी। इस प्रकार के प्रकृति चित्रण का वणन इती अध्याय में अयत्न हुआ है इसलिए यहाँ इतना ही पर्याप्त है।

प्रकृति चित्रण के अन्य प्रकार—जय कई दृष्टियाँ से भी प्रकृति का अध्ययन किया जा सकता है किन्तु सभी आलाच्य रामायणा में एक साथ उनकी प्राप्ति नहीं हो सकती अतएव उनका तुलनात्मक वणन कठिन है।

गोस्वामी तुलसीदास ने प्रकृति में सहानुभूति का आभास पाया है। समस्त जग का सिया राम मय मानने वाल ग्वास्थाभी जी को राम की उपस्थिति एव सस्पश से प्रकृति का कण कण संप्राण एव सवेदन शील दिखायी पड़ता है। 'सुकुमार राम को धूप से बचान के लिए मेघ छाया करत फिरत है।' राम के प्रिय हाने से भरत के प्रति प्रकृति उनसे भी अधिक सहानुभूति प्रकट करती है।

कोमल चरन चलत बिनु पनहा ।

मइ महु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥

बुस कटक काकरो कुराई ।

बटुक बठोर कुबस्तु दुराई ॥ २३१०४५

राम एवं राम के परिवार से साथ सहानुभूति हाने के कारण पशु पक्षी भाजन करना छोड़ देते हैं।^१ सीता हरण के समय भी उनके दुःख से चराचर जीव दुःखी दिखाये गये हैं।

सीता क विलाप सुन भारी ।

मए चराचर जीव दुखारी ॥ ३२८६

बगला रामायण में भी प्रकृति यत्र-तत्र मानव के साथ सहानुभूति रखती दिखायी गयी है। कमल नयन राम का रोता देव सभी वय पशु-पक्षी रो उठते हैं—

कादिमा बिकल राम जले भासे आलि ।

रामेर क-वने कादे बय पशु पासी ॥ ५०१५८

उद्दिवा रामायण में विरही राम के प्रति तर लता रदन करते हैं वक्ष पत्र त्यागत हैं—

१ जब तें आइ रत्न रघनायकु । तत्रनें भयउ वनु मगलदायकु ॥

पूर्वाहि पर्नाहि विन्ध्य विधि नाना । मजु बनित बर बेनि बिनाना ॥

३ १३६५६ ।

२ जहें जहें जाहि देव रघुराया । करहि मष तह तहें नभ छाया ॥ ३६५ ।

३ पशु मग भगन्ह न कीह अहाए । प्रिय परिजन कर कौन विचारू ॥ २७६८ ।

१ राम वन यान्त तर लताए गेभति ।

२ राम वन या त वक्ष पत्र य भड्ड ।—२ ४४

उपदेशात्मक प्रकृति चित्रण—गास्वामी तुलसीदास न भागवत से प्रेरणा लेकर प्रकृति चित्रण में उपदेशात्मकता का मिश्रण कर दिया। अघाली के एक चरण में प्रकृति का सुन्दर निरीक्षण रहता है एवं द्वितीय में काई चभती हुई सूक्ति वर्णित हाती है। दोना का ही महत्त्व है। उनकी युक्तिया शिक्षित एवं अशिक्षित दागा का बठस्थ हैं। इस प्रकार का प्रकृति चित्रण उनके कलाकार तथा सुधारक मत के गुणा का समन्वयता करता है।

गावा में आज भी वर्षा हान पर लाग बड़ी रचि के साथ किष्कि-घाकाण्ड का वर्षा-वर्णन गात हैं। किसी पर आक्षेप करते समय अथवा नीतिकथन के अवसर पर ऐसे छंद पढ़न हैं—

दामिनि दमक रह न घन माहा ।

सल क प्रीति जया धिर नार्हीं ॥

बरषाहि जलद भूमि निभराएँ ।

जया नर्वाह बुद्ध बिया पाएँ ॥ ४१३ २, ३

आज भी जाग बड बड कर वात करने वाली नारी का तिलमिला दन के लिए गोमन अर्घाती का प्रयोग देखा जाता है—

महाबट्टि चलि फूटि किभारों ।

जिमि सुतर भएँ बिगर्ह नारों ॥ ४१४ ८

फिर भी शुद्ध प्रकृति चित्रण की दृष्टि से उपदेशात्मकता बाधक ता है ही।

सवाद सी दय

सवाद नाटक का प्राण है। सवाद के द्वारा ही नाटक की कथा का विकास होता है इसके साथ ही पात्रों की प्रकृति उनके चरित्र जादि का भी परिचय मिलता है। चरित्र चित्रण के लिए पात्रों का सवाद से बढकर और काई अरुद्धा साधन नहीं है। इसीलिए कायो में भी सवाद को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कथा-माहित्य भी इस तत्व की उपक्षा नहीं कर सका है। सवाद प्रायः दो या अधिक पात्रों का मध्य होता है और प्रायः पारस्परिक कथना की काट में तक महित प्रस्तुत किया जाता है।

सवाद के लिए आवश्यक है कि उमकी भाषा पात्रों की प्रकृति के अनुकूल हो, उमम सक्षिप्तता हो, वह पात्रों के अन्तर्गत को स्पष्ट करना हो एवं वह सहज और सच हो।

जिम सवाद में पात्रों के प्रेम, घ्राध, घृणा व्यग आदि का चित्रना संशक्त अभिव्यजन होगा, वह सवाद उतना ही अधिक सफल होगा।

रामायणा में कई स्थल ऐसे हैं जहाँ पात्र परस्पर बयापकथन करते हैं।

प्रथमोपा रामायण में सीता रावण सवाण म पारम्परिक ब्राध एव साय ह। सीता का घुणाभाव व्यक्त है।

हामोरे रावण बम्बर निगाधर ।

अविलम्बे पाइयाव घाहा यम घर ॥

रामर घरणी मोव भजियार घात ।

मरियार सागि कालकूट विष सात ॥^१

रावण भी विगडकर सीता का पापिष्ठी कहता है घोर गिद्वान्न बपारन म लिए बण्ड मारकर उसने दान भाड देने का तत्पर है—

हामोरे पापिष्ठी । मोव हेनय सिद्धात ।

जवरर चोटे तोर सारि एरो दात ॥ ३१८३

आगे गुदरवाण्ड म सीता रावण के अगत प्रस्ताव का गुनार घोर घुणा म क्षुध होकर कहती हैं—मुझे काम भाव स देगत हुए, रे रावण तरी आँगें भी न निकल पडी। राम की भार्या को लघु बचन बालते समय तरी जीभ भी न बट गयी।^१

इसी रामायण म हम अगद वानरदन एव बु भवण रावण के सवाण म गुदर तकें के प्रमाण भी मिल जाएगे। इन्द्रजीत-वध से क्षुब्ध रावण सीता को काटन के लिए प्रस्तुत है। उसका मन्त्री अरविन्द बाघा देकर जैसे तक उपस्थित करता है उससे रावण अबुश खाये हुए हाथी के समान पलटकर भाग जाता है—

पाण्डे धान खाइलेक तान्तिर काटे काटि ।

घाने चुरि करिलेक घानर चुल काटि ॥

सीताक काटिमा पुत्र जोयाइयाक पारि ।

तेबे काटियोव आरो एक लक्ष नारी ॥^१

० बँगला रामायण के उन सवादो म मामिवता है जहाँ पान भावातिरेक म बोलता है। इस रामायण के भवन राक्षस तरणीसेन कीरबाहु अथवा स्वयं रावण के

१ ओरे बचर निशाचर रावण तू अविलम्ब यमघर जाना चाहता है। मुझे राम की गृहिणी को तू भोगना (ब्या) चाहता है मरने के लिए कालकूट विष पान करना चाहता है। ३१५४।

२ मोव काम भावे चाहते रावण। चक्षुयो वाज नभैल। रामर भार्याक लाघव बाल ते। जिह्वायो रसि नगल ॥ ४१७६।

३ साँड धान खा गया और ताँति (जुलाहे) का चरखा काटना चाहते हो। किसी ने चोरी की किसी के बाल काटते हो। सीता को काटने से पुत्र जिलाया जा सकता है तो और भी एक लाख स्त्रियाँ काट दो। अतः ६००३,४।

उपस्थित होने पर राम के माथ जो कयोपकथन होता है वह अत्यन्त भावमय है । सुग्रीव को मन्त्री का विश्वास दिलाते समय भी राम आवेशमय कथन करते हैं—

अपूव्व ना मानि आमि सूर्य्य हरे अचकार ।
 अपूव्व ना मानि आमि सीतार उद्धार ॥
 अपूव्व ना गणि मेघ वरिषये जल ।
 तोमारे अपूव्व मित्र मानि हे केवल ॥^१

लक्ष्मण नुद्ध होकर सुग्रीव के जन्त पुर पहुँचे हलचल मच गयी । सुग्रीव को भी सूचना मिली । वह डरा नहीं अकडकर बोला—' मैं अपराध नहीं करता, मुझे किसका डर है ? धनुष्य लक्ष्मण कयो कौप कर रह हैं । मैंने मित्रता की है तो सप्रमाण की है । मित्रता की रक्षा के लिए क्या मैं अपने प्राण दे दू ? ' (प० १८३)

सबसे अधिक रोचक सवाद तो अगद रावण का है । परिचय पूछे जाने पर अगद कहता है मैं यानि का पुत्र हू । बालि की याद न आ रही हो तो अपने गले को टटोल देखो पूँछ का चिह्न होगा । रावण भी कहता है राम की योग्यता देख ली वन के वानरो की सहायता से वह सीता का उद्धार करेगा । ऐसा ही योग्य था ता उसके भाई ने उसे कयो निवाल बाहर किया ।

रावण ने कुछ शर्तें रखी जिनके पूरा होने पर वह सीता को लौटाने के लिए सम्मत हो गया । एक अपमान जनक शर्त थी राम नाक पर तिनका रखकर क्षमा मागे । बाणपटु अगद शर्तें स्वीकार करते गये किन्तु एक एसी मामिक चोट की कि रावण अपना मा मुँह लेकर रह गया । अगद ने कहा—ठीक है, सेतुवध भग कर दिया जाएगा, विभीषण को बाधकर तुम्हें सौंप दिया जाएगा । तुम्हारी जली हुई लका का पुनर्निर्माण कर दिया जाएगा । किन्तु एक बात ता बताओ, तुम्हारी बहिन ग्लूषणिया के नाक बान काट लिय गये ये कस जुड़ेंगे ? तुम्हारी यह क्षतिपूर्ति कसे होगी ?

सूपणखार नाक कान केमने यावे जोडा ॥ २७६

० उडिया रामावण का गणन अत्यन्त वाकपटु है । उसी के सवाद अधिक हैं किन्तु मभी रति भाव से उद्दीप्त हैं । वह किसी से कहता है कि सखी नाक फुला कर मुझसे हस-हस कर बातें करो ।—'नासिका फुलाइण हसिण कथा कह (६ २४६) किसी को बाहो मे भरकर उसका यौवन विदीन करन, अधर चूसन तथा उसके साथ रति रण करने का निमंत्रण देना है । सीता बदवती और रमा की

१ मैं अपूव्व नहीं मानता सूर्य को जो अचकार हरता है मैं सीता के उद्धार को भी अपूव्व नहीं मानता । बरसने वाले मेघों को भी मैं अपूव्व नहीं मानता । मित्र, मैं तो केवल तुम्हें अपूव्व मानता हू । प० १८८ बगला ।

उपस्थिति में वह उमत्त कामुक प्रलापा से भरे हुए क्या करता है। मान्दरी के तब सुनकर वह मधुर स्त्री के साथ करता है—सचि तुम्ह क्या बार्द हो गयी है कोई पाये हुए पत्थ (सीता) का नहीं लोटाता है ?^१

सवादा में वचन-वक्रता का उदाहरण प्रस्तुत है। श्रुद्ध नदमण द्वार पर फुकार रहे हैं। द्वारपाल गुश्रीव को सूचन देता है। गुश्रीव अनान बन कर पूछता है, कौन लक्ष्मण आया है ? लक्ष्मण सरोप कहते हैं जाकर कहेंगे जिसके बन पर किष्किष्वा का राज्य और सुदरी तारा का भोग कर रहे हैं उसका छाटा भाई लक्ष्मण आया है। (४ ५६)

राम की आत्मग्लानि की कसी सूक्ष्म-अनुभूति मिलती है निम्न वचन में। माग में गाय चराते हुए खाल से भूसे राम लक्ष्मण ने दूध मांगा। दाना जस्वीकार करने पर लक्ष्मण ने राम को सम्मति दी कि इसे मार कर दूध ल लिया जाए। राम ने कहा—

अपनी स्त्री के हरणकता का मैं कुछ विगाड न मवा इस अदोष को कसे मारू ?^२

० मानस की समस्त कथा ही वक्ता श्रोता के माध्यम से प्रस्तुत की गयी है। कइ स्थला पर सवादा द्वारा तत्त्व-निरूपण भी हुआ है। य सभी स्थल साहित्यिक मूल्य कम रखते हैं अतएव गोस्वामी जी के उन सवादा पर विचार किया जाएगा जिनमें साहित्यिकता है। ऐसे मुख्य सवाद हैं—पावती-सप्तपि परशुराम-लक्ष्मण मथग-ककेयी ककयी दशरथ हनुमान रावण और अगद रावण।

सप्तपि पावती का शिव की ओर से विगुण करने आय थे। उहाने अनेक बातें कही। पावती ने उ ह नम्रता के साथ करारा उत्तर दिया—मुनिवर आप पहले मिन होते तो आपके उपदेश सुन लेती अब ता मैं न यह जीवन शिव के लिए हार दिया है। अब उनके गुण दोष का कौन विचार कर। यदि तुमसे विना विवाह कराये रहा ही नहीं जाना है ता ससार में अनक बर क्या हैं यहा से पधारिये।^३ मरा तो यही हठ है कि बरसें सभु न तु रहसें कुआरी। (१ ८० ५)

१ रावण बोइला सचि होइलु कि बाइ। पाइला पदाथ केहि। दिग बाहुडाइ। ६/१०१
२ एडे बडपणे मोर नाहि एउ काय्य। सीता हरिनेना वनु विथवा तनुज ॥
ताहावु त विधि मुहिं न पारिलि करि। अदापि लाकतु कु कि मुआसि अछि मारि ॥
— ३ ५७।

३ जो तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीमा। मुनेतिउं मिख तुम्हारि धरि सीसा ॥
अब मैं जमु सभु हित हाग। को गुन रूपन कर विचारा ॥
जो तुम्हरे हट हृदये बिसेपी। यहि न जाइ विनु विग बरपी ॥
तो कौनुकिअह आलसु नाही। बर क्या अनक जग माही ॥ १ ८० १—४।

लक्ष्मण-परशुराम सवाद मे कुछ नाग भन ही अनौचित्य देखें किन्तु लक्ष्मण क मुह तोड उत्तर दन को प्रशमा करनी ही हागी । राम के टडे गयन देग नभमण चुप हो गय थे । परशुराम क श्राध-पूण वान सुन उनसे फिर न रहा गया, बोल पडे—

जौ प कृपा जरिहि मुनि गाता । ॥

ब्रोध भएँ तनु राख बिधाता ॥ १-२७६—५

इस प्रकार के चूटकी लेन वान अनक कथन लक्ष्मण द्वारा प्रयुक्त हुए हैं ।

मयरा-ककेयी एव ककेयी दशरथ सवादाम भी कसी तीखी व्यंग्योक्तियाँ भरी पडी है । ककेयी मयरा का घरफोरी कहकर उसकी जीभ निकलवाने के लिए प्रस्तुत हो गयी, किन्तु वही ककेयी जब मधरा का पुमानाकर उमक मन की बात जानन की चेष्टा करन लगी ता उसन तुरन्त चुभता हुआ उत्तर दिया—

एकहि बार आस सब पूजी ।

अब कह्यु कह्यु जीभ करि दूजी ॥ २१५—१

दशरथ क सामन श्राध रूपी नगी तनवार के समान खडी हुई ककेयी का एक एक शब्द कस तीखे विष से बुभा है—भरत क्या तुम्हारे पुत्र नहा है ? मुझे क्या सखी लाय थ—(क्या मैं विवाहिता नहीं हूँ) ? मेरे वचन तीर से लगते हैं ता पहले ही साच समझ कर क्या नहीं बाले । तुम ता रघुकुल म बडे सत्यवादी बनन हा अब हा करो या न करा—आदि ।^१

केवन तीखे ही व्यंग्या ता प्रयाग गही है मधुर व्यंग्य भी दमे जा सकत है । सीता प्रथम बार राम को देग एसी क्षणमे हुई कि मुघ बुध भूलकर नेत्र मूँदे पडी रह गयी । सखी ने सीता का हाथ दबाकर व्यंग्य किया—नन मूँदकर गौरी का ध्यान फिर कर लना—बहुरि गौरी कर ध्यान करहु—१ २३३ २ । सीता ने घबडा कर नन खान ता राम का सामन खडा पाकर उनक नय शिख मौन्दय म पुन लीन हो गयी । एक दूसरी सखी मन ही मन मुस्कराकर बोनी—कन इमी समय यहाँ फिर आएगी—पुनि आउन एहि बरियाँ काली—(१ २३३ ६) बचारी सुशीला क्या यह गूँट बाणी सुन कटकर रह गयी ।

उत्तर प्रत्युत्तर क दाव-पेच लक्ष्मण-परशुराम सवाद क पश्चात अगद अथवा हनुमान के माय रावण के सवालाम मिलत ह । हनुमान रावण का राम का भजन करन के निग कहत है । अभिमानी रावण हुँसकर बाला—हाँ, अब हमे बडा जानी बदर गुन मिला है ।

१ भरतु कि राउर पूत न हाही । आनेहु माल वमाहि कि मोही ॥

जा मुनि म अम लाग तुम्हारे । बाह न वालु बधनु सभारे ॥

बहु उतर अनु करहु कि नाही । सत्यमघ तुम्ह रघुकुल माही ॥ २ २६ २ ।

बोला बिहसि महा अभिमानी ।

मिला हमहि कपि गुरु बड म्यानी ॥ ५ २३ २

अगद की अनेक उक्तियाँ और तब सुनकर भी वह बड़े मजे म कहता है—

धाति न कबहुँ गाल अस मारा ।

मिलि तपसि हत भएसि लवारा ॥ ६ ३३ ६

रचना-कौशल

भाषा

भाषा-संस्कृत विरोध

संस्कृत है कूप जल भाषा बहता नीर ।

कबीर की इस उक्ति में संस्कृत की उपेक्षा की गयी है उसे सक्वण और सीमित समझा गया है। यहाँ एक प्रकार से कबीर की हीन भावना ही बोल रही है। एक रूप में उनकी उक्ति सत्य भी है। नदी का जन प्रचुर होता है साथ ही सहज उपलब्ध भी। कूप का जल नदी के जल की अपेक्षा अधिक स्वच्छ एवं गुणमय हो सकता है किन्तु उसकी प्राप्ति के लिए साधन सम्पन्न बनना होता है। इसी प्रकार जनमानस के लिए भाषा सुगम एवं सुबोध होती है। संस्कृत गुणमयी है किन्तु उसे आसक्त कर ज्ञान विस्तार के लिए आयास-करना पड़ता है।

मध्यकाल के भी समस्त भारत के प्रमुख विद्वान संस्कृत में ही मनन और चिन्तन करते थे। उनकी संख्या अत्यन्त अल्प थी। पंडित लोग विद्या का आदर करते थे और नहीं चाहते थे कि अनधिकारी लोग शास्त्र का अध्ययन कर पाएँ। अधिक पंचार होने एवं अनबिजारी के हाथ पडने से विद्या का आदर अवश्य ही कम हो जाता है। जिन वेदों के प्रति हमारे दश में इतना अधिक पूज्य भाव रहा इतने यत्न एवं पवित्रता के साथ जिनकी रक्षा की गयी आज उही वेदों की छपी हुई प्रतियाँ कालेजों के पुस्तकालयों में उपेक्षित पड़ी मिलती हैं।

पूज्य ग्रन्थों को सबमुलभ न होन देकर पडिता ने उनके महत्त्व को सुरक्षित रखा, ठीक है किन्तु इन पूज्य ग्रन्थों की महान उपलब्धियाँ से साधारण जन कैसे लाभान्वित होता। इसके लिए तो वही नीर की आवश्यकता थी। जनमानस तथा युग की माँग को समझने वाल कवियाँ न राम और कृष्ण को भाषाओं में लिपिबद्ध किया। अस्मीया-सराक माधव कदली को विरोध नहा सहना पडा क्योंकि तत्कालीन राजा ने ही उन्हें अस्मीया में लिखने की प्रेरणा दी थी। कृत्तिवास (बगान-सराक) एवं तुलसीदास को अवश्य ही पंडिता का विरोध सहना पडा। बगान के तीन सत्रका का शास्त्र चूसकर खा जान वाला कहकर निन्दित किया गया है इनमें कृत्तिवास प्रथम माने गये।

कृत्तिवासे काशीदासे भार बामुन घेंये ।

एइ तिन सम्बनेसे शास्त्र सेन चुपे ॥

लोगा का कहना है कि तुलसीदास को भी भाषा में लिखने के कारण बर्ष न्यि गय थे, फलत वे अयोध्या से वाशी चले आय थे । किसी पांडित ने उन पर आक्षेप किया हागा कि भाषा में क्या लिखने हा । उत्तर में उनका एक दोहा प्रसिद्ध है—

का भाखा का सस्कृत प्रेम चाहिए साच ।

काम जो प्राव बामरी का ल कर कुमाच ॥

रामचरितमानस में भी उन्होंने भाषा के प्रति पटितो की उपेक्षा की ओर सक्त किया है ।^१

उडिया-लेखक बलरामदास तो गूढ़ थे ही उह भी प्रारम्भ में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा गया । उन्होंने भी लिखा है कि मुझे मूल लोगो के उपहास का बहुत डर है । पानीजन मुझे दाप नहीं देंगे किन्तु डाटे लोग उपहास करेंगे । मैं सुइ की नोक से मेरु पर्वत को हिला रहा हूँ ।^२

किन्तु लेखका की विशेषता यह है कि भारतीय भाषाओं एवं उनके साहित्य की उत्समूल भाषा देववाणी का इन लोगो ने अनादर नहीं किया । अपने-अपने काव्या में मध्य उन्होंने सस्कृत से क्या उपमान शब्द आदि ग्रहण किय हैं ।

व्याकरणिक अध्ययन—पूवाचनीय रामायणो की बहुत अधिक प्राचीन-प्रतियां उपलब्ध नहीं हुई हैं एवं अधिकारी विद्वाना ने पाठ शाघ का भी प्रयत्न नहीं किया है । सबसे बड़ी समस्या ता बेंगला रामायण की है जिसकी भाषा जयगोपाल तनालवार ने आधुनिक कर दी है और उनके ही पाठ को देखकर बंगाल में अथ सभी सस्वरण प्रकाशित हुए हैं । कुछ विद्वाना ने पाठाढार की असफल चट्टा भी की है । असमीया एवं उडिया रामायणो की भाषा बेंगला रामायण की भाषा से अवश्य ही प्राचीन है किन्तु एगा नहीं कहा जा सकता कि ये रामायणें अपन मूलरूप में ही प्राप्त हैं । उडिया रामायण के पाठ का (Crippled Truncated and Twisted) (काट-छाट और ताड़ मराड़ से युक्त) बनाकर पाठाढार की चट्टा की जा रही है ।^३ मानस की पाठ गुद्धि के लिए अवश्य ही श्लाघ्य प्रयास हुए हैं । अध्ययन की इस कठिनाई के कारण व्याकरणिक अध्ययन पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सकेगा ।

प्राचीन असमीया एवं उत्तरी-चगता में बहुत गाम्य रहा है । श्री कृष्ण-कीर्तन (चण्डीदास) की भाषा में दाना की समान भाषा में उदाहरण मिल जात हैं । असमीया

१ भाषा भक्ति भारि मति मारी । हँमव जाग हँस नहि खोरी ॥ १ ८ ४ ।

२ उडिया रामायण—५-२ ।

३ डा० भाषापर सिद्ध—टिप्पणी ऑफ आरिया लिटरचर, पृ० ४५ ।

रामायण म एक वचन प्रथम पुरुष के लिए मइ एव आमि दोना शब्दा का प्रयोग है। जाधुनिक असमीया म आमि बहुवचन है एव वेंगला म वह एक वचन है। असमीया रामायण म बहुवचन प्रथम पुरुष म आमि जीर आमरा का भी प्रयोग है। आधुनिक असमीया म भूतसानीन वृद्ध त इला द्वितीय पुरुष क साथ आता है किन्तु असमीया रामायण म प्राचीन बगला क अनुसार ततीय पुरुष क साथ आया है—
 धनदे चाहिला—४७५५ इला का प्रयोग उडिया रामायण एव आधुनिक उडिया म ततीयवचन भूतबाल म ही होता है किन्तु पूर्वी बगला म जादरगूचक (बहुवचन म भी ?) रूप म हाता है।^१ बगला रामायण के कुछ स्थला पर इसका प्रयोग ततीय एव द्वितीय दाना पुरुषा क एकवचन के लिए हुआ है जैसे—चलिला नारद १—
 तुमि करिला ४। आधुनिक असमीया म प्रथम पुरुष का भविष्य वृद्धत इम है असमीया रामायण म बगला भाषा के भविष्य वृद्धत इव या इबो की भाँति प्रयोग हुआ है—थाकिबो ८०१८ याइबो—३०६७ अधिकरण कारक की विभक्ति आधुनिक असमीया म त है रामायण म ते और त दाना का प्रयोग है—१४३१। ते विभक्ति इम समय आधुनिक बगला म प्रयुक्त होती है।

पुरानी असमीया के ततीय पुरुष के घतमान वृद्धत अन्त का प्रयोग असमीया रामायण म सत्र है—वरिलन—४७४७। पुरानी असमीया का बहुवचन सा भी रामायण म मिलता है—जामासाक (हमका) २८५७ तोमासार—(तुम लोग का)—
 १५२४।

असमीया रामायण म अनेक एमे शब्दा का प्रयोग हुआ है जो आधुनिक असमीया म अब तत्र चल जा रह हैं—जस प्रथम एव द्वितीय पुरुषवाची सवनाम ततीय पुरुषवाची सवनाम सि (he) ताइ (she) मि (जा)—४२५१ पुरुष के अनुसार विभिन्न क्रियाजा के कात्र कम सम्बन्ध, अधिकरण आदि कारणा की विभक्तियाँ—मानुलक, रामर हातत,^२ निषधवाचक क्रिया मन का पहले प्रयोग—नेदेखो (नहीं दखता हूँ)—२१८० एव जनन शब्द वाज (बाह्य बाहर)—४०३७ किमन (वगा) ४२८३ माति (बुनाकर) ६७३६ मिद्धा (मिथ्या)—५१६८ आजि (अच्छ) ६८३८।

० बगला रामायण के इला वदन्त के विशिष्ट प्रयोगा का वणन हा चुका है अथ स्थलो पर य वृद्धत आधुनिक बगला के नियमानुसार प्रयुक्त हुआ है। भविष्य वृद्धत इवा का प्रयोग असमीया म तुम के साथ हाता है वेंगला रामायण म आप क साथ इवा का प्रयोग हुआ है—कहिवा, हइवा ३ आधुनिक वेंगला म आप के गाय इवेन एव तुम क साथ इवे का प्रयोग हाता है।

० उन्धिया रामायण म व्याकरण की दृष्टि स वृद्धत कुछ एमी भाषा का

१ गुनानिकुमार चर्चा—आग्निन एण्ड डवनपमट आफ वेंगली लेंगज, पृष्ठ ६८२।

२ असमीया रामायण—छ० १५१६, १५१७ और ३०६७।

प्रयाग है जा आज तक रही आ रही है। पुरुषवाची मवनामा की एकरूपता म प्राय अन्तर दया गया है—एक ही जय म तीन-तीन प्रकार के प्रयोग दये जात हैं—मो मोर भोहर — ३/२५ द्विपय प्रवण म वगला एव असमीया भाषाजा के शब्दा की उचिया भाषा के शब्दा म गाम्य की चर्चा की गयी है, उम प्रकार का अधिवाश साम्य इम रामायण म मिन जाता है।

उचिया रामायण म प्रयुक्त कई शब्द हिंदी क शब्दो स साम्य रखत हैं—
गुहारि— (पुवाग्कर) १ ८६, हकराइ (बुलाकर) २ १०५ बघाइ (बघाई)
६ ३०५ मशाहेरि (ममहरी) २ ४६ गोहइ (शाभा दना है) ४-१४ बेटा ५-११।

बुद्ध एमे शब्दा का भी प्रयाग है जा मस्कृत क तत्सम अथवा तदभव ह्यो हुए भी जय बुद्ध जीव ही लेते हैं।—मिष्य (पुन) १-१२७ गरघा (इच्छा)—
१ १८६, नियम (प्रतिज्ञा शपथ) ६ ३६७ मउरब (गौरव = आदर) २ ५५।

मानस—तुनमीनाम क समय तक तीन प्रकार की भाषा धाराएँ चल रही थी। जन-ब्रीद्ध और निगुण मम्प्रत्याय के लाग वदिक परम्परा के विराधी हान के कारण जनभाषा का प्रयोग कर रह थे। दूमरी जाव केशव जम मस्कृत-आभिमानी कवि भी थे। इधर मुस्लिम शासकगण हमारी मस्कृति का नष्ट कर अपनी भाषा और मस्कृति का हमार उपर थापना चाहत थे। तुनसीदास न तीना के मध्य समवय की चप्टा की है। उहाने मानम म वसवाटी अवधी का प्रयाग किया है। जायमी की भाषा ठेठ अवधी थी किन्तु वह शिष्ट और परिमार्जित नहीं थी। तुलसीदास ने मस्कृत-नाभित माहित्यिक अवधी का प्रयाग किया। उनकी भाषा म गुजराती राज स्थानी पञ्जाबी वगाली राज तुदनखणी और खनी धाली आदि के शब्द भी देखे गय हैं। डा० देवकीनन्दन श्रीवामनव न तुलसीदास की भाषा का विस्तृत अन्वयन शाघ प्रवच के रूप म मस्तुन किया है।

मिष्य वृदन्त व एक पूर्वकालिक क्रिया इ अथवा ऐ की श्रुति से पूवाचलीय रामायणा की भाषा की तुनना हो सकती है। पूवाचलीय रामायणा का इव वृदन्त मानम म व क रूप म प्रयुक्त हुआ है।

इसका उल्लेख द्विपय प्रवण म हो चुका है। आधुनिक असमीया म प्रथम पुष्प का मिष्य वृदन्त इम है—किन्तु इम भाषा की रामायण म इवा अथवा इराहा का प्रयोग हुआ है।

पूर्वकालिक क्रिया का प्रत्यय—

असमीया०	बंगला०	उचिया०	मानस
करि)	करि)	पखालि)	करि—५ ४०-६
) ४० ८) १)	
जानि)	दखि)	करि) २ १	राखि—२ ५१ ८
		याई)	मुनि—२ २८-४

इया ऐया अथवा ऐ एव उचिया म इण।

१-६६। पुराण गिनानदा म आत्ति उडिया शब्दा का यही रूप मिनता है। उन्धिया भाषा ने कुछ कम शब्दों का भी रामायण में प्रयोग हुआ है जिनका उत्तम राज सवना बठिन है। मणोहि=गजा अथवा दरताजा का भाग। पणत=यज्ञ का छोर (पट+जत जयश पटान्त?) पड्ड कच्चा नारियल (पय पटिया?) नडप=तेल (देशज)।

मानस—अगवानी अगड्ड जगिन, अगुन, अगह अग अरज, जच्छत, अचभव, अछाभा अजान अनुमासन अनगी, अवासू आदि।^१

विदेशी शब्द—रामायण का रचनाकाल १४वीं से १६वीं शताब्दी तक का है। इस काल तक मुसलमानों का भारत के बड़े भूभाग पर अधिकार हो चुका था। हिन्दी भाषी क्षेत्र तो कई शताब्दी पूर्व ही मुसलमानों के आक्रमणों की चपट में आ चुका था। बंगाल में भी १२०० ई० के आगपाम महानाश का दृश्य दसा तबस लगातार बगान मुस्लिम शासन के अधीन रहा। उडिया रामायण के लेखक के पूर्व ही मुसलमानों का उन्नीसा से सत्रहवीं शताब्दी तक हिन्दू नपति शासन करने लगे थे। असम देश पर मुसलमानों के आक्रमण कई बार विफल कर दिये गये।

स्पष्ट है कि जसम पर मुस्लिम सभ्यता और भाषा का प्रभाव नहीं पडा, उडोसा पर भी कम ही पडा। शेष का प्रवेश प्रभाव से न बच सके इसीलिए उनकी भाषा में विदेशी शब्द बहुत हैं। घम सभ्यता के कट्टर समयक तुलसीदास ने विदेशी सभ्यता की वादों को राकन का सुप्त प्रयास किया उन्नीसवीं शताब्दी में विदेशी शब्द सबसे अधिक प्रयुक्त हुए हैं। कवितावली में सधील, फहम, रालक, हलक कहरी वहरी दिग्मानी आत्ति जनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

तत्कालीन राज दरबारों में फारसी का प्रचलन था। हिन्दू और मुसलमानों को साथ साथ रहना पड रहा था जिससे कि परस्पर शब्दों का आदान प्रदान भी चल पया। कुछ मुसलमान कवि भी भाषाओं में रचना करने लगे थे अथवा भाषा कवियों को प्रोत्साहन दत्त थे। इन्हीं कुछ कारणों से भाषाओं में विदेशी शब्द ग्रहण किये जाने लगे थे। शासन वाद आदि से सम्बन्धित कुछ विशेष विदेशी शब्दों का प्रचार समाज में चल पडा था। बहु प्रचार से इन शब्दों की अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ गयी। इनकी तुलना में पूय पचनित देशी शब्द अब अथ व्यञ्जना में उतने सशक्त नहीं रह गये अतएव कविता में समाज-द्वारा आत्मसात किये गये इन शब्दों का ग्रहण कर लिया। आज भी बंगाली कच्चा बोलता है मुझ कष्ट क्या दत्त हो। क्या आश्चय है।^२ हम कहें— मुझ तग क्या करत हो। क्या ताज्जुब है। कहते का तात्पर्य यही है कि बहु प्रचार से विदेशी शब्दों ने हमारे देशी शब्दों की अभिव्यक्ति शक्ति को पराभूत कर

१ तुलसी शब्द सागर (म० भालानाथ तिवारी) से संगृहीत।

२ यह अवश्य है कि यह कष्ट का कौटो एव आश्चय को आश्चयों की भाँति मानगा।

नियम। जहाँ विदेशी भाषा का प्रभुत्व नहीं है पाया वहाँ आज भी देशी शब्द (संस्कृत तत्सम, तद्भव अथवा देशज) धूमधाम से प्रचलित हैं। हम मजबूत एवं मजबूत शब्दों का हिन्दी-शब्दावली का प्रयोग नहीं कर पाते। पूर्वी भाषाओं में इनका समानार्थक शब्द शक्ति (शक्ति युक्त) बहुत पहल से प्रचलित है।

दा संस्कृतियों का मिनट में कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रचार हो जाता है जो हमारे लिए सबका नवीन शब्द हैं। नवीन वस्तुओं अथवा व्यवस्थाओं के लिए विदेशी शब्द ही प्रायः अपना नियम जानते हैं, जैसे शहनाई, चौगान, एन. वाजकल रेल स्टेशन रकियो आदि।

हमारी रामायणा में जो विदेशी शब्द प्रयुक्त हुए हैं उनका सम्बन्ध प्रायः शान्त, शान्त, शान्त ध्यान आदि से है।

असमीया रामायण

१ दोकान—(अरबी-दुकान) २२६०

२ बाजार—(फारसी-बाजार) २२६०

३ पददा—(फारसी प्यादह = पी + आदह = पीवाला अर्थात् पाव काम में लाने वाला। संस्कृत के पदानि से फारसी भाषा प्यादह साम्य रखता है।) १६७६

४ चाबुक—(फारसी) १६६१

बंगला-रामायण

१ देवान—(अरबी दीवान अर्थात् भी कहीं बाहर से लिया गया है) ३०५

२ हुकुम—(अ० हुकम) १६८

३ हाकिम(अ०) १६८

४ मंगल (अ० मंगल) २३६

५ नफर—(अ० नफर चाकर) ४६७

६ पेदादा—(फारसी-प्यादह) १६८

७ दामामा—(फा० दामाम) ४३६

८ शहनाई—(फा० शहनाई) २८३

९ कानात - (तुर्की-कानात) ४४७

उडिया रामायण

१ हुकुम—(१० हुकम) १७२

२ मना—(अ० मनम) ४१६

३ कमाण—(फा० कमान) १-१४४

४ चाबुक—(फा०) १७२

५ भामक—(तुर्की चकमक) ३२०

मास

- गती - (अरबी गती = बंदग्या प॥ उत्तर) १ २७ ६
जमात—(जमाअग अरबी म जिगी भाषा म आगत मन्त्र है ।) १ ६२ ग
जिगत—(अरबी जि ग) ७ ८० ५
तपीरि—(अरबी तपीर) ६ ६० ३
गरीब शत्रु (गरीब—अरबी—शत्रु—पारसी) १ १२ ७
दरबारा (पारसी—दरबार मन्त्र म द्वार म मास) २ ७५ ६
सजार्द—(पारसी—गडा) ७ १८ ५
आजार—(पारसी—बाजार) ७ २७ ८ ग
साहिय—(पारसी—साह्य) १ १२ ७
सहनाई—(पारसी—सहनाई) १ २६२ १
मजूरी - (पारसी—मजूरी) २ १०१ ६'

तुलसीनाम स भी बहुत भूषण त विशेषी शब्द का प्रयोग किया । वे हिन्दू धर्मपति के सभान्विध पत्र भी इतना अधिक शब्द का प्रयोग दृष्टकर यही निष्पत्ति निकाला जा सकता है कि मुस्लिम नामन म प्रभाव न विशेषी शब्द का बहुत प्रचार हो गया था । अग्रे ही शासन म पश्चात् यह प्रभाव कम होता गया । अब तो यह स्थिति है कि हिन्दी का पाठन म अनेक विशेषी शब्द का अथ शब्दवाश की सहायता स ही समझ गवता है ।

भाषा सौंदर्य

प्राण एव शरीर की अभिन्ना स ही सौंदर्य गठित हो सकता है, भाव और भाषा भी इसी प्रकार अभिन होत हैं । उक्त एवत्व की स्थिति को जल-बीच के समान माना जा सकता है ।

सफल कवियों का भाषा पर अधिकार होता है । वे भाव व्यक्ता पात्र के स्वभावानुवूल भाषा का सहज प्रयोग कर लत हैं ।

• अस्तगीया रामायण म कोमल भावा के लिए इस प्रकार की भाषा का प्रयोग है—

राजहस देखा सीता तोमार गमन ।

अबबाक युगल तोमार बुद्ध तन ॥ २०८१

हनुमान द्वारा रावण को फटकारते समय भाषा म भी उच्च-भाव आ गया

१ उपयुक्त शब्दों के अर्थ लुगात विशोरी से दिये गये हैं श्री भोलानाथ तिवारी द्वारा सम्पादित तुलसी शब्दसागर स वही-वही उद्गम की भिन्नता है ।

है। हनुमान रावण के ऋषि का शरद्वालीन वादनों की गजना के समान वताकर हाटते हैं—

हनुमे बोलत तइ किसक तज्जस ।

गरत कालर मेघ मिछात गज्जम ॥

५१६८

पात्र के मन की स्थिति की भी मफन व्यजना हुई है। सीता एव लक्ष्मण के प्रति अनुराग भाव प्रकट करने के लिए राम व मुख से सशक्त भाषा का प्रयोग किया गया है—

लक्ष्मण डाहिन बाहु छाया मोर सीता ।

१६४५

पात्रा के भावा की सशक्त व्यजना का वणन सवाद-सौन्दर्य के अन्तगत हो चुका है। असमीया-रामायण के उत्तरकाण्ड-लेखक शंकरदेव ने सीता के मुख से राम व प्रति अत्यंत मार्मिक भाषा का प्रयोग किया है।^१

० बगला म सुन्दरियो के रूप-वणन म भाषा कोमल एव मधुर हो जाती है

रतन रञ्जित तार पदाडगुलि सब ।

राज हस जिनि ध्वनि नूपुरेर रव ॥

करे गह्व बज्जुण किङ्किणी कटि माझे ।

रतन नूपुर पाय रणुमुनु बाजे ॥^२

उग्रभाव प्रदर्शन के लिए भाषा प्रवृत्ति-परिवर्तन करती है—

हुपहाप लम्के भम्मे बम्मे बसुमती ।

पृष्ठ १८६

मुखे ते दाहण अग्नि ज्वले धिकिधिकि ॥

पृष्ठ २८७

० उडिया रामायण म भी माधुर्य भाव सूचक भाषा कोमल हो जाती है ।

वही-वही अनुरणनात्मक भाषा का भी प्रयोग है—

पपरे नूपुर बेनि रण भूण बाजे ।

१ १५०

राम के रज्जा भाव का इस प्रकार की भाषा म व्यक्त किया गया है—

लाज लाज होइएण उठिले रघुमणि ।

१ १४६

दाँसा के भुरमुट म मच्छरो की भनमनाहट एव म-दाकिनो के जल प्रवाह की ध्वनिया का अंकित किया गया है—

बाजगबण भितरे मगा भए भए ॥

म-दाकिनी नदी ये बहइ भर भर ।

२ ७८

शम्बूक अग्नि प्रज्वलित वर उलटा लटका हुआ तपस्या कर रहा है। अग्नि भक्षण करन में उसके मुख से रक्त प्रवहमान है। उसके नाक, कान, नस, लिंग,

१ नेविस इसी अध्याय का कारण रम चित्रण ।

२ बेंगला रामायण, पृ० २०० । बेंगला में 'र' को 'न' पड़िए ।

आदि दशा रथात्ता ग गा, न-गाडा रवा ग गपागजा म यत्ता हृमा अदि म दिर रता
हे । यही धीभरग रग क अनुकूल भाषा का प्रयोग है

घोहृत्वि गहिरा तति भाह घाम ।
मुस घाते रजत गाह नम मम ॥
तार कुह मार कुह यः कुह वाम ।
नस तिहृग गुता सतिरर हः रथात् ॥
सपत धारा रजत भर भर पड़े ।
प्रयत्नित घगिर वहृह मतागाड़े ॥'

० मानस म गुत्तर तागी क अकाराग की वाचन स्वरि म विन पर पदन
। यान प्रभाव का चित्रण मयुर शब्दा म हुआ है -

बला विदिनि गुपुर मुनि मुनि ।
बहत ससा ता रामु हृरय मुनि ॥
मानहो मदन कुकुभी बीहो ।
मनसा विरय विजय बहो बीहो ॥
घस बहि फिरि चितए तेहि घोरा ।
सिय मुस सति भए नपन घरोरा ॥'

ओजपूर्ण स्थना क चित भाषा म चित्व प्रयाग एव वाग शब्दा का यात्रना है
चिक्करहि विगज डोल महि घति बाल बूहम बलमल ॥ १ २६० ८ ८८
इसी प्रकार की शब्द यात्रना गुह की भयकरता क चित्रण क चित भी है—

जबुब निवर बटबट बट्टहि ।
साहि हृमाहि अपाहि दपट्टहि ॥
पोहि ह रुह मुह बिनु डोल्लहि ।
सोस पर महि जय जय डोल्लहि ॥'

मुहावरे और लोकोक्तिर्मा—डा० हरवलाल शर्मा मुहावरा एव सानाविषया
को भाषा की प्रौढता एव प्राञ्जलता बतान याना यतारर निरत है

जन्त समाज युग युगात्तर क सचित अनुभवा को तुल्य लाक्षणिक शब्दा क मांच
म ढालकर मुहावरा का रूप देता है जा लाक्षणिक ही नहीं मनोवचानिक आधार पर
भी टिके होते हैं । यही कारण है कि बाल और दश की सीमाएँ भी उह एगु नहीं
बना सकती । उनम चिर-नवीनता एव शाश्वतता है, समान रूप स मानव हृदय को
छू सकने की क्षमता है ।'

१ उडिया—रामायण ७ १५१ ।

२ मानस—१ २२६ १—३ ।

३ वही—६ ८७ ६ १० ।

४ डा० हरवलाल शर्मा—विहारी और उनका साहित्य प० २७७ ।

मुहावरा, लोकावितया एव विशय उवितया के प्रयाग मे भावा एव विचारा को अभिव्यक्त करन म सहायता मिलती है, पाठक पर इनका महारा प्रभाव भी पटता है। साथ ही जनता रह सुगमता पूवक याद रख सकनी है। स्मरणीयता के विशेष गुण के कारण ही मानस अय प्रथा की अपक्षा अधिक लाकप्रिय है।^१

मानग म मुहावरा लाकोवितया ज रि का अत्यन्त सहज एव स्वाभाविक प्रयाग है। पूर्वाचनीय रामायणो म भी लाकावितयो एव मुहावरा त भाषा की अभि व्यजना शक्ति की वृद्धि की है।

० असमीया रामायण

१ एक ओर बाघ खदेड रहा है दूसरी ओर चपा की घार नदी ह
एक भिति बाघे खेदे आरौ भिति
नदी घोर बारिषार—८२३

२ मेघनाद के बध से क्षुध रावण का सीता को हत्या स वजित पर मत्री कृता है—साड न घान पाय जुगाह का चरखा काटने हा। किसी न चारी की, किसी का सिर मूडन हो—

पाण्डे घान खाइलेक तातिर बाटे बाटि ।
आने चुरि करिलेक आनर चुल काटि ॥^१

३ मीठा बालने वाका प्रच्छन्न शत्रु पानी क कटक क समान भयकर हाता है आपात करन के पश्चात ही पहचान म आता है। भरत के प्रति लक्ष्मण का कथन है—

पानोर कष्टक येन वि घलेसे जानि । २५१०

असमीया रामायण म मुहावरा का प्रयोग भी है—दात भाडना—चवरर चोटे नार सारि परो दान्त—३१८३। छाती पीटना—हृदयत मुठि हानि—१८२२। आखे लाल करना—बाघे दशग्रीव भला रक्त नयन हाथ पांसना—पिशहात हात—४१८३।

० बगला रामायण—

१ मरनार चीटी क पर जमत है—

पिपिडार पाखा उठे मरिबार तर । प १८३

२ अपने परो मे कुल्हाडी मारना तथा ननी में नाव डुबाना—

जापनि कुठार मारि आपनार पाय ।

अहङ्कार करे डिङ्गा डूबालि दरियाय ॥ प० २७७

१ डा० भगीरथ मिश्र—कला-साहित्य और समीक्षा—‘वाच्य म स्मरणीयता रहनी चाहिए और स्मरणीयता उक्तिचमत्कार के बिना नहीं आती’—प० ४३।

२ असमीया रामायण—६००३।

- ३ सीधे के प्रति सीधा जीर टड के प्रति टेग हाना—
सोजा प्रति सोजा हन थाका प्रति बाका प० । ४६१
- ४ मन मे सात पाँच करना—विचार म पडना
मने सात पाँच भात्रे रावण विणप प० २२७
- बगला रामायण के कुछ जय मुहावरे य हैं—अहवार टूटना—दिन दिन
रावणर टूटे जहवार—२६० । पछाड खाना—आछाड खाइया पडे हइया मूच्छिन,
लोटपाट होना—पुन शोके कान्दि राजा गडागडि याय—३७८ ।

० उडिया रामायण—

- १ दरिद्र की निधि होना—
२ समुद्र म नाव डुबोना—
३ अंध की लकड़ होना—
दरिद्र निधि मोर अट्टमरे बला ।
अगाध समुद्रे मोर न बुडाग्र भेला ।
अंधर लडडि मोते छाडिले मरिबि । २ ३८
- ४ आनन्द म निरानन्द—क्षीर म क्षार—
क्षीर भितरे य क्षार आणि पुराइला । २-६७
- ५ गध क गल म रणमी मूत—छछूँदर के शिर म चमली का तेल—
गधकुहि येसन बाधि लक पाट मुता । २ ७१
- ६ बाई होना—दिमाग खराब हाना—
रावण बोइला सखि होइलु कि वाइ । ६ १०१
- ७ मुह रेखा और दिन काटना—
काहा मुत्त देखिण हरिबु जाम्भे दिन । १ २०७
- ८ कटाक्ष फेंकना और ठलना—
आतिरिछटा मारि के हुअति ठनाठलि । १ १६५

० मानस—

- १ उपयुक्त व्यक्ति स देखानी करना—
भल भवन अब वायन दी हा । १ १३६ ५
- २ जा जमी करनी कर सा गरी फन पाय—
बवा सा जुनिअ लहिअ जा गीहा । २ १५ ५
- ३ दोना हाथा उड्डू हाना—
दुहूँ हाय मुत्त मानव मार । २ १८६ ६
- ४ छोटे मुह बड़ी बात कहना—
छोटे बदन बाग बडि कहमी । ६ ३० ७

५ बाला मुह बर जाना—

बरिआ मुह बरि जाहि अभाग । ६ ४८ २

मुहावरा के सहज प्रयाग को देखते हुए भापा पर तुनसीदाम का महान प्रभाव मिट्ट होता है । वही-वही तो उही मुहावरा की भडो लगा दी है । मधरा की निम्न उक्तियो का प्राय उनकी मुहावरेदार भापा क उदाहरण के लिए उद्धृत किया जाता है—

एकहि बर घास सब पुनी ।
 सब कछु कह्य जीभ करि डूनी ॥
 फोरें जोगु कपारु अमागा ।
 भलेहु कहत दुस रउरेहि लागा ॥
 कहीहि भूठि फुरि बात घनाई ।
 ते प्रिय तुमहि कहइ में माई ॥
 हमहु कहयि अब ठकुरसोहाती ।
 नाहि त मौन रह्य दिनु रातो ॥
 बरि कुरूप बिधि परबस, कीहा ।
 बवा सो सुनिअ लहिअ जोदीहा ॥
 काउ नप हाउ हमहि का रानी ।
 चेरि छाडि अब हाब कि रानी ॥^१

अलकार

पूणाग सुन्दरी नारी को बाह्य सज्जा की अपेक्षा नहीं रहती । जो सौन्दर्य अनिन्द्य नहीं है वही अपन को बाह्य अलवरण एवं प्रसावना क द्वारा छिपाने का प्रयाग करता है । इसा प्रकार जिस काव्य की आत्मा शक्ति सम्पन्न हाती है उसम स्वत ही सौन्दर्य की ज्याति पूट पन्ती है, उसके शरीर पर अलकार भार स्वरूप प्रतीत हात हैं । काव्य की आत्मा भाव एवं निरन्तर गति शील कथावस्तु हाती ह । जिन कवियो का भाव-पत्र दुबन होता है कथावस्तु म सतत प्रवाह नहीं हाता व ही अलकार का आश्रय लते हैं ।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि काव्य म अलकार की आवश्यकता है ही नहीं । अनिन्द्य सुन्दरी भी कश नयन ओष्ठ आदि के प्रसाधन तथा कतिपय जाभूषणा के प्रयाग स और भी अधिक सुन्दर हा उठती है^१ इसी प्रकार सीमा के भीतर अलकारो

१ डा० राजकुमार पाण्डेय—रामचरितमानम का शास्त्रीय अध्ययन प० ३३६ एवं डा० रामधुमार वर्मा—विचार-अंजन, प० १८ ।

२ मानस—२-१५ १—६ ।

३ रमयक—हारादिवद अलकार सन्निवेशा मनाहर । ५ १ (हारादि क समान अलकार का योग मनाहर हाता है ।)

का प्रयोग काव्य ने सोच्य की वृद्धि करता है । एसा ही काव्य निरस्थायी एवं द्राष्ट्य होता है ।^१

अलंकार का महत्त्वपूर्ण उपयोग है अभिव्यक्ति का मंगल एवं अगम्यार्थ अर्थिन सुन्दर बताया । कभी-कभी एसा प्रतीत होता है कि हमारे भाव मरने भाषा में स्वप्रकाश नहीं कर पा रहे हैं एसा स्थिति में अलंकार की मन्थना से पाठकों के समक्ष ताई विश्व प्रस्तुत कर कवि अपने भाव या यन्त्रु का गुणगान के माध्य पाठक तक सम्प्रचित कर लेता है । राम त्रियाय में छटपट्गते दशरथ की मृत्यु का प्रिय प्रवाध-वचन सुनकर दुःसह यशना का मध्य बुद्ध शांति पाकर आंग सात दिन हैं । तुलसीदास ने पानी का बाहर छटपटाते हुए मछली पर ठण्ड पानी के छीटा की उत्प्रेक्षा द्वारा इस सफल रूप में व्यक्त किया है—

प्रिया वचन मृदु सुनते नपु चित्तपड शान्ति उपारि ।

तलपत मोन मलीन जनु सोचत सोतल बारि ॥ २ १४४

पूर्वाचलीय रामायणों उस समय निरी गयी जबकि भाषाएँ अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था से बहुत आगे नहीं बढ़ सकी थी । अभी भाषा का घिस मजि कर चमकान का प्रयास नहीं हुआ था । इस प्रकार का प्रयास तो आगे हुआ । लसका का लक्ष्य था सुचारु रूप से रचा-वचन । यही कारण है कि पूर्वाचनीय रामायणों एक साथ ही रामचरितमानस में भी भाषा की चटक मटक एवं शार्ष्टिक चमत्कार की आर ध्यान रहा किया गया । पूर्वाचलीय रामायणों में शार्ष्टिक अलंकार एक प्रकार से प्रयुक्त हुए ही नहीं है । मानस में भी अर्थात्कारा का ही आवश्यकतानुसार प्रयोग हुआ है किन्तु मानस के रचनाकाल तक हिन्दी भाषा पर्याप्त परिमार्जित हो चुकी थी, भाषा में अलंकार भी दिखायी देने लगी थी । तुलसीदास ने भी अनेक प्रकार के असह्य अलंकारों का प्रयोग किया है । मानस का ध्यान-भूवक पढ़ने पर प्रतीत होता है कि उन्हें इन तीन कवियों की अपेक्षा काव्यशास्त्र का अधिक ज्ञान था । उनके वचन से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है ।^१

शब्दालंकारों का बहुल प्रयोग मानस में देखा जाता है । अनुप्रास यमक पुनरुक्तवदाभास बीप्सा श्लेष वक्रोक्ति आदि अनेक अलंकार मानस में प्रयुक्त

१ दण्डो—काव्य कल्पांतरस्थायी जायत सदलकृति (सदलकृत काव्य चिरस्थायी हो जाता है)—१ १६ ।

वामन—काव्य शार्ष्टमलकारात् (अलंकार के कारण ही काव्य प्राह्य होता है) —१ ११ ।

२ आक्षर अर्थ अलंकारिता नाना । छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥

भाव भेद रस भेद अपारा । कवित दोष गुण विविध प्रकारा ॥ १ ८ ६ १०

हुए हैं। अर्थात्कारा की तुलना में इनका प्रयाग कम हुआ है और जहाँ हुआ भी है वह पहलू अत्यन्तसाध्य है चमत्कार के लिए नहीं।^१

अर्थात्कार के प्रयोग द्वारा भाव एवं वस्तु की सफल व्यञ्जना ही सभी रामायणकारों की कृतियाँ में दिग्यायी पड़ती है। मायव्य वादली एवं शकन्दव जहाँ भाग्य के वर्णन में नामय हो गये हैं, वहाँ उहाने बिना किसी अलंकार के भी मार्मिक अभिव्यक्ति की है। सीता की परीक्षाओं से सम्बन्धित प्रसंग पठनीय हैं।

प्रसमीया रामा० में धूम्राक्ष हनुमान से कहता है, आज लकादाह का प्रतिशाप तुझमें लूगा। हनुमान उसकी धमकी का शोभा समझकर शरतकालीन मघा के गजन की उपमा देते हैं। इस ऋतु के वादन केवल गरजत हैं, बरसत नहीं—

शरत कालर मेघ मिथ्यात गज्जस । ५१६८

रावण-वध के उपरान्त सीता पूर्ण शृंगार कर राम के पास गयीं किन्तु राम का अभिप्राय इंगित से समझकर वह डर से वापस गयीं एवं स्वेद सिक्का हो गयीं। उनके त्रिभुव की शाभा इस प्रकार घट गयी जसे पूर्णिमा का चाँद बादल के आच्छादन में जोज-हीन हो जाता है—

राघवर अभिप्राय इंगित से जानि । धामिला कम्पिता गाव डरिला गोसान्नी ॥

श्रीहानि भला मुख मलिनता चन्द । मेघ येन ढाकिलेक पूर्णिमार चाँद ॥^२

बगला रामा० में जहाँ भावा की प्रधानता है वहाँ भाषा सहज निरलङ्कित हो गयी है। कनी-कही अर्थात् अर्थालंकारों का प्रयोग है। अपन बच्चा से विछुड़कर कठोर वाचिन भी पागल-सी होकर आकुल निनाद करती है। राम से विछुड़कर मानाओं की भी यही स्थिति है—

बार्ता मेघ आइन राजार यत रानी । डम्बूरे हारामे येन फुकारे बाधिनी ॥

प० ८१

रावण हँसता था तो दस जाड़े दात चमक जाते थे। वर्षा ऋतु के समय बगाल में केतकी फूल अत्यधिक मात्रा में खिल उठता है। रावण का विपुल हास्य चित्रित करने के लिए इसी की उपमा दी गयी है—

दशमुख मेलिया रावण राजा हासे । केतकी कुसुम येन फुट भाद्र मासे ॥

प० ६०

उडिया रामा० में त्रोध को मूर्तिमान् करने के लिए साप की उपमा दी गयी है। लाठी पटकने पर साँप बड़े जोर से फुफकारना है इसी प्रकार लक्ष्मण भी त्रोध

१ तुलनीय, डा० राजकुमार पाठेय—रामचरितमानस का शास्त्रीय अध्ययन पृ० ३७८ ।

२ प्रसमीया रामा०—६४७५ ।

से फुफवार रहे हैं—

दृष्टि प्रहारन्ते येह्ये गजइ पनग । ४५६

महासती सीता अत्यन्त पवित्र हैं, दुराचारी पापी रावण के यहा बन्दिनी होकर वे ऐसी प्रतीत हो रही हैं, जस कि किसी मछप के हाथ वेदपोयी पड गयी हो—

मदुम्ना हातरे ये चोइलु बेदपोयि । ५१७

मानस में एक तो लक्षक स्वय ही मार्मिक अनुभूति के साथ भावा का वणन करता है, दूसरे वह हीरे की बनी से कटे हुए एसे उपमान जड देता है जिससे कि अभिव्यक्ति अत्यन्त सशक्त हो उठती है। शोकग्रस्त दशरथ की आकुल स्थिति का निम्न प्रकार से बिम्ब प्रस्तुत किया गया है —

कठु सुल मुल आव न बनो । जनु पाठोनु दोन बिनु पानो ॥

पुनि कह कटु कठोर कवेयो । मनहु धाय महु माहुर बेई ॥

राम राम रट बिकल भुआलू । जनु बिनु पख विहग बेहालू ॥^१

राजा का कठ सुल गया है, मुह से बोल नहीं निकल रहा है। माना पानी के बिना पहिना नामक मछनी तडप रही हो। राजा बस ही छटपटा रहे हैं, उस पर कवेयी बार बार कुछ-न-कुछ बहकर उनकी बत्ना को और बग देतो है मानो धाव में विप घात देतो है। राजा याबुल हाकर राम राम रट रहे हैं। उनकी वही स्थिति है जा पल हीन पत्नी की हाती है। पक्षी के प्राण मानो पल में बसत हैं बिना पल के वह जीवित है किन्तु जीवन रक्षा का मुख्य साधन छिन हान से वह अत्यधिक व्याकुल है। दशरथ भी जीवित है किन्तु प्राणाधार राम से उनका चिर विछोह हो रहा है।

मनुष्य के शरीर में आत्मा का विशेष महत्त्व है। ईश्वर ने आत्मा की रचना भी एसी की है कि सामान्यतः उस पर आघात नहीं हो सकता। किसी प्रकार के भी आकस्मिक आघात के साथ ही पलक भङ्ग कर उनकी रक्षा करते हैं। राम लक्ष्मण और सीता की बड यत्न के साथ सभाल करते हैं वन भाव का पलक और आत्मा के उपमान से तुलनादाम में स्पष्ट किया है।

जोगवर्हि प्रभु सिय सपनर्हि कसैं । पलक बिलोचन गोलक जसैं ॥ २१४१ १

वहा वही तुलसीदाम ने वन-बडे रूपक बोधे हैं^२ यहाँ साहित्यिक सौन्दर्य नष्ट होता है किन्तु पाण्डित्य का परिचय मिलता है। एम स्थान पर भी अलंकार का प्रयोग समत्वार्थ के लिए न केवल सम्युच्चयना के लिए होता है। भक्ति के आदेश एवं स्वयं प्रतिपादन के उत्साह में तुलसीदास ने वन रूपक एवं उपमा समूह का

१ मानस २ ३४२ ३ एव ३६ १ ।

२ रामनाम माहात्म्य निगुण-मगुण मन धमन ज्ञान भक्ति, रामचरित मानस धारि से सम्बन्धित प्रयोग ।

प्रयाग किया है। ऐसे म्यत्र पर भी उनकी अपूर्व प्रतिभा लक्षित होती है यद्यपि कथा प्रवाह की एवता की दृष्टि न य प्रसंग अधिक बाधनीय नहीं है।

अप्रस्तुत-भोजना आधुनिक शब्दावली में उपमय और उपमान का ही प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत कहा जाता है। प्रस्तुत [भाष्य अथवा वस्तु] के सौन्दर्य एवं स्वरूप-बाध के लिए ही अप्रस्तुत की याचना होती है।

डा० नगद ने किया है अतः किमी कवि के अप्रस्तुत विधान की योजना करने समय बौद्ध-आलंकार अथवा कितने अलंकार प्रयुक्त हुए हैं? यह खोज करना विशेष अर्थ नहीं रखता और वास्तव में इस नाम परिगणन से काव्य के कलात्मक स्वरूप पर कोई विशेष प्रकाश भी नहीं पड़ता। उसके लिए तो हम यह जानना चाहिए कि कवि ने इन कथन को सप्रभाव बनाने के लिए किस प्रणाली का आश्रय लिया है और उमका मनावधानिक आधार क्या है?'

प्रत्येक कवि की अप्रस्तुत याचना उसके उस काल समाज एवं संस्कृति में प्रभावित होती है। अथ भारतीय कविता के समान हमारे रामायण-कालका भी जिन उपमानों का सहज किया है उन्हें निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है—

१ प्राकृतिक उपमान कर्मन चन्द्रमा सूर्य नक्षत्र वादन विद्युत् इन्द्र धनु सप्त सिद्धि गज मृग कायन कपोत आदि।

२ पौराणिक या धार्मिक—शिव शक्ति इन्द्र विष्णु गहिणी शची, कुबेर आदि।

प्रथम प्रकार के भी दो भेद किये जा सकते हैं—१ परम्परानुमोदित एवं २ मौखिक। मौखिक उपमानों में उपयुक्त दोनों प्रकार के अतिरिक्त अन्य उपमानों का भी प्रयोग हो सकता है।

प्राकृतिक-उपमानों में युग युग का साहचर्य होने से वे हमारी अभिव्यक्ति के साथ अनिच्छता में सम्बद्ध हो गये हैं। इसी प्रकार पौराणिक आख्यायिका सुनते-सुनते आद्य-पराक्रम आदि के साकार-स्वरूप दृक्ताओं के सम्बन्ध में हमारी धारणा बढभूत हो गयी है अतएव हम प्रायः वृद्ध व्यक्ति के लिए शंकर एवं पराक्रमी के लिए इन्द्र की उपमा देते हैं।

असमीया रामायण में अप्रस्तुत इस रामायण में उपलब्ध कुछ उपमानों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—१ पशुक्रम के लिए महादेव इन्द्र और सिंह। २ मीन के लिए चन्द्र सूर्य तारा कर्मन आदि। ३ एश्वय के लिए कुबेर। ४ सुनक्षणी मित्रया के लिए शची गहिणी विलासिनी पावती, लक्ष्मी। ५ स्त्री-पुरुष के लिए गजेन्द्र हस्तिनी चन्द्ररोहिणी वरुण अदिनि शीरी शिव मधु शशि या मधु विद्युत्, आदिय आदि। ६ निस्तार वस्तु के लिए मट्ठा, जगत री

निस्कारता के लिए जल बुन्दबुन्द । ७ प्रतिपत्नी के तुलना के लिए सिंह शृगाल सिंह गज, सिंह मग । ८ वत्सला माता के लिए रेंभानी हुई गाय । ९ मुन्दरी तबगी के काटी हृदय के लिए अमृत घट म विप । १० दुरा प्रराण के लिए छिन-वश-मा पतन शिशिर स नष्ट कमल । ११ नाशो-मुग के लिए नन्दीतीर स्थित वक्ष आदि । लेखक का मौलिक गूढम निराक्षण भी यत्र-तत्र प्रकट हुआ है ।

छिपकर आघात करने वाले शत्रु के लिए पानी का कौटा बताना—पानीर कण्ठक विधिल से जानि—२५१० । बानरा की मन्त्रो की अस्थिरता की तुलना जल म सीची हुई रखा से करना—जल रखा दिले या गुछे ततिक्षण ३७१२ । अत्यधिक छटपटाने हुए व्यक्ति की स्थिति का यत्र स ताजा पकड हुए हाथी की भांति बताना—प्रथम धरिल यत्र अरण्यर हाती साथ ही ऐसे व्यक्ति की नि श्वासा के लिए ठठर की नाकनी से तुलना—नि श्वास फारार यत्र ठाठारिण भाटि—२१०६ । व्यथ घास्पालन के लिए कर्त्तार के छूछे बादना का गजन—शरत बालर मघ भिछात गजस—५१६८ । असम म शाकन साधना का प्रभाव रहा है । विनाशो-मुग व्यक्ति के लिए अष्टमी के बकर की तुलना दी गयी है—अष्टमीर छाग—२१०३ ।

बगला रामायण म

इम रामायण म भी पराक्रम सौंदर्य कोमलता योग्य अयोग्य आदि के लिए प्राय उपयुक्त रामायणो के समान ही उपमानो का प्रयोग हुआ है । घोडे से उदाहरण प्रस्तुत है—शस्त्र की झंकार के लिए वर्षाकाल म बिजली ७४ । पति-पत्नी मघ बिजली १८१ । सौम्य के लिए तारो के मय चद्रमा १६८ । पराक्रम के लिए सिंह १७१ । घायल के लिए वसन्त का किशुक १६६ । प्रसन्नता के लिए जलधर को देख कर मयूर की स्थिति २१६ । शाकप्रस्त के लिए कदनी की भांति गिरना ११६ । योग्य अयोग्य के लिए गण्ड-वायस सुधा काजि कचन लोहा ब्राह्मण चडाल समुद्र खाई सिंह श्वान आदि ।

बगला रामायण म उपमानो का प्रयोग प्राय परम्परागत है नवी ता का और साथ ही निरीक्षण शक्ति का अभाव है । दो उदाहरण दिय जा रहे हैं—

(१) साप के विष का जोर रोकने के लिए तागा बांधकर दूषित रक्त नकाल लिया जाता है । यन्त्रि तिर म सपदश हुआ तो क्या किया जाए कहां ताग बांधा जाए । किमी अपराधी के लाइलाज हा जाने पर इसकी उपमा दी है—

गिरे कल सर्पाघात कोया बांधबि तागा—प० २७७

(२) छानी पर बाण लाय हुए सगिक की स्थिति चर्राँ के घूमने औ पक्ष भग पत्नी के उडन के समान बताया गयी है—

बुके बाण बाजिया नाटाइ हेन घुरे । डाना भाङ्गा पाखी येन उडे धीरे धीरे ॥'

उडिया-रामायण मे

(१) पराश्रम के लिए—सूय अग्नि, यम सिंह, इन्द्र । (२) सौन्दर्य के लिए चन्द्र कमल, निरफन शम्भ, चम्पा । (३) कामरता के लिए शिरोप-पुष्प, कमल । (४) पति-भक्ती के लिए चन्द्र राहिणी, आदित्य उषा, नीलमध विजली । (५) माय्य अमाय्य की तुलना के लिए कांच मणि पीतल-स्वर्ण । (६) पीडित के संहार के लिए, दरिद्र की निधि समुद्र की नाव, अश्व की त्रुटि हाना । (७) नाशा-मुख्य व्यक्ति के लिए छिन-तर २ ४३ ।

उडिया-लेखक ने भी मौलिक उपमानों का प्रयोग कर सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का भी परिचय दिया है ।

(१) पुत्रा का जाडकर एक वास्तविक बनाने की प्रिया के लिए चुम्बक द्वारा नीचे गये लोह के टुकड़ों के समान बताया है—

चुम्बक पथरे यह्ने लोहरे लाग्य—१ १०४

(२) राम भरत के झूठे बंधुव के लिए जल की उपमा दी गयी है । बोई जल का कितना ही क्या न पीठ किन्तु वह अलग नहीं हो सकता—

पानि कि पिटले कि से बनि भाग होइ—२ ३६

(३) आनन्द में निरानन्द के लिए दूध में तमक की उपमा का प्रयोग— २ ६७ ।

उडिया-लेखक ने नारी सौन्दर्य के वर्णन करने में अनेक उपमान जुटाये हैं । सद्दह अन्वय का भी प्रचुर प्रयोग है । अस्मयीया गमायण जसी सूक्ष्म-बुद्धि का कुछ अभाव है ।

•तुलसीदास की अस्तुत-योजना में उनका सूक्ष्म निरीक्षण—अस्तुत का सपन विम्ब उपस्थित करने के लिए दावाता की आवश्यकता होती है—कवि की सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति और उसका यथास्थान अनाद्यम प्रयोग । बहुत से लेखकों का निरीक्षण वस्तु सूक्ष्म नहीं होता यदि जाना है तो यथास्थान प्रयोग करने की उनमें क्षमता नहीं होती । बहुत से ऐसे व्यापार होते हैं जो सभी की दृष्टि में पड़ जाते हैं किन्तु काव्य में उनका उपयोग सभी नहीं कर पाते ।

तुलसीदास ने कृपि विभिन्न जातियों के स्वभाव, जीवा वनस्पतियों के गुण, नौ विद्यादान आदि में सम्पन्न अस्मनुतों की याचना द्वारा अनेक सपन विम्ब अस्तुत किये हैं । समस्त मानव उनके इस प्रकार के अनुभवों से भरा पड़ा है । तुलसीदास ने नये प्रयोग भी किये हैं किन्तु प्रयोग के लिए प्रयोग उनका उद्देश्य नहीं है । उनका ज्ञान अपूर्व था एवं उनका सहज उपयोग भी कम अपूर्व नहीं है ।

कृपि विषयक अस्तुत - पशुपत डारी न चला सकन के कारण गनिवास उदास था किन्तु राम ने पशुपत कर उसकी निराशा दूर कर इस प्रकार हर्षित किया,

जसे सूखते धाना म पानी पड गया हो—

सखिह सहित हरयो अति रानो । सूखत धान परा जनु पानी ॥ १ २६२ ३

असमीया रामायण म भी इस प्रकार का उपमान प्रयुक्त हुआ है—गर लाग धान यन वरिषण जत । (४६३०)

जीव वनस्पति विषयक—मानस म मछली स सम्प्रधान कई उपमान लिये गये हैं—रिसी दु खी हृदय के चित्रण के लिए वर्षा के प्रथम जल स ध्यातुल हुई मछली^१ अथवा जल स बाहर छटपटाती हुई मछली^२ आदि ।

बिच्छू का विष पीडा बढता हुआ बडी तीव्रगति स ऊपर की धार बढता है इसी प्रकार राम के वनवास का तीक्ष्ण दुःख समाचार शीघ्र ही चारा ओर पन गया ।

नगर व्याप गइ घात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥ २ ४५ ६

जोंक—राम के सरल बचना को कवेयी कुटिल समझती है, जस कि जल समान होता है किन्तु जोक का स्वभाव है कि वह टेढ़ी ही चलती—

चलइ जोंक जल बरुगति जद्यपि सलिलु समान । २ ४२

मधुमक्खी—राम के वनवास स नगर निवासी दु खी मतिन मुख एव दुबल हो गये हैं । उनकी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए उन मधुमक्खियों को प्रस्तुत किया गया है जिनका अयन परिश्रम स सचिन मधु किसी न छीन लिया है—

तन कृत मन बुलु वदन मलीने । बिकल मनहु माली मधु छीने ॥ २ ७५ ४

मयूर—सुवेश किन्तु कपटी व्यक्ति की तुलना मयूर से की है । मयूर देखन मे अत्यन्त मुदर हाता है किन्तु उसका आहार साप होता है ।

तुलसी देखि सुबेपु भूलाह मूढ न चतुर नर ।

सुदर केकहि पेषु बचन सुधा सम असन अहि ॥ १-१६१ (ख)

पाटकीट—पाटकीट स रेशम की प्राप्ति होती है इसलिए लोग ऐसे अपावन कीट को भी पालत है । अपना परम हित जानकर नीच-व्यक्ति के साथ भी मत्री कर लेनी चाहिए ।

पाट कीट सें होइ तेहि ते पाटबर खरि ।

कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्राण सम ॥ ७ ६५ (ख)

बाज—शिकारी लोग बाज की आँखा को ढके रहते हैं जब किसी पक्षी का शिकार कराना होता है तो उसकी ओर सकेत कर उसका आच्छादन हटा देते हैं और वह भपट पडता है । इसी प्रकार कवेयी अपन कठोर वचन रूपी बाज को छोडने के

पहले शपथ ले ली है, मानो वचन-श्री द्वारा ही आन्त्यान्त श्राव्य है ।^१

धर्मोई—कृतकृत्य क लिए वाम का जड में धमाक (वाक) हुआ—

बेनु मूल मुन भयउ धर्मोई । ६ ८-३

कदली—नीच हाटन पर ही मानता है, नम्रता म नर्म । जै कि कदली तभी फल देना है जबकि जड स वाक दिया जाता है । तभी द्वारा पन्नविउ हाकर वह पतित हुआ है—

काटहि पइ कदरी परइ कीटि जतन कोठ सौंच ।

द्विनय न मान खगस सुनु हाटहि पइ नव नीच ॥ ५ ५८

नीचिवा विषयक—ममुद्र म फँसे हुए जहाज,^२ अनुकूल वायु पाय हुए जहाज^३ आदि के उपमान उनकी इस क्षेत्र की भूमि व शानक है । प्रतिभा-भूति न हात देन निराश जाक का धनुभग स प्रसन्नता हुई माना तर्गन हुए व्यक्ति न चाह पा ली हो, परन्तु यकै शान्त जनु पाद । (१ २६२ ४)

राम रात का चुपचाप रख हाकर धन गय । प्रात वचारे नगरवासिया को एसा प्रतात हुआ जस हूवत जहाज पर बठे त्रिभिष जना का होता है—

मनहु वारिनिधि बूड जहाजू । भयउ विवत बड बनिक समाजू ॥ २ ५५ ३

चंद्र का दण समुद्र म ज्वार आना^४ नीकारुद व्यक्ति को ससार चलायमान दिखायी पन्ता^५ आदि व्यापारा का भी उहने उपयाम किया है ।

उनके अथ धप्रस्तुता का प्रयोग इस प्रकार हुआ है फूल दायें और बायें दाना हाथा का समान रूप स सुवासित करते हैं इसी प्रकार मज्जन सत अमृत मभी के प्रति उदार हात हैं ।^६ ककेयी आसन विपत्ति का उभी प्रकार नहीं देख पा रही है जग कि हर तिनका का चरन वाता वनि पगु नहीं देख पाता ।^७ जो पहल स ही भरा हुआ बठा हा उम अग्रिय वात एम ही तीव्र कष्ट दगी, जस किसी ने पका हुआ बाल-साठ छु दिया हा ।^८ प्रियतम स त्रिछुडन पर हृदय विदीण होना जैसे कि नीर के वियाग म पक म दरारें पड जाती हैं ।^९ तुनसीतास न यह उपमान जायसी स लिया

१ वात दबाइ कुभति हँसि वाती । कुमत कुविहग कुलह जनु खानी । २ २७ ८ ।

२ राम वचन मुनि मभय समाजू । तुनु जनिधि महू विवत जहाजू ॥ २ २४८ १ ।

३ मुनि गुरगिरा सुमगत मूना । भयउ मनः मान्न अनुकूना ॥ २ २४८ २ ।

४ नीकारुद चरन जग दसा । ७ ७२ ५ ।

५ मज्जन सवृत्त त्रिषु मम वाद । दक्षि पूर त्रिषु वादद जाई ॥ १ ७ १४ ।

६ मानस—१ ३ (क) ।

७ समझ न राति निकट दुगु कगें । उरुद हरित तिन धनि पगु जग ॥ २ २१ २ ।

८ दानि उठउ मुनि हृदय बटाए । जनु मुद गयउ पाक यगगाए ॥ २ २६ ८ ।

९ हृदय न त्रिदण्ड पक त्रिभि त्रिगुण प्रीतम नीर । २ १६६

है।^१ अग्नि सिर पर धूम एव पहाड़ तिनके धारण करत हैं इगी प्रकार प्रभु भी नीच जना का आदर कर लते है।^२ पराधीन स्थिति के लिए दाँता के मध्य जीभ की उपमा अत्यन्त सुन्दर है बचागी को बाय तो करना ही पडता है जरा भी चूकी कि पिती, साथ ही बदिनी भी रहती ही है।^३ अधिक अपमान पानी का भी बुद्ध कर दता है जस कि अत्यन्त धपण स चदन म भी आग लग जाती है।^४ विनाशामुग व्यक्ति के लिए कूलद्रुम होन की बात तुलसी न भी बही है। (६ २२-१)

छन्द

छन्द छन्द घातु स बना है जिसका ग्रथ आवत करन या रक्षित करन के साथ साथ प्रस न करना भी होता है। साहित्य के क्षेत्र म इस अन्तिम ग्रथ का ही ग्रहण किया जाता है।

अक्षर अक्षरा की सख्या एव व्रम मात्रा मात्रा गणना तथा यति गति आदि से सम्प्रचित विशिष्ट नियमा स नियोजित पद्य रचना छन्द कहलाती है।^५

जिस प्रकार लौकिक मस्कृत म अनुष्टुप प्राकृत म गायत्री और अपभ्रंश म दाहा प्रचलित था उसी प्रकार हिन्दी प्रबन्ध काया म दोहा चौपाई एव पूर्वाचलीय-वाक्या म पयार छन्द का प्रचार रहा ह।

पूर्वाचलीय रामायणो म प्रमुख छन्द पयार या उसी की जाति का १४ वर्णाय छन्द है। मानस के भी प्रमुख छन्द दाहा-सोरठा एव चौपाई है। दोहा सारठा म विशेष भेद नहीं है तथा चौपाई स उनकी सख्या भी कम है। इस प्रकार मानस का भी प्रमुख छन्द चौपाई सिद्ध होता है।

दोहा चौपाई का प्रयोग तुलसीदास के पूर्व सूफी कविया न किया है किन्तु इसने भी पहले पूर्वी बौद्ध सिद्ध इमका प्रयोग करन लग थ। दोहा अपभ्रंश का प्रिय छन्द है। अपभ्रंश काय बडवक-बद्ध है। पञ्भटिना या अरिल्ल छन्द की कई पंक्तियाँ लिखकर कवि एक घत्ता का ध्रुवक दता है यही बडवक है।^६ आग कवियो ने चौपाइया क साथ दोहे का घत्ता लगाना प्रारम्भ किया। श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी न निम्ना है कि दाहा मुक्तक का सफन वाहन है यह प्रबन्ध या कथानक के उपयुक्त छन्द नहा है। इगी कथानक सूत्र का जाडन के लिए १६वीं शती म दाहा के बीच बीच

१ सरवर त्रिया घटत निनि जाई । टूक टूक हाइक विहराई ॥ नाग० वियोग खड ।

२ प्रभु अपन नीचनु आदरही । अगिनि धूम गिरि मिर तिनु घरही ॥ २ २८४ ३ ।

३ मुनु पवन मुत रहि हमारी । जिमि दमनहि महुँ जीभ विचारी ॥ ५ ६ १ ।

४ अग्नि मधरपन जी कर वाइ । अनन प्रगट चदन त हाई ॥ ७ ११० १६ ।

५ हिन्दी साहित्य काश प० २६० ।

६ डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिवान, तृ० स०, पृष्ठ १०१ ।

म चौपाई जोड़कर कथानुक को क्रम बद्ध करने का प्रयास किया गया है। चौपाई कथानुक छंद है इसका पूवरूप अरित्तल है।^१

साहा चौपाई का विकास कानिनास कं विनमावशीय नाटक कं अपभ्रंश छंदो म खोजा जाता है।^२ १०वीं शताब्दी तक दाहा का बहु प्रचार सिद्धो की कविता म दखा जाता है। द्विवेदीजी के मत स दाहा चौपाई म लिखन की प्रथा पूरव म ही पश्चिम की ओर आयी है।

पयार छंद

•व्युत्पत्ति एव लक्षण—डा० सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार पयार छंद पूर्वी मागधी के किसी छंद से निमत है। बौद्धचया गीता पर बगला भाषी भी अपना दावा सिद्ध करते हैं। चर्यापीता म प्रयुक्त छंद पादाकुलक १६ मात्राया का है १० चटर्जी इस छंद स उत्तरी भारत के छंद चौपाई का जन्म मानत हुए भी इसस पयार का सम्बन्ध भी जाडत हैं।^३ पादाकृतक की १६ मात्राया एव पयार के १४ वर्णों का साम्य हो सकता है। चटर्जी महाशय न एक अत्र स्थल प पयार की व्युत्पत्ति स० पदकार श = स मानी है * जगना श०* लोग भी उनका समर्थन करते हैं। प्रस्तुत लेखक का लिख गय पत्र म डा० चटर्जी कहते हैं—पूरी पकित क पढन म लगने वाल समय तथा विरामा का ध्यान रखन पर १६ लघुमात्राया की उपलब्धि हाती है न कि १४ की। उ हान ममा ही छंद भोजपुरी, मयिली और साय ही मगही म भी प्रचलित बताया है।

पूर्वांचल के छंदा म अरर की मात्रा एव छन्दोव्यकी प्रकृति वटुश श्वासा घात पर निर्भर करती है। हिंदी एव सस्कृत म शब्दा की मात्राया की सख्या निश्चित रहती है किन्तु पूर्वांचलीय छंद की नहीं। सस्कृत के वर्णिक छंदो म गणो का प्रयोग होना है अतएव उनम भी मात्रा वक्त क गुण या जात हैं। पयार छंद विशुद्ध वर्णिक है इसकी समानता हिंदी के घनाक्षरी छंद स की जा सकती है। कवि या पाठक छंद को पढान या गात समय स्वर के उतार चढाव के अनुसार वर्णों का दीध या लघु उच्चारण कर लय का रक्षा करता है। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर न बँगला अक्षरो की मात्राएँ बगला स्त्रिया के कशा क समान बतायी है जा कभी लपेटकर जूडे के रूप

- १ डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य का आदिकाल त० स० प० १०४।
- २ मह जाणिय मिय लायणी गिस यन् काइ हरद।
जाव ण णव जलि सामल धाराहह वरसइ ॥ वि० ४८।
रे रे हसा कि गाड्जइ गइ अणुसार मन् लक्खिज्जइ। वि० ४३२।
- ३ श्री सुनीतिकुमार चटर्जी, दि आ० एन् डे० ऑफ लि बँगाली लेखेज पृ० २८५।
- ४ वही, पृ० ६६८।

म बोध लिय जात है धीर कभी गुं हूँ विगत गता है ।^१

पयार छंद दो पंक्तियां का होता है । प्रत्येक पंक्ति में १६ वण होता है । प्रत्येक पंक्ति में ८ धीर ६ गी यति पर ७ पं (पञ्च) होता है । पं गी धीर पर पूर्वांश में विभाजित होता है । पं विभाजित स्वर-नाम्नीय व धनुषार होता है । प्रत्येक पं व का स्वर-नाम्नीय प्राग्ग म अधिा धीर धा म मत्र न वम होता है । पं में भी शब्द प्रयत्ना धा म विगम गता है, जिसमें पूर्वांश वता है । यति व धनुषार विभाजन इस प्रकार होता है

पंक्ति - पूण यति

पं - अध यति

पं - तपु यति

पूर्वांश - उपयति

उदाहरणम्बरेण वृत्तिभाग व पयार की पं पंक्ति प्रस्तुत है ।

चारि	पुत्र	/	लये	राजा	//	सुतो	बहुतर
पूर्वांश १	पूर्वांश २		पूर्वांश ३	पूर्वांश ४		पूर्वांश ५	पूर्वांश ६
पं १			पं २			पं ३	
				पं १		पं २	

० असमीया भाषा में पयार को प्रायः पं कहा गया है, जिसका लक्षण हेमकोश में इस प्रकार दिया गया है ७ चरणा का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ वण एवं अत्यानुप्रास रहना है ।^२ इस काश में पयार शब्द भी है जिसका अर्थ दो चरणों का छंद दिया गया है । पद एवं पयार छंद अभिा है । असमीया रामायण में पयार के लिए पद शब्द का ही प्रयोग किया गया है कि तु माधव कदली लकाकाण्ड के अन्त में स्वीकार करते हैं कि राजा महामाणिक्य के अनुरोध से उन्होंने रामायण को पयार छंद में लिखा—

रामायण सुपयार श्री महामाणिक्ये

बराह राजार अनुरोधे ॥ छवि छंद ६६८५

० बंगला साहित्य में पयार का प्रयोग साहित्य के आदिवाल से लेकर आज तक देखा जाता है । माइकेल मधुसूदन दत्त एवं रवि बाबू तक ने पयार के सफल प्रयोग किये हैं ।

० उडिया साहित्य में प्राचीन काल से प्रयुक्त इस छंद को डा० मायाधर मान

१ श्री अमृत्यधन मुखोपाध्याय बागना छन्दे मूलसूत्र पं १३ १४ ।

२ हमकोण दुफाकि कयार प्रति फाक्ति च्यटा आखर यता आर ओपरर । फाकिर शेपर शब्द तचर फाकिर मिला, एविध असमीया छन्द ।

सिंह बंगला का पयार ही मानते हैं।^१ 'मरत ओडिया अभिधान' में पयार का अर्थ दिया है 'चतुर्दशशर आडिया छन्द विशेष सम्बन्धन प्रकाश पचानुवाद। इसे पहले सारलादास ने, फिर लगभग एक शताब्दी पश्चात् बलराम दास ने प्रयुक्त किया। इन दोनों कवियों ने पयार के प्रयोग में स्वच्छन्दता दिखायी है। सारलादास के किसी-किसी पयार छन्द के प्रथम चरण में १४ तां दूमर में ३४ वण हैं। उडिया में इसे दाण्ड वत्त कहा गया है। दाण्ड का अर्थ है पथ। पथ में गाय जान के कारण इसका नाम दाण्ड-वत्त हुआ और इसी वत्त में लिखित होने के कारण बलरामदास की उडिया रामायण दाण्ड रामायण कही जाती है।^२ श्री विनय घोष ने लिखा है कि राठ से कलिंग जाने वाला पथ दण्ड कहलाता था यही शब्द उडिया भाषा में दण्ड अथवा दाण्ड रूप में प्रचलित है।^३

एसा लगता है कि वर्णों की अनिश्चित संख्या एवं इसके दाण्ड नाम के कारण उडिया पंडितजन इसे पयार से असम्बद्ध स्वतंत्र छन्द मानते हैं जिसका सजन किसी पंडित के द्वारा न होकर साधारण जनता द्वारा हुआ है।^४ श्री नीलकण्ठदास कहते हैं कि लोगो में गद्य को भी पद्य की तरह पढ़ने का प्रचलन था इससे ही हमारा दाण्ड वत्त उत्पन्न हुआ है।^५ इसमें सन्देह नहीं कि पयार अमर और उड़ीसा देश में परिवर्तित रूप में प्रयुक्त हुआ है उड़ीसा में उमने कुछ अधिक विकास भी किया किन्तु यह पयार छन्द ही।

तीना भाषाया की रामायणा में प्रयुक्त पयार छन्द में इन दृष्टियों से समाप्ता है—(१) छन्द में दो पंक्तियाँ होती हैं (२) प्रत्येक पंक्ति में प्रायः १४ वर्णों की याजना का नियम है (३) ८ एवं ६ वर्णों के पश्चात् यति हाती है (४) तरहवें वण पर बलाघात होना है अथवा यह दीर्घ हाता है।

प्रस्वर [Accent] के अनुसार तीना छंदा का इस प्रकार पता जा सकता है—

/ // / /

प्रत्येक पूनाचलीय रामायण में एक-एक उदाहरण प्रस्तुत है—

अमधीया—रुचिकर/वण कम्बु // कठ मना / हर ।

नासातिन / फुन जिनि // चिबुन सु -/ दर // २८१५

१ Called Payar in Bengali and asabari or Kalasa or just 14 lettered metre in Oriya—45 History of Oriya Literature

२ यह वत्त या छन्द उड़ीसा के नाचगीता से अपनाया गया। कुछ लोगों के कथनानुसार यह संस्कृत के 'दडक' वत्त से विकसित हुआ। कृष्ण चन्द्र बहुरा—भारती साहित्य [प्रवृत्त ५६] पृष्ठ ६०।

३ पश्चिम बंगाल संस्कृति, पृष्ठ ६१।

४ श्री नरद्विनाय मिश्र—बलरामदास आ ओडिया रामायण, पृ० १५४।

५ श्री नीलकण्ठदास, आडिया साहित्य पर अमर-परिणाम, पृ० २२४।

बेंगला—मधुकर / मधुवरी // भजार का / नन /

अप्सरारा / नत्य करे // आनदित / मन // —प० १२८

उडिया—गगापाणि / आणि मे खा // इन तिति / जण /

बोलति श्री / राम शुण // ह वीर न / धमण // —प० २५०

बेंगला भाषा के प्यार के बलाघात [Stress] के सम्बन्ध में मुनीनि वावू का कथन है कि बेंगला प्यार के पहल पाचवें नवें एव तेरहवें वण पर बलाघात हाता है। असमीया एव उडिया के प्यारा में भी आठवें अक्षर के पश्चात विराम होकर तरहवें पर तीब्र बलाघात तो होता है किन्तु पहले पाचवें एव नवें वण पर बेंगला जसा तीब्र बलाघात नहीं होता। फिर भी उनके मत से पहल एव नवें वण पर किसी न किसी प्रवार का बलाघात रहता है।^१

रामायणो मे प्रयुक्त छन्द

असमीया रामायण में प्रमुख छन्द प्यार ही है किन्तु उसमें कुछ अन्य छन्दो का भी प्रयोग है। तीना असमीया-लेखको की छन्द सख्या पद या प्यार छन्द के अति रिक्त इस प्रकार है—

	दुलडी	छवि	सुमु
माधव कदली (मुख्य लेखक)	४८	२२	६
शकरदेव [उत्तर० लेखक]	७	७	—
माधवदेव [आदि० लेखक]	६	५	१

दुलडी (अथवा दुनडी)—६ ६ ८ की यति से बीस वणों का वर्णिक छन्द है। इसमें तीन-तीन पवों के दो चरण (पंक्तियाँ ?) होत हैं। इसका प्रयोग प्रायः प्रसंग परिवर्तन विनय सस्तुति माहारम्य वणन भक्ति प्रदर्शन एव सामाय तथा आवेशमय वणन के लिए हुआ है। किसी किसी वाण्ट की समाप्ति भी इसी छन्द से हुई है। एक उदाहरण—

नमो नमो राम दू-बादल ग्याम

सब्वगुणो अनुपाम।

यार गुण नाम धम्म अनुपाम

मुकुति सुपर धाम ॥ ६६८८

छवि—यह वर्णिक छन्द ८ ८ १० वणों की यति वाला है। इसका प्रयोग भी उही स्थितियाँ में हुआ है जिनका वणन दुलडी के सम्बन्ध में हा चुना है। इसमें शक आदि क आवेशमय वणन दुलडी की अपश्चा अधिक हुए हैं। कदली एव शकरदेव न अपना परिचय भी इसी छन्द में किया है। कदा-कही दुलडी एव छवि छन्द साथ

१ डा० मुनीनिकुमार चटर्जी, आ० एड टे० आफ बेंगाली लैंग्वज, पृ० २८६।

साय प्रयुक्त हुए हैं।

उदाहरण—

सातकाण्ड रामायण पदबधे निबन्धितो
सम्भा परिहरि सारोघृत ।
महामाणिकर बोले काव्यरस विद्यो दिलों
दुग्धक मयिते येन घृत ॥ ६६८१

हिंदी में भी छवि नामक छंद है। इसका अष्टव पद्य-रस्य पर चरता है और इसके अंत में गुरु-लघु हाता है।^१

अज्ञान चूर्ण,
हो ज्ञान पूर्ण
मानव समूह,
हो एक व्यूह। (युगवाणी—गन्त)

अममीया व य दाना छन्द बेंगला व निपदी (अथवा ताचाडी) छंद प्रतीत हात हैं।

भुमरि (अथवा जुमुगी)—केवल माघव कन्ती एव माघवदव न भुमरि छन्द का प्रयोग किया है। बेंगला-बोशा में भुमरि का शृंगार-रसात्मक रागिनी विशेष कहा गया है। श्री सुनीतिकुमार चटर्जी भी इस एक प्रकार का गीत एव नृत्य बताते हैं।^२

श्री टी० एन० शर्मा के मतानुसार भुमरि तघुतान पर गाया जाना सामूहिक गान है। छाटा नागपुर और उडामा के कुछ अक्षरा में यह स्त्रिया का सामूहिक नृत्य है। अमम व चाय-बगीचा में अभा भी उलिया एव मुडा श्रमिका में इसका प्रचार है। अममीया छन्द भुमरि इसी भुमरि राग का अन्वय है। यह छंद त्रय और तघुता के कारण भुमरि राग व त्रिग सुगमतापूर्वक प्रयुक्त हो जाता है।^३

अममीया रामायण में प्रयुक्त यह वर्णित छंद आन्दा चरणों का है एव प्रत्येक चरण आठ वष का हाता है। माघवत्त्व द्वारा प्रयुक्त भुमरि में आन्दा चरणा का स्तवक बनता जाता है। कन्ती द्वारा प्रयुक्त भुमरि अथवा जुमुगी छंद में प्रायः ऊपर में नाच तक पूरे छन्द में तुकें मिलती हैं किन्ती छंद में चार चार पंक्तिया की तुकें ही मिलती हैं।

१ डा० पुत्तूनाथ गुप्त—आधुनिक हिंदी काव्य में छंद-याचना पृ० २८४।

२ श्री सुनीतिकुमार चटर्जी—दि० प्रारि० एड डेव० प्रॉफ बेंगाली नेक्वेज, पृ० ४८०।

३ श्री टी० एन० शर्मा—एनपब्लिशिंग प्रॉफ अर्जी आनामीड निटरवर, पृ० १६१।

प्रथम मे ६ ६ ६ पर विराम होता है और द्वितीय मे ८ ८ ८ पर। किन्तु उनके द्वारा प्रयुक्त वे छन्द दोषपूर्ण हैं।

तान प्रधान त्रिपदी—(१) (६ ६ ६)

तबे देखि ताहारे, सेइमत द्वारे,
प्लवङ्ग भगन ।
तारा तह गिखरी, करते धरि,
रहे सुखी मन ॥ पृ० २६५

तान प्रधान त्रिपदी—(२) (८ ८ ८)

अद्द नाभिकूपे लये रे यखन डुबाय
शत शमन आसि तारे
मन कि करिते पारे
पातकी तराते श्रीरामेर नामदि
ओगो एसेछे ससारे ॥ पृ० ४०८

कृतिवास ने शाक प्रसन्नता एवं स्तवन के लिए त्रिपदी छन्द का प्रयोग किया है।

० उडिया रामायण म आदि स अत तक १४ वर्णों के पयार छन्द का प्रयोग किया गया है जिसे दाण वत्त भी कहा गया है। इसके अतिरिक्त किसी भी अन्य छन्द का प्रयोग नहा हुआ है। उडिया आलोचका का कहना है कि उडिया कवियों ने प्राय १४ वर्णों के क्रम का ध्यान नहा रखा है। यह वचनिका छन्द है, जिनका वाचन हा मक्ता है जिसे पदा नही जा सकता। इसीलिए इमे लिखा हुआ देखने पर छन्द विषयक दोष दिखायी पड़ेंगे।

प्रस्तुत लखन को विशेष दाप नही दिवायी पडे, वर्णों की कम अधिक राख्या के दाप तो प्रत्येक पूर्वाचलीय रामायण म मिल जाणेंग। अत्यानुप्रास अवश्य ही कही कही ठीक प्रयुक्त नहा हुए हैं—शरीर आकार होइ-थाइ सुन रत आदि।^१ डा० मायाधर मानसिंह ने रामायण-पाठ को अगुद्ध बनाया है। उनका कहना है कि बलराम दास आदि ने पयार छन्द को स्वतन्त्रतापूर्वक तथा वाचनाथ प्रस्तुत किया था, अनएव उसम वर्ण मन्वधी अनियमितताएँ थी किन्तु उनके वाचन म कोइ याघात उत्पन्न न हाकर सौत्य ही था। अनान भुद्रका न लखका का दष्टिबोध समभे जिना उनकी कविता की विषम पक्तिया को लिङ्कारा की भूत ममभकर पक्षिना से सशोधन करा के उह काट छाटि एव तीड मराड क माय प्रस्तुत किया है।^२

१ उडिया रामायण, १-१३।

२ डा० मायाधर मानसिंह—ए हिस्ट्री ऑफ आरिया लिटरेचर, पृ० ४५।

एक के साथ लगी तोड़ मगाए ता मभी पूर्वांगीय रामराज्य के साथ हुई है किमी का भी पाठ प्राधान्यम पायो के समुदाय प्रतीत नहीं जाता है ।

महात्म्य में मुद्राएँ लोहा चोपाई का ही प्रयोग हुआ है किन्तु उत्तर प्रांतीयक मुद्राएँ मात्र मानित एवं गणित लोहा का भी स्थान दिया गया है ।

मानिक छत्र—चोपाई लोहा माण्डा हरिगीतिका विषयी चोपदा सामर घोर हिल्वा (या परिस्त्र) ।

यणिक घस—समुद्रग्य लोहाया चोपाई भद्रगप्रयाग मानिकी स्याद्धा, यमस्तितिता यमस्य शासून विरोधि मन्मस एव तमस्तमितियो ।

मूर्खी-नरिया त मान मान अर्द्धांतिया के परतात् २। का प्रयोग दिया है घोर तुनसीया न घाठ घाठ के परतात् । य एव विषम का मरण तियाई नहीं कर मर हैं । अर्द्धांतिया ही सत्या नहीं-नहीं गूनाधित ल गयी है । उदाहरण म ता एव स्थल पर ३७ अर्द्धांतिया के परतात् दाह का प्रयोग है । कही गया एव म अधित दाह का भी प्रयोग हुआ है । विषम अर्द्धांतिया के परतात् लोहा एगार तथा लोहा-नहीं यति-गति की अनियमितता आदि दगार अनुमान दिया जाता है कि तुनसीया को पिगल शास्त्र का ज्ञान नहीं था । डॉ० शम्भूनाथ सिंह का कथन है कि तुनसी न शब्द समीत लय और भावाभिभ्यजना का ही अधिक महत्व दिया है पिगल शास्त्र के नियमों की अवहेलना की ।^१

चोपाई-लोहा-सोरठा छंदा के परचात हरिगीतिका के प्रयोग का प्रथम आता है । कवि न इससे द्वारा मानसी आध्यात्म को प्राग वटा का नहीं वग्न व्यापक-रूप से अर्द्धांतियों के अंतिम भाग की पुष्टि एवं पुनरावृत्ति का अथवा सारास देने का काय सम्पादित किया है ।^२ मानस के अथ मानिक छंदा का प्रयोग कवि की आध्यात्मिक भावना, स्तुति अथवा किमी प्रकार के आवेशमय वगन के लिए हुआ है ।

संस्कृत वक्तो का उपयोग मानस के प्रत्येक वाण्ड के प्रारम्भ एवं मानस की समाप्ति पर हुआ है । डॉ० राजकुमार पाण्डेय के कथन का सार निकाला जाए तो संस्कृत छंदा के प्रयोग के निम्न तीन लक्ष्य प्रतीत हात हैं—

(१) देवी देवताओं की प्रसन्नता सम्पादन के लिए उनकी स्तुति ।

(२) आत्मीय कथा भाग की ओर महत्त्वपूर्ण संकेत ।

(३) पात्रों के व्यक्ति-वोटघाटन के लिए उनके शक्ति एवं चरित्र के सम्बन्ध में सूक्ष्म निर्देशन ।^३

१ डॉ० शम्भूनाथ सिंह—हिंदी महाकाव्य का स्वरूपविकास, प० ५५१ ।

२ डॉ० राजकुमार पाण्डेय—राम० मा० का शास्त्रीय अध्ययन प० ४०३ ।

३ वही प० ३६७ ।

मध्य मध्य मे छन्द परिवर्तन रस-वृद्धि करता है। पाठक स्तुतिया के लिए अथवा रसमीने प्रसंगा के लिए इन्हें कठस्थ कर लेते हैं। तुनसीदाम के मगनाचरण के श्लोक राम, शिवादि की स्तुतिया के लिए विशेष-रूप से प्रयुक्त होते हैं। सम्बृत-प्रेमिया को भी इन श्लोका ने आकृष्ट किया है।

सक्षेप म हम यह कह सकते हैं कि सभी गमायण-मेखका ने लगभग एक मुख्य छन्द का अनुसरण किया है। उडिया लेखक का छाडकर सभी ने दवस्तुति, भविन-निवेदन आवेशमय कथन आदि के उद्देश्य से छन्द परिवर्तन किये हैं। उहान कही कही छन्द विपर्यय नियमो का उल्लघन भी किया है कयाकि उनके सामने भावाभिव्यजन मुख्य था। छन्द शास्त्र के नान एव उसका उपयोग की दृष्टि से तुनसीदास को अधिक सफल कहा जा सकता है।

दर्शन और भक्ति

हमारे आलोच्य ग्रन्थकारा ने राम की कहानी बहन के लिए रामायण लिखी थी। उनके काल तक राम भक्ति का प्रचार हा चुका था अतएव उन्होंने भक्तिरस से परिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाकर रामचरित का गान किया। उनके ग्रंथो म 'दर्शन' ग्रंथवा सम्प्रदाय बूढ़ना व्यथ है किन्तु मानसकार गो० तुलसीदास के विषय म ऐसा नहीं कहा जा सकता। उन्होंने समस्त ग्रंथ के मध्य इतना अधिक दार्शनिक विश्लेषण किया है कि काय-स्वरु को हटा दिया जाए तो मानस एक दर्शन ग्रंथ ही हो जाए। उसके इसी गुण के कारण रचितान कर गो० तुलसीदास को कोई अद्वैतवादी, कोई विशिष्टाद्वैतवादी और कोई द्वैताद्वैतवादी बताता है। वस्तुतः तुलसीदास किसी भी सम्प्रदाय के नहीं थे। उन्होंने दर्शना का अध्ययन किया था उनकी बुद्धि को जो अच्छा लगा और व्यवहार पय म जो सहायक जान पडा उसे ही उन्होंने अपना लिया।

जब पूर्वाचलीय रामकथा लेखका ने दर्शन तत्त्व को विशेष महत्ता नहीं दी तो उसका गोस्वामीजी के दार्शनिक सिद्धांता से तुलनात्मक अध्ययन असमीचीन है फिर भी कुछ ऐसे तत्त्व हैं जिन पर विचार किया जा सकता है।

राम-सीता विषयक धारणाएँ

सगुण निगुण—रामायणकारो के दृष्टिनाणो म एक बहुत बड़ी समानता है शंकराचार्य एव रामानुजाचार्य के सिद्धांता के समन्वय की। शंकर के मतानुसार निगुण माया से आवृत होकर सगुण रूप धारण करता है अतएव शंकर सगुण को मिथ्या मानते हैं। रामानुज भी अद्वैतवादी हैं, किन्तु शंकर से उनका मतभेद जीव और जगत से सम्बन्धित धारणा के कारण है। वे चिन्तित विशिष्ट ईश्वर को स्वीकार करते हैं। चित [जीव] और अचित [जगत] ईश्वर के अंग है अतएव वे मिथ्या नहीं हो सकते। वे शंकर के समान सगुण को माया निर्मित एव असत्य न मानकर उसे निज इच्छा निर्मित वपु कहकर सत्य मानते हैं। उनका कहना है कि निगुण

ब्रह्म ही भक्ति-वश होकर सगुण रूप धारण करता है।

ब्रह्म का निर्गुणत्व सभी लक्षका १ निम्न शब्दों का प्रयोग कर स्वीकार किया है—

असमीया०—निगुण पुरुष, निरजन, अव्यक्त, अनादि, अनन्त, वेद विधायक जगत-नायक, आदि-यागेश्वर आदि ।^१

वैंगला०—ब्रह्म, सनातन, अच्युत अव्यय, अनाद्य आद्य ।^२

उडिया०—निरन्त निराकार अक्षय अव्यय अच्युत अनादि अनन्त, महत्त्व, आकार, निगुण ।^३

मानस—निरुपाधि अविगत अथ वचन अगोचर बुद्धि-पर, अगुण, अरूप अलस, अज ।^४

रामानुज के अनुसार इन लक्षका न सगुण को माया निर्मित नहीं अपितु स्वयं माया को सगुण की वशवर्तिनी बताया।

० असमीया रामायण—ब्रह्म निज योग-बल से प्रकृति के तीन गुणों में अपने-आपका सजित करता है। सभी जीव निरन्तर माया के अधीन रहते हैं। केवल तुम्ही माया के स्वामी हो।

निज योगबले प्रकृतिर गुण तिमि । आपोनाते आपोनाक सजाहा आपुनि ॥ ५८०
मायार अधोन आमि जीव निरन्तर । तुमिसे केवल मात्र मायार ईश्वर ॥ ५७०

० वैंगला रामायण लेखक न ईश्वर को 'मायार मनुष्य, अथवा मायाते मनुष्य लीला कहकर अवेत किया है कि भगवान स्वयं ही माया करता हुआ मनुष्य का रूप धारण कर लीलाएँ करता है।

० उडिया-रामायण में भी ब्रह्म जगत् के हित के लिए अवतार धारण करता है—

नारायण पुरुष जगत हितकारी ।

अवतार होइछु अमुरकुल मारि ॥ ६२३०

गा० तुलसीदास न इस सिद्धान्त का भली प्रकार निभाया है। उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया है कि जड-वचन सभी जीव माया के वश में हैं किन्तु तीनों गुणों की खान यह माया स्वयं ईश्वर के वश में है।

माया वस्य जीव सबराचर ।

माया वस्य जीव अभिमानी ।

ईस वस्य माया गुन खानी ॥ ७-७७ ४ ६

१ असमीया रामायण छंद सख्या १६७ ७४ २६१६, ४७५६ ।

२ वैंगला रामायण, ४२१, ४१५ ।

३ उडिया रामायण ३ २२६ ०३६ एव ७ २१६ ।

४ मानस, १ १४३-१, २-१२६, १-११५ २ ।

निम्न पवित्रता म भी रामानुज की छाया है—

परवस जीव स्वयस भगवता । जीव अनेक एव श्रीवता ॥ ७ ७७ ७

गोस्वामीजी न माया क दा रूप बनाय हैं—त्रिदा अविद्या । प्रथम गगन का निर्माण करती है एव द्वितीय दुष्ट स्वभाव की है ।

ससार का अर्थ ही सभी संगरा १ शकराणाय के अनुसार अनित्य माना है—

असमिया—

अपिर ससार आव जाना महाणय ॥ ६० ६३८६

बगला—

दारा मुत मिद्या माया सजलि अलीक । ३५३

उडिया—

ससार चरित जाण वपणर छाया । २ ८५

ए माया ससार पुणि अट्ट अमित्य । २ ८५

मानस पर तो स्पष्ट ही शकर का प्रभाव है—रज्जो यथाह्रम का गोस्वामीजी की इन पवित्रता म भी नेगिए—

रजत सोप महू भास जिमि जया भानु कर वारि ।

जदपि मया तिहू काल सोइ अम न सकइ कोउ टारि ॥ १ ११७

राम विष्णु—राम वस्तुतः विष्णु की अवतार परम्परा म आते हैं । त्रिदेवा मे विष्णु और शकर को ही प्रमुख स्थान प्राप्त है । कोई पुराण शिव का परब्रह्म मानता है और कोई विष्णु को । शिव और ब्रह्मणव लोग अपन अपन उपास्या की महत्त्व-वृद्धि की चष्टा करत रहे हैं । जहाँ उहाने एसी चेष्टा की है वहाँ उहे त्रिदेवा स ऊँचा सिद्ध किया है । सभी रामायण लेखना ने किसी न किसी रूप म राम का विष्णु माना ही है ।

असमीया रामायण म उह विष्णु और लक्ष्मीपति कहा गया है । ५४७ ४८

बंगला रामायण म स्पष्ट ही कहा गया है—राम विष्णु अवतार लक्ष्म सवार भार । (५० ६५)

उडिया रामायण म शस चम गदा पद्मधारी कमलापति विष्णु का कई बार उल्लेख हुआ है । जहाँ उह अनादि अनन्त अच्युत आदि कहकर उनके निगुण रूप का स्तवन है वहाँ भी लक्ष्म उहे पीत-वास भी कहा गया है—

अनादि अनन्त विभु अच्युत अक्षर ॥

नमो नारायण नमो नमो पीत-वास । ७ २१६

मानस म राम का परब्रह्मत्व अत्यन्त कुशलता एव सजगता से चित्रित है किन्तु कई एम स्थल आय हैं, जहाँ राम की स्तुति करत समय देवताओं के समाज महि

शंकर और ब्रह्मा ता हैं किन्तु विष्णु नहीं है, जिस कि गोरूप धारिणी पृथ्वी के माथ जन्म के लिए भगवान स प्रायना करने समय अथवा रावण विजय के उपरान्त सभी देवताओं द्वारा बदना के समय । इनके अनिर्दिक्त उन्हें कई स्थानों पर विष्णु, रामा पनि आदि नामों से पुकारा भी है ।

विष्णु जो सुरहित नर तनु धारी—१-५० १

राम रामपति कर धनु लेह—१ २८३ ७

त्रिदेवों में उच्चस्थान—अपन अपन उपास्य र्वा का उँचा सिद्ध करने के शक एक वष्णव उपासकों के प्रयास का उत्प्रेषण हुआ चुका है । रामापासकों ने भी राम को कवन विष्णु मिश्रण कर उन्हें तीना देवताओं में उच्चस्थान दिया है । पुराणा की मान्यता भी यही है कि एक ही ब्रह्म अपन सष्टि-नय करने वाले गुणा के अनुसार अपन को तान रूपों में व्यक्त करता है ।

असमीया-लेखक इसी दृष्टिकोण से कहता है—

ब्रह्म रूप धरि स्रजा इ तिति भुवन । विष्णु रूप धरि करे सष्टिक पालन ॥

रुद्र रूप धरि करे आपुनि सहार ।—छ० ५७०

वैंगना-नगवक भी कहता है —

तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि महेश्वरं—पृ० ३५७

उमा एक स्थान पर राम का इन तीना से बढकर भी माना है—

तोमार एकाग ब्रह्मा विष्णु महेश्वर (पृ० ३६०)

उडिया रामायण में भी एक ही ब्रह्म— ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिति रूप धर^१ की स्थिति में आना है किन्तु ब्रह्म है विष्णु ही क्योंकि वह चतुर्भुज है एक उसी ने ब्रह्मा का नाभिपद में उत्पन्न किया है और रुद्र का इश्वर का पद दिया है—

आम्भ य ब्रह्माकु नाभि पद्म जाति कलु । आम्भे से रुद्रकु ये इश्वर पद देलु ।

—६ ५७

मानस में राम का अवश्य ही त्रिदेवा में ऊपर चित्रित किया गया है । य तीनों देव राम के एक अण में उत्पन्न हैं । वे तीना देवा का नचाने वाले हैं । त्रिदेव राम के ब्राह्मों की रक्षा नहीं कर सकत ।

सम्भु विरचि विष्णु भगवाना । उपजाहिं जामु अस तें नाना । १-१४३ ६

विधि हरि सम्भु मन्वावन हारे । २-१२६-१

संकर सहस विष्णु अज तोही । सर्वहिं न राखि राम कर द्रोही । ५ २२ ८

राम का कृष्णत्व—वैंगना रामायण के राम तो त्रिदेवा में श्रेष्ठ विष्णु के अवतार हैं वम इम नगवक का दृष्टिकोण यही तत्व सीमित रहता है । मानस के

नदी आदि उनके रोम रोम में समाय हुए हैं। किन्तु लेखक ब्रह्म के इस व्यापकत्व का भाग संभाल नहीं पाया। देवनागा की प्रायना पर विष्णु अवतार लेने को तैयार हुए तो लक्ष्मी रोने लगी। स्त्री से विछुड़ने की कलना कर कम्बुग्रीव विष्णु भी रोने लग।^१ हो सकता है पांचाली-गायका ने इस प्रसंग का अपनी ओर से जोड़ लिया हो।

मानस के उत्तरकाण्ड में काकभृगुडि ने राम का विराट रूप देखा है। उससे ही राम का परब्रह्मत्व प्रकट हो जाता है। शिशु-राम से ब्रीडा कर उनकी शक्ति की परीक्षा लेते समय काकभृगुडि खूब छकाय गये। वे राम के मुख में प्रविष्ट हो गये। वहाँ उन्होंने अगणित ब्रह्माण्ड देखे। प्रत्येक लोक में ब्रह्मा विष्णु-महेश सहित समस्त-सृष्टि अलग अलग थी। प्रत्येक लोक में अक्षयपुरी दशरथ और कौशल्या विद्यमान थे। इन अगणित ब्रह्माण्डों में सभी कुछ भिन्न भिन्न था किन्तु राम का रूप भिन्न न था।

भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति विचित्र हरि जान।

अगणित भुवन फिरेउं प्रभु राम न देखेउं आन ॥ ७ ८१ (क)

मानस के इस वर्णन से निष्पन्न निकलता है कि सृष्टि में कई ब्रह्माण्ड हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्ड में अलग अलग त्रिदश मुनि और देवतादि हैं। एक ब्रह्माण्ड के देवादि दूसरे ब्रह्माण्ड के देवादि से भिन्न हैं। य सभी ब्रह्माण्ड राम के उदर में समाय हुए हैं। अर्थात् राम के ही अंश से इनका निर्माण हुआ है। राम एक हैं उनके रूपों में भिन्नता नहीं है। गा० तुलसीदास के इस वर्णन में विष्णु का महत्त्व बहुत कम हो जाता है। राम के ब्रह्मत्व का एसा उन्मथन एक निर्वाह पूर्वाचरीय रामायणों में नहीं है।

सीता—पूर्वाचरीय रामायणों की सीता लक्ष्मी मात्र हैं इससे अधिक कुछ नहीं। मानस में भी कहीं-कहीं सीता को लक्ष्मी कहने पर भी उन्हें राम की शक्ति के रूप में ही अधिक देखा गया है। वे उसी माया हैं जो कि राम का रूप पाकर जगत् का सजन पालन और संहार करती हैं।

श्रुतिमेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।

जो सजति जगु पालति हरति स्ख पाइ कृपानिधान की ॥ २-१२५ ८। छंद

वे आदिशक्ति हैं। इन्हीं के अंश से अगणित लक्ष्मी उमा और ब्रह्माणी जन्म लेती हैं।^२

सीता ब्रह्म से अभिन्न हैं मदेव उनके वाम भाग में शोभित रहती हैं। मनु-

१ बेंगला रामायण, प० ५४।

२ जामु अम उपजहि गुनखानी। अगणित लच्छि उमा ब्रह्मानी। १ १४७ ३।

आदि सक्ति जहि जग उपजाया। माउ अवतरहि मारि यह माया ॥

शतरूपा को दशन दत्त समय भी व उनके साथ थी ।^१ वर भी स्तुति व समय राम को समुक्त शक्ति^२ रहते है । व राम न गिरा अथ जन वीरि राम^३ अभिन है ।

गोस्वामी तुलसीदास ने शनराचाय व मायावाट का रूप गवितिन किया है । शबर के अनुसार सगुण ब्रह्म मायावशवर्ती है और शम्बामीजी व मत म माया राम की शक्ति है तथा उनके अधीन है । यह माया उद्भव स्थिति सहारवारिणी और साथ ही वनशहारिणी तथा श्रयस्वरी रामवल्लभा भी ह ।^४

अवतार

प्रत्येक महाकाय का कोई न कोई उद्देश्य होता है । रामायण काय का उद्देश्य है रावण का सहार—अर्थात् अमृत पर सत की जय । सत व प्रतीक राम अपने सदगुणो व कारण नर स नारायण हा गय । गीता म भी सत की रक्षा और असत के विनाश के लिए भगवत् शक्ति का उत्पन्न दिखाया गया है । आगे चलकर गीता का उद्देश्य रामायणा पर छा गया । इसके लिए उपयुक्त भूमि पहल स ही तयार थी ।

अवतार का उद्देश्य इसीलिए अवतार व उद्देश्य म सभी रामायणो मे समा नता है । गीता म अवतार के उपयुक्त स्थल एव उद्देश्य के विषय मे कहा गया है कि—

(१) जब धम की हानि हो और अधम वा अम्युत्थान हा ।

(२) तत्र सज्जनो की रक्षा दुजना के नाश एव धम की सस्थापना के लिए मे युग युग म अवतार ग्रहण करता ह ।^५

असमीया रामायण म भी स्थान स्थान पर यही उद्देश्य स्पष्ट होता है । आदिकाण्ड (माधवदेव) म कहा गया है —राम न अवतार लेकर राक्षसो का सहार किया और भूमि का भाग हरण किया । उहाने ब्रह्म आदि का प्रयोजन सिद्ध किया । वे सज्जन रजन एव दुष्टजन विनाशक है । वे धम-धम की रक्षा कर महत जनो का पालन करते और दुष्ट दुजन का विनाश करत हैं ।

- १ वाम भाग साभति अनुभूला । आदि शक्ति छवि निधि जगभूला ॥
भ्रवृटि विनाग जागु जग हाई । ताम वाम निमि सीता साई ॥ १ १४७ २ ४ ।
- २ जय प्रता पात त्यात प्रभु सजुक्त शक्ति नमामह ॥ ७ १२ ग छद ।
- ३ मानस १ १८ ।
- ४ उत्भवस्थितिसहारवारिणी वनशहारिणीम ।
सत्रश्रयस्वरी सीता नतोह रामवल्लभाम ॥ वात०, ५ ।
- ५ गीता, ४ ७, ८ ।

हरिला भूमि र भार राक्षस सहारि ॥
 ब्रह्मा आदि देवर साधिला प्रयोजन ॥ छ० ३
 सज्जन रजन दुष्ट जन विनागक ॥ छ० ७१०
 महतव पाला धम्मपथ रक्षा करि ।
 कराहा बिनाग दुष्ट दुज्जनक हरि ॥ छ० १७८

अरण्यवाण (माधव कदवी) म भी धम की रक्षा के हेतु अवतार हाना बताया गया है— तत्र धम ॥ त्तु भना अवतार ॥^१ आग भी कहा गया है— तुम्ही समार क मेतु हा उत्पत्ति और प्रलय के हेतु हा, अमन्तो का सहार करते हा ।

तुमिनि ससार सेतु उत्पत्ति प्रलय हेतु
 असतक कराहा सहार । छ० ६४६६

० बंगला रामायण म भी भक्त का सुगमभन मकट का निवारण तथा दुराचारी राक्षमा का विनाश ही अवतार के उद्देश्य हैं—

ह्येष्टेन लोके तिनि सम्प्रति प्रकट ।
 साधिते भक्तेर सुख नाशिते सकट ॥^२
 मायार मनुष्य तुमि चतुर्बाहु आसि भूमि
 नाशिते राक्षस दुराचार ॥^३

० उडिया रामायण म भी देवताआ क (हित क) लिए एक ब्रह्माण्ड के शत्रु (रावण) का नागच से सहार करने के लिए ब्रह्म राम ने सामाय रूप धारण किया है ।

देवताक पाई तु सामाय रूपधरि । ब्रह्माण्ड शत्रुकु ये नाराचरे सहारि ॥ ६ ३१४
 और भी कहा है—

परब्रह्म नारायण स्वय अवतार ।
 दुष्टी जनकर बधु दुज्जन सहार ॥ १ ५८

० मानम मे भी गीता क इही सिद्धांता को ग्रहण किया गया है, तथा इमे और भी दढा कर प्रस्तुत किया है—

जब जब होइ धरम क हानी । बाढिहि असुर अधम अभिमानी ॥
 करहि अनीति जाइ गहि बरनी । सीढिहि विप्र धेनु मुर धरनी ॥—
 तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

१ असमीया रामायण छ० २६७५ ७१० ।

२ बंगला रामायण प० २५१ ।

३ वही, प० ४२५ ।

अमुर मारि धार्पहि सुरह, राखहि निज श्रुति-सेतु ।

जग विस्तारहि बिसद जस राम जन्म कर हेतु ॥^१

अनीति-परायण अधम अभिमानी राक्षसों के बध एव ब्राह्मण गाय, देवता, पृथ्वी और सन्तजन एव वदिक मर्यादाओं की रक्षा के लिए भगवान का अवतार दिखाया गया है ।

दशावतार—वामन और नरसिंह आरम्भ से ही विष्णु के अवतार माने गये थे किन्तु मत्स्य ब्रूम तथा वाराह अवतार पहले प्रजापति से सम्बन्धित थे, बालात्तर म जब विष्णु का महत्त्व ब्रह्मा के उनके अवतार माने जाने लग । नारायणीय म प्रथम बार विष्णु के छ अवतारों वाराह, नरसिंह वामन, भागवतराम दाशरथिराम एव वासुदेव कृष्ण का वर्णन हुआ । पुराणों म अवतारों की संख्या भिन्न भिन्न स्वीकार की गयी है । वाराह पुराण मे प्रथम बार अधुना प्रचलित दशावतार का वर्णन हुआ है ।^२ उपयुक्त छ अवतारों के प्रारम्भ और अन्त म दो दो और अवतार जोड़कर १० अवतार होते हैं—

(१) मत्स्य (२) ब्रूम (३) वाराह (४) नरसिंह (५) वामन (६) परशुराम (७) राम (८) कृष्ण (९) बुद्ध और (१०) कलि । रामायण-लेखकों को भी अवतारों की यही संख्या मान्य प्रतीत होती है ।

असमीया रामायण के उत्तरकाण्ड म केवल ५ अवतारों का उल्लेख है— नरसिंह वाराह मत्स्य कच्छप और वामन । राम और कृष्ण अवतार हैं ही । दस अवतार गिनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी । स्तनि करत समय केवल इनका ही उल्लेख हो गया है—इसम श्रम भी नहीं है ।^३

बैंगला रामायण का श्रम वाराह पुराण के अनुसार है—

(१) मत्स्य (२) ब्रूम (३) वाराह (४) नरसिंह (५) वामन (६) परशुराम (७) राम ।^४

मानस म भी यही श्रम है—

मीन कमठ शूकर नरहरी । वामन परशुराम अपुधरी ॥ ६ १०६७

दाना न शप तीन अवतारों का उल्लेख इसनिष्ठ नहीं किया कि वे राम के पश्चात् हुए थे ।

१ मानस १ १२० ६ ८ एव १२१ ।

२ दक्षिण कलकत्ता ब्रूम आफ सर आग० जी० भाटारकर जिल्द ४, प० ५८।५६ तथा बुल्ने रामकाय (डि० स०) प० १४७ ।

३ असमीया रामायण प० ४५४।४५५ ।

४ बैंगला रामायण, ४४२ (लका०) ।

उडिया रामायण म दसा अवतारा का वणन है—[१] मत्स्य [२] कूर्म [३] वाराह [४] नरसिंह [५] वामन [६] परशुराम [७] राम [८] दक्खीनन्दन [९] बुद्ध (वज्र) [१०] कलि (कलिक) । यह क्रम बिल्कुल वाग्वह पुराण जसा है ।

चतुर्व्यूह सिद्धांत—पाचरात्र आगम म भगवान क चार प्रकार क अवतारा की चर्चा की गयी है—व्यूह, विभव, मर्चा एव अतयामी । व्यूह क अतगत आत हैं—वामुख्य सकपण, प्रद्युम्न एव अनिच्छ । विशिष्टाद्वतवारी सम्प्रदाय एव पुराणो म भी व्यूहा की चर्चा है । इनका सम्बन्ध कृष्ण म रहा है आग राम के भाइयों सहित चार अवतारा म भी चतुर्व्यूह सिद्धान्त प्रचलित हुआ । विष्णुधर्मोत्तर-पुराण (अ० २१२) तथा नारद-पुराण (उत्तर० अ० ७५) म राम क इस व्यूह अवतार का वणन है । सूरदास न रामचरितावली म वामुदेव विषयक चतुर्व्यूह सिद्धान्त के आधार पर राम क चतुर्व्यूह का भी निरूपण किया है ।^१ तीना पूर्वाचलीय रामायणा^२ म एक ही ब्रह्म क चार रूप धारण कर्न का वणन है । उडिया रामायण म इसके साथ ही लक्ष्मण का शप (साय ही रद्र) तथा शमुष्ण और भरत का क्रमशः शत्रु एव चक्र का अवतार बताया है । अध्यात्म्य रामायण (१-४ १७ १८) म भी 'समादि भाइया का विष्णु शेष शत्रु एव चक्र का अवतार बताया गया है । प्रतीत हाता है कि पूर्वाचलीय रामायणा पर चतुर्व्यूह सिद्धान्त का प्रभाव है । मानस पर प्रभाव है या नहीं, कहना कठिन है । तुलसीदास न लक्ष्मण का शेषावतार ता माना किन्तु भरत और लक्ष्मण को उहान किसी का अवतार नहीं बताया है इसलिए डा० उज्यभानु सिंह तुलसीदास पर यह प्रभाव नहीं देखते । मानस म अध्यात्म रामायण का अनुसरण हुआ है । शेषावतार का वणन मानस म है ही । 'असन्ह सहित मनुज अवतारा — १-१८६ २ के अन्त म यदि भरत एव शमुष्ण के शत्रु एव सुदशन हान की ओर संकेत नहीं है तो मैं भी डा० सिंह का समर्थन करता हूँ ।

नाम-कीर्तन

गीता म नाम-रूप को श्रेष्ठ यज्ञ कहा गया है । कलियुग म नाम रूपा की विशेष महत्ता बतायी गयी है । पुराणा के अनुसार गार्वाधी तुलसीदास न कहा है,

१ उडिया रामायण ३।४५, ६।१ ।

२ डा० उज्यभानुसिंह—तुलसी-दशन मीमासा पृ० ७५ ।

३ अममीमा, चारि भाइ महावीर विष्णु अशे जात छ० ३१ ।

बंगला—एक अशे चारि अशे हहला नारायण, प० १ ।

उडिया—शमुष्ण शत्रु चक्र भरत अटइ ।

चारि भाइ श्रीराम अटति एक देही ॥ १ २१८ ।

शुण देव देव तुम्हे अनन्त मुरति । ७ २०१ ।

महारद्र मुरति हल मुपल धर ॥ ७-२०१ ।

धम के चार पद हैं, किन्तु कलि म धम केवल एक पर पर गडा है । इस युग म याग यज्ञ और तप नही किये जा सके । केवन राम का गुण गान ही एक आधार है । कलियुग में व्यक्तिया को सुविधा मिल गयी । जीवा का सतयुग म ध्यान का श्रेता म यज्ञ और द्वापर म पूजा करने का कष्ट उठाना पडता था । कलियुग म केवन कीर्तन से ही फल मिलता है—

कृते यद् ध्यायतो विष्णु श्रेताया यजतो मल ।

द्वापरे हरिचर्याया कलौ तद् हरि कीर्तनात् ॥^१

असमीया लेखक और मानस कार न इमी दृष्टिकोण का निम्न पक्तिया म प्रकट किया है—

सत्ययुगे पूज विष्णु धरिया समाधि । महा महा यज्ञ जता युगत आराधि ।

येन गति द्वापरत पूजि भवित भावे । फलित कीर्तन करि सबे फल पावे ॥ ७३६७

असमीया लेखक शंकरदेव न कलि का परम धम हरिनाम बताया है— कलियुग परम धम जाना हरिनाम ७००^२ । मुख्य असमीया रामायण लेखक ने भी इस सभी शास्त्रा का सार कहा है 'सर्वना शास्त्रर सार'—२५, १७ ।

मानस-वार न भी इन पक्तियो का पूर्ण समर्थन किया है—

ध्यानु प्रथम जुग मल विधि दूजे । द्वापर परितोपत प्रभु पूजे ॥ १ २६ ३

वगना और उडिया लेखक भी नाम जप को महत्त्व दत ह किन्तु असमीया रामायण के परिवर्द्धनकार शंकरदेव क समान उह न ता बाई पथ चनाता था और न हिन्दी-लेखक गोस्वामी तुलसीदास के समान धम साधनाया क मन्त्र समन्वय कर धार्मिक सुधार करना था । इन दो लेखका की रुचि राम-नाम जप का फल लियान की रही है ।

वगना-लेखक का कहना है कि राम क स्मरण मात्र से मुक्ति पीछे दौल पडती है । राम-नाम-जप की अभिजाता रखत वाता यकिन सब पाप से मुक्त होकर बकुण्ठ म वाम करता है ।^३ यज्ञ ता हूँ पाप्मीकिव सुग की प्राप्ति इमक अनिर्गिकत नीकिव सुग की भी प्राप्ति हानी है ।^३ रामनाम जप का एसा प्रभाव है कि चारा वटा के अध्ययन से जिनना फल मिलता है उनना फल कयन एक बार क नाम जप म मिल जाता है ।

चारि बद् अध्ययने यत पुण्य इय । एके बारे राम नाम तत फलादय ॥ ५८२

उडिया-लेखक भा राम-नाम का टुग शाव का गणन करत वाता एन

१ दमिण हा० बन्धन प्रगाद मिथ्र—तुलसीदास प० २८८ ।

२ बंगना रामायण, पृ० १६२ प० ५८२ ।

३ मधुवन तुल यदि पाप पुन फल प० ५८२ ।

चतुर्वर्ग—(घम, अथ काम और माध) गणक बताया है ।

श्रीराम नाम गोटि खड्ड दुःख गोक । श्रीराम नाम गोटि चउवग दायक ॥ ६-२२३

असम का नाम-कीर्तन—असमीया रामायण के उत्तरकाण्ड-वर्गक शंकरचक्र ने असम देश में कई मन्ना एव गाव गाव में नामधरा की स्थापना कर हरिनाम-कीर्तन का प्रचार किया था । असम के घर घर में कीर्तन का एसा प्रचार हुआ था कि मुगला का सना-नायक रामसिंह अपनी माँ और पत्नी के अनुग्रह का न टाक सका और एम प्रदेश पर आक्रमण करने का साहस न कर सका । जहाँ के घर घर में नाम जप की ध्वनि जाती है ।

इनके नाम जप का हल्का-सा प्रभाव ही रामायण पर दिशाधी पड़ता है ।

मानस की विशेषता—रामनाम जप का प्रभाव बताकर तुलसीदास ने पाण्डित्य एवं सम-वय-वौश्ल का परिचय दिया है । वे रामनाम का आशु फलदायक एवं इमकी साधना अत्यन्त सरल मानते हैं । चारा युगों एवं चारा वर्गों में नाम का प्रभाव है, विशेषतः कलियुग में नाम के अतिशक्ति और काई उपाय नहीं है ।

चहूँ जुग चहूँ श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि विमेषि नहिं आन उपाऊ ॥ १२५

यदि कोई जभाई लन हूँ भा राम का नाम न द ता वह मार पापा में सुवन हो जाणा ।

रामनाम कहि जे जमुहाहौं । तिहहि न पाप पुज समुहाहौं ॥ २१६३ ५

राम के नाम पर अङ्गुलिका की चप्पा भी दखी जाती है कि जेभाए ना हूए राम बहन पर जब पाप पुज नहीं रहत ता फिर जिस राम ने स्वीकार कर लिया वह अपवित्र बड़ा रह गया ।

सगुण निगुण सम-वय—राम-नाम के मायमें से तुलसीदास ने सगुण निगुण धाराधारा में सम-वय करने का मन्त्र प्रयोग किया है । द्वितीय भाषी धारा में निगुण सम्प्रदाय के नागा ने ब्रह्म का राम कहा है । कबीर आदि निगुण उपासक आशरफि राम के मायना न हूँ भी ब्रह्म राम के उपासन थे । समाज में निगुण-शक्ति का कुछ प्रभाव था अतएव इनका वे नाम के आधार पर ही निरट जाना चाहत थे । न मानो राम (आशरफि) को, नाम का तो मानत है । नाम ब्रह्म के दाता स्वस्वपा से बनकर है । वह ब्रह्म राम में ना बँडकर है । सगुण राम नाम के साथ कुछ भी नहीं, अर्थात् राम शक्ति एवं पापी का उद्धार कर सक्त है ता नाम अमन्य पापिया का ।

अगुण अगुण दुइ ब्रह्म स्वरूपा । अक्षय अगाध अनारि अगुण ॥

मोरे मत बड़ नाम दुहूँ ते । किए जेहिं जुग निज बस निज सूते ॥

राम एक तापस तिथ तारी । नामु कौटि सत धुमति सुधारी ॥

गुरुगीर्णम म यदि गमात्र गगना न। भवता न तानी घोर रोगर का सिगी
भी ताम मे भत्रा करा म पुत्र-नाभ ह। जाता गा न राम-नारद-गणर का उद्भासना
न करी। भगवात् को भाव न। की गति म मुक्त ह।। के लिए माया राम म कर
मांगी है कि यद्यपि प्रभु व घोष नाम है। किन्तु उन सब म राम नाम का महत्त्व
गवग बढ़ता ह।।

अद्यपि प्रभु व नाम धारता। अति बह धरित लखे लखे ॥

राम सक्त नामह त धरिता। होउ माप धप लग गन धरिता ॥

३ ११ ७ ८

भक्ति

भक्ति जन्म की उत्पत्ति भक्त धातु म हुई है। त्रिगुण धप है भक्ता।
साण्डिल्य भक्ति-मूल व धनुषार रोगर म परम धनुषि ह। भक्ति है— भक्ति
परानुरक्तिरीयर। अल्ल की प्राप्ति व क माप है—कम गा माग ल भक्ति
माग। अत्यन्त मुक्त होने व कारण धारणों व भक्ति माग का प्रमुगता गी है।

अल्ल बदनामप—भक्त व त्रिगु भगवात् कया एक मता गता है। धरितु एक
धरितनाली जीवत पुरण है। जाति साधारण जना की धा ता गया करणा प्रम धारि
भावा की गम्भीरतम धनुभूति करन है। यदि भगवात् धाग-नार हृदय हीन वा रर
तो भक्त कया उह पुकारेगा। हमार रामायण-रसका व राम व इगी गुण पर मुग्ध
हाकर उनका गुण-गान किया है। घोर उकी शरण मांगी है।

बैंगला घोर उडिया रामायणा म धनन-साध्य है। इन रामायणा म वीरवाट
घोर तरणीसन जस भक्त रागसा का धनन है। जोकि रण-क्षत्र म धारर राम म मुड
करने के स्थान पर भक्ति निवेदन करे लगन है। इनसे मुड करन समय राम का
स्वय भी पीडा का धनुभव होता है।

बैंगला रामायण म राम धोल—भक्त व शरीर पर काँटा लगन पर भरे हृदय
म वह भाले-सा चुभता है—

कटक फुटिले धम भक्तेर शरीरे। शलेर समान धाजे धामार धतरे ॥ ३५२

इधर उडिया रामायण म राम जय जये ही मुड होकर भक्त राक्षस पर बाण
वर्षा करते हैं। वसे ही वसे वे अपने ही धगा म पीडा पात हैं—

श्रीराम बिषते धेते धेते धाण कोपे। पीडा पाउछति से धापण धमे धाये ॥

६ २२६

बंगला रामायण म भक्त पर प्रहार के समय राम का मुख सूख जाता है। घोर
हाथ ही नहीं उठता—'शुक्ल मुख चन्द्र नाहि चल बाहु। इसी प्रकार उडिया
रामायण म भी उनका हाथ नहीं उठता—शरकि विधि धि मोर हस्त न चतइ।
(६ २२७)

मानस के राम भी सेवक के दुःख सुनकर विचलित ही नहीं हो उठे अपितु भक्त का दुःख दूर करने के लिए उनकी भुजाएँ भी फँड उठती हैं—

सुनि सेवक दुःख दीन दयाला । फरक उठों द्व भुजा बिसाला ॥ ४५१४

करणामय होने के कारण ही भगवान भक्तों को अपने से भी अधिक महत्त्व देते हैं—

बेंगला—भक्त मोर माता पिता भक्त मोर प्राण ।

उडिया—मोतहूँ बड ये छटे मोर भूत्यलोक ।

मानस—राम तें अधिक राम कर दासा ।

यहा यह स्मरण दिला दना अनुचित न हागा कि असमीया रामायण म भक्ति परक दृष्टिगण से क्या प्रस्तुत तो की गयी है किन्तु कथा-वर्णन की अधिक रुचि होने के कारण भक्ति विवेचन बहुत कम ही हुआ है। फिर भी इसमें दृष्टिकोण यही है। कदली ने एक स्थान पर कहा है—भक्ति के वश में भक्ता के होकर उनकी आत्मा का पालन करते हो। (२६१३ छंद)

दीनता प्रकाश—राम भक्ति म दास्य भाव का प्राधान्य है। भक्ति म शरणा-गति को बस ही महत्त्व दिया गया है दास्य भाव म तो इस विशेष स्थान ही प्राप्त है। ब्रह्म का अपने से बड़ा मानने के लिए अपने का अत्यन्त लघु मानना हाता है, तभी ग्रहभाव नष्ट होता है एक साधक आत्मसमर्पण कर पाता है।

असमीया रामायण के आदिकाण्ड लेखक गास्वामी तुलसीदास की भाँति ही अपने को महामूढ एक मति मन्द कहते हैं। मुख्य कथाकार कदली आत्मसमर्पण करते हुए राम के चरणों में निमल रति माँगते हैं—हनय तोमार चरण हौक मोहोर निम्बल रति। ६६६०। उत्तरकाण्ड लेखक शंकरदत्त त्रिपाठी सभ्य होकर राम की शरण में हैं—

रामे धम्म रामे कम्म रामे से बाधव मम्म,

जानि ललो रामत शरण ॥ ७४५५

बेंगला रामायण म भक्त के मुख से कहलाया गया है—मैं भक्ति-स्तुति क्या जानूँ मैं अत्यन्त मूढ हूँ।^१

उडिया रामायण के प्रारम्भ अथवा अन्त म प्रायः बलरामनाथ अपने को अज्ञ, मूढ़ आदि कहकर जगन्नाथ-स्वरूप राम की शरण में जाने की बात कहते हैं।

मानस में भी लेखक ने विनय वश अपने को मूढ एक सभी कलाग्रा से रहित माना है। भक्ति के क्षेत्र में दीनता के वे साकार रूप हैं। उन्होंने महत् राम के आगे अपने अत्यन्त दृश्य का एसा सपन चित्रण किया है कि कोई अन्य रामायण लेखक नहीं

१ बेंगला ३५२, उडिया ६२३८, मानस ७११६ १६।

२ कि जानि भक्ति स्तुति आदि अति मूढ़, पृ० ३५२ बेंगला रामायण।

वर सवा है, किन्तु उनके इस रूप के दर्शन विषयप्रिया म अगिब हात है जहाँ व अपन का पापिया का सघाट समभत हैं । 'राम सा पग है वीन मा गो वीन ग्योटा' पदाश ही मानो उनके समस्त दय-वणन का सार है ।

इसका अर्थ यह है नहीं है कि तुनगीनाम चाटुकार थ । चाटुवागी की जाती है किसी लौकिक सत्ताधारी स जिमस नि मागागिब गुण की प्राप्ति जानी है । गोस्वामीजी तो प्राक्त जना के चाटुवागी की निष्ठा वरत है । राम व विरोधिया का रारी खरी सुजात म व कभी दीनता का परिचय नहीं दत ।

निष्काम भक्ति ॥० बलदेव प्रसादन लिखा है—जा किसी सासारिक कामना की पूर्ति के लिए भक्ति करता है वह व्यवसायी है क्योंकि वह निश्चय ही इष्टदेव की अप ता अपनी कामना-पूर्ति का अधिक महत्त्व दता है ।^१ आग भी व कहते हैं—मक्ति ता उद्दश्य है अलोकिा आनन् ता कि नीतिक वस्तुया अथवा सुख साधना की प्राप्ति ।^२ भक्ति म यदि कोई लौकिक वासना छिपी रह गयी ता जीव का आत्म परिव्कार कहा होगा । क्षुद्र स्वाधपूण दण्डिकाण स नकर वह ब्रह्मानन् का लाभ न कर सरेगा । वणव भक्त राम की भक्ति क आग कुद्व नग चाहता । वह माक्ष का भी तुच्छ समभता है ।

०अममीया लखक का कहना है माश की उपक्षा वर तुम्हार चरणा का भजन करता है— माक्ष का एरिया भज चरण तोमार । छ ८ ५७२ ।

०वगना प्रथकार राम स प्राथता करता है यह अकिचा तुम्ह छोडकर और कुछ नहीं चाहता । अपन चरणा म मरी मति गया । तुम्हार चरणा म सदा भक्ति रह यही वर मांगता ह । हे गणधर राम मरी मत्यु के समय अपन चरण प्रदान करना ।

तोमा बिना अकिचन नाहि चाहे आर । चरमे ओ पदे मति रेसहो आमार ॥

तब पदे भक्ति सदा मागि एइ वर । मरण चरण दिओ राम गदाधर ॥

प० २५६

यह भी कहा कि भक्त को कभी विषय बाधा नहीं रहती है—

भक्तेर विषय बाछा नहे पदाचन । प० ३५१

०उडिया रामायण का भक्त राक्षस वीरवाहु भी स्वर्ग की कामना न कर राम के हाथ स अपनी मरुधु दाना है ।

निष्काम भक्ति का उत्कृष्ट रूप ता मानस म नी तपन की मिलता है । इन रामायणा म ता कान-कान स्वर्ग या माक्ष की वागना दण्डित हा जाती है । मानस

१ डा० बनन् प्रमाद मिश्र—तुलसी दर्शन, पृ० ६८ ।

२ वही प० २३३ ।

के सगुणोपासक मोक्ष नहीं चाहत, उन्हें राम भी अपनी भक्ति ही देत है ।

सगुणोपासक मोच्छ न लेहीं । तिह कहें राम भक्ति निज देहीं ॥

६१११ ७

भक्ति बग्न पर माश तो स्वयं लिना चला आता है, न चाहने पर भी प्राप्त हो जाता है । सयान भक्त इस तथ्य का समजन हूँ एवं इसीलिए व मुक्ति का निरादर कर भक्ति पर प्रलुभ रहत है ।

जिमि थल विनु जल रहि न सकाई । योडि भाति कोउ कर उपाई ॥

तया मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति विहाई ॥

अम विचारि हरि भगत सयान । मुक्ति निरागर भगति लुभाने ॥^१

जब कभी भा भक्त याचना करता है ता धन सम्पत्ति अथवा माश की नहीं । वह ना प्रभु की अविचल प्रेम भक्ति चाहता है—

प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम । ७३४

सुन्दरकाण्ड के मगनाचरण म भी गोकुलीजी न किसी भी वस्तु की स्पष्टा प्रकट न कर निभरा भक्ति मांगी है । भक्ति स्तवन है उसस ही सकल सुख का प्राप्ति हाती है— भक्ति स्तवन सकल सुख गानी । (७-४४५)

इस प्रकार स्वाय की वाचना के अभाव के कारण तुलसादासजी की भक्ति म विश्व हित साधना का भाव आ गया ।^२

भक्ति मे विद्वलता—बगना रामायण म राम के पक्ष क पात्र उ हूँ ब्रह्म जानकर भी भक्ति से विद्वल नहीं हात । राक्षस पात्र अवश्य ही मेने भक्ति विद्वल दिखाय गये हैं कि बीनेशचन्द्र सन व शत्रु म युद्धस्थल सतीता भूमि पतीत हात बगना है । बगला और उडिया रामायणा क कुछ राक्षस पात्र युद्धस्थल म पहुँच अस्त्र शस्त्र फेंक कर अशु वषा करत हुए राम की स्तुति करत नगत हैं । बगना रामायण का कारण ता धनुष पथवी पर फेंकतर गल म वस्त्र डालकर राम की स्तुति करत नगता है । वह बीगा हाव जोत्कर टवटकी नगाय लता है बीसा नेना स जनधार वह रही है—

हातेर धनुक बाण फेले भूमितले ।

कर जुडि करे स्तव वस्त्र दिया गले ॥

कुडि हस्त जुडि राजा एक दृष्ट रय ।

कुडि चम्पे चारिधारा बह अनिवार ॥ ४१५

इन दाना रामायणा ने राम भी भक्ता का बिनती स स्तन वातर हा उठत हैं

१ मानग ७११८ / ७ ।

२ राम निरजन पाण्डेय, रामभक्ति शास्त्रा पृ० ७५ ।

वर सदा है, किंतु उनके इस रूप के दश विषयपत्रिका में अग्रिम ज्ञान हैं जहाँ वे अपने का पापिया का सग्राह समभन हैं । राम का रग है वीन मा सो वीन गाटा पदाश ही माना उनके समस्त दय-वर्णन का सार है ।

इसका अर्थ यह है नहीं है कि तुलसीदास चाटुकार थे । चाटुकारी की जाती है किसी लौकिक सत्ताधारी में जिसमें कि आगाहिक मुक्त की प्राप्ति होती है । गास्वामीजी तो प्राक्त-जना के चाटुकार की निंदा करते हैं । राम के विगधिया का सरी-सरी सुनाने में वे कभी दीनता का परिचय नहीं देते ।

निष्काम भक्ति का वन्दन प्रसाद न लिखा है—जा किसी सासारिक कामना की पूर्ति के लिए भक्ति करता है वह यवसायी है क्योंकि वह निश्चय ही इष्टदेव की अपेक्षा अपनी कामना-पूर्ति का अधिक महत्त्व देता है ।^१ आगे भी वे कहते हैं—भक्ति का उद्देश्य है अतीति आनन्द न कि लौकिक वस्तुओं अथवा सुख साधना की प्राप्ति ।^२ भक्ति में यदि कोई लौकिक वागना छिपी रह गयी तो जीव का आत्म परिष्कार कहा जाएगा । शुद्ध स्वाध्याय दृष्टिकोण से तब वह ब्रह्मानन्द का लाभ न कर सकेगा । वपुष्व भक्त राम की भक्ति के आगे कुछ नहीं चाहता । वह माक्ष का भी तुच्छ समभता है ।

० अममाया लखन का कहना है माक्ष की उपेक्षा कर तुम्हारे चरणों का भजन करता है— माय का एरिया भज चरण तामार । छन्द ५७२ ।

० बगला अकार राम से प्रार्थना करता है यह अकिंचन तुम्हें छोड़कर और कुछ नहीं चाहता । अपने चरणों में मरी मति गया । तुम्हारे चरणों में सदा भक्ति रह यही वर मागता ह । ह गदाधर राम मरी मत्यु के समय अपने चरण प्रदान करना ।

तोमा बिना अकिंचन नाहि चाह्यार । चरमे ओ पदे मति रेखहो आमार ॥

तय पदे भक्ति सदा मागि छइ वर । मरण चरण दिओ राम गदाधर ॥

प० २५६

यह भी कहा कि भक्त का कभी विषय-बाधा नहीं रहती है—

भक्तेर विषय बाछा नहे कदाचन । प० ३५१

० उडिया रामायण का भक्त राक्षस बीरबाहु भी स्वयं की कामना न कर राम के हाथों से अपनी मृत्यु चाहता है ।

निष्काम भक्ति का उत्कृष्ट रूप तो मानस में ही दमन का मित्रता है । इन रामायणों में तो नहीं रहा स्वयं या माक्ष की वागना लपटगत हो जाती है । मानस

१ डा० वन्दन प्रमाण मिथ—तुलसी दशन, प० ६८ ।

२ वही प० २३३ ।

क सगुणोपासक भोग नहीं चाहत, उह राम भी अपनी भक्ति ही देत है ।

सगुणोपासक मोच्छ न तेहीं । तिह फहूँ राम भगति निज देहीं ॥

६ १११-७

भक्ति करने पर मात्र तो स्वयं सिखा चना आता है, न चाहत पर भी प्राप्त हो जाता है । सयान भक्त इस तथ्य का समझन ह एव इसीलिए व भक्ति का निरादर कर भक्ति पर प्रलुप रहत है ।

जिम थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाति कोउ कर उपाई ॥

तया मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई ॥

अस बिचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥^१

जब कभी भी भक्त याचना करता है तो धन सम्पत्ति अथवा मात्र की नहीं । वह तो प्रभु की अविचल प्रेम भक्ति चाहता है—

प्रम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम । ७ ३४

सुदरवाण्ड व मंगलाचरण म भी गाम्वामीजी न किसी भी वस्तु की स्पष्ट प्रवट न कर निभरा भक्ति मांगी है । भक्ति स्वतन्त्र है उमम ही मकन सुख की प्राप्ति हाती है— भक्ति सुतत्र सकल सुख खाना । (७ ४४)

इस प्रकार स्वाथ की वागना के अभाव व कारण तुलसादासजी की भक्ति म विषय हित मायना का भाव आ गया ।^२

भक्ति मे विद्वलता—वंगना रामायण म राम के पक्ष व पात्र उ ह प्रह्न जान कर भी भक्ति स विद्वन नहीं हात । रामम पात्र अवश्य ही एस भक्ति निद्वन सिपाय गये है कि नीनेशचन्द्र सा व शल्या म युद्धस्थल मकीत्त भूमि पतीत जान उगना है । वंगला और उडिया रामायणो के कुछ राक्षस पात्र युद्धस्थल म पहुँच अत्र अस्त्र फेंक कर अशु वर्षा करत हुए राम की स्तुति करने लगत है । वंगना रामायण का गनना ता धनुष पथ्वी पर फेंककर गले म वस्त्र दानकर राम की स्तुति करन उगना है । वह योगा हाथ जोडकर टकटकी उगाय खडा है बीसा बना स जनपार वर रथी है—

हातेर धनुक बाण फेले भूमितले ।

कर जुडि करे स्तव वस्त्र दिया गले ॥

कुनि हस्त जुडि राजा एक द्ये रय ।

कुडि चक्षे वारिधारा बहे अनिवार ॥ ४१५

इन दानो रामायणा के राम भी मकना की विनती स इतन वातर टा नत्र ३

१ मानम ७ ११८ ५७ ।

२ राम निरजन पाण्डेय, रामभक्ति शाखा, प० ७५ ।

कि अथ वे युद्ध कर सीता का उद्धार भी नहीं करना चाहते हैं।^१

मानस में भी राक्षस भक्त लिप्याय गये हैं किन्तु वे उपयुक्त अर्थों के राक्षसों की भाँति कभी भक्ति कातर नहीं होते। वे अन्त समय तक अहंकार से तन रहते हैं मरते समय भले ही राम-नाम स्मरण कर लें। मानस में मित्र पक्ष के भयता में अथवा ही विह्वलता है। राम के रूप पर मुग्ध हान वाले तो सभी प्रकार के पात्र हैं किन्तु भक्ति विह्वल होन वाले पात्र सामान्य बुद्धि के नही हैं वे हैं सुतीक्ष्ण काकभुजुडि और शिव जैसे जान गम्भीर साधक। ये पात्र जानी हान पर भी भक्ति में तमय हाकर अपने तन मन की सुधि भूल जाते हैं। एम पात्रों अथवा स्वयं गोस्वामीजी की ऐसी भक्ति को देखकर ही सम्भवतः डा० बलदेव प्रसाद मिश्र ने इस बुद्धिवाद और हृदय का सुन्दर सामञ्जस्य कहा है।^२ यागिराज शंकर का तुलसीदास ने अत्यन्त भव्य चित्रण किया है। इन शंकर की भी कभी भक्ति विह्वल स्थिति हा जाती है—

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि ।

पुलकित तन गदगद गिरा विनय करत त्रिपुरारि ॥ ६११४ (रा)

भक्ति जनादोलन—रामानुजाचार्य ने भक्ति के क्षेत्र में जाति-पाति की भावना का दूर करन का जो प्रयास किया था रामानन्द ने उस और आगे बढ़ाया। उनके शिष्यों में तूद और मुसलमान भी थे। ज्ञान पात पूरा नहीं कोई हरि का भज सो हरि का हाइ का नारा प्रचारित हुआ। अभी तक हमारी संस्कृति की उत्कृष्ट उपलब्धियों का उच्छिष्ट ही निम्न वर्ग तक पहुँच पाता था। इस्लाम की मताधिक्यता के कारण गमस्त समाज में अस्त-व्यस्तता एवं उथल-पुथल व्याप्त थी। समाज का निम्न वर्ग भय अथवा प्रलाभन के कारण मुख्य समाज से सम्बन्ध छिन हा सकता था। समाज के उदार सुधारकों ने समस्त भारत को एक मून में प्रथित करन के लिए भक्ति का आश्रय लिया।

मध्यकालीन भारत के प्रत्येक अंचल में महापुरुषों ने उदित होकर भक्ति के प्रवाह से समस्त देश का आप्लावित कर दिया। रामानुज, रामानन्द, शंकरदेव, चतुर्थ महाप्रभु कबीर, गुरानानन्द नामदेव, चानेश्वर आदि अनेक सन्ना के प्रयास से भक्ति धर्म पुष्ट हुआ। रूसी विद्वान वारानिकोव ने भी मध्ययुगीन वर्णव्यवस्था को जनात्मक (डिमोनेटिक) माना है।^३

१ काय नाहि सीता आमिना याव राज्यत । केमने मारिव बाण भक्तेर अग्रन ॥

ब० ३५२ ।

केतह कटाल मोले कर वीरमणि । नाहि प्रयोजन मार जनन-दुतणी ॥

उ० ६।२२७ ।

२ डा० बलदेवप्रसाद मिश्र—तुलसीदास प० ३०८ ।

३ डा० बंसरीनारायण गुप्त सम्पादित—मानस की (रूसी) भूमिका पृ० ६ ।

रामानन्द शक्ति सम्प्रदाय व साधु प्रत्येक जातियो व जना का अपने सम्प्रदाय म अन्नभुक्त कर रामभक्ति व माध्यम स जन प्राकरण एव समाज-संगठन कर रहे थे । अत्र निम्न कथ का भा प्रनीत हान लषा कि राम उनके ही हैं तथा व स्वयं भी समाज व एक श्रेणी हैं । गान्धामा तुलसीदास व श्रेय न इस भावना के प्रचार म पर्याप्त योगदान किया ।

० भक्तमोक्षा रामायण म ब्रह्म राम न जातिपाति का विचार नहीं माना ।

नाहिक तोमात जाति आचार विचार । छ० ७८१

० वगना रामायण म भगवान को भक्तिपूर्वक पुकारन पर वे चण्डाल के घर तक दोढे जाते हैं — भक्ति न डारिन जाय चण्डालेर बाडि । राम का अवतार ही नीचा का निस्तार करन व हनु दृष्टा है — 'नीचर निस्तार हतु तव अवतार ।'

० उडिया रामायण म भी गान्धामा कथ आदि जातिया तथा हनुमानादि शन पात्रा की भक्ति भावना म यही दृष्टिगण उपनय है ।

प्रमुख कान्य धाराया पद्धतिया एव भाषाया के माध्यम स जन जन म राम कथा का प्रचार कर पंडित अपंडित लोक शास्त्र ब्राह्मण अत्राह्मण और समुण निगुण म समाज स्थापित कर गोस्वामी तुलसीदास न इन सभी रामायण-तत्वका की अपक्षा समाज संगठन म अथिउ माफन्व-नाभ किया है । अठना एव अना का राम भक्ति के नाम अपनान म भी उहान अपूर्ण नाना का परिचय दिया है जिसका वगन प्रसारानर स श्रेयत्र हा चुका है ।

गोस्वामीजी की विशेषताए - गान्धामाजी का मानस तो मानो धम एव नीति श्रेया का अत्यंत सुंदर निवाड ह । उत्कृष्ट वादि के बकि हान हुए भी उनकी रचि भक्ति गिरहण, नवधा भक्ति चित्रण सत्मग-वगन, मत प्रमत्त स्तुति आदि विषया की आर अथिउ रही है । उनका दार्शनिक चिंतन एव पाण्डित्य की तुलना इन रामायण कारा से नहा हा मक्ती । यहा उनकी केवत्र दा विशयताया का पृथक् वगन किया जा रहा है (इनका सम्बन्ध भक्ति स है बवल इसीलिए) ।

(१) जान भक्ति—तुलसी जान का समयन करत हैं किन्तु परिस्थितिया को दसा हुए जान की शप ता भक्ति की अधिक आवश्यकता थी । जान माग बवल कुछ प्रवृद्ध जना व लिए था । भक्ति आदान जन आनान था । हिंदू समाज का बाह्य एव आन्तरिक सधर्षों स शान दवर ममस्त-ममान व संगठन के लिए उस भक्ति के सोत म वहा दा अधिक प्रयाजनाय था । गोस्वामीजी व पूव पुराणा एव अध्यात्म-रामायण म भी इस प्रकार के प्रयत्न हा चुके थे । पद्मपुराण (उत्तर काण्ड) म भक्ति का जान एव वराग्य का मा दिखाया है । य दाना पुत्र वृद्ध एव मरणामल्ल हैं किन्तु मां सम्थी है और इनकी अनाल मत्यु म दु गित है । इस प्रकार पुराण माना वट

रहा है कि ज्ञान और ब्रह्म का युग नहीं रह गया अथ आवश्यकता है उभयकाला तक आप्तान्वित भक्ति मरिता व अमाध प्रवाह की । पुराण न यहाँ भक्ति का माँ पताकर उस ज्ञान और ब्रह्म से बढकर दिगाया है ।

गायामोजी मानते हैं कि ज्ञान माधुप्र है कि तु वह कृपाण की धार व समा है ।^१ ज्ञान का बाध एव गान वही कठिनाई से हाता है और यदि किसी प्रकार उभया गायन हा भी जाए ता आग अनक विद्या का सामना करना पडता है ।^२ यदि काइ ज्ञान माध का साधन कर भी ल ता भी राम उससे स तुष्ट नहीं हात, क्याकि भक्तिहीन ज्ञान उह प्रिय नहीं है -

ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहूँ टका ॥

करत लट्ट बहु पावइ कोऊ । भक्तिहोन मोहि प्रिय नहिँ सोऊ ॥ ७ ४४ ३ ४

भगवान स्वयं भक्त का पक्षपात करत है । इम पक्षपात के लिए तुनसी न माता पिता का उदाहरण लिया है । ज्ञानी भगवान व लिए प्रीठ पुत्र व समान है और भक्त शिशु के समान । माँ पुत्र के उडे होने पर प्रीति कुछ कम कर देती है किन्तु छोटे की रखवाली करती है ।^३

महात्माजी बुझता व साथ ज्ञान की अपक्षा भक्ति का महत्त्व दिखतात हैं । उनका तर्क है कि यद्यपि ज्ञानी और भक्त म भेद नहीं है किन्तु कठिनाई यह है कि ज्ञान, ब्रह्म आदि पुरुष है और माया स्त्री है । कठिन साधना के पश्चात भी पुरुष नारी व मामन स्तार्ता हा जाता है । अतएव ज्ञानी किसी समय भी माया वशवर्ती हा सकता ह । परन्तु मणि का नियम है कि स्त्री अथ स्त्री पर मुग्ध नहीं होती । भक्ति स्वयं स्त्री है अतएव भक्ति के क्षेत्र में माया के वश म होने की आशवा नहीं है । भक्ति और माया म भी भगवान को भक्ति अधिक प्यारी है, क्योंकि माया ता साधारण ननकी मात्र है ।^४

अत म गायामोजी न ज्ञान और भक्ति का समन्वय कर एव प्रकार स भगडा ही समाप्त कर दिया । भक्ति श्रेष्ठ है वह मणि है । किन्तु उसकी प्राप्ति तभी ही

१ ग्यान माच्छ प्रद बढ वगाना । ३ १५ १ ।

२ ग्यान पथ कृपान व धारा । परत गगग होइ नहिँ वारा ॥ ७ ११८ १ ।

३ कठिन कठिना ममुगन कठिन साधन कठिन विदेक ।

हाइ गुाच्छर याय जी मुनि प्रत्यूह अनक ॥ ७ १८८(रा) ।

४ माँ प्रीठ तनय मम ग्यानी । वातक मुन गम दाग अमानी ॥ ३-४२-८ ।

मुनु मुनि ताँ वरु सह गमा । भर्जहिँ ज माहिँ तजिँ सबन भराया ॥ ३-४२-४ ।

करुँ मन् निरक रगवाी । जिमि जातक गगइ महतारी ॥ ३-४२ १ ।

प्रीठ भाँ नहिँ मुन पर माना । प्रीति करइ नहिँ पाछिन वाता ॥ ३-४२-७ ।

५ मानम —७-११४-१५ १६ तथा ११५ २—४ ।

सकती है जबकि ज्ञान और योग्य की प्राप्ति है।

भक्ति में सामाजिकता एवं नतिक आदर्श— गास्वामी तुनसीदास न सामाजिक सुखा की प्राप्ति के लिए रामभक्ति का प्रचार नही किया। भक्ति का स्वयं माध्यम ब्रह्मचर्य उद्दान भक्ति के लक्ष्य में निस्वार्थ भाव जाग्रत किया। व भक्ति की प्राप्ति के लिए स्थान स्थान पर मत्त और मत्तग का महत्त्व जननात है।^१ भक्ति प्राप्ति के कई माध्याम में निष्काम-व्यवहार मत्तगता परापकार गदाचार आदि गुण भी है।^२ अथाध्या-वाण्ड के राम-वा-मीकि मवाद अरण्य वाण्ड के राम लक्ष्मण एवं राम-नारद मवाद तथा उत्तर वाण्ड के वा-भु-गु-ति और गरुड मवाद आदि प्रसंगा के अध्ययन से निष्काम निष्कलता है कि राम की भक्ति का सच्चा अधिकारी वही है सकता है जाकि तन मन से मवथा गुद हो जा किमी का अहित न कर जा पारिवारिक एवं सामाजिक कनव्या का पालन करता हुआ मार काय राम के लिए कर।

राम-भक्त के अनक गुणा में इन गुणा पर स्थान स्थान पर जाग दिया गया है—

राम भगत परहित निरत, पर दुख दुखी दयाल ॥ २-२१६ ॥

१ भक्ति मुक्तन मक्न गुन गोजी । त्रिनु मत्तमग न पावर्हि प्राणी ॥

पुत्र पुत्र त्रिनु मिलहि न मना । मत्तसगनि ससति कर अता ॥७ ४४ ५ ६ ॥

२ निमल मन जन मा माहि पावा । माहि कपट छत्र छिद्र न भावा ॥ ५ ४३ ५ ॥

परहित मरिस धम नहि भार्द । पर पीडा सम नहि अघमाई ॥ ७ ४० १ ॥

विषय अत्रम्पट मीन गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥ ७ ३७ १ ॥

ममदम नियम नाति नहि डार्तिहि । परप बधन कवहै नहि कोर्तिहि ॥ ७ ३७ ८ ॥

जननी सम जानहि पर नारी । घनु पराव विष तें विष मारी ॥ २-१२६ ६ ॥

उपसंहार

० प्रायः मगध से पूव के प्रदेश को प्राच्य कहा गया है। यहाँ पर विगत निपाद एवं द्रविड जातियाँ का आधिपत्य है। आयः सृष्टि का प्रवेश इधर दर से हुआ। इस प्रदेश का द्वात्यदेश कहकर यहाँ की यात्रा वर्जित की गयी थी। आदिम-जातियाँ के ससग के आयः भाषा ध्वनि एवं रूप दोनों ही दृष्टियाँ से विकार-युक्त होकर मागधी कहलायी थी। सृष्टि प्रथो म प्रायः निम्न जाति एवं श्रेणी के ध्वनि मागधी वालन हुए दिखाय गये हैं। और जाग विकास करने पर मागधी प्राकृत अथवा अपभ्रंश के तीन भेद हो गये—गौ-अपभ्रंश कामरुण अपभ्रंश एवं उडु अपभ्रंश। सातवीं शताब्दी तक मागधी के ये तीन रूप विकसित होने लगे थे। इन्हीं तीनों से प्रमग असमीया बेंगला एवं उडिया भाषाएँ विकसित हुई। सृष्टि भाषा आदि के एक मूल-स्त्रात हान के कारण प्राच्य देश के इन भाषा भाषियाँ म पारस्परिक साम्य है। इनके मध्य मुग्धत प्रचलित रामचरितवाध्या का मानस के साथ तुलनात्मक-अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

० पूर्वांचल में जन बौद्ध साधनाओं का विकास ही पहले हुआ था। शंकराचार्य से पराभूत अनेक बौद्ध पूर्वांचल की ओर एकत्र हुए थे। सातवीं शताब्दी से बौद्धधर्म ने अनेक रूप धारण किया। भिन्न भिन्न कालों में उत्पन्न स्वतन्त्रचेता विद्वत्सम शिथिल अनेक सिद्धों का उदय हुआ। मिथिली मिश्रित शौरसनी-अपभ्रंश में लिखित इनके पदा की एक पोथी मिली है जिसे पूर्वांचल की आत्मा सस्वर ही उठी है।

पूर्वांचल का आर्याकरण प्रायः महाभारतकाल से चल पड़ा था। गुप्तों ने इस ओर विशेष प्रयास किया। शासकों ने पूर्वांचल में कई बार मध्यदेशीय ब्राह्मणों का बसाकर शुद्धाचार के प्रसार की चष्टा की। किराती और निपादी आदिम जातियाँ तांत्रिक एवं बौद्धों के प्रभाव के कारण यहाँ अनेक प्रकार की जटिल साधनाएँ चल पड़ी थीं जिनमें माता मदिरा एवं रमणी का मुक्तसेवन हाता था। नरबलि की लोम हृषक प्रथा का भी यहाँ प्रचार था। इस आर लिखित योगिनीतंत्र प्रथम मातयात्रि के अतिरिक्त १२ से ६० वर्ष की काई भी रमणी सभाग के याग्य बताया गयी। कामान्या का मंदिर किराती शब्द एवं जाय मिश्रित साधना का प्रतीक है। शंकर

आय एव तान्त्रिक प्रभावा का सम्मिलित प्रतीक है जगन्नाथ का मन्दिर। शिव एवं शक्ति की तान्त्रिक उपासना के साथ ही रामायण एवं भागवत अनुमानित वृष्णवभक्ति का भी यही प्रचार हुआ। पूर्वाचल म वृष्णभक्ति का विशेष प्रबल प्रचार रामकाया तरकाल म हुआ। पूर्वाचल का गुद वृष्णवभक्ति का सम्भार दत्त म रामचरितकाव्या का योग महत्वपूर्ण है।

• असमीया रामायण के मुख्य लेखक हैं श्री माधव कन्दली। इनकी असमीया रामायण के आदि अत हीन पाँच काण्ड प्राप्त हुए हैं। दो काण्डों के लोप होने के कई कारण अनुमानित किये जाते हैं। शय काण्ड की पूर्ति शंकरदेव एवं माधवदेव कायस्थ द्वारा हुई। ब्राह्मणवशीय माधव कन्दली न १४०० ई० के आसपास अतम के नौगाँव अचल म वही जन्म लिया उहोने महामाणिक्य नामक अथवा उपाधिधारी किसी बगही राजा के अनुरोध स रामायण रचना की थी। कन्दली ने काव्य प्रचार के उद्देश्य स वाल्मीकि रामायण का सक्षप म प्रस्तुत किया है। रामकथा व माणिक्य लो की उह पहचान है। इनका भी दृष्टिकोण भक्तिपरक है। असमीया साहित्य क सर्वोत्कृष्ट लखक भक्त समाजमुधारक, सम्प्रदाय प्रवक्त चित्रकार और अभिनेता श्री शंकरदेव का जीवनकाल १४४६ १५६८ ई० माना जाता है। उहोंने अनेक उत्कृष्ट प्रथा की रचना की है। कन्दली की रामायण म उत्तरकाण्ड इहाने स्वयं जोडा तथा आदिकाण्ड के लिए अपन शिष्य माधवदेव का प्रेरणा दी। दोनों गुरु शिष्य वृष्ण के राधातत्त्व विवजित एकान्तिक शक्ति के कट्टर उपासक थ। रामकथा के प्रारंभ एवं अंत म वृष्ण विषयक स्तुतिया भी इ हान की है। माधवदेव का जीवनकाल १४८६ ई० स १५६६ ई० स्वीकार किया जाता है।

बंगला रामायण — लेखक वृत्तिवास फुलिया ग्राम के मुखटिवश ग्राम म उत्पन्न हुए थे। इनका प्रादुर्भाव अनुमानत १५वीं शताब्दी का मध्यभाग स्वीकार किया जा सकता है। व स्वाभिमानी ब्राह्मण थ। उनकी रामायण आज मौलिक रूप से प्राप्त न होकर अनेक प्रक्षपा से समाचित होकर अपने प्रदेश की अनेक विशेषताओं स अलंकृत हो गयी है।

उडिया-लेखक श्री बलरामदास ने स्वयं ही लिखा है कि वे सूद-योनि मे उत्पन्न हुए ह तथा उनके पिता माता का नाम सामनाथ महापात्र एवं मनोमाया देवी है। ३२ वष की आयु म इहोंने उडिया रामायण लिखी थी जिसे जगमोहन अथवा दाण्ड रामायण भी कहा गया है। बलरामदास बहू थ उनका पान विस्तृत था। श्री-मुरूप क उत्तेजित कामालाप एवं रतिक्रीडा के चित्रात्मक वर्णन म लेखन की शक्ति प्रकट होती है। इनका जन्म १५वीं शताब्दी क उत्तरार्द्ध म हुआ बताया जाता है।

अथ अधिकांश तरका के समान ही मानसकार तुलसीदास का भी प्रामाण्य

जीवनवत उपनव्य नहीं होता। उनका अनुमानित जीवकाल १५८६-१६८० वि० है। रामायण का रचनाकाल १६३१ वि० है। उन्होंने ब्राह्मणकुल में जन्म लिया था। जन्म के कुछ समय उपरांत ही उनके पिता माता का दहावसान हो गया। उनका बाल्यकाल जत्यंत बगट से बीता था। तुलसीदास के जन्म-स्थल के सम्बन्ध में निश्चित मत नहीं है। जन्म के सम्बन्ध में अनेक स्थानों का प्रचार है। इस समय राजापुर, अयोध्या एवं सोरो से सम्बन्धित तर्कों की अधिक चर्चा है। सोरो सामग्री सबसे अधिक व्यवस्थित किन्तु साथ ही सन्निध भी है। रामभक्ति में आकठ निमज्जित सरल, सात्त्विक निरभिमानी भक्त तुलसीदास जत्यन्त कामल स्वभाव के थे किन्तु वे चाटु-वार नहीं थे, उनका अध्ययन गम्भीर था, उनकी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति प्रबल थी। वे जादश भक्त एवं राम वयवादी लोक-नायक थे।

० चारों लेखकों की रामायणां क युगीन परिदृश एवं काल्मीकि के युगीन परिदृश में अन्तर है। प्रत्येक लेखक ने अपने-अपने देशकाल और परिस्थिति का वशिष्ट्यमय वर्णन किया है। वही-वही चारा के वर्णन में साम्य भी है। रामायण रचना काल तक हिन्दी एवं बंगला भाषी क्षेत्रों पर विदेशी आततायी शक्ति के जाक अस हिण्डु अत्याचार हो चुके थे। इन दोनों प्रदेशों के लेखकों ने रावण एवं राक्षसों के चित्रण में तत्कालीन अत्याचारियों की भन्क देवी है। उडिया लेखक ने दुर्ग की मोर्चा बन्दी, प्राचीर से आक्रमण करने वाले सावधानी जादि का वर्णन कर याधन-नीति (Strategy) एवं रणनातुय का जञ्झा परिचय दिया है।

सभी रामायणां में शिव शक्ति गणेश वृष्ण आदि की उपासना का वर्णन मिल जाता है। शिव और शक्ति के मंगलमय एवं भयकर दोनों प्रकारों के रूपों का चित्रण हुआ है। उडिया रामायण में शिव जत्यन्त कामुक एवं रसिक प्रतीत होते हैं। बंगला के शिव भी साधारण बगानी मूढम्य जन्म हैं। मानस के योगिराज एवं भक्त शिव जसा चरित्र पूर्वांचलीय ग्रन्थों के शिव का नहीं है। उडिया में हठयोग की साधना वर्णित है। चारा रामायणां में अवदिन उपासनाओं की उपेक्षा की गयी है।

रामायण की वर्ण-व्यवस्था दुर्भाङ्ग ब्राह्मण का महत्त्व आदि का वर्णन सभी रामायणां में हुआ है। चारा लेखकों ने भक्ति के क्षेत्र में जातिपाति की अवहटना की है। लेखकों ने नारी के विषय में भारत प्रसिद्ध दृष्टिकोण अपनाया है—उसे पतिव्रता हाना चाहिए वह अचलता है उम स्तव्रता नहीं दनी चाहिए एवं अचल स्वभाव की होन का कारण वह विश्वमनीय नहीं है। पूर्वांचल के जनाओं की स्त्री बहुत प्यारी हाती है। यहाँ के लेखकों ने परम्परागत निष्ठा करने हुए भी उसकी प्रशंसा भी की है। उडिया लेखक ने नारी के स्पर्शीय अतिगम्य मनागम रूप का वर्णन करते हुए उसका रमणअत्यन्त मुग्धकर बताया है। तुलसीदास ने मन्त्रजनां क अनुकूल भाषा में नारी की घोर निन्दा की है। चरि उहान कोशल्या सीता मती आदि नारियों का अत्यन्त भव्य चरित्र प्रस्तुत किया है यह नारा कहा जा सकता कि वे ममस्त नारी-मनुष्य के विराधी थे,

उन्होंने उसको प्रमदात्व की ही निन्दा की है। उन्धिया० की गीता मथरा आदि उडिया स्त्रियों की भाँति हृदी मलकर मुह धानी है। तारी व अत्यधिक गुदर प्रसाधना का चित्रण पूर्वाचलीय रामायणा म हुआ है। अगमीया और वगना रामायणा की सीता शलचूडी धारण करती हैं और व वासिष्ठिहा नामक पद्धति का पालन करती हैं। वेंगला रामायण म वगानिया की अत्यन्त प्रिय पद्धति गुभ्रष्टि एव वासरधर का भी चित्रण है। उडिया प्रदेश की लवण चउरी, महभोजन तथा मानस की लहवीर एव काँवर की प्रथाया का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

ग्रथ म स्थानीय चित्रण (Local Colour) भी प्राप्य है। प्राय मस्वाग्र प्रसाधन वस्त्रानकार भाज्य पणथ पगुपगी वास्पति आन्मिजाति घमसाधना एव स्थान विशेष का वर्णन करत समय कविगण अपन-अपने परिवेश की भलक द गय हैं। पूर्वाचन व मन्थवान म नयवस्त्र का प्रचार रहा है यहा की रामायणा व पात्र भी इन वस्त्रा का धारण करत हैं। यहाँ के स्त्री पात्र अपन प्रदेश म प्रचलित उलुच्चनि का मागनिक अवसग पर प्रयोग करत हैं।

० भापा रामायणा के चरित्र चित्रण म मृतरामायण से अन्तर का मुख्य कारण राम व ब्रह्मन् का प्रचार है। भक्तिपरक दृष्टिवाण हा जान के कारण अय पात्रा के चरित्र पर भी प्रभाव पटा है। वहाँ वाल्मीकि व लोहन्ड सी पुष्ट भुजाया वाल रक्ताक्ष राम और वहाँ भापाया व भवन बल्लल दूर्वादिन श्याम कामल राम। वहा वाल्मीकि का आन्तिय मा दुष्प्रेथ एव उदण्ड रावण और वहाँ भापा रामायणा का भक्त रावण जोकि राम से उद्वार पान व लिए युद्ध करत है। वाल्मीकि के ऋषि तप पूत और तजस्वी है, भापा रामायणा के युगीन डरपाक ग्राहण। असमीया० के दुर्वासा मथुरा के भोजनभट्ट चौब जसे हैं। वेंगला व विश्वामिन तथा अय पात्र दुवल चिडि चिडे एव अत्यन्त डरपाक वगाली ग्राहण हैं। उडिया के ऋषि लाग छाता, पोथी डडा आदि धारण कर उडिया ब्राह्मण की भाँति जीवनयापन करते हैं। मानस के ऋषिया मे अवश्य ही गाभीय है किन्तु नहीं है ता वाल्मीकि के ऋषिया का तप तेज। मध्यकालीन नारी का महज कुतूँल भय दुराव दुईमुई होन का भाव आदि गुण इन रामायणो के नारी पात्रा म मिल जात हैं।

असमीया के पात्रो म मूल स समानता है किन्तु मथरा एव निर्वासिता सीता व चित्रण म नवीनता है। वेंगला० के पात्रो म गलदथु भावकृता है उडिया० के पात्रा का मनोवचनानिक चित्रण है। मानस के चरित्रा म सयम एव महाशयता है। मानस का अगद जसा सामाय पात्र भी सयमी है। पूर्वाचलीय रामायणा का अगद तो सीता की ग्योज न पाकर सुपीव एव राम व विराध म पडयत्र करत है। इन रामायणो के राम भी कई अवसरा पर सामाय जना असी तुच्छ बातें भी बाल जात हैं किन्तु मानस के राम ही क्या अय पात्र भी घोर वष्ट पडन पर भी किमी के प्रति दुसह वचन नहीं बोलते।

० सभी रामायणा की मूलकथा वाल्मीकि के अनुसार ही है, किन्तु दृष्टिकोण एवं अनेक प्रसंगों में अंतर भी पर्याप्त हैं। भाषा रामायणा के काल तक रामकथा विषयक अनेक काव्य नाटकादि की रचना हो चुकी थी। लखका ने इस विक्षिप्त कथा को भी ग्रहण किया है। कथा की भिन्नता का दूसरा कारण है रामभक्ति का प्रचार। वाल्मीकि के राम के महामातृत्व के अब हो गये परब्रह्म के अवतार। अब राम से सम्बन्धित अनेक पात्रों (जैसे कि कबूती, विभीषण आदि) के चरित्रों को निष्कलक सिद्ध करने के लिए कई कल्पित आख्यान जोड़े गये। ब्रह्म राम के महत्त्ववद्धान के लिए अनेक चमत्कारपूर्ण कथाया कथा का फल कथन भक्ति निवेदन, स्तुतियों नाम जप आदि का भी संयोजन हुआ। जसमीया रामायण में अर्थात्तर कथाएँ बहुत कम हैं। वैंगला-रामायण में कई रोचक लौकिक एवं पौराणिक आख्यानों को स्थान मिला है। उडिया रामायण में अर्थात्तर प्रसंगों की भरमार है। लखका ने अधिकाधिक पौराणिक एवं लोक-प्रचलित आख्यानों का रामायण से सम्बद्ध किया है। मानस में चार-चार श्रुतावस्था है उडिया-रामायण भी शिव पावती के सवाद-स्वरूप प्रस्तुत की गयी है। कथा संगठन में तुलसीदास ने दक्षता का परिचय दिया है। उन्होंने अनावश्यक कथा का बहिष्कार किया है। वाल्मीकि रामायण की कथा-वस्तु में शयित्व है उसमें अनेक स्थानों पर पुनरुक्तियाँ हैं। जब कभी दो पात्र मिलते हैं पूर्वघटित प्रसंग सुना जाते हैं। पाठक इन प्रसंगों से पूर्व परिचित होता है अतएव उसके लिए ये वचन रोचक नहीं हान। तुलसीदास कथा की पुनरुक्ति अथवा व्यर्थ विस्तार नहीं करते, वे प्रायः इस प्रकार की पंक्ति के द्वारा काम निष्काल लेते हैं—गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार मुरमरि महि आई ॥ १-२११ २। जहाँ उनका भक्ति, दाशनिक् एवं समाज सुधारक रूप उभर जाता है वहीं कथा प्रवाह बाधित एवं अरोचक हो उठता है।

० लखका ने रामकथा के मार्मिक प्रसंगों को पहचाना है एवं रस विभार हो कर वर्णन किया है। पूर्वाचलीय लखना के राम अपने ब्रह्मत्व का ज्ञान खोकर हृष्य विमर्श का अनुभव करते हैं मानस में वे जानबूझ कर नर-स्त्रीला करते हैं, फिर भी उनका हृदयांगारा की मार्मिकता कहीं कम नहीं होती। सभी रामायणा के सलापों की भाषा अत्यन्त गंभीर है। पृथ्वी चित्रण में उडिया रामायण कुछ आगे निकल जाती है वत इमक आक वर्णन अनावश्यक विस्तार पूर्ण भी हैं। सभी रामायणा की भाषा में गम्य के तत्पर एव तन्मय शब्दों का विपुल प्रयोग है। अरबी प्रारंभ के शब्द सभी भाषाओं में हैं किन्तु अगम्य एव उडिया रामायणा में कम हैं क्योंकि ये प्रदेश मुस्लिम शासन में बहुत कुछ बच रहे हैं। वस्तु एवं भाव को स्पष्ट करने के लिए ही उपमान प्रस्तुत किए गए हैं। अप्रस्तुत-योजना में तुलसीदास की सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचय मिलता है। पूर्वाचलीय रामायणा का मुख्य छन्द १४ वर्णाय पंवार है और मानस का दाहा चौपाद। उडिया० का छांद शेष प्रभा में कुछ अर्थ छन्द का भी स्थान मिला है।

पूवाचलीय रामायणा म मानम जसा दाशनिक विवेचन नही है फिर भी ब्रह्म के स्वरूप एव भक्ति का परिचय ता मिल ही जाता है। चारा म राम को परब्रह्म का साकार अवतार माना गया है। उ हाने गीता क उद्देश्य के अनुसार घम की रधा एव दुजनों के विनाश के निण लीलावश अवतार ग्रहण किया है। यह सगुण ब्रह्म शवर के अनुसार मायावशवर्ती न हाकर माया का स्वामी है। यहाँ रामानुजाचाय के दृष्टिकोण से साम्य है। शवर क अनुसार ससार का सभी ने मिथ्या माना है। सभी ने दशावतारा के एक समान त्रम की ओर संकत किया है। राम के ब्रह्मत्व को मानम-कार ने जिस उच्च भूमि पर अधिष्ठित किया है पूर्वाचरीय लेखक नही कर पाये हैं। असमीया रामायण के दो काण्ड के लेखको शकरदेव एव माधवदस ने रामायण पर कृष्णभक्ति का रग देने की चेष्टा की है। उडिया रामायण लेखक ने राम को जगन्नाथ स्वामी से अभिन्न माना हैं। बंगला क राम अत्यन्त भावक गृहस्थ ब्रह्म है, जो कि अवतार के पूव सीता स वियोग की कल्पना कर रो पडे हैं। सभी न राम को त्रिदेवा से उच्च बनाया है किन्तु इसे तुलसीदास ही पूणत सिद्ध कर सके हैं। सीता लक्ष्मी की अवतार एव सामाया कुलवधू हैं मानम म व राम की शक्ति माया भी हैं। कनिशुम म रामनाम जप का सभी लेखको न उपदेश दिया है। भक्ति के क्षेत्र म सभी लेखका ने ब्रह्म के कर्णामय सुकुमार रूप का चिंतन कर अपने द'य का प्रकाश किया है। कही कही निष्कामभक्ति के भी दशन हो जाते है। मानस की भक्ति अधिक उच्चजाटि की है। सभी रामायणा की भक्ति जनादालनकारी है किन्तु तुलसी की रामायण ने यह काय अधिक सुचोर रूप से किया। मानस के माध्यम से उहोने साधारण जन का नतिक शिक्षा दी तथा समाज के अनेक क्षत्रा क पारस्परिक विरोधो का दूर कर समन्वय स्थापित किया।

ममस्त भारतीय-साहित्य क अधिकाश के मस्दण्ड हैं राम और कृष्ण। पारि वारिक जीवन के जादश हाने के कारण राम-कथा का प्रचार समस्त दश के कुनीरो स लेकर प्रासादा तज हुआ। यद्यपि आलोच्य कविजन भिन भिन समय म उत्पन्न हुए एव उनकी प्रतिभा मे भी अंतर हैं तथापि ये सब कवि अपने अपने प्रदश के प्रतिनिधि रामकथाकार हैं, इसी नाते उनका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सहायक-ग्रन्थों की सूची

हिन्दी ग्रन्थ

ब्रह्म-प्रकाश दीशित
उत्पन्नारायण निवारो

उत्पन्नारायण
आमप्रकाश
विरचित पाठ्य
कामा आगरा ० मी०
वामिन सुता
काशाग्रमन्त्र
कर्मवी नारायण मुद्रण

क० काशाग्र शास्त्रा
० वि० विष्णुदास
लीलेशकर शास्त्रा आभा

क० री ०
दुर्गादास ०

ब्रह्म-प्रकाश कर्तुरे ।
ब्रह्म-प्रकाश

राम विद्याल्ल स्वल्प विवरण दिल्ली १९६०
(अनु०) भारत का भाषा सर्वेक्षण ११
प्रियसन लखनऊ ५६ ०

हि० भा० का उत्पन्न और विभाग द्वितीय म०
प्रकाश २०१८ वि०

भाजपुरी भाषा और साहित्य पटना, १९५४

सुवर्ण-सूत्र मीमांसा लखनऊ २०१८ वि०

हिन्दी अक्षर-साहित्य हिन्दी १९५६

मध्यरात्री साहित्य मञ्जरी-वाग् १९६३

(स०) रमणाय रामायण पटना १९६१

रामकथा द्वि० म० प्रकाश १९६२

मन्त्रभाष्य (म० रामानन्द-उद्घोषाध्याय)

मानस का कर्मा भूमिका (वाग्निनाथ) लखनऊ
१९५५

मगीतगान्य लखनऊ १९५८

हिन्दी-संस्कृत-वचनपर

भारतीय प्राचिन विविमाना हि० म० अक्षर
१९५८ ०

सुवर्ण का आरत मुद्रि कागा २०११ वि०

का गणना विवरण ही (अध्याय पर विवरण),
पटना १९५५ ०

पञ्चम व सुवर्ण का अध्याय १९५६ ०

भारत का आरत मुद्रि कागा १९५५ ०

तुलसीदास	रामचरितमानस गीताप्रेस ११वा० स० २०१६ वि० कवितावली गीताप्रेस १६वा स० २०१६ वि० गीतावली, गीताप्रेस ६वा स० २०१७ वि० विनयपत्रिका गीताप्रेस १८वा स० २०१६ वि० गोहावली गीताप्रेस, १५वा म०, २०१६ वि० ऋतुमाला काव्य, २२वाँ स० २०१८ वि०
देवकीनन्दन श्रीवास्तव देवप्रसाद त्रिवेदी धीरेन्द्र वर्मा	तुलसीदास की भाषा लखनऊ, २०१४ वि० प्राङ्ग मीय विहार, पटना, १९५४ सम्पा० हिन्दी साहित्य काश वाराणसी २०१५ वि० हिन्दी भाषा और लिपि, प्रयाग १०वा स० १९५३
नन्ददुलार वाजपेयी नगद्रनाथ उपाध्याय	महाकवि सूर्यनाम दिल्ली १९५२ साहित्य बौद्ध साधना और साहित्य काशी स० २०१५
नगेंद्र	विचार और अनुभूति, दिल्ली, १९६१ वि० विचार और विश्लेषण, द्वि० स०, दिल्ली, १९६१ साकेत एक जययन्त्र ८वा स०, आगरा २०१३ वि० रम सिद्धांत, दिल्ली १९६४ ई०
नलिनाक्षदत्त (वृष्णदत्त वाजपेयी) नामवर सिंह	उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म, लखनऊ १९५६ हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग प्रयाग १९५२ ई०
परमलाल गुप्त परसुराम धनुर्वेदी पीताम्बर बडधवाल पुत्तलान शुक्ल	रामचरितमानस और साकेत, दिल्ली, १९६१ ई० वृष्णवधम, प्रयाग १९५३ रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ, काशा, २०१२ वि० आधुनिक हिन्दी काव्य में शब्द-योजना लखनऊ २०१४ वि०
प्रवाचन्द्र वागची वलदम उपाध्याय	चर्यागीति काश, शान्तिनिकेता, १९५६ भारतीय दर्शन काशी, १९४२ ई० भागवत सम्प्रदाय काशी १९६८ वि०
चलदेव प्रसाद मिश्र	मानस माधुरी, आगरा १९५८ ई० तुलसीन्दर्शन प्रयाग १९६५ वि०
बाबूराम सक्सेना भगवानदास बेला	कीर्तिलता (विद्यापति) प्रयाग, १९८६ हमारी आदिम जातियाँ प्रयाग १९५०

भगीरथ मिश्र	साहित्य साधना और समाज, लखनऊ, १९५१ बला साहित्य जीर समीक्षा, दिल्ली, १९६३
भरत गिहू उपाध्याय	बौद्ध दर्शन तथा जय भारतीय दर्शन बलवत्ता, २०११ वि०
भोवनाथ तिवारी मगनदेव शास्त्री	(स०) तुनसी शद सागर, प्रयाग, १९५४ भारतीय सस्टुति का विकास (य० घा०) वाराणसी १९५६
ममथनाथ गुप्त माता प्रसाद गुप्त मिथनेश कान्ति	बगला साहित्य दर्शन दिल्ली, १९६० तुनसीदाम प्रयाग त० स० १९५३ हिन्दी भक्ति शृंगार का स्वरूप, वानपुर, १९६३ ई०
मुशीराम शर्मा	य० भक्ति तथा हि० के भक्तिवादीन काव्य म उसकी अभिव्यक्ति काशी १९५८ ई० पट्टमायत सशोधित सस्वरूप वानपुर १९५८ प्राचीन भारतीय वैश्वभूषा, प्रयाग २००७ वि० शयमा पटना १९५५
मातीचन्द्र यदुवशी रमानाथ त्रिपाठी	टुतिनामी बगला रामायण और रामचरितमानस अलीगढ़ १९६३ हिन्दी बगला प्रकाश दिल्ली १९६६ तुनस रामायण दिल्ली १९६८
राजकुमार पाण्डे	रामचरितमानस का वैश्वशास्त्रीय अध्ययन काणपुर १९६३
राजाराम रत्नामी	तुनसीनाम जीवनी और विचारधारा वानपुर २०२० वि०
राजशङ्कर प्रसाद धरुवैनी	गीतिमानान कविता एवं शृंगार रस धारण, २०१० वि०
रामकुमार वर्मा	हिन्दी का आत्माशास्त्र नतिशास्र तृतीय म० प्रयाग १९५२ ई०
रामचन्द्र शर्मा	तनमानस म० म० कागा २००७ वि० विचारमणि प्रयाग १९५०
रामचन्द्र भारद्वाज रामचन्द्र शर्मा रामचन्द्र शर्मा रामचन्द्र शर्मा	म० तनमानस दिल्ली १९६२ रामभक्ति कागा १९६० शयमा का गात्रिय पटना १९६० कागाकाग पटना २०१६ वि०

वासुदेवशरण अग्रवाल

पद्मावत (जायसी) चिरगाँव, २०१२ वि०
हृषिकेश एक सांस्कृतिक अध्ययन, पटना
१९५३ ई०

विमलकुमार जट

कीर्तिलता (सजीवनी टीका); चिरगाँव १९६२ ई०
तुलसीदास और उनका साहित्य, दिल्ली,
२०१४ वि०

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय

मध्यकालीन हिन्दी काव्य की तांत्रिक पृष्ठभूमि,
इलाहाबाद, १९६३ ई०

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

विहारी की चाग्निभूति, वाराणसी २००३ वि०
रामचरितमानस, काशिराज स०, वाराणसी, १९६२
रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक
अध्ययन, लखनऊ, १९६३ ई०

विद्या मिश्र

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास, वाराणसी,
१९५६ ई०

शम्भूनाथ सिंह

पापाणी, दिल्ली, १९६५ ई०

शरण विहारी गोस्वामी

कीर्तिलता, प्रयाग, १९५५ ई०

शिवप्रसाद सिंह

मानव और सस्कृति, दिल्ली, १९६० ई०

श्यामाचरण दुबे,

अरे यायावर, रहेगा याद ? काशी, १९५३ ई०

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

शुद्धभाषा के वृष्णभक्ति काव्य में अभि०-शिल्प,
दिल्ली, १९६१ ई०

सावित्री मिहा

श्रुतभरा, इलाहाबाद

भारतीय भाषाभाषा और हिन्दी, दिल्ली,
१९५४ ई०

राजस्थानी-भाषा उज्जयपुर, १९४९ ई०

भारत की भाषाएँ और भाषा-सम्बन्धी समस्या,
इलाहाबाद, १९५१ ई०

मुजाना ग्रन्थि, तु० ग०, काशी, १९८० वि०

हिन्दी साहित्य की भूमिका, बम्बई, १९६० ई०

हिन्दी साहित्य, दिल्ली १९५० ई०

नाथ-सम्प्रदाय, प्रयाग, १९५० ई०

मध्यकालीन पद्यभाषा प्रयाग, १९५० ई०

नूर साहित्य, बम्बई १९७९ ई०

हिन्दी साहित्य का आस्वादन, पटना, तु० ग०
१९६१ ई०

सूक्त रति

हजारीप्रसाद द्विवेदी

हरवश्लाल शर्मा
हरिवश कोछड
हेमचन्द्र जोशी

हरेकृष्ण मेहताच

अतीन्द्र मजुमदार

अमूल्यधन मुखोपाध्याय

असितकुमार वद्यापाध्याय

जाशुतोप मुखर्जी

गापान हालदार

चारुचन्द्र वद्यापाध्याय

जयानन्द

जाह्नवीकुमार चन्वर्ती

दीनेशचन्द्र सन

नलिनीकांत भट्टशाली

नीहाररजन राय

पचानन मडल

प्रमोदचन्द्र वागधी

प्रियरजन सेन

चारचन्द्र सेन, निल्ली, १९६३ ई०

विहारी और जनका साहित्य, अलीगढ़

अपभ्रंश साहित्य निल्ली, २०१२ वि०

(अनु०) प्राच्य भाषाशास्त्रा वा व्याख्यान (पिणेल)

पटना, ५८ ई०

(सम्पादक) राष्ट्रभाषा रजत-जयन्ती ग्रन्थ, उत्तर

राष्ट्र भाषा प्रचार सभा कटक

बंगला ग्रन्थ

मध्य भारतीय आद्यभाषा और साहित्य कलकत्ता
१९६० ई०

बांग्ला छन्दे मूत्रमूत्र चतुर्थ सस्वरण कलकत्ता
१९४९ ई०

बांग्ला साहित्यर इतिवत्त प्रथम खण्ड द्वि० स०
कलकत्ता १९६३ ई०

सभापतीय भाषण एन० चटर्जी कालेज स्ट्रीट
कलकत्ता १३२२ व०

बांग्ला साहित्यर स्वररत्ना कलकत्ता १३६१ व०
चण्डीमगल-वाधनी कलकत्ता १९२६ ई०

श्री चतुर्थमगल कलकत्ता १९०५ ई०

शाक्तपदावली ओ शक्ति साधना, कलकत्ता
१३६३ व०

वृत्तिवासी (बंगला) रामायण कल० १३वा स०
१६५२ ई० बग भाषा ओ साहित्य कल० जष्टम

स० १३५६ व०

पूय बग-गीतिका ४२ कलकत्ता १९३२ ई०

वृत्तिवासी रामायण (आदिकाण्ड) कलकत्ता,
१९३६ ई०

बांगालीर इतिहास (१) कलकत्ता, १३५६ व०

(स०) साहित्य प्रकाशिका (२) शांतिनिवेदन,
१३६२ व०

(म०) साहित्य प्रकाशिका (१) शांतिनिवेदन
१३६२ व०

उडिया साहित्य कलकत्ता १३५८ व०

भूदेव चौधरी	बागना साहित्येर दविनाया, ११०, द्वि० स० १९५७ ई०
गुरारी मोहन सेन समानन्द चट्टोपाध्याय	भाषा इतिहास २ वनवत्ता, १९६३ ई० वृत्तिवासी (बगला) रामायण, प्रवासी प्रेस ८वाँ १३५३ व०
विनय घाग	बागना नवजाग्रति, कलकत्ता, १९५५ ई० पश्चिम बंगर सन्मृति, कलकत्ता, १९५७ ई०
बालकन्दाम ठावर	श्री चतस्र भागवत, गोडीय मठ, द्वि० स० १९३२ ई०
शशिभूषण दागुप्त शालद्र विश्वास सुसुमार सन	सगद बागना अभिधान कलकत्ता १९६२ बागना साहित्येर कथा, कलकत्ता १९५० २० बागना साहित्येर इतिहास १, वन०, द्वि० स० १९४८ ई०
सुगमम भुगोपाध्याय सुबोध मजुमदार	वृत्तिवास-परिचय वन०, द्वि० स०, १९५७ ई० वृत्तिवासी बगला रामायण कलकत्ता ४० स०, १३३७ व०
शक्तिमाहन सन हीरेद्रनाथ दत्त	चिन्मय बग कल०, द्वि० स० १९५८ ई० वृत्तिवासी रामायण, अयोध्यावाण, कलकत्ता, १३०७ व० वृत्तिवासी रामायण उत्तरखण्ड कलकत्ता १३१० व०

वृत्तिवासी रामायण के कुछ अन्य संस्करणों का सम्पादन — विश्वभर ताहा (१०५७ व०) दुर्गाचरण मुक्त (१२८६ व०) हरिनाथ घाग (१२९६ व०) सुबन चन्द्र मित्र (१९०८ ई०) पूनचन्द्र द (१३१३ व०) नटवर चक्रवर्ती (१३१३ वि०) यामोदनाथ बसु (१३१५ व०) सतोषचन्द्र शीन (१३१६ व०), उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (१३२१ व०) नववृष्ण भट्टाचार्य (१३३३ व०) ।

असमीया ग्रन्थ

उपद्र लेखारू	असमीया रामायण साहित्य गौलाटी १९४८ ई०
हरिनारायणदत्त बरुवा	असमीया रामायण ननवाडी १९५३
हमचन्द्र गोस्वामी	असमीया साहित्येर चानवी २, कलकत्ता १९२४
हेमचन्द्र बरुवा	हेमकोश, शिवसागर, १९५५

डिम्बेश्वर नेओम

वाणीकांत काकती

मनोरजन शास्त्री

महेश्वर नेओमे

माधवदेव

शकरदेव

श्रीधर कदली

सत्येन्द्रनाथ शर्मा

अनन्त पदमनाभ पट्टनायक

कुञ्जबिहारी दास

कुलमणि दास

गोविन्द रथ

नरेन्द्रनाथ मिश्र

नीलकण्ठदास

श्रीधरदास

मो० समद तसहूँक हुमेन रिजवी

अग्नि पुराण

अध्यात्म रामायण

असमीया साहित्यर बुरजि, जोग्हाट, च० स०
१९५७ ई०,वष्णवधमर आतिगुरि, गोहाटी ६०५ शकराद
पुरणि असमीया साहित्य, गोहाटी, तु० स०
१९५८ ई०पुरणि नामरूपर घम्मर धारा कलकत्ता, १९५५
असमर वष्णव-दशनर रूपरेखा, नलवाडी,
१९५४ ई०पुरणि असमीया समाज आर ससृति डिब्रुगढ,
१९५७ ई०नामघोषा, स० हरमोहनदास गोहाटी १९५७ ई०
चित्र भागवत स० हरिनारायणदत्त बरआ नल-
वाडी द्वि० स० ५०७ क०

रामविजय नाट गोहाटी १९६२

कानखोवा गोहाटी

असमीया साहित्यर इतिवत्त कलकत्ता द्वि० स०
१९६१ ई०

उडिया ग्रन्थ

उपेन्द्रभज कटक १९६२

पल्लीगीति सञ्चयन त्रिपुरभारती १९५४

सरल ओडिया अभिधान कटक १९५६

(स०) डाण्डि रामायण बलरामदास, कटक
बलरामदास ओ ओडिया रामायण शांति निवेतन,
१९५५ओडिया साहित्यर रुमपरिणाम (१)—कटक
नव अभिधान कटक १९६२

उर्दू ग्रन्थ

लुगात विशोरी लखनऊ

सस्कृत ग्रन्थ

आन-दायम प्रेस १९५७ ई०

गीतीप्रेस, २००८ वि०

अनपराधव	निणयसागर प्रेस, बम्बई १९२९ ई०
आचारंग-सूत्र	(प्राचिन) गिद्ध भक्त प्रसारक मिति, बम्बई, १९२२ ई०
एतरेय आरण्यक	आनन्दाश्रम मुद्रणालय, पूना, १८९८ ई०
एतरेय ब्राह्मण	" " " " १९३१ ई०
पालिकापुराण	वैकटेश्वर प्रेस, बम्बई
गीता	गीताप्रेस, गारगापुर
जैमिनी ब्रह्मसूत्र	वैकटेश्वर प्रेस, १८५७ वि०
निस्त	धार्मिक यशालय अजमेर १९७७ वि०
पद्योप चरित	नारायणीय टीका-महित, निणयसागर प्रेस, १९४२ ई०
पदमपुराण	आनन्दाश्रम प्रेस पूना १८९४ वि०
प्रसन्न राघव	निणयसागर प्रेस, १९२९ ई०
ब्रह्मववत्त-पुराण	वैकटेश्वर प्रेस, बम्बई, १९८८ वि०
बोधायन धर्मसूत्र	चौसाम्बा, वाराणसी, १९९१ वि०
महाभारत	चित्रशास्त्रा प्रेस, पूना, १८९४ ई०
श्रीमद्भागवत-पुराण	गीताप्रेस, द्वितीय संस्करण २००८ वि०
श्रीमद्द्वी भागवत-पुराण	वैकटेश्वर प्रेस
यागिनीतंत्र	" "
रघुवश	निणयसागर प्रेस, १८९८ वि०
राजतरिगिणी	निणयसागर प्रेस, १८२२ वि०
रामायण मजरी	(शेमेद्र) निणयसागर प्रेस, बम्बई
बाल्मीकि रामायण	(दाक्षिणात्य संस्करण) चतु० द्वारिका प्र० शर्मा, प्रयाग २००६ (गोडीय पाठ समन्वित) लोकनाथ चक्रवर्ती, बलवत्ता ।
हनुमन्नाटक	वैकटेश्वर प्रेस बम्बई, १९६० वि०

पत्र-पत्रिकाएँ

अर्वा तका, सम्मेलन—पत्रिका, भारतीय-साहित्य, सस्कृति, निणयसागर, जन
भारती हिन्दुस्तान साप्ताहिक, कादम्बिनी, तुलसीदास, हिंदी-अनुशीलन अजता,
कल्पना विशाल भारत सगम आदि । बंगला—साहित्येखबर अमृत-साप्ताहिक,
भारत ज्योति, वसुमती भारतवर्ष । असमिया—राम धनु । उडिया—भक्त साम्बुख्य ।
अंग्रेजी—सेमिनार टाइम्स इंडिया (१४ १० ६०) आसाम एक्सेन्सि । दि जर्नल ऑफ
दि विश्वभारती स्टडी सकिन् (१९५९) ।

ENGLISH BOOKS

- | | |
|-----------------------|---|
| Allchin F R | Kaviravi London 1964 |
| Barnett L D | Hindu Gods & Heroes London 1922 |
| Barua B K | Shankerdeo Gauhati |
| Barua Hem | The Red River & the Blue Hill
Gauhati 1956 |
| | The Fairs and Festivals of Assam,
Gauhati 1956 |
| Beams John | A comparative Grammar of Modern
Aryan Languages London 1874 |
| Bhandarkar R G | Collected Works of Sir R G Bhandar
kar Vol IV Poona 1929 |
| Bhandari M B | Mundari English Dictionary Calcutta
1931 |
| Blockmann | Ain I Akbari Calcutta 1939 |
| Briggs John | History of the rise of Mohemdon
Lower Vol I II Calcutta 1908 9 |
| Chatterji Sunatikumar | Origin and Development of Bengali
Language Calcutta 1926 |
| Chowdhary B N | Some Cultural and Linguistic Aspects
of Garos Gauhati 1958 |
| Chowdhary N S | Dikarnava Tantra Calcutta 1935 |
| Das T C | The Purum An old Kuki Tribe of
Assam Calcutta 1945 |
| Dasgupta S B | Obscure Religious Cults as Background
of Bengali Literature Calcutta, 1946 |
| Eliot & Dawson | Akbarname (Abul Fazal) Cal II Ed
1953 |

- Elliot & Dawson Chachnam, Calcutta II Ed 1955
Firozshah (Alif) Calcutta II Ed,
1953, Tarikh-I Firozshahi (Zia
ud Din Barni) London 1871
- Elliot Charles Hinduism and Buddhism, Vol II,
1954
- Gokak Literature In Modern Indian Lang
uages Delhi, 1957
- Gosh J C Bengali Literature London, 1948
- Handique K K Naishadh Charit of Shriharsha,
Lahore 1934
- Harshe R G K P Bhatnagar Commemoration
Volume
- Button J H Castes In India, Bombay 1951
- Hroznı B Ancient History of Western Asia,
India and Crete Newyork
- Kakati B K Assamese Its Formation and Develop
ment Gauhati, 1941
- Aspects of Early Assamese Literature,
Gauhati University 1959
- Mother Goddess Kamakhya Gauhati
II Ed 1961
- Kane P V The History of Dharmasastra I II
Poona 41
- Majumdar B C The History of Bangali Language
II Ed Calcutta 1927
- Majumdar D N An Introduction to Social Anthrope
logy, Bombay, 1956
- Mansinha Mayadhar History of Oriya Literature, Delhi
1962
- Mehtab H K History of Orisa, Outtack 1962
- Pegu N C The Miris, Dibrugarh 1956
- Riseley H H Peoples of India II Ed

- Sahu N K A History of Orissa I (Hunter, Sterling & Beams) Calcutta, 1956
- Sen Dinesh Chandra Chaitanya & His Age C U 1922
- Sen Sukumar History of Bengali Literature, Delhi, 1960
- Sharma T N Aspects of Early Assamese Literature, Gauhati 1957
- Shastri Nilakantha Nandas & Mauryas Varanasi 1952
- Shustery A M A Outline of Islamic Culture, Bangalore 1956
-

- Sahu N K A History of Orissa I (Hunter, Sterling & Beams) Calcutta, 1956
- Sen Dinesh Chandra Chaitanya & His Age, C U 1922
- Sen Sukumar History of Bengali Literature Delhi, 1960
- Sharma T N Aspects of Early Assamese Literature, Gauhati 1957
- Shastri Nilakantha Nandas & Mauryas Varanasi 1952
- Shustery A M A Outline of Islamic Culture, Bangalore 1956
-

१२३	२	राय नाही	रायें—नाही
१३३	फुटनाट	विनय पत्रिका	२ विनय पत्रिका
१३७	फुटनाट	pluder	plunder
"	,	non muslims	non muslims
"	फुटनाट	invaders	invaders
१४०	१७	पृ० १३३	प० ३३१
"	फुटनोट	प० १३१/१	प० १३१
१४२	फुटनोट	रक्षिकु	रक्षिगु
१४५	१४	परम्परा	परम्परा
१४६	१	जाप	जापू
१४८	१७	जौर बगला	और बगल
१४९	९	कुल	कुल
"	१०	जलपा	अजपा
"	१९	अष्टाग-युग	अष्टाग-योग
१५१	१४	वसिष्ठी वसिष्ठी	वसिष्ठ वसिष्ठ
१५२	फुटनोट	बपली	बपली
१५४	३	उसकी	उसकी
१५५	६	ब्रह्म	ब्रह्मा
१५९	२१	नाना	मनाना
१६०	९	किया	किये
१६१	४	छेने	,छेने
"	९	आठकोडे	आठकौडे
"	२५	चूडकरन	चूडाकरन
	नीचे स ३	ममातवन	समावतन
१६६	१२	उलार	उसार
१६९	३	छाडे	छोरे
"	२४	प० ६३	प० ६२
१७१	१९	उरति	उरति
,	२०	उलुघनि	उलुघनि ^१
१७५	२२	एरलु	रलुलु
	२३	उललु	उलुलु
"	२५	विवाद्यतस्वे	विवाहाद्युत्सवे
	२६	उच्चायते	उच्चायते ।
	२७	अनघरधाव	अनघं राघव
१७६	१९	रव	रव

शुद्धिपत्र			
१७६	२२	तिरालाइ	तिरोताइ
"	२२	जिमा	जिभा
"	२२	शब्द	शब्द'
"	२८	प्रभृति न	प्रभति त
१७७	३	वाय	वाद्य
"	२७	१८४८	१६८८
"	३०	१२०	१-२८
१८५	१४	३३६३	३३६२
१६१	२६	आभार	आमार
१६२	१४	दग्गिताभ	दग्गिताम
१६४	७	विष्णुद	विषाद
१६६	२६	लजि	लाज
२०१	१०	मह	महें
२०२	७	प्रेम	पेम
२०७	१०	तुम्हारे रावन	तुम्हरे रावनु
"	२१	तुम्भ	तुम्भे
२११	१५	वणन	वजन
२१६	१७	तण सबक	तण सबक
"	२३	आत्म	आत्मजो
२१७	१४	जीवन १०	जीवन ॥
"	१८	जव भी	जव
२१६	१६	भागी	भागि
२२६	२४	हाही	हाही
२२६	२२	राम म	राम क हाथ स
"	२६	तण	तेणु
२३०	फुटनाट	वात	वाते कट्ठा
२३५	फुटनाट	६/२/५१	६ २५१
२३८	फुटनाट	१ ६४५	१६८३
२४१	१०	कटारत मर	कटारत भर
२४२	२३	पराधीन नहीं	पराधीन तहा
२४५	फुटनाट	जाहि	नाहि
२४५	२६	तुम कौन	तुमि कान
२४५	फुटनाट	धेन थाइ	धनियाद
२४६	२६	माना	माता
		गनि	गानि

२५७	२१	बभन	बभन
२६१	१	पिछ्छाग्गु	पिछ्छाग्गु
२६७	२६	प्रणय मट्ट	प्रणय मन
२६८	२१	ऊचन	अचन
२६९	२७	कुटविषा	कुटविषा
२७५	१	दिग्वावर	न दिग्वावर
२७६	८	ब्रह्मा	ब्रह्मा
	१३	नहा हागा	वही हागा
२८४	५	विष्ट	विष्टा
२८६	फुटनाट म	वाल्मीकि रामायण १/८ हाता चाहिए	क सामन १/२ १/८ १/४
२८७	८	शेष	शेष
२८९	२८	वयन	वणन
२९०	२१	सीता राम के	सीता के
२९१	नीचे से ४	नारक	नामक
२९३	१३	प्रारम्भ अथवा	प्रारम्भ
२९५	६	रोगबल	याग बल
२९९	फुटनोट	पष्ठ ७१	पष्ठ ७७
३००	२	६१३	११३
	२८	और	तौर
३०३	१७	पारिसे	पारिले
	१९	भूतिरसी	भूतिरसी
३०४	१४	प्राप्ति स	प्राप्ति के
३०७	मयसे नीचे	प० २०	प० २०९
३०८	८	वृष्ण भी है	वृष्ण है
३१९	२९	प्रकट द्वारा हाकर	प्रकट होकर
३२१	१	किया कि	अनुमात किया कि
३२२	१५	काटा	काटा
३३२	१	क्रोध	क्रोध
३३४	६	किक्किघा	किक्किघ्या
३३८	६	त्यक्त्वा	त्यक्त्वा
	२६	भविष्यति	भविष्यति
३४३	८	चतुर्मास्य	चतुर्मास्य
३४५	५	यनकभा	यनकयन
३७०	५	प० २६६	प० ३६६

गुट्टिपत्र		रात	राम
३७४	२१	२६६	३६६
३७८	८	उत्तरवाण्ड	उत्तरवाण्ड
,	नीचे स ३	समय	ममय
३७९	नीचे स ४	सीता का	अनावश्यक
३८२	२८	मिहामनाराहण स	मिहामनाराहण के
३९१	२	मन न	मन म
"	१२	७ १७४ ७१	७ ७४ ७५
३९५	फुटनाट	धर्मिन त	धर्मिन त
३९७	३२	बनिहस्त	बनिहस्त
३९९	१०	शीत	शील
४००	२३	५-७ ८	५ ८
४०१	२	५ ८	५ १ ८
	१०	उपास्य स	उपास्य व
४०८	२४	मारसि	मारमि
४०९	२	त्राघ	त्राघ/त्रोय
"	२५	लागे	लाग
४११	५	नाई	नाइ
"	१०	माने बीर	मान
"	२३	३७०१ १	३७०१ २
४२०	फुटनाट	सिम	सम
४२१	१९	परिवार से	परिवार के
४२२	१७	३ १३६ ५ ६	२ १३६ ५ ६
,	फुटनोट	बहु	दहु
४२७	फुटनोट	लालक	लानक
४३३	२१	आजार	वाजार
४३६	९	आट	वाटे
४३८	८	पटात	पटन
४५१	२४	ओपरर/	विगम अनावश्यक
४५२	फुटनोट	तचर	तलर
"	,	भगन	भगन
४५७	५	३ २२६	६ २६
४६१	फुटनाट	सवार	सवार
४६२	२५	कहा गया	कह गया
,	२९	दखरें	दखरें
४६५	१२	पाई	पाई
४६७	२०	—	—

